

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MUKTA JULY-SEP 1975 G.K.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

11/11/66

478 ~~203~~ ~~11~~

74
~~10~~
244192

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

जलाई (प्रथम)

2 रुपये

पुस्तकालय

बुल को

5/7/75

111466



111466

तो क्या आप का बच्चा जिद्दी है ?



और छोटी छोटी बातों पर रोता है ?

आप उसे चंपक पढ़ने को दीजिए

चंपक की रचनाएं आप के बच्चों को मृदुभाषी, संयमी, स्वावलंबी और साहसी बनने की प्रेरणा देती हैं. साथसाथ उन्हें बहुत सारी ज्ञान की बातें भी बताती हैं.

बच्चे तो चंपक को एक बार ही पढ़ कर बारबार मांगने लगते हैं. चंपक की रंगीन छपाई, मोटा टाइप, आकर्षक चित्र और हास्य देख कर आखिर कौन बच्चा चंपक पढ़े बिना रह सकेगा?

आप के बच्चों को राजा बेटा बनाने वाली पत्रिका

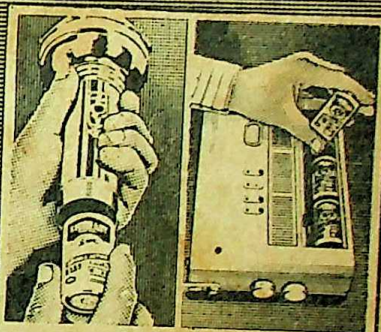
चंपक

आज ही से नियमित रूप से खरीदिए

सरिता, कैरेवान, मुक्ता के प्रकाशकों की भेंट.

**एक ही लौक सम्भालने वाली बैटरी
कीमत कम और
चले बहुत दिन**

एवरैडी डबल ऐक्शन 955



**टाँचों के लिये अच्छी
ट्रांजिस्टर के लिये सुरक्षित**

डबल ऐक्शन 955, टॉर्च व ट्रांजिस्टर दोनों में
व्यवहार कीजिये। यह बैटरी यूनियन कारवाइड की
उत्तम कार्यदक्षता का प्रमाण है।
आज डबल ऐक्शन 955 ही
आपके पैसे का पूरा
मोल है।

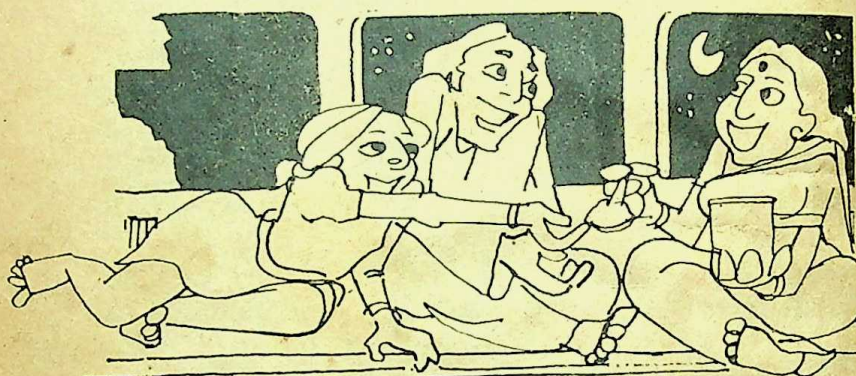
नया सुरक्षा!

लौक
सम्भालने वाली
पॉली लैमिनेटेड
जैकेट

**एवरैडी — हमेशा ही सबसे
आगे और लाजवाब**

OBM-4007A/3 HIN

सफ़र में मज़ा ही मज़ा ।
यदि पानबहार
साथ हो



पानबहार

सादे पान का
मसाला

सादे पान में अथवा
ऐसे ही खाने के लिए
एक अनोखा सुगन्धित
तथा स्वादिष्ट मसाला



अशोक एण्ड कं०, ५२/३४, नयागंज, कानपुर

ऊदी अरब	30	उमयेन गोल्दामा
ल सेवा आयोग	30	कमकेश थाक्कर
सलिम समाज में वृजुर्ग	39	मोहम्मद इब्राहीम
नव निर्मित उपग्रह	43	सत्येंद्रकुमार अग्रवाल
हट्टे, मैक्सी, दलाउज...	86	शकुन
पन की होड़	90	...
ल में कैद कलाकार	103	अजय भारती
स्टेलिया के आदिवासी	123	गिरीशदत्त शर्मा
संडल का मलवा	132	म. प. राव
पलूसी	150	चंद्रशेखरसिंह

साहित्य

यु भोज	52	ओमप्रकाश सिंघल
नानिक सपूत	57	शिवकुमार दुवे
वाली लड़की	61	थामस टीटस
ननिक	106	देवेंद्र पावले
रेर न चलेगा	112	यूसुफ हाशमी
द और अर्थ	139	क्षमा चतुर्वेदी
पुक्ति	146	प्रेमप्रकाश

वाहिक उपन्यास

महल	67	आनंदसागर 'श्रेष्ठ'
ता		
मुसकरा दिए	83	शिवप्रसाद 'कमल'
हरिया जेठ की	93	दिनेशचंद्र पुष्कर
आ गई हो बांहों में	98	रफत अधीर
में ऐसी जानती	131	शैलेंदर

दक के नाम	23	94	नई फिल्में
त विचार	27	96	धूपछांव
नड़के	50	99	पखवाड़े की फिल्म
या करूं?	84	128	खेल समीक्षा
गवली	88	149	पसंद अपनीअपनी

ये लड़कियां 153

आवरण : व. सत्यमूर्ति

मूल्य : एक प्रति : 2.00 रुपए, एक वर्ष 40.00 रुपए,
वर्ष : 75.00 रुपए.
विदेश में (समुद्री डाक से) : एक वर्ष 65.00 रुपए,
वर्ष : 130.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का
तः

दिल्ली प्रकाश वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट,
दिल्ली-55.



जुलाई (प्रथम) 1975

अंक 215

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ



बोतल में कैद फिल्मी कलाकार—पृष्ठ 103

संपादन व प्रकाशन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी
सांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

दिल्ली प्रेस समाचारपत्र के लिए विश्वनाथ
द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाजियाबाद में
मुद्रित व प्रकाशित.

मुक्ता नाम ट्रेडमार्क एक्ट के अंतर्गत
रजिस्टर्ड है.

मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वा-
धिकार दिल्ली प्रेस समाचारपत्र द्वारा सुरक्षित हैं.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा
पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना
आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई
नहीं जाएंगी.

हिंदी में शीत हतारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं- विश्व पाकेट बुक्स

धुएँ के बीच

चीनी शासकों द्वारा संपत्ति हड़प लिए जाने के भय से लु हांग भारत चला आया। मगर चीनियों ने उसे यहां भी आ दबोचा। तभी भारतीय छापामार दल ने उस की रक्षा की... एक निरीह नागरिक के विरुद्ध चीनी शासकों की निमंमतापूर्ण कहानी।

मौत के आंसू

राजन मृदुला के साथ रंग-रलियां मनाने अलकापुरी पहुंचा मगर वहां उस की मुलाकात मृदुला की बजाए उस की लाश से हुई। हालात राजन को ही हत्यारा मावित करते थे मगर हत्यारा कौन था?

कलंक रेखा

पतिपत्नी की मुमकराती जिंदगी में लीला ने अविश्वास की दलदल पैदा कर दी और राजेश रानी से नफरत करने लगा। क्या मचमुच ही रानी के डा० घोष के साथ अनैतिक संबन्ध थे? या राजेश ही लीला के गदराए जिसम का प्यासा हो गया था?

हंसने की बारी

रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे जिसे आप बारबार पढ़ना चाहेंगे।

प्रतिशोध

एक जरमन सैनिक की मच्छी कहानी जिस ने अपनी सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया।

आंख मिचौनी

एक ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोग... निर्लिप्त से मम्मीपापा, जीवन से कटीकटी रीता भाभी, जिंदगी की घनीभूत पीड़ा को शिकार पल्लवीजी, जीने की अदम्य लालसा से प्रेरित सुधीर बाबू और राज?--- शायद इन सब का योगफल।

—प्रत्येक रु. 4



पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

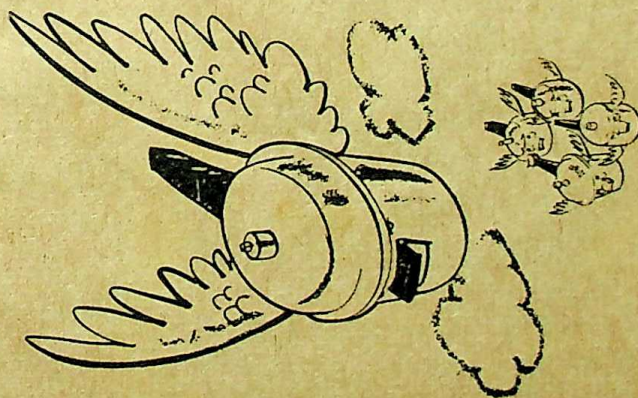
विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें।

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए ग्रिमि भेजें।

सबसे ऊंचा!



प्रेसिडेंट-भागत में सबसे ज्यादा बिकनेवाला प्रेशर कुकर!

प्रेसिडेंट! पिछले १५ सालों से सफलता की उड़ान में सबसे ऊपर रहा है — और आज बहुत ही लोकप्रिय हो गया है।

जी हाँ, प्रेसिडेंट की लोकप्रियता के कई कारण हैं।

आपके लिए दुगुनी बचत

हर प्रेशर कुकर ईंधन और समय की बचत करता है, यह सच है। लेकिन प्रेसिडेंट आपके लिए सबसे ज्यादा किफायती साबित होता है। एक तो इसके अन्दर ज्यादा जगह होती है — ज्यादा खाना पकाने के लिए, और दूसरे बिना ज्यादा ईंधन इस्तेमाल किए अधिक खाना पकाया जा सकता है। (इसमें एक खास एल्युमिनियम का बूझक होता है जो कुकर में ज्यादा जगह करने के लिए बाहर फिट किया गया है।)

जल्द काम करनेवाला अधिक किफायती कुकर

प्रेसिडेंट प्रेशर कुकर में एक खास

एल्युमिनियम धातु का उपयोग किया गया है जिससे यह जल्द गरम होता है और इसमें उष्णता भी समान रूप से फैलती है — इस तरह ईंधन और समय, दोनों की बचत हो जाती है।

सुरक्षा के लिए विशेष साधन

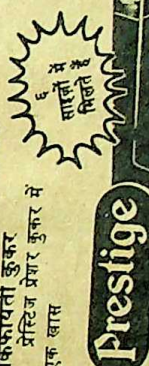
प्रेसिडेंट प्रेशर कुकर में सुरक्षा के लिए कई विशेष साधन होते हैं जैसे अच्छी तरह बंद होनेवाला दोहरा बूझक, तीन तह का रबर सेप्टी प्लग, प्युजिबल मेटल पिस्टल के साथ।

प्रेसिडेंट जीवन भर आपका साथ निभानेवाला प्रेशर कुकर है। देश भर में फैले विक्री के बाद की सेवाएं देनेवाले केन्द्र, इसके टिकाऊपन के बारे में आपको विश्वस्त रखते हैं।

टी.टी. (प्राइवेट) लिमिटेड
बैंगलोर ५६० ०१६



SAA TTP 1743 HN



— १५ सालों से सफलता की ऊंचाइयों पर रहा है... और आज भी बढ़ रहा है!



#1
फ्लोराइड दाँतों के
एनैमल को मुँह में
पैदा होने वाले
ऐसिड से कम
गलने देता है।



#2
फ्लोराइड सड़न
पैदा करने वाले
'ऐसिड-एन्जाइम'
की सख्त रोक-थाम
करता है।



#3
फ्लोराइड बढ़ते
हुए दाँतों को गढ़े
पड़ने और सड़न
पैदा होने से
बचाता है।

#4
फ्लोराइड कच्चे
दाँतों को
बिल्लौर की तरह
मजबूत बनाता है।

नया

कोलिनाॅस फ्लोराइड दाँतों का जीवन-भर का साथ

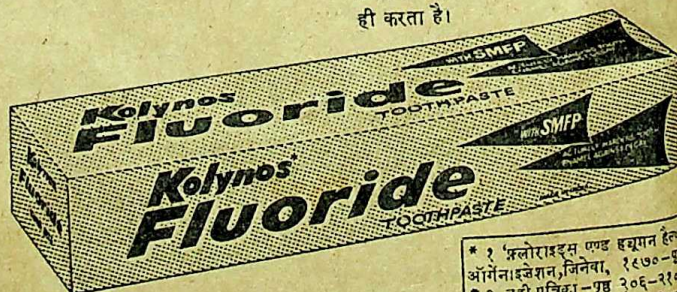
कोलिनाॅस फ्लोराइड से दाँतों की
ज़बरदस्त रक्षा

वैज्ञानिक खोज से यह सिद्ध हो गया है कि कोलिनाॅस
फ्लोराइड दूधपेस्ट में मिला हुआ सोडियम-मोनो-
फ्लोरो-फास्फेट (एसएमएफपी) बढ़ते हुए दाँतों को गढ़े
पड़ने और सड़न पैदा होने से ज़्यादा अच्छी तरह बचाता
है। क्योंकि एसएमएफपी दाँतों के एनैमल से मिल जाता
है और उसे ज़्यादा सख्त करता है।

कोलिनाॅस फ्लोराइड बड़ों के दाँतों के लिए
गुणकारी है

कोलिनाॅस फ्लोराइड में मिला हुआ एसएमएफपी
बैक्टीरिया के 'एन्जाइम' की भी, जो दाँतों के
पर असर करके सड़न पैदा करते हैं, यख्त
करता है।

कोई भी आम दूधपेस्ट आपके परिवार के दाँतों
प्रकार दिन-प्रति-दिन रक्षा नहीं कर सकता
ठण्डी-ठण्डी, ताजा सुवास वाला कोलिनाॅस
ही करता है।



- * 1 'फ्लोराइड' एण्ड वर्युपन हेल्थ
ऑर्गेनाइजेशन, जिनेवा, १९७०-७१
- * 2 वही पत्रिका-पृष्ठ ३०६-३१०
- * 3 वही पत्रिका-पृष्ठ ३०४-३०८
- * 4 वही पत्रिका-पृष्ठ २०४

कोलिनाॅस फ्लोराइड से बढ़कर दाँतों का डॉक्टर ही आपके दाँतों
देखभाल कर सकता है।

मधुर मिलन का सुन्दर साधन

Digitized by Aarya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरसिल्क। ऐसे भड़कते, फड़कते रंग कि मन मचल उठे।
ऐसे मनमोहक, हलके रंग कि मन बिल उठे। सादा, चारखाना
और धारीदार कपड़े।

सरसिल्क सटिंग और शर्टिंग में आपको वे सभी
खूबियाँ मिलनी हैं जो आप एक बढ़िया कपड़े में
चाहते हैं। चलने में टिकाऊ। अच्छी पसन्द
के अनुकूल। देख-भाल में आसान।
और बिलकुल ठीक कीमत।



सरसिल्क
पॉलिएस्टर सटिंग और शर्टिंग

विक्रता एजेंट : बम्बई : तुलसीदास कलौजिया एण्ड कम्पनी, पहली मंजिल, जाम्बुलबादे (94), कागवारेकी रोड, बम्बई। गुजरात और गोवा : दामा इटले, ३४३, मणि महल, कागवारेकी रोड, बम्बई। मध्य प्रदेश, विदर्भ और महाराष्ट्र : रवी एण्ड कम्पनी, १०, गान्धुल हॉलकेन कलाधमार्गेट, बांधी बाग, जालपुर। दिल्ली और हरियाणा : राम रेडिंग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, कटरा अमरको, पोरनी बॉक, दिल्ली। राजस्थान : हरीश एण्ड कम्पनी, मेहता मार्गेट, जोधपुर। पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर : ओमेगा इंडियन कालोरेजेशन, कटरा अहलुवालिया, अमृतसर। उत्तर प्रदेश : केजरीवाल ट्रेडिंग कारपोरेशन, किशोर हाउस, २४/२६ ग. कलापो बाना, काजपुर। पश्चिम बंगाल : अरिन्दो कुमार् एण्ड कम्पनी, ४, इंडियन ऐकसप्रेस बिल्डिंग, कलकत्ता। बिहार : ओमेगा इंडियन कालोरेजेशन एण्ड एजन्सीज, इंदिरा मार्गेरी बिल्डिंग (दुसरी मंजिल), गैंगो बिल्डिंग रोड, पटना।

मुक्ता

CHAMPAK

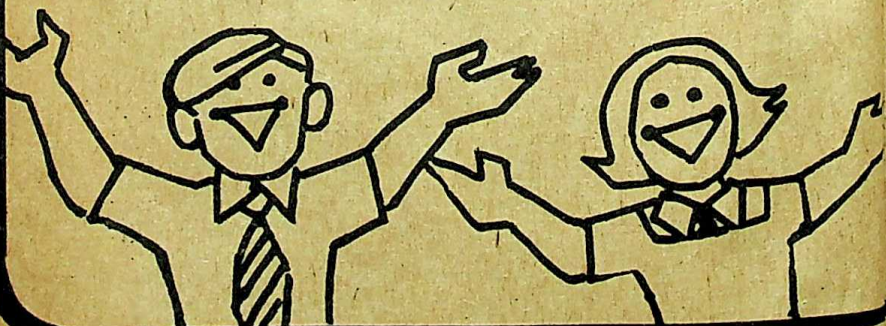
NOW a unique

CHAMPAK

A colourful, captivating, monthly magazine in English from the publishers of **CARAVAN & WOMAN'S ERA**

Delhi Press, the publishers of famous and fast-selling Hindi and English magazines, now bring a new magazine in English for your young children. A magazine that is modern, colourful and beautifully printed. No longer dependence on foreign comics that teach your children violence and mischief in the name of adventure and entertainment.

CHAMPAK on one hand, rejects the comic formula and on the other hand, liberates young minds from the cocktail of mythological and tragic tales of horror, romance and magic. **CHAMPAK** is the modern magazine for children of jet age which teaches them values of honesty, hardwork, friendship and bravery.



le gift for your children

CHAMPAK is also the key to knowledge for young children as it brings to them the latest information and keeps them ahead of others.

Short Stories of **CHAMPAK** do not have princes or princesses as characters. They are either young children like the readers or animals which fascinate children.

Your children can remember its poems in a jiffy and recite them in classrooms or to your guests. Its jokes will entertain them. Its picture stories will amuse them for hours.

Buy CHAMPAK for your children today

One Copy Re 1 only

One Year Rs 10 only

*Available from your nearest newspaper agent.
For subscription write to :*

CHAMPAK

Delhi Press Building,

Jhandewala, New Delhi - 55.



सुंदरियों के लिए एक निशाला नया साबुन



लक्स सुप्रीम जिसमें मिली है अपनी ब्यूटी क्रीम

आपकी त्वचा को और भी खूबसूरत तथा रेशमी-कोमल बनाने के लिए प्रस्तुत है लक्स सुप्रीम. यही एक साबुन है जिसमें अपनी ब्यूटी क्रीम मिली है. इसके भरपूर झाग में मौजूद ब्यूटी क्रीम का सुखद स्पर्श आप स्वयं महसूस कर सकती हैं.

लक्स सुप्रीम का झाग आपकी त्वचा को मक्खन जैसा नरम बनाता है. आपके शरीर की स्निग्ध गर्माई से एक अभिनव मधुर गंध भी फूट निकलती है — लक्स सुप्रीम की मधुर निसैली गंध.

**आपके रूप को नया निखार देता है—लक्स सुप्रीम
एक ही साबुन जिसमें मिली है ब्यूटी क्रीम.**

हिन्दुस्तान लीबर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पाद

कुछ चीजें कभी नहीं बदलती!

वे सदा अटल हैं जैसे माँ का प्यार और बिन्नी की विशेषताओं का संसार। आप मानेंगे कि दोनों की जोड़ी कितनी हर्षदायक है।

यहाँ तक कि आज की अत्यंत चंचल और परिवर्तनशील माँ को भी बिन्नी के टैशन मिश्रित कपड़े ही चाहिए...

ज़्यादा टिकाऊ 'एक पंथ दो काज' करनेवाले कपड़े!

ऐसे कपड़े तो आजकल सभी पसन्द करेंगी।
हैं न?

कुछ चीजें
ऐसी हैं जिन्हें
बिन्नी भी
कभी नहीं
बदलना चाहेंगी!



बिन्नी

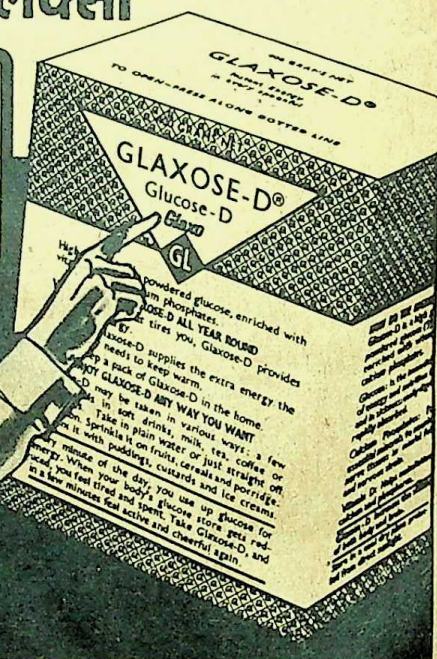
'टैशन' मिश्रित कपड़े

पैशनेबल फिर भी टिकाऊ — केवल बिन्नी ही की बुनावट का कमाल!

Interpub BB/54/75

केवल एक ही है असली ग्लैक्सोज-डी® जिस के निर्माता हैं ग्लैक्सो

इस विशेष डिज़ाइन में
हरे अक्षरों से अंकित
ग्लैक्सो
देखिए।



ट्रेड मार्क के
रजिस्टर्ड यूजर्स

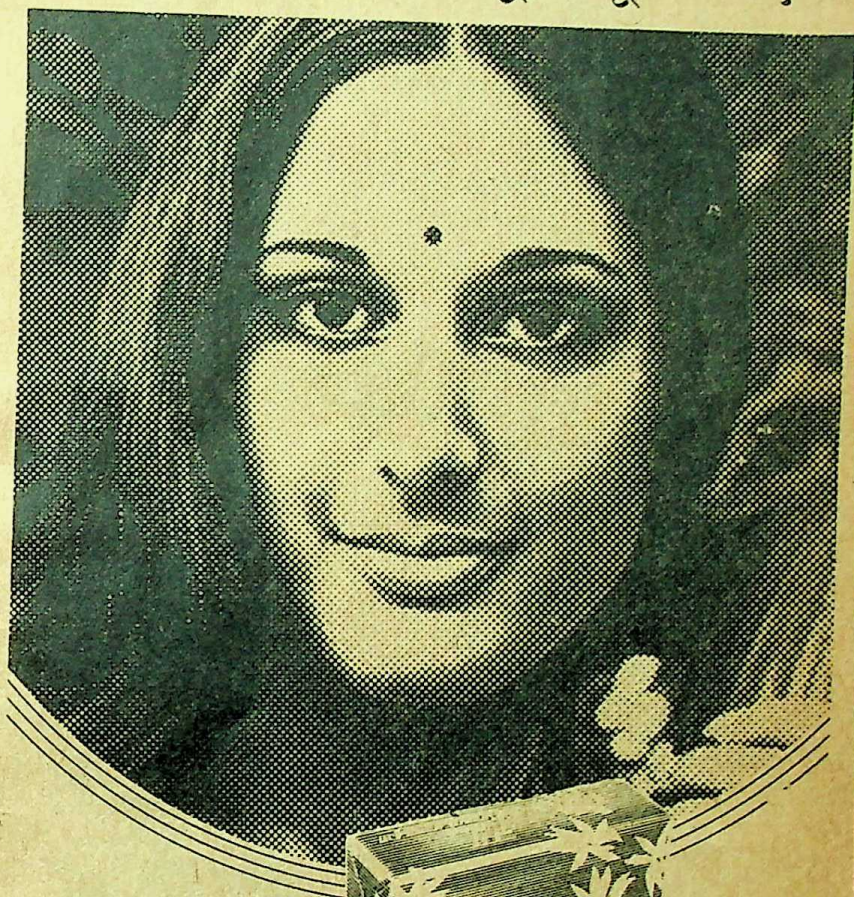
ग्लैक्सोज-डी सब से अधिक विश्वसनीय उत्पादन है, जिस में शुद्ध ग्लूकोस को विटामिन डी_२, फॉस्फोरस और कैल्शियम से सम्पन्न किया गया है। तुरंत शक्ति के लिए लाखों लोग ग्लैक्सोज-डी का सेवन करते हैं। ग्लैक्सोज-डी का निर्माण ग्लैक्सो ने किया है जो विविध खाद्य उत्पादन, जीवन-दायिनी दवाइयों और औषधियों के लिये विख्यात है।
द्वितीय श्रेणी के नकली उत्पादनों से सावधान रहिए, इस से आपके परिवार के स्वास्थ्य खतरा हो सकता है।
असली ग्लैक्सोज-डी का पैकेट लीजिए-खरीदने से पहले अच्छी तरह जांच लीजिए।

ग्लैक्सोज-डी®

dCP/GL/35 E Min.

Digitized by Anja Sanyal Foundation, Chennai and eGangotri

चेहरे की लालिमा, गुलाब शरमाए
देखूँ जब दर्पण, मन भ्रूम-भ्रूम जाए



यह तो जय का चमत्कार है।
जय साबुन...चेहरे पर कैसी दीप्ति
ला देता है! इसका भरपूर
भाग...इसकी मादक सुगन्ध,
कितनी प्रिय! जय से उन्मुक्त यौवन
का द्वार, रूप का शृंगार। जय का
स्पर्श, सौन्दर्य का स्पर्श!

चमेली
की सुगंध से
भरपूर

जय
सौंदर्य-साबुन

टाटा का जय साबुन

OBM-7002 HIN

मुक्ता

केवल १ पैसे से १ सादी या
२ कमीजें चमचमा उठती हैं

मॅक्सिम

* सभी तरह के कपड़ों के लिए सफ़ेदी लाने वाला प्रभावी साधन

निहायत किफ़ायती

आप यों समझिए कि मोटे तौर पर एक कपड़े के लिए मॅक्सिम की एक बूँद काफ़ी है। और मॅक्सिम की १०० मि.ली. की बोतल में १००० से ज्यादा बूँदें होती हैं। मॅक्सिम आसानी से इस्तेमाल किया जाने वाला, शक्ति से भरपूर नीला द्रव है। यह प्लास्टिक की ऐसी बोतल में मिलता है, जो पकड़ने में आसान रहती है और जिसकी गरदन विशेष तौर से ड़ापर की तरह बनाई गयी है। इसी लिए आप जितना चाहें, बस उतना ही मॅक्सिम बूँद-बूँद कर के उँडेल सकती हैं। इस तरह एक बूँद भी व्यर्थ नहीं जाती और न बोतल के फिसलने या टूटने का डर रहता है।

'टेरीन'	✓
'टेरीन' कॉटन	✓
नायलॉन	✓
रेशमी	✓
ऊनी	✓
सूती	✓

सभी तरह के कपड़ों के लिए

मॅक्सिम से 'टेरीन', 'टेरीन'/कॉटन और नायलॉन के तथा ऊनी, रेशमी और सूती कपड़ों पर फिर नये कपड़े की-सी शानदार सफ़ेदी चमक उठती है। तरल होने के कारण यह झट झल जाता है और इस से किसी भी तरह के कपड़े पर दाग या चटाक नहीं पड़ते।

बड़ा आसान इस्तेमाल

कपड़ों को धो कर खंगालिए। आधी बाल्टी-भर पानी में मॅक्सिम की १०-१५ बूँदें मिलाइए। उस में कपड़ों को १०-१५ मिनट तक भिगाइए। आहिस्ता से निचोड़ कर सुखने के लिए डालिए।

मॅक्सिम से आपके एक-एक पैसे की पूरी कीमत मिलती है

GMM/3/75A



१०० मि.ली. और ५० मि.ली.
की बोतलों में मिलता है

*Regd. TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टियॉरा

सभी प्रकार के बालों के लिए बढ़िया शैम्पू



एग

प्रोटीन वंचित बालों के लिए



शिकाकाई

सामान्य बालों के लिए



लैनोलिन

बिखरे हुए बालों के लिए



कंसेण्ट्रेट

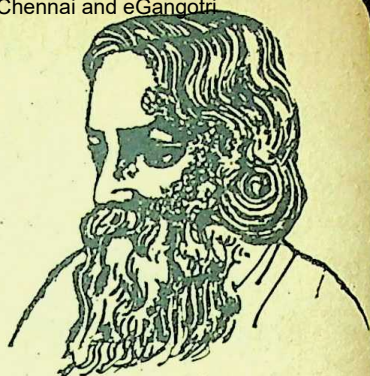
चिपचिपे, लसदार,
बालों के लिए

सुन्दर बालों के लिए जरूरी है—टियॉरा

दिनेश्वर की ताजगी के लिए नया टियारा ब्यूटी टैल्क खरीदिए !
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रवींद्र साहित्य

पर
दस प्रतिशत
छूट



गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की पुस्तकों के बिना आप का घरेलू पुस्तकालय अधूरा है. विश्वविख्यात रवींद्र साहित्य अब हिंदी में भी सुलभ है. दक्ष अनुवादकों द्वारा तैयार रवींद्रनाथ की पुस्तकें अब बहुत ही सस्ते मूल्य में उपलब्ध हैं. ये पुस्तकें स्वयं पढ़ने तथा उपहार देने योग्य हैं. आज ही इन का आर्डर दीजिए.

रवींद्रनाथ की कहानियां			
21 कहानियां, 403 पृष्ठ	8.00	रवींद्रनाथ के निबंध (प्रथम खंड)	
रवींद्रनाथ के नाटक (प्रथम खंड)		धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक,	
'विसर्जन,' 'चित्रांगदा' और		सामाजिक, राजनीतिक तथा	
'चिरकुमार सभा' का		ग्रामसुधार संबंधी चुने हुए	
305 पृष्ठ का संग्रह	8.00	निबंध.	15.00
रवींद्रनाथ के नाटक (द्वितीय खंड)		रवींद्रनाथ के निबंध (द्वितीय खंड)	
'राजा,' 'डाकघर,' 'मुक्तधारा'		आत्मकथा, साहित्य समीक्षा,	
और 'रक्त करवी' का		चारुलेख आदि विविध विधाओं	
286 पृष्ठ का संग्रह	8.00	के 45 प्रेरणाप्रद लेख, पृष्ठ 479.	12.00
रवींद्रनाथ का बाल साहित्य		रवींद्रनाथ की कविताएं	
73 बालोपयोगी कहानियां,		एक सौ एक चुनी हुई कविताओं	
कविताएं व निबंध, 312 पृष्ठ	7.50	का संग्रह, पृष्ठ 326	12.00
आंख की किरकिरी		गोरा	
प्रसिद्ध उपन्यास 'चोखेर बालि'		उपन्यास, पृष्ठ 455	8.00
का हिंदी रूपांतर, पृष्ठ 230	5.00	योगायोग	
		उपन्यास, पृष्ठ 252	6.00

डाक खर्च अतिरिक्त. वी. पी. पी. से मंगाने के लिए
5 रु. अग्रिम भेजें.

प्राप्ति स्थान—

दिल्ली बुक कंपनी,

12-एम, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

10,000 रुपए का पुरस्कार

मौलिक उपन्यास प्रतियोगिता

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना

सरिता ने सदैव ही प्रेरक और सार्थक साहित्य को एक नई दिशा दी है और प्रतिभाशाली कथाकारों को अपना स्थान बनाने का अवसर दिया है। इसी अभियान के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ मौलिक हिंदी उपन्यास पर 10,000 रुपए के पुरस्कार की घोषणा की जा रही है।

नियम एवं शर्तें :

1. उपन्यास मवंथा मौलिक, अप्रकाशित और अप्रसारित होना चाहिए। प्रकाशित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा।
2. उपन्यास राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति की प्रगति व चरित्र निर्माण में महायक होना चाहिए। कथानक उद्देश्यपूर्ण हो, मनोरंजक हो और प्रेरणादायक हो तथा पाठकों को कुछ सोचनेसमझने तथा अपने परिवार, समाज व देश के प्रति कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दे सके। असफल प्रेम, जासूसी, तस्कारी, मारधाड़, वैश्यावृत्ति आदि पर आधारित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा।
3. पांडुलिपि फुलस्केप आकार के कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर टाइप की हुई होनी चाहिए। शब्द संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है, पर अनावश्यक रूप से लंबे विवरण नहीं होने चाहिए।
4. पुरस्कार योजना के लिए भेजे गए उपन्यास को निर्णय घोषित होने तक कहीं और विचारार्थ नहीं भेजा जाना चाहिए।
5. सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार को 10,000 रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।
6. अन्य उपन्यासों को भी उन के स्तर के अनुसार उपयुक्त पुरस्कार/पारिश्रमिक दिया जा सकता है।
7. पुरस्कृत उपन्यासों के सर्वाधिकार (कापीराइट) सरिता के पास सुरक्षित रहेंगे।
8. रचनाओं के संबंध में सरिता संपादक मंडल का निर्णय अंतिम और मान्य होगा।
9. यद्यपि पांडुलिपि की यथासंभव देखभाल की जाएगी। फिर भी कार्यालय, किसी रचना के खो जाने, फट जाने या नष्ट हो जाने अथवा लेखक या उस की कृति को किसी तरह की हानि पहुंचने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।
10. असफल पांडुलिपियों की वापसी के लिए पर्याप्त डाक टिकट आने आवश्यक हैं अन्यथा उन्हें वापस नहीं किया जाएगा।
11. इस प्रतियोगिता के लिए भेजे गए उपन्यासों के संबंध में पत्रव्यवहार करना संभव नहीं होगा।
12. प्रत्येक पांडुलिपि के साथ यह प्रमाणपत्र आना आवश्यक है कि वह लेखक की मौलिक रचना है, किसी अन्य रचना पर आधारित नहीं है और पहले कहीं किसी भी रूप में प्रकाशित, प्रसारित, प्रदर्शित नहीं हुई है तथा लेखक को रचना के विषय में सरिता संपादक मंडल का निर्णय स्वीकार होगा। पांडुलिपि के साथ पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ सहित उपन्यासकार का संक्षिप्त परिचय आना भी आवश्यक है।

अपनी पांडुलिपियां 31 अक्तूबर, 1975 तक निम्न पते पर भेजें :

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना,

दिल्ली प्रेस भवन, भंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

मुक्ता

जुलाई (द्वितीय) 1975 अंक के विशेष आकर्षण :

● दिल्ली परिवहन निगम

ज्योंज्यों बसों की संख्या बढ़ती जा रही है त्योंत्यों परिवहन की समस्याएं भी बढ़ती जा रही हैं.

● नपुंसकता

तन की कमजोरी है या मन की?

● शतरुद्रप्रकाश

उत्तर प्रदेश का सब से कम उम्र का प्रतिभाशाली विधायक.

● कुत्ता सम्मेलन

आदमी तो हमेशा सम्मेलन करते रहते हैं, लेकिन एक बार कुत्तों ने भी सम्मेलन किया था और वह भी आदम जाति के खिलाफ...

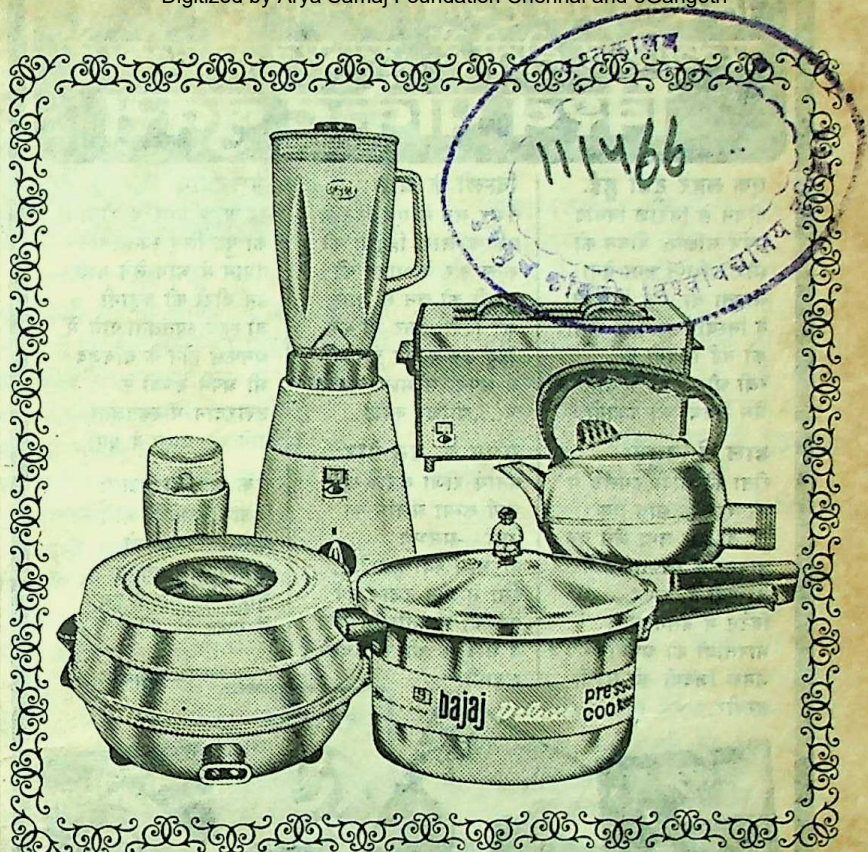
● मंदिर लिया चिनाय

बी. ए. पास की थी क्लर्क बनने के लिए, लेकिन कुछ ऐसा हुआ कि मुजारी बन बैठे...

इस के अतिरिक्त अनेक हृदयस्पर्शी कहानियां, जगा देने वाले लेख, घारावाही उपन्यास, भावपूर्ण कविताएं, सभी स्थायी स्तंभ और विशेष रूप से लिखी गई विविध सामग्री.

अपनी प्रति आज
ही सुरक्षित कराइए.





जीवन की खुशियां तब हों **बजाज** साधन घर में जब हों
अब हर चीज़ सुगमता से -



अतिथि-सत्कार में अधिक सुगमता में अगर आपकी दिनचर्या है तो आप पाएंगी की बजाज साधन ही आपकी जरूरत को पूरा कर सकते हैं।

दूर असल सारे बजाज साधन सुगम जीवन के लिए बनाए गए हैं: जैसे—आइसक्रीम फ्रीजर, मिक्सर, ओवन, टोस्टर, केटल, प्रेशर कुकर आदि।

और केवल बजाज ही ऐसी कंपनी है जिसके भारत भर में ३५०० विक्रेता और १६ शाखाएँ हैं। इस तरह हम आपका बिक्री के पहले और बाद में भी संतोषप्रद सेवा दे सकते हैं।



बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

४५-४७, वीर नरिम्न रोड, बम्बई-४०० ०२३
माहय भर में शाखाएँ.



heros BE 220 HN

Digitized by eGangotri Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी में रोज़ हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब में अलग हैं- विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद
अपने संक्षिप्त जीवन का
और संक्षिप्त बना देना
चाहता था. ऐसे में नीला
ने निस्वार्थ भाव से विनोद
को नई जिंदगी दी.
स्त्री और पुरुष के सात्विक
प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंग्लैंड में
बसे राम के साथ तय
हुई तो उसे लगा जैसे वह
भावना के स्वप्नलोक में
जा रही है. मगर...
ब्रिटेन में बसने वाले
भारतीयों की अपमान-
जनक जिंदगी की सच्ची
तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लग ने एक दिन में
एकएक लाख हिंदुओं को
कत्ल कर के भारत की
धरती को खून से लाल
कर दिया. फिर भी कई
हिंदू उस के पंर चूमने
में अपना सौभाग्य समझते
थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनाथ राजा करंज और
अनाथ कन्या अर्जुन का
प्रेम?—असंभव.
परिणाम क्या हुआ?...
ईसा से तीन हजार वर्ष
पूर्व की भारतीय सभ्यता
व संस्कृति की रोमांचक
कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच
का पुट लिए स्वतंत्रता
संग्राम में भाग लेने वाले
उन वीरों की कहानी
जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में
असफल होने के बावजूद
भी अपने बच्चों के
उत्तरदान में स्वतंत्रता
पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कमवे के भोले-
भाले नागरिकों को
चीनी गुलाम बनाना
चाहते थे. क्या वे इस
में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4



पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विभक्ता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए ग्रिमि भेजें.

संपादक के नाम



सहमत हूँ. वास्तव में आजकल के शिक्षण संस्थान राजनीति का अखाड़ा बन गए हैं, जिसके कारण छात्रों की भविष्य अंधकार-मय हो गया है. इस अंक में 'घूम्रपान और लंग कैंसर' (लेख : उमाशंकर रायजादा) से काफी जानकारी मिली.

—अखिलकुमार सिन्हा, सीवान

अप्रैल (प्रथम) के 'मुक्त विचार' में 'देखादेखी ये भी बोले' में आप ने सही लिखा है कि हर किसी को विश्वविद्यालयों के एकेडेमिक काउंसिल में बैठाने की बात बेतुकी है. हमारे देशवासियों की सब से बड़ी मुश्किल यह है कि किसी भी मुद्दे पर पूरी तरह सोचेविचारे बिना ही उस पर होहल्ला करने लगते हैं.

इसी अंक में प्रकाशित 'मछलियां : जिन के बारे में आज तक नहीं सुना गया' (लेख : अनंतकुमार सिन्हा) ज्ञानवर्धक है, मगर क्या लेख का शीर्षक भ्रामक नहीं? 'आज तक न सुने जाने का' क्या तात्पर्य है?

—मोहित पांडेय, बनारस

अप्रैल (प्रथम) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत 'दो नावों पर पैर' में आप ने जो विचार प्रस्तुत किए हैं, उन से मैं पूर्ण

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही, आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

अप्रैल (प्रथम) अंक में 'समाजवादी लड़की' (व्यंग्य : रामजी मिश्र) बड़ी मजेदार लगी. इस में समाजवाद के खोखलेपन का अच्छा मजाक उड़ाया गया है. 'नई अभिनेत्रियां : सिर्फ नाम ही नाम' (लेख : सुब्रत मिश्र) नई आने वाली अभिनेत्रियों के बारे में काफी जानकारी देता है. लेकिन इस में कुछ नई अभिनेत्रियों के नाम छूट गए हैं.

—चंद्रकिशोर अरोड़ा, नई दिल्ली

अप्रैल (प्रथम) के 'संपादक के नाम' में प्रकाशित उमा, नागपुर के विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ. लड़के को पहले अपने मांबाप की तरफ ध्यान देना चाहिए और फिर पत्नी की तरफ. मांबाप के कहने में आने से न पत्नी को बुरा कहना चाहिए और न ही पत्नी के कहने से मांबाप की उपेक्षा. बहुत से ऐसे लड़के होते हैं जो शादी होते ही अलग हो जाते हैं; यह बहुत गलत बात है. लड़कों को मांबाप के बुढ़ापे का सहारा बनना चाहिए.

—वीना शर्मा, नई दिल्ली

अप्रैल (प्रथम) के 'संपादक के नाम' में प्रकाशित कुलदीपकौर, दिल्ली के इस विचार से मैं भी सहमत हूँ कि पंजाबी भाषा के लिए देवनागरी लिपि का व्यवहार किया जाना उचित होगा. दिल्ली में तो पंजाबी बहुत बड़े पैमाने पर बोली-समझी जाती है. लिखने के लिए यदि देवनागरी लिपि का प्रयोग होने लगा तो पंजाबी सीखना और आसान हो जाएगा.

—सतपाल चौधरी, गुड़गांव

अप्रैल (प्रथम) अंक में प्रकाशित उद्देश्य प्राप्त कर सकेंगे या नहीं, यह भी प्रायः सारी कहानियाँ ने प्रभावित किया। जो खाने की बात है। Gangotri

‘टूटते बंधन’ (कहानी : कमला सपोलिया) और ‘सीमा रेखा’ (कहानी : अशोककुमार शर्मा) विशेष रूप से प्रभावपूर्ण लगीं।

इस अंक में प्रकाशित ‘वाक्स कैमरा’ (लेख : अशोककुमार मुंशी) तथा ‘धूम्र-पान और लंग कैसर’ (लेख : उमाशंकर रायजादा) भी ज्ञानवर्धक थे। ‘मुक्ता’ की साजसज्जा में भी निरंतर सुधार हो रहा है, पर रंगीन छपाई पर ध्यान दें।

—प्रदीपकुमार गोयल, आगरा

अप्रैल (द्वितीय) में ‘जयप्रकाश नारायण’ (लेख : योगेशचंद्र शर्मा) जयप्रकाशजी के जीवन पर अच्छा प्रकाश डालता है। वैसे इतना तो सही है कि वह अपना लक्ष्य अभी तक पूरी तरह स्पष्ट कर जनता के सामने नहीं रख पाए हैं। अनेक दलों की राजनीति के बीच वह अपना सर्वोदय तथा संपूर्ण क्रांति वाला

सरिता

1972 के छमाही सेट

अब केवल 10 रुपए में

हर सेट में लगभग 80 कहानियाँ, 150 लेख, 40 कविताएँ, धारावाही उपन्यास तथा ढेरों अन्य रोचक सामग्री, जो आज भी आप का मनोरंजन तो करेगी ही, साथसाथ आप का ज्ञानवर्धन भी करेगी। यदि इन अंकों को आप ने अभी तक नहीं पढ़ा है तो आज ही मनीआर्डर भेजिए।

मनीआर्डर कृपण पर यह लिखें : “प्रथम/द्वितीय, 1972 के सरिता के सेट के लिए धन.”

रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए रु. 1.50 अतिरिक्त।

दिल्ली प्रकाशन, ई-3, भंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

इसी अंक में प्रकाशित ‘नृत्य संस्थाओं में वेश्यावृत्ति’ (लेख : विशेष प्रतिनिधि) में काफी रोचकरोमांचक जानकारीयाँ मिलीं। इस लेख में लेखक का परिश्रम स्पष्ट है। ऐसी और भी बहुत सी संस्थाएँ तरहतरह के नकाब ओढ़े दिल्ली में चल रही हैं। आशा है आप उन की भी खबर लेंगे। —ज्ञानेश्वर शास्त्री, नई दिल्ली

मार्च (द्वितीय) अंक में प्रकाशित ‘निर्णय’ (कहानी : अशोकदत्त सुमन) और ‘भारतीय कहलाने में शर्म क्यों?’ (लेख : द. न. माथुर) ने प्रभावित किया। ऐसी कहानियाँ कभीकभी ही पढ़ने को मिलती हैं। —रेखा जैन, बीकानेर

मार्च (द्वितीय) में प्रकाशित ‘भारतीय कहलाने में शर्म क्यों?’ (लेख : द. न. माथुर) ने केवल सरकार की ही आलोचना की है। उन्होंने देश की जनता की ओर नहीं देखा, जो अपना कर्तव्य भूल बैठी है। उदाहरण के लिए-कार्यालयों में ही चले जाइए, लोग व्यर्थ में गप्पें मारते नजर आएंगे। क्या उन का कोई कर्तव्य नहीं? आज जो इतनी विकट समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं, हमें उन का समाधान ढूँढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए, न कि भारतीय होने में शर्म का अनुभव।

—कुलदीप मलहोत्रा, नई दिल्ली

मार्च (द्वितीय) अंक में ‘समाधान’ (कहानी : शिवकुमार दुबे) दहेज प्रथा पर अच्छा व्यंग्य है। पर इस में दहेज की बाधा को जिस तरह सुलझाया गया है वह अव्यावहारिक है।

‘भारतीय कहलाने में शर्म क्यों?’ (लेख : द. न. माथुर) में लेखक के शब्द ‘हम अंगरेजों के शासन में बहुत सुखी थे’ उन की संकुचित मनोवृत्ति का ही परिणाम हैं। ऐसे लोगों को सचमुच भारतीय नहीं कहलाना चाहिए।

—पूणिमा जायसवाल, चंडीगढ़

जलाई (प्रथम) 1972

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रकाशित

Digitized by eGangotri

विज्ञान प्रगति

- दूरगो चित्रों से भरपूर ● बहुरंग आकर्षक आवरण ● सरल सुबोध भाषा

प्रति मास पढ़िये :

- क्या क्यों कैसे? (वैज्ञानिक प्रश्नोत्तर) ● गणित मनोरंजन ● वैज्ञानिक समाचार
- स्वास्थ्य और चिकित्सा ● उद्योग की सेवा में विज्ञान
- अधुनातन जानकारीयों से भरपूर वैज्ञानिक लेख

विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा जनसाधारण के लिए समान रूप से उपयोगी

एक प्रति 0.75 पैसे

वार्षिक मूल्य 8.00 रु. मात्र



सम्पादक

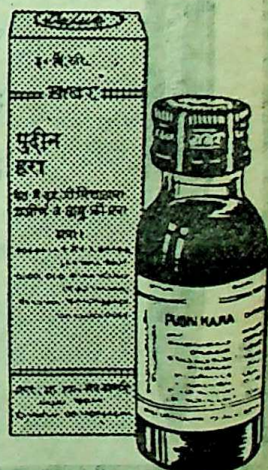
भारतीय भाषा यूनिट (सी. एस. आई. आर.),

पो. आई. डी. बिल्डिंग, हिलसाइड रोड, नई दिल्ली-12. (110012)

फोन नं. 586301, 585359

घरेलू डाक्टर पुदीन हरा

पेट में दर्द, जी मिचलाना
अजीर्ण व गैस की दवा



डाबर का उत्कृष्ट उत्पादन

धूम मचा गई

Luxor POP 

की लिखाई ने
धूम मचाई
मनमोहक रंगों
व छः आकर्षक
डिजाइनों में
विशेष रूप से
आप के लिए
बनाए गए
नवीनतम पाप साइन पैन
जमाने के साथसाथ चलिए
लक्सर पाप से लिखिए

एक्यूटेक इनकार्पोरेटेड न्यू जर्सी (अमरीका)
की तकनीकी जानकारी के अंतर्गत निर्मित.

Luxor POP PEN

SEKAI 707

जलाई (प्रथम) 1975

हाथों में होता है। ये लोग नकल करते हैं तो देखादेखी दूसरे भी कर लेते हैं।

अच्छा तो यही होगा कि उत्तर प्रदेश

में परीक्षाएं लेने का रिवाज ही समाप्त कर दिया जाए। क्या फायदा कि हर वर्ष उत्तरपुस्तिकाओं, परीक्षा भवन, उत्तर-पुस्तिकाओं को जांचने तथा परिणामों की घोषणा पर पैसा बरबाद किया जाए? जब पढ़लिख कर भी वे अनपढ़ ही रहें तो क्या लाभ है इतना पैसा खर्च करने का?

इस के स्थान पर स्कूलों और इंटर-मीडिएट कालिजों के अध्यापकों को ही मर्जी के अनुसार छात्रों को फेल या पास करने का अधिकार दे देना चाहिए। इस से नकल भी रुक जाएगी और किसी की हानि भी न होगी। शिक्षा का स्तर तो अभी भी जीरो है, इस से कम कैसे होगा?

इंति

महिलाएं भी पीछे नहीं

न्याया श्रीमत् लोक जीतने कांग्रेस के निर्णय किए गए घोषित उन न्याय नहीं का कांग्रेस का लक्ष्य चांसेलरों का 1969 मुक्ता

एक जापानी महिला द्वारा एवरेस्ट पर विजय तथा उस के कुछ दिन बाद 19,910 फुट ऊंची माकेरेवेट्ट पर भारतीय महिलाओं के एक दल की विजय से यह स्पष्ट हो गया है कि हर बड़े काम के लिए शारीरिक क्षमता की ही नहीं, मानसिक दृढ़ता की भी आवश्यकता होती है।

अब तक इस प्रकार के कामों के लिए महिलाओं को बिल्कुल अनुपयुक्त समझा जाता था। यदि कभीकभार उन्हें ऐसे स्थानों पर भेजा भी गया है तो अन्य पुरुषों के साथ। पर अब महिलाएं स्वयं ही बिना किसी पुरुष के नेतृत्व के जाने लगी हैं।

हमारे देश में अभी भी बहुत सी युवतियां बहुत से काम केवल इसी लिए छोड़ देती हैं कि वे हमेशा पुरुषों द्वारा किए जाते रहे हैं। बहुत दफा वे इस भय की शिकार हो जाती हैं कि यदि वे पुरुषों के साथ काम करेंगी तो उन के चरित्र पर लोग उंगली उठाने लगेंगे।

वास्तव में ये सब बातें निरर्थक हैं। पुरुषों के बीच, पुरुषों जैसे काम करते

हुए भी युवतियां अपने लिए विशेष और अलग स्थान बनाए रख सकती हैं।

सलीम दुर्गानी सबक सीखे

हमारे देश के युवकों में क्रिकेट खिलाड़ियों के प्रति जितना उत्साह है, उतना फिल्म अभिनेताओं व अभिनेत्रियों को छोड़ कर किसी के प्रति नहीं। शायद इसी लिए एक समय के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी सलीम दुर्गानी समयसमय पर लोकप्रियता को भुनाते रहे हैं। कुछ समय पहले वह एक फिल्म में आए थे, पर इन की बदकिस्मती कि इतना नाम होने के बावजूद फिल्म नहीं चली। क्रीम और पाउडर जैसी कितनी चीजों के विज्ञापनों को यह पहले ही अपने प्रमाणपत्र दे चुके हैं। (यह पता नहीं कितने असली, कितने नकली.)

अब इन महोदय ने शराब पीनेपिलाने का प्रचार कर के पैसा कमाना शुरू कर दिया है। हाल ही में आप ने लखनऊ में शराब की एक नई दुकान का विधिवत उद्घाटन किया है, मानो शराब पीना बड़े ही पुण्य का काम है।

वैसे ही हमारे देश के युवकों को शराब खाए जा रही है और रेस्तराओं और होटलों में इस के दौर खुले आम चलने लगे हैं। मातापिता की मेहनत की कमाई शराब के प्यालों में बहाई जा रही है। स्वास्थ्य को जो हानि हो रही है वह अलग।

इस तरह के महानुभाव भी यदि इस पर अपनी मुहर लगाने लगें तो क्या परिणाम होगा? फिर तो समाज में शराब का दौरदोरा हो जाएगा।

यह तो अच्छा हुआ कि छात्र संघर्ष समिति के सदस्यों ने इस बात का विरोध करने के लिए दुकान के सामने इतना जबरदस्त प्रदर्शन किया कि छात्रों पर पुलिस को लाठी चलानी पड़ी। आशा है, जनाब सलीम दुर्गानी इस से सबक सीखेंगे और इसे अपनी क्रिकेट की लोकप्रियता के भुगतान की अंतिम किस्त मानेंगे।

हाथों में होता है. ये लोग नकल करते हैं तो देखादेखी दूसरे भी कर लेते हैं.

अच्छा तो यही होगा कि उत्तर प्रदेश

में परीक्षाएं लेने का रिवाज ही समाप्त कर दिया जाए. क्या फायदा कि हर वर्ष उत्तरपुस्तिकाओं, परीक्षा भवन, उत्तर-पुस्तिकाओं को जांचने तथा परिणामों की घोषणा पर पैसा बरबाद किया जाए? जब पढ़लिख कर भी वे अनपढ़ ही रहें तो क्या लाभ है इतना पैसा खर्च करने का?

इस के स्थान पर स्कूलों और इंटर-मीडिएट कालिजों के अध्यापकों को ही मर्जी के अनुसार छात्रों को फेल या पास करने का अधिकार दे देना चाहिए. इस से नकल भी रुक जाएगी और किसी की हानि भी न होगी. शिक्षा का स्तर तो अभी भी जीरो है, इस से कम कैसे होगा?

महिलाएं भी पीछे नहीं

एक जापानी महिला द्वारा एवरेस्ट पर विजय तथा उस के कुछ दिन बाद 19,910 फुट ऊंची माकेरेवेट्ट पर भारतीय महिलाओं के एक दल की विजय से यह स्पष्ट हो गया है कि हर बड़े काम के लिए शारीरिक क्षमता की ही नहीं, मानसिक दृढ़ता की भी आवश्यकता होती है.

अब तक इस प्रकार के कामों के लिए महिलाओं को बिल्कुल अनुपयुक्त समझा जाता था. यदि कभीकभार उन्हें ऐसे स्थानों पर भेजा भी गया है तो अन्य पुरुषों के साथ. पर अब महिलाएं स्वयं ही बिना किसी पुरुष के नेतृत्व के जाने लगी हैं.

हमारे देश में अभी भी बहुत सी युवतियां बहुत से काम केवल इसी लिए छोड़ देती हैं कि वे हमेशा पुरुषों द्वारा किए जाते रहे हैं. बहुत दफा वे इस भय की शिकार हो जाती हैं कि यदि वे पुरुषों के साथ काम करेंगी तो उन के चरित्र पर लोग उंगली उठाने लगेंगे.

वास्तव में ये सब बातें निरर्थक हैं. पुरुषों के बीच, पुरुषों जैसे काम करते

हुए भी युवतियां अपने लिए विशेष और अलग स्थान बनाए रख सकती हैं.

सलीम दुर्गानी सबक सीखे

हमारे देश के युवकों में क्रिकेट खिलाड़ियों के प्रति जितना उत्साह है, उतना फिल्म अभिनेताओं व अभिनेत्रियों को छोड़ कर किसी के प्रति नहीं. शायद इसी लिए एक समय के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी सलीम दुर्गानी समयसमय पर लोकप्रियता को भुनाते रहे हैं. कुछ समय पहले वह एक फिल्म में आए थे, पर इन की बदकिस्मती कि इतना नाम होने के बावजूद फिल्म नहीं चली. क्रीम और पाउडर जैसी कितनी चीजों के विज्ञापनों को यह पहले ही अपने प्रमाणपत्र दे चुके हैं. (यह पता नहीं कितने असली, कितने नकली.)

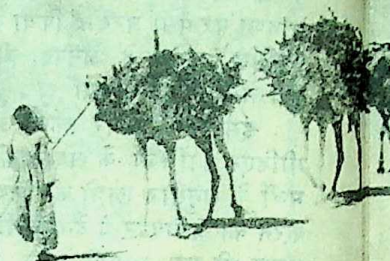
अब इन महोदय ने शराब पीनेपिलाने का प्रचार कर के पैसा कमाना शुरू कर दिया है. हाल ही में आप ने लखनऊ में शराब की एक नई दुकान का विधिवत उद्घाटन किया है, मानो शराब पीना बड़े ही पुण्य का काम है.

वैसे ही हमारे देश के युवकों को शराब खाए जा रही है और रेस्तराओं और होटलों में इस के दौर खुले आम चलने लगे हैं. मातापिता की मेहनत की कमाई शराब के प्यालों में बहाई जा रही है. स्वास्थ्य को जो हानि हो रही है वह अलग.

इस तरह के महानुभाव भी यदि इस पर अपनी मुहर लगाने लगें तो क्या परिणाम होगा? फिर तो समाज में शराब का दौरदोरा हो जाएगा.

यह तो अच्छा हुआ कि छात्र संघर्ष समिति के सदस्यों ने इस बात का विरोध करने के लिए दुकान के सामने इतना जबरदस्त प्रदर्शन किया कि छात्रों पर पुलिस को लाठी चलानी पड़ी. आशा है, जनाब सलीम दुर्गानी इस से सबक सीखेंगे और इसे अपनी क्रिकेट की लोकप्रियता के भुगतान की अंतिम किस्त मानेंगे.

सऊदी



25 मार्च, 1975 को सऊदी अरब के शाह फ़ैजल की हत्या के साथ पश्चिम एशिया के राजनैतिक परिवर्तन से एक अत्यंत योग्य एवं इस क्षेत्र का सब से अधिक धनाढ्य शासक जाता रहा। कहा जाता है कि उस की हत्या करने वाले उन के भतीजे ने यह जघन्य कृत्य अपने भाई का बदला लेने के लिए किया। यदि यह सच है, कि शाह फ़ैजल के हत्यारे भतीजे ने उस पर गोली अपने मृत भाई का बदला लेने के लिए चलाई तो कहना पड़ेगा कि शाह फ़ैजल की हत्या के बीज 1966 में देश में टेलीविजन के आगमन के साथ ही बो दिए गए थे। हो सकता है, इस हत्या के पीछे कुछ अन्य राजनैतिक अथवा व्यक्तिगत कारण भी रहे हों, किंतु यह तो निर्विवाद सत्य है कि सऊदी अरब एक ऐसा देश है, जहां के परंपराविद्ध धार्मिक वातावरण ने आधुनिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदत्त नएनए आविष्कारों को सदा संदेह की निगाह से देखा है और ऐसी ईजादों के प्रवेश को अपने देश में रोकने के लिए वहां की कट्टर धर्मपरायण जनता ने हिंसक संघर्ष भी किए हैं।

पर्यटकों के लिए दर्शनीय स्थल वहरीन स्थित एक ऐतिहासिक मसजिद।

जलाई (प्रथम) 1975

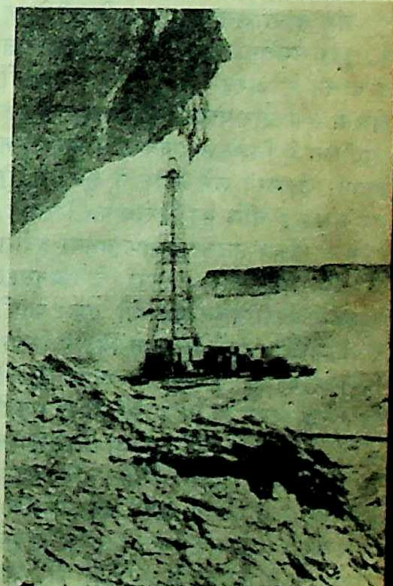


मोटरगाड़ी हो या हवाई जहाज, टेलीफोन हो या रेडियो, विज्ञान की ऐसी सभी देनों का वहां के कट्टरतावादी लोगों ने शुरूशुरू में बहुत ही विरोध किया। 1966 में जब शाह फैजल की सरकार ने देश में टेलीविजन केंद्र की स्थापना करने के अपने निर्णय को कार्यान्वित करना शुरू किया, तो एक काफी तगड़ा संघर्ष देश में उठ खड़ा हुआ, जो टेलीविजन जैसी शैतानी उपज को अपने देश में नहीं आने देना चाहता था। इसी संघर्ष के दौरान शाह फैजल का एक भतीजा टेलीविजन के आगमन का विरोध करते हुए पुलिस की गोली का निशाना बन गया। 25 मार्च, 1975 को शाह फैजल की हत्या करने वाला उन का भतीजा उसी व्यक्ति का छोटा भाई है।

सातवीं शताब्दी में हजरत मुहम्मद द्वारा इस्लाम के नए धर्म के प्रवर्तन के बाद इस धर्म की कई शाखाएं हो गईं। इन में से सुन्नी तथा शिया मुख्य शाखाएं हैं। सऊदी अरब की अधिकांश जनता सुन्नी संप्रदाय से संबंधित है। वैसे तो सुन्नी संप्रदाय के लोग कट्टरवादिता में विश्वास करते ही हैं। किंतु अठारहवीं शताब्दी में

**संसार के सब से बड़े तेल क्षेत्रों में से एक
पूर्वी सऊदी अरब का शेंदगम।**

**कुरान की मान्यताएं और
तेल की राजनीति जिस
के इतिहास के अध्याय
बनते रहे हैं...**



वर्तमान सऊदी अरब की शाही राजधानी रियाद में मुहम्मद इब्न अब्दुल वहाब नामक व्यक्ति ने शुद्धिकरण का एक ऐसा आंदोलन चलाया, जिस का मूल मंत्र था 'वापस हजरत मुहम्मद को' और जिस का उद्देश्य था कुरान शरीफ तथा हदीस (हजरत मुहम्मद द्वारा स्थापित परंपराओं का संकलन) में निर्दिष्ट आचारविचार संबंधी सीखों का अक्षरशः पालन तथा हर नए विचार एवं आविष्कार का खंडन. गत शताब्दियों में मुसलिम धर्म के अनुयायी विभिन्न प्रदेशों के लोगों तथा वहां पर पनपे धर्मों तथा परंपराओं के संपर्क में आए थे. इस कारण उन सब का प्रभाव ग्रहण करते हुए इसलाम धर्म में कई ऐसे तत्व आ गए थे जो हजरत मुहम्मद द्वारा प्रणीत कुरान शरीफ में सम्मिलित नहीं थे. किंतु अब्दुल वहाब का यह तर्क था कि ऐसे सभी तत्व धर्म विरुद्ध हैं और एक सच्चे मुसलमान को अमान्य हैं. उन के अनुसार सभी मुसलमानों को हजरत मुहम्मद की आद्य परंपराओं के अनुसार चलना चाहिए.

विज्ञान का विरोध

तत्कालीन रियाद राज्य के सऊद राजवंश द्वारा अब्दुल वहाब के आंदोलन को पूरा समर्थन दिए जाने के बाद इस आंदोलन ने अरब प्रायद्वीप के मध्यवर्ती क्षेत्र में खूब जोर पकड़ा. शुद्धिकरण के इस आंदोलन में विश्वास रखने वाले मुसलमान वहाबी कहलाने लगे और वे शुरू से ही हर उस नई चीज का विरोध करते रहे हैं, जिस का जिक्र कुरान शरीफ अथवा हदीस में नहीं है. उसी परंपरा के अनुसार 1966 में टेलीविजन का भी एक काफी प्रभावशाली वहाबी तबके ने विरोध किया, जिस के कारण कुछ हिंसक घटनाएं भी हुईं. यह अलग बात है कि आज सऊदी अरब में रेडियो की अपेक्षा टेलीविजन अधिक लोकप्रिय है, हालांकि रेडियो वहां टेलीविजन से काफी पहले आ चुका था. जहां अभी पीछे तक सऊदी अरब में कुल रेडियो सेटों की संख्या 90,000 थी, वहां

टेलीविजनों की संख्या सवा लाख तक पहुंच चुकी थी. इस का एक कारण शायद यह हो सकता है कि विशुद्ध इसलामी परंपराओं के अनुसार रेडियो कार्यक्रमों में संगीत को स्थान नहीं दिया जाता जब कि टेलीविजन पर आम दर्शक को और कुछ नहीं तो चित्र देख पाने का आनंद तो मिल ही जाता है.

इतिहास के पहलू

सऊद राजवंश अट्टारहवीं शताब्दी से ही अरब प्रायद्वीप के मध्यवर्ती क्षेत्र में राज्य करता चला आ रहा है. गत शताब्दी के अंतिम दशक को छोड़ प्रायः निरंतर ही इसी राजवंश का रियाद नगर के आसपास के इलाके पर प्रभुत्व बना रहा. शाह फैजल के पिता इब्न सऊद ने जब होश संभाला तो रियाद की राज्य लक्ष्मी विरोधियों के हाथ में जा चुकी थी. लेकिन यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही. अपनी दूरदर्शिता, शूरवीरता और लगन के फलस्वरूप इब्न सऊद शीघ्र ही रियाद पर पुनः अपना प्रभुत्व जमाने में सफल हो गया. इस शताब्दी के शुरू में रेगिस्तानी ढूँहों और वेहद गर्मी के इस प्रदेश में इब्न सऊद की महत्वाकांक्षा समा नहीं पा रही थी. इब्न सऊद पूरे अरब प्रायद्वीप को अपने प्रभुत्व में लाने के लिए कटिबद्ध था.

अरब प्रायद्वीप का अधिकांश इलाका विस्तृत रेगिस्तान से ढंका हुआ है, जहां मानव आवादी की अधिक गुंजाइश नहीं है. जहांतहां बिखरे नखलिस्तानों में तथा आसपास के कुछ पठारी प्रदेशों में थोड़ी-बहुत फसल जरूर हो जाती है, किंतु अधिकांश लोग ऊंट तथा भेड़बकरियां पाल कर ही अपना जीवनयापन करते हैं. इस शताब्दी के शुरू तक भी यहां के लोग विभिन्न कबीलों में बंटे हुए थे जो प्रायः आपस में लड़तेझगड़ते रहते थे. आर्थिक विपन्नता तथा राजनीतिक विखराव के ऐसे वातावरण में इब्न सऊद द्वारा एक भरेपूरे तथा समृद्धिशाली राज्य का गठन करना एक बहुत ही बड़ी उपलब्धि थी. इब्न सऊद ने अपने प्रयत्नों से खानाबदोश

अबकक के निकट
रैगिस्तान में टेंट
गाड़ कर बसा
हुआ एक अरबी
परिवार.



कबीलों को स्थायी रूप से विभिन्न क्षेत्रों में बसा कर उन्हें कृषि कार्यों में लगाया और अलगअलग कबीलों के प्रति वफादार लोगों में अरब राष्ट्रीयता का मंत्र फूँका.

इब्न सऊद की पत्नियों की संख्या 300 बताई जाती है, जिन से उन की 106 संतानें—52 पुत्र और 54 पुत्रियां—हुईं. वैसे तो सामंतवादी अरब परंपराओं को देखते हुए किसी बादशाह की इतनी पत्नियों का होना कोई अनहोनी बात नहीं है, किंतु इस तर्क में काफी वजन लगता है कि इब्न सऊद ने अधिकांश शादियां राजनीतिक कारणों से की होंगी. तत्कालीन अरब प्रदेश विभिन्न कबीलों में बंटा हुआ था और ऐसे कबीलियाई समाज को एक लड़ी में पिरोने के लिए यह आवश्यक था कि विभिन्न कबीलों के सरदारों का विश्वास जीता जाए और इब्न सऊद ने यह काम विभिन्न कबीलों की लड़कियों को अपनी पत्नियों के रूप में स्वीकार कर के किया. जिस कर्मठता और लग्न से इब्न सऊद ने थोड़ी सी अवधि में अपने मामूली से राज्य की सीमाएं इतनी विस्तृत कर लीं कि वे एक ओर तो फारस की खाड़ी और दूसरी ओर लाल सागर को छूने लगीं, उस से ऐसा मानने को मन नहीं करता कि इब्न सऊद ने इतनी सारी शादियां केवल ऐयाशी के विचार से की होंगी.

1926 तक इब्न सऊद का राज्य केवल रियाद के आसपास के नज्द नामक प्रदेश तक ही सीमित था. उस वर्ष वह लाल

सागर से लगते हेजाज प्रदेश को भी अपने प्रभुत्व में लाने में सफल हो गए. इसी हेजाज प्रदेश में मुसलिम धर्म के दो पवित्रतम तीर्थ स्थल मक्का और मदीना स्थित हैं. बाद में जब इन दोनों प्रदेशों को मिला कर सऊदी अरब की दागवेल डाली गई तो नज्द प्रदेश का रियाद नामक नगर नए देश की शाही राजधानी बना और हेजाज प्रदेश की लाल सागर पर स्थित जद्दा नामक बंदरगाह को नए देश की प्रशासनिक राजधानी का स्तव प्रदान किया गया.

1932 में विधिवत रूप से सऊदी अरब देश विश्व के मानचित्र पर चमक उठा. नज्द और हेजाज प्रदेशों के अतिरिक्त आसपास के कुछ और इलाके भी इस नए राज्य में शामिल कर लिए गए और अरब प्रायद्वीप का यह सब से बड़ा नया राज्य आधुनिक संसार में आत्मविश्वास के साथ सांस लेने लगा. इस समय सऊदी अरब का कुल क्षेत्रफल आठ लाख वर्ग मील से अधिक है तथा यहां की जनसंख्या करीब 90 लाख है. मक्कामदीना पर प्रभुत्व हो जाने के बाद सऊदी अरब के शाह इब्न सऊद को वहां पर विश्व भर से आने वाले मुसलमान तीर्थ यात्रियों से काफी आय तो अवश्य होने लगी, किंतु शताब्दियों से पिछड़े और मानव प्रगति के विभिन्न आयामों से अछूते पड़े इस क्षेत्र के विकास के लिए यह धनराशि पर्याप्त नहीं थी. 1938 में इस प्रदेश में पेट्रोलियम का पता चलने के बाद इस देश के दिन फिरे और दिन प्रति दिन तेल

की राज्यद्वीप से सऊदी अरब के खजाने भरने लगे। 1945 के पहले यह क्षेत्र उत्पादन उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया और उम्मी अनुपात से इस देश का प्रगति का माप भी प्रशस्त होता चला गया।

करीब 12 लाख वर्ग मील क्षेत्रफल में फैला अरब प्रायद्वीप तीन ओर से फारस की खाड़ी, हिंद महासागर तथा लाल सागर के जल प्रदेशों से घिरा हुआ है। अरब प्रायद्वीप का दो तिहाई से भी अधिक हिस्सा केवल सऊदी अरब के अंतर्गत आता है तथा पांच लाख वर्ग मील क्षेत्रफल में फैले 'ख़वअलखाली' (शुन्य प्रदेश) नामक अरब मरुस्थल का अधिकांश भाग भी इसी देश का अंग है। अरब प्रायद्वीप के शेष प्रायः सभी देशों के साथ सऊदी अरब की सीमाएं मिलती हैं। इस के पश्चिम में यमन अरब गणराज्य तथा लाल सागर है तो पूर्व में फारस की खाड़ी तथा संयुक्त अरब अमीरात। उत्तर में इस की सीमाएं युर्दान (जोर्डन), इराक और कुवैत को छूती हैं तो दक्षिण में ओमन की सल्तनत तथा यमन जन लोक-तन्त्रात्मक गणराज्य इस के पड़ोसी हैं।

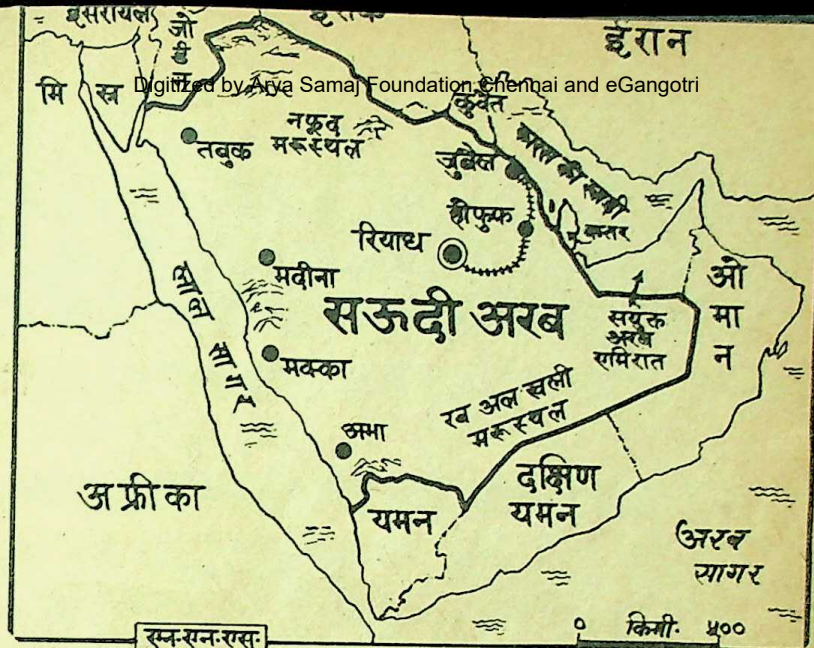
पश्चिम से सहायता

1953 में 73 वर्ष की आयु में सऊदी अरब के जन्मदाता इब्न सऊद का देहांत होने से पूर्व वह अपने देश को राजनीतिक तथा प्रशासनिक स्थायित्व प्रदान कर चुके थे, तथा शताब्दियों से उपेक्षित पड़े मरु प्रदेश से प्राप्त तेल राजस्व इस नवोदित राष्ट्र की शिराओं में नया खून भरने लगा था। इब्न सऊद यह समझते थे कि आधुनिक युग में वह बिना विज्ञान एवं तकनीकी जानकारी के अपने देश की आर्थिक प्रगति नहीं कर सकते। सऊदी अरब के विशेष धार्मिक एवं सामाजिक तानेबाने को बनाए रखते हुए भी आर्थिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में उन्होंने पश्चिमी देशों से आवश्यक सहयोग और सहायता प्राप्त करने में झिझक महसूस नहीं की। वैसे सऊदी अरब के रेत के टीलों के गर्भ में छिपे विस्तृत तेल भंडारों ने इस देश

को भी ऐसा स्तब्ध प्रदान कर दिया था कि उद्योगशील पश्चिम, जिस के उद्योगों का चक्का तेल से ही चलता है, सहज सऊदी अरब को हर प्रकार की सहायता देने को तैयार हो गया।

इब्न सऊद की मृत्यु के बाद 1953 में उन का सबसे बड़ा जीवित पुत्र शाह सऊद सऊदी अरब का वादशाह बना और इब्न सऊद का दूसरा पुत्र फैजल युवराज घोषित किया गया। किंतु शाह सऊद के राज्यकाल में तेल से बढ़ती आमदनी को देश की प्रगति पर इतना इस्तेमाल नहीं किया गया जितना कि राज परिवार के लोगों की सुखसुविधा पर। इस स्थिति से असंतुष्ट सऊदी अरब के कर्णधारों ने 1958 में एक नई युक्ति निकाली। अब तक सऊदी अरब का शाह लगभग निरंकुश शासक के रूप में ही काम करता था। 1958 में सऊदी अरब में पहली बार मंत्री मंडल का गठन किया गया और प्रधान मंत्री को काफी अधिकार दिए गए। देश के प्रथम प्रधान मंत्री युवराज फैजल बने। किंतु शाह और प्रधान मंत्री में सामंजस्य न हो पाने के कारण स्थिति में कुछ अधिक सुधार न हो पाया। अंततः 1964 में शाह सऊद को अपदस्थ कर दिया गया और उन के स्थान पर युवराज फैजल शाह बने। शाह बनने के बाद फैजल अंत तक देश के प्रधान मंत्री भी बने रहे। इस प्रकार लगभग समूची राज्य शक्ति का संकेंद्रण शाह फैजल के हाथ में हो गया था। किंतु एक दशक के अपने राज्यकाल में उन्होंने इस शक्ति का उपयोग अपने देश की समृद्धि तथा प्रतिष्ठा बढ़ाने में ही किया।

4,000 से भी अधिक व्यक्तियों वाले लंबेचोड़े सऊदी राज परिवार पर देश की आय का काफी बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता था। शाह फैजल ने राज परिवार पर होने वाली फिजलखर्ची पर अंकुश लगाया तथा राजकुमारों आदि के भत्तों में, जिस का अधिकांश भाग ऐयाशी पर ही खर्च होता था, आवश्यक कटौती कर दी। इस से राज परिवार से संबंधित कुछ लोगों के



सऊदी अरब का मानचित्र

मन में रंजिश भी बड़ी. किंतु शाह फैजल के प्रयास सदा अपने समूचे देश को प्रगति पथ पर आगे ले जाने के ही रहे. न केवल इसलिए कि सऊदी अरब के पास आज विश्व में सब से अधिक व्यापक तेल भंडार हैं या पश्चिम के उद्योगशील देशों की तेल की आवश्यकता का बहुत बड़ा हिस्सा इसी देश के तेल कूपों से पूरा होता है, बल्कि शाह फैजल की नीतियों की वजह से भी सऊदी अरब ने पश्चिम एशिया में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है. मृत्युपर्यंत शाह फैजल अमरीका और यूरोप के राजनीतिक प्रेक्षकों की नजर में पश्चिम एशिया का सब से अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति बना रहा. अरब जगत का वह एक ऐसा अगुआ था, जिस का मुंह सलाह के लिए नहीं तो कम से कम आर्थिक सहायता के लिए तो इस क्षेत्र के सभी मुसलिम देश जोहते थे.

शाह फैजल की हत्या के बाद सऊदी अरब की गद्दी पर उन के छोटे भाई शाह खालिद बैठे, जिन्होंने प्रधान मंत्री का पद अपने पास न रख कर अपने अनुज युवराज

फाहद को यह शक्तिशाली पद प्रदान किया है. यह तो भविष्य ही बताएगा कि ये दोनों भाई अपने पिता इब्न सऊद और बड़े भाई फैजल द्वारा प्रणीत सऊदी अरब को समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाने के कार्य को कहाँ तक आगे ले जा पाते हैं. यों इतना स्पष्ट है कि सऊदी अरब की प्रगति एवं विकास के लिए अभी बहुत कुछ होना है. देश के बहुत कम इलाके में सड़क तथा रेल मार्ग उपलब्ध हैं. इस समय यद्यपि छः लाख बच्चे स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, किंतु इस क्षेत्र में अभी भी काफी कुछ किया जाना है. उस से भी अधिक आवश्यकता इस बात की है कि तेल उत्पादन से होने वाली बेपनाह आमदनी को उद्योग आदि की स्थापना कर के देश की अर्थव्यवस्था को एक वैविध्यपूर्ण आर्थिक आधार दिया जाए. हमारे देश की राजधानी दिल्ली की आबादी से मात्र दोगुनी जनसंख्या वाले इस देश के पास आज इतना पैसा है कि उस के उपयुक्त उपयोग द्वारा यह देश प्रगति के उच्चतम शिखर छू सकता है.

रेल सेवा

देश की सब से बड़ी सेवा इकाई में इस प्रकार

आज इस बढ़ती हुई बेकारी में नौकरी पाना कितना मुश्किल है—इस समस्या से सभी अच्छी तरह परिचित हैं। इस समस्या के कारण प्रत्येक नियोजक अपनेअपने ढंग से उम्मीदवार की मजबूरी का कुछ न कुछ फायदा तो अवश्य उठाता है। वैसे तो नौकरी अपनेआप में एक मजबूरी है, किंतु रेल सेवा आयोग ने सीमा को लांघ दिया है। आज रेल सेवा आयोग द्वारा नौकरी प्राप्त करना मानो इंद्रासन मिलने जैसा है।

रेल सेवा आयोग की कार्यविधि इतनी लंबी होती है कि उम्मीदवार धैर्य खो बैठता है और अपनेआप को अयोग्य समझने लगता है। यहां एक नौकरी के लिए आम तौर से दोचार साल तक लग जाते हैं, और इतने लंबे समय तक प्रतीक्षा करना उम्मीदवार के लिए बहुत मुश्किल होता है। इस आयोग द्वारा नौकरी के लिए सब से पहले दो अथवा दो रुपए पचास पैसे का फार्म भरवाया जाता है, और जिसे सुरक्षित पहुंचने के लिए रजिस्टर्ड डाक द्वारा भिजवाना जरूरी होता है। इस फार्म के साथ उम्मीदवार के तीन हाल के खिंचे फोटो, सभी प्रमाणपत्रों की सत्य प्रतिलिपियां और दो त्रिकाफे, जिन में से एक टिकट लगा होना चाहिए, भिजवाने पड़ते हैं। इस तरह फार्म भरने में एक बार का खर्च करीब

12-13 रुपए आता है।

फार्म भरने के बाद छः से आठ माह तक उम्मीदवार की कोई खबर नहीं ली जाती। उम्मीदवार जब यह भूल जाता है कि उस ने कभी फार्म भरा था, तब उस के पास लिखित परीक्षा के लिए बुलावा आता है। उसे देख कर फिर नया सिरदर्द हो जाता है, क्योंकि लिखित परीक्षा का केंद्र उस के शहर से काफी दूर होता है, जिस के लिए किराया अथवा कोई फ्री पास नहीं दिया जाता। यदि इस दूरी को 500 कि. मी. भी मान लिया जाए तो दोनों तरफ का किराया 43 रुपए व अन्य खर्च करीब पच्चीस रुपए होते हैं। अब यदि लिखित परीक्षा में निकल गए तो साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। यह साक्षात्कार अधिकतर प्रधान कार्यालयों (जो बंबई, इलाहाबाद, कलकत्ता और मद्रास में हैं) में होता है। यदि इस दूरी को भी 500 कि. मी. मान लिया जाए तो किराया व अन्य खर्च कुल 68 रुपए हुए।

ये सारी बातें तो उम्मीदवार किसी तरह भुगत लेता है, किंतु वास्तविक परेशानी तो आयोग द्वारा भिजवाए गए परिणाम के आने पर होती है। आयोग द्वारा भेजा गया परिणाम उम्मीदवार को एक हास्यास्पद स्थिति में डाल देता है। हर परिणाम के निर्धारित रूप हैं, यथा—

आयोग



भ्रष्टाचार व अकर्मण्यता क्यों बढ़ती जा रही है?

1. आप लिखित परीक्षा/साक्षात्कार में फेल हो गए, आप के पासपोर्ट साइज फोटो वापस भेजे जा रहे हैं.

2. आयोग द्वारा आप के प्रार्थनापत्र पर पूर्ण विचार किया गया किंतु दुख के साथ सूचित किया जाता है, यह रद्द कर दिया गया. आप के पासपोर्ट साइज फोटो वापस भेजे जा रहे हैं.

3. आप ने लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में अधिक अंक नहीं प्राप्त किए हैं, किंतु आप का नाम लिस्ट में रखा गया है.

4. आप साक्षात्कार में पास हो गए हैं, रेलवे द्वारा निश्चित समय पर आप की नियुक्ति की जाएगी, यदि आप योग्य समझे गए.

प्रत्येक परिणाम के नीचे एक और टिप्पणी रहती है, जिस के अनुसार उम्मीदवार द्वारा किए गए पत्रव्यवहार पर ध्यान नहीं दिया जाएगा. इस तरह उम्मीदवार विवश हो कर रह जाता है.

ऊपर दिए गए संख्या 1 और 2 के परिणामों पर तो उम्मीदवार सब्र कर लेता है, किंतु संख्या 3 और 4 से वह यह निश्चित नहीं कर सकता कि उस का क्या होगा. सब से ज्यादा मुसीबत उस उम्मीदवार की होती है जिसे संख्या 4 का परिणाम दिया जाता है, क्योंकि वह यह नहीं समझ पाता कि इतने सब

मुक्तता

चक्करों के बाद योग्यता की और कौन सी परीक्षा होगी. परिणाम संख्या 3 और 4 के अनुसार जो सूचियां बनाई जाती हैं उन में नियुक्ति के लिए 3 साल तक का समय रहता है. अब यह उम्मीदवार की इच्छा है कि वह 3 साल का इंतजार करता रहे. सूची बन जाने के बाद विभिन्न रेल मंडलों में जगह खाली होने पर (या तो पुराने लोगों के सेवानिवृत्त होने पर) उम्मीदवारों की नियुक्ति की जाती है. अतः अपनी नौकरी के लिए दूसरों की नौकरी समाप्त होने की दुआ मांगिए.

अन्य विभागों में साक्षात्कार में पास होने पर नियुक्तिपत्र साथ भिजवा दिया जाता है, या नियुक्ति शीघ्र कर दी जाती है, किंतु रेल सेवा आयोग के साक्षात्कार में पास होने पर भी नौकरी मिलने की कोई गारंटी नहीं होती. कई उम्मीदवार ऐसे होते हैं जो पास हो जाने के बावजूद नियुक्त नहीं हो पाते.

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि साक्षात्कार का परिणाम आने पर उम्मीदवार अपने सभी मित्रों व रिश्तेदारों को बता देता है कि रेलवे में उस का चयन हो चुका है तथा शीघ्र ही नौकरी लग जाएगी. किंतु जब सालसाल भर नियुक्ति नहीं हो पाती तो उस की बड़ी हास्यास्पद स्थिति हो जाती है और उसे अपने परि-

चित्तों के प्रश्नों का जवाब देना मुश्किल हो जाता है। इस दौरान रेलवे में नियुक्ति की आशा में वह अन्य कहीं ठीक से काम भी नहीं कर पाता है।

इस कार्यप्रणाली में सब से ज्यादा परेशानी प्राविधिक उम्मीदवारों, डिग्री और डिप्लोमाधारियों को होती है। ऐसे उम्मीदवारों को जहां भी नियुक्त किया जाता है, वहां एक निश्चित समय के लिए बंधित किया जाता है। यानी किसी फर्म में नियुक्त होने पर उन्हें तीन से पांच

17-8-74 को आगरा में हुआ था और 3-10-74 को मेरे पास संख्या 4 का परिणाम आया था। इस के एक माह बाद यानी नवंबर, 1974 में प्रमंडलीय कार्यालय बंबई से नियुक्ति के लिए चरित्र प्रमाण पत्र मंगाए गए थे। किंतु अप्रैल, 1975 तक नियुक्ति नहीं हो सकी है और शायद अगले छः माह तक भी कोई उम्मीद नहीं दिखती। दूसरी ओर, सिर्फ जून, 1974 से मार्च, 1975 तक की ही अवधि में दो अन्य जगह (1) वेलाडील आयरन और, बस्तर और (2) पावर प्रोजेक्ट इंजीनियरिंग डिबिजन, बंबई में मेरी नियुक्ति हो चुकी है।

मेरे एक डिप्लोमाधारी मित्र हैं। उन्होंने रेल सेवा आयोग, बंबई में मोटरमैन के पद के लिए आवेदन किया था, किंतु दुर्भाग्यवश उन्हें संख्या 3 का परिणाम मिल गया और वह बेचारे बंबई का चक्कर लगा लगा कर परेशान हो चुके हैं। इस चक्कर में उन्होंने राज्य सिचाई विभाग में सहायक ड्राफ्टमैन के पद पर हुई नियुक्ति स्वीकार नहीं की। रेल सेवा आयोग के फार्म में एक टिप्पणी लिखी रहती है कि सिर्फ 2 रुपए देने से आप की नौकरी नहीं लग सकती है, और इस टिप्पणी का वे पूरी तरह उपयोग करते हैं।

अब आयोग द्वारा ली जाने वाली लिखित परीक्षाओं पर ध्यान दें। ये परीक्षाएं अक्सर दूर के केंद्रों में होती हैं और वहां नकल बेहद चलती है। सन 1970 में मैं ट्रेन एक्जामिनेर के पद के लिए लिखित परीक्षा देने झांसी गया था। वहां नकल कराने में रेलवे के कर्मचारी ही अग्रणी थे। अभी हाल में असिस्टेंट चार्जमैन के पद के लिए रेल सेवा आयोग, इलाहाबाद द्वारा ली गई लिखित परीक्षा में मैं और मेरे एक साथी सम्मिलित हुए थे। परीक्षा इलाहाबाद में ही हुई थी। वहां होने वाली नकल देख कर हम दोनों ही हैरान थे।

अब यदि इतने चक्करों के बाद भी नौकरी न मिले तो उम्मीदवार के दिल पर क्या गुजरती होगी, यह तो कोई भुक्तभोगी ही बता सकता है।

अकर्मण्यता

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नहीं है, वरत अपने को अज्ञानी जानना ही उस का विशेष अधिकार है।

—डा. राधाकृष्णन

अकर्मण्यता मृत्यु है।

—मुसोलिनी

वर्ष तक उसी फर्म में काम करना पड़ता है। किंतु रेलवे की नौकरी की आशा में वे बंधन स्वीकार नहीं करते और इस प्रकार अच्छी-अच्छी नौकरियों से हाथ धो बैठते हैं। इस दौरान उन का कितने रुपए मासिक का नुकसान होता है, इस का हिसाब लगाना कठिन है।

मैं स्वयं एक डिप्लोमाधारी हूँ तथा उपर्युक्त मुसीबतों को भुगता हुआ हूँ। रेल सेवा आयोग में करीब तीनचार बार प्रार्थनापत्र दे चुका हूँ। मैं ने दिसंबर, 1973 में सहायक आपरेटर के पद के लिए फार्म भरा था। इस का साक्षात्कार



मुसलिम समाज में

बुजुर्ग

लेख

मोहम्मद इब्राहीम

अपना दायित्व कहां तक निभा रहे हैं?

मुसलिम समाज में बुजुर्गों का विशेष महत्त्व है। वे इस कौम के महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं। उन के ही इशारों पर हर कार्य होता है।

आज का हर नौजवान भविष्य में वृद्ध होगा और तब उस के पास क्या रहेगा? वही धर्म की घिसीपिटी बातें, जिन में वह बचपन से नौजवानी तक बंधा रहा।

वैसे भी आज के बुजुर्ग विरासत में मिली चीजों का बड़े शान से उपयोग कर रहे हैं। बचपन में जो जोरजबरदस्ती उन के साथ की गई होती है, उस की कसर वे वृद्ध होने के बाद नौजवानों से प्रतिरोध स्वरूप निकालते हैं।

हमारे शहर में एक घर है, जहां भाइयों का संयुक्त परिवार है। उस घर में शादी के योग्य लड़कालड़की थे। उन लोगों ने अपने लड़कीलड़के के लिए योग्य वरवधू ढूंढे, पर उन्हें कोई रिश्ता जंचा नहीं। असल अड़चन थी देहेज की। अतः ऐसी परिस्थिति में उन के पास एक ही उपाय था, यानी चचेरे भाई और बहन की शादी।

उस लड़के ने पहले तो विरोध किया, पर अंत में अपने बुजुर्गों के आगे उस ने सिर झुका दिया।

हम अपने कौम की युवकयुवतियों को कब तक ऐसी कीचड़ में घकेलते रहेंगे? कब हमारे बुजुर्गों को होश आएगा?

इन लोगों ने स्थिति को ऐसा बिगाड़ कर रख दिया है कि उसे सुधारना प्रयास करना असंभव हो गया है। आप किसी भी मुसलिम के घर में चले जाइए, वहां मांवाप पान की गिलौरी दबाए अपने बच्चों को यही सीख देते मिलेंगे, "इसलाम धर्म सर्वश्रेष्ठ है। आज तक इस धर्म में कोई बुराई पैदा नहीं हुई। हजारों साल पहले जो कानून बने थे, वे आज भी उचित हैं।" फिर उसे असलियत का रंग देने के लिए गप्प भरी एक कहानी सुनाएंगे। यह हर घर की रातदिन की दास्तां है। और फिर, सवेरे जब वे मदरसे जाएंगे तो वहां के मौलाना पट्टी पढ़ाएंगे। ऐसे में नन्हें पौधे मुरझाएंगे नहीं तो क्या हरे रहेंगे?

हमारे बुजुर्ग, जिन्हें समाज का असली दायित्व संभालना है, उलटी किस्म के दायित्व संभाल रहे हैं। कौम में अच्छे युवकयुवतियों का भविष्य वे संवारने के बजाए बिगाड़ रहे हैं।

वे कहेंगे, "सात काम छोड़ दीन के कामों को प्राथमिकता दो।" यह भी कोई तुक है। आज के व्यस्त युग में, जहां हर वक्त भागदौड़ मची हुई है, अगर मिल में काम करने वाला मजदूर अपने काम से तीन घंटे निकाल कर प्रवचन में गुजार दे तो उस की क्या स्थिति होगी? उस के घर में जलता हुआ चूल्हा बुझ जाएगा। उस के बीबीवच्चे भूखों मर जाएंगे। बात यहीं नहीं रुकती। वे कहेंगे, "बड़े काफिर हो गए हो। रोजानमाज छोड़ दी। अरे, जिस ने सात काम छोड़ कर रोजानमाज अदा की, उस के दिल की हर मुराद पूरी होगी। खोई हुई चीज मिल जाएगी। इन सब में वह ताकत है।"

हमारे एक दोस्त हैं। उन के बुजुर्ग उन्हें ऐसे ही काम के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। एक बार उन्होंने शायद किसी दरगाह में मन्नत मान ली। पर पांच माह बीत गए, उन की मन्नत पूरी होने से रही। उलटे जिस चीज के लिए उन्होंने उस दरगाह में मांग की थी, उस में नुकसान हुआ। अतः खीझ आना स्वाभा-

विक है। तब उन्होंने इस से तोबा की। आज हमारे समाज में जो उथलपुथल मची है, वह ऐसे ही बुजुर्गों के कारण, हमारे समाज की गिरावट का कारण ये बुजुर्ग हैं। इन्हीं बुजुर्गों के कारण कहीं झंटे होते हैं, तो कहीं इमाम के प्रश्न को ले कर झगड़े। इन दंगों और झगड़ों में जान गंवाता है धर्म का अफीम गुटका हुआ उन्मादी मुसलिम युवक।

युवकों का पिछलगूपन

इन युवकों के दिलदिमाग बुजुर्गों से बंधे हैं। इन के मांवाप जिस लड़की को पसंद करें, इन्हें मंजूर। जितनी दहेज की मांग करें, मंजूर। अगर शादी के बाद मांवाप आने वाली से रुष्ट हो कर सपूत से कहें कि "बेटा, दुलहन बदतमीज है, तलाक दे दो," तो ये झट तलाक देने को तैयार रहेंगे। आखिर इन का जाता क्या है! सिर्फ तीन शब्द तो कहने हैं, एक गई, दूसरी आएगी। आखिर चार शादियों का रिवाज है। चारों को एक साथ बिठा कर खिलाना थोड़े है? अगर चारों अपने हक के लिए लड़ें तो बुजुर्गों के साथ उस युवक का भी मलीदा निकल जाएगा।

मांवाप की चारदीवारी से निकले युवकों को इतना भी दिमाग नहीं है कि वे सचाई के चश्मे से झांक कर वर्तमान को देखें। मांवाप तो कहते हैं, कुएं में कूदो। मगर ये युवक भी बुजुर्ग होने के बाद अपने बेटों से इसी किस्म का सलूक करेंगे। इस कौम के हर युवक को चाहिए कि वह इस किस्म का पिछलगूपन छोड़ कर अपना अलग व्यक्तित्व बनाए, जो प्रशंसा के काबिल हो। आखिर कल इन्हीं को इस समाज का दायित्व संभालना है।

वैसे भी आज के बुजुर्ग कोई अच्छा कार्य नहीं कर रहे हैं। वे विरासत में मिली चीजों का उपयोग शान से कर रहे हैं। यही कारण है हमारे पिछड़ेपन का। और तो और, हमारे खूबसूरत बुजुर्ग इस प्राचीन देश को ही अपना घर मानने को तैयार नहीं हैं। कोई मदीना की, तो कोई मक्के की शान कहे तो इन की आंखें डब-

डबा जाती हैं। सीना कौमी शान से तन जाता है। अगर उन्हें बताएं कि नेफा में किस तरह हमारे सैनिकों ने देश को खातिर अपनी जानें गंवाईं अथवा कश्मीर में हमारे बेटे भाइयों ने देश और हमारे लिए कैसे जानें गंवाईं, तो वे हमदर्दी दिखाना तो दूर, बात को ही गोल कर जाएंगे। कहेंगे, "सरकार का काम है, वही जाने।"

हज पर फिजूलखर्ची

फिर हम इन वृद्धों से कैसे उम्मीद करें कि ये इस देश से लगाव की भावना हमारे दिल में भरेंगे। आज का मुसलिम युवक जो गलतसलत बातें सोच रहा है, उस की जड़ में हमारे वृद्ध दादादादी और मांवाप की ही सीख का असर है। ये हमारे लगाव की भावना मक्कामदीना से जोड़ते हैं। कहेंगे, "बेटे, जिदगी में एक बार हज जरूर करना। हज करने से फायदा यह है कि तुम खुदा के घर हो कर आ जाओगे। सारे पाप धुल जाएंगे और तुम्हारी चालढाल में फर्क आ जाएगा। आम मुसलमानों से तुम ऊंचे हो जाओगे।" इसलिए आज का मुसलिम हज करने के लिए पेट काट कर पैसे जमा करता है। एक आंकड़े के अनुसार, दोतीन लाख मुसलिम भारत सरकार के पास आवेदन करते हैं कि हज में जाने के लिए पासपोर्ट और वीसा की आवश्यकता है।

यह हमारे कौम की एक अच्छी तस्वीर है। ये ही पांचदस हजार रुपए वे बुजुर्ग अपने काम की तरक्की में लगा दें तो भविष्य का नक्शा बदल जाए। हज कर लेने से हमारे बुजुर्गों को क्या स्थायी

शांति मिलती है? शायद नहीं। बल्कि अशांति बढ़ जाती है। किम का माल हड़प लू, वहां से आन के बाद यही दिचार उन के मन को तंग करता रहता है।

जो थोड़ेबहुत लोग धर्म के संकीर्ण विचारों को नहीं मानते, उन्हें डराने का हमारे बुजुर्गों ने नया तरीका ईजाद किया है। वर्षों से चली आ रही कहानी को वे अपने बेटे और बेटियों को यों सुनाएंगे, "बेटे, जिस ने जिदगी में रोजा-नमाज अदा नहीं की, जिसे दीन के बारे में कुछ ज्ञान नहीं, उसे मरने के बाद जन्नत से उतरे फरिश्ते कब्र में जगाएंगे, कोड़े मार कर उस के सारे गुनाह कबूल कराएंगे।" वे इतने तक ही नहीं रहेंगे, वे कहेंगे, "क्यामत के रोज एकएक कब्र से हजारों मुर्दे निकल कर अपने गुनाहों का हिसाब देंगे।"

अपने उन बुजुर्गों से एक सवाल है। अगर वे अपने बेटों और बेटियों, पोतों और पोतियों को सुधार नहीं सकते तो बिगाड़ते क्यों हैं? धर्म की भयानक बातें कह कर उन का मस्तिष्क विकृत क्यों करते हैं? जो चीज जिदगी में नहीं होती, वह मरने के बाद असंभव है। यह तो बुजुर्गों का पड़यंत्र है, जो क्रमशः आने वाली पीढ़ियों को विरासत में मिलता जा रहा है। हम जानते हैं कि इसलाम पूरे विश्व में तलवार के बल पर फैला। अतः धर्म को जिंदा रखने के लिए ऐसा प्रचार करता आवश्यक था।

पर आज ये सारी बातें थोथी सिद्ध हो गई हैं। यांत्रिक युग में सब से जरूरी चीज है विकास और इस विकास में ही पूरे समाज की भलाई है, लोगों की उन्नति

समाज

समाज में दो बड़ी श्रेणियां होती हैं—एक, जिन के पास भूख से अधिक भोजन है और दूसरी वह जिन के पास भोजन से अधिक भूख है।

—चंपट

हैं। पर विकास को हमारे बुजुर्ग धर्म में देखल समझते हैं।
 हमारे बुजुर्ग अपने उत्तरदायित्व को नहीं समझ रहे हैं। इस का मलाल सभी के मन में है। समाज के विकास से हमारा आशय आवारागर्दी अथवा वेश्यावृत्ति से नहीं है। वैसे भी इसे बिगड़े हुए समाज में युवकयुवतियों की दशा कौन अच्छी है। खासकर युवतियों की दशा तो बदतर है। वे घर की हिदायतों से बेजार हैं। भूखों मरते हुए घरों में वे बाहर जा कर काम ढूँढ़ने में असमर्थ हैं, क्योंकि सदियों से चली आती हिदायत उन के आड़े आ रही है। ऐसी हालत में वे बेचारी घर से निकलना ही पाप समझती हैं।

और फिर युवक किसी युवती को बाहर कहीं जाते देख लेते हैं तो कहते हैं, “इस के घर वालों ने क्या यही सिखाया है? बड़ी बेहया है। हमारे बुजुर्गों ने ऐसी तालीम हमें कभी नहीं दी।”

इन सारी बातों से यही पता चलता है कि हमारे बुजुर्गों ने समाज के नौनिहालों के दिमाग में ब्रेन ट्यूमर फैला दिया है, एक ऐसा अंधा रोग, जिस से हर आंख वाला देखने-सोचने की क्षमता के बावजूद अपाहिज है।

प्रमुख दायित्व

आज जो प्रमुख दायित्व हमारे मांबापों को उठाना था, वे नहीं उठा रहे हैं। अगर लड़का नमाज में नहीं जाना चाहता, मिलाद तथा धार्मिक प्रवचन में नहीं जाना चाहता तो उसे पाजामाटोपी पहना कर जबरदस्ती भेजेंगे। अगर कोई विरोध में कहेगा, “भाई, मुझे इन सब में कोई रुचि नहीं,” तो कहा जाएगा, “साले का हुक्कापानी बंद कर दो। ऐसी धर्म-विरोधी बातें कहता है।”

मेरी दिवंगत बहन के पति के छोटे भाई की पढ़ाईलिखाई यतीमखाने में हुई है। वहीं उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की तथा बाद में उन्हें भिलाई में काम मिल गया। पहले बचपन में मैं ने उन्हें सीधासादा नौजवान पाया था। पर आज

ये मियां कभी हमारे शहर आते हैं तो घर में आकर हमें धर्म संबंधी बातें करते हैं जिन्हें सुनते-सुनते सिर में दर्द होने लगता है। कभी कहेंगे, “मक्के में ऐसी घटना हुई। हमारे पीर ने ऐसा करिश्मा दिखाया, जिस से सारी दुनिया इसलाम की कदमबोसी करने लगी।”

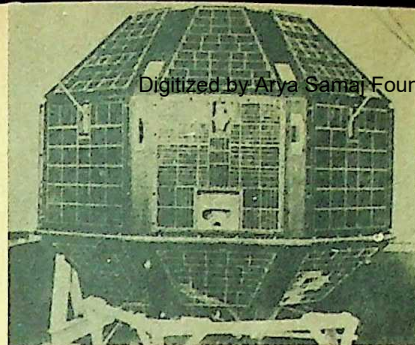
ये सारी बातें उन्हें यतीमखाने से विरासत में मिली हैं। हमारे यतीमखानों का यही माहौल है। हर साल जो हजारों लाखों बच्चे यतीमखानों, मदरसों तथा अंजुमन इसलामिया स्कूलों से निकलते हैं, वे ऐसी ही कच्ची बातें लिए निकलते हैं। एक पौधा विकसित होने से पहले ही मसल दिया जाता है।

आज हमारे बुजुर्ग अपने दायित्व ठीक ढंग से नहीं निभा रहे हैं। पर यह जरूरी है कि हम जीवन के अमूल्य क्षणों को ऐसी बेहूदी बातों में बरबाद न करें। हमारे जीवन के बहुमूल्य क्षण देश तथा समाज के लिए अर्पित हैं। हमें आज नहीं तो कल वृद्ध होना है। अतः हमें अपने दायित्व को समझ लेना ही अच्छा रहेगा। हमारे एक गलत कदम से, मात्र हमारा ही घर नहीं, आसपास का माहौल तथा पूरे समाज की तसवीर बिगड़ेगी। अतः इस समाज को अगर हमें अपना सहयोग देना है तो सही तरीके से हमें अपने बच्चों को पालना होगा और उन्हें धार्मिक अफीम की गोली से बचाना होगा।

उन बुजुर्गों से, जिन के हाथ में उन के बच्चे हैं, अपील है कि वे बच्चों को नेक तालीम दें, गलत नहीं, ताकि आने वाली पीढ़ियां धर्म से ज्यादा अपने जीवन के कार्यक्षेत्र को मान्यता दें। अगर उन्होंने ऐसा न किया तो अपने उत्तरदायित्व को न समझने के कारण हमारे बुजुर्गों की एक दिन ऐसी हालत हो जाएगी कि वे भविष्य में स्वयं अपने बच्चों से जलील होने लगेंगे।

अतः जरूरी है कि हमारे बुजुर्ग वर्तमान को समझें और अपने समाज के लिए अच्छे दिमाग वाले युवकयुवती तैयार करने में अपना सहयोग दें। ●

जुलाई (प्रथम) 1975



रहें तो एक अवस्था ऐसी भी आएगी जब पृथ्वी पर गिरने से पहले पत्थर उस की कुछ परिक्रमा लगा चुका होगा. यहीं से यह पत्थर उपग्रह कहलाएगा.

न्यूटन द्वारा गुरुत्वाकर्षण का व्यापक अध्ययन करने के बाद से ही वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में यह प्रश्न उठने लगा, क्या इतना वेग संभव नहीं है, जिस से पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से मुक्ति मिल सके? गणित की सहायता से ज्ञात इस वेग का मान

मानव निर्मित

उपग्रह

लेख • सत्येंद्रकुमार अग्रवाल

प्रथम भारतीय उपग्रह 'आर्यभट्ट', जो पूर्णतया भारतीय तकनीकी और संयंत्रों की मदद से भारतीय वैज्ञानिकों एवं तकनीशियनों द्वारा बनाया गया, के सफल प्रेक्षण के बाद भारत उपग्रह विरादरी का 11वां सदस्य बन गया, जो हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है. आप के मन में इस बात को जानने की जिज्ञासा जरूर होगी कि आखिर ये उपग्रह हैं क्या, इन का हमारे दैनिक जीवन में उपयोग क्या है. इसे जानने के लिए हमें पहले उपग्रह के सिद्धांत के बारे में जानना होगा.

उपग्रह हैं क्या?

आप एक पत्थर उठा कर फेंकते हैं. वह कितनी दूर जाता है? शायद कुछ मीटर दूर. यह पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण की वजह से गिर पड़ता है. यदि कोई शक्तिशाली व्यक्ति इस पत्थर को फेंके तो यह ज्यादा दूर जाएगा. इसी तरह

मुक्ता

पृथ्वी के तल पर 11 कि. मी. प्रति सेकंड पाया गया. इस वेग को पलायन वेग कहते हैं. इस वेग से फेंकी गई कोई वस्तु पृथ्वी पर वापस नहीं आती. अर्थात् वह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो कर अंतरिक्ष में विलीन हो जाती है. यदि किसी पिंड को इस पलायन वेग से थोड़ा कम रखा जाए तो वह बहुत दूर जा कर पृथ्वी की परिक्रमा करता रहेगा. यहीं कृत्रिम उपग्रह का श्रीगणेश होता है.

तकनीक कुशल देशों द्वारा अंतरिक्ष में उपग्रह भेजने की होड़ सी लग गई है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन का निर्माण और संचालन कैसे होता है?

इतनी तेज गति प्राप्त करने की थी। यही कारण था कि यद्यपि उपग्रह के सिद्धांत बहुत पहले से ज्ञात थे, तथापि इस दिशा में तब तक कोई प्रगति न हो सकी, जब तक कि इतनी अधिक गति प्राप्त करने वाले राकेटों का निर्माण न हो गया।

दूसरे महायुद्ध के अंत में जर्मनी ने प्रक्षेपास्त्रों को चलाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। ये विस्फोटकयुक्त राकेटों द्वारा फेंके जाते थे। फिर निर्धारित लक्ष्य की ओर विशेष इलेक्ट्रानिकी विधि द्वारा भेजे जाने लगे। युद्ध के बाद यही विधि उपग्रहों को भी अंतरिक्ष में भेजने के लिए अपनाई गई। प्रथम मानव उपग्रह 'जैमली' रूस द्वारा भेजा गया, जो 4 अक्टूबर, 1957 से 4 जनवरी, 1958 तक 225 कि. मी. की ऊंचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करता रहा। इतनी ऊंचाई पर वायुमंडलीय प्रतिरोध नगण्य नहीं होता। इस वजह से जैमली की कक्षा निरंतर बदलती गई और पृथ्वी के काफी नजदीक आ जाने से वह भी उल्काओं की तरह जल कर नष्ट हो गया। रूस के बाद अमरीका ने उपग्रह छोड़ा और फिर इस के बाद तो एक तांता सा लग गया। हालत यह हुई कि दिसंबर, 1959 में 9 कृत्रिम उपग्रह पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे थे। इन में 3 रूसी और 6 अमरीकी उपग्रह थे। इन में सब से ज्यादा उपयोगी 'एक्सप्लोरर-6' था, जिस से विकिरण पट्टियों के बारे में मूल्यवान जानकारीयां प्राप्त हुईं। इस उपग्रह को छोड़ने का मुख्य उद्देश्य यह था कि क्या सूर्य से प्राप्त ऊर्जा से लाखों किलोमीटर दूर संदेश भेजना संभव है। इस ने 39,000 कि. मी. की ऊंचाई पर पृथ्वी और उस के मेघावरण के टेलीविजन चित्र भी लिए, जो अच्छे न थे।

पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से बच निकलने वाला पहला पिंड रूसी 'ल्यूनिक्स-1' था। जिस ने उल्काओं, विकिरण और पृथ्वी-चंद्रमा के बीच चुंबकीय क्षेत्र के बारे में महत्वपूर्ण जानकारीयां दीं। दूसरे ग्रहों की कक्षा में जाने वाला प्रथम उपग्रह अम-

राकी 'पायनियर-4' सूर्य की कक्षा में स्थापित किया गया, जो काफी कम मात्रा का था। इस से प्रेषित संकेत इतने स्पष्ट आते थे कि उन्हें 4 लाख कि. मी. दूरी से भी पकड़ा जा सकता था। लेकिन यांत्रिक खराबियों की वजह से इस ने तीन दिन बाद से ही संकेत भेजना बंद कर दिया। शायद यह अब भी सूर्य का चक्कर लगा रहा हो।

उपग्रहों की कार्य विधि

उपग्रह खोखले, लगभग गोलाकार आकृति के होते हैं। इस के चारों तरफ एंटेना लगे होते हैं। जब उपग्रह राकेट में होता है, ये एंटेना तहों में सिमटे होते हैं, लेकिन ज्यों ही यह मुक्त अंतरिक्ष में विचरण करने लगता है, ये एंटेना स्वतः ही फैल जाते हैं। इन एंटेनाओं का संबंध रेडियो प्रेषितों से होता है। प्रत्येक उपग्रह में एक विद्युतीय मस्तिष्क (कंप्यूटर) और चुंबकीय स्मृति प्रणाली होती है। इन के द्वारा विभिन्न जानकारीयां टेपों पर अंकित कर ली जाती हैं और बाद में प्रेषितों के माध्यम से रेडियो संकेतों के रूप में पृथ्वी पर भेज दी जाती हैं। इन संकेतों को पथन केंद्रों पर ग्रहण कर पुनः टेप कर लिया जाता है और समयानुसार उन का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। उपग्रह के बाहर एक छोटी सी घातु की तश्तरी लगी होती है। इस में से विद्युतधारा गुजरती है। विद्युतधारा की प्रबलता में तापमान की वजह से हुए परिवर्तन को स्मृति युक्ति से जमा कर बाद में पथन केंद्रों को भेज दिया जाता है। इन के आधार पर अंतर्ग्रही तापक्रमों के बारे में जानकारीयां मिलती हैं। तसवीरों के लिए उच्च कोटि के टेलीविजन कैमरे लगे होते हैं, जो तसवीरें खींच कर प्रेषितों के माध्यम से धरती पर रेडियो संकेतों के रूप में भेज देते हैं, जिन्हें विशेष टेलीविजन केंद्रों पर ग्रहण कर चित्र प्राप्त कर लिए जाते हैं।

उपग्रह में लगे सभी वैज्ञानिक उपकरणों के संचालन के लिए विद्युत ऊर्जा

अन्य बैटरियों (निकलकैडमियम) द्वारा प्राप्त होती है। जब उपग्रह सूर्य के सामने रहता है, ये सोलर सेल सूर्य से प्राप्त ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदल देते हैं। जब उपग्रह पृथ्वी की छाया में रहता है तब सोलर सेल काम नहीं करते और उस समय निकलकैडमियम बैटरियां उपकरणों को विद्युत ऊर्जा देती हैं। ये बैटरियां प्रकाश में आते ही स्वतः चार्ज हो जाती हैं।

उपग्रह के दोनों ओर दो टेढ़े नजले लगे होते हैं, जिन के द्वारा उपग्रह में रखी ऊँचे दाब की द्रव गैस (नाइट्रोजन) निकलती हैं, जो इन को घूर्णन देती हैं। किसी भी उपग्रह के लिए इस घूर्णन का बना रहना अत्यंत आवश्यक है। घूर्णन की वजह से ही उपग्रह काफी दिनों तक अपनी निर्धारित कक्षा में रह पाता है। साथ ही यदि उपग्रह अपनी यात्रा के दौरान तेजी से लट्ठ की तरह न नाचता रहे तो उस का एक भाग हमेशा सूर्य की ओर रहेगा जो इतना गर्म हो जाएगा कि उपग्रह नष्ट हो जाएगा।

उपग्रहों की उपयोगिता

अभी तक कृत्रिम उपग्रह, प्रकृति प्रदत्त उपग्रह 'चंद्रमा' की तरह न तो हमारी रातों को रोशन कर सके हैं और न ही कवियों के प्रेरणास्रोत बन पाए हैं।

अनेकों उपयोग हैं। इन के व्यापक उपयोग के क्षेत्रों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं :

- (1) वैज्ञानिक अध्ययनों में,
- (2) दैनिक जीवन में।

वैज्ञानिक अध्ययनों में

(अ) विकिरण पेटिकाओं का रहस्य : सूर्य से आने वाले विकिरण में मुख्यतः आवेशित कण होते हैं, जो पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में पकड़े जाते हैं और इस तरह पृथ्वी के चारों ओर मोटी आवेशित कणों की पट्टियां हैं, जिन्हें आयनोस्फियर, विकिरण पट्टियां या विकिरण पेटियां कहते हैं। इन में मुख्यतः इलेक्ट्रॉन और प्रोटोन कण होते हैं। इन विकिरण पेटियों की वजह से ही रेडियो कार्यक्रम का दूर प्रसारण संभव हुआ है। इन का व्यापक अध्ययन उपग्रहों द्वारा ही संभव है। 6 दिसंबर, 1958 को 'पायनियर-3' द्वारा कुछ उच्च विकिरण पट्टियों के अस्तित्व की जानकारी मिली। प्रथम पट्टी पृथ्वी की सतह से 2,100 से 5,100 कि. मी. के बीच स्थित है तथा द्वितीय, 12,000 से 18,000 कि. मी. के बीच।

प्रत्येक के केंद्र में विकिरण इतना ज्यादा है कि इस में 45 घंटे रहने से ही मनुष्य की मृत्यु हो जाएगी। इस क्षेत्र से

विज्ञान

विज्ञान ने अंधों को आंख दी है और बहरों को सुनने की शक्ति। उस ने जीवन को दीर्घ बना दिया है, भय को कम व दया है। उस ने पागलपन को वश में कर लिया है और रोग को रौंद डाला है।

—आर्केडियन फरार

विज्ञान और कला का संबंध समस्त विश्व से है और उन के आगे राष्ट्रीयता की सीमाएं लोप हो जाती हैं।

—गेटे

खतरनाक नहीं है.

(व) अंतरिक्ष यात्रा : अंतरिक्ष यात्रा में तीन उपग्रह उपग्रह अंतरिक्ष स्टेशनों से राकेटों की अंतरिक्ष यात्रा काफी आसान हो जाएगी. पृथ्वी से जाने वाले राकेटों को इस के गुरुत्वाकर्षण से निकलने के लिए बहुत अधिक गति (11 कि. मी. प्रति सेकंड) की आवश्यकता होती है. इस से ईंधन का खर्च तो बढ़ता ही है, साथ ही राकेट का वजन भी ईंधन की वजह से काफी बढ़ जाता है, जो अपनेआप में एक समस्या ही है. उपग्रह स्टेशनों से छूटने वाले राकेटों को उपग्रह के बराबर (लगभग 8 कि. मी. प्रति से.) गति बिना किसी अतिरिक्त खर्च के प्राप्त हो जाएगी और तब पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण पर विजय प्राप्त करने के लिए सिर्फ 3 कि. मी. प्रति सेकंड की गति और प्राप्त करनी होगी, जो कम खर्चीली होगी.

इन सब के अतिरिक्त बाह्य अंतरिक्ष के अनेकों गूढ़ रहस्यों का पर्दाफाश भी इन्हीं उपग्रहों द्वारा संभव हुआ है. चंद्रमा तक मानव के पहुंचने में इन से प्राप्त जानकारीयों का बड़ा योगदान रहा है. भविष्य में अन्य ग्रहों की कक्षा में भी उपग्रह स्थापित कर उन का व्यापक अध्ययन किया जा सकेगा.

दैनिक जीवन में

(अ) टेलीकास्ट एवं दूर संचार : मुख्यतः टेलीविजन प्रसारण में उपग्रहों का महत्वपूर्ण उपयोग होता है. रेडियो तरंगों अपेक्षाकृत बड़ी होने से उन्हें विकिरण पेटिकाएं परावर्तित कर देती हैं, जिस से रेडियो संकेत दूरदूर तक प्राप्त हो जाते हैं, मगर टेलीविजन तरंगों छोटी होने से विकिरण पेटिकाओं को भेद कर अंतरिक्ष में खो जाती हैं. किसी उपग्रह में, जिस की चाल इतनी हो कि वह बराबर पृथ्वी के एक ही क्षेत्र के ऊपर बना रहे, विशेष प्रकार के परावर्तक लगा कर इन तरंगों को पुनः पृथ्वी पर लौटाया जा सकता है.

क्षेत्र में संभव हो जाएगा. अमरीकी छोड़े जो अमरीका और यूरोप के बीच टेलीफोन और टेलीविजन द्वारा संचार संबंध स्थापित करने में काम आते हैं. भारत में टेलीविजन कार्यक्रम का पिछड़ा होने का एक कारण इस तरह का उपग्रह न होना भी है. यदि भविष्य में कोई ऐसा उपग्रह भारत छोड़ता है तो निश्चित ही अंतर्राष्ट्रीय रेडियो कार्यक्रम की तरह अंतर्राष्ट्रीय टेलीविजन कार्यक्रम भी देख सकेंगे.

(ब) मौसम का पूर्वानुमान : उपग्रहों से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से मौसम का पूर्वानुमान बहुत सरल हो गया है. वैज्ञानिक दो मास बाद के मौसम के बारे में जानकारी देने में सक्षम हुए हैं. सालों बाद के मौसम की जानकारी भी काफी हद तक सही ज्ञात की जा सकती है. पृथ्वी के किसी भाग पर तूफान, चक्रवात और प्रतिचक्रवातों का पता भी लग सकेगा, जिन से व्यापक हानियां होती हैं. उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों के निकट तथा अधिकांश महासागरों के ऊपर मौसम परिस्थितियों के प्रेक्षण की सुचारु रूप से व्यवस्था नहीं हो सकी है, जब कि यही क्षेत्र भयंकर तूफानों के जनक हैं. इन परिस्थितियों में उपग्रहों का योगदान एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है.

(स) उपग्रह द्रुत डाकिए भी : अभी तक सागर पार दूर देशों को पत्र भेजने में काफी समय लगता है, लेकिन अब वह दिन दूर नहीं जब उपग्रहों के माध्यम से कुछ घंटों के अंदर पत्र एक जगह से दूसरी जगह भेजे जा सकेंगे. और आश्चर्य की बात यह है कि बिना भेजे ही पहुंच जाएंगे. पत्र एक जगह पर मानक फार्मों पर लिखे जाएंगे, जो डाकखानों में खोल कर इलेक्ट्रॉनिक कोडों में बदले जाएंगे. इन कोडीय पत्रों को उपग्रह द्वारा निदिष्ट स्थान पर प्रेषित कर दिया जाएगा, जहां पाने वाला इन कोडों को पुनः शब्दों में बदल देगा. निःसंदेह कुछ व्यक्ति अपने

पत्रों का गुप्त रखना चाहिए, मगर एस पत्रों की संख्या नगण्य होगी।

(द) कौटुंबिक सन्तुष्टि : जी, हां! भविष्य में समाचारपत्रों की छपाई भी उपग्रहों की मदद से होगी, जो पैसे के साथ अमूल्य समय की भी बचत करेगी। इस का सिद्धांत भी वही होगा जो टेलीविजन का है। एक स्थान पर कंपोज समाचारपत्र का पूरा पृष्ठ मात्र तीन मिनटों में दूसरे स्थान पर उपग्रह की मदद से संप्रेषित कर दिया जाएगा। पत्रकारिता के क्षेत्र में यह एक क्रांति होगी। इस तरह भूउपग्रह की सहायता से छपने वाला दुनिया का पहला अखबार अमरीका की डो. जॉस एंड कंपनी का एक राष्ट्रीय समाचारपत्र होगा, जिस का प्रसार अमरीका और आसपास में 15 लाख

स भजा जाएगा, जहां स फ्लोरिडा के अड्डे में उसे ग्रहण कर लिया जाएगा। इस सर्वकेंद्रीय नौसेना में भी उपग्रहों का महत्वपूर्ण उपयोग संभव है। इस ओर अमरीकी नौसेना काफी पहले से प्रयत्नशील है। केवल द्वारा एक समय में 44 व्यक्तियों की वार्ताएं ही संभव हैं, लेकिन उपग्रहों द्वारा एक ही समय में 250 व्यक्तियों में वार्ताएं हो सकती हैं। इस से वर्तमान संचारप्रणाली का भार कुछ कम हो जाएगा। भविष्य में उपग्रहों के और क्याक्या उपयोग होंगे, यह तो भविष्य ही जानता है, लेकिन इस बात से हम इनकार नहीं कर सकते कि निकट भविष्य में इन उपग्रहों का हमारे दैनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान होगा।

उपग्रह : निकट भविष्य की कुछ समस्याएं

मनुष्य ने अंतरिक्ष में उपग्रह स्थापित कर जहां एक नए युग का सूत्रपात किया है, वहीं पर इस के कुछ दूसरे ऐसे भी पक्ष हैं, जो निकट भविष्य में काफी जटिलता पैदा कर सकते हैं। हो सकता है कि कोई विश्वयुद्ध इन्हीं उपग्रहों को ले कर हो। कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं इस प्रकार हैं :

(1) रेडियो प्रसारण में बाधा : भूउपग्रह रेडियो संकेत प्रसारण में उन्हीं आवृत्तियों का उपयोग करते हैं जो पृथ्वी पर आम रेडियो कार्यक्रम प्रसारण में प्रयुक्त होती हैं। जब निकट भविष्य में सैकड़ों उपग्रह अंतरिक्ष में चक्कर काटने लगेंगे, उस समय रेडियो प्रसारण बहुत प्रभावित होगा। ऐसी स्थिति से बचने के लिए कुछ विशेष रेडियो आवृत्ति सारिणियां निर्धारित करनी पड़ेंगी।

(2) अंतरिक्ष का कूड़ाकरकट : किसी भी उपग्रह की एक निश्चित आयु होती है, जिस के बाद वह बेकार हो जाता है। कुछ उपग्रह यांत्रिक खराबियों की वजह से भी पूर्व निश्चित समय से पहले खराब हो जाते हैं। इस स्थिति में भविष्य में ऐसे बेकार उपग्रहों की संख्या बढ़ती जाएगी, जो राकेट आदि के मार्ग में बाधक सिद्ध होंगे। कुछ उपग्रह पृथ्वी के वायुमंडल

धूर्त

बुरा आदमी और भी बुरा है
जब वह साधु बनने का स्वांग रचता
है.

—बेकन

प्रतियां हैं। इन की एक घोषणा के अनुसार मैसाचुसेट्स में तैयार किए जाने वाले पृष्ठों को फ्लोरिडा में छपा जाता है और अब से इन पृष्ठों को भूउपग्रह के जरिए छापेखाने तक संप्रेषित किया जाएगा। इस के लिए मैसाचुसेट्स और फ्लोरिडा में दो अड्डों का नमूना तैयार किया जा रहा है, जहां पर तेज रफ्तार वाले संप्रेषक स्थापित किए जाएंगे। प्रत्येक अड्डे में 33 फुट गोलाई वाला एंटेना लगाया जाएगा तथा अन्य वैद्युतिक उपकरणों से भी वे लैस होंगे। छापे जाने वाले तथ्यों को तत्काल मैसाचुसेट्स के अड्डे से पृथ्वी के ऊपर मंडराते हुए उपग्रह को संकेतों के माध्यम

मुक्ता

क काफ़ी नज़दीक आ कर जल जाएगा और उन की राख अंतरिक्ष में फैल जाएगी तथा बड़े-बड़े टुकड़े हवा में तैरते रहेंगे जो काफी खतरनाक सिद्ध होंगे। इन कूड़ेकरकटों को बटोर कर अंतरिक्ष को साफ रखना निकट भविष्य की एक महत्वपूर्ण समस्या है।

(3) उपग्रह सीक्रेट एजेंट भी : उपग्रहों द्वारा जामुसी का काम भी लिया जाएगा। ये विभिन्न देशों पर से गुजरते समय वहाँ के सैनिक अड्डों आदि के चित्र भी संप्रेषित कर युद्ध को और भी बीभत्स बना देंगे। इन के द्वारा युद्धकाल में किसी देश पर गामा किरण, लेसर किरण आदि जैसी भयानक किरणों की बौछार वहाँ के लोगों को पंगु बना देंगी। इस तरह अगुबम के बाद ये उपग्रह भी मनुष्य के विनाश में काफी हद तक सहायक होंगे।

(4) और जब अंतरिक्ष का बंटवारा होगा : जो हाँ, बुढ़ती हुई उपग्रहों की उपयोगिता एक दिन इस समस्या को भी जरूर जन्म देगी, जो किसी भी समय भयंकर युद्ध का रूप ले लेगी। अमरीका राकेट सोसाइटी के एंड्रू हेली के कथनानुसार विश्वव्यापी मान्यता प्राप्त अंतरिक्ष कानून व्यवस्था निकट भविष्य में काफी जटिल हो जाएगी। आज अंतरिक्ष के किसी विशेष क्षेत्र पर किसी का अधिकार नहीं है। लेकिन भविष्य में देश सागरों की तरह अंतरिक्ष का भी बंटवारा करेंगे और इस के लिए युद्ध अवश्य भावी है।

इस तरह जहाँ एक ओर उपग्रह मानव के लिए वरदान हैं, वहीं यह अभिशाप भी हैं। यदि केवल मानव हित में उपग्रहों का उपयोग किया गया तो निश्चित ही यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाएगा।



“यह लो, तुम्हारे पांच रुपए आज वापस किए देता हूँ।”

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छाया : श्रीमती आशा भार्गव, दिल्ली.



ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● हमारे कालिज में एक लड़की को बड़ी बुरी आदत थी. किसी की कोई पुस्तक या किसी की कलम मेज पर रह जाती या जमीन पर गिर जाती या कोई भूल जाता तो वह उठा लेती, वापस करने का नाम न लेती. एक दिन एक तेजतर्रार लड़के की कलम उस की जेब से गिर गई. उस ने उसे उठा लिया और वापस मांगने पर देने से इनकार कर दिया.

लड़के ने दूसरे दिन एक पांच रुपए का नोट धागे में बांध कर जमीन पर डाल दिया. लड़की अपनी सहेलियों के साथ आ रही थी. नोट पड़ा देख कर वह उसे ज्यों ही झुक कर उठाने लगी, लड़के ने धागे में बंधे नोट को खींच लिया. उस की सभी सहेलियां बड़े जोर से हंस पड़ीं. पास खड़े लड़के भी हंस पड़े. लड़की बुरी तरह झप गई. उस दिन से वह कोई पड़ी हुई वस्तु उठाने की हिम्मत न कर सकी.

—राजेंद्रसिंह, लखनऊ

● मैं एक बैंक में काम करता हूं. स्नातक होने के नाते मुझे दो अतिरिक्त वेतन वृद्धियां मिली हैं. मेरे साथ काम करने वालों में एक इंटर पास युवक भी है. एक बार वेतन के दिन वह मुझ से बोला, “यार, तुम्हें तो दो इंक्रीमेंट फालतू मिलते हैं.”

मैं ने उसे बताया कि स्नातक होने के कारण मेरे शिक्षा संबंधी खर्च अधिक हुए, इसी कारण ये दो इंक्रीमेंट मुझे मिलते हैं.

इस पर उस ने तुरंत जवाब दिया, “तुम्हारे शिक्षा संबंधी खर्च मुझ से अधिक नहीं हो सकते.”

कारण पूछने पर उस ने मुझे बताया, “देखो, मैं हाई स्कूल में दो बार और इंटर में तीन बार फेल हुआ. अब तुम्हीं बताओ, किस के शिक्षा संबंधी खर्च अधिक हुए हैं?”

—स. स. गुप्ता, कोसीकलां

● बात उस समय की है, जब नगर में ‘अनारकली’ फिल्म लगी थी. उस का एक गीत ‘न ये चांद होगा न तारे रहेंगे, मगर हम हमेशा तुम्हारे रहेंगे’ बहुत लोकप्रिय हो रहा था. इन्हीं दिनों मेरे मित्र के मकान में नए किराएदार आए. उन की एक सुंदर एवं आकर्षक कन्या थी. मित्र के पिता ने शिष्टाचारवश अपने नए किराएदार को अपने घर जलपान पर आमंत्रित किया. जलपान के पश्चात मित्र ने कन्या से एक गाना गाने के लिए कहा. बड़े आग्रह के पश्चात अपने पिता के आदेश पर उस ने गाया, ‘न ये चांद होगा, न तारे रहेंगे, मगर हम हमेशा तुम्हारे रहेंगे.’

गीत सुन कर मित्र महोदय को भ्रम हो गया कि कन्या उन पर रीझी हुई है. मैं ने उन्हें बहुत समझाना चाहा कि लोकप्रिय गीत होने के कारण उस ने यह गीत संयोगवश ही गाने के लिए चुना है, परंतु वह संतुष्ट न हुए. बराबर यह दलील देते रहे, “आखिर उस ने यही गीत ही मुझे सुनाने के लिए क्यों चुना?”

कई दिनों की उलझन के बाद, एक दिन भावावेश में वह उस लड़की को प्रेमपत्र लिख बैठे. फल यह हुआ कि किराएदार सज्जन की उन के पिता से खूब लड़ाई हुई

और उन्होंने शीघ्र ही मकान खाली कर दिया. इस घटना से बहुत दिनों तक उन के मकान में कोई किराएदार नहीं आया.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हमेश्वरकुमार, लड़की

● बात उन दिनों की है, जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ रही थी. हमारी कक्षा के श्यामपट्ट पर नया पालिश किया गया था. इसलिए उस पर दो दिन तक कुछ लिखने की मनाही थी. हमारे स्कूल की दो शिपटें होती थीं. लड़कियों के बाद लड़कों का स्कूल लगता था. हमें डर था कि लड़के इस पर अवश्य लिखेंगे. अतः हम ने अलमारी पर हिंदी, अंगरेजी और पंजाबी में लिख दिया : "कृपया श्यामपट्ट पर कुछ न लिखें."

दूसरे दिन जब हम क्लास में गईं तो पाया कि श्यामपट्ट पर कुछ लिखा है. हमें बहुत गुस्सा आया. उसे पढ़ा तो गुस्सा हवा हो गया और हंसी फूट पड़ी. उस पर लिखा था : "हिंदी, अंगरेजी और पंजाबी में हम कसम खाते हैं कि इस पर कुछ न लिखेंगे."

—परमजीत जुनेजा, दिल्ली

● पिछले साल हमारे कालिज (राजकीय महाविद्यालय चितौड़गढ़) में छात्रसंघ के अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुए. दो उम्मीदवार थे. टक्कर जोरदार थी. सभी यह जानने के उत्सुक थे कि कौन जीतता है. आखिर परिणाम निकला. दोनों उम्मीदवारों को बराबरबराबर मत मिले थे.

सभी छात्रों का विचार था कि दोनों विजयी छात्रों में अध्यक्ष पद के लिए दलबल सहित मारपीट हो सकती है. किंतु कुछ दिनों बाद नोटिस बोर्ड पर नोटिस लगा कि दोनों विजयी छात्र आधेआधे सत्र में अध्यक्ष पद का कार्यभार देखेंगे. सभी ने इस का स्वागत किया. दोनों अध्यक्षों ने परस्पर एकदूसरे की राय से अपना दायित्व निभाया. इन दोनों साथियों ने मारपीट के इस युग में सहयोग से काम करने का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया.

—पुरुषोत्तम करजगीर, निवाहेड़ा

● एक बार हमारे रसायनशास्त्र के एक प्राध्यापक महोदय ने एक लड़के को अपने पास बुलाया. प्राध्यापक महोदय के सिर पर एक भी बाल न था. लड़का उन के कुछ अधिक करीब आ गया. प्राध्यापक महोदय बोले, "अरे, सिर पर क्यों चढ़ा आ रहा है?"

लड़का एकदम बोला, "सर, मुझे कोई सिर से फिसलना थोड़े ही है!"

क्लास में एकदम हंसी के फव्वारे छूट पड़े.

—लाजपतराय आहूजा, गुड़गांव

● मैं और मेरा मित्र रमेश एक दिन कालिज जा रहे थे. रमेश बड़ा चंचल और हाजिरजवाब है. हम ने कालिज के लिए बस पकड़ी. बस की सीट पर एक आधुनिका सजीधजी बैठी थी. रमेश जा कर उस के पास बैठ गया. मैं पीछे वाली सीट पर बैठा था. बस चलते समय झटके लगना स्वाभाविक ही है. ऐसे ही धक्के लगने पर उस लड़की ने जरा कड़क कर रमेश से कहा, "जरा ठीक से बैठिए."

रमेश थोड़ा सरक गया. लड़की भी थोड़ा सरक कर बैठ गई. उस ने दोनों के बीच में अपना पर्स रख लिया. रमेश ने भी फौरन अपनी डायरी उस के पर्स के पास रख दी. फिर बोला, "मैडम, माफ कीजिए. आप का पर्स पुल्लिंग है और मेरी डायरी स्त्रीलिंग. इसे धक्का लग रहा है. जरा अपना पर्स सरका लीजिए. इतना मुनते ही मुझे हंसी आ गई. उस लड़की की भेष देखने लायक थी. वह उठी और दूसरी सीट पर बैठ गई.

—श्यामसुंदर गुप्ता, बंबई ●

मृत्यु भोज

कहानी • ओमप्रकाश सिंघल

सेठ जम्मनलाल गांव के एक बहुत बड़ा धनी घर के पिताजी के बाल पक चुके थे। इसलिए सभी ग्रामवासी कोओं की भांति घात लगाए थे कि कब लालाजी का देहांत हो जाय कब उन्हें मृत्युभोज मिले। ग्रामवासियों की मृत्युभोज खाने की इच्छा इतनी प्रबल हो गई थी कि वे सेठजी के पिताजी को कह भी देते थे, "लालाजी, कब मरें जल्दी क्यों नहीं मरते? अब तो बहुत दिन हो गए आप के मृत्युभोज का इंतजार करते।"

ये सब बातें हंसीमजाक में हो जाया करती थीं। इन बातों का मूल कारण सेठजी द्वारा पहले कभी दिया गया मृत्यु



भोज था. उस भोज में पैसा पानी की तरह यह सोच कर बहाया गया था कि जिन से पैसा लिया गया है उन्हीं को उल्लू बनाने के लिए यह थोड़ा सा खिला देते हैं, फिर उन्हीं से कमाएंगे. मुख्य लोग अपनी ही कमाई का एक टुकड़ा पाने के लिए किस तरह लालायित थे.

ध्यान को यह सब सहन नहीं होता था. इसी लिए वह खीझ कर अपने पिता सेठ झम्मनलाल से कह भी देता था कि यदि उन्होंने पहले मृत्युभोज में इतना पैसा व्यय न किया होता तो आज लोग मृत्युभोज की आशा में उस के बाबा का मरना न चाहते. किंतु सेठजी बड़े मृदुभाव से हंस कर कह देते, "अभी तुम बच्चे हो, इन सब बातों

जिस की आशा लगाए बैठे थे,

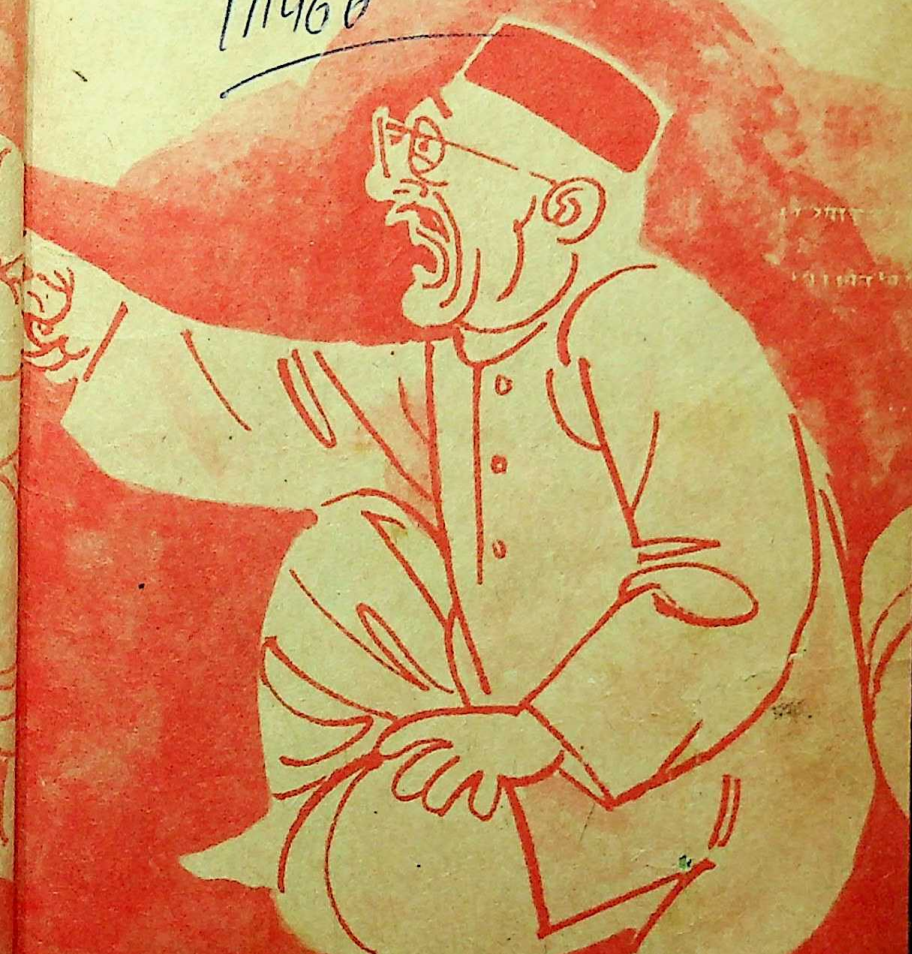
पुरोहितजी की वह मनोकामना

भी एक दिन पूरी हो गई...

लेकिन बुरा हो उस ध्यान का

जिस ने सब गुड़गोबर कर दिया.

111466



की नहीं समझते. यह सब तो लोकाचार है, इस को तो कायदे की आदत ही मानते हैं—'यद्यपि शुद्धम् लोकविरुद्धम्, मत करना भाई मत करना.' "

अंत में वह दिन भी आ पहुंचा जिस दिन का लोगों को बड़ी बेकरारी से इंतजार था. इस मृत्युभोज में सेठजी ने और भी दिल खोल कर खर्च किया क्योंकि उन के रक्तकोष में धन की कमी नहीं थी और साथ ही उन का अंध-विश्वास था कि ग्रामवासियों को खिलाया हुआ भोजन और पुरोहितजी को दी गई दानदक्षिणा उन के पिताजी के पास पहुंच जायेंगे और उन की आत्मा, जो कि जीतेजी अपने बेटे की सेवा का आनंद न उठा सकी थी, अब तृप्त हो जाएगी. अतः उन्होंने पुरोहितजी के द्वारा अनाज, दूध, वस्त्र, बरतन आदि भी आत्मा हेतु पहुंचवाए क्योंकि पुरोहितजी ईश्वरीय सरकार द्वारा पंजीकृत डाकघर थे.

यह डाकघर सेठजी को नित नवीन सूचनाएं उन के पिताजी की आवश्यकताओं के विषय में देता रहता था. अब क्या था, पुरोहितजी खूब गुलछरें उड़ाने लगे क्योंकि उन के डाकघर से आत्मा हेतु नित नवीन पार्सल होते रहते थे. पुरोहितजी इस ताक में रहते थे कि सेठजी के पास कौन सी वस्तु पार्सल करने योग्य है. जो वस्तु उन्हें इम योग्य प्रतीत होती, उसी की सूचना सेठजी को देते कि अमुक वस्तु की आप के पिताजी को अति आवश्यकता है. अतः उस को शीघ्रातिशीघ्र पार्सल कर दिया जाए. यानी पुरोहितजी को दान कर दिया जाए.

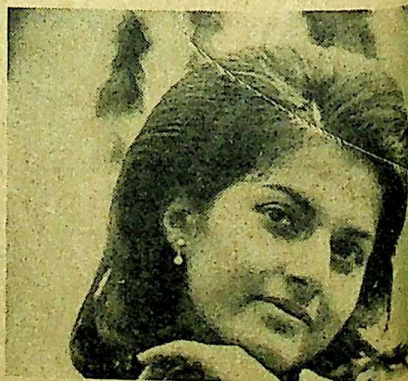
उन्हीं दिनों सेठजी ने हरियाणा नस्ल की बछड़े वाली एक दुधारू गाय खरीदी. उसे देख कर पुरोहितजी को लोभ हो गया क्योंकि आत्मा को वैतरणी पार करवाने के लिए गोदान में जो गाय उन्हें दी गई थी, वह मरिचाल किस्म की थी. उन ने चाहे लालाजी को वैतरणी पार

कराया हो या नहीं किंतु वह पुरोहितजी को नहीं देना चाहते थे. संयोग से पुरोहितजी की अफीम, जो कि उन्हें आत्मा तक पहुंचाने के लिए दी गई थी, समाप्त होने को थी. अतः उन्होंने अपना जाल फैलाया.

अपनी योजनानुसार पुरोहितजी प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में सेठजी के पास पहुंचे और बड़ी विनम्र एवं रसभरी वाणी में बोले, "सेठजी, आज हमकूं आप के पिताजी ने सपना दियो है. वह बड़े दुखी अवस्था में दिखाई दिए हैं. मैं ने उन से पूछो कि लालाजी, आप इतने दुखी क्यों हैं? तो उन्होंने उत्तर दियो कि महाराज, वैसे तो आप की कृपा से सर्व आनंद है क्योंकि मेरो पुत्र बड़ो सुपुत्र है. वह मेरी आवश्यकता की वस्तुएं तुम्हारे द्वारा मुझकूं अर्पण कर देतो है. किंतु महाराज, अब मेरी अफीम और दूध समाप्त हो गए हैं, इसलिए आप मेरे लिए एक सेर अफीम और जो गाय वो अब लायो है, भेज देओ."

'पुत्र बड़ो सुपुत्र है,' सुन कर सेठजी फूले न समाए और गर्दन ऊंची कर के बोले, "अच्छा, यह सब प्रबंध तो मैं अभी कराए देता हूं, किंतु यह तो बताइए पिताजी को अन्य किसी वस्तु की तो आवश्यकता नहीं है?"

पुरोहितजी अपनी रसमयी वाणी में गद्गद हो कर बोले, "धन्य है, धन्य है! पुत्र हो तो ऐसा हो."



दूसरे दिन गाय और अफीम का संकल्प कर दिया गया। पुरोहितजी अफीम और गाय को पकड़ कर घड़े प्रसन्न हुए। वह प्रति दिन गाय के दूध का सेवन करते और अफीम खाते। यदाकदा सेठजी से कहते भी रहते, “जजमान, आप के पिताजी, खूब प्रसन्न हैं। अफीम और दूध नित्य उन के पास पहुंच जाते हैं।”

ध्यान छुट्टियों में गांव आया। उस ने देखा कि हरियाणा नस्ल की जो गाय उस के सामने खरीदी गई थी, खूटे पर नहीं थी। पूछने पर उसे सारा वृत्तांत ज्ञात हुआ। पुरोहितजी की इस नीच करतूत से उसे असीम दुख हुआ। मृत्युभोज उसे पहले से ही कचोट रहा था। अतः उस से रहा नहीं गया और उस ने एक युक्ति ढूढ़ निकाली।

वह दूसरे दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में जागा और बड़ी दुखभरी वाणी में अपने पिता से बोला, “पिताजी, आज रात को मैं ने बाबा को स्वप्न में देखा है।”

सेठजी ने कौतूहलवश तुरंत कहा, “अच्छा, रात को तुम्हें बाबा दिखाई दिए थे?”

“हां, पिताजी。”

“क्या देखा तुम ने स्वप्न में?”

“पिताजी, आप को याद होगा कि हमारे बाबाजी के पेट में कभीकभी वायु का दर्द हुआ करता था。”

“हां, हुआ तो करता था。”

“पिताजी, वही दर्द फिर उन के

पेट में होने लगा है और वह दर्द से बड़े पीड़ित हैं, वैसे आजकल उन्हें खानेपीने का कोई कमी नहीं है क्योंकि खानापीना नित्य ही पुरोहितजी द्वारा उन के पास पहुंच जाता है。”

इतना सुन कर सेठजी कुछ परेशान से होते हुए बोले, “तो कमी किस चीज की है? दर्द के लिए तब क्या उपाय किया जाए?”

ध्यान थोड़ी देर सोचने की मुद्रा में रहने के बाद बोला, “पिताजी, आप को यह भी याद होगा कि पहले जब उन के पेट में दर्द होता था तो हम लोहे की एक सलाख गर्म कर के उन के पेट पर लगा देते थे और उन का दर्द बंद हो जाता था。”

सेठजी स्वीकारात्मक उत्तर में बोले, “किंतु अब यह उपाय तो हो नहीं सकता。”

“हो सकता है, पिताजी। यदि पुरोहितजी द्वारा खाई हुई अफीम और पिया हुआ दूध बाबा के पास पहुंच सकते हैं तो निश्चय ही गर्म सलाख पुरोहितजी के पेट पर लगा देने से बाबा के पेट का दर्द बंद हो जाएगा,” ध्यान उत्तर दे कर चुप हो गया।

एक छोटी सी बात सेठजी की समझ में आ गई और वह अपने भारी बदन पर अपने छोटे से सिर को हिलाते हुए बोले, “बात तो ठीक है。”

“उन्होंने शीघ्र ही पुरोहितजी को

बुरा हो इस मुहब्बत का...

सकूने दिल नहीं जिस वक्त से इस बज्म में आए,
जरा सी चीज घबराहट में क्या जानें कहां रख दी।
बुरा हो इस मुहब्बत का हुए बरवाद घर लाखों,
वहीं से आग लग उठी यह चिनगारी जहां रख दी।
किया फिर तुम ने रोता देख कर दीदार का वादा,
फिर एक बहते हुए पानी में बुनियादे मकां रख दी।

—आरजू लखनवी

बुलवाया और उन्हें सारी रामकथा कह सुनाई. पुरोहितजी बाकी सत्यवादी Foundation के नाम से ठीक किया जा सुन कर बड़े सकपकाए और मुंह बना कर बोले, “अरे जजमान, तू तो बावरो है. ये तो बालक है, जाकू पहली याद बनी रही है. अब क्या लालाजी इस संसार में रखे हैं? उन का शरीर तो जलाइ दियो जा चुको है और आत्मा थी सो उड़ गई. अब कौनकू गर्म सलाख से दागोगे?”

चूँकि सेठजी के मस्तिष्क में एक बार एक बात बैठ चुकी थी, इसलिए वह हठ करते हुए बोले, “नहीं, पुरोहितजी. हम आप को गर्म सलाख से दागे बिना नहीं मानेंगे. जब आप के द्वारा पिया हुआ दूध और खाई हुई अफीम हमारे

पिताजी के पास पहुंच जाती है तो उन सलाखों से ठीक किया जा सकता है.”

पुरोहितजी समझ गए थे कि अब बात बनने की नहीं है, इसलिए वह वहां से चलने का उपक्रम करने लगे. सेठजी उन का उपक्रम ताड़ गए और तुरंत अपने लड़कों से बोले, “अरे, खड़े क्या देख रहे हो? पकड़ लो पुरोहितजी को और लाओ सलाख गर्म कर के.”

इतना सुन कर पुरोहितजी के पैरों तले से जमीन खिसक गई और वह घबरा कर बोले, “अरे जजमान, तू यह सब क्या करवा रह्यो है? मैं ने तेरी गाय, अफीम सब छोड़ी. बस, अब तू मोहि बरूश दे.”

कितना महंगा धर्म

रिप्रिंट सेट

सरिता जन्म से ही हिंदू समाज की कुरीतियों, आडंबरों और अंधविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाती आई है. अपनी सत्ता हाथ से निकलते देख पंडेपुजारी और धर्म के ठेकेदार सदा ही सरिता को कुचलने का यत्न करते आए हैं.

सरिता के 15 दिसंबर, 1965 अंक में प्रकाशित सखा बोर्ड के लेख 'कितना महंगा धर्म' पर अनेक आपत्तियां उठाई गई थीं. सरकार ने संपादक और लेखक पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप लगा कर मुकदमा दायर किया था जिसे दिल्ली के सहायक सेशन जज द्वारा खारिज कर दिया गया है.

अब 'कितना महंगा धर्म' लेख से संबंधित निम्नलिखित रिप्रिंट उपलब्ध हैं.

'कितना महंगा धर्म': मूल लेख

'कितना महंगा धर्म': आपत्तियों और आलोचनाओं का उत्तर

'कितना महंगा धर्म': मुकदमे का निर्णय

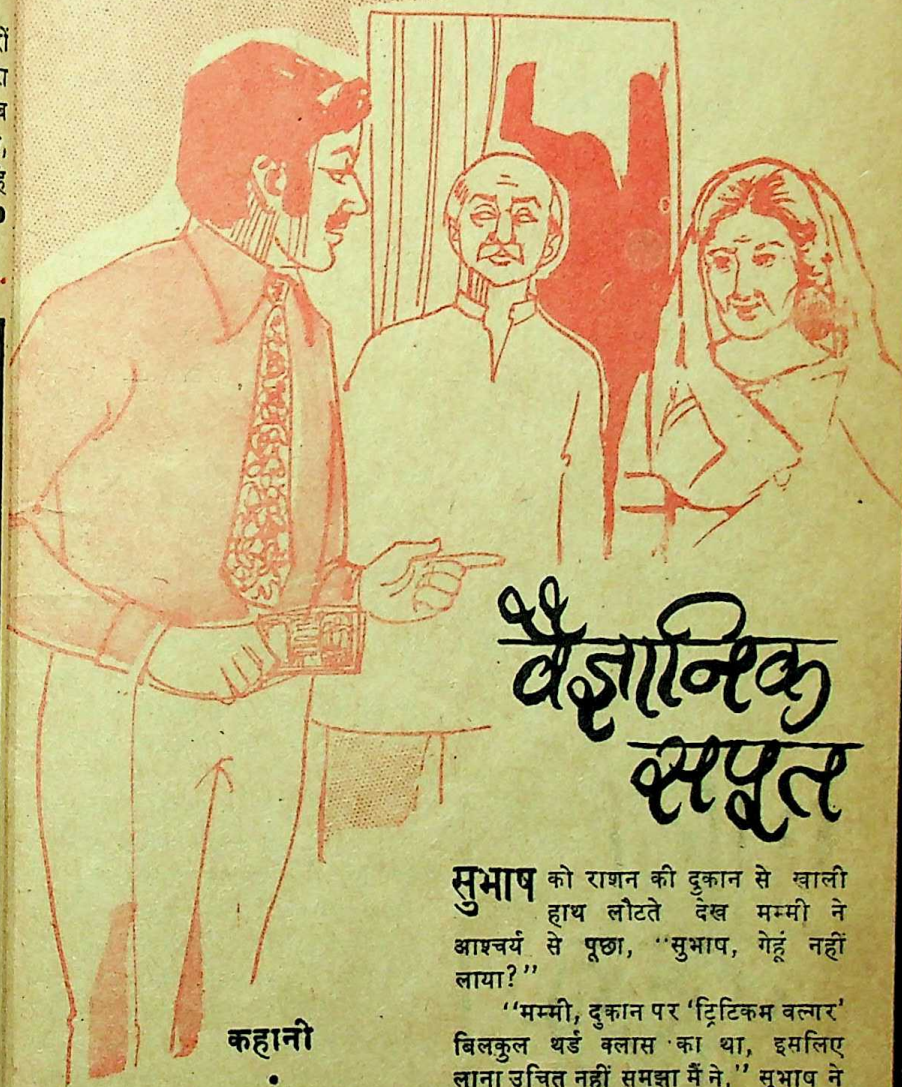
प्रत्येक का मूल्य 35 पैसे, पूरा सेट 75 पैसे के डाक टिकट या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

विज्ञान का विद्याया हान

के त्वाते सुभाष वैज्ञानिक

फार्मुले में ही बात करता था. पुराने जमाने की बूढ़ी मां के पल्ले वह भाषा कैसे पड़ती?



वैज्ञानिक स्फुट

सुभाष को राशन की दुकान से खाली हाथ लौटते देख मम्मी ने आश्चर्य से पूछा, "सुभाष, गेहूं नहीं लाया?"

"मम्मी, दुकान पर 'ट्रिटिकम वलार' बिलकुल थर्ड क्लास का था, इसलिए लाना उचित नहीं समझा मैंने," सुभाष ने उत्तर दिया.

"क्या?" मम्मी अचरज भरे अंदाज

कहानी

शिवकुमार दुबे

मे बोला, "क्या था थड क्लास? ट्रिटिकम
वल्गर? मैं ने तुझे कोई दवा लेने नहीं
गेहूं लेने को भेजा था."

"हां, मम्मी. मैं भी तो वही कह
रहा हूं. पर तुम समझो तब न. मम्मी,
तुम नहीं जानती कि विज्ञान की भाषा में
गेहूं को ट्रिटिकम वल्गर ही कहते हैं."

"कहते होंगे. मुझे क्या मतलब?
सारी दुनिया गेहूं को गेहूं ही कहती है,
ट्रिटिकम ब्रिटिकम नहीं. समझा?"

"यही तो रोना है, मम्मी. इसी
कारण तो दुनिया तरक्की नहीं कर पा
रही है. अरे, मम्मी, यह विज्ञान का युग
है. विज्ञान का दामन थाम कर चलो तभी
तो जीवन का आनंद है," सुभाष ने
दलील दी.

"भाड़ में जाए तेरा विज्ञान. जो
चीज जहां शोभा दे, वहीं उसे रखना
चाहिए. अपने इस विज्ञान को कालिज की
लेबोरेटरी तक ही सीमित रखा कर.
घरेलू बातचीत में विज्ञान की टांगें तोड़ना
अच्छा नहीं है," मम्मी रोष प्रकट करते
हुए बोलीं.

"ओ. के. मम्मी, ओ. के.! अच्छा,
अब जरा एक गिलास एच. टू. ओ. तो
पिलाओ. मुझे एक दोस्त के घर जाना
है केमिस्ट्री की किताब लेने."

सुभाष की इस बकवास से मम्मी,
जो झुंझला उठी थीं, बोलीं,
"पानी मांगेगा तभी पानी मिलेगा. एच.
टू. ओ. मांगने पर कुछ नहीं मिलने का.
समझा? रोजरोज पानी को एच. टू. ओ.,
नमक को सोडियम क्लोराइड, और न
जाने क्याक्या कहना. यह सब आखिर है
क्या?"

"नाराज मत होइए, मम्मी," सफाई
पेश करते हुए सुभाष बोला, "मैं ने
कितनी ही बार कहा है कि यह जमाना
विज्ञान का है, साइंस का है. शीघ्र ही वह
युग आने वाला है, मम्मी, जब लोगबाग
संकेतलिपि यानी 'सिंबालिक लैंग्वेज'
का महत्व समझेंगे. तब लोग गाएंगे तो
संकेतों में, रोएंगे तो संकेतों में, और..."

बोच में ही डटते हुए मम्मी बोलीं
"ठीक है, ठीक है, अभी तो वह युग नहीं
आया है न? तू ही तो साइंस का एक
अनोखा विद्यार्थी नहीं है. दुनिया में तेरे
अलावा और भी तो विज्ञान की पढ़ाई
करते होंगे. पर इस तरह घरेलू काम-
काज में केमिस्ट्री, बाटनी, ज्वालाजी तो
कोई नहीं घुसेड़ता."

"खैर, मम्मी, आप जीतीं, मैं हारा.
मैं तो चला. अभी आधे धंटे में आता हूँ
रमेश के घर से."

"अच्छा, सुन. वापस आते समय
सब्जी मंडी से आलू और बैंगन लेते आना
एकाध किलो."

"अवश्य ले आऊंगा, मम्मी," सुभाष
ने कहा और रवाना हो गया.

यह पहला मौका नहीं था कि सुभाष
ने पानी को पानी के बजाए एच.
टू. ओ. कहा हो. सुभाष ने बी. एससी.
में नाम क्या लिखाया, मानो पूरे घर को
सिर पर उठा रखा था. अभी परसों ही
की तो बात है. मम्मी ने भूल से कुछ
नमक ज्यादा डाल दिया था सब्जी में.
सुभाष खाना खाने बैठा तो पहला कोप
मुंह में लेते ही बोला था, "अरे,
यह क्या मम्मी? आज सब्जी में एल.
ए. सी. एल., मेरा मतलब, सोडियम
क्लोराइड कितना ज्यादा डाल दिया आप
ने!" और मम्मी उस का मुंह ही देखती
रह गई थीं क्योंकि वह बेचारी क्या जानें
कि नमक को ही सोडियम क्लोराइड
कहते हैं.

पिछले रविवार को एक बरसात
मेंढक घर में घुस आया था. मम्मी रोटी
बना रही थीं. इसलिए उन्होंने सुभाष को
कह दिया कि इस मेंढक को बाहर निकाल
दे. बस, इसी बात पर सुभाष ने एक लंबा
सा लेक्चर सुनाया था मम्मी को. कहते
लगा था, "मम्मी, इस जानवर को मेंढक
कहना आप की कूपमंडूकता का परिचायक
है. यह जानवर मेंढक जैसा दीखता अवश्य
है पर यह मेंढक नहीं, टोड है. ज्वालाजी
में इस का नाम 'ब्यूफो मेलेनोस्टिकट्स'

है। इस का स्वभाव 'एफीविस' होता है और..." और न जाने कितना बक गया था सुभाष इस विषय पर। मम्मी कर क्या सकती थीं सिवा कल्पने के? वह अपने इस वैज्ञानिक सपूत से त्रस्त अवश्य हो चुकी थीं। अपने बेटे के सिर से विज्ञान का यह भूत उतारने का कोई कारगर उपाय उन की समझ में नहीं आया था तो हार कर उन्होंने अपने इस होनहार सपूत की तमाम करतूतों का विवरण पत्र द्वारा अपने भाई को लिख भेजा था, इस प्रार्थना के साथ कि वह किसी तरह इस वैज्ञानिक को रास्ते पर ले आएँ।

अभी मम्मी चौकेचूल्हे से निवटी भी न थीं कि उन के भाई अर्थात् सुभाष के मामाजी आ गए। सुभाष की मम्मी ने अपने भाई के सामने सुभाष की शिकायतों का अंबार लगा दिया। भाई साहब ने अपनी बहन को तसल्ली दी कि वह अवश्य अपने भानजे को ठीक कर देंगे। फिर दोनों भाईबहन सुभाष का इंतजार करने लगे।

कुछ समय बाद सुभाष आ गया। एक हाथ में केमिस्ट्री की पुस्तक और दूसरे में सब्जी की थैली लटकाए। सुभाष ने जैसे ही घर में प्रवेश किया, उसे मामाजी दिखाई दिए।

"हैलो, मामाजी। कब आए आप?" सुभाष ने पूछा।

"अभी ही आया हूँ। पर यह हैलो-वैलो क्या होता है? मामा का तो चरण स्पर्श करना चाहिए या 'प्रणाम' ही कह देते," मामा ने टोका, "तुम लोग तो अपनी संस्कृति ही भूले जा रहे हो।"

"आप भी क्या, मामाजी, आते ही संस्कृतिवस्कृति को ले बैठे! खैर, यह बताइए, आप ट्रेन से आए या बस से?"

"मम यात्रा रेलयानेन संपन्ना।"

सांप्रतं रेलयात्रा कष्टकरी, अतः पूर्वमेव स्थानमारक्षितमासीत्," मामा ने गुद्ध संस्कृत में उत्तर दिया।

"जी?" सुभाष ने आश्चर्यजनक मुद्रा बना कर कहा, "क्या कहा, मामा-जी? मैं आप से पूछ रहा हूँ कि आप रेल से आए या बस से, और आप मंत्र-जाप करने लग गए!"

"वाह, भानजे, वाह! मेरे सीधेसादे उत्तर को तू मंत्रजाप कह रहा है? अरे भई, मैं ने तो सिर्फ इतना ही कहा है कि मेरी यात्रा रेल से हुई। आजकल रेल-यात्रा बड़ी कष्टप्रद रहती है। अतः मैं ने पहले से ही स्थान सुरक्षित करवा लिया था।"

"तो यह बात आप हिंदी में नहीं कह सकते थे?"

"क्यों नहीं कह सकता था, सुभाष? पर संस्कृत मेरा मुख्य विषय रहा है। और फिर, संस्कृत तो हमारे देवीदेवताओं की भाषा है। ऐसा भी तो कहा जाता है कि संस्कृत से ही समस्त भाषाओं का प्रादुर्भाव हुआ है।"

मामा का उत्तर सुन कर सुभाष उन का मुँह ही देखता रह गया। वह मम्मी से कहने लगा, "मम्मी, आप ने सब्जियां मंगवाई थीं न? आज बाजार में 'सोलेनम ट्यूबरोसम' और 'सोलेनम मेलोंगिता' का भाव बहुत अधिक था इसलिए मैं आधा किलो 'हिबिस्कस इस्क्यूलेटम' ही ले आया हूँ।"

"क्या? क्या मंगाया था और क्या ले आया?" मामाजी बीच में पूछ बैठे।

"ओफ ओह, मामाजी। आप भी बड़े 'ओल्ड माइंडेड' हैं। मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूँ कि बाजार में आलू और बैंगन महँगे थे, इसलिए मैं आधा किलो

भिड़ो ही ले आया हूँ."

"तो ये सोलेनमवोलेनम आलूबैंगन अपने तक ही सीमित रखें। जब आप को कहते हैं?"

"जी हां, मामाजी। विज्ञान की भाषा में बैंगन को 'सोलेनम मेलोंगेना' और आलू को 'सोलेनम ट्यूबरोसम' कहते हैं। और जब मैं विद्यार्थी भी विज्ञान का ही हूँ, तब क्या मेरा यह फर्ज नहीं है कि मैं हर चीज को उस के वैज्ञानिक नाम से ही पुकारूँ?"

"हां, हां, जरूर पुकारना चाहिए, भानजे। किंतु अब भोजनाय प्रस्तुतो भव."

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि अब भोजन के लिए तैयार हो जाओ," मामा ने कहा।

"हे भगवान! आप फिर संस्कृत-छाप वाणी में बोलने लगे," सुभाष ने बुरी तरह कलपते हुए कहा।

"अरे भानजे, मेरे संस्कृत बोलने पर तू कलपता काहे को है? संस्कृत ही तो हमारी सभ्यता और संस्कृति को दर्शाने वाली एकमात्र भाषा है, जो सदियों से बोली जाती रही है। हमारी भाषा संस्कृत ही तो है। फिर मेरे तो अध्ययन-अध्यापन का विषय भी संस्कृत ही है।"

"ओफ ओह, संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत! मामाजी, आप का यह भाषण मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता," सुभाष ने झल्लाहट प्रकट करते हुए कहा।

"तुझे यह सब भाए भी कैसे, सुभाष। तेरे जैसों के लिए ही तो संस्कृत में कहा गया है—उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शांतये, पयः पानं भुजंगानां केवल विषवर्धनम्."

"फिर वही संस्कृत, मामाजी? आप भी क्या ये वर्धनमवर्धनम बोल रहे हैं। अपने को तो कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता।"

"सब समझ जाएगा, भानजे। कहा है न—यथा खनन खनित्रेण नरो वार्य-धिगच्छति, तथा गुरुगतां विद्यां शुभपूर-धिगच्छति।"

अब तक सुभाष इस बहस से ऊब चुका था। बोला, "मामाजी, मैं आप

को हाथ जोड़ता हूँ, आप अपना यह ज्ञान अपने तक ही सीमित रखें। जब आप हिंदी जानते हैं तो हिंदी में ही बोलिए न। क्यों ये जबरन का ज्ञान हम पर थोप रहे हैं?"

"प्यारे भानजे सुभाष," मामा समझाने लगे, "समस्त धार्मिक कार्यक्रमों में, यज्ञ में, हवन में, मंत्रोच्चार में, ईश्वर की आराधना में, सब जगह संस्कृत उपयोग में आती है।"

"आती होगी। मैं ने कब इनकार किया है?" सुभाष प्रत्युत्तर में बोला, "पर यहां कौन सा यज्ञ या मंत्रोच्चार हो रहा है? यहां न तो मैं संस्कृत जानता हूँ, न मम्मी ही। फिर आप क्या इन दीवारों को संस्कृत समझा रहे हैं?"

"किंतु, प्यारे भानजे, तेरी मम्मी तो विज्ञान भी नहीं समझती हैं। तब तू उन के सामने वैज्ञानिकता क्यों झाड़ता है? अपने विज्ञान को कालिज की लेबोरेटरी तक ही क्यों नहीं रहने देता?"

"आखिर आप कहना क्या चाहते हैं, मामाजी?" सुभाष ने ऊब कर पूछा।

"मैं यही कहना चाहता हूँ, सुभाष, कि नमक घर में नमक रहे, सोडियम क्लोराइड न बने।"

"मामाजी, मैं अपने घर पर विज्ञान की शब्दावली का प्रयोग छोड़ दूँ तो आप अपनी श्लोकबाजी बंद कर देंगे?" सुभाष ने समझौते की शर्त रखी।

"अवश्य, अवश्य, भानजे। किंतु याद रखना, अगर कंट्रोल की दुकान पर गेहूँ 'ट्रिटिकम वल्गर' बना तो फिर मैं भी सोने के समय तकिए के बजाए 'शिरोपधान' मांगूंगा।"

"विश्वास कीजिए, ऐसा मौका नहीं आएगा, मामाजी।"

"शाबाश, भानजे। अब एक गिलास पानी पिलाओ हमें," मामा ने कहा।

सुभाष पानी लेने जाने लगा। मम्मी ने टोकते हुए कहा, "सुभाष, मामाजी सिर्फ पानी ही पीते हैं, 'एच. द. ओ.' नहीं।" और फिर तीनों ठहाका मार कर हंस पड़े।

ट्रेन वाली लड़की

कहानी • थामस टोटस

दोपहर के ढाई बजे थे. जोसेफ के जीव विज्ञान के प्रैक्टिकल समाप्त हो गए थे और वह सीरामपुर स्टेशन पर बंदेल लोकल की प्रतीक्षा कर रहा था. वह बैठने के लिए स्थान खोजने लगा. पर ज्यादातर बेंचें भरी हुई थीं. किसी भी बेंच पर उसे बैठने के लिए जगह नहीं मिली.

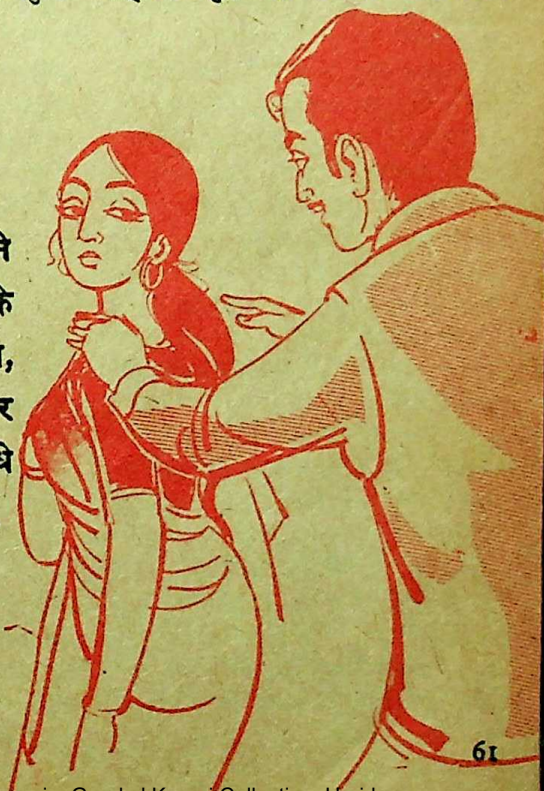
एक बेंच पर बैठी एक लड़की ने उस का ध्यान खींच लिया. उस ने जामुनी रंग की साड़ी पहनी हुई थी और बालों में फूल लगा रखे थे. उस का रंग गेहुआं

था, दांत बहुत सुंदर थे, आंखों में काजल था और चेहरे से भोलापन टपक रहा था. वह टूटी हुई छत की ओर देख रही थी और पूरी तरह अपने विचारों में खोई थी.

बंदेल लोकल ठीक 3.05 पर आई. उस में भीड़ भी नहीं थी. जोसेफ इस लड़की के पीछेपीछे एक डब्बे में चढ़ गया और उस के सामने की सीट पर बैठ गया. वह उस की ओर देखने लगा. उसे लगा कि लड़की की आंखों में उदासी भरी है. उस के चेहरे पर पाउडर की एक मोटी तह जमी हुई थी, जो पसीने से पिघलने



समाज ने बासंतो को अपने जिस्म का सौदा करने के लिए मजबूर कर दिया था, लेकिन जोसेफ को देख कर उसे लगा कि वह एक अंधे चौराहे पर खड़ी है...



के कारण चिपचिपी हो रही थी।

“क्या आप घर जा रही हैं?” वह छोटी थी, मुझे बुरा लगी विलकुल भी नहीं।” उस ने कुछ दुख के साथ कहा।

“क्या...” उस ने जोसेफ की ओर घूरते हुए कहा, मानो वह अचानक उस के सामने प्रकट हुआ हो, “क्या आप मुझ से बात कर रहे हैं?” उस ने उलटा प्रश्न किया और फिर एक सेकंड के लिए उस के सुंदर चेहरे पर एक तीव्र मुसकराहट फैल गई।

“मैं ने आप से पूछा था, क्या आप घर जा रही हैं?”

उस ने कुछ सेकंड के लिए उस की ओर देखा और तब उत्तर दिया, “मैं एक सहेली के घर जा रही हूँ।”

अचानक हवा ने उस की साड़ी का एक छोर उड़ा दिया जिस से वक्षस्थल साफ दिखाई पड़ने लगा। जोसेफ की आंखें एक क्षण के लिए उस के उभार पर टिक गईं। उस ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया, लेकिन फिर भी अपनी साड़ी को ठीक करने में कोई जल्दबाजी नहीं की।

“क्या आप कालिज में पढ़ती हैं?” उस ने कौतूहल के साथ पूछा।

उस ने आश्चर्य में भर कर फिर उस की ओर देखा और तब उदासी से मुसकराते हुए उत्तर दिया, “हम जैसों की किस्मत में पढ़ना कहां?”

जोसेफ उसे समझ नहीं पाया। ‘या तो यह किसी बहुत गरीब परिवार की है या अनाथ है,’ उस ने सोचा, ‘चाहे कुछ भी बात हो, मैं शायद उस के दुखों को दूर कर सकूंगा।’

“तुम्हारा नाम क्या है?” वह ‘आप’ से ‘तुम’ पर उतर आया।

“बासंती,” उस ने कुछ रुकते-रुकते उत्तर दिया। इस बार उस की आवाज और मधुर हो गई थी।

“मेरा खयाल है कि तुम सीरामपुर में अपने मां-बाप के पास रहती हो।”

“हां, वहां पर मैं अपनी मां और छोटे भाई के साथ रहती हूँ। पिता की

उसी समय मृत्यु हो गई थी जब मैं काफ़ी छोटी थी। मुझे बुरा लगी विलकुल भी नहीं।” उस ने कुछ दुख के साथ कहा।

उस के प्रत्येक शब्द से जोसेफ की ओर झुकता जा रहा था।

“तुम्हारा भाई तो स्कूल जा होगा?”

“वह आठवीं कक्षा में गवर्नमेंट स्कूल में पढ़ता है।”

“तुम उस की पढ़ाई का प्रबंध किस प्रकार करती हो—मेरा मतलब है तुम्हारा का सारा खर्चा कैसे चलाती हो? तुम्हारा मां कहीं काम करती होंगी?” उस ने व्यग्रतापूर्वक पूछा।

वह उत्तर देने की जगह पर थी कि उस ने स्वयं को नियंत्रित कर लिया और कुछ समय के बाद बोली, “हां, सारा दिन तीन घरों में काम करती रहती हूँ। वह उन के लिए खाना बनाती हैं और बर्तन साफ करती हैं।”

इस से पूर्व कि वह उस से अधिक प्रश्न कर पाता, उस ने उस से पूछ लिया “आप कालिज में पढ़ते हैं?”

“हां, सीरामपुर कालिज में, और उत्तरपाड़ा में रहता हूँ। लेकिन मैं... मलयाली हूँ।”

बासंती आश्चर्यचकित रह गई। वह बंगाली विलकुल ठीक बोल रहा था। “लेकिन तुम विलकुल बंगाली जैसे लगते हो। तुम हम में से ही एक प्रतीत होते हो।” वह भी ‘आप’ से ‘तुम’ पर आ गई।

उस ने विलकुल ठीक कहा था। उस के काला रंग, मूँछें और चश्मा सारे अधिकांश बंगालियों जैसा प्रतीत होता था।

“मैं तुम से फिर कहां मिल सकता हूँ?” उस ने उस से इस प्रकार पूछा मानो इस के लिए उसे बाध्य किया जा रहा हो।

“तुम्हारा स्टेशन उत्तरपाड़ा है, यहीं पर उतर जाओ।” बासंती ने उस के प्रश्नों से बचने का प्रयास किया। शीघ्रतापूर्वक गाड़ी से उतर गया। गाड़ी फिर चल दी। उस की ओर देख कर हाँ

और जोसेफ... जिस ने बासंती
को अपने मन में बँठा लिया था,
उस दिन उस का वह रूप देख
कर कुछ देर के लिए तो वह
स्तब्ध रह गया...

हिलाया, लेकिन बासंती ने बदले में ऐसा
नहीं किया। वह बंदेल लोकल को हावड़ा
की तरफ जाते हुए देखता रहा और देर
तक एक बेवकूफ की तरह खड़ा रहा।

जोसेफ निराशा के साथ घर की ओर
चल दिया। उस की शक्लसूरत किसी भी
लड़की को अपनी ओर आकर्षित करने के
लिए पर्याप्त थी, लेकिन कुछ लड़कियों
ने उस का केवल इस कारण निरादर
किया था कि वह गैर बंगाली था। वह
उन लोगों में से था जो अंतर्जातीय विवाहों
में विश्वास करते थे। वह यह अनुभव
करता था कि इस प्रकार के संबंधों से
देश में सांप्रदायिक तनाव में कमी होगी।

अगले दिन 1.45 तक उस की कक्षाएं
समाप्त हो गईं। उस की आंखें
प्लेटफार्म पर दौड़ रही थीं और बासंती
को खोजने का प्रयास कर रही थीं लेकिन
वह वहां पर नहीं थी। निराशा हो कर वह
उत्तरपाड़ा जाने वाली गाड़ी में चढ़ गया।

अपनी पहली मुलाकात के पांच दिन
बाद उस ने उसे उसी बेंच पर फिर बँठा
देखा। वह उस के सामने आया और उस
से नाटकीय ढंग से कहा, "नमस्कार,
बासंतीजी।"

उस ने खालीखाली आंखों से उस
की ओर घूरा और तब पहचान कर
मुसकरा पड़ी। उस की आंखों में
चमक थी और उस का चेहरा मानो उस
का स्वागत करता प्रतीत हो रहा था।
"अरे, तुम... आइए, बैठिए।" वह बेंच
के एक सिरे की ओर खिसक गई।

"पिछले पांच दिन से मैं तुम्हें ढूँढ़

रहा हूँ," उस ने मानो केवल उसे सुनाते
हुए उस से कहा। उस दिन बेंच पूरी
तक भर गई थी। उस में कोई सफाई
नहीं दी।

बंदेल लोकल ठीक समय पर आई
और फिर वह उस के साथ एक डब्बे में
चढ़ गया तथा उस के साथ ही बैठ गया।

"आज तुम कहाँ जा रही हो?"
जोसेफ ने बासंती पूछा।

"मैं... मैं..." वह हकलाई, "अपनी
उस मित्र के पास... जिस के बारे में मैं ने
तुम्हें बताया था। उस ने मुझे सिनेमा
देखने के लिए बुलाया है।" उस के चेहरे
पर बिखरी चिंता की रेखाएँ साफ बता
रही थीं कि वह झूठ बोल रही है।

"क्या तुम मेरे साथ सिनेमा देखने
नहीं चलोगी?" जोसेफ ने सिनेमा वाली
बात का पूरापूरा फायदा उठाया।

उस ने जम्हाई ली और तब उत्तर
दिया, "मैं... तुम्हारे साथ चलूँ नहीं,
यह असंभव है।"

"लेकिन क्यों?" उस ने बल दे कर
पूछा।

"कोई खास बात नहीं, सिर्फ यों ही।
मैं किसी लड़के के साथ नहीं जा सकती।"

"क्यों नहीं? आजकल सब लड़कियाँ
लड़कों के साथ घूमती-फिरती हैं। कृपया
मना मत करो। मुझे 12.30 के करीब
कल मानोशी के निकट मिलो। ठीक है?"
उस ने जिद की।

"मैं जरा सोच लूँ," उस ने कहा
और लगभग एक मिनट तक रुक कर
बोली, "अच्छा, मैं वहाँ पर आ जाऊंगी,"
उस ने आना स्वीकार कर लिया।

"तुम्हारे मेरी बात मान लेने से मुझे
बहुत खुशी हुई," उस ने उस के ओर
निकट आते हुए कहा।

वह उत्तरपाड़ा में ट्रेन से उतर गया।
वह बहुत खुश था और मानो हवा में
तैर रहा था। उस ने फिर उस की ओर
देख कर हाथ हिलाया। बदले में उस ने
भी धीरे से हाथ हिलाया। उस के पतले
होंठ विनम्र और मधुर मुस्कान के साथ
खुल गए।

‘इस बार मुझे एक बंगाली लड़की ने असवर दिया है, घर जाते हुए उस ने सोचा. वह फूला नहीं समा रहा था. कभी वह सीटी बजाता, कभी गाता और कभी मन ही मन नाचता.

“ऐसा मालूम पड़ता है कि आज आप बहुत खुश हैं. क्या बात है?” उस के रसोइए ने व्यंग्यपूर्वक पूछा. जोसेफ का रसोइया थोड़ेथोड़े काल तक चलने वाले उस के सारे प्रेम संबंधों के बारे में जानता था.

“तुम थोड़ा इंतजार करो. देखो, क्या होता है.” और जोसेफ उसे एक दिन घर लाने की योजना बनाने लगा.

जोसेफ ने प्रैक्टिकल की क्लास काटी, बस में सवार हुआ और मानोशी पहुंच गया. अभी तक काउंटर खुला नहीं था. सड़क पर आते हुए वह अधीरता के साथ प्रतीक्षा करने लगा. ‘वह यहां पर 12.30 तक ही पहुंचेगी,’ उस ने मन में सोचा. उस ने पोस्टरो की तरफ देखा. हिंदी की एक पुरानी फिल्म लगी हुई थी. ठीक 12 बजे वह फिर काउंटर पर आया.

“बालकनी के दो टिकट. कृपया कोने वाली सीटें दीजिएगा—मेरे साथ एक लेडी है,” उस ने काउंटर पर बैठे व्यक्ति से कहा, जिस ने उस की बात मान ली.

वह फिर सड़क पर आया और अधीरता के साथ प्रतीक्षा करने लगा. 12.15 बजे, फिर 12.30 बजे, लेकिन वह नहीं आई. वह परेशान होने लगा. 12.45 हो गए और फिर एक बजा. वह फिर भी दिखाई नहीं पड़ी. ‘शायद किसी विशेष काम से रुक गई है,’ उस ने अपनेआप को सांत्वना दी. हाल के अंदर न्यूज रील आरंभ हो गई, लेकिन वह अभी तक बासंती को ही ढूँढ़ रहा था.

उस का दिल टूट गया. 1.45 पर उस ने उस के आने की आशा छोड़ दी. ‘बासंती ने मुझ से झूठ क्यों बोला?’ उस की समझ में कुछ नहीं आया. ‘वह शायद किसी जरूरी काम से रुक गई है,’ उस

ने सोचा. सीटियों पर चढ़ते हुए उस हाल में प्रवेश किया और अपनी सीट पर बैठ गया. उस का मन दुखी हो रहा था फिल्म शुरू हो चुकी थी. उस की दाहिनी ओर वाली सीट आरक्षित थी.

इंटरवल में उस ने अपने मित्र रोजी सरकार को देखा. वह आगे वाली पंक्ति में अपनी गर्ल फ्रेंड शमोली के साथ बैठ था. उन्होंने भी क्लास काटी थी और सिरे वाली सीटों पर बैठे थे. उस ने उनकी ओर देखा और उस का मन ईर्ष्या से भर उठा. बाहर जाते हुए उस ने सिगरेट जलाई.

वह एक पुरानी फिल्म थी, जिसमें हीरो और हीरोइन ने बहुत अच्छा अभिनय किया था. संगीत भी अच्छा था. इसके बावजूद उसे वह फिल्म पसंद नहीं आई वह व्यथित हो रहा था.

दिन गुजरते गए. कई सप्ताह गए. उस के बाद अनेक मास बीत गए. उस ने बासंती को फिर नहीं देखा. उसे दुख हुआ और कुछ निराशा भी हुई उस के अंदर मानो ज्वालामुखी फूट रहे थे. वह अपने विषयों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाया. उसे खीज हो रही थी.

उस के रसोइए ने उस में होने वाले परिवर्तन को देखा.

“आप के नए प्रेम का क्या हुआ? उस ने उसे मानो चिढ़ाते हुए कहा.

जोसेफ चिढ़ गया, “तुम भाग जाओ बेवकूफ आदमी!” वह क्रोध में आगबबू



हो गया। रसोइया चुपचाप रसोईघर की तरफ चला गया।
 लगभग एक वर्ष बीत गया। वासंती से फिर मिलने की उस की आशा पूरी तरह समाप्त हो गई थी। उस ने अत्यंत कठिनाई के साथ अपने दिमाग से उस की तसवीर को पूरी तरह हटा दिया।

कलकत्ते में नेशनल टेनिस चैंपियनशिप आयोजित की जा रही थी। जोसेफ II बजे सुबह घर से चला। उस का इरादा अगले दिन फाइनल देखने के लिए टिकट खरीदने का था। लेकिन उसे उसी दिन का टिकट मिला। इसलिए वह उसी समय वहां पर रुक गया और उस ने सेमीफाइनल देखा। पांच बजे शाम तक मैच समाप्त हो गए। उसे भूख लग रही थी, लेकिन उसे अभी काफी दूर जाना था, पहले ट्राम में और फिर ट्रेन में।

वह तेजी के साथ ट्राम स्टाप की ओर जा रहा था, तभी अचानक अपनी बाईं ओर उसे एक चाय की दुकान दिखाई पड़ी। एक मोटे पेट वाला लाला एक टोकरी में समोसे रख रहा था। वह शीघ्रतापूर्वक दुकान में घुसा और प्रवेश द्वार के पास लकड़ी की कुरसी पर बैठ गया। निकर और बनियान पहने एक लड़के ने फर्श पर झाड़ू लगाना आरंभ कर दिया और जोसेफ को अंदर जाने के लिए कहा। उस ने चार कतारें पार कीं और वहां पर बैठ गया।

उसे अंदर कहीं पर झगड़ा होने की

आवाजें सुनाई दीं। कुछ औरतों के गुस्से से रोने की आवाजें आईं। उन में से एक ने कहा, "यह मेरी बारी है।"

"नहीं, नहीं, यह मेरी बारी है," दूसरी ने कहा।

'यह वेश्याओं का अड्डा है,' उस की समझ में आ गया। इन में से कुछ अड्डे छलकपट और धोखाधड़ी के लिए प्रसिद्ध थे। वह जाने को हुआ। उसी समय आकर्षक वस्त्र पहने एक वेश्या बाहर आई।

वह उस के बहुत नजदीक आ गई। कामोद्दीपक मुसकराहट के साथ वह उस के ऊपर झुकी और कहा, "अंदर चलो।" उस ने पंक्तिबद्ध लकड़ी के छोटे-छोटे कमरों की ओर निर्देश किया। दरवाजों के स्थान पर सस्ते परदे पड़े हुए थे।

"नहीं नहीं, मैं यहीं पर ठीक हूँ।" उस ने रुकते-रुकते कहा, "मुझे एक प्याला चाय देना।" उस ने अजीब ढंग से उत्तर दिया। इस स्थिति में वह प्रथम बार पड़ा था। वह डर गया था।

"क्या तुम रसगुल्ला नहीं लोगे?" उस ने पूछा और अपनी व्यवसायमुलभ अदा से आंखें मटकवाईं।

"मैं शायद गलत जगह आ गया हूँ," उस ने कहा और वहां से जाने का निश्चय किया।

"तुम यह समझे थे कि यह तुम्हारे सुसर का घर है?" वेश्या ने उस से व्यंग्य-पूर्वक कहा। तब उस ने कस कर ठहाका

तेरी ही मानिंद

रातरात भर सुनसुन कर सय्यार सितारों के पैगाम,
 तेरी ही मानिंद भरे हैं मैं ने भी आंखों के जाम,
 साथ निभाना कांटों का होता है कितना मुश्किल काम,
 डगरडगर हमराही बन कर सब के हाथ में देना हाथ,
 हर मंजिल की ऊंचनीच से आंख बचा कर चलना साथ,
 कितना प्यारा जीवन तेरा, कितनी ऊंची तेरी जात।

—कतील शिफाई

लगाया, जिस से उस के गंदे-गंदे दांत उस ने बोलना बंद कर दिया। वह दिखाई पड़ने लग। तेजी के साथ सांस लेने लगी। तभी

तभी जोसेफ ने केविन में से अच्छे कपड़े पहने हुए एक व्यक्ति को बाहर आते देखा। केविन में से पीछेपीछे बासंती निकली। वह अपनी साड़ी ठीक कर रही थी। वह उस के भोले चहरे को कैसे भूल सकता था? वह भौंचक्का रह गया। जिसे वह सारे साल ढूँढ़ता रहा, वह यहां?

“तुम यहां पर कैसे आई?” जोसेफ ने उस से पूछा और जबरदस्ती उस के केविन में घुस गया। सारा केविन तेज गंध से महक रहा था।

“मैं तुम्हें कितने महीने से खोज रहा हूँ。” उस ने उसे अपनी भुजाओं में भरने का प्रयत्न किया, लेकिन वह पीछे हट गई और दीवार के सहारे टिक कर चिल्लाई, “मुझे मत छुओ。”

“क्या...? तुम तो वेश्या निकलीं। तुम्हारे पेशे का पता लगाने में मुझे पूरा एक साल लग गया,” उसे गुस्सा आ रहा था। यह कह कर उस ने केविन में ही थूक दिया।

“कृपया मुझे समझने की कोशिश करो,” उस ने नम्रता के साथ उत्तर दिया, “मैं तुम से प्रेम करती थी—बहुत अधिक प्रेम। यही कारण है कि मैं ने अपने को तुम्हारे अधिक निकट नहीं आने दिया। मुझे दुख हुआ तो, लेकिन मुझे इस बात से बहुत खुशी हुई कि मैं तुम्हारे साथ सिनेमा जाने का लोभ संवरण कर सकी। तुम यह नहीं जानते कि उस दिन तुम्हारे पास आने की मेरी कितनी इच्छा थी,” थोड़ा रुक कर उस ने फिर कहा, “जब मैं ने तुम से यह कहा था कि मैं अपनी सहेली के घर जा रही हूँ, उस समय असल में मैं झूठ बोल रही थी। वास्तव में हरेक दिन मैं इसी गंदे स्थान पर आती हूँ। जिस दिन मैं अंतिम बार तुम से मिली थी, उस के बाद से मैं ने बस में आना शुरू कर दिया। इसी कारण तुम मुझे नहीं खोज पाएँ。”

उस ने बोलना बंद कर दिया। वह तेजी के साथ सांस लेने लगी। तभी अचानक उस ने अपनी साड़ी और पेट कोट उतार दिए। क्षण भर के लिए जोसेफ की नजर उस के नग्न शरीर पर टिक गई। उसे देख कर वह कांप उठा और उस ने जो कुछ देखा, उस पर विश्वास नहीं कर पाया।

ऊपर से जो शरीर इतना स्वच्छ दीख पड़ता था वह वास्तव में कितना गंदा था। उस का बदन फोड़ों से भरा था और उन में कुछ में से मवाद बह रहा था। घृणा से जोसेफ ने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया।

“क्या अब तुम्हें संतोष हो गया?” वह बोली, “समाज के कुछ आदर प्राप्त लोगों ने मुझे यह दिया है,” उस ने गंदे फोड़ों की ओर संकेत कर के कहा, “और मैं इन्हें उन को ही लौटा देना चाहती हूँ, लेकिन तुम्हें नहीं क्योंकि तुम से मुझे प्रेम है। क्या तुम समझे? अब तुम यहां से चले जाओ और फिर मुझे छूने की कोशिश न करना,” उस ने ठंडी लेकिन कठोर आवाज से उसे आदेश दिया।

वह चुप हो गई, जोरजोर से सिसकने लगी। उस के गालों पर आंसुओं की बड़ी-बड़ी बूंदें लुढ़कने लगीं, जिस से उस का मेकअप बिगड़ गया।

“बासंती, तुम्हें गलत समझने के लिए मुझे दुख है। अगर हो सके तो कृपया मुझे क्षमा कर देना,” जोसेफ ने केवल इतना ही कहा।

वह केविन से बाहर आया। केविन से बाहर जो थोड़ी सी वेश्याएं सारा वातिलाप सुन रही थीं, तेजी से इधर-उधर छिप गईं। वह धीरे-धीरे ट्राम स्टॉप की ओर बढ़ा और एक ट्राम में लपक कर चढ़ गया।

जब ट्राम हावड़ा स्टेशन पहुंची तो उस के कानों में बासंती के वे शब्द गूंज रहे थे। ‘कम से कम किसी अन्य धर्म वाली लड़की ने मुझ से सच्चा प्रेम तो किया,’ उस ने सोचा।

पांचवीं किस्त

धारावाही • आनंदसागर 'श्रेष्ठ'



जब से आयशा बेगम 'रेनबो' में आई थी, बड़े सरकार ने आज तक एक रात भी उस के साथ नहीं गुजारी थी...लेकिन आयशा बेगम मां बनने वाली थी...सुनते ही बड़े सरकार की आंखों में खून उतर आया...

आप पढ़ चुके हैं :

पुरबिया हाट के नवाब नईमुद्दीन का महल 'रेनबो' लगभग दो सौ बेगमों से भरा था, जिन पर वह बेशुमार दौलत लुटा रहा था. चंदर एक दिन उसी महल में नौकरी करने के विचार से महल के दरवाजे पर पहुंच गया. लेकिन उस महल का दरवाजा और दोनों ओर खड़े बंदूकधारी संतरियों व अन्य शान-शौकत को देख कर चंदर की अंदर घुसने की हिम्मत नहीं हुई. लेकिन हरखू चाचा के साथ वह अंदर चला गया और वहीं रहने लगा. वह बड़े सरकार का विश्वासी खिदमतगार बन गया. साथ ही वह आयशा बेगम का चहेता बन कर उस के साथ एक जबरदस्त गुनाह कर बैठा.

अचानक आयशा ने बोतल को ठोकर से दूर धकेलते हुए मुझे कस कर पकड़ लिया और बोली, **दुखाने** बहुत अच्छी है. उसी ने मुझे शराब

पिलाना सिखाया है. उसी ने राह बताई है कि अपने किसी दोस्त की मारफत सिगाराने से शराब मंगा लें. उसी ने कहा है कि तुम से एक बच्चा मांग लूं...बच्चा...

चंदर... एक नन्हा मुन्ना नवाब जो मेरी खाली गोद आबाद करे. चंदर, मुझे बच्चा चाहिए. बोलो बोलो..."

फिर रोते-रोते उसे अत्यधिक उग्र नशे की स्थिति में ही मूर्छा ने अपने बाहु-पाश में जकड़ लिया.

मैं ने उसे मीठी दृष्टि से घूरा, आगे बढ़ कर उस का सिर तकिए पर टिकाया, बोटल संभालते हुए उस की बची-खुची शराब गले में उतारी और जोर-जोर से तालियां बजा कर आयशा की लौंडी को पुकारने लगा.

मगर वहां था ही कौन, जो मेरा उत्तर देता. मैं उठ कर बाहर आने के लिए चला. पांव जवाब देने लगे. लौटा और आयशा के बराबर ही बैठ गया.

आयशा होश में आ रही थी. शीघ्र ही उस ने आंखें खोल दीं. मैं तब भी उस के सामने बैठा था, उदास, परेशान और गंभीर. उस ने मुझे देखते ही तेजी से बांहों में जकड़ा और मेरे मुख पर विक्षिप्त चुंबनों की वर्षा करते हुए पागलों जैसी उत्तेजित आवाज में बोली, "तो तुम मान गए? कितने अच्छे हो तुम? आज मेरी सुहागरात है, हामिद मियां की बेटा का निकाह हो रहा है. चंदर, मेरे प्यारे चंदर, तुम कितने अच्छे हो!"

मेरी संज्ञा तो कब की गुम हो चुकी थी. मैं मानो चाबी लगे खिलौने की तरह उस के संकेतों पर उठना-बैठना और तमाशा दिखाना चाहता था.

लगभग दो बजे किसी स्त्री की तेज खिल-खिलाहट से मेरी आंख खुली. हड़बड़ा कर उठा. आह्लादकारी स्वप्नों के संसार की प्रतिच्छाया की सलोनी मिठास अब तक शरीर को पुलकित कर रही थी. मैं उसी बड़े हाल में गावतकिए के सहारे लेटा था. आयशा बी का कहीं पता न था. फानूस की रोशनियों का हलका प्रकाश अब तक फर्श की सफेद चांदनी को चमका रहा था. घबराहट महसूस करते हुए सामने देखा तो प्रायः विगत यौवना चालीस वर्ष की सलोनी,

सजीसंवरी, गौरवर्णा स्त्री बिना किसी कारण जोर-जोर से हंस रही थी.

मैं ने चकित हो कर उस की हंसी का कारण समझने के लिए पूछा, "क्या हुआ? कहा हूं मैं? आप कौन हैं?"

उस ने हंसना त्याग तनिक मुसकान भरी आंखों से घूरा और उत्तर दिया, "इकसठ नंबर महलसरा है यह. यानी आयशा बेगम की आरामगाह. तुम खास जमादार हो न? चंदर तुम्हारा ही नाम है?"

उस की दृष्टि का व्यंग्य कुंठित सा कर रहा था. चारों ओर आयशा को ढूँढ़ती आंखें यहां-वहां भटक रही थीं. उस के प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर उलटे मैं ने उस से सवाल किया, "आप कौन हैं? आयशा बी कहाँ गई?"

वह बोली, "घबराओ नहीं. खाने के लिए हमारा इंतजार कर रही है. बहुत थक गई है बेचारी." वह फिर जोर-जोर से हंसती हुई बोली, "हादी बेगम का नाम सुना है तुम ने? जरूर सुना होगा. शैतान की खाला का नाम किसे नहीं पता!"

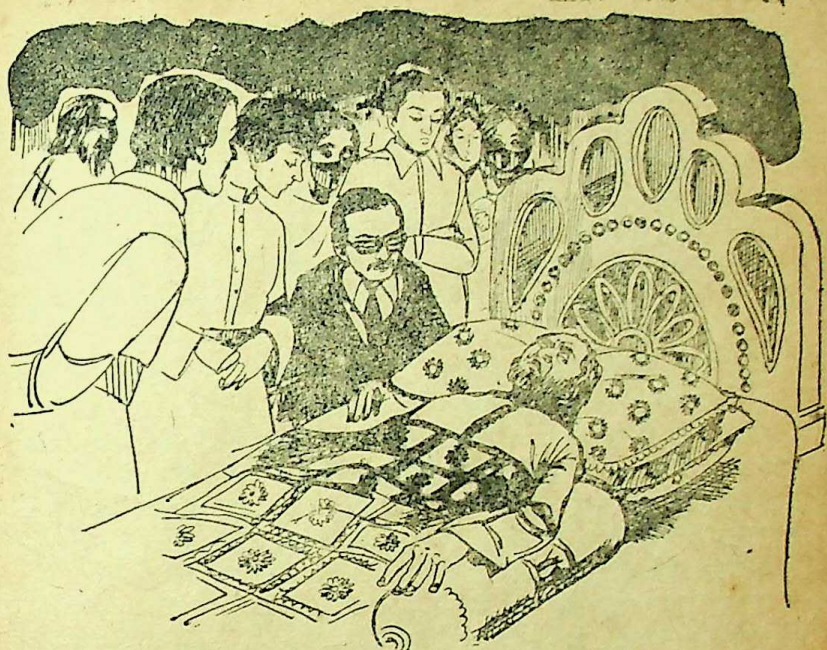
मैं विजली की गति से उठता हुआ जोर से बोला, "आप हादी बेगम हैं? आप ही हैं, मैं ने समझा... कि आप...?"

"अजीब बात है. आप तो घबरा गए, हजरत. खैर चलिए, देर हो रही है. दो दज रहे हैं. खाना भी खाना है अभी."

मैं ने नकारात्मक उत्तर दे कर जोर से कहा, "नहीं-नहीं, खाना नहीं खाऊंगा. अब तो शायद सवेरा होने वाला है."

वह हंस कर बोली, "खाना नहीं तो दूध मंगाऊं. बहरहाल अभी सवेरा होने में कई घंटे बाकी हैं. बड़े सरकार की खिदमत में दो बजे खाना खाने की आदत तो होनी चाहिए तुम्हें!"

हादी बेगम बातों में बहुत तेज थीं. मैं उन से उलझना न चाहता था. लेकिन वह पीछा छोड़ने को तैयार न थीं. खाना खाने की आदत तो होनी चाहिए ही असामान्य था. सब से बड़ी मुसीबत थी कि हादी



वेगम ने मुझे जिस स्थिति में पकड़ा था, उस की गोपनीयता भंग हो जाने का खतरा मेरे सिर पर भयानक रूप से गंभी तलवार जैसा लटका हुआ था.

उन्होंने बारबार कहा तो मैं चुपचाप उन के पीछेपीछे दूसरे कमरे की तरफ चल दिया. हादी वेगम की चाल बता रही थी कि उन पर गराब का भरपूर नशा सवार था. मगर शायद पीने की अभ्यस्त थीं, इसलिए वहकी नहीं थीं.

सचमुच दूसरे कमरे में दस्तरखान सजा था और आयशा के अतिरिक्त भी एक गठीला नौजवान हमारा इंतजार कर रहा था.

मैं ने पागलों की तरह युवक को देखा. जितनी बात छिपाए रखना चाहता था, उतनी ही खुलती जा रही थी. आयशा बेगम की उस दृष्टि को मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा. मेरे लिए स्थान छोड़ते जब उन्होंने मुझे बैठने की इजाजत दी तो, मैं मुझे नवागता पत्नी जैसा सौम्य और सलज्ज

मुसकराता हुआ वैभव लहरा रहा था,
मानो कह रही हों, 'आओ न, बैठो। बड़ा
तंग करते हो तुम। अंगअंग दुख रहा है-
हाय राम, कैसे निष्ठुर हो!'

किसी अनजाने नियंत्रण के अधीन
मैं ने कब स्थान ग्रहण किया,
कब खाना शुरू किया और कब खाना
समाप्त किया, कुछ नहीं जानता. जानता
हूँ तो सिर्फ इतना कि सामने बैठे नौजवान
का परिचय सुनते ही शरीर भर में सिहरन
सी दौड़ती महसूस हुई.

था, "वह जाफर खां हैं। महलसरा के नायक। हमारे गहरे हमदर्द। इन से डरने या घबराने की जरूरत नहीं है तुम्हें।"

ओह, मैं किन परिस्थितियों के जाल में फँसता जा रहा था. हादी बेगम और जाफर खां! वह बहुचर्चित और कुख्यात जोड़ा जिस के बारे में हर ओर उंगली उठा करती थी. जिस पर रईस मियां

और शायद बड़े सरकार कुपित थे. जिन की बदनामी की बात सुनते हुए स्वयं मेरा खून खौलता रहा करता था. वही लोग मेरे पहले और शायद सर्वाधिक भयंकर अपराध के अकाट्य प्रमाण और गवाह थे. मैं उन से क्या शिकायत कर सकता था? कैसी शिकायत कर सकता था? रईस मियां की ओर से दिया जाने वाला समाचार अब कैसे होंठों से बाहर आ सकता था?

भोजन के बाद हादी बेगम उठी और जाफर खां से बोली, "चलो, जाफर. अब आराम करेंगे. इन लोगों को भी आराम करने दो." और हलकेहलके वहां से चली गई.

मैं किर्त्तव्यविमूढ़ सा बैठा था. आयशा बेगम ने मेरे पास सरकते हुए धीमे से कहा, "क्या सोच रहे हो?"

मैं तेजी से बोला, "हादी बेगम इस लड़के के साथ क्यों रहती हैं? उन दोनों में कोई मेल है भला?"

आयशा हंसी, "मैं ने तो यह सवाल अभी किया ही नहीं उन से. मरजी है उन की. मगर दोनों बहुत भले लोग हैं. हादी बेगम..."

...मैं ने क्रोध से टोका, "आप उन की पारीफ न करें, बेगम हुजूर. सारे 'रेनबो' में उन की आवागमनी के चर्चे होते हैं. हा इस वक्त भी शराब के नशे में धुत हैं."

आयशा बोली, "शराब पीने वाला बुरा तो ही यह जरूरी नहीं, चंदर. मैं भी पीती हूं, क्या तुम मुझे बुरा कहोगे? हुं! यह महलसरा की जिदगी का सहारा. शराब ही यहां की बेगमात की तेरी आग शांत कर सकती है. और तुम न्हें क्यों बुरा कहते हो? तुम..."

मैं आगे आयशा बेगम की बात सुनने में तैयार न था. चलने के लिए उठा और ल में होता हुआ एकदम बाहरी ड्योड़ी आ पहुंचा. जहां गुल अब तक एक ढेर पर बैठी ऊंधती-ऊंधती मुझे देखते खड़ी हो गई थी.

आयशा ने जल्दीजल्दी मेरे पास आ कर मेरा हाथ पकड़ा और आग्रह से बोली, "जाने से पहले बता तो दो, कल कब आ रहे हो?"

मैं ने तेजी से कहा, "मुआफ कीजिएगा, बेगम हुजूर, अब शायद न आ सकूं."

वह हंसी, "खुदाया, सच कहते हैं? देखती हूं कैसे नहीं आओगे. तुम्हें आना पड़ेगा, चंदर."

और मैं तेजतेज कदम चलता महलसरा से बाहर निकल आया.

इस के बाद के कुछ दिन मेरे जीवन के सर्वाधिक व्यस्त दिन थे. सिर्फ इतना नहीं कि बड़े सरकार को इस बार लगातार दो दिन दिल के सख्त दौरे पड़े थे, वरन् यह भी कि आयशा बेगम की अंतिम चेतावनी के विरुद्ध मुझे अपनेआप से युद्ध करना पड़ रहा था.

मैं इकसठ नंबर महलसरा की परछाईं से दूर रहना चाहता था, पर कोई मुझे वहां जाने के लिए भीतरभीतर व्याकुल कर रहा था और मैं उसे पहचानने, पकड़ पाने, या दुत्कारने में असमर्थ हो रहा था.

आखिर हारना ही पड़ा. आयशा बेगम की बात सच साबित हुई. चारपांच दिन बाद रात के घने अंधकार में फिर एक बार हाल की चांदनी पर मेरा पौरुष यौवन की बरसाती नदी के थपेड़ों को सहन न कर पाने के कारण अनिश्चित मार्ग पर बह निकला.

फिर तो यह क्रम दिन के अंत का सब से खूबसूरत और आवश्यक अंग ही बन गया. यहां तक कि रईस मियां पर इस की सूचना कुछ संशोधित रूप में जा पहुंची.

उन्होंने मुझे एकांत में समझाया, "हादी बेगम की महलसरा में तुम भी जा सकते हो, मुझे सुन कर यकीन नहीं हुआ. लेकिन अब तुम खुद तस्लीम कर रहे हो तो एक ही बात कहूंगा. महलसरा की ललक ने बड़ेबड़ों को मौत के गहरे जाल में बुझाया है, चंदर. तुम यदि उस से

बचना चाहते हैं तो फिर कभी वहां न जाना। यही बात अगर बीमार अब्बा हुजूर को पता चलती तो शायद वह तुम्हें फांसी पर चढ़ाने का हुक्म देते, लेकिन मुझ पर तुम्हारे एहसान हैं, जिन के बदले मैं तुम्हें अपने हाथों कोई तकलीफ नहीं दे सकता। मैं तो समझता था कि तुम हादी बेगम को बहू बेगम से न मिलने के लिए डांटोडपटोगे, धमकाओगे, लेकिन तुम ही कीचड़ में जा कर फंस गए।”

मैं चुपचाप सुनता रहा। आयशा बी का नाम नहीं आ रहा था, इसलिए कुछ हिम्मत बंधी थी। रईस मियां के आरोप सहज ही स्वीकार करता और भविष्य में शिकायत का अवसर न देने का वचन देता वहां से भाग आया।

और सच मानिए, फिर मेरी और आयशा की मुलाकातें बहुत कम हो गईं। साल भर में शायद एकदो बार ही मैं उन की महलसरा में जा पाया।

इस बार भी नवाब का दौरा टल गया लेकिन परिणामस्वरूप उन में चिड़-चिड़ापन और गुस्सा बहुत बढ़ने लगा। इसी बीच एक भयंकर घटना भी हुई। आयशा के मां वनने की सूचना पा कर तो वह तकिए उठाउठा कर मारने लगे।

मैं इस का कारण जानता था। बड़े सरकार की जुवान चुप थी लेकिन दिल बोखला रहा था। बच्चा होने के बाद एक दिन आयशा से मिलने और बच्चे

को देखने गया तो उसी की जुवानी ज्ञात हुआ कि बड़े सरकार की क्या अवस्था थी। बोली, “जानते हो उन्होंने क्या कहा? कहा कि यह बच्चा हराम का है। मैं ने इनकार किया और कहा कि बच्चा उन्हीं का है। वह गुस्से से दांत पीसते हुए मुझे मरवा डालने की बात कहने लगे। मैं ने हंसते हुए उन्हीं से पूछा कि भला आप बताएंगे कि यह बच्चा आप का क्यों नहीं है। इस पर बड़े सरकार की आंखों में खून उतरने लगा। बारबार उस आदमी का नाम पूछते रहे जो इस बच्चे का बाप था। मैं ने कोई जवाब ही न दिया। बहुत तेजीतरारी की उन्होंने तो एक सवाल उन से ज़रूर पूछा। मैं ने पूछा कि महलसरा में बंद कर के मार डालना ही अगर उन के साथ शादी का मकसद था तो वह मकसद उन्होंने पूरा किया लेकिन मैं ने, एक औरत ने, औरत का अपना फर्ज पूरा किया, अपनी जिंदगी का एक सहारा खोजा है, तो उस पर उन्हें क्या दुश्चारी है। दुनिया के सामने हम दोनों एकदूसरे के शोहर और बीवी हैं, यह बच्चा भी हमारा ही माना जाएगा। तब वह असलियत को खोलने के लिए इतनी जिद क्यों कर रहे हैं? सुन कर बड़े सरकार चले गए।”

मगर यह चला जाना कितना भयानक था, यह मुझे बाद में ज्ञात हुआ। एक दिन महलसरा से आयशा का बच्चा चोरी चला गया।

खुशनुमा परदे में...

करीब सुबह कह कर अजल ने आंख झपका दी, ‘अरे ओ हिज्र के मारे तुझे अब तक न स्वाब आया,’ दिल उस आवाज के सदेके यह मुश्किल में कहा किस ने, ‘न घबराना, न घबराना, मैं आया और शिताब आया,’ कोई कत्तल सूरत देख ली मरने लगे उस पर, यह मौत इक खुशनुमा परदे में आई या शबाब आया।

—आरजू लखनवी

और फिर कभी न मिला, कहीं न मिला। चोरी की तफतीश का नाटक भी हुआ, छानबीन भी हुई, लेकिन बड़े सरकार के खास जमादार के नाते मुझे भी मालूम न हो सका कि बच्चा कहाँ गया, कौन ले गया।

आयशा रोतेरोते निढाल होती, हादी बेगम मनाती लेकिन वह बड़े सरकार को कोसने लगती। आखिर बेचारी ने विस्तर ही पकड़ा। करीब महीने भर बाद ठीक हुई तो आधी भी न रह गई थी। मैं इतना घबरा गया था कि उसे देखने तक न जा सका।

जाफर खां से अब रोज ही मुलाकात होती थी। हम दोनों ने एकदूसरे को जैसे बहुत अच्छी तरह पहचान लिया था।

गुलाम

वे गुलाम हैं जिन को यह साहस नहीं कि वे न्याय का साथ दें, चाहे वे दोतीन की ही संख्या में क्यों न हों।

—लोवेल

वह मुझे देखते ही मुसकराता लेकिन मेरा अंगअंग फड़कने लगता। मन ही मन उस से घृणा होती थी।

हरखू चाचा अब भी पुरबिया हाट में ही रहते थे। प्रायः उन से मिलने जाता रहता था। बुढ़ापे में बड़ा कष्ट मिल रहा था बेचारे को। अपने हाथ से पकातेखाते। रुपएपैसे का कोई प्रबंध नहीं। मैं हर बार कुछ न कुछ उन्हें दे आता। बड़े सरकार से माफी दिलाने की बात पर वह मुंह सिकोड़ कर कहते, “ता रे बच्चू, ना, अब नहीं करूंगा नौकरी। दिल नहीं चाहता। बड़े सरकार ने मेरा बुढ़ापा मिट्टी किया है, मेरी खिदमत को भी बाद न रखा। मैं ने सचाई के रास्ते अपना बलिदान दिया है, बेटे। अब झकंगा नहीं।”

मैं ने आयशा बेगम के बारे में भी हरखू चाचा को सब कुछ साफसाफ बता दिया था। सुन कर बोले, “तो तेरे साथ भी ग्राम नौकरों जैसा हुआ। बच्चू, बड़ा दुखाया तू ने। मैं तो ऐसा न समझता था तुझे। पढ़लिख कर भी तू ने शराफत से गिरा हुआ काम किया।”

मैं ने गरदन लटका कर कहा, “चाचा, मैं मजबूर हो गया, बचने की लाख कोशिश की मगर न बचा। आप शायद नहीं जानते कि बेगम ने कितनी आजिजी से मुझे अपनी कहानी सुनाई, जिस पर मैं थरा गया। अब तो हम दोनों एकदूसरे को प्यार करने लगे हैं, चाचा।”

वह बोले, “मूर्ख है। न तो बेगमों में प्यार होता है और न नौकरों में। हवस की यह कहानी नवाबियों में हमेशा इसी तरह दोहराई जाती है और दोहराई जाती रहेगी। मगर खैर, हुआ सो हुआ। अच्छा है, आइंदा इस बेवकूफी में न उलझना।”

मैं ने आवेश में कहा, “कभीकभी तो मेरा दिल होता है, चाचा, कि मैं आयशा बेगम को ले कर कहीं चला जाऊँ, हम दोनों शादी कर लें।”

वह सिर हिला कर कहते, “पागलपन की बातें मत सोचो, बच्चू। यह नामुमकिन है और इसी लिए कहता हूँ, तू ने किसी मजबूर लड़की से नाजायज फायदा उठाया है।”

जितनी बार भी मैं हरखू चाचा से मिला, बड़े सरकार के बारे में जरूर कहता। लेकिन हरखू चाचा अब जैसे बड़े सरकार से घृणा करने लगे थे।

इन्हीं दिनों बड़े सरकार ने एकाएक ही किले का निवास त्याग कर नए महल पहुंच जाने का ऐतिहासिक निर्णय किया। किसी ने सुझाया कि अब जमाना बदल रहा है और किलों की बात पुरानी हो चली है। जितने भी राजेनबाब हैं, नए डिजाइन के महलों में रहते हैं। बस, तत्काल ही निर्णय हो गया। अब पुरबिया हाट में बिजली भी लगने वाली थी। हुकम हुआ

कि जैसे ही महलसरा बहिश्त का फूल, नईम मंजिल का सरोसामान नए महल में पहुंचा दिया जाए.

आज्ञा में देर कौन लगाता. जुम्मे के दिन नमाज के बाद नवाब साहब ने विधिवत नए महल में प्रवेश किया. नियोजित बटी, इनामोइकराम का बाजार गर्म रहा, फातिहा हुआ, और हजारों रुपए खर्च कर के नए निवास का श्रीगणेश किया गया.

बड़े सरकार ने मुझे और नायक जाफर खां को विशेष रूप से नियुक्त किया कि किले का सामान संभलवा कर नए महल पहुंचवाएं. हम मन ही मन चाहे एकदूसरे की और अधिक उत्सुक न हों, लेकिन मिल कर काम करते रहे.

नए महल का निर्माण कई एकड़ भूमि पर हुआ था. इस में कई ब्लाक थे. मर्दाना ब्लाक 'ए' ब्लाक कहलाता था, जिस में बड़े, छोटे व मंजिले नवाब लोग रहा करते थे. 'बी' ब्लाक में जनानखाना था. महलसरा की अनगिनत बेगमें इसी बी ब्लाक के अलगअलग कमरों में रहा करती थीं. यहां इमामबाड़ा भी था. मोटरखाना भी था. अपना बिजलीघर, वाटरवर्क्स, आदि सभी सुविधाओं का प्रबंध था. महल का पूरा अहाता लोहे की सलाखोंदार चारदीवारी से घिरा हुआ था, जिस में सिर्फ दो दरवाजे थे. एक आम लोगों के लिए, दूसरा सिर्फ खासखास सरकारी लोगों के लिए. इन्हीं दोनों दरवाजों पर दो बड़ीबड़ी तख्तियां फिट की गई थीं, जिन पर सिर्फ 'रेनबो' लिखा हुआ था ('नो थारो फेयर' वाला हिस्सा जाने किस की मूर्खता के कारण लिखवाने से रह गया था). पहले कहा ही जा चुका है कि बड़े सरकार को यह नाम बहुत ज्यादा पसंद था.

काम के दौरान जाफर खां अकसर मुझ से मिलने, मेरे करीब आने की कोशिश करता था. वह शायद मेरे विचारों से अपरिचित था. हमउम्र होने के नाते

मुक्ता

कई बार मेरा मन उसे फटकारने और दुत्कारने को हुआ करता. सोचता था कि हादी बेगम का प्रसंग आरंभ कर उसे काफी कुछ लज्जित करूं.

एक दिन अबसर आ ही गया. हम लोग तोशखाना तबदील करा रहे थे. सामान ठेलों में भरा जा रहा था. आकर हाथ में सिगरेट लिए मेरे पास आ कर बोला, "लो उस्ताद, बढ़िया वाला सिगरेट है, पिओ. हादी बेगम ने खास तौर से मेरे लिए दिल्ली से मंगवाया है."

ज्योति

बड़े आदमी मरने पर ऐसी ज्योति छोड़ जाते हैं जो उन की मृत्यु के बाद भी कई युगों तक जगमगाती रहती है.

—लांगफैलो

मैं ने सिगरेट तो ले लिया लेकिन जलते हुए स्वर में बोला, "हादी बेगम तुम पर जरूरत से ज्यादा मेहरबान हैं. क्यों, है न?"

उस का सारा उत्साह भंग हो गया, आहिस्ता से बोला, "हां."

मैं ने अब पुचकारपुचकार कर जूते मारने शुरू किए, "मगर यार, बड़ा अजीब लगता है तुम दोनों को देख कर. कहां वह और कहां तुम. एक बेगम और दूसरा मामूली नायक. भला कौन सा मंत्र सिद्ध कर रखा है तुम ने?"

वह चुप खड़ाखड़ा सिगरेट का कश लेता रहा.

पर मैं तो आज ही दिल की तमाम तपिश मिटा लेना चाहता था, इसलिए आगे कहता रहा, "देखा जाए तो हैरानी

की कोई बात है भी नहीं। जरूरतमंद को जरूरत की कोई चीज किसी कीमत पर मिले वह खरीदने से चूकेगा नहीं। हादी वेगम बेचारी क्या करे! क्यों?"

उस का चेहरा सुनते ही उतरने लगा। मैं हंसता जा रहा था और उस की दयनीय मुखमुद्रा पर प्रसन्न हो रहा था।

सहसा ही वह बोला, "भाईजान (वह मुझे खुशामदी लहजे में औरों की तरह भाईजान ही कहता था), खुदा के लिए ऐसी बातें मत कीजिए। इतना ही कह सकता हूँ कि आप जो कुछ फरमा रहे हैं, गलत है।"

मैं ने बात आगे बढ़ाने के लिए कहा, "मगर दुनिया तो यही मानती है, जाफर खां।"

उस ने कहा, "दुनिया अंधी हो सकती है, लेकिन आप तो मत होइए। हम दोनों में बस, प्यार है, ऐसा प्यार जिस में इस किस्म के गंदे खयालों को कभी पनाह नहीं मिलती।"

वह कहते हुए जल्दीजल्दी वापस चला गया। मैं खड़ाखड़ा मुसकराता रहा।

इसे संयोग समझिए या कुछ और लेकिन महलसरा खाली कराते समय तीन नंबर महलसरा का सामान उठवाने पहुंचा तो मेरा सत्कार करने वाली स्वयं बिल्कीस वेगम ही थीं। ऐसा न होता तो मेरे मन से भ्रम का परदा भी न उठ पाता।

मेरी आंखों में तो वही बिल्कीस वेगम घूम रही थीं, जिन की आंखों से वेइंतहा आंसू बहते थे और जो परदे में रह कर बातें करती थीं। इस समय मिली तो पहचान ही न पाया। वह खुले मुंह मेरे सामने आईं। मादक मुसकान से मुझे देखती रहीं, रसभरी बातें करती रहीं और अंत में सहसा कुछ ऐसा कहा कि मैं विमूढ़ रह गया।

उन्होंने फरमाया, "आयशा बी ने मुलाकात हमारी मारफत हुई, लेकिन हमें जनाव ने पीछे ही छोड़ दिया," और ठहाका लगाया।

मैं उन के परिवर्तन को देख रहा था। दोतीन वर्षों बड़े सरकार की स्वर्ण कारागारी दीवारों में उन्होंने गिरगिट के समान रंग बदला था। न वह लाज रही और न वह संकोच। आंखों में आंसुओं और पीड़ा के स्थान पर था मचलता हुआ अनुरोध, निडर चंचलता, चमकती हुई पुतलियों से निकलती वासना की तीव्र और वेधक किरणें, जिन की आग किसी को भी भस्म कर डालने की शक्ति रखती थी।

मेरे पास उन के प्रश्न का उत्तर ही क्या था, चला आया। मन ही मन डरता रहा, विकलता अनुभव करता रहा, परिवर्तनशील संसार की अलौकिकता पर विचार करता रहा, और आखिर जिस

शिकारी वृक्ष

अजैटाइना का एक वृक्ष लोरी सुना कर अपने शिकार को सुला देता है और फिर उस का खून चूस लेता है। यह वृक्ष कैलोफामी कहलाता है।

धुएं वाला वृक्ष

जापान के घने जंगलों में एक वृक्ष सूर्यास्त होते ही अपनी चोटी से धुआं उगलने लगता है।

—पंकज शर्मा

दिन मैं ने सुना कि धीरे-धीरे सवाय महल के किसी मामूली कर्मचारी के साथ सदासदा के लिए भाग गई हैं तो बिना आश्चर्य व्यक्त किए लंबा सांस ले कर चुप हो रहा।

इन्हीं घटनाओं के दौरान बड़े नवाब साहब बीमार पड़े. दिल का अंतिम दौरा आया, महल की दीवारें बदलने वाले इतिहास की बाट देखने लगीं. रईस मियां को अपने सौभाग्य का विश्वास होने लगा. नए महल के 'बी' ब्लाक में हलचल मच उठी, पूरी रियासत में मातम भरी सुबह, दोपहर और शाम आनेजाने लगीं.

रहा
रकार
न्होंने
त
माँखों
था
लता,
सना
की
की
उत्तर

दिल के दोरे के साथ ही आधे शरीर पर
फालिज के प्रकोप से बड़े सरकार
अपंग हो कर बिस्तर पर पड़े हुए थे।
दिल्ली, बंठ मद्रास के डाक्टरों
की कतारों की रैं सेवा में उपस्थित
थीं। ईस मियां सरकार चीफ साहब
को बुला कर समझाते थे, "खबरदार,
इलाज में किसी तरह की कमी न हो,
रुपए की जरा भी फिक्र न की जाए। कोई
यह न कहे कि छोटे नवाब ने बड़े सरकार
का इलाज करने में कोरकसर रखी।"
आनेजाने वालों का तांता लगा था।

अनजाने वालों का तांता लगा था। हिंदू मुसलमान प्रजा रोज अपने सरकार के दर्शनों की लालसा लिए आती और निराश वापस लौट जाती। डाक्टरों ने बड़े सरकार को तनिक भी हिलने-डुलने या बोलने की मनाही कर दी थी।

सेवा के लिए हरदम पास रहने की अनुमति सिर्फ मुञ्जी को मिली थी. मैं चौबीसों घंटे उन के पास बैठा रहता. फालिज गिरने के कुछ दिनों बाद वह अधिक समय बेहोश रहा करते थे. वातचीत अस्पष्ट हो गई थी. अभ्यास के कारण मैं ही उन की आवश्यकता समझता और पूरी करता था.

एक दिन देखा, हरखु चाचा चले गये
रहे हैं। रईस मियां उन के साथ थे। बड़े
सरकार को मुँछित अवस्था में देख हलके
स्वर में बोले, "क्या कहूँ, बच्चे, दिल नहीं
माना, बड़े सरकार की बीमारी की खबर

सुन कर रहा नहीं गया. सारी उमर
खिदमत की तो इस आखिरी मौके पर
पीछे क्यों रह? सो, चला आया. छोटे
सरकार बड़े नेक हैं हमारे. यहां आने की
इजाजत दे दी."

मैं ने आश्चर्य व्यक्त किया, "लेकिन चाचा, आप तो खुद ही बीमार चल रहे हैं. सांस का मर्ज..."

वह जल्दी से मुसकरा दिए, “भली कही तू ने. अरे, मालिक बीमार होवे तो नौकर का मर्ज अपनेआप भाग जावे है. बच्चे, तुम अभी नहीं समझोगे इसे. यह मनाओ हमारे बड़े सरकार को जल्दी आराम होवे.”

और उन्होंने मुझ से बड़े सरकार का पूरा चार्ज ले लिया.

बड़े सरकार की बीमारी दिन प्रति-दिन गंभीर होती जा रही थी. डाक्टर ने 'कामा' जैसा कोई नाम लिया था. मूर्छा के कारण खानेपीने, दवादारू किसी का होश नहीं था, एकाध बार ग्रांखें खोलते तो करवट बदलने या कुछ ऐसी ही मांग कर बैठते.

चारपांच दिन की संदिग्ध अवस्था के बाद अचानक उन की हालत में सुधार आया. प्रायः बुझने वाले दीपक की अंतिम टिमटिमाहट की तरह ही था. वह मूर्छा में बिना बातचीत किए और बिना किसी को पहचाने चुपचाप पड़े रहते थे. अब आंखें खोलते और यहांवहां देखते और पहचानने की कोशिश करते.

हरखू को पहचानने में तनिक भी विलंब न हुआ। अस्पष्ट भाषा में उस का नाम ले कर पास बुलाया। हरखू की आंखों में आंसू छलछला रहे थे। बड़े सरकार ने देखा और मुखमुद्रा मलिन सी हुई। बहुत हलकी आवाज में उस के आने के बारे में सवाल किया। हरखू ने रोतेरोते कहा, “बड़े सरकार, नमक खाया है मैं ने। मैं तो कहता हूं आप की आई मुझे आ जाए। किसी तरह अच्छे हो जाएं आप, फिर चाहे जैसी सजा दे देना हाथ, क्या हाल हो गया आप का!”

नवाब न कांपता हुआ हाथ हरखू की ओर बढ़ाया। मुंह पर असीम शांति फैली थी। आंखें प्रकाश से जगमगा रही थीं। प्यार से कहने लगे, “हरखू, अबे, हम ने तो तुझे उसी दिन माफ किया था, मगर तू साले पागल बना जो नहीं आया। अब न जाइयो कहीं....” उन्होंने रईस मियां को अपने पास बुला कर कहा, “इस के ऊपर हमेशा रहम किए रहना, रईस बड़ा वफादार है।”

रईस मियां ने टोका, “आप क्या फरमा रहे हैं, अब्बा हुजूर! खुदा आप को जल्द सेहत वखशेगा।”

उन्होंने हां करते हुए कहा, “ठीक है, भाई, ठीक है। लेकिन...” फिर कुछ देर चुप रह कर बोले, “लेकिन, मेरा दिल नहीं मानता, बरखुरदार। सभी लोगों का खयाल आता है।” और इस के बाद वह खास बेगम, बहू बेगम, हादी बेगम, बिल्कीस और आयशा के बारे में पूछने लगे। बिल्कीस के भाग जाने का समाचार हम ने जानबूझ कर छिपा लिया था।

अंगरेजी राज के बड़ेबड़े अफसर भी अकसर आ रहे थे बड़े सरकार को देखने। बड़े सरकार उन से कुछ न बोलते, चुपचाप छत की ओर देखते रहते। जब वे चले जाते तो मुझ से कहने लगते, “ये लोग क्यों आते हैं, चंदर? इन को क्या गरज पड़ी है? हांहां, शायद देखने आते हों कि इन का मोहरा मात खा कर कैसा नजर आ रहा है। अबे, इन्हीं लोगों की बदौलत तो हम ने अपने को नवाब समझा,

थरथराती रही...

थरथराती रही चिराग की लौ, अशक पलकों पे कांपकांप गए, कोई आंसू न बन सका तारा, शब के साए नजर को ढांप गए।

—‘कतील’ शिफाई

इनसान नहीं। जानता है, कमिश्नर साहब मिलने पर हंसहंस कर क्या कहा करते थे। कहते थे, ‘मौज करो, नवाब, मजे उड़ाओ, तुम तो हिंदोस्तान की तकदीर हो।’ वास्तव में हिंदोस्तान की तकदीर पर इन लोगों ने कैसे पंजे जमा रखे हैं। हम को तमाम सहुलियतें दे रखी थीं। किस लिए भला अजी, अगर हम से बिगाड़ कर रखते फिर वही होता जो सन 57 में हुआ था।

उन्हें कोई उत्तर न दिया जात था। वे बातें प्रलाप जैसी थीं। वह हर साल न जाने कहांकहां की सोचते रहते थे। खास बेगम और दूसरी बेगमों की दर्शन देने के लिए ‘ए’ ब्लाक में जागल किया गया। चीफ साहब के साथ अजी सभी रियासती अफसरान हटा कर पतन का प्रबंध हो जाने पर एक के बाद एक बेगमात ने आना शुरू किया। मलक्यात जमानी उन की खास बेगम थीं। शनिवार के बाद जवानी के आरंभ में जब तक वे सरकार को गद्दी न मिली, हंसतीखेलचूर रहें। अब करीब बीस साल से हमें गंभीर और उदास नजर आती थीं। सरकार शायद ईद या किसी ऐसे ही ख़ोर् अवसर पर उन के कक्ष में जाया करते थे। भोजन के समय अब वह अन्य बेगमों के साथ दस्तरखान पर मौजूद होतीं। यदि बड़े सरकार पूछते भी तो कोई जवाब न करतीं।

उन की आंखों में पश्चात्ताप झलक थी। अपने शौहर के कदमों पर सिर टिकाए देर तक बेचारी सुबकतीं रहें। उन के कपड़े बहुत सादा थे। नवाब ने उन की ओर देखा और जैसे पानी के समान प्रलाप करने लगे, “मलिकी तू तो रईस की मां है। मत रो, मत रो, हम ने हमेशा तेरा दिल दुखाया, जा रहे हैं, मत रो।” मलिका की हिचकिचाहट पहले से ज्यादा बढ़ गई। वह बेचारी भर तक रोतीझींकती ‘ए’ ब्लाक से बाहर आई।

‘बी’ ब्लाक की अन्य बेगमों ने बारीबारी आ कर अपने अश्वदाता का

क्या. कोई दहाड़ मारी तो कोई धीरे-धीरे प्रतीति होता जैसे पुराने मालिक के समाप्त होते ही उन के लिए 'रेनबो' का जीवन समाप्त हो जाएगा, इन्हीं में एक चीफ साहब थे. भले ही वह बेगम रेहाना बी के पिता रहे हों वह, लेकिन रईस मियां के दिल में उन के लिए हमेशा ही गुस्सा और प्रतिशोध दौड़ता रहा करता. क्योंकि वही थे, जिन्होंने उन की और वह बेगम की जिंदगी एक होने पर एतराज किया था.

'कामा' की स्थिति से बड़ी उत्तेजना फैल रही थी. डाक्टर कहते, "यह समालत एक दिन रह सकती है और पचास घंटे भी." रईस मियां कहने को तो पिता मां की बीमारी से फिक्रमंद थे लेकिन दिल जनाल्लियों उछल रहा था. हुकूमत मिलने की संभावना के कारण चेहरे पर दोगुना र पतन दौड़ने लगा था. मगर इस 'कामा' के कारण दुविधा में थे. सच मानो तो मलब्यादा दिन प्रतीक्षा करने के विचार से शावर होते थे. लेकिन पिता के प्रति क्रूर भी नकल थे. उन का कहना था कि या तो अब्बा खेलेजूर जल्दी से अच्छे हो जाएं और या जो हमें मरना है, हो कर रहे.

एक बात निश्चित है. लोग चारों ओर से रईस मियां की ओर दौड़ रहे थे. सरकारी सरकार की बीमारी पर सहानुभूति प्रकट करने के बहाने चुपकेचुपके आते और धीरे-धीरे धरउधर की हांकने के बाद असल मकसद ई बप्ट कर देते. रईस मियां कालांतर में रबिया हाट के नवाब होने वाले हैं. जरा पयाल रखें, रहम की नजर बनाए रहें, खदमत करने का मौका दें.

बाहरी आदमियों तक ही यह बात नहीं थी. 'ए' और 'बी' दोनों ब्लाकों में चलचल मची हुई थी. लोगों में दो तरह के विचारों के आदमी थे. एक तो रईस मियां की चापलूसी में बड़े सरकार के जिदा होते ही उन के करीब आ रहे थे, और एक हले किसी न किसी बात पर रईस मियां आविष्वस्त हो चुके थे. निकट आने वाले लोगों का भविष्य रईस मियां के हाथों किस दिशा की ओर अग्रसर होता, यह भविष्य ही बता सकता था, किंतु उन के कोपभाजन बड़ी उत्सुकता से बड़े सरकार के ठीक होने की कामना कर रहे

हां, एक मैं और हरखू भी थे जो बड़े सरकार के सामने रईस मियां की खुशामद करने कभी न गए. लेकिन हमारी बात दूसरी थी. रईस मियां हम से नाराज कभी न थे. उन्होंने हमारी सेवा को हमारा गुण ही स्वीकार किया जैसा कि बाद में स्पष्ट हुआ.

आखिर वह घड़ी आ पहुंची जब दिया बुझने जा रहा था. रात के एक बजे बड़े सरकार की हालत विगड़ने लगी. 'रेनबो' के चप्पेचप्पे में घबराहट और परेशानी छा गई. डाक्टरों की तलबी हुई. वे आ कर बड़े सरकार को सुइयों पर सुइयों लगाने लगे. मसजिद में लोगों ने हाथ उठा कर खुदा से दुआ की. रईस मियां उदास और गंभीर आकृति लिए बड़े सरकार के सिरहाने खड़े हुए. बड़े सरकार का गोल कमरा हमदर्दों, दोस्तों और अजीजों से भर गया.

ठीक दो बज कर दस पर बड़े नवाब ने पलंग पर करवट बदली. उन की आंखें मुर्छाविस्था के आवरण को हटाती पल भर के लिए इधरउधर ताकती रहीं. उन का

जिन को नहीं मालूम

जिन को यह भी नहीं मालूम कि कल क्या होगा, अब भी इन्सान की गिनती है उन अनजानों में.

—अहमद नदीम कासमी

खामोश रहने वाला स्वर विचित्र सी बुरहिट बखेरता हुआ तेजी से गूँजने लगा. वह लगभग एक मिनट के लिए पूर्ण चेतन हो कर सभी अपनेपरायों, मित्रोंशत्रुओं को धुआँदार गाली दे रहे थे, "अबे...हरामी पिल्ले...हरखू के बच्चे...मेरी फर्शी ला... चीफ साला कहाँ गया...मालगुजारी की चोरी करता है...रईस...बेटा रईस...यहाँ आओ...मलिका...तुम्हारी कसम तुम ने हमें अपनी जुल्फों में लपेट लिया है.... हरामखोरो, देखते क्या हो...हमारे खासे में खिंचड़ी क्यों नहीं है?...मलाऊनो....एकएक की खाल....खाल...."

....और फिर वह चित लेटते ही हमेशा के लिए शांत हो गए.

'कामा' की स्थिति से निकल शायद मृत्यु के दूत से उन्होंने सिर्फ इतना ही कहने की अनुमति ली थी. सिर्फ इतना कहनेसमझाने की अनुमति कि मृत्यु के समय भी वह पूर्ण शासक थे, बड़े सरकार थे, पुरबिया हाट के हमेशा के शासक थे. "इन्निचलाहे...."

रईस मियाँ की आँखें नम होने लगीं. एक बेटा अपने बाप के लिए रो रहा था. 'बी' ब्लाक की बेगमात में कोहराम मच चुका था. हाहाकार होने लगा. कई बेगमात बेहोश हुई और कितनों के ही मुँह से आग निकलने लगे.

रस्म के अनुसार दफन की तैयारी की गई. उस के पहले औपचारिक रूप से रईस मियाँ को गद्दी का वारिस कबूल किए जाने की घोषणा प्रारित की गई. उन्होंने नवाब हुजूर की पदवी कुबूल की. 'रेनबो' का तमाम काम अब उन की आज्ञा का पाबंद हुआ. अपने अब्बा हुजूर के जनाजे में रईस मियाँ कंजूसी दिखलाने के पक्ष में न थे. शानदार मकबरे का निर्माण विचाराधीन रहा.

अगले दिन पूरे शाही सम्मान के साथ बड़े सरकार का जनाजा पुरबिया हाट के जानेपहचाने बाजारों से निकाला गया. दुख से विह्वल हजारों लोगों ने अपने प्रिय नवाब को अंतिम बिदा दी. लोगों की

आँखों से वेपनाह आंसू निकल रहे थे. कितने ही गरीब माथा पीटते हुए जनवर के सामने बेहोश गिरते रहे और कितने ही ने ही जनाजे के साथसाथ चलने वाले रेनबो मियाँ के सम्मुख अपने दुख का नाटक ना किया. कदाचित वे भावी नवाब को अपने परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी सहकर्मियों से परिचित कराना चाहते थे. दे

रईस मियाँ गंभीर थे. पूरे जनाजे का चार मील का मार्ग उन्होंने पैदल ही चलते हुए पार किया. उन के मुख की प्रसंतुष्ट दुख की हलकी लालिमा उभर आती थी. वह चलतेचलते सहसा रुक कर पुरबिया हाट के बाजारों की ओर परिचय रईस दृष्टि डाल लिया करते. मानो उन्हें सावधानी कर रहे हों कि आने वाला कल उन का इद, वही हैं उन के भावी अधिष्ठाता. ऐ रंफर वाले बाजारो, बाजार वालो, कल जी शरों हंसने की तैयारी कर रखो, जब हमें इलों तख्त पर बैठना है, इस रियासत का रं पर चलाना है, तुम सब पर हुकूमत करनी है. उस हुकूमत से अच्छी हुकूमत करनी का जो हमारे वालिद हुजूर आज तक कर रहे थे.

'रेनबो' में मेरी सेवा के दसवें यह महान ऐतिहासिक घटना हुई थी. एक युग समाप्त हुआ था और नए युग का नया सवेरा अंगड़ाई ले कर जाग उठा.

चालीस दिन मातम मनाया गया. मुल्लामौलवियों और गरीबोंफकीरों दुआओं से पुरबिया हाट का वातावरण गूँजता रहा. 'रेनबो' का जीवन अपने तब के बिछुड़ जाने का शोक मनाता रहा. ब्लाक की बेगमात के चेहरों पर लालि के स्थान पर सफेदी दिनोंदिन अधिक होती रही. निस्संदेह बड़े सरकार का से ज्यादा दुख उन्हीं को हो सकता क्योंकि उन का भविष्य अनिश्चित था.

फिर मातम की घड़ी समाप्त और बहारों ने मुँह खोला. रईस मियाँ विधिवत नवाब तख्तनशीन किए जाने के तैयारी में लगे हुए थे. एक बड़े सरकार

रहे के बिछोह का दुख पुरविया हाट के वाता-
जनवरण से तिरोहित हो गया। नज़्मियों और
किताबतों द्वारा निकाले गए एक शुभ दिन
लेखनवारे आम में रईस मियां की ताजपोशी
टक का ऐलान हुआ।

दस दिन सरकारी खुशी के लिए नियत
सहकेए गए। चारों ओर उल्लास फूटने लगा।
थे। द जैसी खुशी और रंगविलास की महफिलें
म होने लगीं। जश्नों का बाजार जगमगा
ताजे उठा। मिठाइयां बांटी गईं। गरीबों को दान
ने फैलें गए। नए नवाब के तख्तनशीन होने
मुख की प्रसन्नता और उल्लास का चर्चा पुरविया
र हाट से दूरदूर सुनाई पड़ा। आखिर वह
पुरविया मुहूर्त आ पहुंचा जब नए नवाब जनाब
य रईसउद्दीन साहब बहादुर, के. सी. एस.
नाववाई., सी. आई. ई., मेजर जनरल, फरजंदे
काइद, पुरविया हाट की गद्दी पर रौनक
ए रेफरोज हुए और आकाश उन की जयजय-
जी शोरों से गुजरित हो उठा। जयजयकार करने
में हलों में चीफ अनवर कमाल भी शामिल
गए परंतु उन की तमाम कोशिशें व्यर्थ गईं
ने और गद्दी पर बैठने के दस ही दिन में उन्हें
रनी काल दिया गया।

की बैरन दोपहरिया सृष्टि से
वदला ले रही थी। घासपात, पेड़-
थे सभी मुरझा रहे थे। नवाब ऐसे में
जली के पंखों और खस की टट्टियों में
राम फरमा रहे थे और मैं अर्थात् उन का
जी मुआमलात का वजीर, अपने आफिस
मेरे मैं मेज पर बैठा सूनी और निर्वाक
ट से सामने फैले कागजों को घूर रहा

‘रेनबो’ की सतरंगी आभा का दर्शन

खुली बिड़की से सहज ही सुलभ होता
और मैं सोच में डूबडूब जाता।

परिवर्तन, तब्दीली, चेंज, यह सब
किसे कहते हैं? परिस्थितियों के अनुकूल
मनुष्य अपनेआप को ढाल लेता है, अथवा
परिस्थितियां मनुष्य को बलात अपने रंग
में बदल डालती हैं? प्रायः ही यह प्रश्न
मेरे मन में उठता और मस्तिष्क उत्तर
की खोज के लिए यहांवहां भटकता।

‘रेनबो’ के क्षितिज में नए उपग्रह
का उदय हुए अभी कुछ ही दिन व्यतीत हुए
थे। तख्तपोशी के बाद नए युग की सुरभित
और सुगंधित मोहिनी से पुरविया हाट के
लोग भौंचक्के रह गए थे।

प्रकृति पर किसी का वश नहीं। आने
वाला हर साधिकार व्यक्ति अपने
पूर्ववर्ती की अनेकों नीतियों को भावप्रवणता
की कसौटी पर कच्चा, कमजोर और
निरुद्देश्य समझने पर मानो विवश रहता
है। सब कुछ परिवर्तित करने की होड़ में
संलग्न नया शासक पुराने शासक को तुच्छ
और हीन मानता है और सब कुछ बदल
 देने पर आतुर होता है।

नए नवाब ने अधिकार प्राप्ति के
तुरंत बाद अपने चीफ सक्सेना को कितने
ही नए आदेशों से किकर्तव्यविमूढ़ बना
दिया था। पर सक्सेना अपने रोजगार की
सलामती के लिए उन का यथाशीघ्र पालन
कर रहा था। बड़े सरकार के संजोएसंवारे
कितने ही गरीब और बेगुनाह नौकरों पर
अनुपयोगी, असमर्थ और निष्कृष्ट होने का
आरोप लगा कर निकाल बाहर करने की
योजना को कार्यरूप दिया जाने लगा।

बुद्धिमान लोग

मुख्य लोग छोटा सा कार्य आरंभ करते हैं और उसी में अत्यंत व्याकुल
हो जाते हैं, बुद्धिमान लोग बड़े से बड़ा कार्य आरंभ करते हैं और निश्चित
बने रहते हैं अर्थात् सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

—माघ

आहिवाहि मच गईं. जानेपहचाने कितने ही बढ़े और कमजोर, जिन में आज भी 'रेनबो' की सेवा का उतना ही उत्साह था जितना वर्षों पूर्व, किंतु जिन के कार्य की गति आयु के झकोरों से मंद हो चुकी थी, इस नए आदेश से तिलमिलाने लगे. कभी वे मलका जमानी के पास दौड़े जाते तो कभी चीफ के पास, कभी उन्होंने नवाब की चिरोरी की तो कभी अपने खुदा और भगवान की. मगर व्यर्थ, बेकार, उन्हें न कोई लाभ होना था, न हुआ.

इन निकाले जाने वालों में हरखू भी थे.

नवाब की वाणी आज भी मेरे कानों में गुंजती है. मैं गया था उन के पास. वह कह रहे थे, "मैं बड़े सरकार की फिजूल परंपराओं को हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहता हूं, चंदर. 'रेनबो' में औरतों का बाड़ा और आवश्यकता से अधिक नौकरों का खानदान हमारी बुद्धि से कभी मेल नहीं खाता. यह पुरानेपन को संकीर्ण और शान वधारने वाली बातें आज कौन मानेगा? देखते रहो, मैं 'रेनबो' का जीर्णोद्धार कर रहा हूं, पुरबिया हाट को नया जीवन दे रहा हूं, अपनी मर्यादा को नए क्षितिज का मार्ग दिखा रहा हूं."

वह न माने थे, हजारों नौकरों को बेरोजगार किया उन्होंने. हम सभी निर्विक, निस्सहाय, असमर्थ देखते रहे थे, सोचते

रहे थे, कसमसाते रहे थे. वर्षों की प्रतीति नवाबी का पहला वरदान कितना भयंकर था. बेरोजगारी के पथरीले मार्ग थे भटकने को छोड़े गए असंख्य छोटे-बड़े जवानबूढ़े स्त्रीपुरुषों का समूह पुरबिया हाट के बाजारों में जुलूस का रूप बनाए नवाब को अप्रतिष्ठा भरे वक्तव्य कोसता चल निकला था. खामोश और गंभीर रहने वाले रईस मियां नहीं हैं. नवाब ने घुड़सवारों को उन का स्वर आकर देने की हिदायत दी. तब कितने हाट बरसे थे! कितनों के पदाघात से सिर के थ, कितनों की पीठ और हाथपैरों पर कई के नीले निशान बने थे. और अंत में कान और मृत्यु सदृश शांति छाने लगी पुनः लोगों की जबान हमेशा के लिए बंद पड़ गई थी. नई नवाबी का प्रारंभ इस महीने परिवर्तन से—प्रतिष्ठा के महान सोपानों से किया गया था.

मलिका जमानी, मैं और सक्सेना नए नवाब के हाट

उस की सुनवाई से दूर, उस प्राचीन आश्रम टटोलते, स्मरण करते, पुरबिया हाट और जनजीवन में मिलीजुली उस नवाबवाले खोजना चाहते जिस में सूखे और बेरोजगारी के विरुद्ध जामा मसजिद और नए औरतों के निर्माण के साथ रोजगार का आभुरि हुआ था, अनाज बांटा गया था, के लिए खजाने के दरवाजे खोल दिए गए थे और अंत में दुर्निवार को पछाड़ के स...

उस ने नैन मिला के...

इक उस ने नैन मिला के शरमा के मुख मोड़ा था, तब से सुंदरसुंदर सपने मन को घेरे फिरते हैं. इस नगरी के बाग और वन की, यारो, लीला न्यारी, पंछी अपने सर पे उठा कर अपने वसरे फिरते हैं. लोग तो दामन सी लेते हैं, जैसे हो जी लेते हैं, 'आविद', हम दीवाने हैं जो बाल बिखेरे फिरते हैं.

—आविदअली 'आविद'

प्रतीति संपन्नता की सुखानुभूति से इसी पुरबिया
हाट के बाजारों को सजाया गया था। कहां
मार्ग थे वे दिन? कहां थी पुरबिया हाट की वह
छोटी नवाबी? और कहां थे पुरबिया हाट के
पुराने नवाब?

परिवर्तन—एक के बाद एक
वर्ष परिवर्तन। अच्छे भी, बुरे भी। नवाबी के
ऐसे आरंभिक दिन कितने महत्त्वपूर्ण बन जाते
नहीं हैं। रईस मियां ने कितने आग्रह से काम
स्वर आरंभ किया था। किस उत्साह से पुरबिया
हाट को हिंदुस्तान की अंगरेजी अमलदारी
सिरके इलाकों जैसा नया बना देना चाहा था।
पर कई स्कूल खुलवाए उन्होंने, मिल और
मंकारखानों की बुनियादें डालीं, महकमों का
जमी पुनर्गठन किया, नए विभागों की नींव डाली,
एक नयाय की पुरानी परंपराओं को तोड़ कर
इस नई कोर्ट और अदालत के नए महकमे
सोपान खोले गए।

कुछ दिन तो लगा मानो पुरबिया हाट
करवट ले कर जाग रहा है। पुरबिया
हाट के जनजीवन में नए नवाब की
जीवआभा का नया सौंदर्य नाच रहा है। तरक्की
है और बढ़ोत्तरी के मार्ग पर कभी न रुकने
वाला कदम बढ़ चुका है जो नए नवाब
रोज की नवाबी के साथसाथ दिनोंदिन परिपक्व
है और मजबूत होता हुआ अवश्य किसी दिन
पुरबिया हाट को स्वर्ण जैसा उन्नत कर देगा।
पर नहीं। सोड़े की बोतल खुलने पर
दिमियानक घमाका करती है, फिर, विलाप
की सनसनाहट में आहिस्ताआहिस्ता मौत
के सन्नाटे की ओर बढ़ जाती है। फूंक से
भरा हुआ गुब्बारा हाथों का वार सहन
न कर पाने पर कुछ ही समय गुदगुदा और
मला लगता है और फिर फट कर हमेशा
के लिए अपना आकर्षण खो देता है।
बांदी की तिगाली वाले हुक्के के पहले
कश का मजा ही कुछ और होता है और
फिर उस का मद हलका होने लगता है।
नए नवाब ने गद्दी संभालते ही वही कुछ
किया था, जो नवाबी के इतिहास में
अपरिहार्य है, असंदिग्ध है।

मैं यही सब सोच रहा था, और मेरे सामने

पड़ी थी वेगमात की वे अनगिनत सनदें,
जिन्हें जल्द ही पूरा कर के नए नवाब
हुजूर के हस्ताक्षर करा कर बांटना था।

ये सनदें नहीं, वेगमात की किस्मतों
के फैसले थे। दो सौ दस पत्नियों और उप-
पत्नियों की समस्या नए नवाब हुजूर के
विवेक पर कुठाराघात करती हुई जल्द से
जल्द उन का हल खोज निकालने के लिए
वेकल करती रही थी। आखिर हम सब ने
मिल कर ही यह उत्तर खोजा था।

इस के पूर्व नए नवाब कई बार 'बी'
ब्लाक जा कर अपनी इन मामाओं
को (बड़े सरकार की मुताशुदा पत्नियों
को मामा की उपाधि से सम्मानित किया
जाता था और सब लोग इसी नाम से
आपस में बातचीत के समय संबोधन करते
थे) समझाने का यत्न कर चुके थे। उन से
मीठे शब्दों में कहते, "आप लोग अपनेअपने
घर चली जाएं। हम बड़े सरकार से आप
के रिश्ते को देखते हुए आप को कुछ
खमियाजा देंगे, लेकिन आप का यहां
रहना मुमकिन नहीं।" वेगमें गिड़गिड़ाने
लगतीं, "कहां जाएंगी, किस के पास जाएंगी-
पिएंगी! हमें यहीं पड़ा रहने दो, हुजूर।
हम चपचाप अपनी जिंदगी के दिन गुंजार
देनी।" नए नवाब सहसा क्रुद्ध हो जाते
और कहते, "हमें कहने पर मजबूर मत
कीजिए कि आप लोग कभी किसी तरह
खामोश नहीं रह सकतीं, आप के दिलो-
दिमाग पर ऐयाजी का भूत सवार है।
हम 'बी' ब्लाक को बरबादी और तबाही
के रास्ते पर छोड़ने के लिए आप को यहां
रहने की इजाजत कभी न देंगे।" वेगमें इस
पर विशुद्ध और असंयत हो कर पूछतीं,
"आप तो जानते हैं न कि बड़े नवाब ने
हम से मुता किया था, अपनी बीबी तस्लीम
किया था, इस नाते हमें यहां रहने का हक
है।" नवाब चिल्लाते, "नहीं, आप को कोई
हक नहीं। उन्होंने तफरीह के लिए आप की
कीमत दे कर आप को खरीदा था जिस की
एवज आप ने बहुत कुछ पाया है। हम अब
आप की कीमत को जारी नहीं रखना
चाहते। उस कहानी को नहीं दोहराना

चाहते जो बड़े सरकार के हरम में दोह-
राई जाती रही है. आप को जाना होगा,
चाहे खुशी से जाएं चाहे गुस्से से.”

इन धमकियों का कोई असर नहुआ.
समस्या अटकी पड़ी रही. दसवारह
बेगमों के अलावा किसी ने अपने बाल्देन
के घर जाना मंजूर न किया. अपने हक के
लिए लड़ाई पर तुलने लगीं. कभी मलिका
जमानी से सिफारिश का जोर डलवातीं,
और कभी खुले आम लड़ाई का पैगाम
भेजतीं. इसी तरह पूरा सवा साल गुजरने
आया और कोई हल न निकल सका.

तब मैं और चीफ साहब नवाब
हुजूर की इच्छानुसार समस्या का हल
सोचने लगे. आखिर हम ने कहा, “बेगमात
का मुंह बंद करने के लिए उन्हें कुछ पेंशन
देना कुबूल कर लें सरकार, तो शायद
काम बन जाए.”

नवाब ने इस प्रस्ताव को आरंभ
में अस्वीकार करना चाहा मगर बाद में
राजी हुए. हम ने तेजी से सनदों की तैयारी
आरंभ की. बेगमात को उन के मरतबे,
रुतबे और महलसरा आने की अवधि
देखते हुए पेंशन की राशि खुद नए नवाब
ने निश्चित की.

और कहना व्यर्थ है कि इस निर्णय
में वह निरंकुशता से काम लेने लगे. जिस
बेगम से खास द्रोह न था उसे पचास और
चालीस रुपए महीने पेंशन दी गई और जिन
पर उन की कोप दृष्टि रही थी उन्हें केवल
पांच रुपए महीने की भीख दी गई.

उन्हीं में हादी बेगम भी थीं.

उन्हीं सनदों को सामने रखे मैं आने
वाली घटनाओं पर विचार कर रहा था
कि सहसा एक लंबा छरहरा व्यक्ति, जो
ठेठ लखनवी किमखाब के कपड़े और जरी
का जूता पहने था, पानों की जुगाली
करतेकरते मेरे सामने आ खड़ा हुआ. मैं
पहचान नहीं सका तो बोला, “हां जी,
कौन पहचानेगा इस महल के दामाद को!
दोष तुम्हारा नहीं, अपनी किस्मत का है,
हजरत. बड़े नवाब नाराज न होते तो भला
यह बात पैदा होती. अब है....”

अब उन्हें पहचानने में विलंब कैसा
पांच साल पहले ही तो सायरा बेगम
असलम मियां की शादी हुई थी. शादी
कुछ दिनों बाद ही बड़े सरकार ने फरमा
था, “यहां आए तो धक्के दे कर निकाल
देना उस बदनसीब को. हमारा दामाद न
दुश्मन है वह. नालायक! पुरविया हाट
दामाद और कलकत्ते में औरतें भगाने
जुर्म की सजा पाए? हम सायरा को उस
पास नहीं जाने देंगे. असलम आवारा है
बड़े नवाब जा चुके थे, ‘रेनबो’

परिवर्तन हो रहा था, अतः असलम मियां
किस तरह प्रवेश कर सके, नहीं जानते
पहचान लेने पर तत्काल कुरसी

और पृष्ठां, “कब आए, दूल्हा भाई? मा
कीजिए, पहचान न सका. तशरीफ रखिए

वह चहके, “अमां, तशरीफ रखिए
का वक्त किस मरदूद को है! हमें बेह
काम है. जब से आए तभी से नवाब ने क
जिम्मेदारियां सौंप डालीं, देखभाल रहे हैं.

मैं ने पूछा, “किस बारे में हुक्म दि
है नवाब हुजूर ने?”

वह चीखे, “किस बारे में? अमां कि
बारे में नहीं, यह पूछो. यार, ‘रेनबो’
दुनिया में इतनी तबदीली आई मगर यह
का हर काम उसी पुरानी लकीर पर च
रहा है. वही पुराना तरीका, वही पुर
फिजूल खर्च, लाहौलविला. चंदर मियां
क्या बदला, बोले? साल भर होने क
आया मगर वही बात, वही रंग, वही चा
ढाल. बड़े भोले हैं हमारे नए हुजूर. खु
की कसम, आप भी बड़े भोले हैं.”

—क्रम

अगले अंक में :

बड़े सरकार ‘रेनबो’ की रंगी-
नियों को हमेशा के लिए छोड़ कर
चले गए और रईस मियां नए
नवाब बने, जिन्होंने देखतेदेखते
‘रेनबो’ का नक्शा ही बदल डाला.



तुम मुसकरा दिए...

कर दिया मन समर्पित तुम्हारे लिए,
यह तो अनुबंध है वस, तुम्हारे लिए.

प्यार की राह में जलाते रहे,
युगयुगों से खड़े हो नयन के दिए.

थक गए थे चरन फिर भी चलते रहे,
अनगिनत कठिन पथ पार हम ने किए.

गुनगुनाओ सदा निर्झरो की तरह,
इसलिए घूट आंसू के हंस कर लिए.

फूल बन कर के महको, इसी हेतु हम
आखिरी सांस तक शूल के संग लिए.

व्यंग्य के वाण चुभते रहे हर कहीं,
चुप रहे, सब सहे, होंठ अपने लिए.

एक यही भावना मन बढ़ाती रही,
वाह में जब बंधे मीत मुसकरा दिए.

—शिवप्रसाद 'कमल'

मैं क्या करूँ?

अपनी समस्याएँ, मैजि. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूँ? मुबता, नई दिल्ली-55.

● मेरी आयु 26 वर्ष है. दो वर्ष पूर्व एक लड़की से प्रेम हुआ, फिर उसी सगाई हो गई. मैं उसी के विचारों में खोया रहता हूँ व शीघ्र शादी करना चाहता पर लड़की के घर वाले राजी नहीं होते. कभी कम उम्र, कभी आर्थिक कठिनाई, कभी उस की पढ़ाई के कारण टालमटोल करते रहते हैं. लड़की की उम्र 17 वर्ष मैं और मेरे मातापिता बिना देहेज भी लड़की को अपनाना चाहते हैं. फिर भी तैयार नहीं होते. लगता है, ऐसे ही आनाकानी कर सगाई तोड़ देंगे या दोतीन वर्ष विवाह कर पाएंगे. मैं ठीक बेटन पाने वाला केंद्रीय कर्मचारी हूँ. क्या प्रेम के प्रतीक्षा करता रहूँ या सगाई तोड़ लूँ?

लड़की और आप की उम्र में काफी अंतर है. पर लड़की सहमत हो गई यह अंतर कोई अधिक मायने नहीं रखता. आप पता लगाइए, क्या लड़की भी विरक्त के लिए इतनी ही उत्सुक है? कहीं टालमटोल उस के कारण ही तो नहीं है. यदि आप लड़की को तैयार कर लें तो कोई अन्य बाधा नहीं रह जाएगी. पर लड़की का मन बदला हुआ दिखाई दे तो यह सगाई तोड़ लेना ही आप दोनों के हित में होगा. इसलिए बेकार परेशान होने या अनुमान लगाने के बजाए एक बार लड़की से बातें कर लें तो आप को निर्णय लेने में आसानी होगी.

● मेरी उम्र 15 वर्ष है. मासिक स्राव शुरू हो कर भी अब पांचछः महीने नहीं हुआ. इस से पेट भी बढ़ गया है और मोटी होती जा रही हूँ. सारा दिन चिंता सताती है.

आप सब से पहले चिंता छोड़िए, किशोरावस्था में मासिक की अनियमितता कोई असामान्य बात नहीं. कइयों को ऐसा होता है, फिर डर से भी रुकावटें पैदा हो सकती हैं. लेकिन पेट व मोटापा बढ़ रहा है तो कोई खराबी भी हो सकती है. इसलिए बिना संकोच लेडी डाक्टर से परामर्श लीजिए.

● मैं 20 वर्षीय एम. ए. की छात्रा हूँ. कुछ महीनों से मेरे दोनों स्तनों के आकार में अंतर आ गया है व अब यह अंतर बढ़ता ही जा रहा है. इस से कालिज जाते शर्म आती है. मन में हीन भावना आ गई है. घर वाले मेरी शादी करना चाहते शीघ्र ही कोई उपाय बताइए.

आप को समीप के किसी बड़े अस्पताल में ग्रंथि विशेषज्ञ से परामर्श लेते सुविधा हो तो ठीक, वरना लेडी डाक्टर से भी पूछ कर इस का निदान व चिकित्सा करा सकती हैं. जब तक ठीक न हो, ब्रेसियर में पैड द्वारा दूसरी ओर का ताप कर इस कमी को छिपा सकती हैं.

● मैं 18 वर्षीय अविवाहित नवयुवक हूँ. मुझे शीघ्रपतन की बीमारी है. मैं कि पत्नी को संतुष्ट नहीं कर पाऊंगा. नीमहकीमों के पास जाते डरता हूँ. कोई उपाय बताइए.

नीमहकीम के पास नहीं, डाक्टर के पास जाइए. इलाज संभव है. पर आप अपने मन से डर निकाल कर सहज निश्चित रहिए. आप ठीक हो जाएंगे.

● मैं एक खूबसूरत लड़की हूँ। एक शादीगुदा लड़के से प्यार करती हूँ। यौन संबंध भी हैं। मैंने जिंदगी भर विवाह न करने का फैसला किया है। संगत समझ नहीं आता, जिंदगी कैसे कटेगी? उस मिले बगैर रह भी नहीं सकती, छोड़ भी नहीं सकती, मन में एक गहरी उदासी घर करती जा रही है। दम घुटता सा लगता है। कहीं पागल ही न हो जाऊँ? क्या करूँ?

—क. ख. ग.

एक गलती के बाद आप दूसरी गलती कर रही हैं। इसी लिए आप की यह हालत है। जब आप आजिवन अविवाहित रहने के अपने फैसले पर मन से दृढ़ नहीं हैं तो पूर्व गलती को आगे दोहराते जाने और इस अनंतिक संबंध को बढ़ाते जाने में क्या तुक है? मूर्खता को छोड़िए। उस से संबंध एकदम तोड़ लीजिए। स्वयं को किसी उपयोगी कार्य में लगाइए। फिर जब मन स्थिर हो जाए, योग्य साथी ढूंढ कर विवाह कर लीजिए।

● मेरी आयु 17 वर्ष है। करीब एक साल से रात को मेरे कपड़े खराब हो जाते हैं। इस परेशानी से बचने का उपाय बताइए।

—राजेश, भोपाल

● मेरी आयु 16 वर्ष है। पांचछः दिनों के अंतराल से मुझे सोते समय ऐसे सपने आते हैं जिन से कपड़े खराब हो जाते हैं। इस से मैं मानसिक रूप से बहुत परेशान हूँ। कृपया उपाय बताइए।

—मन्तूलाल, छाजेड़

आप इस की चिंता छोड़ दीजिए। किशोरावस्था और तरुणावस्था में यह सब स्वाभाविक है। यह कोई बीमारी नहीं। पर आप इस ओर ध्यान अधिक देंगे या इन्हीं बातों के बारे में सोचेंगे तो ऐसा अधिक हो सकता है। कभीकभी हो जाने में कोई हर्ज नहीं। आप को शारीरिक कमजोरी आएगी, ऐसा भय मन से निकाल दें। यह आदत जोर न पकड़े, इस के लिए इस की उपेक्षा करें। साथ ही सोते समय चाय आदि गरम चीजों से और कामोत्तेजक अश्लील साहित्य से बचें। अच्छा साहित्य पढ़िए व अच्छे मित्रों की संगति में रहिए।

● मेरे माथे पर चोट का एक बड़ा निशान है। इस से मन में हीन भावना आती है। प्लास्टिक सर्जरी का पता बताने का कष्ट करें।

—एक दुखी बहन, कानपुर

कानपुर जैसे बड़े नगर के बड़े अस्पतालों में प्लास्टिक सर्जरी की व्यवस्था अवश्य होगी। आप वहां से सर्जरी करा सकती हैं।

● मेरी आयु 13 साल की है। आयु बढ़ने के साथ ही पेट व मोटापा बढ़ता जा रहा है। इस परेशानी से बचने का उपाय बताइए।

—क. ख. ग., भुसावल

डाक्टर से पूछ कर अपने खानपान में सुधार कीजिए व व्यायाम करिए। यदि ग्रंथियों की गड़बड़ के कारण ऐसा हो तो आप के डाक्टर स्वयं ही किसी ग्रंथ विशेषज्ञ के पास जाने की सलाह देंगे।

● कुछ दिन पहले मैं ने एक लड़के से प्यार किया था व उसे कई पत्र भेजे थे। उस ने ऐसे ही कई लड़कियों को धोखा दिया है। इसलिए अब मैं उसे विलकुल नहीं चाहती हूँ। पर वह धमकी देता है कि अगर मैं ने उस से शादी नहीं की तो पत्र दिखा कर मुझे बदनाम करेगा। कोई उपाय बताइए कि वह मुझे छोड़ दे।

—क. ख. ग.

खेद है कि रोज ऐसे मामले देख, सुन व पढ़ कर भी आप जैसी अनेक लड़कियां फिर वही गलती करती हैं और परेशानी मोल लेती हैं। अब आप को साहस कर के सारी बात अपने मातापिता को बता देनी चाहिए। तभी आप का उस से छुटकारा संभव होगा।

—नीरजा ●

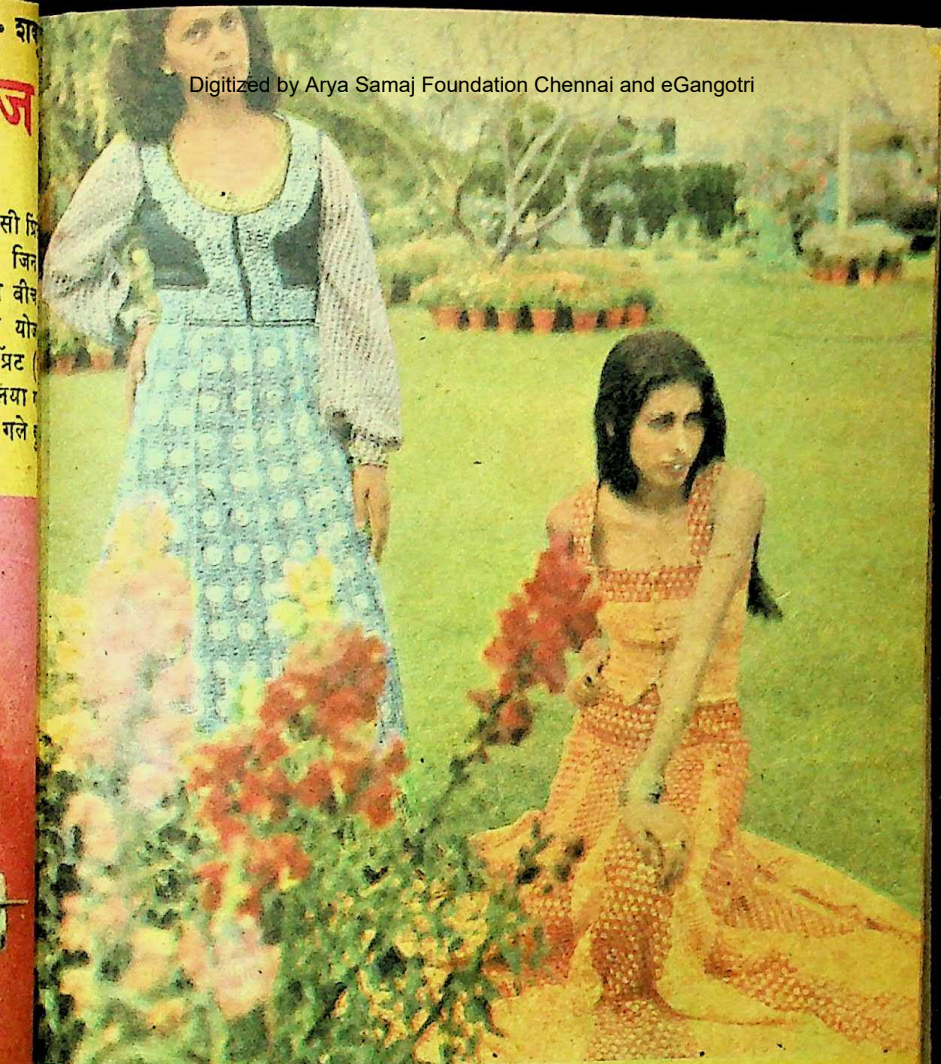
मुक्ता

स्कर्ट, मैक्सी और ब्लाउज

फुल मैक्सी के बजाए गरमियों में स्कर्ट मैक्सी और ब्लाउज अधिक लोक-प्रिय पोशाक है। फिर ब्लाउज आप चाहे जैसा रख लें, बिना बांहों का, छोटी बांहों का, पूरी बांहों का, या मैग्यार बांहों का। यहां स्कर्ट मैक्सी व ब्लाउज के कुछ नमूने प्रस्तुत हैं :

चित्र नं. I में दोनों स्कर्ट मैक्सी प्रिंट सूती साड़ियों से बनाई गई हैं, जिन्हें घेर पर साड़ियों के बार्डर हैं व बीच उन के प्रिंट के नमूने। समान रंग यो में एक प्लेन व दूसरा लहरिया प्रिंट (साड़ी में से ही अलग निकाल लिया है) का ब्लाउज बनाया गया है। गले





लो कट गोल. एक ब्लाउज बिना बांहों का व दूसरा सादीछोटी बांहों का. घर में कामकाज के समय या शाम को घर में पहनने के लिए यह सस्ती, सुंदर सुविधाजनक पोशाक है.

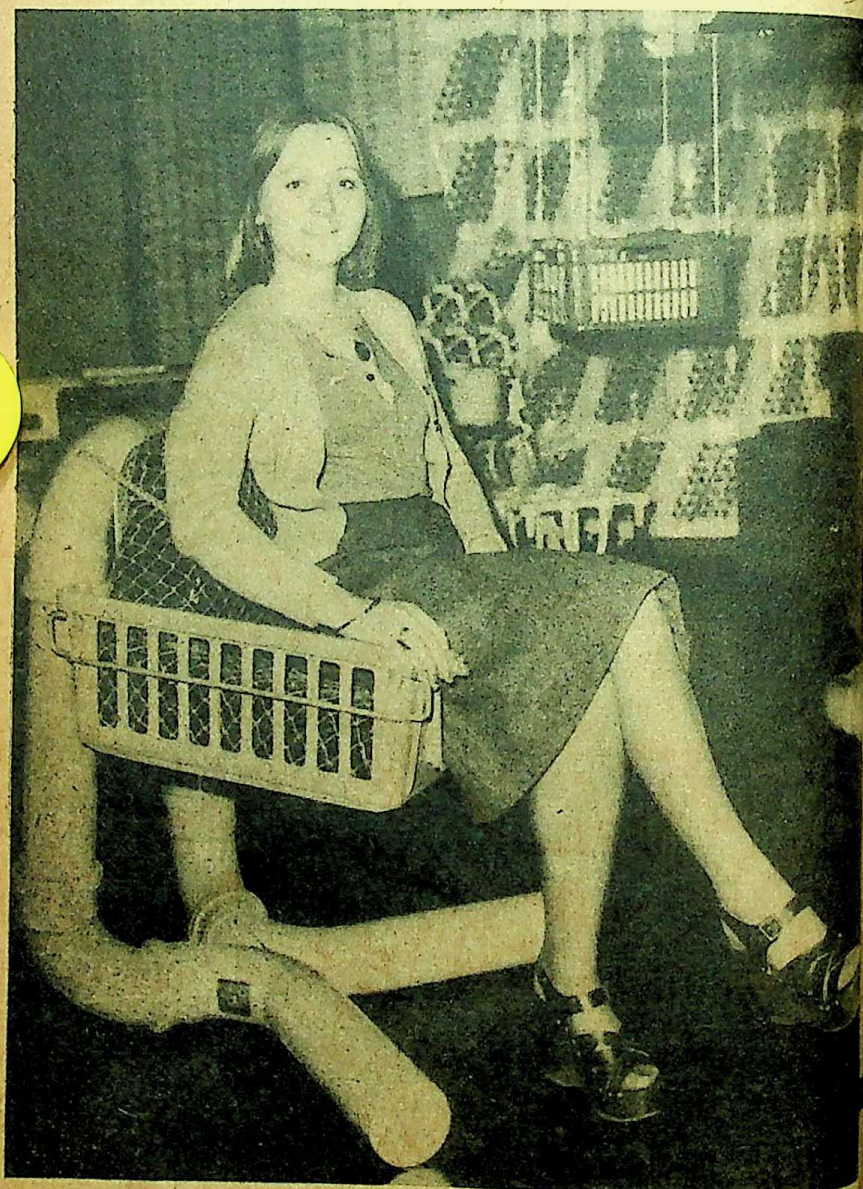
चित्र नं. 2 में दो भिन्न नमूने हैं. एक बादामी लाल रंग योजना में चौड़ी पट्टियों वाला रूबिया प्रिंट है, जिसे स्कर्ट मैक्सि में सीधा व ब्लाउज में आड़ा ले लिया गया है. एंब्रोला घेर वाली स्कर्ट पर ब्लाउज बिना बांहों का व चौकोर लो कट गले का सादा रखा गया है ताकि गरमी के दिनों में सुविधाजनक रहे. दूसरा

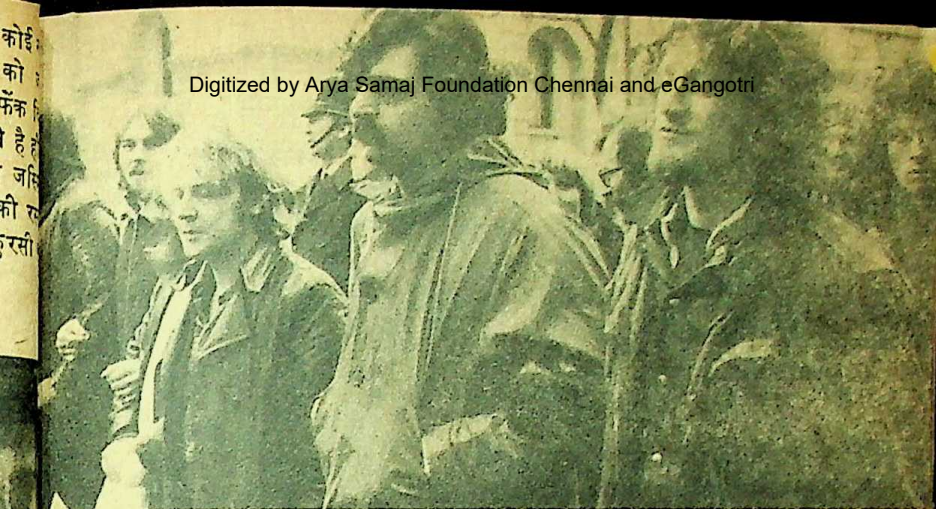
नमूना हलकी ठंड या बरसात में शाम के समय बाहर पहनने के लिए अच्छा रहेगा.

इस में स्कर्ट मैक्सि बड़े चैंक डिजाइन में व पूरी बांहों का बंद गले का ब्लाउज मेल खाते रंग के कपड़े में लिया गया है. फिर ब्लाउज के ऊपर डालने के लिए गोल लो कट गले की वास्कट अलग बनाई गई है. वास्कट का मुख्य रंग काला है व बार्डर स्कर्ट के रंग के साथ मेल खाते रंग के प्रिंट का. इस स्कर्ट को प्लीटेड या छः कली में बनाइए. पूरा सेट खासा प्रभावशाली लगेगा. ●

● वेकार चीजों की कुरसी : यह कुरसी कोई माडल नहीं है, बल्कि यह उन सब चीजों को कर बनाई गई है, जिसे वेकार समझ कर फेंक दिया था। और इस कुरसी को बनाने वाली है कालिज आफ आर्ट, पाल्मर्स, की छात्रा जस्मिन कैन. चित्र में जस्मिन डेकर्स ट्रे, नाइलन की रब प्लास्टिक की सहायता से बनाई गई कुरसी प्रदर्शन कर रही है।

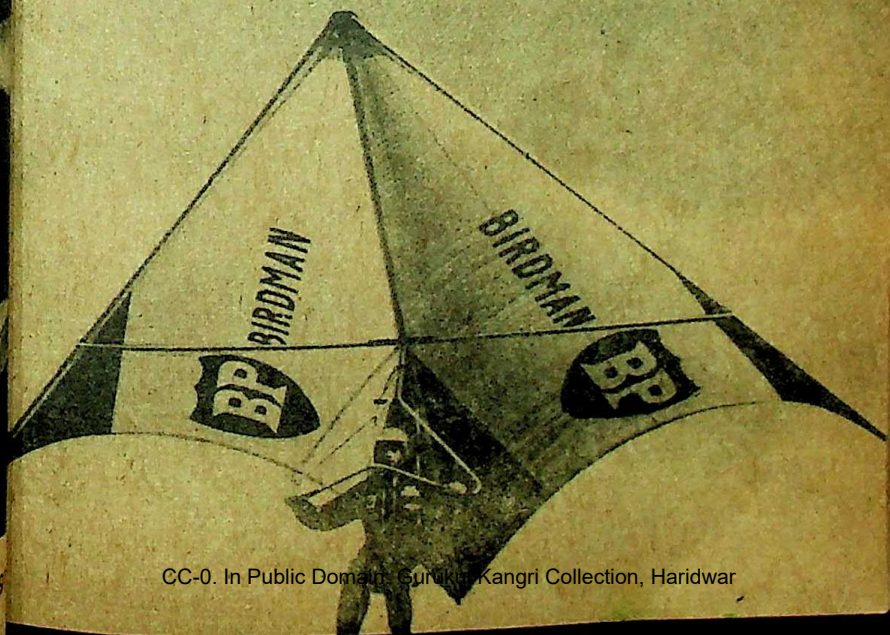
चित्रावली





● अली पुनः संघर्ष की राह पर : पिछले दिनों अल्स्टर से ब्रिटिश सेना हटाने के मसले पर लंदन की सड़कों पर एक जुलूस निकाला गया, जिस का नेतृत्व किया पाकिस्तान में जन्मे उत्साही प्रदर्शनकारी तारिक अली ने. अपने ट्राटस्कीवादी विचारों के कारण वह अपने देश पाकिस्तान व विश्व भर के युवा जगत में विवादास्पद रहा है. जब भी, जहां भी मानव अधिकारों पर हमला होता हुआ वह देखता है, वहीं वह डट कर उस के खिलाफ आवाज उठाता है. कुछ दिनों पहले तक स्वयं पाकिस्तान सरकार ने उसे स्वदेश लौटने पर रोक लगा दी थी, लेकिन अब वह रोक हटा ली गई है.

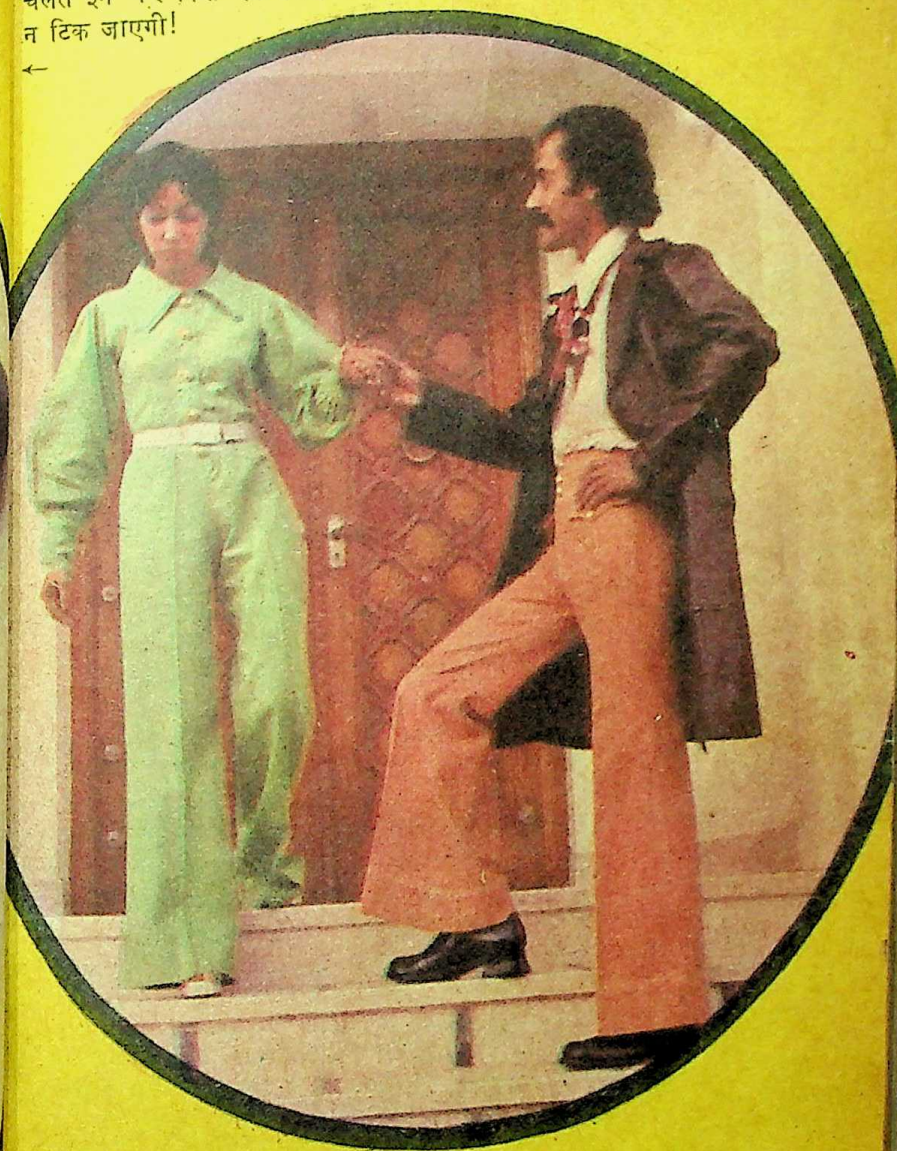
● ग्लाड्डर : न कोई मशीन, न कोई घरघराहट, लेकिन फिर भी एक आदमी मजे से सैर कर सकता है. आस्ट्रिया में हुए चैंपियनशिप के मैच में डेवे रेमंड ने इस ग्लाड्डर का प्रयोग किया था. चित्र में उस मैच में जाने से पहले ग्लाड्डिंग का अभ्यास करते हुए रेमंड.



केशन की होड़



रंगान छपा हुआ मक्का में यह
 लड़की और गहरे चमकदार
 बैंगनी रंग की लड़की ने यह
 लड़का कितने फव रहे हैं! राह
 चलते इन पर किस की नजर
 न टिक जाएगी!

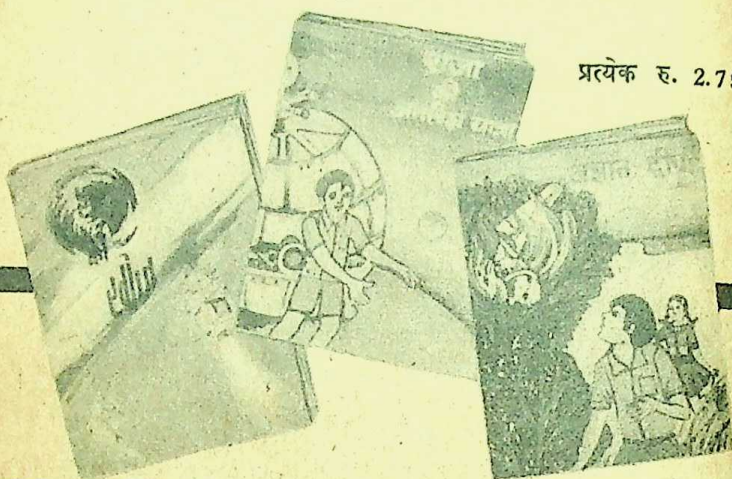


और यह जोड़ा...इन की तरफ
 तो दृष्टि बारबार ही चली
 जाती है. इस का राज है इन के
 खूबसूरत पहनावे. तोते के रंग
 की हरी पैंटकमीज में यह
 युवती तथा पीली धूसर रंग
 की पैंट और घुटनों तक लंबे
 कोट में यह युवक निराले जूड़े
 रहे हैं!

बच्चों के लिए स्वस्थ मनोरंजन तीन बाल उपन्यासों का नया सेंट

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्रत्येक रु. 2.75



राजा की अंतरिक्ष यात्रा :

खेलखेल में ही राजा एक नए लोक में पहुंच गया, जहां की हर चीज इस दुनिया से अलग थी..... राजा ने निश्चय किया कि वह अपने साथियों को भी इस जगह लाएगा और एक नई दुनिया बसा कर स्वयं यहां का राजा बनेगा. क्या उसका यह सपना सच हो पाया? एक मनोरंजक और प्रेरणादायक बाल उपन्यास.

अज्ञात द्वीप :

'बाल कहानी प्रतियोगिता' में पुरस्कृत सात बालक व तीन बालिकाएं विमान द्वारा मिल जा रही थीं. तूफान में विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया मगर वे सभी बच निकले..... जिस द्वीप पर वे पहुंचे, वहां आदमी का चिन्ह तक न था. पास ही के एक अन्य द्वीप पर उन्हें एक खजाने के होने का पता चला, जिस की खोज में कुछ अंग्रेज डाकू आए हुए थे. छोटे बालकों की डाकुओं से मुठभेड़ की रोचक कथा.

शुक्र की खोज :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक उमेश अपने विमान के साथ अंतरिक्ष में खो गए थे. कोई पता न चलने पर वैज्ञानिकों ने उन्हें लापता घोषित कर दिया. मगर उन का भतीजा दीपू इस निर्णय से संतुष्ट न था. और वह अपने मंगलवासी मित्र मिर्क के साथ उमेश चाचा की खोजने निकल पड़ा..... उन्होंने उमेश चाचा को किस तरह ढूंढा? इस खोज के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में क्या-क्या देखा? बच्चों के लिए एक शिक्षाप्रद और मनोरंजक उपन्यास.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.
पूरा सेंट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

दुपहरिया जेठ की

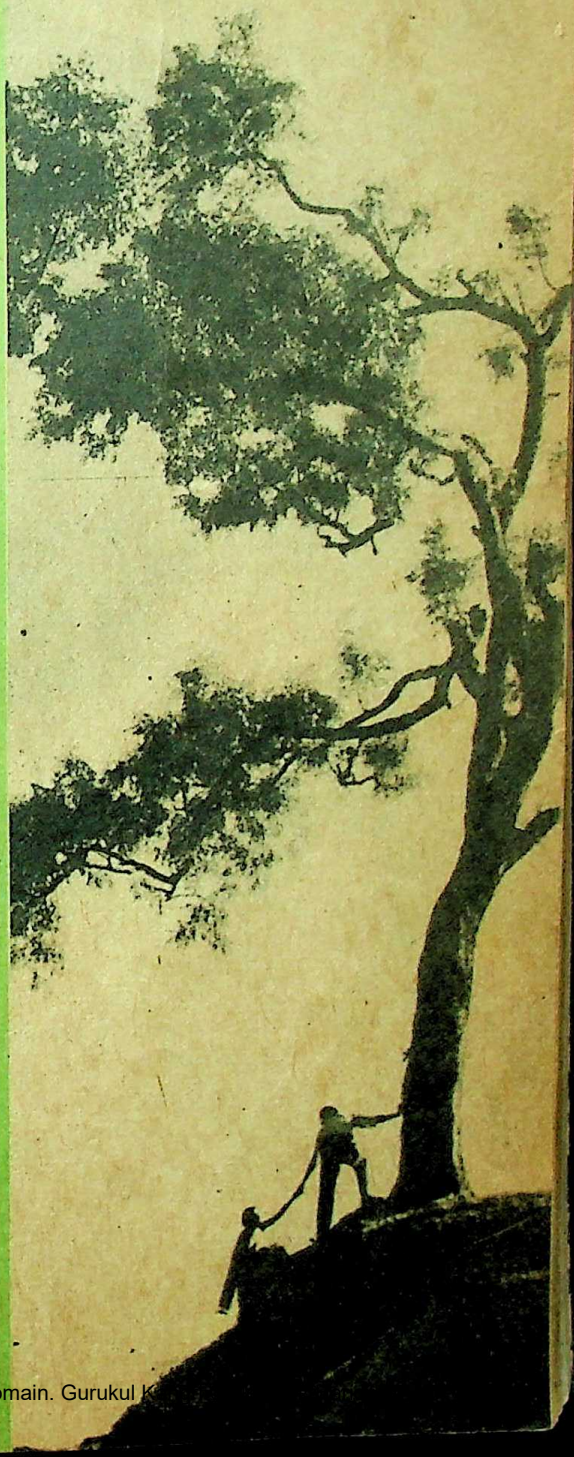
वान चलाती,
छांव काटती;
आग जलाती,
धूल फांकती;
अरे, बताओ,
हुई बावरी
क्या दुपहरिया जेठ की?

बधिर हुए सब
खिड़कीद्वारे;
गूंगे आंगन
छतचौबारे;
किसे कोसती
निकली घर से
यह दुपहरिया जेठ की?

कूटे पत्थर
आसमान पर;
चली पसीना
खूब बहा कर;
मजदूरन है
सूरज के घर
क्या दुपहरिया जेठ की?

नैन ऊंचते,
तन शिथिलाया;
पसर गई यों
लंबी काया;
खा कर आई
कहीं घतूरा
ज्यों दुपहरिया जेठ की!

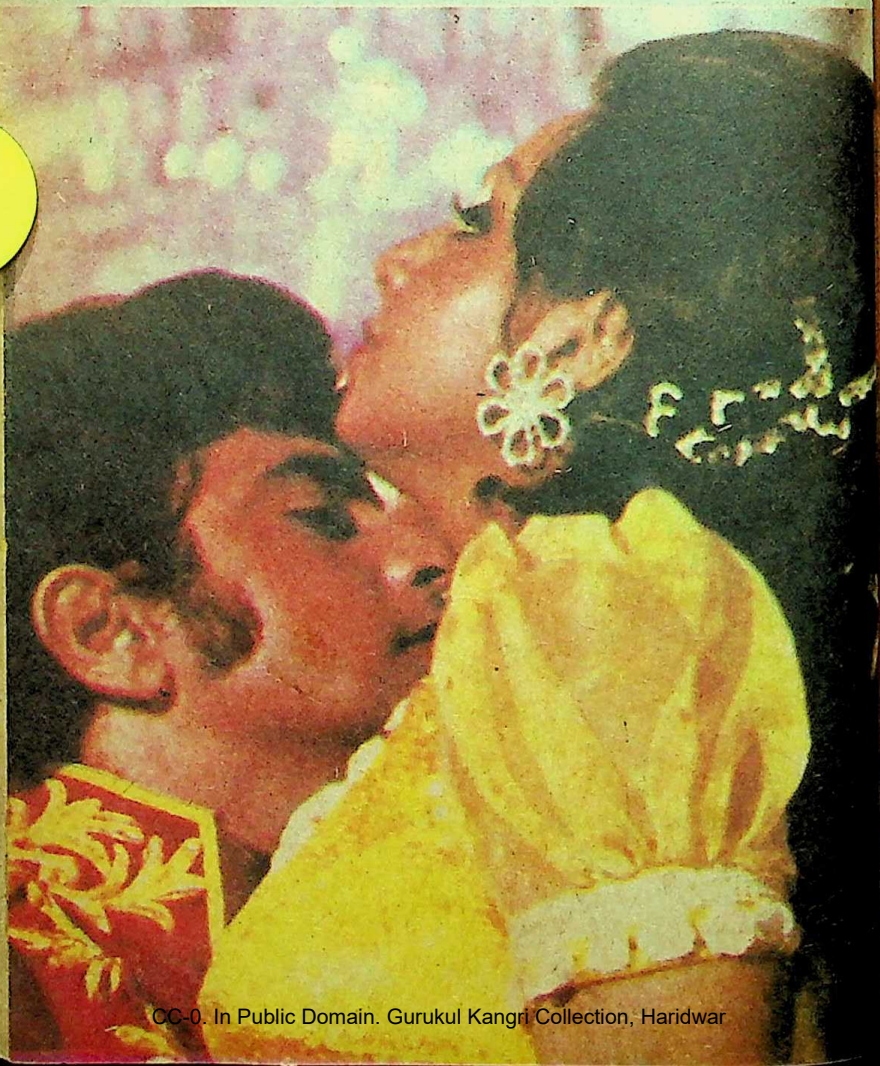
—दिनेशचंद्र पुष्कर



रानी और लाल परी

गुरु एंटरप्राइस मूवीज, मद्रास की फिल्म 'रानी और लाल परी' का निर्माण हो रहा है। इस फिल्म का निर्देशन रवि नागाइच ने किया है। फोटोग्राफी भी स्वयं उन्ही की है। संगीत वसंत देसाई ने किया है। गीत बाल कवि बैरागी ने लिखे हैं तथा कहानी ग. द. मङ्गलकर ने लिखी है। फिल्म के मुख्य कलाकार राजेंद्रकुमार, आशा पारिख, नीतू सिंह, रीना राय, जितेंद्र, फिरोजखान, प्रेमनाथ, अरुणा ईरानी और बेबी रानी हैं।

(नोचे) फिल्म 'रानी और लाल परी' में जितेंद्र और नीतू सिंह, (सामने) करियाल :
वही संक्षिप्त भूमिका.



मणि
स्वयं
तथा
माया
और

भ :



धूपछांव

इस पुस्तक के लिए समाचारपत्रों की
रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर
दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी
जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता
श्री राजेंद्रप्रकाश वर्मा, भोपाल, हैं.
भेजने का पता : धूपछांव, मुबता,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● करोड़पति भिखारिन

पामबीच, फ्लोरिडा (अमरीका) की श्रीमति बेथी एडम्स जब भी भीष मांगती, वह हमेशा यह कहती, "मैं गरीब महिला नहीं हूं." जब यह 71 वर्षीय विधवा कुपोषण से मरी तो अपने पीछे 8 लाख डालर नकद व 40 लाख डालर के स्टॉक सर्टिफिकेट छोड़ गई. उस के मरने के बाद पता चला कि एक बैंक में उस के 6 लाख डालर जमा हैं व एक अन्य बैंक में 1,99,518 डालर की नकदी व ढेर सारे स्टॉक सर्टिफिकेट मिले. --राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : प्रदीप माथुर, जयपुर)

● लंबे बालों से आग लगी

बंबई. लंबे बालों के कारण यहां एक उपनगरीय गाड़ी की छत पर यात्रा कर रहे दो युवकों के बालों में आग लग गई. लंबे बालों वाले इन युवकों के बाल पेंटाग्राफ से टकरा गए थे. आग लगने पर दोनों युवक छत से कूद पड़े. उन्हें मामूली चोटें आईं, लेकिन एक अन्य यात्री, जो उन की देखादेखी कूद पड़ा था, की टांग टूट गई.

--दैनिक स्वदेश, इंदौर (प्रेषक : सुभाषचंद्र कोचर, उज्जैन)

● 10 करोड़ का भोजन चूहों के पेट में

सरकारी अनुमान के अनुसार उत्तर प्रदेश में लगभग 60 करोड़ चूहे हैं. यह अनुमान विशेषज्ञों की रिपोर्टों पर आधारित है. यह भी अनुमान लगाया जाता है कि 6 चूहे एक व्यक्ति के बराबर भोजन चट कर जाते हैं. इस का मतलब यह हुआ कि चूहे 10 करोड़ व्यक्तियों का भोजन चट कर गए.

--दैनिक नवभारत, भोपाल

● 80 वर्षीय नववंपति

सिरसागंज (मैनपुरी). शिकोहाबाद के महल्ला रूकनपुर में एक 80 वर्षीय वृद्ध अंसारी जुलाहा ने एक 70 वर्षीया वृद्धा के साथ शादी की. बताते हैं, इस 80 वर्षीय वृद्ध वर की बरात बाजेगाजे, नाच के बीच 70 वर्षीया वधू के यहां पहुंची तो नागरिक आश्चर्यचकित रह गए. इस शादी के अवसर पर वर व कन्या को कपड़ों, आभूषणों आदि से सजाया गया था. वृद्ध वर के आधा दर्जन बच्चे भी विवाह में सम्मिलित हुए.

--दैनिक भास्कर, भोपाल (प्रेषक : राजेंद्रप्रकाश वर्मा, भोपाल)

● मजनुओं के लिए विशेष पार्क

भीड़भाड़ वाले बंबई शहर में मजनुओं के लिए अब कोई एकांत जगह नहीं रह गई है. शिव सेना के एक पार्षद की यह इच्छा है कि बंबई में कम से कम ऐसी चार जगहें बनाई जाएं. दो मुख्य शहर में तथा एकएक पश्चिमी एवं पूर्वी उपनगरों में. पार्षद श्री द. स. शिंगरे ने अपने प्रस्ताव में कहा है कि मजनुओं के लिए कोई विशेष पार्क नहीं रह गया है, इसलिए उन्हें काफी असुविधा हो रही है. कुछ लोगों ने मजनुओं को कुछ घंटों के लिए अपने कमरों को भाड़े पर देना फैशन बना लिया है. वे मनमाना किराए लेते हैं और इस से अनैतिक गतिविधियों की गुंजाइश भी बढ़ जाती है.

--नवभारत टाइम्स, बंबई (प्रेषक : विजयकुमार, बंबई)

● यह भी एक गिरोह है
नेपल्स (इटली). स्थानीय पुलिस के
गिरोह नगर में ^{Digitalized by Arka Samaj Foundation Chennai and eGangotri}
5 संशस्त्र नकाबपोश 'एनरिको फर्मी कल्चरल'
12 लोगों को पैदल उतारने का आदेश दिया. सभी
के बाद आगंतुकों ने उन के बटुए, घड़ियां, अ
कीं और रफूचक्कर हो गए. पिछले कुछ म
बंदर और आसपास कई धावे बोल चुका है.

—नवभारत टाइम्स,

● मेंढकों ने यातायात बंद किया

म्युनिखगारमिच राजपथ पर गत 14 अ
हो गए और इस के कारण कई घंटों तक याता

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्

● एक प्रश्नपत्र में 43 त्रुटियां

इंदौर. संभाग स्तरीय प्राथमिक परीक्षा
की 43 त्रुटियां थीं. पूरे प्रश्नपत्र को देख कर ए
की अशुद्धियों को देखा ही नहीं गया. देखना यह
परीक्षार्थी, एकदो अध्यापक या कोई और.

—नई दुनिया, इंदौर

● तब कपि उठे रिसाय!

कलकत्ता. हुगली नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित चिसूरा शहर में पिछले
शनिवार को बंदरों ने लगभग आधे घंटे तक यातायात बंद रखा.

एक बंदर का बच्चा अपनी मां के साथ बाहर निकला ही था कि सामने से
आती एक साइकिल में उस की टांग फंस गई. साइकिल चालक ने बहुत कोशिश की,
लेकिन बंदर की टांग छुड़ा न सका. इस बीच बंदर की मां पहुंच गई और उस ने
साइकिल चालक को कई चांटे लगाए. बेचारा साइकिल चालक डर कर भाग गया.
बाद में वहां बंदरों की टोली पहुंच गई, जो पूरी तरह उत्तेजित थी.

बाद में पुलिस ने लाठियां घुमा कर बंदरों को वहां से भगाया और एक
व्यक्ति ने जल्दी से बंदर के बच्चे की टांग छुड़ाई. इस के बाद बंदर इस बच्चे को घेर
कर अपने रास्ते पर चले गए और तब कहीं यातायात चालू हो सका.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषिका : पुष्पा सक्सेना सतना)

● चित्रकार चिपांजी

नई दिल्ली. केलीफोर्निया के स्टेडफोर्ड में हुए प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया
है कि चिपांजी में चित्रांकन की अद्भुत क्षमता है.

पशु विज्ञानवेत्ता श्री डेविड ने तो चिपांजियों को 30 शब्दों का भी ज्ञान करा
दिया. अब आसान से प्लास्टिक के बने अक्षरों को जोड़ कर चिपांजी कुछ शब्दों की
रचना कर अपनी इच्छा व्यक्त करता है.

श्री डेविड द्वारा किए गए प्रयोगों के अनुसार कुछ चिपांजियों को प्लास्टिक
रेखाचित्र दे दिए गए जो कई टुकड़ों में विभक्त थे. प्रत्येक चिपांजी को उन रेखाचित्रों
से अपनी शकल बनानी थी. दूसरे प्रयास में वे आंख और नाक को ठीक स्थान पर नहीं
लगा पाए. तीसरे प्रयास में कुछ और प्रगति हुई और चौथे प्रयास में तो कुछ ने
बिल्कुल सही चित्र बना दिए. टोपी भी सही जगह पहना दी. आश्चर्य तो तब हुआ
जब उन्होंने टोपी पहनने के बाद अक्षरों को जोड़ कर केला खाने की इच्छा भी व्यक्त
कर दी.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : राजेश भेरवानी, जोधपुर) ●

मुक्ता

धूपछांव

● करोड़पति भिखारिन

पामबीच, फ्लोरिडा (अमरीक)
मांगती, वह हमेशा यह कहती, "मैं ग
विधवा कुपोषण से मरी तो अपने पीछे
स्टाक सर्टिफिकेट छोड़ गई. उस के म
के 6 लाख डालर जमा हैं व एक अन्य
स्टाक सर्टिफिकेट मिले. --राजस्थान प

● लंबे बालों से आग लगी

बंबई. लंबे बालों के कारण यह





मोरिस (ओमप्रकाश) और जूली (लक्ष्मी) : पितापुत्री का स्नेह

प्रसिद्ध दक्षिण भारतीय लेखक पम्पन के उपन्यास 'चट्टककारी'

पर आधारित 'जूली' पहली फिल्म है जिसमें एंग्लोइंडियन समुदाय की भारत की स्वतंत्रता के बाद की स्थिति, उन के सोचने के ढंग और उन की समस्याओं को उठाया गया है। अंगरेजों के समय इस समुदाय को कुछ विशेष सुविधाएं प्राप्त थीं, जिन से अब यह वंचित हो चुका है। ऐसी स्थिति में यह समुदाय आम भारतीय जीवनधारा से किस प्रकार कट गया है और इस की क्या प्रतिक्रियाएं हैं, इन सब बातों का विस्तार से चित्रण कर के निर्माता नागी रेड्डी ने राष्ट्रीय एकता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

कुछ लोग 'जूली' की तुलना 'बाबी' से करते हैं। परंतु इन का परस्पर दूर का भी संबंध नहीं है। 'बाबी' जहां किशोर प्रेम पर आधारित एक लचर फिल्म थी, 'जूली' एक उत्तम उद्देश्यपूर्ण फिल्म है जिस का एकाध प्रणय दृश्य को छोड़ कर

पखवाड़े की फिल्म

जूली

एक उत्तम फिल्म...

कोई भी दृश्य आपत्तिजनक नहीं है। 'जूली' और 'बाबी' में केवल इतनी ही समानता है कि दोनों की नायिकाएं क्रिश्चियन हैं, स्कर्ट पहनती हैं और हिंदू लड़कों से प्रेम करती हैं। इस के बावजूद 'जूली' में शरीर प्रदर्शन पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया।

जूली (लक्ष्मी) एक इंजिन ड्राइवर मोरिस (ओमप्रकाश) की बेटी है। उस की मां मारग्रेट (नादिरा) को अपने अंगरेजी

नस्ल के होने पर गवें है और वह इंगलैंड को अपनी माता भुजि और शराब को नस्ल समझती है. जूली का भाई जिम्मी इंगलैंड में नौकरी करता है. इस परिवार का एक मित्र है रिचर्ड (जलाल आगा), जो 'जूली' से सच्चा प्रेम करता है.

जूली की एक सहेली उषा (रीता भादुड़ी) है, जो एक उदार विचारों के रेलवे इंजीनियर भट्टाचार्य (उत्पल दत्त) की बेटी है. लेकिन उस की मां (अचला सचदेव) रूढ़िवादी है. उषा का भाई शशि (विक्रम) कलकत्ता से पढ़ाई समाप्त कर के लौटता है और जूली व उस में प्रेम हो जाता है, जिस के परिणामस्वरूप जूली गर्भवती हो जाती है. जूली दूर गांव में अपनी फूफी के पास जा कर एक बच्चे को जन्म देती है. इधर अधिक शराब पीने के कारण मोरिस की मृत्यु हो जाती है. मारग्रेट अपने पूरे परिवार के साथ भारत छोड़ने लगती है कि भट्टाचार्य जूली और उस के बच्चे को अपनी पुत्रवधू व पोते के रूप में स्वीकार कर लेता है. भारतीय जीवनधारा से कटा हुआ मारग्रेट का

परिवार फिर उस धारा में एकाकार हो जाता है.

फिल्म में एंग्लो-इंडियन समुदाय की समस्याओं के साथसाथ दो विभिन्न जातियों, नस्लों और धर्मों में विवाह भी दिखा दिया गया है. जूली और शशि परस्पर प्रेम करते हैं. उन के प्रेम को न तो जूली की मां बरदाश्त करती है और न ही शशि की मां. जब अंत में भट्टाचार्य जूली के बच्चे को अपना ही खून कह कर स्वीकार करता है, तो फिल्म समस्या का एक अच्छा और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है.

फिल्म में शराब का बहुत दौरेदार है. लेकिन शराब का यह सेवन दर्शकों के लिए आकर्षण का विषय न हो कर शिक्षा-प्रद है और शराब के प्रति घृणा व अरुचि पैदा करता है. शराब पी कर किस प्रकार मोरिस व मारग्रेट झगड़ते हैं और शराब के कारण ही अंत में मोरिस की मृत्यु हो जाती है, इस से दर्शक के हृदय में शराब के प्रति अरुचि ही पैदा होती है. मजे की बात तो यह है कि शराब मारग्रेट के परिवार का अभिन्न अंग है, फिर भी वे सभी शराब को बुरा समझते हैं.

फिल्म का सब से कमजोर भाग है जूली और शशि के लंबे खींचे हुए प्रणय दृश्य. इन का विस्तार अनावश्यक था. जूली शशि के घर जाती है और वह घर में अकेला है, शशि उस से शारीरिक संपर्क चाहता है, पर जूली इनकार कर देती है. फिर भी प्रेम दृश्य दिखा ही दिए गए हैं. जूली दूसरे दिन आने का वादा कर के चली जाती है और दूसरे दिन फिर आती है और पूरी कहानी फिर नए सिरे से शुरू कर के बेड सीन तक पहुंचाई जाती है. इस प्रकार निर्माता उस प्रणय को दो बार दिखा गया है, जो केवल एक बार ही दिखाया जा सकता था.

सेतुमाधवन के निर्देशन में फिल्म की कहानी दर्शकों को बांधे रखती है. यद्यपि कहानी के आरंभिक भाग में प्रवाह नहीं है, फिर भी दर्शक उकताते नहीं हैं. मोरिस और मारग्रेट के परिवार का इतना

निर्माण संस्था : विजया

प्रोडक्शंस; निर्माता : बी. नागी

रेड्डी; निर्देशक : क. स. सेतु-

माधवन; संगीत : राजेश रोशन;

गीत : आनंद बख्शी व हरेंद्रनाथ

चट्टोपाध्याय; संवाद : इंदरराज

आनंद; फोटोग्राफी : प. ल. राय;

कला : स. कृष्णाराव; **संपादक :**

म. स. मनी; पाइवं गायक : लता,

किशोर, आशा, उषा मंगेशकर,

प्रीति सागर.

मुख्य कलाकार : लक्ष्मी, विक्रम,

नादिरा, उत्पल दत्त, अचला सच-

देव, रीता भादुड़ी, जलाल आगा,

ओमप्रकाश, सुलोचना, मास्टर

सत्यजीत, ज. न. आनंद, हमीद,

श्रीदेवी.

स्वाभाविक एवं मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है कि दर्शक यही महसूस करने लगता है कि वह फिल्म नहीं देख रहा, बल्कि स्वयं उस परिवार में बैठा हुआ है।

एंग्लोइंडियन समुदाय की यही विडंबना है कि वह पूर्णतः न तो अंगरेजी सभ्यता को अपना सका है और इधर भारतीय सभ्यता व संस्कृति से कट गया है। इस के विपरीत इन दोनों सभ्यताओं के दुर्गुण वह पकड़े हुए है। इस फिल्म में इस समुदाय का ज्यों का त्यों सही चित्रण कर दिया गया है और बड़ी बात यह है कि इस में समुदाय के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख अपनाया गया है। भारत में रह कर भी मारग्रेट भारत के खिलाफ बोलती है और उसे जहन्नुम बताती है, परंतु फिर भी आम भारतीय दर्शक के हृदय में उस के प्रति रोष पैदा न हो कर सहानुभूति ही पैदा होती है, क्योंकि उस की इन भावनाओं के पीछे छिपी मजबूरियों को भी वह समझता है।

इस के बिल्कुल विपरीत उधर एक दूसरा पात्र है और वह है गणेश की मां (अचला सचदेव)। वह कट्टर रूढ़िवादी है व भारतीय सभ्यता की साक्षात् मूर्ति है। फिर भी दर्शक उस की हरकतों और बातों पर हंसते हैं। इस प्रकार फिल्म में रूढ़िवाद पर भी चोट की गई है।

फिल्म के निर्देशक सेतुमाधवन ने सभी पात्रों से अपनी अपनी भूमिकाओं का सजीव चित्रण करवाया है। एक भोली-भाली एंग्लोइंडियन चंचल, चपल लड़की से ले कर मां बनने तक की पूरी भूमिका को लक्ष्मी ने बड़े ही सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। लक्ष्मी अब तक लगभग 150 दक्षिण भारतीय फिल्मों में काम कर चुकी है, और यहां उस ने पहली बार हिंदी परदे पर प्रवेश किया है। उस की सफलता में कोई संदेह नहीं है। अपने प्रभावपूर्ण अभिनय के बल पर वह जूली की भूमिका में पूर्णतः ढल गई है। उस के हिंदी उच्चारण में साधारण सा दोष हो सकता

जूली (लक्ष्मी) और उस का प्रेमी गणेश (विक्रम) : विवाह से पहले की भूल...



है, पर एंग्लोइंडियन होने के कारण वह दोष खलता नहीं है। मोरिस, मारग्रेट आदि एंग्लोइंडियन पात्र जहाँ हिंदी को बिगाड़ कर संवाद बोलते हैं, जूली ने व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया है।

फिल्म का दूसरा जानदार पात्र है जूली की मां मारग्रेट। नादिरा ने इस भूमिका को इतने प्रभावपूर्ण रूप में निभाया है कि वह एक बार पूरे फिल्म उद्योग में चर्चा का विषय बन गई है। यह उस का आज तक का सर्वश्रेष्ठ अभिनय है। उस के चेहरे पर भावों का उतारचढ़ाव तो गजब का है ही, उस के शारीरिक हावभाव भी भूमिका को सजीव बनाने में सफल रहे हैं। रोद्र और शांत दोनों रूपों में उस का अभिनय देखते ही बनता है।

मोरिस की विशेषता यही है कि वह हर समय शराब पिए रहता है और यह शराब ही अंत में उस की जान भी ले लेती है। ओमप्रकाश ने भी इस भूमिका को बड़े सुंदर रूप में निभाया है।

जूली के प्रेमी शशि के रूप में विक्रम है। फिल्म का यही एक पात्र है जो कमजोर है। शशि जूली से प्यार करता है और उसे अपनाते को तैयार भी है, फिर भी उस में वह नैतिक बल नहीं है जिस की जरूरत थी। उस का गायी गीत 'ऊंची-ऊंची दीवारों सी इस दुनिया की रस्में, न कुछ तेरे बस में जूली, न कुछ मेरे बस में' उस के चरित्र की कमजोरी को प्रकट करता है। एक तो यह भूमिका ही कमजोर थी, उस पर विक्रम का अभिनय और भी बेजान है। वह इस भूमिका में पूर्णतः अनुपयुक्त रहा है।

शशि की बहन और जूली की सहेली उषा के रूप में रीता भादुड़ी नई अभिनेत्री है। यह एक कोमल सी भूमिका है और रीता भादुड़ी ने इसे सही रंग में प्रस्तुत किया है। लेकिन यह पहली भूमिका कहीं रीता भादुड़ी को हमेशा के लिए फिल्मी बहन ही बना कर न रख दे।

शशि के पिता इंजीनियर भट्टाचार्य के रूप में उत्पल दत्त बड़े ही सहज एवं

स्वाभाविक रूप में आया है। हंसीमजरा कह जाना उस का एक खास अंदाज है।

इन के अतिरिक्त एक और भी महत्वपूर्ण भूमिका है रिचर्ड की। वह जूली से प्यार करता है और मारग्रेट उसी से जूली की शादी करना चाहती है। वह जूली का सच्चा प्रेमी है। अगर निर्माता चाहता तो उसे खलनायक का भी रूप दे सकता था, परंतु अच्छा हुआ जो लेखक मारपीट के चक्कर में नहीं पड़ा और रिचर्ड को एक असफल, निराश परंतु आदर्श प्रेमी ही दिखा दिया है। रिचर्ड की विशेषता यही है कि वह जानता है कि जूली उस से प्रेम नहीं करती, फिर भी उस के खिलाफ कोई विचार तक दिल में नहीं लाता। बल्कि हर महत्वपूर्ण मोड़ पर एक सहायक के रूप में आ खड़ा होता है। जलाल आगा ने इस भूमिका को बड़े ही मार्मिक रूप में निभाया है और साधारण होते हुए भी यह भूमिका हृदयस्पर्शी हो गई है।

प्रायः फिल्मों में नायक पहले तो नायिका के लिए प्रेम के जमीन आसमान के वादे करता है, पर जरा शक हुआ तो उसे तत्काल छोड़ देता है। यहां रिचर्ड यह जानते हुए भी कि जूली शशि के बच्चे की मां बन चुकी है, उसे अपनाते को तैयार है।

फिल्म के संवाद इंदरराज आनंद ने लिखे हैं और स्वाभाविक एवं जानदार हैं। फिल्म में गीत आनंद बख्शी के हैं और अर्थपूर्ण हैं। प्रसिद्ध दिवंगत संगीतकार रोशन के पुत्र राजेश रीशन ने संगीत दिया है। लगता है कि वह एक योग्य पिता का योग्य पुत्र है। गीतों की धुनें कुछ कठिन हैं और आम दर्शक की जबान पर जल्दी नहीं चढ़ सकतीं। पर उन में एक मोहकता है जो दर्शक को किसी कल्पना लोक में ले जाती है। फिल्म में हरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय का लिखा एक अंगरेजी गीत भी है जो वातावरण के उपयुक्त रहा है। कहानी की पटकथा बड़े सुंदर रूप में लिखी गई है। प. ल. राय की फोटोग्राफी सुंदर है।

जुलाई (प्रथम) 1975

शराब और फिल्मों का एकदूसरे से गहरा संबंध है। फिल्म बनाने के विचार के साथ शुरू हो कर फिल्म की सफलता-असफलता तक शराब साथ रहती है। कहानी लेखक से अनुबंध किया जा रहा हो या नायक से कंट्रैक्ट, शराब का प्याला बीच में अवश्य होता है, मानो उसे हाजिरनाजिर मान कर अनुबंध किया जा रहा हो और कसम खाई जा रही हो कि शराब को मध्यस्थ बना कर किया गया यह कंट्रैक्ट उम्र भर नहीं तोड़ा जाएगा।

शराब की लत भी कुछकुछ इश्क की लत जैसी है, जिस के लिए चाचा गालिब पहले ही कह गए हैं कि लगाए न लगे और बुझाए न बुझे। इस शराब की बोतल में न जाने कितने फिल्मी कलाकार डूब गए। पहले उन्होंने शराब पीना शुरू किया, फिर शराब उन्हें पीने लगी। बोतल में कैद इन फिल्मी कलाकारों की सूची बहुत लंबी है। मूक फिल्मों से ले कर आज तक की नई पीढ़ी में कितने ही सितारे आए और चले गए, इंडस्ट्री ने कितने रंग बदले, कितने परिवर्तन हुए, पर इस जालिम बोतल की जवानी वैसी की वैसी ही बनी हुई है।

कल के चंद्रमोहन और मोतीलाल इस के दीवाने थे तो आज धर्मेन्द्र और संजीव इस पर मोहित हैं। बिल्लो और मीनाकुमारी को यह निगोड़ी ले डूबी,

बोतल में कैद फिल्मी कलाकार

पर परवीन बावी उस अंजाम से बेखबर उसी राह पर चली जा रही है।

आज फिल्म के संबंध में शायद ही कोई काम है जिसे बिना शराब पूरा किया जाता हो। फिल्म के मुहूर्त पर सुबह पंडितजी आएंगे और गुलाबजल छिड़क कर स्टुडियो को पवित्र करेंगे और शाम को उसी मुहूर्त की खुशी में काकटेल पार्टी दी जाएगी। अब तो पार्टियों में नई नायिकाएं भी बेहिचक पीने लगी हैं। हालांकि पहले भी वे शराब पीती थीं पर इतना खुल कर नहीं। लेकिन चाहे सब के सामने पिया जाए या छिप कर, जहर तो जहर ही है। जिन्होंने भी शराब की

अनुबंध से ले कर फिल्म की समाप्ति तक शराब का दौर...

आखिर ये फिल्मी कलाकार इस से क्यों नहीं बच पाते?



लत लगाई, ^{Digitized by Arya Samaj Foundation} ^{Chennai and Gangotri} ^{उन को शराब एक न एक} दिन पी ही गई।

शराब को होंठों से लगाने वाली प्रथम भारतीय नायिका थी मूक फिल्मों की प्रसिद्ध हीरोइन बिल्लोजान। पहली बार उस ने शौकिया शराब पी थी। फिर शराब ऐसी मुंह लगी कि छुड़ाए न छूटी। धीरेधीरे हालत यह हो गई कि बिल्लो को शराब न मिलती तो जवान से डाय-लाग न निकलते। शराब का जाम भर कर उस के सामने पेश किया जाता, तब कहीं जा कर वह अभिनय कर पाती।

दुखद परिणाम

बिल्लो पर शराब का प्रभाव पड़ने लगा। वह निर्माताओं को परेशान करने लगी। सेट पर देर से पहुंचती। पहुंचते ही शराब की मांग करती। यूनिट के सदस्य बाहर बैठे घंटों उस का इंतजार करते रहते और वह शराब की दीवानी बोटल पर बोटल समाप्त करती जाती। आखिर निर्माताओं ने तंग आ कर इस से फिल्मों में काम लेना बंद कर दिया। भारतीय फिल्म उद्योग से अच्छी नायिका को शराब ने छीन लिया। कहते हैं, बिल्लो का अभिनय इतना प्रभावशाली हुआ करता था कि गौहर और कज्जन जैसी विश्वविख्यात श्रेष्ठ कलाकार उस के सामने अभिनय करने से घबराती थीं। परंतु बिल्लो का अंत दुखद रहा। शराब पी कर उस ने मौत को आमंत्रित किया और असमय ही संसार से विदा हो गई।

मोतीलाल के मरथे मुफ्त शराब उड़ाने वालों की कमी नहीं थी। ऐसे लोग मोती से पार्टी का आयोजन करने को कहते और फिर पानी की तरह शराब पी जाती। फिल्मों से उन्होंने जितना कमाया, सब शराब को भेंट चढ़ा दिया। फिर भी शराब की उन की प्यास न बुझी, बल्कि बढ़ती ही गई। और उन का अंत समय ऐसा था कि वह अंतिम सांसें गिन रहे थे लेकिन अंतिम इच्छा के नाम पर शराब का ही नाम होंठों पर था। तब तक उन का घन और राजसी ठाट सब समाप्त

हो चुके थे। शराब के पार उन के कि

सम्राट मोतीलाल को अंतिम समय में

बूंद शराब पिलाने वाला कोई न था।

सोजभरे सुर के बेताज बाद

सहगल की मौत का कारण शराब

बनी। कहते हैं, उन के जितनी

की क्षमता किसी में नहीं थी। उन से

गवाना हो तो पहले शराब की एक बो

अवश्य पिलानी पड़ती थी। एक हाथ

जाम होता और दूसरे में शराब

बोतल, तब कहीं जा कर कंठ से

निकलते। लेकिन आवाज इतनी सोज

कि सुनने वालों की आंखों से बरबस

आंसू फूट पड़ते। 'शाहजहां' के अमर

'जब दिल ही टूट गया' को उन्होंने कि

शराब पिए गाया था। इस का श्रेय संगी

कार नौशाद को है। उस के बाद उन्हों

ऐसा कोई गीत नहीं गाया। उन के शरा

की रंगों में खून की जगह शराब दौ

लगी थी। जब तक शरीर के अंदर

शराब को बाहर से शराब न मिलती

तक कंठ से गीत के शब्द ही नहीं फूट

एक दिन उन्हें भी यह शराब खा

वह मर कर अमर हो गए, जिस

फिर भी आवाज आती रही : 'जब दि

ही टूट गया हम जी कर क्या करेंगे?'

चंद्रमोहन ने शराब की खातिर वि

नहीं किया। शराब और रेस की उ

ऐसी लत थी कि शूटिंग की बात

कर देर तक शराब पीते और बुरी त

पी कर रेसकोर्स पहुंच जाते और ए

एक दिन में हजारों रुपए हार जा

परंतु कोई गम नहीं। वहीं से निर्माता

फोन करते, "पैसा भेज दो। कल से शूटि

पर आ जाऊंगा।" पर पैसा मिलते

उतरे नशे को फिर से चढ़ाते और क

रेसकोर्स की ओर उठ जाते। अपने स

में उन के जैसा अभिनेता और उन

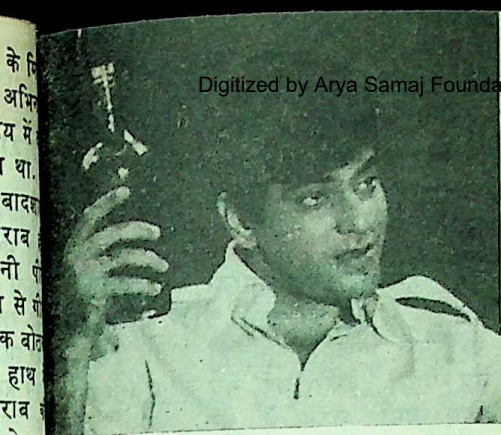
जैसा शराबप्रेमी कोई दूसरा नहीं

जिदगी जी तो हर ऐश के साथ,

जब मरे तो पाई भी पल्ले नहीं थी। क

के लिए भी पैसे नहीं छोड़े थे।

महबूब खां भी उन शाही निर्माता



कलाकार ने शराब को होंठों से लगाया और शराब ने उसे गले से लगा लिया।

में से हैं जिन्होंने अपनी फिल्मों पर खर्च होने वाली रकम की कभी गिनती नहीं की। प्रथम टेक्नीकलर फिल्म 'आन' का निर्माण किया तो बजट से दोगुना खर्च कर दिया। 'मदर इंडिया' बनाई तो एक साथ बड़े-बड़े कीमती स्टार जुटा लिए। जो भी फिल्म बनाई, उत्तम ही बनाई। लेकिन शराब की लत ने सब कुछ चौपट कर दिया। जितना कमाते, उस से अधिक शराब को भेंट चढ़ा देते। शराब के नशे में भूल जाते कि वह क्या हैं और कहाँ हैं। बस, एक बोतल में ही ज़िंदगी का हर गम भूल जाने में विश्वास था उन्हें।

गुरुदत्त और रोशन को कौन से गम थे जो उन्होंने शराब का सहारा लिया था? परंतु एक बार शराब को शौकिया ही अपनाया तो जीवन भर छोड़ न सके। गुरुदत्त प्रेम में असफल रहने के बाद दिल चैन और आंखों की नींद खो बैठे थे। इसी चैन और नींद को वापस पाने के लिए उन्होंने शराब का सहारा लिया। रोशन का गृहस्थ जीवन बहुत सुखी था, परंतु यारदोस्तों के मजबूर करने पर एक बार जाम क्या उठा लिया, उसे अंतिम सांस तक न रख पाए। घर में पत्नी आंखों में आंसू लिए रात में देर तक इंतजार करती रहती, यहां तक कि वह सुबह तक भी मयखाने से वापस नहीं आते।

मीनाकुमारी की दास्तान तो नई ही

है। जब फिल्मों में वह आई थी तो शराब के लोभानेवाले शराब की दवा के रूप में भी एक चम्मच लेने को कहता तो नफरत और घृणा से वह नाकभों सिकोड़ लेती। परंतु एक बार गलती से शराब का सेवन वह जो कर बैठी, तो उस के बाद वह ज़िंदगी का अभिन्न अंग बन गई।

कमाल अमरोही से बिछुड़ने के गम के अलावा भी कई ऐसी बातें थीं जो मीना के हृदय पर घाव करती रहीं और इन घावों को अस्थायी रूप से भरने के प्रयत्न में वह शराब की गुलाम हो गई। धर्मदत्त ने उसे कितना समझाया, "शराब जैसे जहर ने किसी को नहीं बरखा, मीनाजी, इसे छोड़ दो।" लेकिन लत ऐसी लगी कि छुड़ाए न छूटी। मीना भी शराब छोड़ न सकी। मीना शराब को पीती गई और शराब मीना को। इस दौड़ में जीत शराब के हाथ लगी और मीना शराब को भेंट चढ़ गई।

फिल्म उद्योग के शाहिद लतीफ तारा, गोप, मिश्रा, एस. यू. मुन्नी, याकूब, मोपार्लसिंह नेपाली, ताहिर लखनवी और जगदीश सेठी जैसे इंडस्ट्री के अमूल्य नगीनों का जीवन शराब में डूब गया। सब जानते हैं कि शराब ने किसी को नहीं बरखा, इस ने किसी पर दया नहीं की, फिर भी जालिम जिस के मुंह लगी उस से कभी अलग न हुई। जयकिशन जैसा महान संगीतकार और जिदादिल दोस्त इस के हाथों से न बच पाया।

इन किस्सों को सब जानते हैं, समझते हैं, पर होश में आना कोई नहीं चाहता। फिल्मी पत्रिकाएं हर अंक में किसी न किसी सितारे की शराब की लत की कहानी सुना देती हैं: प्रेमनाथ पिए बिना सेट पर काम नहीं कर सकता। धर्मदत्त दिनरात पीता रहता है। संजीव शूटिंग पर आने से पहले ही दिन भर का कोटा पूरा कर लेता है। शराब का हर प्रेमी पूरा कर लेता है। शराब का हर प्रेमी कहता है, "पहले तो मैं शराब पीता था, अब शराब ही मुझे पीती है," लेकिन तब तक चिड़िया खेत चुग गई होती है। ●

पिकनिक

और दसवी कक्षा के उन सातों छात्रों का जोरदार ठहाका उस सैनिक स्कूल की कैंटीन में गूँज उठा. मुँह में समोसे का आखिरी टुकड़ा डालते हुए विनोद बोला, “यार, कमाल कर दिया तू ने भी, महेश !”

महेश एक विंग कमांडर का लड़का था. गर्व से उस की छाती चौड़ी हो गई. चेहरे पर विजयी मुसकान लाता हुआ वह बोला, “देखो, भई, सब लोग दसदस रुपए जमा करते हैं इस काम के लिए.”



बाकी छह एक साथ एक स्वर में बोले, "मंजूर है."

अब महेश ने अपनी पूरी योजना सुनाई. कर्नल सक्सेना का पुत्र विनोद उस के जरा और पास हो कर बैठ गया. सब के कान महेश की योजना सुनने को सध गए. महेश धीमे स्वर में बोला, "देखो, मेरे डैडी चार दिन के लिए बाहर दौरे पर गए हुए हैं. कल शनिवार है. शायद वह कल दोपहर या शाम तक लौट आएंगे. मैं अपनी मम्मी से कहूंगा कि मेरे एक दोस्त के पास तीन से छः सिनेमा की दो टिकटें फालतू हैं. आप और डैडी जा कर पिक्चर देख आओ. कार की चाबी मैं पहले ही छुपा लूंगा. उन लोगों को स्कूटर पर सिनेमा भेज कर अपन लोग कार पर कुतब तक घूम कर आएंगे."

मेजरपुत्र राम चोपड़ा बोला, "भई, मान गए!"

महेश बोला, "तो फिर पक्का रहा."

सब लोग एक साथ बोले, "बिल्कुल पक्का."

स्क्वाड्रन लीडर का बेटा केवल बोला, "तो फिर बताओ, हम सब लोग तुम्हें कब और कहां मिलें? कल तो शनिवार है. हम लोगों का स्कूल दोपहर साढ़े बारह बजे बंद हो जाएगा."

महेश कुछ साचता हुआ बोला, "ऐसा करो, विनोद तो मेरे साथ ऑफिस में ही रहता है. मैं मम्मी से कहूंगा कि विनोद गलती से 'आंधी' फिल्म के टिकट ले आया. हम लोगों की तो देखी हुई है, दोबारा देखने में उतना मजा नहीं आएगा. आप देख आइए. बड़ी बोलड और इंप्रेसिव फिल्म है."

"सिनेमा का फ्री पास तो अच्छों-अच्छों को भुका देता है," कैप्टन चांद का पुत्र अजित बोला.

"अबे यार, तू बीच में मत बोल," दिलीप ने रोका.

प्रीतम ने कहा, "अच्छा चल, महेश, तू आगे बता."

महेश ने अपनी बात जारी की, "हां, तो विनोद तो मेरे पास होगा ही. जब

मस्ती के आलम में उन चारों दोस्तों ने कल्पना भी नहीं की थी कि भयंकर दुर्घटना भी हो सकती है, लेकिन जब होश आया तब तक पानी सिर से गुजर चुका था...

कहानी • देवेंद्र पाबले

डैडी को कार की चाबी नहीं मिलेगी तो मैं इसे भेज कर स्कूटर मंगवा लूँगा। जैसे ही डैडी कुछ दूर जाएंगे, मैं और विनोद कार ले कर इंडिया गेट पहुँच जाएंगे। तुम पाँचों वहाँ ठीक सवा तीन बजे तैयार रहना।”

विनोद ने चेतावनी देते हुए कहा, “भाई, जो वहाँ सवा तीन तक नहीं पहुँचा, उस की छुट्टी हो जाएगी।”

दिलीप बोला, “मेरे खयाल से सब लोग कल दसदस रुपए साथ लाएँ।”

प्रीतम बोला, “यार, वह तो पहले ही तय हो चुका है।”

उस के बाद सातों अपनीअपनी किताबेंकापियां उठा कर कल दोपहर बाद अपनेअपने घर से समय से निकलने का विचार करते हुए खाना हो गए।

दूसरे दिन विनोद को ले कर महेश दोपहर को अपने घर पहुँचा। योजना के अनुसार, महेश ने विनोद से सिनेमा के टिकट लिए और अपनी मम्मी को टिकट दे कर उन्हें सिनेमा जाने के लिए मना लिया। उस समय ढाई बज चुके थे, पर उस के पिता दौरे से नहीं लौटे थे। मम्मी अकेले सिनेमा जाने को तैयार हो ही रही थीं कि डैडी भी आ गए। महेश उछल कर बोला, “लो, डैडी भी आ गए।”

सिनेमा के टिकटों की बात सुन कर डैडी भी तैयार हो गए। वह खाना खा कर आए थे। उन्होंने शीघ्रता से अपनी वर्दी उतारी और दूसरे कपड़े पहन लिए। अब वह अपनी कार की चाबी ढूँढ़ने लगे। पर चाबी तो थी महेश की जेब में, उन्हें कैसे मिल जाती? महेश भी उन के साथ चाबी ढूँढ़ने का नाटक करने लगा। उस ने अपने डैडी का ब्रीफकेस देखा, उन की अलमारी देखी और जहाँजहाँ चाबी मिलने की संभावना थी, सभी जगह उलटपुलट कर दी और खीज कर बोला, “आप भी, डैडी, बस, कमाल हैं। चाबी पता नहीं कहाँ रख दी।” फिर अपनी घड़ी की ओर देखता हुआ बोला, “तीन बजने में दो मिनट रह गए हैं। जा,

विनोद यार, तु भाग कर थ्री ब्लॉक स्कूटर ले आ।” वेरना आज इन पिक्चर मिस हो जाएगी।”

विनोद तो तैयार खड़ा था। कर गया और स्कूटर ले आया। कमांडर साहब अपनी पत्नी के स्कूटर में बैठ कर मुफ्त का मिनि देखने चले गए।

उन के घर से बाहर निकलते महेश ने कार की चाबी अपनी जेब निकाल कर चूमी, हवा में उछाली फिर एक बार चूम ली। दोनों दोस्तों एकदूसरे से आंख मिलाई और बहुत से हाथ मिलाया। अपनी सफलता पर फूले नहीं समा रहे थे।

तीन बज कर दस मिनट पर महेश और विनोद कार ले कर इंडिया गेट पहुँच चुके थे। बाकी पाँचों मित्र वेतावी से उन का इंतजार कर रहे। इस समय सातों लड़कों के चेहरे विजय की छाप स्पष्ट थी, मानो वे बड़ा जंग जीत कर आए हैं।

कुतब जाने का कार्यक्रम तो तय था। सो सब के बैठने के बाद महेश ने गाड़ी सीधी महारौली रोड बढ़ा दी। हालांकि महेश 18 साल का नहीं था, पर वह कार बहुत अच्छी चला लेता था। वह जानता था कि उस के पिता कार चलाने का लाइसेंस नहीं है, पर यह भी जानता था कि सब चलता जब तक टक्करवक्कर न हो जाए, नहीं पूछता।

सारे लड़के आज खूब मूड में रह रह कर कार में से इन के जोर ठहाके निकल रहे थे, जो राह के लोगों को चौंका देते थे। इन को देख लोग मुसकरा कर मन ही मन कहते लड़के मस्ती कर रहे हैं। कई बार मजाक में कार के अंदर धक्कामुक्की हो जाती थी और धक्का महेश को लगता था, पर कार उस के हाथ से हुई थी, इसलिए वह मजे से कार चला जा रहा था।

कुतब पहुंच कर इन लोगों ने आइस-क्रीम खाई। फिर थोड़े ही लोग वापस आ गए। लगभग सवा घंटे ये लोग वहां मटरगद्दी करते रहे। आम बच्चों की तरह आने-जाने वाले लोगों पर तानेतुराणे भी कसते रहे।

जब पांच बज गए तो इन लोगों ने लौट चलने का विचार किया। सभी चाहते थे कि महेश के डैडीमम्मी के घर पहुंचने से पहले कार वापस अपनी जगह पर रख दी जाए ताकि चोरी न पकड़ी जाए और आगे भी इस तरह की पिकनिक करने का मौका मिलता रहे। बाकी छः लड़कों में से दो के पास भी कारें थीं। वे भी मन ही मन महेश की सी होशियारी से घर से कार उड़ा लाने की तरकीबें सोच रहे थे।

लौटते में जब ये लोग सफदरजंग अस्पताल के पास रिंग रोड पर आए, उस समय दिलीप गाड़ी चला रहा था। दिलीप के घर पर आजकल गाड़ी नहीं है, पर पहले थी। वैसे भी जबजब वह अपने मामा के यहां जाता है तो एकदो बार गाड़ी जरूर चला कर आता है।

सड़क पर वन वे ट्रैफिक था। भीड़ कम थी। दफ्तरों की भीड़ अभी पूरी तरह से सड़कों पर नहीं आई थी। रिंग रोड पर आ कर सब ने यह फैसला किया कि अभी तो कुछ समय बाकी है, क्यों न सीधे जाने के बजाए

सरदार पटेल मार्ग से हो कर चला जाए। रस्ती बहुत अच्छी, साफ और बिना भीड़ का है। समय था, इसलिए सब लोग मान गए। दिलीप ने गाड़ी रिंग रोड पर मोड़ दी।

घोला कुआं से मुड़ने के बाद खुली सड़क देख कर दिलीप को कुछ ज्यादा ही मस्ती चढ़ गई। वह फिल्मी हीरो स्टाइल में कार को बीच सड़क पर चलाते हुए सांप की तरह लहराने लगा। इस से कार में बैठे लोग इधरउधर लुढ़कने लगे और उस के साथ ही जोरजोर से हंसने लगे। तरहतरह के मजाक हो रहे थे।

इसी मस्ती के दौर में दिलीप से गाड़ी का कंट्रोल छूट गया और जब उस ने गाड़ी को दाईं ओर लहरा कर वापस बाईं ओर लाना चाहा तो लगभग 70 मील की रफ्तार से चल रही गाड़ी उस के काबू के बाहर जा चुकी थी। बाईं ओर मोड़ कर गाड़ी को फिर से सीधा करने के बजाए उस ने गाड़ी को फुटपाथ पर दे मारा। गाड़ी फुटपाथ पर बड़े धमाके के साथ लगी और पिछली सीट पर बाईं तरफ बैठा प्रीतम कार का गेट खुल जाने की वजह से नीचे आ गया और गाड़ी का पिछला पहिया उस के सिर का कचूमर बनाता हुआ निकल गया। गाड़ी इतनी रफ्तार में थी कि वह फुटपाथ से टक्कर खा कर रुकी नहीं। फुटपाथ खत्म

तमाम राहों में

तमाम राहों में मेरे नगमे गुदाज शोलों का रूप ले कर, हंसीं सितारों की आंच खा कर जमील चेहरों की घूप ले कर, नई फुहारों की झिलमिलाहट में इस तरह रक्स कर रहे हैं, कि हर तरफ कहकहों की बारिश है, फूल हरसू बिखर रहे हैं। मगर मेरे लब पे गुफ्तगू है उसी की जिस ने रिहा किया था, मगर मुझे जुफतजू है उस की जो इस तरह मुसकरा दिया था।
—यूसुफ जफर

होते ही लगभग 30 फुट गहरे नाले की तीन फुट ऊंची गुड़िया थी। गुड़िया के आगे दालीप, महेश और विनोद झटके से बाहर आ गिरे। दालीप के सिर में चोट आई, विनोद का दायां जबड़ा काफी जखमी हो गया, पर महेश बिलकुल बेदाग बच गया।

कुछ क्षण तो इन लोगों की समझ में न आया कि यह सब क्या हो गया। ऊपर सड़क पर लोगों की आवाजें सुन कर इन्हें होश आया कि इन लोगों का एकसीडेंट हो गया। अब इन्हें अपने बाकी चार साथियों का होश आया।

जब इन लोगों ने पिछली सीट देखी तो वहां केवल तीन लड़के बुरी तरह से फंसे हुए थे। इतने में कुछ लोग उतर कर नाले में आ गए थे। गनीमत थी कि नाला बरसाती था और उस में इस समय मामूली सा पानी था। अन्य लोगों की सहायता से महेश और विनोद ने बड़ी मुश्किल से उन तीन साथियों को बाहर निकाला और उन्हें सहारा दे कर ऊपर सड़क पर लाए। जब महेश ने सड़क पर प्रीतम को कुचले हुए सिर के साथ देखा तो घबरा कर उस ने अपने दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया। अब तक वहां काफी लोग जमा हो चुके थे। कुछ तो केवल जिज्ञासु भाव से इन लोगों से सवालजवाब कर रहे थे और कुछ वास्तव में इन की मदद करना चाहते थे।

लोगों ने हाथ दे कर एकदो टैक्सी को रोकना चाहा पर एकसीडेंट देख कर कोई भी इन को सरकारी अस्पताल ले जाने को तैयार न हुआ। सभी जानते थे कि इस प्रकार के मामले में पुलिस बेकार में महीनों परेशान करती है। फिर वैसे भी कौन ये लोग टैक्सी वालों के रिश्तेदार थे जो उन की मदद करते।

इतने में महेश को खयाल आया कि

सभी लड़के 18 साल से छोटे थे और उनकी पसल बलगवाने का लाइसेंस भी नहीं था। अगर हम लोग सरकारी अस्पताल चले गए तो पुलिस को मालूम पड़ जाएगा और बेकार का झमेला खड़ा हो जाएगा। इस से अच्छा तो यह है कि हम लोग मिलिटरी अस्पताल जाएं, वहाँ पर सब कुछ संभाला जा सकता है। वैसे भी सभी लड़के फौजी अफसरों के बेटे हैं और उन्हें वहाँ इलाज करवाने में छूट है।

जब ये लोग प्रीतम को संभालने लगे थे तभी कई देखने वालों ने धीमे शब्दों में कह दिया था कि इस का बचना मुश्किल है। सारा का सारा सिर कुचला जा चुका था और बहुत ज्यादा खून बह चुका था। दरअसल वहाँ से उठाए जाने से पहले ही वह मर चुका था।

अन्य लोगों की मदद से महेश ने वहाँ से गुजर रही एक मिलिटरी की ट्रक को रोका और सभी घायल लोगों को उस में बिठाया और मिलिटरी अस्पताल ले गया। वहाँ डाक्टरों ने प्रीतम को देखते ही मृत घोषित कर दिया। दालीप के सिर में काफी चोट पहुँची थी, सो वह भी अस्पताल पहुँचतेपहुँचते बेहोश हो चुका था। एक लड़के का दायां पैर कुचल गया। एक की बाएँ हाथ की कलाई टूट गई। दो अन्य लड़कों के कई जगह चोटें लगीं।

सभी घायलों को डाक्टरों को सौंप कर डरतेडरते महेश ने डंडी को फोन किया। वह बेचारे एकदम घबरा गए अपनी पत्नी के साथ टैक्सी में मिलिटरी अस्पताल पहुँचे। उन्होंने अन्य लड़कों के मातापिता को फोन कर के बुलवाया।

जब महेश ने अपनी मम्मी को बताया कि एक लड़का मर गया है तो उन्होंने क्रोध में अपने इकलौते पुत्र से कहा, "इस से तो अच्छा होता कि तुम ही मर जाते। अब हम लोगों के सामने क्या मुँह दिखाएंगे?"

जब अन्य लड़कों के मातापिता आ गए तो महेश के मातापिता उसे ले कर

दुर्घटनास्थल पर गए. वहाँ कार को नाले में उलटी पड़ी देखा. उसकी आँखों के सामने अंधेरा सा छाने लगा. और माँ मन ही मन सोचने लगी कि इतनी नीचे गिर कर महेश का बिल्कुल बेदाग बचना एक चमत्कार से कम नहीं.

बाद में महेश के पिता ने कार की मरम्मत के लिए बीमा कंपनी से पैसा लेना चाहा तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया. पहली बात तो यह कि कार चलाने वाला 18 साल से छोटा था, और दूसरे उस के पास लाइसेंस नहीं था. कार फिर से चलाने योग्य बनाने के लिए विंग कमांडर साहव को सात हजार रुपए खर्च करने पड़े.

कुछ दिन बाद अपने घर पर बैठा

महेश सोच रहा था, 'काश हम लोग उस दिन पिंकनिक मनाने की जगह से कार ले कर न जाते. न ही वह दिलीप को कार चलाने देता और न ही वे इस तरह हीरो स्टाइल में कार चलाते तो यह दिन देखने को न मिलता. उन लोगों ने अपना एक मित्र खो दिया, एक की टांग टूटी तो एक का हाथ.

पर अब पछताए क्या होता? सावधानी तो उसे और अन्य लड़कों को पहले बरतनी चाहिए थी, पर उस समय तो वे अपनी ही मस्ती में थे.

उस ने महसूस किया कि यह पिंकनिक उसे, उस के मित्रों, प्रीतम के मातापिता और स्वयं उस के पिता को बहुत महंगी पड़ी.



“चाय पी कर ही पता चलता है कि तुम्हारी बीबी तुम्हें कंसा खाना देती होगी. अब तो तुम्हारा बीमा किए बगैर मैं नहीं जाऊंगा!”

अंधेरे में खिलेगा

मजीद ने एक बार फिर तार जेब से निकाल कर पढ़ा. 'सिराज सीरियस. कम सून' (सिराज की हालत गंभीर है, जल्द आ जाओ). उस ने गहरी सांस ली. क्या हो गया है सिराज भैया को? उन को छोड़े एक सप्ताह भी तो नहीं हुआ. ट्रेन कालीसिंध नदी का पुल पार कर रही थी. गंगधार का किला ट्रेन में से साफ दिखाई दे रहा था. इसी किले में स्कूल है.

एक वर्ष पहले मजीद इसी स्कूल में सहायक शिक्षक के पद पर नियुक्त हो गया था. उसे आए लगभग दो सप्ताह हो गए थे. दोपहर को स्कूल से लौट कर वह पलंग पर कमर सीधी करने लेटा ही था कि ठीक अपनी खिड़की के नीचे एक खनकती हुई मधुर आवाज सुनी, "छोटे! ओ छोटे!"

मजीद एकाएक पलंग से उठ खड़ा हुआ. खिड़की के बाहर झांका. एक युवती खड़ी थी. उस के वस्त्र साधारण थे. चूड़ीदार काले पाजामे पर पीले रंग का कुरता. कुरते में चांदी की जंजीर में लगे चांदी के बटन. कानों में छोटीछोटी सोने की बालियां. वह हलके रंग का मलमल का दुपट्टा ओढ़े हुई थी.

गली में बच्चे गिल्लीडंडा खेल रहे थे. वह उन्हीं की तरफ देख रही थी. "अरे, चलता है कि नहीं? रोटी नहीं खानी?" उस की क्रोध भरी बारीक आवाज भी मिसरी की डली सी थी.

अचानक उस की नजर खिड़की की ओर चली गई. चितवन कामदेव के बाण का काम कर गई. लंबोतरे शरबती चेहरे पर लंबी खड़ी नाक, काली पतली हंसिया जैसी भंवों के नीचे कटारी नयन गजब ढा रहे थे. युवती जरा मुसकराई. अचानक ही उस ने अपना चेहरा एक अनोखे ढंग से मोड़ कर घूँघट तान लिया. वह मुड़ी और इतराती हुई अपने घर की ओर चल दी. मजीद उस की पीठ देखता रहा. काले घने बालों की नागिन जैसी बल खाती चोटी कमर के ठीक नीचे तक लटक रही थी. मजीद को ऐसा लगा जैसे जातेजाते भी उस के मधुभरे पात्र उस की आंखों में समा रहे हैं. वह ठगा सा खिड़की पर खड़ा रह गया.

गंगधार में वही एक मुसलिम महल्ला था. उस में मुश्किल से तीन सौ घर होंगे. उजड़ाउजड़ा, बीच में कई टटेफूटे मकानों के ढेर और साबुत मकानों की कच्ची मिट्टी की दीवारों पर कवेलू की खपरैल. उन मकानों में युवक, युवतियां, बच्चे और स्त्रियां मँलेकुचैले, फटेपुराने कपड़ों में सुरक्षित थे. परंतु यह युवती उसे ऐसी लगी जैसे सब्जी के ढेर में गोभी का फूल.

दोपहर के समय उसी महल्ले का एक युवक वहीद उस के पास आ कर बैठा करता था. उस दिन मजीद ने उस से पूछा, "यह सामने के घर में कौन रहता है?"

“वह खिड़की के सामन जा दिख मुपुत्रा है।
 हा है?” वहीद ने इशारे से पछा मजीद ने इतमीनान की लांस ली.
 जीद ने स्वीकृति में गदेन हिला दी। “लेकिन, यार, वह मुझ से धूषट करती है?”

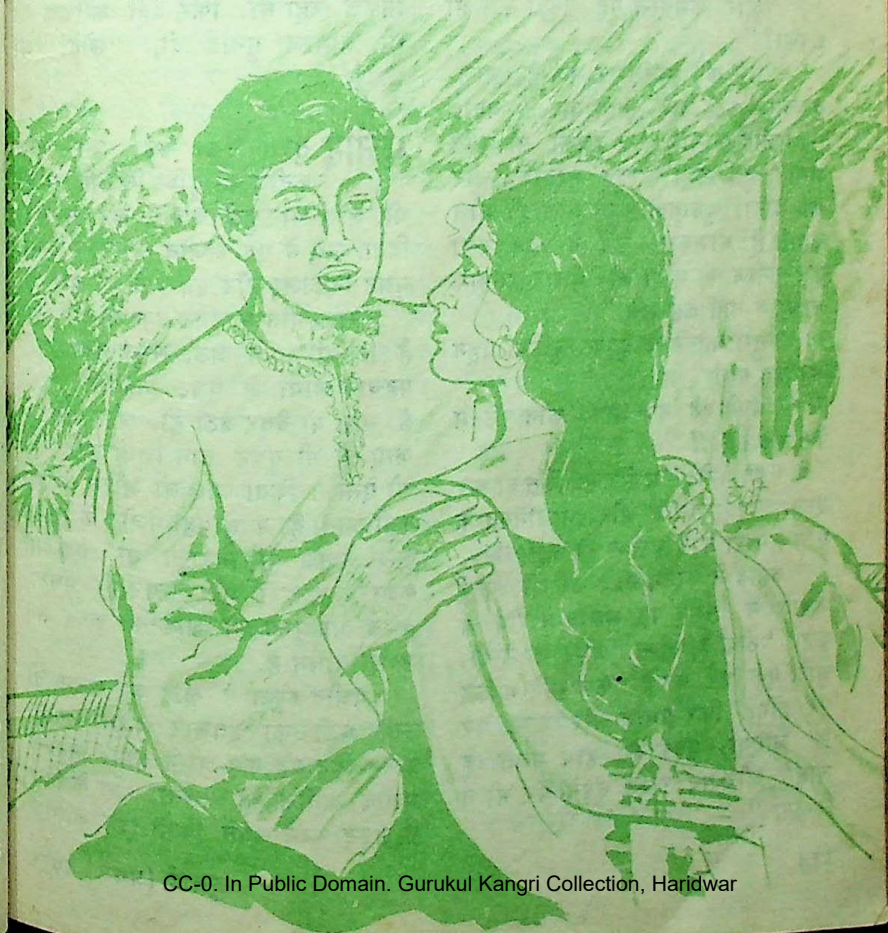
“इसहाक पटवारी का घर है.”
 “अच्छा, वह पटवारी साहब? उन की पत्नी तो गजब की जवान है, यार!”
 “क्या दिन में सपने देखने लगे, मास्टर साहब? किस की बात कर रहे हो?” वहीद ने सीधे हाथ की उंगलियों से प्रश्नात्मक अंदाज में फैलाया.
 “तो फिर वह कोकिला कौन है?”
 जीद के मुंह पर आश्चर्य का भाव था.
 “अरे, वह कनीज? वह उन की

“क्या कहा, धूषट? वह तो अभी कुंआरी है. गए काम से, मास्टर साहब!” वहीद ने हलकी सी चुटकी लेते हुए कहा.

मजीद अवाक वहीद की तरफ देखता रह गया. “अच्छा मूर्ख बना. उस ने स्वयं अपनी आंखों से...”

“उस की सगाई हो गई है, दोस्त.”
 वहीद ने उस के कंधे पर हाथ रखते हुए

कनीज कूड़ेकरकट के ढेर में एक हीरा थी, जिसे मजीद ने अच्छी तरह परख कर देख लिया था और उसे अपनी जिंदगी में सजा लेना चाहता था, लेकिन मजीद के वालिब आंखों से देख कर मक्खी कैसे निगल जाते?



कहा, "शादी नहीं हुई अभी. गजब की लड़की है महल्ले में."

"अच्छा, तो तुम्हारी भी नजर है उस पर?" मजीद मुसकरा दिया.

"हां...", वहीद ने आह भर कर कहा, "दोस्त, किस नौजवान की नजर न होगी उस पर! मजबूरी का नाम है सब्र. उस की सगाई एक बुढ़े से हो गई है."

"बुढ़े से?"

"यार, जरा खानदान में गड़बड़ है." वहीद ने संभल कर कहा, "यह पटवारी एक यतीम लड़का था. सामने के घर में पला और जवान हुआ. एक कुंजड़े की लड़की से शादी हुई. कनीज उसी कीचड़ में पैदा कमल है. महल्ले का कोई भी जवान उस पर जान न्यौछावर करने को तैयार है. परंतु ये बड़ेबूढ़े! हाय, दोस्त, अपनीअपनी किस्मत है."

"और कमबख्त यह बुढ़ा कैसे आ टपका?"

"उस की पत्नी मर गई है. बाल-बच्चा कोई है नहीं. वही यार," वहीद ने मजीद के बाजू पर हलकी सी चपत लगाते हुए कहा, "वह मुस्ताक, गांव का दादा. गुंडागर्दी करने वाले ही मौज उड़ाते हैं आजकल. उस ने रोब दिखा कर कनीज को मांगा और बेचारे इसहाक चाचा न नहीं कह सके."

"तुम महल्ले के युवक चूड़ियां पहन कर बैठ गए!"

"अपने को क्या यार. कौन फटे में पैर उलझाए?"

"डूब मरो!" मजीद उत्तेजित हो कर बोला, "क्या समाज और इनसानियत के प्रति हमारा कोई कर्तव्य ही नहीं?"

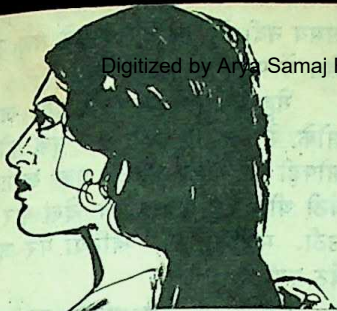
वहीद ने गरदन नीचे कर ली. कोई जवाब न मिलने पर मजीद ने रोष में कहा, "ठीक है, दोस्त. अंग्रेज चलने दो. आज एक घर पर है. कल सारे महल्ले पर होगा. फिर समाज और राष्ट्र पर छा जाएगा. युवक बस हाथ मलते रह जाएंगे और तब उपाय ढूंढने पर भी न मिलेगा."

कनीज को बाजारू सामान तरह बूढ़े मौलवी के हाथों सौंप देने की पूरी तैयारी गई थी, लेकिन मजीद ने डूबती को क्या सहारा दिया

गंगधार एक छोटा सा है, बहुत ही प्राचीन. कालीसिंह के किनारे ऊबड़खाबड़ टेकरियों बसा यह कसबा दूर से ही पथिकों लिए आकर्षण का केंद्र बन जाता है. नदियों के संगम पर स्थित इस कसबे सड़कें तो बन नहीं सकतीं, फिर हों कहां से होंगे. दोपहर को स्कूल से कर मजीद को स्वयं खाना पकाना पड़ा दूसरे दिन खुली खिड़की से धुआं निकल रहा था. फिर वही कोकिल सी आवाज सुनाई दी, "छोटे! छोटे!"

मजीद तुरंत उठ खड़ा हुआ. कनीज की दृष्टि खिड़की पर थी. आंखें चार हुईं. मजीद जरा मुसकरा दिया. उस ने एक अजीब अंदाज से देख घूँघट निकाला और इतराती हुई चल दी. राजस्थान में घूँघट एक आम रिवाज है. स्त्रियां अपने जेठ, ससुर तथा जिन पहचाने लोगों से घूँघट निकाला करते हैं. सास या देवर बैठा हो, और पति जाए तो भी घूँघट तान लिया जाता है जो ऐसा न किया जाए तो औरत बेशां कही जाती है. परंतु यहां मजीद के साथ कुछ अंदाज ही निराला था. एक कुआरी छोकरी और ऊपर से घूँघट भी पुरुष को आकर्षित करने अच्छा साधन है.

मजीद स्कूल से लौट कर आता उसी घड़ी का इंतजार करने लगता. प्रत्येक दिन यह क्रम चलने लगा. जब मजीद कनीज को देखता, उस के दिल में लड़कू फूटने लगते. किसी दिन आवाज



मुनाई न देती तो वह तड़प उठता.

एक दिन जैसे ही आवाज आई, "छोटे, ओ छोटे," मजीद खिड़की से झुका. उस ने फुसफुसा कर कहा, "दो दिन से कहाँ गायब थी? यहां मर रहे हैं दीदार को."

कनीज ने घूर कर देखा. उस का रूप बदला सा लगा. प्रति दिन की तरह वह मुसकराई नहीं, अपितु आज उस की भवें तन गईं. उस के होंठ व सिर जैसे तिरस्कार से हिले. फिर भी वह घुंघट निकाल कर चल दी. मजीद को ऐसा लगा जैसे गाल पर किसी ने कस कर तमाचा मार दिया हो. उस का दिल बैठ गया.

थोड़ी देर बाद पुनः वही आवाज "छोटे..." और साथ ही कंकड़ में लिपटा एक कागज खिड़की में से उस के सामने गिरा. उत्सुकतावश उस ने झट उठाया. लिखा था, "मास्टर, लड़कियों से ऐसी चुहलबाजी अच्छी नहीं. अगर किसी ने देख लिया तो हड्डीपसली एक कर के रख देगा. परदेशी को संभल कर रहना चाहिए."

मजीद दिल मसोस कर रह गया. उस में अब खिड़की से बाहर झांकने की हिम्मत न रही. अजीब लड़की है यह कनीज भी! कभी प्रेम जताती है तो कभी गुस्सा. इस के बाद आवाज का क्रम भी बंद हो गया. मजीद आहिस्ताआहिस्ता इस घटना को भूल सा गया.

मार्च की एक गरम दोपहर के बाद संध्या समय मजीद टहलता हुआ कब्रिस्तान की ओर निकल गया. नदी के किनारे गुफा वाले पीर साहब की एक मुक्ता

दरगाह है जो गंगा नदी का दृश्य मुहावना लगा. दिन भर की गरमी के बाद ठंडे पानी में डुबकी लगा लेने की इच्छा हुई. वह किनारे पहुंच गया, विलकुल एकांत तथा निर्जन स्थान. नदी के कगार पर खड़ा हो कर उस ने नहाने के लिए उपयुक्त स्थान ढूंढना शुरू किया, थोड़ी ही दूर पर कोई स्त्री नहा रही थी. ध्यान से देखा तो आंखें आश्चर्य से फैली रह गईं. वह कनीज थी. उस का मुडौल शरीर संध्या के डूबते सूर्य के प्रकाश में स्वर्णिम बन गया था. वह गुन-गुनाती हुई मस्ती के साथ उसी ओर आने लगी.

किनारे पर थोड़ी दूर कपड़ों का ढेर पड़ा था. वह चुपके से एक ओर खिसक कर झाड़ी की आड़ में हो गया. मलमल के टुपटटे से कनीज ने शरीर का आधा भाग ढक रखा था. परंतु मलमल ने क्या कभी पानी में भीग कर चंद्रमा को छिपाया है?

कनीज जैसे ही अपने कपड़ों के पास पहुंची, मजीद उस के सामने आ खड़ा हुआ. कनीज देखते ही चौंकी. वह अपने कपड़े लेने झपटी. परंतु मजीद को ठीक अपने सामने खड़ा देख कर वह सिकुड़ कर बैठ गई. उस ने क्रोधित हो कर कहा, "मास्टर, चले जाओ यहां से."

मजीद उस की यह भावभंगिमा देख कर पसीनेपसीने हो गया. वह मुड़ा और नहाने के लिए कगार से उतरने लगा. उसे अपनेआप से ग्लानि होने लगी. कपड़े उतार कर वह गहरे पानी में तैरता चला गया. कनीज ने कपड़े पहन लिए थे. वह नदी के किनारे खड़ीखड़ी उसे देखने लगी. मजीद के शरीर में सिहरन सी दौड़ गई. उस की इच्छा हुई कि वह नहाता रहे और कनीज उसे देखती रहे.

अंत में कनीज ने आवाज लगाई, "बस, बस. खूब नहा लिया. थक जाओगे." वह खिलखिला कर हंस पड़ी. मजीद बाहर आया. उस के शरीर में कंपकंपी छूट रही थी. कपड़े पहन कर

वह कनीज के पास आ खड़ा हुआ. आज उस ने नजदीक से उसे देखा. उसे के कमल जैसे होठ, सीप जैसी आंखें और भारी-भारी पलकें, उस का सुडौल और गठा हुआ शरीर—मजीद की नसनस में नशा सा पैदा करने लगे.

“क्यों, आप तो मुझ से चिढ़ती हैं न?” मजीद ने चुटकी ली.

“यही तो मजबूरी है दिल की. जब तक आप को देख न लूं, दिल काबू में नहीं आता,” उस ने पलकें गिराते हुए कहा और तुरंत वहां से चल दी.

“चोर!” मजीद ने उस का हाथ पकड़ते हुए शिकायत भरे अंदाज में कहा, “खुद तो मुझे चुपकेचुपके देख लेती हो और मेरे देखने पर बंधन.”

मजीद ने उस का हाथ खींच कर उसे अंक में भर लिया. कनीज ने आंखें मूंद लीं. उस के शरीर में बिजली सी दौड़ गई.

कनीज की आंखें जल्दी ही खुल गईं. “अरे रे! यह क्या कर रहे हैं?” उस ने अपने दोनों हाथ गालों पर रख लिए, फिर मजीद को एक हलका सा धक्का दे कर अलग कर दिया.

उस के चेहरे का भाव बदल गया. उस ने गंभीर हो कर कहा, “मास्टर साहब, मेरा खिड़की के नीचे होना और आप का खिड़की से झांकना आफत बन गया है मेरे लिए. लोग चर्चा करने लगे हैं. मेरी सगाई हो गई है. मांबाप ने अपना फर्ज पूरा किया. बांध दिया है बकरी को कसाई के खूंटे से. जजबात को कुचल दिया है मैं ने. पत्थर रख लिया है सीने पर. बस, अब इंतजार है—केब रखी जाती है छुरी गले पर.” उस ने आंखों में उतरती आती बाढ़ को अपने दोनों हाथों की उंगलियों से झटक दिया और तुरंत अपने खेत की ओर चल दी.

मजीद अवाक उसे देखता रह गया. उस के हृदय में तूफान उठा. वह अजीब पसोपेश में पड़ गया. वह घर आ गया, परंतु उसे जैन न मिला. दूसरे दिन संध्या

समय नदी के किनारे किनारे वह उस खेत में पहुंच गई.

गेहूं के पौधे हवा के एक जरा झोके से लहरा उठते थे. एक कोने झोपड़ी में कनीज अकेली एक खटिया बैठी थी. वह मजीद को देख कर सिर उठी. मजीद उसी खटिया पर जा बैठ गया.

कनीज के नेत्र गजब ढा रहे मजीद ने कहा, “तुम्हें देखे बिना मैं नहीं रह सकता, कनीज. दिल को संभालता हूं, मानता ही नहीं. क्या कुछ समझ में नहीं आता.”

कनीज ने चारों ओर दूरदूर दृष्टि डाली, कोई दिखाई न देता उस ने कांपती आवाज में कहा, “जख्म पर नमक छिड़क रहे हो, मास्टर मैं तो पहले ही दफन कर दी गई हूं. कौन मुर्दा भी जिंदा हुआ है कभी?”

मजीद को उस की दयनीय दृष्टि देख कर अपने समाज पर क्रोध आया. कनीज भी क्या करे? परिस्थिति ने उस का गला घोट दिया है. बोला, “तुम जवान और उत्साही हो कर भी इतना पस्तहिम्मत हो गई? हिम्मत से कहो. दकियानूसी प्रथाओं, का मुकाबला करो. अत्याचारों का सामना करो.”

“ओह, मैं तुम्हें कैसे समझाऊं? उस ने मजीद के गले में अपनी बांहें डाल दीं और कंधे पर सिर रख कर कह लगी, “हमें एक साथ यह समाज न देखें...



जुलाई (प्रथम) 191

सकगा। कमा से लाना का तमना नहीं...
 शुरू हो गया है। और फिर मैं... समाज
 के गरीब स्तर... मजिद ने कहा, "समाज ने जिस पवित्र बंधन से
 मांबाप की कोई इज्जत नहीं..."

"समाज!" मजिद ने चिढ़ कर
 कहा, "ऐसे समाज की मुझे चिंता नहीं
 जो इन्सान इन्सान में भेदभाव बरतता
 हो."

कनीज की आंखों में आंसू भर आए.
 फिर भी वह शांत थी.

"इस समाज ने सच्चे प्रेम को व्यभि-
 चार कहा है, पाप कहा है. बलपूर्वक
 किसी के पल्ले बांध देना ही उस के
 लिए पुण्य है. भले ही औरत अपनी
 जिंदगी से खुश न हो और वह शादी उस
 के हृदय को कचोटती रहे. भले वह धुल-
 धुल कर मरती रहे. मांबाप और कुटुंब
 वाले तो समझते हैं कि वह खुश है." मजिद
 ने उस के दोनों कंधे पकड़ कर उस की
 आंखों में झांकते हुए कहा, "चलो,
 कनीज. हम दोनों मिल कर बगावत करें
 ऐसे समाज से." उस ने जोश में उसे फिर
 से अंक में भर लिया.

"मैं नारी हूं. मुझ में यह हिम्मत
 कहां?" कनीज ने सिसकते हुए कहा.

मजिद तिलमिला उठा, "तुम बुढ़े
 के साथ सड़ जाओगी. जिंदगी तबाह हो
 जाएगी."

"अपनी अपनी किस्मत है, मास्टर."

"हूं, किस्मत! इन्सान हाथ पर हाथ

रोया करे. मैं यह सब नहीं मानता."

मुझे बांध दिया है, उस को निभाए बिना
 कोई छुटकारा है?" कनीज के शब्दों में
 कड़वाहट थी.

"तुम इसे पवित्र बंधन कहती हो!
 क्या यह तुम्हारे लिए फांसी का फंदा
 नहीं है? सच कहो, क्या तुम अपना प्रेम
 उस बुढ़े को दे सकोगी कभी?" मजिद
 ने पूछा.

"प्रेम! क्या प्रेम जैसी वस्तु कभी
 देखी है, मास्टर? हां, यह शरीर एक
 चीज जरूर है. सब्जी की तरह बिक रहा
 है यह समाज के बाजार में," और एक
 आह भर कर उस ने अपनी गरदन झुका
 ली.

"यह हृदय," मजिद ने अपने सीने
 पर हाथ रख कर कहा, "देखो. यह तड़प
 रहा है तुम्हारे लिए." मजिद उसे अपने
 से सटा लेना चाहता था. परंतु एक
 चीख के साथ कनीज मजिद से अलग
 हो गई. उस की आंखों में भय झांकने
 लगा. मजिद ने पीछे मुड़ कर देखा,
 कनीज का भाई सिराज लाठी लिए खड़ा
 था. उस की आंखों से चिनगारियां निकल
 रही थीं.

"तू! शंतान!" उस ने लाठी उठाई.
 मजिद दो कदम पीछे हट गया.
 कनीज आगे बढ़ी, "नहीं, नहीं," वह

बंद होंठों में दफन हैं...

खुले किवाड़ों के बंद होंठों में दफन हैं बेहिसाब नगमे,
 मगर तेरे साज ने किसी गीत का कभी साथ भी दिया है?
 खुल रहे हैं हजारों आगोश सुबह होने के बाद तक भी,
 मगर तेरे हुस्न ने किसी दिल के हाथ में हाथ भी दिया है?
 ये आईने का उदास चेहरा तुझे तसल्ली न दे सकेगा,
 अब आईना तोड़ दे कि तेरी नजर न ये वार सह सकेगी.
 —कतील शिफाई

वाला कसूर मरा ह. मारना हा तो मुझ मारो."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे ही क्षण उस पर कस कर लाठी का वार हुआ. कनीज तिलमिला कर रह गई. मजीद ने झपट कर लाठी पकड़ ली. कनीज ने सिसकते हुए कहा, "छोड़ दो, मास्टर, छोड़ दो. यह मेरा भाई है. इसे सब कुछ हक है. एक बुढ़े से शादी कर के उम्र भर तिलतिल मरते रहने से अच्छा है कि इस के हाथ से मौत आ जाए. हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाए."

सिराज की आंखों में पानी भर आया.

लाठी उस के हाथ से छूट गई. "माफ करना, बहन. पर हम क्या कर सकते हैं? किस्मत ही ऐसी है. अगर हम खानदानी होते तो तेरे लिए अच्छे वर मिल जाते. तू क्या समझती है कि हम खुश हैं इस रिश्ते से? लेकिन मजबूरी जो है."

"भाई साहब, आप कैसी बातें करते हैं? मैं कनीज को शरीके हयात बनाने को तैयार हूं," मजीद ने सिराज के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा.

"सच!" सिराज खुशी के मारे मजीद से लिपट पड़ा. फिर उस ने कहा, "लेकिन, मास्टर, आप तो सैयद हैं. ऊंची जाति के हैं. क्या आप के खानदान वाले यह कंबूल करेंगे?"

"यह मत भूलो, मेरे दोस्त, कि इनसान सब बराबर हैं. अब जमाना नहीं रहा कि जाति और खानदान में हलका होने के सबब से किसी को बेइज्जती सहनी पड़े. मैं अपने वालिदेन को समझा लूंगा."

"क्या आप वादा करते हैं? धोखा तो नहीं देंगे?" उस ने मजीद की आंखों में आंखें डाल कर पूछा.

"जवान एक है. सिर्फ आप उस बुढ़े से सगाई तुड़वा लीजिए. गरमी की छुट्टियों में अपने घर जा कर मैं सब कुछ ठीक कर लूंगा. फिर ठाट से कनीज को ब्याहने आऊंगा."

दूसरे ही दिन गांव में अफवाह फैल

गई. बुढ़े को उस के चढ़ाए जेवर, कपड़े वगैरा वापस कर दिए गए. मजीद स्वयं कनीज के मां-बाप के सामने जा कर उस का हाथ मांगा. गांव आश्चर्य में पड़ गया. लोगों में तरह-तरह की बातें होने लगीं.

"देखा, साहब, क्या अच्छा जाल फैलाया है छोकरी ने! इश्क में फंसा लिया मास्टर को."

"अरे भाई, इस में बाप और भाई की साजिश तो होगी ही. एक खानदानी खाताकमाता युवक मिल रहा है, फिर बुढ़े से क्यों शादी करे भला?"

"पर यह मास्टर भी कोई ऐसा-वैसा ही दिखता है. वरना ऐसी जगह फंसने को कौन तैयार हो!"

"जो जैसा होता है उस को वैसा मिल ही जाता है. जैसे को तैसा मिल गया."

"अरे, नहीं जी. मैं जानता हूं मास्टर के खानदान को. लेकिन इसी का नाम तो इश्क है. जो इश्क लड़ा गधी से तो परी क्या चीज!"

"सुना है, मास्टर लड़की के बाप को एक हजार रुपए नकद दे रहा है."

इस प्रकार जितने मुंह उतनी ही बातें. कौन किस का मुंह बद करे.

उधर मुश्ताक क्रोध से पागल हो उठा था. एक दिन वह बोला, "यह मास्टर साला, आजकल का छोकरा! मेरा मुकाबला करने चला है? बच्चू को मजा चखा दूंगा. कनीज को निकाह से उठा न ले गया तो मेरा नाम मुश्ताक नहीं."

"अरे यार, मुश्ताक, घबराने की जरूरत नहीं. इस छोकरे के बाप को मैं जानता हूं. ऐसा खेल खेलता हूं कि मास्टर घर जाए और डब्बे में. . . फिर इसहाक पटवारी का बाप भी दौड़ादौड़ा तुम्हारे कदम पकड़ने आएगा," एक ने उसे शह देते हुए कहा.

जब मजीद गरमी की छुट्टियों में अपने घर जाने लगा तो कनीज को इतमीनान दिलाते हुए बोला, "मैं घर जाते ही अपने वालिदेन को राजी कर

लूंगा. इन्हीं गरमियों में अपनी शादी हो जाएगी. मेरे पत्र का इंतजार करना. मामने मुँह दिखाने हाथकूत रहूंगा." "विश्वास रखिए, भाई साहब. मेरे विचार ही निराले हैं. मैं रुढ़िवादी विचारों को कुचल देना चाहता हूँ. मैं जल्दी ही पत्र लिखूंगा." मजीद ने विदाली.

मजीद जैसे ही अपने घर झालावाड़ पहुंचा, उस के मांबाप बरस पड़े, "नीच

सिसली का भूतिया नगर

बात वर्षों पहले की है. एक बार सिसली द्वीप में रातोंरात एक पूरा नगर बस गया. मीठीमीठी नींद सोए वहां के निवासी जब सुबह उठे तो इस नगर को देख घबरा उठे. दोपहर होतेहोते यह खबर आसपास के इलाकों में भी फैल गई. मगर अनोखी बात तो यह थी कि शाम होने के साथ ही वह नगर भी अदृश्य हो गया. उस के स्थान पर फिर वही खाली मैदान रह गया.

पर फिर एक दिन वह नगर उस मैदान में निकल आया. इस घटना के बाद वहां के निवासियों ने इसे 'भूतिया नगर' का नाम दे दिया. वह लगता भी भूतिया नगर ही था. कभी यह नगर उस विशाल मैदान में उभर आता और फिर स्वयं ही ओझल हो जाता. कई बार तो ऐसा लगता जैसे एक के ऊपर एक कई मंजिला नगर बन गया हो.

भूतिया नगर की एक विशेषता थी कि इस नगर में कभी किसी भी भूत को नहीं देखा गया. कुछ लोगों का विचार था कि भूत केवल रात के अंधेरे में ही आते थे. इसी डर के कारण कोई भी उस भूतिया नगर के पास नहीं फटकता था.

कई वर्षों तक यह नगर भूतिया नगर के नाम से ही प्रसिद्ध रहा. धीरेधीरे वैज्ञानिकों की रुचि इस नगर में बढ़ी और फिर एक दिन उन्होंने भूतिया नगर का रहस्य खोज ही निकाला.

इस नगर के अस्तित्व के पीछे का रहस्य है मृगमरीचिका. रेगिस्तानी इलाकों में अकसर जलाशय होने का भ्रम होता है. इस को ही मरीचिका कहते हैं. जब भी गरम और ठंडी हवाओं की परतें विशेष प्रकार से ऊपरनीचे उठती हैं तो एक दर्पण का कार्य करने लगती हैं. इसी दर्पण में दूर या पास की चीजें प्रतिबिंबित होती हैं. प्रतिबिंबित वस्तुओं का नीला रंग पानी जैसा लगता है.

भूतिया नगर के पीछे भी यही रहस्य था. यह नगर केवल उस मैदान के आसपास की इमारतों का प्रतिबिंब था. जब भी निकट समुद्र की लहरें एक विशेष प्रकार से उठतीगिरतीं तो उन के प्रतिबिंब के रूप में यह नगर दिखाई देने लगता. जब लहरें शांत हो जातीं तो यह नगर भी आंखों से ओझल हो जाता.

सिसली में आज भी यह नगर देखा जा सकता है. लेकिन अब वहां के निवासी इस से डरते नहीं हैं. न ही इसे भूतिया नगर कहते हैं. अब तो इस काल्पनिक नगर का नाम फैंटा मोरगाना रख दिया गया है. —सतीश रेखी

कि मेरे लड़के को आप की दुस्तर इस्क के जाल में फँस गये हैं। लेकिन मैं अभी जिंदा जाल फैलाया है! लेकिन मैं अभी जिंदा हूँ। आँखों देखते मक्खी नहीं निगल सकता। मैं मजीद की शादी इसी माह में कर रहा हूँ। आप की लड़की को तो कई कुंजड़ेकसाई मिल जाएंगे, लेकिन मेरी इज्जत क्यों मिट्टी में मिलाने को तुले हुए हो? मजीद का खयाल कतई छोड़ देना। मैं उस का तबादला झालावाड़ ही करवा रहा हूँ।”

मजीद खत पढ़ते ही दंग रह गया। कुछ सोच नहीं पाया कि क्या जवाब दे। उसे चुप देख सिराज ने पूछा, “बतलाइए, मास्टर साहब, आप की क्या राय है?”

“कनीज कहाँ है?” मजीद ने सीधा प्रश्न पूछा।

“जब से खत आया है, उस को दौरे आने लगे हैं। प्रेम में धोखा होने पर स्वाभाविक है कि इनसान अपना संतुलन खो बैठे।”

“जाओ, निकाह की तैयारी करो। आज ही रात में निकाह होगा,” मजीद तैश में आ कर बोल गया।

“लेकिन बगैर तैयारी के? पैसेकौड़ी का कुछ इंतजाम नहीं है। शादी कोई गुड्डेगुडियों का खेल है?”

“ऐसे कौन से इंतजाम की जरूरत है?”

“पहले तारीखें तय करनी पड़ेंगी। तकरीबन पंद्रह दिन पहले लड़की को दुलहन बनाया जाता है। हल्दी, पीटी, रतजगा, मंडप वगैरा बहुत कुछ तो है। वरना लोग बदनामी करेंगे।”

“बदनामी अभी क्या कम कर रहे हैं? आप के भी ऐसे दकियानूसी खयाल होंगे, मुझे आशा न थी। छोड़ो ये सब पुराने रिवाज। आज निकाह हो जाए तो सारी समस्या हल हो जाएगी।”

“माना कि आप निकाह कर लेते हैं, फिर भी अगर आप के वालिदेन ने न माना तो?” सिराज ने चिंतित हो कर

मुक्ता

पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। “आप साहब, आपने वालिदेन को मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मेरे लिए उन के दिलों में मुहब्बत है। उन्हें हमेशा मेरी भलाई का खयाल है। वे जरूर मान जाएंगे। मुझे विश्वास है।”

“अच्छा, तो आज रात में निकाह की तैयारी करता हूँ।” सिराज ने इतमीनान की सांस ली और चल दिया। मजीद अपने निश्चय पर अटल था।

बिजली की तरह यह समाचार सारे कसबे में फैल गया। मुश्ताक ने सुना तो सिर पकड़ कर बैठ गया। इस अचानक हमले की उसे आशा नहीं थी। परंतु फिर भी निकाह के समय वह कुछ लठैत माथियों को ले कर आ पहुंचा।

“ठहरिए, काजी साहब,” उस ने निकाह की काररवाई शुरू होते ही कड़क कर कहा, “मैं यहां बैठे भाइयों से इनसाफ की दरख्वास्त करता हूँ। हमारे यहां जब किसी की सगाई होती है, लड़की उस की हो जाती है। यह सर्वमान्य नियम है और इसे तोड़ना सामाजिक गुनाह है। निकाह भी उसी से होना चाहिए, जिस से सगाई हुई है। दूसरे किसी से निकाह नहीं हो सकता।”

काजी साहब ने नम्रता से कहा, “मुश्ताक साहब, सगाई करना या न करना कोई मजहबी नियम नहीं है। अगर आप का निकाह हो जाता तो जब तक आप तलाक न देते, दूसरे किसी से निकाह नहीं हो सकता था। फिर भी अगर आप कहते हैं तो मैं निकाह रोक देता हूँ। पहले आप लोग अपना फैसला कर लीजिए।” कहतेकहते काजी साहब जरा हाँफने लगे थे।

“अपने रिवाज के हिसाब से आप को सब चढ़ावा वापस मिल गया है। फिर आप खैर में क्यों टांग अड़ा रहे हैं?” एक ने कहा।

“मुझे अपने जेवर और कपड़े वगैरा तो मिल गए। लेकिन अभी हिसाब बाकी है। सगाई में बाजा, मिठाई वगैरा पर कुल ढाई सौ रुपए खर्च हुए थे। वह

भी दिला दीजिए, वरना निकाह न होने दूंगा। मेरा पैसा बाकी है तो लड़की पर मेरा हक भी बाकी है," मुश्ताक ने क्रोधित हो कर कहा।

"अरे मजी!" सिराज शांत न रह सका। वह अपनी जगह से खड़ा हो कर मुश्ताक की तरफ बढ़ता हुआ क्रोध से बोला, "तू ने अपनी मरजी से जितना चाहा, खर्च किया। क्या हम ने कहा था कि तू शानशोकत में पैसा पानी की तरह बहा? कुछ और मांगने का तेरा हक नहीं है।"

"मैंने जो कुछ किया था, पहले से चलते आए रिवाज के हिसाब से किया था। तुम्हारी शान बढ़ाने के लिए पैसा पानी की तरह बहाया था। जब हिसाब ही करना है तो पूरा हिसाब कर दो," मुश्ताक बोला।

मजीद शांत था। उस ने सोचा, छोटी सी रकम के लिए बेकार की तूतू मैंमें होगी। "भाई साहब, आप खाम-खाह गुस्सा हो रहे हैं। सिर्फ़ ढाई सौ रुपये की तो बात है। मैं वादा करता हूँ कि तनखाह मिलते ही आप के पैसे पहुँचा दूंगा।"

"अरे, जा जा! बड़ा आया है वादा

करने वाला। फकीर की ओलाद, तेरे पास चपाकर खा रहे हैं मुश्ताक आपने मे बाहर हो कर चिल्लाया।

सिराज तैश में आ कर आगे बढ़ा, "कमीने, तू इतनी नीच हरकत कर सकता है! जो कुछ तेरा हमारे पास था, बस, उतना ही तेरा हक था। अब तू एक पैसे का भी हकदार नहीं। जा, तुझे जो करना है, कर ले।"

मुश्ताक ने झपट कर सिराज का गरेबान पकड़ लिया, "ठहर, शांतान। मैं अभी मजा चखाता हूँ तुझे।" उस ने अपने लठैतों को इशारा किया, "तुम सब जा कर दुलहन को उठा ले चलो। उस पर मेरा हक है। हम इन कमीनों से निबटते हैं।"

"खबरदार!" मजमे से दूर खड़े वहीद की आवाज आई। वह महल्ले के दसवारह युवकों की एक टोली बना कर तैयार खड़ा था, "जरा भी गड़बड़ की तो..."

एक साथी ने कहा, "काजी साहब, आप निकाह पढ़ाइए। बहुत दादागिरी चलाई है इस ने गांव में। अब यह अंधेर न चलने देंगे।"

मुश्ताक अपने साथियों के साथ दम दबा कर भागा।

पाव भर दूध...

एक बार पंजाब का एक धनी किसान 'भारत दर्शन' करते हुए दक्षिण भारत पहुँचा। एक रेस्तरां में जा कर उस ने बैरे को बुलाया और आधा किलो दूध का आर्डर दिया।

"दूध?" बैरा हैरानी से बोला, "यहां दूध नहीं मिलेगा, साहब! चाय या काफी मिलेगी।"

"अच्छा, चाय ही ले आओ," मायूसी से किसान बोला, "पर हाँ, 15-16 कप लाना।"

"15-16 कप! वह क्यों, साहब?" बैरे ने आश्चर्य से पूछा।

"कम से कम पाव भर दूध तो पेट में जाएगा ही," किसान ने झट उतर दिया।

—अशोक खरबंदा, नई दिल्ली



ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी

जिन का रहनसहन, खानपान व सामाजिक परंपराएं
आज भी लाखों वर्ष पीछे हैं...

लगभग तीन करोड़ वर्गमील क्षेत्र वाला ऑस्ट्रेलिया संसार का सबसे छोटा महाद्वीप है। भूसंरचना और अपने मूल निवासियों की दृष्टि से यह एक अत्यंत प्राचीन प्रदेश है। कुछ समय पूर्व तक इसे आदिकालीन मानव जाति का संग्रहालय समझा जाता था, जिस में अनेक जातियां अपनी विचित्र परंपरागत संस्कृतियों को संजोए निवास करती थीं। परंतु जब से सभ्य मानव द्वारा इस की भूमि पर पदार्पण हुआ है, इन की संख्या बहुत कम हो गई है। ये लोग अब तटीय भागों की ओर केवल कुछ हजार वर्गमील क्षेत्र में सीमित रह गए हैं। कारपेंटेरिया की खाड़ी के दक्षिणपश्चिम की ओर इन की संख्या अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कुछ अधिक मिलती है।

ये आदिवासी अनेक जातियों एवं प्रजातियों में विभक्त हैं, पर अरुंता, वाराभूंगा तथा बिनबिगा मुख्य हैं। कमिल-मुक्ता

रोई न्यू साउथ वेल्स की ओर पाई जाने वाली दूसरी जाति है। वर्तमान समय में ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश क्षेत्र में यूरोपीय सभ्यता और संस्कृति का बोलवाला है परंतु बहुत कम आदिवासी इस की ओर आकर्षित हुए हैं। अतः इन लोगों की सभ्यता और संस्कृति में वही झलक मिलती है जो कभी प्रस्तरकालीन जातियों में मिलती थी। यही कारण है कि इन के रीतिरिवाज, परंपराएं, आवासीय ढंग आदि में अनेक प्रकार की विचित्रताएं देखने को मिलती हैं, जो आज के मानव के लिए एक कौतूहल का विषय हैं।

वर्ण एवं शारीरिक बनावट

वर्ण के आधार पर इन मूल निवासियों को 'काले मानव' के नाम से भी पुकारा जाता रहा है। परंतु वास्तविक रूप से इन का रंग काला नहीं होता, वरन् ताम्र से गहरा, चाकलेटी रंग होता है। यह रंग

अनुमानतः सूर्य की मरुत किरणों के नाना शरीर पर पड़ने से हो जाता है। इन का शरीर सुडौल, छाती चौड़ी, कद मध्यम तथा बाल घुघराले और ऊन सदृश होते हैं। चेहरा गोल, आंखों की ऊपर की हड्डी उभरी हुई, नाक चौड़ीमोटी होती है।

वस्त्र के नाम पर उन के पास कुछ नहीं होता। ये लोग प्रायः नंगे ही रहते हैं। कुछ लोग कमर में एक डोरी बांध कर वृक्षों की छालों, पत्तियों आदि को उस में लटका कर यौनांगों को ढक लेते हैं। कभीकभी नृत्य में भाग लेने वाली लड़कियां अवश्य घुटनों तक का रंगविरंगा परिधान पहन लेती हैं, जो विशेषतया समूर वाले जानवरों का व्रना होता है। इस के अतिरिक्त पुरुष एक प्रकार की नोकीली टोपी पहनते हैं जो रक्षियों के पंखों आदि से सजाई जाती है। इन में सिर पर पट्टी बांधने की प्रथा है, जिस से सिर के लंबेलंबे बाल माथे पर न आ सकें।

अलंकरण

अपने शरीर को अलंकृत करने की इन की प्रथा भी विचित्र प्रकार की है। पुरुष वर्ग अपने नथुनों में नोकीली छड़ डाल कर उन में छिद्र कर लेते हैं तथा अपने शरीर को विविध रंगों से रंगते हैं। स्त्रियां नथुनों में छिद्र नहीं करतीं बल्कि उन के आगे के दांत उखाड़ दिए जाते हैं जो आकार में बड़े और बाहर निकले रहने के कारण भेदे लगते हैं। यह कार्य स्त्रियां अपने को आकर्षक बनाने के लिए करती हैं।

आवास

आवासीय दृष्टि से खुला आकाश इन की छत है और पृथ्वी इन का घर क्योंकि न इन के पास खेमे होते हैं और न कोई झोंपड़ी। हां, क्वींसलैंड के आदिवासी अवश्य कुछ झोंपड़ियां बना लेते हैं जो घासफूस को जैसेतैसे इकट्ठा कर के बनाई जाती हैं। इन की बनावट ऐसी होती है कि वर्षा के थोड़े से ही बहाव से ये बह जाती हैं और ये लोग दुकुर-

दुकर ताकते रह जाते हैं। ये लोग घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हुए छोटेछोटे समूहों में रहते हैं। इन में इन की संख्या 20 से 100 तक होती है। मनुष्यों की यह संख्या प्रायः घटतीबढ़ती रहती है। वर्षा के समय जब पानी सर्वत्र सुलभ होता है, ये लोग और भी छोटेछोटे समूहों में भोजन तलाशते हुए इधरउधर बिखर जाते हैं। पानी सर्वत्र उपलब्ध न रहने पर समूह कुछ बड़े हो कर पानी वाले स्थानों की ओर सीमित हो जाते हैं। जब कभी वे एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं तो इन्हें सामान उठाने में देर नहीं लगती। पुरुष अपना औजार भाला, बर्छी और ढाल उठा लेते हैं, स्त्रियां लकड़ीपत्थर के बने बरतनों को अपने सिर पर रख लेती हैं। वे बच्चों को अपने कूल्हों पर बैठा कर हाथ में छड़ी ले कर चल देती हैं। इन के साथ डिंग (एक प्रकार का कुत्ता) भी होता है।

भोजन

आस्ट्रेलिया के मूल निवासी सां छिपकली, छोटेछोटे जीवजंतु, दीमक, कंगारू, बड़े आकार के जंतुओं का मांस घास, घास की बनी रोटी आदि सभी कुछ उदरस्थ कर जाते हैं। इन में 'एमू' पक्षी तथा 'ओपोसम' (एक प्रकार का बड़ा जंतु) का मांस बहुत पसंद किया जाता है। स्त्रियां घास के बीजों को पत्थर पर पीस कर उस की रोटियां बनाती हैं, जो आकार में बड़ी, चौरस और कुरकुरी होती हैं।

यहां के आदिवासी बड़े सुस्त और आलसी होते हैं। वे अधिकांश समय अपने शरीर को विविध प्रकार के चित्रांकन से अलंकृत करने में लगाते हैं। बहुत हुआ तो वे कुछ औजार बना लेते हैं। वे बरतन बनाना, कृषिकार्य, पशुपालन आदि कुछ भी नहीं जानते। पशुओं के नाम डिंगों पालते हैं, जो हमेशा इन के साथ रहता है।

भोजन की वस्तुएं एकत्र करने का कार्य स्त्रियां और बच्चे ही करते हैं। पुरुष कभीकभी बड़ेबड़े शिकार कर के लाते हैं, जिस में कंगारू और ओपोसम मुख्य हैं।



एक सयाना वृक्ष पर रखी लाश में
दुरात्मा का चिह्न ढूँढ़ता हुआ।

मार्ग में चलते-चलते जब कभी एमू चिड़िया
मिल जाती है तो दूर जाल लगा कर,
शोर मचा कर उसे भगाते हुए फंसाने का
प्रयत्न करते हैं।

सामाजिक परंपराएं व रीतिरिवाज

सभ्य और विकासशील समाज के
संपर्क में न आने के कारण ये लोग
दुरात्मा या प्रेतात्मा आदि के प्रभाव में
अटूट आस्था रखते हैं। जीवन के प्रत्येक
क्षेत्र में इन का संबंध ये किसी न किसी
रूप में अवश्य मानते हैं। अतः जन्ममृत्यु,
सुखदुःख, नृत्य, जातीय संस्कारों आदि में
जाड़ोने की प्रक्रिया चलती है। किस
प्रेतात्मा का कौन सा प्रभाव अच्छा है
अथवा बुरा है, उस के क्या चिह्न एवं
लक्षण होते हैं आदि बातों संबंधी कला
में कुछ व्यक्तियों को निपुणता प्राप्त होती
है और उन्हें प्रत्येक संस्कार, बीमारी,
मृत्यु आदि के अवसर पर बुलाया जाता

मुक्ता

है। ये व्यक्ति अपने शरीर पर विविध
रंगों से विशेष आकृतियों अंकित कर लेते
हैं, सिर पर पंखों, पत्तों आदि से बना
परिधान पहनते हैं और हाथों से अनेक
प्रकार की भंगिमाएं प्रदर्शित करते हुए
मंत्र पढ़ते हैं। 'सयानेपन' का यह कार्य
कुछ जातियों में केवल कुछेक पुरुषों तक
ही सीमित है, परंतु कुछ जातियों में
स्त्रियों और पुरुषों में कोई भी इसे कर
सकता है।

समाज में अनुशासन को अधिक
मान्यता दी जाती है। प्रत्येक स्त्रीपुरुष को
बिना किसी भेदभाव के कठोर अनुशासन
में रहना होता है। निर्धारित मान्यताओं
की अवहेलना अथवा उन में किसी प्रकार
का हेरफेर दैवी विपत्ति का परिचायक
समझा जाता है। इस के साथ ही संबंधित
व्यक्ति को कठोर शारीरिक यंत्रणाएं दी
जाती हैं, जिस में साधारण पिटाई के
अतिरिक्त उसे अंधा, लूला और लंगड़ा
तक बना दिया जाता है।

समाज में प्रचलित सभी संस्कारों से
पूर्वजों का संबंध जुड़ा रहता है। जिस
प्रकार हमारे समाज में लड़कों का कर्ण-
छेदन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार होता है,
उसी प्रकार आदिवासी युवकों को भी कई
परीक्षाओं में उतरना पड़ता है। संस्कार
के समय एकत्र होने के लिए ये लोग
पक्षियों की आवाजों में जोरजोर से
चिल्लाते हैं। तब इधर-उधर बिखरे लोग
समीप आ कर एकत्र हो जाते हैं।

युवावस्था में पदार्पण करते ही युवकों
का 'मीका' संस्कार किया जाता है। इस
से पूर्व बालकों को निश्चित समयों पर
विचित्र प्रकार की आवाजें सुना कर गलत
कार्यों से सावधान रहने की चेतावनी दी
जाती है। उन्हें बताया जाता है कि ये
महानात्मा 'ट्वानयीका' की आवाजें हैं
और उस की आज्ञा का पालन करना
परम कर्तव्य है। 'मीका' संस्कार के
समय इस आवाज की वास्तविकता का
ज्ञान हो जाता है। एक पतली खपची
सदृश लकड़ी के सिरे पर डोरी बांध कर
घुमाया जाता है। उस से उत्पन्न होने

वाली ध्वनि Digitalized by eGangotri Sankar Prakashan, Haridwar, India. किसी विधि द्वारा दिन अपने वगैरे

की आवाज होती है।
संस्कार का यह कार्य सयाने से संपन्न कराया जाता है। ये सयाने अपने-अपने शरीर को विचित्र प्रकार से पोत कर अंगुलियों के इशारे से युवक के शरीर में कोई अदृश वस्तु प्रविष्ट कराते हैं। युवक के बंधुवांधव उस के शरीर को नोकीली मोटी लकड़ियों से छेदछेद कर उसे शारीरिक यंत्रणाएं पहुंचाते हैं। इस प्रक्रिया से कभीकभी गहरे घाव हो जाते हैं, जो प्राणघातक भी सिद्ध होते हैं। सयाना युवक को ताबीज के रूप में पत्थर के कुछ टुकड़े देता है। युवक उन्हें पूर्वजों द्वारा प्रदत्त मान कर उन का सम्मान करता है और उन्हें कांपते हाथों से ग्रहण करता है। वह इस अवसर पर रहस्यों को गुप्त रखने का भी प्रण करता है। किसीकिसी युवक को अधिक सहनशील और गंभीर प्रकृति का जान कर 'सयाना-पन की कला' भी सिखाई जाती है।

प्रौढावस्था में पहुंचने पर व्यक्ति की अग्निपरीक्षा होती है। उसे जलती हुई अग्नि पर लिटा दिया जाता है और वह पांच मिनट तक तेजी से इधरउधर करवटें बदलता रहता है जिस से उस के शरीर पर घाव न हो सकें। जब वह जीवन की मध्य अवस्था में पहुंचता है तो उसे पुनः ऐसी ही अग्निपरीक्षा देनी होती है।

विवाह संस्कार

आस्ट्रेलियाई मूल निवासी अनेक जातिप्रजातियों में बंटे होने के कारण विवाह संबंध अपने वर्ग में ही करने के अधिकारी होते हैं। विवाह में अनेक जटिल संस्कार होते हैं। विवाह युवक की इच्छानुसार होता है। 20 वर्ष से 30 वर्ष की आयु तक विवाह किए जाते हैं। इस से पूर्व युवकों पर अनेक प्रतिबंध होते हैं, विशेषकर भोजन संबंधी। इन में युवक के लिए कुछ विशेष स्वादिष्ट वस्तुएं वर्जित होती हैं। वह विवाह की अवस्था तक इन वस्तुओं का संकलन करता रहता

किसी प्रौढ़ व्यक्ति को बिना स्पष्ट कि इन्हें सौंप देता है। बदले में वह अपनी कन्या देता है और विधिवत सयाने की उपस्थिति में विवाह संपन्न हो जाता है। विवाह के पश्चात् उस वर्ग की स्त्रियां उस की सास बन जाती हैं और पुरा समुर बन जाते हैं।

इन लोगों की एक परंपरा यह है कि एक कबीले के लोग अचानक दूसरे कबीले के पास पहुंच जाते हैं। इस में स्त्रियां समूह में आगे होती हैं तो दूसरे कबीले के सदस्य इसे 'मिलन का उद्देश्य' समझते हैं और आने वाले लोगों की अगवानी के लिए पहुंच जाते हैं। जब तक दूसरे कबीले के सदस्य उन की अगवानी के लिए नहीं पहुंचते, वे दूर बैठे उन की प्रतीक्षा करते रहते हैं। जब समूह में स्त्रियों की बजाए पुरुष आगे होते हैं तो इसे 'वैमनस्य की भावना' समझा जाता है। ऐसी अवस्था में दोनों कबीलों में जग कर लड़ाई होती है। परंतु जब किसी तरफ से कोई व्यक्ति दोएक शस्त्र फेंक देता है तो लड़ाई रुक जाती है और वैरभाव समाप्त हो जाता है।

रुग्ण परिचर्या तथा मृत्यु संस्कार

प्रत्येक रोग में किसी प्रेतात्मा का प्रभाव समझा जाता है। सयाने लोग ही जादूटोने से बीमार व्यक्ति की चिकित्सा करते हैं। बीमार की निकटतम संबंधी स्त्रियां शोक प्रकट करने के लिए अपनी जांघों पर लकड़ी की मोटीमोटी नोकीली छड़ें मारमार कर विलाप करती हैं। इस प्रक्रिया में उन के शरीर पर इतने गहरे घाव हो जाते हैं कि उन्हें चलना दुभर हो जाता है।

मृत्यु संस्कार में भी जटिल प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं। ये लोग स्वाभाविक मृत्यु में विश्वास न रख कर उसे किसी भूतप्रेत का प्रभाव समझते हैं। यद्यपि दक्षिणी आस्ट्रेलिया में साधारण रूप से दफनाया ही जाता है परन्तु उत्तरी एवं मध्य आस्ट्रेलिया के निवासी विभिन्न

तरीकों से अंतिम संस्कार करते हैं। कुछ लोग शव को खुला छोड़ देते हैं और कुछ वृक्ष पर एक मंच बना कर उस पर रख देते हैं।

जब किसी व्यक्ति की अचानक मृत्यु हो जाती है तो उसे एक वृक्ष पर टहनियों तथा लकड़ियों से बने चबूतरे पर लिटा दिया जाता है। उस के परिवार के सदस्य उस समय तक नोकीली मोटी लकड़ियों से स्वयं अथवा एकदूसरे को मारतेपीटते, चिल्लातेबिलखते रहते हैं, जब तक उन के शरीर पर अनेक जगहों पर रक्त की धारें न बहने लगें। मृत्यु के

दरिद्रता

उस मनुष्य से अधिक दरिद्र कोई नहीं है, जिस के पास केवल पैसा है।

—एडविन पग

तीन दिन पश्चात् परिवार के सदस्य सयाने की सहायता से शव के समीप किसी जीव की खोज करते हैं जिस से दुष्टात्मा का पता लग सके। यदि उन्हें कोई जीव मिल जाता है तो उस के आधार पर शकुन विचारते हैं और उसे उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण जान कर कड़ी यातना देते हैं। परन्तु जब शव के पास इस प्रकार का जीव नहीं मिलता, उसे खुला छोड़ आते हैं।

एक वर्ष के पश्चात् ये लोग पुनः शव के पास जाते हैं जो हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया होता है। मृतक की आज्ञा ले कर ये उस ढांचे को नीचे उतारते हैं। तब सब से छोटा व्यक्ति पत्थर की कुल्हाड़ी से शव की बांह की हड्डी को छोड़ कर सब हड्डियां तोड़ देता है जो एकत्रित कर के चींटियों द्वारा बनाए मिट्टी के ढेर में दबा दी जाती हैं। बांह की हड्डी कबीले के वृद्ध पुरुष

के हाथ में रह जाती है। वह उसे रेशम की डोरी से वृक्ष की छाल में लपेटता है और उसे एक सिरे पर पक्षियों के पंखों से सजा कर एक बड़े पेड़ के खोखले स्थान में रख देता है। अन्य लोग दिन भर के लिए शिकार की तलाश में निकल जाते हैं जिस से मृतक की आत्मा की शांति के लिए भोज के लिए मांस एकत्र कर सकें।

यह सारा कार्य संपन्न होने के पश्चात् एक व्यक्ति पुनः उस हड्डी को पत्तों से ढक कर निकाल लेता है। दूसरे व्यक्ति के पास मांस होता है और तीसरा व्यक्ति केवल पत्तियां लिए खड़ा रहता है। तब समूह की दोतीन बार परिक्रमा की जाती है और हड्डी एक बैठे हुए व्यक्ति को दे दी जाती है।

अब स्त्रियां संकेत पर नीचे बैठ कर जोरजोर से विलाप करने लगती हैं और पुरुष मृतक की पवित्र स्मृति में नतमस्तक हो जाते हैं। कुछ समय के पश्चात् यह हड्डी एक वृद्ध महिला को दे दी जाती है। कुछ स्त्रियां सांप पकाने लगती हैं और कम उमर की लड़कियां पुनः मारपीट कर विलाप करने लगती हैं। फिर भोज होता है। अंत में मृतक का भाई वृद्ध महिला से हड्डी छीन लेता है और कुल्हाड़ी लिए हुए एक अन्य व्यक्ति के सम्मुख कर देता है जो उस पर प्रहार कर के उसे चूरचूर कर देता है।

अब एक स्थान पर सर्प की आकृति बनाई जाती है। उस के समीप सयाने लोग अपनी पीठ पर सांपों की आकृति बनाए एक विशेष अवस्था में दोनों पैर फैला कर पंक्तिबद्ध खड़े हो जाते हैं। स्त्रियां उन की टांगों के नीचे से सरकती हुई सर्पकृति चिह्नित स्थान तक जाती हैं। उन में से अंतिम स्त्री अपने साथ टूटी हुई हड्डी ले कर उसे उस स्थान पर बने गड्ढे में गाड़ देती है और मृतक के विपरीत योनि में जन्म लेने की कामना करते हुए अंतिम संस्कार संपन्न हो जाता है।

80 लाख खिलाड़ियों

केंद्रीय शिक्षा उपमंत्री अरविंद नेतम ने संसद में के. पी. सिंह के एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि सरकार ने देश के 80 लाख युवक-युवतियों को खेलकूद के प्रति आकर्षित करने की एक विशाल योजना तैयार की है. एक साथ करोड़ लोगों को खिलाड़ी बनाने की तुल्य योजना किसी और देश में देखने को नहीं मिल सकती.

इस योजना के अंतर्गत कितना खर्च होगा, इस पर सरकार अभी विचार कर रही है. यदि एक साल में प्रति खिलाड़ी 100 रुपए भी खर्च किए जाएं तो यह राशि 80 करोड़ रुपए हो जाएगी जब कि अभी सरकार केवल 3 करोड़ रुपए ही प्रति साल खर्च कर रही है. लगता नहीं कि वर्तमान स्रोतों से इतनी राशि मुहैया की जा सकेगी. फिर 100 रुपए में होता ही क्या है? लगता है, सरकारी योजना बनाने वाले खामखयाली के शिकार हो गए हैं या फिर उन्होंने यह योजना महज प्रचार के लिए बनाई है.

योजना का खाका संसद की मेज पर रखते हुए सरकार ने कहा है कि इस में नए स्टेडियम बनवाए जाएंगे और अधिक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी. खेल जगत की सब से बड़ी समस्या उपकरणों की कमी, युवावर्ग में खेलों के प्रति उदासीनता और निष्पक्ष चुनावों का अभाव है. इन सब के विषय में सरकार ने कुछ नहीं कहा.

सरकार का खेल संघों पर नियंत्रण नहीं है. सरकार खेलों का विकास, खिलाड़ियों का चयन और प्रतियोगिताओं

का आयोजन इच्छानुसार नहीं कर है. खेल संघ स्वायत्तशासी और स्वतंत्र ऐसी स्थिति में 80 करोड़ रुपए की महंगी जिम्मेदारी अपने सिर ओढ़ने क्या तुक है? इस के बदले सरकार चाहिए कि खेल के सामानों, जिन्हें निहायत कमी है, के आयात को बढ़ावा देना और खिलाड़ियों को बाहर जाने में विदेशी मुद्रा के कारण बाधा बर दिक्कत आती है, उस के निवारण के लिए अपेक्षित नीति की घोषणा करे.

भारत में ग्रैंड प्रिक्स

अखिल भारतीय लान टेनिस संघ सरकार से तीसरे ग्रैंड प्रिक्स के लिए 80 लाख रुपए की विदेशी मुद्रा की मांग है. यह ग्रैंड प्रिक्स जून में कलकत्ता में होगा. पहला ग्रैंड प्रिक्स दिल्ली में दूसरा बंबई में हुआ था.

संघ भारत में फोरेस्ट हिल विबलडन के स्तर की एक अंतर्राष्ट्रीय टेनिस प्रतियोगिता स्थापित चाहता है. यदि इस से भारतीय खिलाड़ियों को लाभ नहीं होता है तो हमें महंगे शौक को पालना जायज है?

इस से भारतीय खिलाड़ियों को लाभ हो सकते हैं. अधिक संख्या में टेनिस खिलाड़ी भाग लेने आएंगे और उन के साथ भारतीय खिलाड़ियों को खेलने का मौका मिलेगा. पिछले दो ग्रैंड प्रिक्स आयोजनों में हमें पता हो गया था कि दुनिया के खिलाड़ियों को बहुत महत्त्व नहीं देते. तो इन दिनों वे वर्ल्ड टेनिस संघ

जुलाई (प्रथम)

का उत्पादन

अपने अन्य अनुबंधों में व्यस्त रहते हैं और दूसरे वे नहीं समझते कि इस में भाग लेना उन की प्रतिष्ठा के अनुकूल है। दिल्ली में केवल पांच और बंबई में तीन ही ऐसे खिलाड़ियों ने भाग लिया था जो विश्व टेनिस में कोई स्थान रखते हैं। इस बार के विश्व कार्यक्रम को देखते हुए भी लगता है कि अधिकांश खिलाड़ी नहीं आ पाएंगे। अतः भारतीय खिलाड़ियों के अनुभव प्राप्त करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरे, भारत में टेनिस अभी भी क्लबों तक ही सीमित है। यहां इतने खिलाड़ी नहीं मिल पाते कि स्थानीय या राज्य स्तर की हर एक प्रतियोगिता में सम्मानजनक ड्रा निकाला जा सके। जो खिलाड़ी हैं भी वे गेंदों ओर मंदानों की कमी की शिकायत करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में और खिलाड़ी तैयार करने की बात भी खत्म हो जाती है। बात सिर्फ इतनी सी है कि लान टेनिस संघ के सचिव राजकुमार खन्ना बहुत महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं और लान टेनिस के अंतर्राष्ट्रीय नक्शे पर अपनी चौधराहट बरकरार रखने के लिए वह कुछ भव्य तमाशा करते रहना चाहते हैं, वह चाहे दक्षिणी अफ्रीका को संघ से बहिष्कृत कराने का हो या भारत में ग्रैंड प्रिक्स आयोजित कराने का।

खेलों की राजनीति

अभी हाल ही में दिल्ली में एक अमरीकन फिल्म चल रही थी 'द गेम्स'। ओलंपिक खेलों की तैयारी को दर्शाने वाली इस प्रभावशाली फिल्म में पेशेवर मुक्ता

और गैर पेशेवर तथा किसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने के उद्देश्य के संबंध में महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं।

आधुनिक ओलंपिक खेलों के संस्थापक कुबरटीन ने 1896 में कहा था कि इन खेलों में हारजीत नहीं, भाग लेना महत्त्वपूर्ण है। यह बात हर ओलंपिक खेलों से पूर्व दोहराई जाती है। फिल्म में वह दृश्य बड़ा व्यंग्यपूर्ण है जब एक ओर इटली के राज्याध्यक्ष रोम ओलंपिक के उद्घाटन के समय यह घोषणा कर रहे थे, तथा दूसरी तरफ हजारों खिलाड़ियों में से एक खिलाड़ी का प्रशिक्षक उस के कान में कह रहा है कि इस राज्याध्यक्ष की बात पर मत जाना, यह बात तुम्हारे लिए नहीं है। तुम तो सिर्फ एक बात का ध्यान रखना कि तुम्हें जीतना है। सही भी है, सालों की तैयारी के बाद, ऐसी तैयारी के बाद, जिस में आप अपना घरबार, अपना प्रेग और अपनी निजी जिंदगी सब छोड़ देते हैं, केवल भाग लेने की इच्छा से कैसे संतुष्ट हो सकते हैं? जब तक जीत जैसा महत्त्वपूर्ण लक्ष्य सामने नहीं होगा तब तक कोई खिलाड़ी अपने प्रशिक्षण के प्रति ईमानदार कैसे हो सकता है? क्या उस हालत में मुकाबला रोमांचक होगा?

फिल्म के एक अन्य हिस्से में चैको-स्लोवाकिया के खेल संघ के प्रधान उस देश के एक फौजी जनरल के पास आ कर उस से फिर मेरेथन में भाग लेने का आग्रह करते हैं। यह जनरल कभी ओलंपिक चैंपियन रहा था। वह जनरल कहता है, "मुझे दौड़ने से घृणा है, मैं

प्रतियोगिता में भाग लेने से नफरत करता है।" प्रवीण उसे समझाते हैं कि तुम्हें ओलंपिक की जीत अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जीत के समान मानी जाती है, अतः अपने देश की प्रतिष्ठा के लिए तुम्हें दौड़ना होगा और फिर भी नहीं मानोगे तो सुनो, यह फौजी हुक्म है।"

इसी तरह आस्ट्रेलिया के कुछ गोरे लोग वहाँ के एक मूल निवासी काले लड़के को घोड़े की तरह पालते हैं। वे उसे स्थानीय दौड़ों में दौड़ाते और उस पर शर्त लगा कर जुआ खेला करते थे।

उन्हें ओलंपिक के बारे में पता लगता है। वे उस लड़के की भी प्रविष्टि भिजवा देते हैं। इस लड़के को कुछ पता नहीं कि वह कहाँ और क्यों जा रहा है। वहाँ उसे कुछ अफ्रीकी जातिवादी मिलते हैं, जो साम, दाम, दंड और विभेद, यानी

हर तरह से उसे इस बात से प्रभावित करते हैं कि तुम्हें जाति वालों के लिए नहीं दौड़ना है, उन का आंकड़े दे कर समझाना हास्यास्पद लगता है। लड़के को कुछ में नहीं आता और वह दौड़ता है जीत जाता है।

फिल्म में सफलतापूर्वक यह स्थापित किया गया है कि खेलों में जीत सब ज्यादा महत्वपूर्ण है। हर देश तथा खिलाड़ी इसी उद्देश्य से भाग लेता है इस के विपरीत तर्क देना बेईमान है और इसी जीत को अंतर्राष्ट्रीय मान के मानदंड से आंका जाता है।

फिल्म के अंदर और सिनेमा के भी अंदर भारतीय चेहरे नहीं बराबर दिखाई दिए। उन की दिलचस्प शायद खेलों से ज्यादा खेलों की नीति में है।

बीरबल की सूफबूझ



सफ़र और बीरबल के मजेदार हास्यव्यंग्य और चुटकुलों से परिपूर्ण यह संग्रह बड़ी मेहनत से तैयार किया गया है। बीरबल की हाजिरजवाबी और सूफबूझ तो संकड़ों वर्षों से विख्यात है ही। यदि एक बार पुस्तक पढ़ना आरंभ कर दें तो उसे पूरी समाप्त किए बिना आप रह नहीं सकते।

प्राज ही मगा कर पढ़िए और भरपूर आनंद उठाइए।

मूल्य : 4.00 रुपए (ढाक खर्च अतिरिक्त)

दिल्ली बुक कंपनी

एम/12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

जा मैं ऐसी जानती...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and Gangotri



जो मैं ऐसी जानती, वोट दिए दुख होय,
नगर ढिंढोरा पीटती, वोट न दीजो कोय.



हैं और भी दुनिया में चुगलखोर बहुत अच्छे,
कहते हैं कि भुट्टो का है अंदाजे बयां और.



वो आए घर हमारे, हमें भी हैरत है,
कभी हम उन को, तो कभी जेबों को देखते हैं.



नेता ने ऐसी करी, जो कोय न कराय,
वोट लियो और खिसक गयो, फेर मूंडा नहीं दिखाए.



जाको राखें नेताजी, मार सके ना कोय,
बाल न बांका कर सके, चाहे 'मीसा' होय.

—शंलेंदर

से बनने वाले क्षेत्र से लगभग ढाई करोड़ मील ऊपर और नीचे तक मंगल और बृहस्पति के बीच 18 करोड़ मील चौड़ी पट्टी में सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इस पट्टी को 'लघु ग्रह पेटी' कहा जाता है। लघु ग्रहों ('ऐस्टीरायड' शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'तारे की तरह का,' जैसा कि इस समय माना जाता है) का आकार 429 मील और मुश्किल से 0.5 मील के बीच होता है, जैसा कि अब तक की खोज में प्राप्त विशालतम लघु ग्रह 'सेरेस' के साथ है। 0.5 मील व्यास के पिंड बहुत छोटे होते हैं। इन के अतिरिक्त अन्य भी असंख्य छोटेछोटे पिंड रेत के कण के आकार के हैं। अंतर्ग्रहीय जांच यात्राओं और अंतरिक्ष यानों अर्थात् बृहस्पति को जाने वाले 'वाहरी ग्रहों' को लघु ग्रह पेटी के बीच में से अपना मार्ग बनाने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा ही नहीं है, क्योंकि वह पेटी इतनी मोटी है कि न तो उस के ऊपर से उड़ कर जाना संभव है और न उस के नीचे से ही। पायनियर-10 (पायनियर-एफ) मानव रहित अंतरिक्ष यान, जिस ने 2 मार्च, 1972 को बृहस्पति की ओर प्रयाण किया था, घनत्व, लघु ग्रहों की संख्या और उन की गति इत्यादि

सौरमंडल

का

मलबा

संबंधी विवरण प्राप्त करेगा।

लघु ग्रहों की उत्पत्ति के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं है। एक अनुमान यह है कि लघु ग्रह 'गैस' आदिकालीन 'मेघ' के जमने से बने हैं। सूर्य तथा ग्रहों की रचना भी इसी प्रकार हुई है। कुछ वैज्ञानिकों की राय है कि लघु ग्रह सौरमंडल का मलबा हैं अर्थात् किसी छोटे ग्रह के अवशेष जो किसी आकाश पिंड से टकरा कर टूटफूट गया।

अभी तक लगभग 2,000 लघु ग्रहों के परिक्रमा पथ का पता लग सका है। पर वे असंख्य प्रतीत होते हैं। उन में से कुछ के परिक्रमा पथ मुख्य लघु ग्रहों से पृथक हो गए हैं। और इकारस, हमीन, अपोलो और एडोनिस इत्यादि में से कुछ पृथ्वी के अत्यंत निकट हैं, जिन्हें 'पृथ्वी चरने वाले' कहा जाता है। कुछ लघु ग्रह गोल या अंडाकार भी नहीं हैं। वे लंबे और उन के सिरे अत्यंत तीखे हैं। मंगल के तथाकथित उपग्रह, अर्थात् फोबोस और डीमोस इतने छोटे और अनियमित आकार के हैं कि ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस ग्रह ने लघु ग्रहों को पकड़ लिया है। इसी प्रकार बृहस्पति 7 और 13 नंबर के उपग्रह भी लगभग निश्चय ही लघु ग्रह हैं, जो किसी प्रकार इस विशाल ग्रह के निकट आ गए थे।

ग्रहउपग्रहों की आपसी

उलभन को वैज्ञानिकों

ने जितना सुलभाना

चाहा, वे उतने ही

उलभते चले गए...

पकड़ लिए गए.

महान खगोलशास्त्री जान कैपलर (1571-1630) ने, जिस ने ग्रहों की गति के बारे में नियम बनाए, यह पाया कि मंगल और बृहस्पति के परिक्रमा पथों के बीच 35 करोड़ मील का अंतर है जो कि बहुत अधिक है, और प्रकृति में अक्सर ऐसा नहीं पाया जाता. इसलिए उन्होंने साहसपूर्वक यह घोषणा की : 'मंगल और बृहस्पति के बीच मैं एक ग्रह रख देता हूँ.' जर्मन खगोलशास्त्री जे. ई. बोडे एक रोचक और अंकों पर आधारित संबंध के द्वारा, जिस का पता वस्तुतः एक अन्य जर्मन खगोलशास्त्री विट्टेनवर्ग के जान टिटियस ने कुछ वर्ष पूर्व लगाया था, खोए हुए ग्रह की समस्या को प्रकाश में लाए. बोडे के नियम के नाम से ज्ञात इस की संलग्न तालिका में व्याख्या की गई है.

0, 3, 6, 12, 24, 48, 96, 192—
इन संख्याओं को लें. दूसरी संख्या को छोड़ कर प्रत्येक संख्या पहले वाली की दोगुनी है. इन में से प्रत्येक संख्या में उस ने 4 जोड़ा और परिणाम को 10 से विभाजित किया. भजनफल खगोलशास्त्रीय इकाइयों में अभिव्यक्त सूर्य से ग्रहों की औसत दूरी से बहुत अधिक मेल खाता था. खगोलशास्त्रीय इकाई सूर्य से पृथ्वी की औसत

दूरी के बराबर है, अर्थात् 93,003,000 मील. अगर आप सूर्य से पृथ्वी की दूरी 1.0 (संलग्न तालिका देखिए) मानते हैं तो इस तालिका में उल्लिखित संख्याओं से खगोलशास्त्रीय इकाइयों में शेष ग्रहों की दूरी का बिलकुल ठीक ठीक ज्ञान हो जाता है. अगर बोडे के नियम को ध्यान में रखते हुए आप इस तालिका पर दृष्टिपात करें तो पाएंगे कि सूर्य से 2.8 खगोलशास्त्रीय इकाई अर्थात् 26 करोड़ मील की दूरी पर एक ग्रह होना चाहिए.

(जब बोडे का नियम बनाया गया था उस समय तक नेपच्यून और प्लूटो का पता नहीं चला था.)

बोडे के नियम से खगोलशास्त्रियों को मंगल और बृहस्पति के बीच 'खोया हुआ ग्रह' खोजने की प्रेरणा मिली. छः जर्मन खगोलशास्त्री लिलियथेल के छोटे से नगर में एकत्र हुए. उन के अध्यक्ष थ्रोटर थे और सचिव बैरन वान त्साख. उन्होंने एक्लिप्टिक (एक्लिप्टिक एक वर्ष में तारों के बीच से हो कर सूर्य के मार्ग का नाम है) का अध्ययन करने की योजना बनाई. उन में से प्रत्येक को उस के एक भाग का अध्ययन करना था. इन खगोलशास्त्रियों का नाम 'आकाश पुलिस' रखा गया था.

मुक्ता

इस से पूर्व कि ये खगोलशास्त्री काम करना आरंभ करते, सिसली स्थित पालेर्मों की खगोलशास्त्रीय वेधशाला के निदेशक फादर गीसेपे पियाजी द्वारा मात्र संयोग से 'खोया हुआ ग्रह' खोज लिया गया। पियाजी वस्तुतः तारों की एक सूची तैयार कर रहे थे। 1 जनवरी, 1801 की रात में उन्होंने तारे की तरह की कोई चीज देखी, जिस की गति एक विशेष प्रकार की थी। उस के चारों ओर के तारे आकाश में एक नियत स्थान पर स्थित थे, जब कि वह वस्तु स्पष्ट रूप से गतिशील थी। उन्होंने पहले सोचा कि वह एक बिना पूंछ का पुच्छल तारा है, लेकिन बाद की रातों में उन के बारबार के निरीक्षण से यह सिद्ध हो गया कि वह एक गतिशील आकाशपिंड था, पुच्छलतारा नहीं।

वर्ष के अंत में, 31 दिसंबर, 1801 को, महान जर्मन गणित भौतिकीशास्त्री गौस ने उसे फिर देखा और सिसली की आश्रयदात्री देवी के नाम पर उस का नाम सेरेस रखा गया। उस की औसत दूरी बोडे के नियम के अनुसार अनुमित दूरी से लगभग पूरी तरह मेल खाती थी। लेकिन खेद की बात कि सेरेस का व्यास केवल 429 मील था और इसलिए उसे सौरमंडल के प्रमुख ग्रहों के साथ कदापि नहीं रखा जा सकता था। यदि सेरेस के बाद अन्य छोटेछोटे ग्रहों का पता न चला होता तो उसे सौरमंडल में सब से छोटा ग्रह होने का श्रेय प्राप्त हो जाता। इस समय यह श्रेय बुध को प्राप्त है। चाहे कुछ भी हो, 1 जनवरी, 1801 खगोलशास्त्र के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण तारीख है, क्योंकि इसी तारीख को प्रथम लघु ग्रह का पता चला था।

'आकाश पुलिस' को यद्यपि पहले पता लगाने का श्रेय नहीं मिल पाया फिर भी उस ने अपने प्रयास जारी रखे और उन में से एक एच. ओल्बर्स ने, सेरेस को ढूँढ़ते समय, मार्च, 1802 में एक दूसरे छोटे से ग्रह का पता पा लिया और उस का

नाम 'पल्लस' रखा। पल्लस का व्यास सेरेस के व्यास के 2/3 के बराबर था अर्थात् केवल 281 मील। तब ओल्बर्स ने एक रोचक बात कही। उन्होंने कहा कि सेरेस और पल्लस दोनों किसी अन्य बड़े ग्रह से बने हैं जिस के साथ कोई दुर्घटना हो गई थी और उस में उस के टुकड़े टुकड़े हो गए थे। इस से इस विचार को बल मिला कि और भी अधिक ग्रह खंडों का अस्तित्व है। 1804 में हार्डिंग द्वारा जूनो (व्यास 150 मील) की खोज की गई और 1807 में ओल्बर्स द्वारा वेस्ता (व्यास 244 मील) की। सेरेस, पल्लस, जूनो और वेस्ता को एक सामान्य नाम दिया गया 'लघु ग्रह' अर्थात् छोटेछोटे ग्रह। और अधिक खोज के बाद भी कोई नए ग्रह नहीं मिले और 1815 में 'आकाश पुलिस' बिघटित कर दी गई।

1815 और 1845 के बीच का समय और अधिक लघु ग्रहों की खोज की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय नहीं है। प्रशिया के एक खगोलशास्त्री (शौकिया) हेंके ने 1845 में एक अन्य लघु ग्रह का पता लगाया, जिस का नाम 'एस्ट्रेइया' रखा गया, और उस का व्यास केवल 112 मील था। हेंके ने दो वर्ष बाद 1847 में और भी अधिक छोटे व्यास (106 मील) के एक अन्य लघु ग्रह हेबे का पता लगाया।

यह आरंभ मात्र था। 1847 में लंदन में हिंद के द्वारा इरिस (व्यास : 94 मील) और फ्लोरा (व्यास : 94 मील) का पता लगाया गया। 1870 तक लगभग 110 लघु ग्रहों का पता लग चुका था और बाद में 1890 तक यह संख्या बढ़ कर 300 हो गई। लघु ग्रहों को अलगअलग नाम देना कठिन हो गया। कुछ खगोलशास्त्री छोटे ग्रहों की इतनी विशाल संख्या देख कर परेशान हो उठे और उन्हें 'आकाश धूलि' कहने लगे। उन के अनुसार अब लघु ग्रहों की संख्याएं ही उन के नाम हो गईं।

इस के बाद एक महान खोज की गई। हाइडेलबर्ग के मैक्स वुल्फ ने लघु ग्रहों की खोज की फोटोग्राफी की प्रणाली का आविष्कार किया। यदि पृथ्वी के घूर्णन

की क्षतिपूर्ति के लिए 'क्लाक वर्क मिकेनिज्म' से युक्त टेलिस्कोप से संवद्ध कमरे को आकाश के किसी भी भाग की ओर घुमाया जाए और फोटोग्राफिक प्लेट पर चित्र लिया जाए तो स्थिर तारों के बीच के 'अज्ञात लघु ग्रह' अपनी गति-शीलता के कारण सफेद रेखा के रूप में दिखाई पड़ेंगे. वुल्फ का तरीका बहुत सफल रहा और उस ने अकेले ही कम से कम एक सौ लघु ग्रहों को खोज लिया. तब लघु ग्रहों की खोज में टेलिस्कोप के द्वारा आकाश को प्रत्यक्ष रूप से देखने का मुश्किल तरीका छोड़ दिया गया और खगोलशास्त्री वुल्फ के तरीके का ही प्रयोग करने लगे. '1965 की लघु ग्रहों की तालिका' में 1651 ऐसे लघु ग्रह गिनाए गए हैं, जिन के नाम संख्याओं में रखे गए हैं और 1520 ऐसे हैं जिन के व्यक्तिवाचक नाम हैं. प्रथम लघु ग्रह की खोज करने वाले फादर गीसेपे पियाजी के सम्मान में खोज किए गए 1,000वें लघु ग्रह का नाम 'पियाजिया' रखा गया.

समीप से परिक्रमा

समस्त लघु ग्रह बिना किसी चिंता के सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं. लेकिन उन में से लगभग छः ऐसे हैं जिन के परिक्रमा पथ दीर्घवृत्ताकार और लंबे हैं तथा वे पृथ्वी के काफी निकट आ

जाते हैं. उन में से तीन पृथ्वी के बहुत निकट आ चुके हैं. वे हैं अपोलो (जिस की 1932 में खोज की गई थी), एडोनिस् (जिस की 1936 में खोज की गई थी) और हर्मीस (जिस की 1937 में खोज की गई थी), लेकिन वे फिर नहीं देखे गए. 1932 में अपोलो पृथ्वी से 20 लाख मील की दूरी से गुजरा था. 1936 में एडोनिस् पृथ्वी से 10 लाख मील पर आ गया था और 30 अक्टूबर, 1937 को हर्मीस (व्यास : 1 मील) पृथ्वी के इतना अधिक निकट (केवल 4,85,000) मील आ गया था कि उस के पृथ्वी पर गिर जाने की आशंका की जाने लगी थी. लेकिन ऐसी कोई दुर्घटना नहीं हुई. तीनों लघु ग्रह, जिन्हें 'पृथ्वी चरने वाले' ग्रह कहा जाता है, फिर कभी नहीं देखे गए. उन के परिक्रमा पथ शायद बदल गए हैं और भविष्य में किसी दिन फिर वे दृष्टिगोचर हो सकते हैं.

हर्मीस नामक लघु ग्रह का परिक्रमा पथ पृथ्वी के परिक्रमा पथ को काटता है और कनिष्ठम ने यह गणना की है कि उस का परिक्रमा पथ इतना छोटा है कि वह पृथ्वी और चंद्रमा के बीच से लगभग 2,20,000 मील (पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी 2,38,840 मील) की दूरी से गुजर सकता है. क्या हर्मीस चंद्रमा पर गिर गया है? यह हमें ज्ञात नहीं.

दूरी तालिका

ग्रह अनुमानित दूरी (बोडे के अनुसार) वास्तविक दूरी दूरी (दस लाख मील में)
खगोलशास्त्रीय इकाइयां खगोलशास्त्रीय इकाइयां

ग्रह	अनुमानित दूरी (बोडे के अनुसार)	वास्तविक दूरी	दूरी (दस लाख मील में)
बुध	0.4	0.39	36
शुक्र	0.7	0.72	67
पृथ्वी	1.0	1.00	93
मंगल	1.6	1.52	141
(खोया हुआ ग्रह) (2.8)		(2.80)	(260)
बृहस्पति	5.2	5.20	483
शनि	10.0	9.54	887
यूरेनस	19.6	19.19	1785

मुक्ता

सात वर्ष पूर्व जून, 1968 में इकारस नामक लघु ग्रह ने सब की डर दी थी। समाचारपत्रों ने यह प्रकाशित कर दिया था कि इकारस पृथ्वी से टकरा जाएगा।

जेट प्रक्षेपण प्रयोगशाला के गोल्ड-स्टोन ट्रैकिंग स्टेशन में आर. एम. गोल्ड-स्टाइन द्वारा रडार की सहायता से इकारस का जो अध्ययन किया गया था, उस से जून, 1968 के मध्य में उस की स्थिति की सम्यक रूप से गणना कर ली गई थी। उस समय वह पृथ्वी से 39,45,000 मील दूर था। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो गया है कि इकारस का व्यास 0.3 और 0.6 कि. मी. के बीच है और अपनी घुरी पर उस का घूर्णन 1.5 और 3.3 घंटों के बीच है। 15 जून, 1968 को रात के 1 बजे इकारस पृथ्वी से सब से अधिक निकट आ गया था और उस के बाद वह अंतरिक्ष में गायब हो गया।

इकारस की 26 जून, 1949 की रात में माउंट विल्सन वेधशाला से संबद्ध जर्मन खगोलशास्त्री वाल्टर बाडे द्वारा खोज की गई थी। उसे अमरीका स्थित पालोमर पर्वत पर लगे 48 इंच के श्मिड दूरदर्शक यंत्र से संबद्ध फोटोग्राफिक प्लेट पर अंकित किया गया था।

कुछ विशेषताएं

वेस्ता नामक लघु ग्रह सब से अधिक चमकीला है। उस की 1807 में खोज की गई थी। उस का व्यास लगभग 244 मील है और वह 3.63 वर्ष में एक बार सूर्य की परिक्रमा कर लेता है। मात्र यही लघु ग्रह केवल आंखों के सहारे देखा जा सकता है। उसे बिना दूरदर्शक यंत्र की सहायता के केवल तभी देखा जा सकता है जब यह ज्ञात रहे कि वह किस दिशा में है। वह एक छोटे से तारे जैसा प्रतीत होता है और तारों के बीच चलता दीख पड़ता है।

इरोज (1898 में खोजे गए) का व्यास केवल 11 मील है और वह 1.76 वर्ष में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है।

उस का परिक्रमा पथ घटताबढ़ता रहता है। उस का छोटा परिक्रमा पथ मंगल अपेक्षा सूर्य के अधिक निकट है और बड़ा परिक्रमा पथ मंगल के परिक्रमा पथ से काफी दूर। इसलिए वह पृथ्वी लगभग एक करोड़ चालीस लाख मील तक निकट आ जाता है। 1975 में उस अपनी निकटतम दूरी तक आ जाएगा। यह विश्वास किया जाता है कि इस पांच घंटे और 16 मिनट में अपना घूर्णन पूरा करने वाला एक लंबा चट्टानी ग्रह है। उस की चमक में बहुत शीघ्रता परिवर्तन होता रहता है। इस का कारण उस का एक विशेष आकार बताया जा रहा है। वह उस समय सब से अधिक चमकीला है जब उस का लंबा भाग पृथ्वी की दिशा में सूर्य की रोशनी को प्रतिबिम्बित करता है। 1931 में पृथ्वी के अत्यंत निकट आ जाने पर भूतपूर्व शाही खगोलशास्त्रज्ञ सर हेराल्ड स्पेंसर जोन्स ने खगोलशास्त्र में इकाई (पृथ्वी और सूर्य के बीच में दूरी) में उस की दूरी की गणना की थी। उस का निष्कर्ष था : 9,30,03,000 मील। उस समय के लिए यह बहुत अधिक सटीक आंकड़ा था।

लघु ग्रह धूलें को लघु ग्रहों के समूह का सब से बाहरी सदस्य माना जाता था, लेकिन मैक्स वुल्फ ने 1908 में अकाइल्स (व्यास: 150 मील) को खोज निकाला जो उसी कक्षा में घूम रहा था जिस में कि बृहस्पति घूमता है। अकाइल्स समूह में अकाइल्स के साथ छः और लघु ग्रह हैं। बाद में अपने चार साथियों के साथ बृहस्पति की कक्षा में घूमते हुए एक अन्य लघु ग्रह पैट्रोक्लस की खोज की गई। लघु ग्रहों के ये दो समूह दृष्टि से लघु ग्रह कहलाते हैं और इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं कि वे बृहस्पति की कक्षा से उस में 60 अंश पहले या बाद में घूमते हैं।

अनेक वर्ष पूर्व प्रसिद्ध फ्रांसीसी खगोलशास्त्री लागरेज ने अपनी विचार प्रतिभा के सहारे यह प्रदर्शित किया कि यदि कोई लघु ग्रह किसी ग्रह की कक्षा

म सूर्य की इस प्रकार पारिक्रमा करता है कि वह लघु ग्रह, कक्षा वाला ग्रह और सूर्य एक दो बराबर अंतर पर स्थित हों तो ग्रह की दृष्टि से उस लघु ग्रह की स्थिति हमेशा समान बनी रहती है।

अभी तक ज्ञात सुदूरतम लघु ग्रह हिडाल्गो है। इस का 1920 में बोडे ने पता लगाया था, जिस की दीर्घ वृत्ताकार कक्षा एक ओर तो मंगल की कक्षा के थोड़ा बाहर पड़ती है और दूसरी ओर शनि की कक्षा के निकट। वह 14 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है और उस की इतनी लंबी कक्षा किसी लघु ग्रह की कक्षा की अपेक्षा पुच्छल तारे की कक्षा से अधिक मिलती जुलती है। माउंट विल्सन के 100 इंच वाले रिफ्लेक्टर से लिए गए चित्र में भी कोई पंछ नहीं नजर आती जो कि पुच्छल तारों की विशेषता होती है।

लघु ग्रह अंतरिक्ष स्थित 'तैरते द्वीप' हैं। वे अंतरिक्ष यात्रा के लिए एक बड़ा खतरा हैं। चंद्रमा पर भेजे जाने वाले अपोलो अंतरिक्ष यानों का छोटी छोटी उल्काओं से तो बचाव कर दिया जाता है, लेकिन लघु

चूंकि कोई भी ज्ञात लघु ग्रह नहीं है कि कोई भी ज्ञात लघु ग्रह नहीं है, लेकिन बृहस्पति या मंगल की अंतरिक्ष यात्रा करते समय लघु ग्रहों का ध्यान रखना ही पड़ेगा।

लघु ग्रहों की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न मत प्रकट किए जाते हैं। पहला ओल्बर का सिद्धांत है, जिस के अनुसार मंगल और बृहस्पति के बीच किसी दृष्टटनावण किसी ग्रह के विखंडन से लघु ग्रहों का निर्माण हुआ था। हालैंड के वान उर्ट के अनुसार किसी ग्रह में विस्फोट (अज्ञात कारण से) हो गया और उस के टुकड़े वृत्ताकार कक्षा में घूमने लगे। ये टुकड़े लघु ग्रह और उल्काओं के समूह बन गए।

जिन टुकड़ों की कक्षा दीर्घवृत्ताकार थी उन्हें बृहस्पति द्वारा खींच लिया गया और सौरमंडल से बाहर कर दिया गया। शेष टुकड़े पुच्छल तारों के बाहरी मेघ बन गए। अंतिम सिद्धांत, जो सब से अधिक मान्य है, यह है कि लघु ग्रह उस समय शेष रह गए कण हैं जब ग्रह बन रहे थे और जो बृहस्पति के विनाशकारी प्रभाव



आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बसट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?

निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है।

मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए

सरिता व भुक्ता में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण लेखों के रिप्रिंट

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेट नं. 2.

ईश्वर, आत्मा और पाप

कितना महंगा धर्म

कितना महंगा धर्म : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर

राम कथा व सीता चरित्र

सताई गई नारी

सरिता और हिंदू समाज

तुलसी साहित्य अनुवादों की सफल नुमाइश के सिवा क्या है?

तुलसी साहित्य : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर

हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?

रावण

रामचरितमानस के अविश्वसनीय प्रसंग

रामचरितमानस के कुछ असंगत स्थल

श्रीकृष्ण

गीता : कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण का आत्मप्रचार

क्या कौमार्य रक्षा दकियानूसी है?

कृष्ण और राधा

श्रीमद्भागवत

भागवत और भूगोल

समाजवाद बनाम स्वतंत्रता

हिंदू विवाह पद्धति

कामायनी

पुत्रेष्टि यज्ञ

तुलसीदास और हिंदू समाज

हिंदी साहित्य का गलत इतिहास

धनुषयज्ञ

कृष्ण और गोपियां

हमारे देव मंदिर

क्या समाजवाद अनिवार्य है?

विवाहपूर्व यौन संबंध

श्रीकृष्ण अपने जीवन की संध्या में

कितना महंगा धर्म (निर्णय)

कृष्ण और कुब्जा

सेट नं. 2 का मूल्य पांच रुपए. मूल्य मनी/पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें. वी. पी. पी. द्वारा भेजना संभव नहीं. अध्यापकों, ग्राम सेवकों, ग्राम पंचायतों के लिए आधा मूल्य.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-1.

का कारण न तो एक पिंड में एक पाए और न घनीभूत हो पाए. यह मान लगाया गया है कि यदि सारे ग्रह एकत्र हो जाएं तो उन का कुल पृथ्वी के पिंड के हजारवें भाग से बड़ा नहीं होगा.

अंतरिक्ष प्लेटफार्म

खगोलशास्त्र में लघु ग्रह क्या भूमिका अदा करते हैं? प्रथम और सर्वप्रथम भूमिका तो यह है कि लघु ग्रहों खगोलशास्त्रियों के बीच सहयोग में लगे हुए हैं. 1898 में जब इरोज नामक खगोलशास्त्रीय इकाई खगोलशास्त्रियों को खगोलशास्त्रीय इकाई प्रथम बार सहीसही ज्ञान हुआ था. सर्वविदित है कि बुध की अपनी कक्षा गति से आइंस्टाइन के सापेक्षता के सिद्धांत का प्रथम व्यावहारिक प्रमाण प्राप्त हुआ. बुध की प्रमुख कीली पूर्व की ओर प्रत्येक 9 मिनट 34 सेकंड की दर से घूम रही है. यह पाया गया है कि बुध ग्रहों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण जितना संभव है उस से यह 43 सेकंड अधिक है. बुध की गति में 43 सेकंड की इस वृद्धि की आइंस्टाइन द्वारा पहले ही घोषणा कर दी गई थी. निरीक्षण द्वारा प्राप्त तथ्यों से पूरी तरह मेल खाती है. वस्तुतः 1949 तक, बुध ग्रह ही एकमात्र ऐसा आकाशपिंड जिसने सापेक्षता के सिद्धांत की व्यावहारिक परीक्षा के लिए अवसर उपलब्ध कराया. इस दृष्टि से कि इकारस की कक्षा बुध की कक्षा से कहीं अधिक परिवर्तनशील है, उस से सापेक्षता के सिद्धांत बुध से भी अधिक अच्छी तरह सिद्ध हो जाना चाहिए. इस विषय पर अध्ययन किया जा रहा है और कुछ वर्षों में उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त होने की आशा है.

कुछ लघु ग्रह अन्य ग्रहों की यात्रा के लिए अंतरिक्ष प्लेटफार्म का काम दे सकते हैं, लेकिन यह संभव होने में अनेक वर्ष लग सकते हैं.

लगा, विजय को पाने की बात
वैसी ही है जैसे समुद्र को हथेली
में भर लेने की चाह...लेकिन
उस ने देखा, विजय खुद ही
उस की ओर बढ़ता आ रहा था.

शब्द और अर्थ

केक कटते ही तालियों की गड़गड़ाहट और 'हैप्पी वर्थ डे...' की ध्वनियों से सारा हाल गूँज उठा था. प्रिया का आज जन्मदिन था. हाल की जगमगाती रोशनियों के बीच सजीसंवरी प्रिया सच-मुच ही किसी रूपसी शहजादी की तरह लग रही थी. कोने में अकेली खड़ी. अपर्णा की आंखें भी इसी स्वप्निल वातावरण में खो सी गई थीं कि प्रिया ने उसे अपनी सखियों के बीच खींच लिया.

"यह है अपर्णा, मेरी कजिन. तीन-चार दिन पहले ही ये लोग यहां आए हैं," उस ने अपर्णा का अपनी सहेलियों से परिचय कराते हुए कहा.

अपनेआप को सब की निगाहों का केंद्रबिंदु पा कर अपर्णा कुछ सकुचा सी गई थी. हलकी सी मुसकराहट के साथ आंखें नीचे कर वह फर्श की ओर देखने लगी. तभी बाहर उस के नाम की पुकार हुई. 'चलो, जान बची,' सोचते हुए वह तेजी से बाहर दौड़ गई. पापा को पानी

कहानी . क्षमा चतुर्वेदी

मुक्ता



का गिलास थमा कर जब वह अंदर आ रही थी तभी हलकी सी गूंज की आवाज सुन कर कदम दरवाजे पर ठिठक गए. प्रिया की सारी सहेलियों ने अब तक प्रिया को घेर लिया था.

“प्रिया, अपर्णा को देख कर तो कोई कह भी नहीं सकता कि यह तुम्हारी कजिन है. सच, कितना फर्क है.”

“और क्या? मैं तो खुद भी आश्चर्य में पड़ गई थी. तुम कश्मीरी लोग तो कितने गोरे होते हो और वह तो बिलकुल ही काली है. उसे देख कर तो कोई यही समझे...”

“कि किसी नीग्रो लड़की का जन्म

बीच अपर्णा के हाथ का कौर हाथ में रक्खे रह गयी. अपर्णा को रोकर वह थोड़ी ही देर में चुपचाप उठ कर खिसक गई थी. रात में मां को अकेली पा कर फूट पड़ी थी :

“मां, अब अपने घर कब चलोगी? मेरा मन नहीं लग रहा है. सब मेरे पीछे हाथ धो कर पड़े हैं. काली अप्पू... बसूत अप्पू... मेरे कान थक गए हैं यह सब सुनते सुनते...”

“नहीं, बेटा, ऐसा नहीं कहते. तेरे भाईबहन ही तो हैं सब. मजाक में कही गई बात को बुरा थोड़े ही माना जाता है. फिर आठदस दिन के लिए ही तो सब

कटूवक्तियों ने अपर्णा का अंतर छलनी कर दिया था और

साथ ही वह तरहतरह की आशंकाओं से घिरी रहती थी...

लेकिन उस दिन उसे लगा कि उस का मन कितना खोलला था.

गलती से कश्मीरी परिवार में हो गया है,” प्रिया ने अपनी सखी का वाक्य पूरा कर दिया था. इस के साथ ही धीमी हंसी की हलकी सी गूंज हुई. अपर्णा का अंदर आ कर सब से मेलमिलाप करने का सारा उत्साह अब तक ठंडा पड़ चुका था. सब लोगों की दृष्टि से अपनेआप को बचाते हुए वह चुपचाप भारी कदमों से बाहर निकल गई.

यहां अपने चाचाजी के पास आए दोचार दिन ही तो उसे हुए थे. पर इन दोचार दिनों में ही उस की तबीयत यहां से भर चुकी थी. शायद यह तीसरा या चौथा मौका था, जब उस के रंग का मजाक उड़ाया गया था. अपर्णा की आंखें भर आईं. उस का रंगरूप एक चर्चा का विषय बन कर रह गया था.

“अप्पू, अब इतना मत खा. काली तो है ही, मोटी भी हो गई तो सुंदरता में चार चांद लग जाएंगे...” कल ही खाना खाते समय चचेरे भाई प्रदीप ने छींटा कस दिया था. सब लोगों की हंसी के

लोगों से मिलने हुआ आए हैं. पूरे दो साल बाद तो तुझे ले कर आई और दो ही दिन में तू ऊब गई...”

आठदस दिन बाद वहां से लौटते समय अपर्णा को लगा था जैसे उसे किसी यातना से छुटकारा मिल गया हो. एक मुक्ति की सांस उस ने ली. दसबारह वर्ष की भोलीभाली अपर्णा को तब क्या पता था कि जिस घर से छूट कर वह इतनी खुशियां मना रही है, साल भर बाद वहीं उसे सदा के लिए जाना पड़ जाएगा. पिता फौज में अफसर थे. युद्ध में ही उन्होंने वीरगति पाई थी. बेचारी मां पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा. अपर्णा और उस से छोटा अजीत—अपने इन दोनों बच्चों को लेकर उन्हें मजबूरत अपने देवर के पास लौटना पड़ा था.

इस भारी सदमे ने अपर्णा के किशोर मन को भी कम आघात नहीं पहुंचाया था. बचपन की सारी चंचलताओं को छोड़ कर अब वह समय से पहले ही समझदार बन चुकी थी. जहां पहले हलकी सी छेड़ भी उसे बुरी तरह खिजा

जाती थी, वहीं अब भारी व्यंग्य भरी बातें भी वह बिना किसी प्रतिकार के चुपचाप सुन लेती थी। जानती थी कि अब वे लोग यहां आश्रित हैं, शिकायत करने के उस के सारे अधिकार छिन चुके हैं। अपने मन को सारी बाहरी वस्तुओं से हटा कर एक ही ओर उस ने लगा दिया था और वह थी पढ़ाई। जब सारा घर हास्यविनोद में डूबा होता, वह चुपचाप अपनी पुस्तकों में खोई होती।

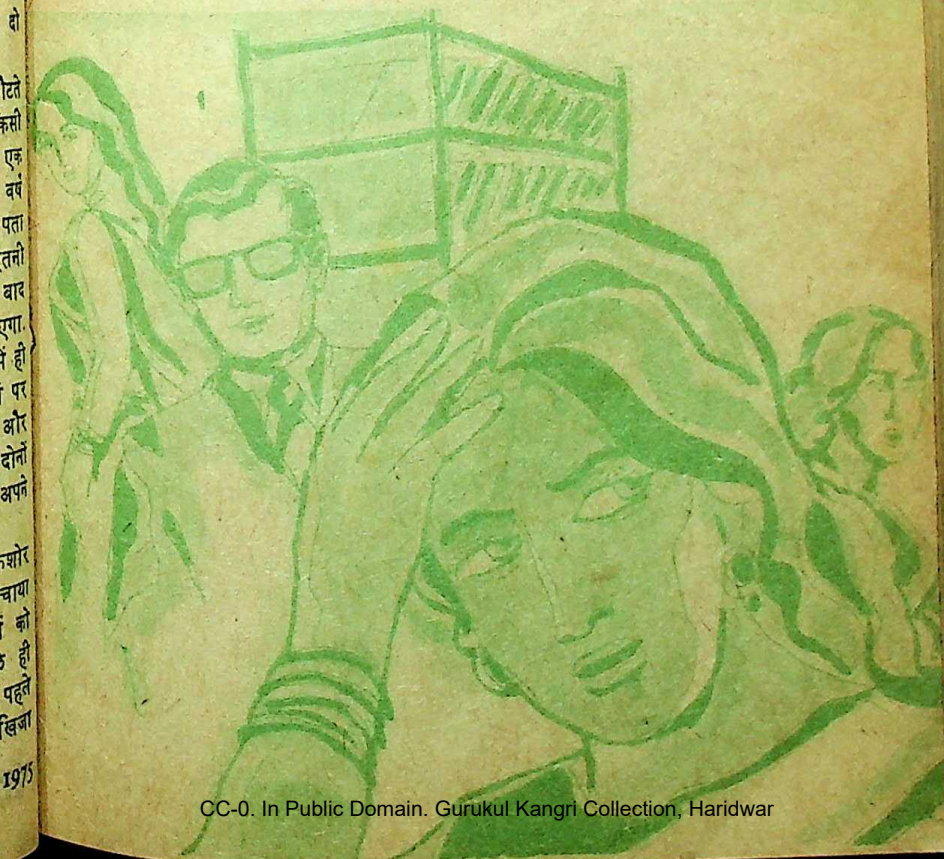
फिर भी तरहतरह के ताने मौके-बेमौके सुनने को मिल ही जाते थे। पड़ोस में सुलभा आंटी की लड़की की शादी थी। सब लोग जब वहां से लौटे तो अनायास ही विवाह का जिक्र छिड़ गया। अपनी बेटी प्रिया की सुंदरता पर चाची को बड़ा गर्व था। इसलिए अपर्णा को लक्ष्य करते हुए उस की मां से वह कहने से नहीं चूकी थी :

“भाभी, आजकल अच्छीभली लड़कियों के विवाह में सैकड़ों उसझनें आती हैं, फिर अपर्णा की शादी कैसे हो पाएगी,

यही मैं सोचती हूं। मेरे खयाल से तो अपर्णा की शादी के लिए आए हुए लड़के को पहले प्रिया को दिखा देंगे, फिर बाद में उस की जगह अपर्णा को बिठा देंगे। यही एक इस समस्या का हल हो सकता है।”

प्रिया की गर्वभरी दृष्टि फिर अपर्णा के अंदर बेघती हुई सी चली गई थी। चाची के ये शब्द बहुत दिनों तक उस के कानों में गूंजते रहे। वैसे जानेअनजाने यह बात कि उस की शादी में अनेकों दिक्कतें आ सकती हैं, वह सुन चुकी थी पर अपने ही मुंह पर ऐसी कटूवृत्ति सुनने का यह पहला ही मौका था। धीरेधीरे इन सब बातों को सुनतेसुनते उसे शादी के नाम से ही चिढ़ सी होने लगी।

स्कूल में प्रवेश के फार्म भरे जा रहे थे। अपर्णा की जिद थी कि वह दिज्ञान लेगी और आगे चल कर डाक्टर बनेगी। “अरे अप्पू, डाक्टर बन कर क्या करेगी? तेरी शक्ल से डर कर तो बेचारे मरीज समय से पहले ही अपना दम तोड़ देंगे।”



चाचाजी ने यह बात शायद विद्युद्ध मजाक में ही कही हो, परगमन के अन्तर्गत ही भीतर रो उठा था। उसे ऐसा लगा था कि सारे लोगों के बीच वह मात्र एक उपहास की पात्र बन कर रह गई है। बारबार के उम के आग्रह को देखते हुए चाचाजी ने उसे विज्ञान लेने की इजाजत दी थी, और अपर्णा ने एक हलकी सी राहत महसूस की थी।

अध्ययन की गहन लगन ने उसे शीघ्र ही एक मेधावी छात्रा के रूप में बदल डाला। अब वह अपने विद्यालय की सर्वोत्तम अंक पाने वाली छात्रा थी। विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण होने से उसे मेडिकल कालिज में भी बड़ी आसानी से प्रवेश मिल गया था। कुछ ही समय बाद वह कालिज की शालीन और गंभीर लड़कियों की श्रेणी में आ गई। मेडिकल कालिज में जहां लड़के लड़कियों की मित्रता एक सामान्य सी बात थी, वहां उस का सब से दूर अपनी पुस्तकों में लीन रहना असाधारण समझा जाता था। जब सब सहपाठी खाली समय में गपशप, हास्य विनोद में मग्न रहते, अपर्णा अकेली लाइब्रेरी की अपनी दुनिया में खोई होती।

वर वाले भी उस की इस प्रतिभा को देख कर चकित थे। चाची अप्रसन्न हो उठी थीं क्योंकि हमउम्र होने के कारण प्रिया और अपर्णा की हर एक बात में वह होड़ रखती थीं। और प्रिया हर मामले में बाजी मार ले जाती थी। किंतु पढ़ाई ही एक ऐसा क्षेत्र था जहां उन की बेटी पिछड़ गई थी। साथसाथ पढ़ने वाली इन दोनों लड़कियों में जहां अपर्णा अब मेडिकल कालिज में अंतिम वर्ष में थी, वहीं प्रिया लाख कोशिश के बावजूद बी. ए. उत्तीर्ण नहीं हो पाई थी।

कालिज से थकीमांदी लौट कर अपर्णा जब किताबें रख कर चाय की मेज पर पहुंची तो पाया कि सब लोग किसी गंभीर चर्चा में लगे हुए हैं। डा. विजय का नाम सुनते ही वह चौंक पड़ी। हां, डा.

विजय माही का नाम बारबार आ रहा था तो क्या ये लोग डा. विजय को जानते हैं? कुछ ही देर में फिर सारी बात स्पष्ट हो गई थी। कुछ दिन पहले किसी पार्टी में चाचाजी की डा. विजय से मुलाकात हुई थी। उन के व्यक्तित्व से चाचाजी काफी प्रभावित हुए थे। चाचाजी और चाची, दोनों ही अब प्रिया का संबंध डा. विजय से करने के इच्छुक थे। इतने अच्छे लड़के को वे किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहते थे। इसी लिए शाम को डा. विजय को आमंत्रित किया गया था, जिस से कि वह प्रिया को देख सकें और बात आगे बढ़ाई जा सके।

डा. विजय ! अपर्णा के पूरे शरीर में सिहरन सी दौड़ गई। विजय का चेहरा उस के सामने घूम गया। डा. विजय कुछ ही महीने पहले विदेश से एम. डी. की डिग्री ले कर लौटे थे। यहीं मेडिकल कालिज में उन की नियुक्ति हुई थी। सप्ताह में दो बार वह अपर्णा की क्लास भी लेते थे। कुछ ही दिनों बाद डा. विजय एक दिन अपर्णा के पिछले सारे टेस्टों के नंबर देख कर बड़े प्रभावित हुए थे। क्लास में ही उस की काफी प्रशंसा की थी, "मिस अपर्णा, अगर आप इसी लगन से कार्य करती रहें तो आगे चल कर चिकित्सा क्षेत्र में बहुत कुछ कर सकती हैं."

इस तरह भरी क्लास में अपनी तारीफ सुनना अपर्णा को अजीब सा लगा। संकोच-वश वह नीचे देखने लगी थी। पढ़ाने वाले सभी लोग उस की योग्यता के प्रशंसक थे, इस बात से वह स्वयं भी अनभिज्ञ नहीं थी। पर न जाने क्यों डा. विजय के मुंह से अपनी उपस्थिति में प्रशंसा के ये शब्द सुनने में उसे झिझक सी लग रही थी।

इस के बाद कई बार उसे लगा था कि डा. विजय की आंखें पढ़ातेपढ़ाते उस के चेहरे पर गड़ जाती हैं। अचकचा कर वह दूसरी ओर देखने लगती। उस दिन लाइब्रेरी में वह अकेली ही पुस्तकों से घिरी बैठी थी कि डा. विजय की

आवाज ने उसे चौंका दिया था।

“अरे, अपर्णाजी आप अब तक घर नहीं गई क्या? आज तो क्लास नहीं होगी। सभी छात्र कभी के जा चुके हैं।” अपर्णा कुछ जवाब दे, इस के पहले ही लाइब्रेरियन ने उत्तर दे दिया था :

“यह तो लाइब्रेरी में नियमित रूप से आती हैं। खाली समय में यहीं बैठ कर अध्ययन करती हैं।”

“ओह! बहुत अच्छा!” कहते हुए डा. विजय अपनी पुस्तक ले कर चले गए थे। इस घटना के बाद उन की निगाहों में अपर्णा का सम्मान कुछ और बढ़ गया था। इस के बाद अकसर लाइब्रेरी में अपर्णा की डा. विजय से मुलाकात हो जाती थी। कभीकभार पढ़ाई के विषय में वह उस से थोड़ीबहुत बात कर लिया करते थे। अपर्णा को लगने लगा था कि उस की भी आंखें लाइब्रेरी में आते ही डा. विजय को ढूंढने लगती हैं। उन की उपस्थिति उसे एक राहत सी दे जाती है। यह उसे क्या होता जा रहा है, वह समझ नहीं पाती थी। अपनेआप को विजय के खयालों से दूर रखने का वह जी तोड़ प्रयास करती थी। उसे इन सब बातों से क्या लेनादेना है? उस का क्षेत्र तो बहुत अलग है। क्या इतने दिनों की कठोर साधना निष्फल हो जाएगी? किसी तरह अपने मन को कड़ा कर के वह पढ़ाई में जुट जाती थी।

एक दिन अपर्णा लाइब्रेरी में किसी

किताब को ढूंढने में व्यस्त थी कि डा. विजय पास आ कर पूछने लगे थे, अपर्णाजी, क्या आप एडवोकेट पी. सी. कौल की पुत्री हैं?”

“जी नहीं, उन की भतीजी हूं।” विजय के इतने पान खड़े होने से कुछ झंपती हुई सी वह दूर खिसक गई थी। इस बात को विजय ने भी शायद लक्ष्य कर लिया था और अपनी भूल पर शर्मिदा से होते हुए तेजी से बाहर निकल गए थे।

कमरे में बैठी हुई अपर्णा की विचार-धारा चाची के अंदर आने की आहट से भंग हो गई, “कालिज से आते ही फिर पढ़ने की मेज पर बैठ गई?”

“नहीं, चाची, पढ़ कहां रही हूं?”

“बेटा, तेरी पुरानी सहेली सीमा तुझे कई बार बुला गई है। कल फिर आई थी। कह रही थी कि ‘आंटी, अपर्णा तो मुझे अब विलकुल ही भूल गई है।’ ” चाची बोली, “तू चाहे तो थोड़ी देर के लिए उस के यहां हो आ।”

सीमा ! अपर्णा समझ नहीं पा रही थी कि आज अचानक यह सीमा का जिक्र कैसे छिड़ गया और चाची उस के घर जाने को क्यों कह रही हैं। पर दो ही मिनट में वह सब समझ गई थी। अच्छा, तो यह बात है! इसी लिए उसे यहां से हटाया जा रहा है कि उस की उपस्थिति कहीं प्रिया और डा. विजय के बीच रोड़ा न बन जाए। पर अपर्णा से आज चाची

आंखों से लगाया है...

हर शब वो सियाह बोझ कि दिल बैठ गया है,
हर सुबह की लौ तीर सी सीने में लगी है,
तनहाई में क्याक्या न तुझे याद किया है,
क्याक्या न दिलेजार ने ढूँढ़ी हैं पनाहें,
आंखों से लगाया है कभी दस्तेसबा को,
डाली हैं कभी गर्दने महताब में बाहें.

—फंज

को कैसे भय हो गया? कहां सुंदरता की मूर्ति प्रिया और अपर्णा का नृत्य-कूफ होगा जो प्रिया को छोड़ कर अपर्णा पर रीझेगा? उसे चाची की इस नासमझी पर हंसी आने लगी थी.

“ठीक है, चाची. मैं थोड़ी ही देर में सीमा से जा कर मिल आऊंगी.”

चाची आश्वस्त सी होती कमरे से चली गई थीं. तैयार हो कर बाहर निकलते समय क्षण भर के लिए यह विचार अपर्णा के मन में आए बिना न रहा कि प्रिया कुछ महीने ही सही, अपर्णा से छोटी है, पर प्रिया की ही शादी के लिए जी तोड़ प्रयास हो रहे हैं. अपर्णा का भी कोई अस्तित्व है, यह तो शायद कोई सोचता ही नहीं. पर शीघ्र ही उस ने अपनी इस भावना को दबा दिया. ठीक ही तो है. अब वह और भी मुक्त हो कर अपने अध्ययन में व्यस्त रह सकेगी. कई बार बेकार ही डा. विजय के बारे में घंटों सोचा करती थी. अपने आप ही सब बातों से छूटकारा मिल गया.

दोतीन घंटे बाद जब सीमा के यहां से लौटी तो उस ने पाया कि चाची कमरे में चुपचाप बैठी हैं और उन का मुंह उबड़ा हुआ है. प्रिया अलग अपने कमरे में बंद थी. क्या बात है? उल्लास के स्थान पर यह विषाद क्यों? वह कुछ समझ नहीं पाई. अंदर जा कर पूछा, "मां, क्या डाक्टर साहब आए नहीं?"

“आए तो थे. दसपंदरह मिनट ही रुक कर चले गए.”

“तो...” वह स्तंभित सी हो रही थी.

“डॉक्टर ने आते ही तेरे चाचाजी से कह दिया कि मैं प्रिया से नहीं, अपर्णा से शादी करना चाहता हूँ।”

“क्या... कह रही हो, मां?” अपर्णा सोच रही थी कि वह शायद कुछ गलत सुन रही है.

“हां, बेटा, विजय की बात सुनते ही चाचाजी और चाची दोनों तमतमा गए. बाद में प्रिया को बुला कर उस

का परिचय भी कराया गया. पर विजय
जोड़ी ही के बाद निकल कर चले गए.
जाते समय बोले, "मैं ने तो अपना
निर्णय बता ही दिया है. अब आप अपना
जी से और पूछ लें और इस के बाद जो
भी उचित समझें, करें."

अपर्णा का दिमाग उलझता ही जा रहा था. मां ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, “उन के जाने के बाद चाची तो बहुत ही नाराज हो गई थीं. कह रही थीं, कि ऐसे लड़के की शक्ल भी देखना पाप है. पर बाद में चाचाजी ने उन्हें किसी तरह समझाबुझा कर राजी कर लिया. कहने लगे कि लड़का बिल्कुल आडंबरहीन और सादा विवाह चाहता है. अभी न सही, कुछ दिनों बाद अपर्णा की शादी तो करनी ही होगी. भाई साहब जो भी रुपए छोड़ गए थे, सब उस की पढ़ाई में लग चुके हैं. लंबेचौड़े दानदहेज के लिए रुपए कहां से आएंगे? और लड़का ढूंढने की दौड़धूप अलग. यही सब देखते हुए यह संबंध क्या बुरा है.”

“अपर्णा बेटो!” मां की आवाज से
अपर्णा की विचारधारा टूट गई, “तेरी
क्या राय है? तू ने तो कुछ कहा ही
नहीं. चाचाजी तो यही कह गए थे कि
मैं तुम से पूछ लूं, इस के बाद वह आगे
बात बढ़ाएंगे...”

“जो भी तुम ठीक समझो, मां,” कहते हुए अपर्णा ने अपना सिर मां की गोद में छिपा लिया था. स्नेहविवहल मां की आंखों में खुशी के आंसू भर आए. अपने ममतामय हाथों से वह उस के बाल सहलाने लगीं.

रात को सोते समय डा. विजय का चेहरा काफी देर तक अपर्णा की आंखों के सामने घूमता रहा. फिर एकाएक ही उस के कानों में चाची के कहे शब्द कौंध गए, 'अपर्णा की शादी के लिए आए लड़के को तो प्रिया को दिखा कर ही संबंध करना पड़ेगा.'

कहे गए शब्द कभीकभी कितने विपरीत अर्थ ले कर सच हो जाते हैं, अपर्णा सोच रही थी.

हिंदी में रोज हज़ारों पाकेट बुक्स
प्रकाशित होती हैं. उन सबसे अलग हैं



विश्व पाकेट बुक्स

● युवतियों से

मनोवैज्ञानिक सुझावों व अनुभवों के आधार पर लिखी गई पुस्तक जो ग्राम युवतियों के समक्ष आने वाली समस्याओं को सुलझाने में सहायक होगी. र. 5

● भटकता राही

स्पेन, अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए.

● एक बंद सागर की

एक निर्धन परिवार की सीधीसाधी लड़की की कहानी जो गृहस्थों, दफ्तर व कारखाने की समस्याओं से उलझती-सुलझती अपना लक्ष्य पा लेती है.

● दिल्ली की रोमांचक सत्यकथाएं
भारत का इतिहास वस्तुतः दिल्ली का ही इतिहास है. यह नगरी 18 बार बसी और उजड़ी है. इस के बार-बार बसने और उजड़ने की रोमांचक राखी कहानियां.

● बंधनमुक्ति

आज की नारी पुरुष की तरह स्वावलंबी होना चाहती है. लेकिन क्या वह दफ्तरी जिंदगी में कैद हो कर छटपटाने नहीं लगी है? एक कामकाजी दंपति की संघर्षपूर्ण खोखली जिंदगी की रोचक कथा.

प्रत्येक र. 4

पूरे परिवार के लिए
मनोरंजक व सुवचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विप्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व शकवच की छूट.
आदेश के साथ पांच रुपए धाग्रिम भेजें.

एक विज्ञापन—

“आवश्यक है एक बंधी की Foundation Chennai and eGangotri

वेतन : जितना कमा सके (जेवखचं सरकार देगी)।

शारीरिक क्षमता : सदन में एक किनारे से दूसरे किनारे तक चपल फेंक सके।

शिक्षा : आवश्यक नहीं। मैट्रिक पास या ज्यादा पढ़े लिखे कष्ट न करें।

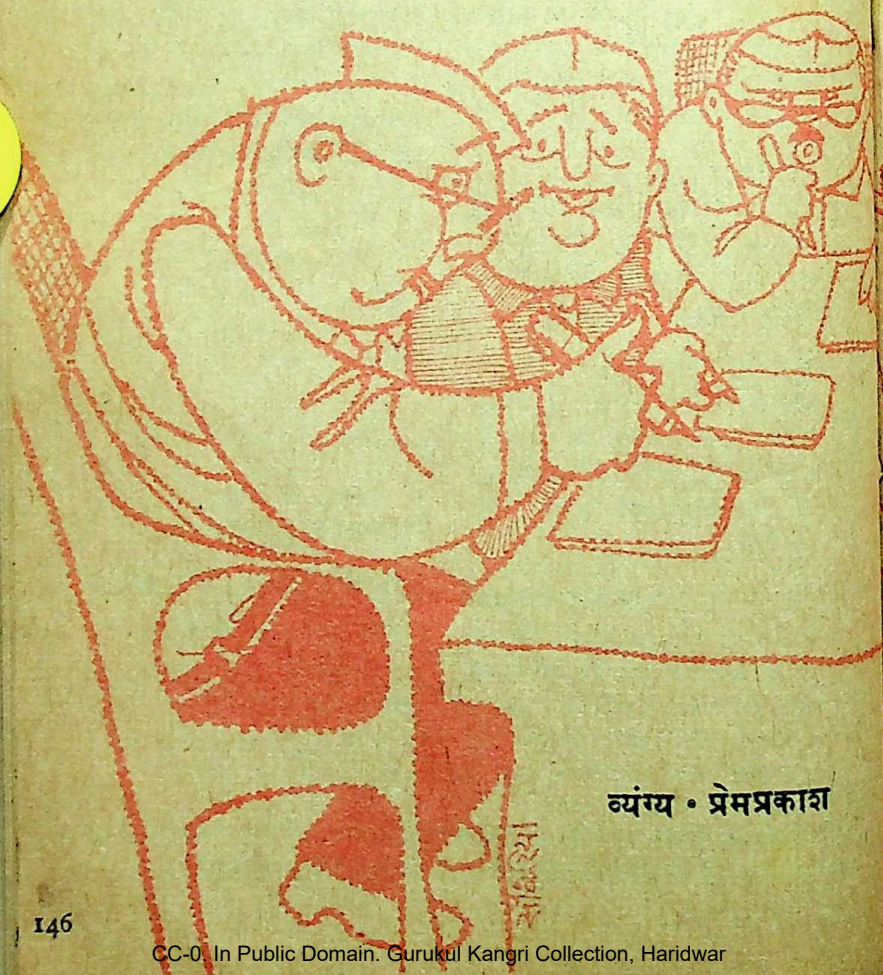
अनुभव : जेल गया हो (किसी भी जुर्म में), दलबदलुओं को प्राथमिकता।

इच्छुक उम्मीदवार एक सप्ताह के अंदर उच्च सिफारिश के साथ प्रार्थनापत्र भेजें।”

सप्ताह भर में आला कमान के दफ्तर में सीमेंट के परमिट की अर्जियों की तरह प्रार्थनापत्रों की बाढ़ आ गई। इन प्रार्थनापत्रों से इंटरव्यू के लिए

नियुक्ति

उम्मीदवारों के चयन के लिए सादा पत्र चमत्कारिक तरीका अपनाया गया। सारे अर्जियां गाय एवं बछड़े के आगे रख दी गईं। कुछ अर्जियों को गाय खा गई और कुछ को बछड़ा खा गया। आखिर में बची तीन अर्जियां और उन प्रार्थियों को इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। आला कमान की ओर से राजनीति के तीन पहलवान



व्यंग्य • प्रेमप्रकाश

इंटरव्यू लेने के लिए नियुक्त किए गए.

चयनकर्त्ताओं के नामों की घोषणा के साथ ही तीनों उम्मीदवार सक्रिय हो गए. पहले चयनकर्त्ता की प्यारी कुतिया की सालगिरह पर एक उम्मीदवार ने हीरों का पट्टा नजर किया. दूसरे उम्मीदवार कहां कम थे! उन्होंने बाकी दो चयनकर्त्ताओं को मिठाई के डब्बों में चुपके से एकएक लाख रुपए दे दिए. वास्तविक इंटरव्यू शुरू हो चुका था.

नजरानों के बाद तीनों चयनकर्त्ता एकएक उम्मीदवार के धर्मपिता बन चुके थे. अतः उन्होंने इंटरव्यू को योजना की तरह मामूली मामला रखने का निश्चय किया. वैसे भी इंटरव्यू के बारे में वे इतना ही जानते थे कि पड़ोसिनो के 'व्यू' के चक्कर में वे 'इंटर' पास नहीं कर पाए थे.

इंटरव्यू की तारीख को निश्चित समय के मात्र दो घंटे बाद परंपराानुसार इंटरव्यू शुरू हुआ.

"नमस्कार!" नगाड़े की आवाज में अभिवादन करते हुए पहले उम्मीदवार ने प्रवेश किया.

"नमस्कार," एक चयनकर्त्ता बोला. दूसरे ने छटांक भर की जवान के बजाए दस सेर का सिर हिला दिया.

"क्या नाम है आप का?" पहले चयनकर्त्ता ने पूछा.

"अजी, हमारा क्या नाम! बस, समझ लीजिए कि सेवक, दास या गुलाम," कहते हुए उम्मीदवार ने पांच दांत दिखा दिए.

"अच्छा, तो सेवकदास गुलामजी, यह बताइए कि अगर कोई क्रुद्ध भीड़ आप का घेराव कर ले तो आप क्या करेंगे?"

"लाठी चलवा दूंगा," उम्मीदवार ने मुक्का घुमाते हुए कहा.

"है! लाठी? यह तो बुरा होगा!" चयनकर्त्ता छटपटाया.

"बुरा कोई नहीं, साव, आखिर गांधीजी भी कदमकदम पर लाठी का सहारा लेते थे," उम्मीदवार ने गांधीजी की तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहा.

"यह तो ठीक है, पर विधान सभा में हल्ला हुआ तो?"

"तो क्या? हम चप्पल चला देंगे. आखिर गांधीजी ने लंगोटी के अलावा लाठी और चप्पल का ही तो प्रयोग किया था."

उम्मीदवार के गांधीवादी होने का पक्का सबूत पाते ही चयनकर्त्ता गद्गद हो उठे.

समाजवादी रीति का इंटरव्यू था... चयनकर्त्ताओं के सवाल लाजवाब थे तो उम्मीदवारों के उत्तर भी बेमिसाल.



“आइए, कुसोलालजी!” एक चयन-कर्त्ता ने अर्ज डालते हुए दूसरे उम्मीदवार को स्वागत किया।

ने हिम्मत कर के पूछा :

“आधिक संकट में धन संग्रह करने के लिए आप क्या करेंगे?”

“आप कहां के रहने वाले हैं?”

“जी, सारा देश मेरा घर है। वैसे मैं रहता वहीं हूं, जहां मंत्री पद मिल जाए,” उम्मीदवार ने तोंद उठाते हुए कहा।

उम्मीदवार ने पान की पीक को पीने की ओर छोड़ी, फिर बोला, “अगर सरकार पर संकट हो तो जनता के हंसने और रोने पर टैंक्स लगा देंगे और अगर मंत्री पर संकट हो तो अकाल घोषित कर के तालाब खुदवा कर भरवा देंगे।”

“बिल्कुल ठीक। मगर दो पड़ोसी राज्यों के सीमा विवाद में आप जैसा राष्ट्रीय व्यक्तित्व क्या करेगा?”

“वाह! वाह! वाह!” तीनों चयनकर्त्ता धन्य हो गए। उन्होंने तीसरे उम्मीदवार को भी बिदा किया।

“हम विवादग्रस्त इलाके को नया राज्य बना देंगे। फिर नई विधान सभा होगी और नए मंत्री और...”

इंटरव्यू के बाद हुआ वही जो होना था, यानी विवाद। हर चयनकर्त्ता के मन में एक उम्मीदवार लिफाफे के टिकट की तरह चिपका था। लेकिन जब तीनों चयनकर्त्ताओं को मालूम हुआ कि वे तो आपस में मौसरे भाई हैं तो समझौता होते देर न लगी। हालांकि सिर्फ एक मंत्री पद के लिए इंटरव्यू हुआ था, फिर भी समाजवादी तरीके से उन तीनों को मंत्री बना दिया गया। एक को विज्ञापित पद दिया गया और बाकी दो बिना विभाग के मंत्री बनाए गए।

“बस, बस!” चयनकर्त्ता ने टोकते हुए कहा, “आप का दिमाग तो कमाल का है! मैं सरकार से सिफारिश करूंगा कि आप के दिमाग के कुछ टुकड़े टाइम केपसूल में गाड़े जाएं।”

एक नजर इस हीरे को पहचानने के बाद चयनकर्त्ताओं ने तीसरे उम्मीदवार को बुलाया।

“भारत माता की जय!” कर के वह कुरसी पर धम्म से गिर कर पान की जुगाली करने लगा। चयनकर्त्ताओं ने एकदूसरे को कुनखियों से देखा। फिर एक

सरितामुक्ता

विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

सरितामुक्ता के लिए हर वर्ष देश के मुख्य विश्वविद्यालयों तथा कालिजों में प्रतिनिधि नियुक्त किए जाते हैं। ये प्रतिनिधि विश्वविद्यालयों के समाचार, छात्र गतिविधियों, अपने क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियों से भेंटवार्त्ताएं आदि भेजते हैं, जिन्हें सरिता या मुक्ता में प्रकाशित किया जाता है।

1975-76 वर्ष के लिए अब आवेदनपत्र आमंत्रित हैं। कृपया अपने शैक्षिक स्तर, रुचियों आदि सहित विस्तृत जानकारी के लिए निम्न पते पर लिखें :

सरितामुक्ता छात्र विभाग, 3 ई, भंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

पसंद अपनी अपनी

सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी। इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री रमेश अग्रवाल, रायगढ़, हैं।

भेजने का पता : पसंद अपनी अपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

- नईनवेली पत्नी (पति से) : अगर मैं आप को हमेशा ऐसा मजेदार खाना पका कर खिलाऊँ तो मुझे क्या इनाम मिलेगा?
पति : मेरी लाइफ इंश्योरेंस का दस हजार रुपया.

—महावीरप्रसाद मित्तल, लखीमपुर खीरी

- एक महाशय को अपने व्यापार के सिलसिले में अकसर होटलों में ही ठहरना पड़ता था. उन की शादी हुई. शादी के कुछ रोज वाद उन की पत्नी की सहेली उस से मिलने आई. सहेली ने उस से पूछा, "तुम्हारे पति का स्वभाव कैसा है?"

वह बोली, "बाकी तो सब ठीक है. मुझे बहुत प्यार करते हैं. लेकिन कई बार जब खाना खा कर उठते हैं तो थाली में एक रुपए का नोट छोड़ देते हैं, जिस से मुझे बहुत तकलीफ होती है. और यहीं पर बस नहीं है, सुबह मैं जब सो कर उठती हूँ तो मेरे तकिए के नीचे दसदस के पांच नोट दबे रहते हैं." —रमेश अग्रवाल, रायगढ़

- एक वृद्ध महिला लाल बत्ती की अवहेलना कर अपनी गाड़ी चौराहे से पार कराने लगी. नियुक्त सिपाही ने कई बार सीटी बजाई, पर वह चौराहा पार कर के ही रुकी. सिपाही ने उस से क्रोधित स्वर में पूछा, "मैं ने इतनी सीटियाँ बजाई, पर आप रुकी क्यों नहीं?"

महिला ने शरमा कर उत्तर दिया, "बच्चा, अब मेरी उमर ढल गई है."

—सुनील अग्रवाल, लखनऊ

- दो मित्र, जिन में से एक को कार तेज चलाने की आदत थी और दूसरे को धीरे. एक बार दोनों कार में कहीं जा रहे थे. धीरे चलाने वाला मित्र कार चला रहा था. अचानक एक बच्चा कार के नीचे आतेआते बचा. इस पर कार चलाने वाले ने पास बैठे मित्र से, जो बहुत तेज गाड़ी चलाने का अभ्यस्त था, कहा, "यदि मैं आज तुम्हारी स्पीड पर होता तो बच्चा मर गया होता."

"तुम अगर मेरी स्पीड पर होते तो बहुत पहले निकल गए होते," मित्र ने तुरंत उत्तर दिया.

—विपिनचंद्र शर्मा, बिजनौर

- अध्यापक (राम से) : भारत में कौनकौन से मत प्रचलित हैं?

राम : बौद्ध मत, जैन मत और...

अध्यापक : बको मत.

राम : जी, जी, हाँ, और बको मत.

—सुलक्षणकुमार, नई दिल्ली

- एक साहब किसी मेहमान को कुछ खिलातेपिलाते नहीं थे. एक बार एक मेहमान उन के घर आया. टालमटोल करने पर भी वह नहीं गया तो आखिर उन्होंने पूछा, "बताइए, चाय लेंगे या शर्बत?"

मेहमान भी घुटा हुआ था, वह बोला, "जब तक चाय बनती है तब तक शर्बत ही आने दीजिए. जमाना ही ऐसा है, कभी गर्मी और कभी सर्दी."

—महेंद्र 'राजा', गुड़गांव ●

हैं। मेरा भी यही सिद्धांत रहा है, परंतु इस सिद्धांत पर चल कर मैं ने जीवन में बहुत कम सफलता प्राप्त की है। दुनिया में खुशामदी आदमी ही कुछ उन्नति कर सकता है—नौकरी में, व्यवसाय में, खेल के मैदान में, राजनीति में, घर में, घर के बाहर। यदि आप किसी को प्रसन्न करना चाहते हैं, यदि आप किसी को आकृष्ट करना चाहते हैं तो इस का एकमात्र सरल उपाय है—खुशामद करें, चापलूसी का जादू उस पर फेंकें।

मेरी धारणा है कि एक छोटी से छोटी बिल्ली से ले कर एक बड़े से बड़े देवता तक सभी खुशामद पसंद करते हैं। कोई आप से कहे कि वह खुशामद पसंद नहीं करता, तो समझें कि वह धूर्त है, पाखंडी है, वह मनुष्य नहीं है।

कोयल की कूकू के साथ आप भी करें (परंतु स्वर से स्वर मिला बटेर की टुटरू के साथ टुटरू करें, को 'आआ' कर के आजमाएं, आप को गोद में ले सकते हैं; आप से वे प्रेम हैं, आप के दास हैं।

देवता भी खुशामदपसंद होते शिव, तुम महादेव हो! काली, तुम काली हो! लक्ष्मी, तुम महालक्ष्मी हो! ईश्वर, तुम देवताओं के देवता हो। सर्वज्ञ हो, तुम शक्तिमान हो, महाहो, परमात्मा हो :

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव
खुशामद क्या है? यही कि तुम

चापलूसी

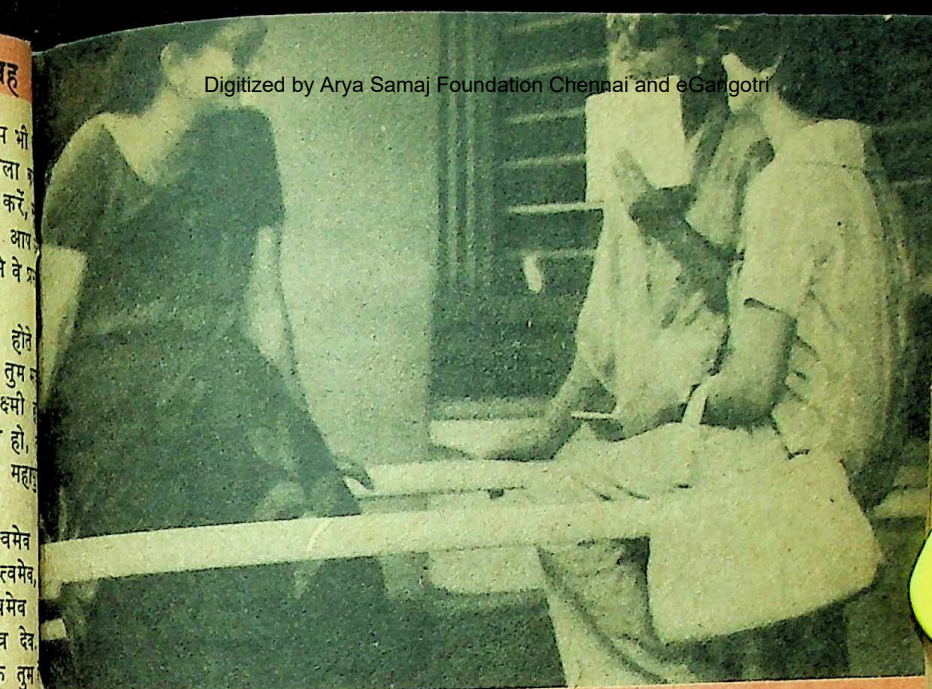
पहले मैं घुड़सवारी किया करता था। मैं ने देखा कि पुचकारने से, थापी देने से, पीठ पर हाथ फेरने से, पांव तक टांग दवाने से बिगड़ा हुआ घोड़ा भी रास आ जाता है। अड़ियल टट्टू डंडे मारने से काबू में नहीं आता। उस की पीठ पर से उतर कर नीचे आइए और पुचकारदुलार कर उस की रास पकड़ कर चलिए, वह आप का हो जाएगा।

क्या आप ने कोई बिल्ली पाल रखी है? क्या आप के यहां कोई कुत्ता है? क्या आप ने गाय भी नहीं रखी है? सच कहें, चापलूसी, खुशामद, दुलार देख कर उन में क्या प्रतिक्रिया होती है? तीतर, बटेर खुशामद से ही पिंजड़े में आते हैं। पिंजड़े में पड़े हुए भी वे खुशामद से आप के हैं। आप उन्हें आंख दिखाएं, वे अपनी आंखें फेर लेंगे। आप उन की हां में हां मिलाएं, वे आप पर रीझ जाएंगे।

वाप हो, तुम मेरे सगे भाई से बड़े हो, तुम बड़े दयालु हो, बड़े नेक हो, तुम सब कुछ हो। कहते हैं कि भक्ति करने से आदमी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ पा लेता है। घन्ना बड़े सदन कसाई, रैदास चमार, कबीर जुलाहा, मीरा, सूर, तुलसी अपने-अपने में क्या करते रहे हैं? बस खुशामद।

भक्ति खुशामद का दूसरा नाम 'भक्त के बस में भगवान हैं,' केवल इसलिए कि भक्त दिनरात भगवान की चर्चा लूसी करता है, उस की पत्नी तक जाने को तैयार है। हृद हो गई चापलूसी की।

कहते हैं, चापलूसी में अतिशयोक्ति होती है, झूठ होता है। एक ही देव को पिता बनाना, माता भी कहना मित्र भी कहना तथा साथ ही समझना कितना झूठ है! यह तो बिल्कुल



दिल के खजाने की कुंजी....लेकिन इस का राज?

बढ़ी बात है.

मनुष्यों में बच्चों से बूढ़ों तक सभी के भावनामय संसार होते हैं. छोटे बच्चे से लेकर बड़े बच्चे तक, तुम कहें कि तुम बहुत सयाने हो, तुम बहुत अच्छे हो, तुम सुंदर हो, तुम्हारे कपड़े अच्छे लगते हैं, तुम मेरे बेटे हो, तुम मेरी बहन हो, तो देखिए, वह आप का परम मित्र बन जाएगा. वह अपने खिलौने, अपनी मिठाई, अपनी पूंजी आप को देने को तैयार हो जाएगा. आप दुलार की भाँसे, चापलूसी से उस से कोई बात मनवा लें, कोई काम करा लें, वह तो रीझ गया है.

दो मिनट के लिए उस प्रेमी की कल्पना करें जो अपनी प्रेमिका की चापलूसी नहीं करता. वह उस से यह नहीं कहता कि तुम आज बहुत ही सुंदर लगती हो अथवा—

“तुम्हारी वाणी में कल्याणि, त्रिवेणी

की लहरों का गान” (पंत)

“मलयविविचुंबित तुम उषा की अनुरंजित अरुणाई सी.” (भ. च. वर्मा)

“बरस पड़ी हो मेरे मरु में तुम सहसा रसधार बनी.” (भ. च. वर्मा)

“मधु सरिता सी यह हंसी सरल.” (प्रसाद)

यह सब वह कुछ नहीं कहता. वह चापलूस थोड़े है. वह कहता है कि तुम सुंदर हो, पर इतनी नहीं कि तुम्हारे समान कोई हो ही नहीं. तुम बोलती हो तो कुछ मिठास कम रहती है. तुम हंसती हो तो आनंद कुछ कम आता है, तुम मेरे मरु हृदय में आओ न आओ, कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता.

आप ही सोचें, ऐसे प्रेमी की कहीं कोई प्रेमिका हो सकती है? प्रेयसी तो घातबात में शाबाशी चाहती है.

“मधुरमधुर मीठे शब्दों में मैं ने

मुक्ता



प्रेमपात्र को प्रभावित करने के लिए
उपहार भेंट कर के भी चापलूसी
की जाती है।

गाना गाया एक,
वे प्रसन्न हो उठे खुशी से शाबाशी
दी मुझे अनेक.
प्रेमोन्मत्त हो गई, मैं ने उन्हें प्रेम
निज दिखलाया,
उसी समय बदले में उन से एक
प्रेम चुंबन पाया.

आप ही बताएं कि यदि दोनों ओर
से चापलूसी न हो तो इस प्रकार का
प्रेमोद्बोध, ऐसा रस संचार कहीं हो सकता
है? मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि
कोई भी प्रेमी बिना चापलूसी के प्रेम में
सफल नहीं हो सकता.

जब प्रेम जैसी वस्तु चापलूसी से
मिल सकती है तो फिर रह क्या जाता
है? जो आप को प्रेम करने लगता है, वह
आप को नौकरी दे सकता है, ठेका दे
सकता है, काम दिला सकता है, आप के
साथ कहीं जाने को तैयार है, किसी से
भी आप की सिफारिश कर सकता है.

आप ने उसे खुशामद के मोहिनी
आप पर लट्टू है.

चापलूसी के कई ढंग हैं. किसी
घर जाने पर उस के मकान
उस के कमरे में लगे चित्रों
उस के पुस्तकसंग्रह की, उस के
सेट की अथवा उस की सजावट
सराहना करें. उस का मकान भरा
गंदा रहे, तो भी कहें कि बड़ा साफ
हो. अंगरेजी में कहावत है कि माता
को प्रसन्न करना हो तो उस के कुत्ते
प्यार करो. हम कहते हैं कि माता
प्रसन्न करना हो तो उस के बच्चे
प्यार करो, बच्चे की सुंदरता की,
की प्रशंसा करो.

सभी मनुष्य स्वार्थी हैं. सब
तारीफ चाहते हैं. किसी को प्रसन्न
का सब से सफल मनोवैज्ञानिक ढंग
है कि उस के व्यक्तित्व की बड़ाई
उस में ऐसे गुणों का आरोप करें जो
में नहीं हैं. वह महामूर्ख हो तो भी
कहें कि वह बड़ा बुद्धिमान है; वह
हो तो भी आप कहें कि बड़ा उदार
बड़ा शाहखर्च है; वह स्वार्थी हो तो
कहें कि परमार्थी है, उपकारी है,
झूठा हो तो भी कहें कि बात सौ फीस
सच कहता है. मैं ने बड़ेबड़े राजमंत्रि
नेताओं, विद्वानों का अभिनंदन होते
है. दुनिया का जितना भी झूठ है,
बोला जा रहा है. लेकिन वे महाशय
कि वेठे सब सुन रहे हैं, गद्गद हो
हैं. मैं कैसे मान लूं कि बड़े लोग चापलूसी
को बुरा मानते हैं? मेरा तो यह विश्वास
है कि चापलूसी में झूठ बोलना भी जितना
है. आप किसी स्कूल में, कालिब
दफ्तर में, सभासोसाइटी में, कंपनीक
खाने में किसी की विदाई की पार्टी
शरीक हुए हों तो आप को मालूम हो
कि दुनिया में कोई बड़ा से बड़ा
ऐसा नहीं है जिस का आरोप विदा
वाले व्यक्ति में नहीं किया जाता.

वास्तव में चापलूसी दिल के ख
की कुंजी है.

ये लड़कियाँ

Digitized by Arya Samaj Foundation

हम उनके विमोचन के लिये संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
भेजने का पता : ये लड़कियाँ, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● मैं, मेरी सहेली और हम दोनों के भाई फिल्म देख कर लौट रहे थे. हम दोनों सहेलियाँ एक साइकिल पर थीं और वे दोनों दूसरी साइकिल पर. रास्ते में दोनों आगे निकल गए. भीड़ के कारण हम दोनों को साइकिल से दोतीन बार उतरना भी पड़ा. यह देख कर दो मनचले लड़के, जो खुद भी एक साइकिल पर सवार थे, कहने लगे, "साइकिल चलानी नहीं आती तो हम से ट्रेनिंग ले लो, या ये लो रिक्शे के पैसे."

सुनते ही मेरी सहेली ने तपाक से उत्तर दिया, "अपनी बहनों को भी भेज दो हमारे भाइयों के पास ट्रेनिंग लेने."

सुनते ही दोनों लड़के सिर झुका कर चलते बने. —ज्योति, कानपुर

● एक दिन मैं और मेरा मित्र पिक्चर देखने जा रहे थे. मेरा मित्र मनचले स्वभाव का है. उसे लड़कियों को छेड़ने की भी आदत है. पिक्चर जाते समय रास्ते में कुछ लड़कियाँ मिलीं. मेरा मित्र उन को छेड़ने के अंदाज से बोला, "दुनिया बनाने वाले ने क्या चीज बनाई : लड़की!"

इतने में एक लड़की ने अपने पैर से सैंडिल निकाला और उस के गाल का निशान लगा कर बोली, "बाटा वालों ने क्या चीज बनाई है : सैंडिल!"

मेरे मित्र का चेहरा देखने लायक था. —श्रीगोपाल खत्री, बीकानेर

● मैं बाजार में अपने एक दोस्त की दुकान पर खड़ा था कि मेरी कक्षा की दो लड़कियाँ उधर से गुजरीं. अभिवादन हुआ और वे वहीं रुक कर बात करने लगीं. मेरे हाथ में एक बड़ा खाकी लिफाफा देख कर एक बोली, "इस में क्या है?"

"कुछ नहीं, आप के मतलब की चीज नहीं," मैं ने टालना चाहा.

पर वे नहीं मानीं, बोलीं, "हमें दिखाओ."

मैं ने कहा, "खाने की चीज तो इस में है नहीं."

"तब तो जरूर खाने की चीज होगी. हम तो जरूर देखेंगे," वे बोलीं.

उन की जिद देख कर मैं ने भी कह दिया, "है तो खाने की चीज, पर इसे सिर्फ लड़के खाते हैं, लड़कियाँ नहीं."

वे भी अड़ गईं, "आजकल लड़के लड़कियों में कोई फर्क नहीं होता. लड़के खा सकते हैं तो हम भी खा सकती हैं."

लाख समझाने पर भी जब वे नहीं मानीं, तो मैं ने लिफाफा उन के हाथ में पकड़ा दिया. उन्होंने झट खोल कर देखा तो उस में से टूटी हुई चप्पलें निकलीं. झप कर बोलीं, "अच्छा, चलते हैं," और मेरे उत्तर का इंतजार किए बिना चल दीं.

बात यह थी कि पुरानी चप्पलों की मरम्मत करवाने मैं बाजार गया था. उन्हीं चप्पलों को मैं ने लिफाफे में डाल लिया था. —चंद्र अरोड़ा, सहारनपुर

● एक बार मैं दिल्ली गया. एक दिन मैं अपने दोस्त के साथ बाजार घूमने गया और वहां से घूंप का एक चश्मा खरीदा. मेरा मित्र चश्मा पहन कर देखने लगा. उसी समय उधर से दो लड़कियाँ निकलीं. उन में से एक हमें सुनाते हुए बोली, "दीदी, देखो, कितनी घूंप पड़ रही है!" यह सुनते ही मेरे दोस्त ने चश्मा उतार दिया और वे लड़कियाँ हंसती हुई आगे निकल गईं.

—विश्वेश्वरसिंह, जोधपुर ●

मुक्ता

● एक बार कालिज में मैं और मेरी सहेली अरुणा कालिज के बाग में बात कर रही थीं।
 दो."

कुछ दूरी पर लड़कों का एक झुंड खड़ा था। उन्होंने बात सुन ली। उन में से एक लड़का बोला, "अरे, गाना गाओगी तो गधे इकट्ठे हो जाएंगे।"

मेरी सहेली भी कब चूकने वाली थी। उस ने तुरंत जवाब दिया, "गधों का आकर इकट्ठे होने की जरूरत नहीं। यहां तो पहले से ही गधों का झुंड खड़ा है।"

अब लड़कों की सूरत देखने लायक थी।

—सीमा त्यागी, बतिया

● एक दिन हम कई दोस्त बस में सफर कर रहे थे। हमारे आगे वाली सीट पर एक बहुत ही सुंदर लड़की बैठी हुई थी। हमें शरारत सूझी। हम में से एक लड़का उस की ओर घूरता हुआ बोला, "अरे, यार, चूड़ियों का धंधा भी कमाल का है। एक तो अच्छा पैसा मिलता है और ऊपर से सुंदरियों की नमनमं हथेलियां भी।"

इतने में ही बस का अगला स्टॉप आ पहुंचा। वह लड़की सीट से उठती हुई बोली; "तो महाशय, देर किस बात की? मेरी भी चूड़ियों की दुकान है। आ जाइए तो कर्मचारी रख लूंगी।"

—उत्पलकुमार मजुमदार, मुजफ्फरपुर

● बी. एससी. में प्रवेश लिया था। रैगिंग से काफी परेशान था। उस दिन मेरा रसायन शास्त्र प्रैक्टिकल का पीरियड था। अचानक बी. एससी. की ही कुछ सीनियर लड़कियां रसायन विभाग कार्यालय से निकल कर ठीक मेरी सीट के पास आ कर मुझे घेर कर रैगिंग के उद्देश्य से खड़ी हो गईं। वे मेरी प्रयोगात्मक सामग्री को इधरउधर करने लगीं।

मेरे लाख मना करने पर उन लोगों ने मेरे मूल विलयन को नष्ट कर के मेरा प्रैक्टिकल भी चौपट करा दिया। उस समय मैं एंटिमनी का टेस्ट कर रहा था। टेस्ट के फलस्वरूप निकल रहे तीक्ष्ण धुएं का रख क्रोधवश एवं अपने को उन से बचाने के उद्देश्य से मैं ने उन की ओर कर दिया। छींकती, अपनी नाकों को रुमाल से ढंकी हुई वे सीधे विभागाध्यक्ष महोदय के पास मेरी शिकायत ले कर पहुंचीं। मुझे उन से चेतावनी दिलवा कर मेरी खिल्ली उड़ाती हुई वे बाहर चली गईं। लड़कियों के प्रति इस तरह का पक्षपात कब तक चलेगा?

—मदनमोहन गुप्ता, इलाहाबाद

● प्री मेडिकल में एक दिन खाली पीरियड में मैं कक्षा में ही बैठा एक पाठ को दोहरा रहा था। मेरे से अगले डेस्क पर मेरी ही कक्षा की दो लड़कियां बैठी थीं। वे आपस में जोरजोर से बातें कर रही थीं।

एक कह रही थी, "अरे, तुम्हारा नया सूट तो बहुत बढ़िया है। कहाँ से लिया? तुम आज बड़ी आकर्षक लग रही हो... और हां, आज तुम चुनरी ओढ़ कर क्यों नहीं आई?"

"पहले मैं एक चक्कर में फंसी हुई थी। घर वाले कहते थे कि कालिज में चुनरी ओढ़ कर जाया करो, और यहां कालिज में सब मुझे पिछड़ा हुआ समझते थे," दूसरी लड़की ने उत्तर दिया, "पर मैं ने भी एक हल खोज ही लिया।"

"वह क्या?"

"मैं घर से तो चुनरी ओढ़ कर निकलती हूं और कालिज में घुसने से पहले ही चुनरी को अपने बैग में डाल लेती हूं।"

—कमलकुमार चोपड़ा, रोहतक

Do you know the art of living?



Merely earning a living is not the only thing in life . . . you must know how to make the best of your life in other important spheres also . . . your relations with your wife and children, your friends, the society, the country. How to derive the maximum satisfaction in life at the minimum cost and effort ?

**CARAVAN HELPS YOU LIVE
A BETTER, FULLER, RICHER LIFE.**

CARAVAN

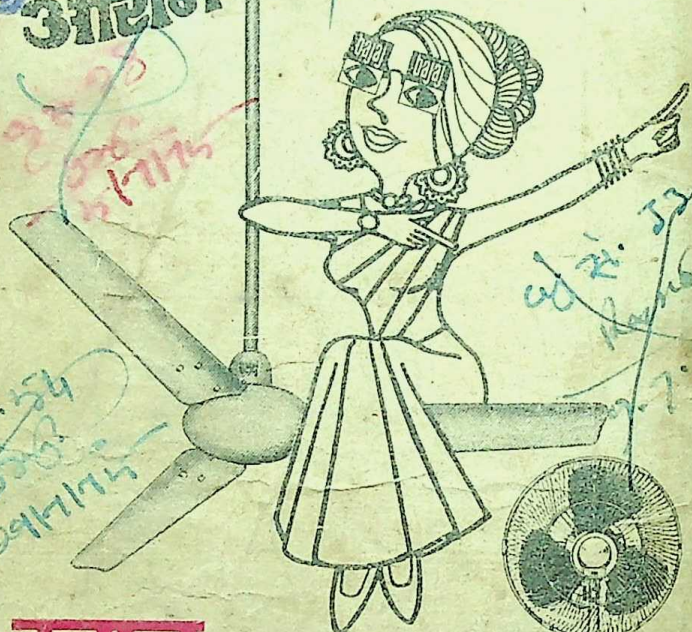
Fortnightly for the Intelligent & Discriminating.

For specimen copy send 50 p. in stamps to Delhi Press, New Delhi-55.

क्र.सं. 30
Lamban
8-7-15

गुरुकुल का आद्यम

की ऊँचाइयाँ



बजाऊ बहार

डॉलकन पंखों से

बिना आवाज चलनेवाले।
अधिकतम हवा देनेवाले।
नवीनतम डिजाइनों में।

बजाऊ इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

45-46 वीर नरियान रोड, मुम्बई-400 023
भारत भर में शाखाएँ



यूनीवर्सल पंखा



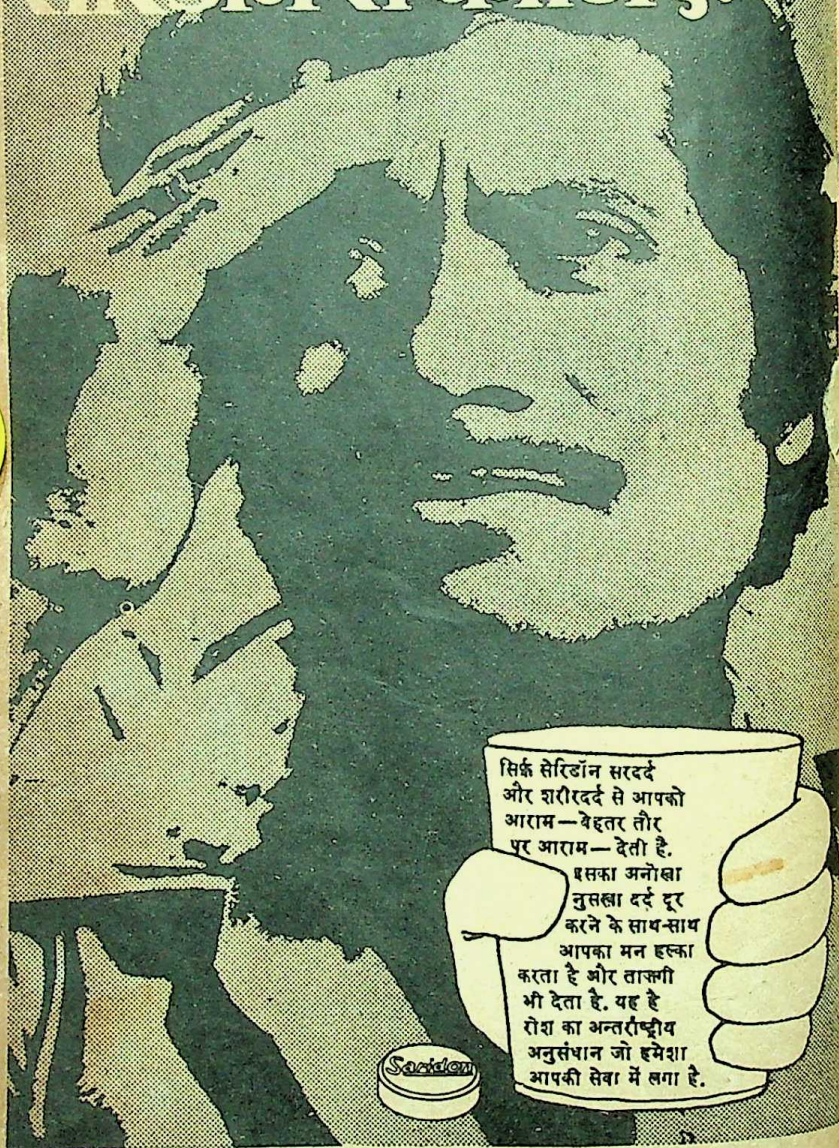
ब्यूटी पंखा

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका



सरदर्द का मुक़ाबला सेरिडॉन से कीजिए.



सिर्फ़ सेरिडॉन सरदर्द
और शरीरदर्द से आपको
आराम—बेहतर तौर
पर आराम—देती है.

इसका अनोखा
नुसखा दर्द दूर
करने के साथ-साथ
आपका मन हल्का
करता है और ताक़ती
भी देता है. यह है
रोश का अन्तरीक्षीय
अनुसंधान जो हमेशा
आपकी सेवा में लगा है.



सिर्फ़ एक **सेरिडॉन** से सभी तरह के सरदर्द रायब
देखें रोश

पॉयज़ डियोड्रण्ट
अब, एक और लुभावनी
सुगन्ध में मिलता है,
वाइल्डफ्लावर.

...ताकि आप दिनभर स्वात के
तुरन्त बाद की ताज़गी महसूस कर सके

नये पॉयज़ वाइल्डफ्लावर डियोड्रण्ट की नयी भीनी-भीनी
महक दिनभर बनी रहती है। स्नान के बाद इस्तेमाल कीजिए
और पसीने की बदबू से छुटकारा पाइए। सुविधाजनक
एक पैक में मिलने वाले पॉयज़, आपके मासिक को दिनभर
सुगन्ध बनाये रखता है।



पॉयज़ वाइल्डफ्लावर डियोड्रण्ट *

रेलि ग्रुप का उत्पादन

कुछ चीजें
ऐसी हैं जिन्हें
बिन्नी भी
कभी नहीं
बदलना चाहेंगे!



शुक्र है,
कुछ चीजें कभी नहीं बदलतीं!

यह देख कर बहुत ही ज्यादा खुशी होती है कि आज भी लोगों में खुशियों की एक संहज, ऐच्छिक उमंग है या यों कहिये कि आज भी बिन्नी की उत्कृष्टता का वही अटल स्तर है, वही आश्वासन। देखा आपने? बिन्नी ने अपने कपड़ों में टिकाऊपन और फैशन का कितना सुन्दर संगम किया है। रंगों का अम्बार है और डिजाइनों की भरमार। रंग और डिजाइन इतने बेशुमार कि बिन्नी टैशन मिश्रित कपड़ों से अपने वस्त्रों की योजना बनाना बड़ा दिलचस्प रहेगा और दुविधाजनक भी!

फैशनेबल फिर भी टिकाऊ —
केवल बिन्नी ही की मुगवट का कमाल!

बिन्नी 'टेरीन' मिश्रित कपड़े



Interpub/BB/55/75



जुलाई (द्वितीय) 1975

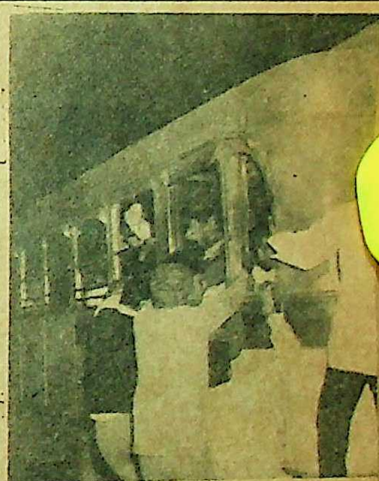
अंक 216

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक

विश्वनाथ



दिल्ली परिवहन निगम—पृष्ठ 28

संपादन व प्रकाशन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रा-
शांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

दिल्ली प्रेस समाचारपत्र के लिए विश्वनाथ
द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाबियाबाद
मुद्रित व प्रकाशित.

मुक्ता नाम ट्रेडमार्क एक्ट के अंतर्गत
रजिस्टर्ड है.

मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सब-
धिकार दिल्ली प्रेस समाचारपत्र द्वारा सुरक्षित हैं।
प्रकाशनायक रचनाओं के साथ टिकट लग-
पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आ-
वश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौट
नहीं जाएंगी.

दिल्ली परिवहन निगम	28	विशेष प्रतिनिधि
गोपीकृष्ण	37	विशेष प्रतिनिधि
गोर	40	रामाचारी
पुस्तकता	51	सुरेश
गुल्लोरा	86	मनमोहन वशिष्ठ
विश्व फर्मास	131	उत्सवकुमार चतुर्वेदी
वातप्रकाश	136	राममोहन पाठक
गुरुर चोहान	150	विनय जैलावत

साहित्य

कांसवाला	43	मोहरसिंह यादव
गरीब का धर्म	48	विनोदकुमार व्यास
गंगा रिवाज	54	अजीज अफसर 'राही'
मुक्ता सम्मेलन	60	महेशचंद्र 'स्वदेशी'
गंधर्व लिया चिन्ताय	64	राजेशकांत
अंतिम निर्णय	104	विजयालक्ष्मी
ए बांद से नए बांद तक	116	अनिलकुमार विश्वास
टूटते सपने	141	क. न. रामचंद्रन

परावाहिक उपन्यास

रंगमहल	67	आनंदसागर 'श्रेष्ठ'
--------	----	--------------------

विवादा

ऐसा प्यार कहता है...	66	सेवा सदन 'मनोज'
आ गया सावन	83	जहीर कुरेशी
शो श्यामल कजरारे बदरा	98	तारादत्त 'निर्विरोध'

मुक्ता के नाम	23	115	पसंद अपनीअपनी
शिक्षक	36	129	शाबाश
लड़के	53	147	छुपछाव
क्या करूँ?	84	148	चित्रावली
लड़कियाँ	96	152	खेल समीक्षा
पलवाड़े की फिल्म	99		आवरण : प्रेम कपूर

मूल्य : एक प्रति : 2.00 रुपए, एक वर्ष 40.00 रुपए,
सालाना : 75.00 रुपए.

विदेश में (समुद्री डाक से) : एक वर्ष 65.00 रुपए,
सालाना : 130.00 रुपए.

मुद्रण वितरण व वार्षिक शुल्क भेजने का
स्थान :

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

जलन का फ़ौरन इलाज कीजिए बरनॉल लगाइए



**बरनॉल सेप्टिक से बचाव करता है
और दर्द को अत्यंत प्रभावशाली
ढंग से कम करता है.**

जलन के प्रभावशाली इलाज के लिए फ़ुर्ती से काम लीजिए. बरनॉल को ऐसी जगह रखिए जहां आप तुरंत पहुंच सकें. अपने घर में. बरनॉल एक बेजोड़ नुसखे से तैयार किया जाता है जिसका असर त्वचा के ऊपरी भाग पर पड़ता है. इसकी एन्टीसेप्टिक दवाएं अन्य क्रीमों की भांति अंदर बंद नहीं रहती बल्कि ऑइन्टमेन्ट की बाहरी सतह पर रहती हैं. यही वजह है कि बरनॉल अधिक तेज़ी से असर करता है... दर्द की जगह आराम और ठंडक पहुंचाता है, फफोले पड़ने की संभावना को कम करता है और घावों में कीटाणुओं के प्रवेश से बचाव करता है.

इस तरह सेप्टिक से बचाव होने पर आपका घाव जल्दी ही ठीक हो जाता है. याद रखिए बरनॉल निवाइयां, जलमों और खरोंचों पर भी इसी प्रकार जल्द और प्रभावशाली काम करता है.



बरनॉल,
हमेशा
तैयार
रखिए



टियांरा

सभी प्रकार के बालों के लिए बढ़िया शैम्पू



एग

प्रोटीन वंचित बालों के लिए



शिकाकाई

सामान्य बालों के लिए



लैनोलिन

बिखरे हुए बालों के लिए



कंसेण्ट्रेट

चिपचिपे, लसदार,
बालों के लिए

सुन्दर बालों के लिए जरूरी है—**टियांरा**

दिनभर की ताज़गी के लिए नया टियारा ब्यूटी टैल्क खरीदिए !
जे. के. टेलीम. सर्विस लि. बॉम्बे 400036 का एक ही ही उत्पादन

हिंदी में रोज हज़ारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं- विश्व पाकेट बुक्स

धुएँ के बीच

चीनी शासकों द्वारा संपत्ति हड़प लिए जाने के भय से लु हांग भारत चला आया। मगर चीनियों ने उसे यहाँ भी आ दुबोचा। तभी भारतीय छापामार दल ने उस की रक्षा की... एक निरीह नागरिक के विरुद्ध चीनी शासकों की निमंमतापूर्ण कहानी।

मौत के आंसू

राजन मडुला के साथ रंग-रलियाँ मनाने अलकापुरी पहुँचा मगर वहाँ उस की मुलाकात मडुला की बजाए उस की लाश से हुई। हालात राजन को ही हत्यारा साबित करते थे मगर हत्यारा कौन था?

कलंक रेखा

पतिपत्नी की मुमकराती जिंदगी में लीला ने अविश्वास की दलदल पैदा कर दी और राजेश रानी से नफरत करने लगा। क्या मचमुच ही रानी के डा० घोष के साथ अनैतिक संबंध थे? या राजेश ही लीला के गदराएँ जिस्म का प्यासा हो गया था?

हंसने की बारी

रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे जिसे आप बारबार पढ़ना चाहेंगे।

प्रतिशोध

एक जरमन सैनिक की सच्ची कहानी जिस ने अपनी सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया।

आंख मिचौनी

एक ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोग... निर्लिप्त से मम्मीपापा, जीवन से कटीकटी रीता भाभी, जिंदगी की घनीभूत पीड़ा की शिकार पल्लवीजी, जीने की अदम्य लालसा से प्रेरित सुधीर बाबू और राज?--- शायद इन सब का योगफल।

—प्रत्येक रु. 4



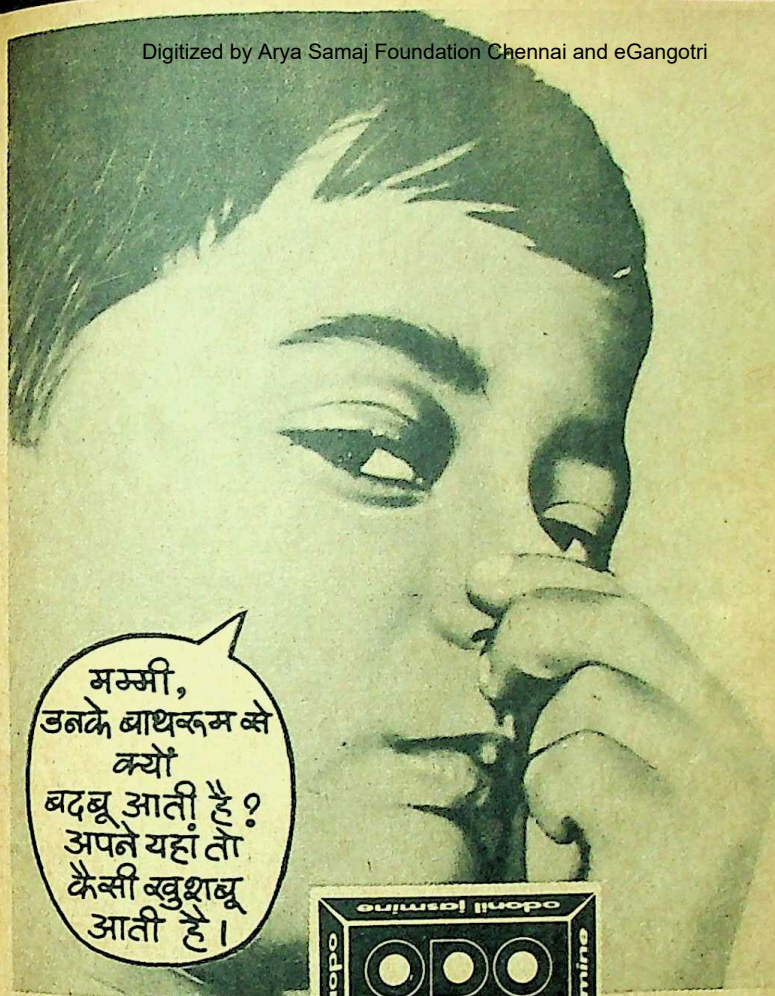
पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट, मादेश के साथ पांच रुपए ग्रयिम भेजें.



मम्मी,
उनके बाथरूम से
क्यों
बदबू आती है ?
अपने यहां तो
कैसी खुशबू
आती है।

मुझे, हम
ओडोनिल
रखते हैं ना।



ओडोनिल से आपके शौचालय की बदबू
फ़ौरन मिट जाती है और आपका शौचालय
ताज़गी और खुशबू से महक उठता है।
ओडोनिल कई सुगंधों में मिलता है।
विभिन्न साइजों, मॉडलों और पैक में मिलता है।

बलसारा
—सुखी जीवन के लिए
आधुनिक साधन
BALSARA बलसारा एण्ड कं. (प्रा.) लि.
४३, मणिमदाल मास्तर रोड, बम्बई ४०० ००५

CHAITRA-BLS-7 HIN REV.

CHAMPAK

NOW a unique

CHAMPAK

A colourful, captivating, monthly magazine in English from the publishers of
CARAVAN & WOMAN'S ERA

Delhi Press, the publishers of famous and fast-selling Hindi and English magazines, now bring a new magazine in English for your young children. A magazine that is modern, colourful and beautifully printed. No longer dependence on foreign comics that teach your children violence and mischief in the name of adventure and entertainment.

CHAMPAK on one hand, rejects the comic formula and on the other hand, liberates young minds from the cocktail of mythological and tragic tales of horror, romance and magic. **CHAMPAK** is the modern magazine for children of jet age which teaches them values of honesty, hardwork, friendship and bravery.



Best gift for your children

CHAMPAK is also the key to knowledge for young children as it brings to them the latest information and keeps them ahead of others.

Short Stories of **CHAMPAK** do not have princes or princesses as characters. They are either young children like the readers or animals which fascinate children.

Your children can remember its poems in a jiffy and recite them in classrooms or to your guests. Its jokes will entertain them. Its picture stories will amuse them for hours.

*Buy **CHAMPAK** for your children today*

One Copy Re 1 only

One Year Rs 10 only

*Available from your nearest newspaper agent.
For subscription write to :*

CHAMPAK

Delhi Press Building,

Jhandewala, New Delhi - 55.



बढ़ता बचपन बलवान बने- इन्क्रिमिन* से

बचपन के दिन, फलने-फूलने,
बढ़ने के दिन! इन दिनों बच्चों का
शरीर फूल की तरह खिलता है-
विकसित होता है, इन्हें इन्क्रिमिन
सिरप जरूर दीजिये। फिर देखिये,
खाने से आनाकानी के बजाये इनकी
भूख कैसे जाग उठती है—खाया पिया
तन को लगने लगता है। लाभदायक
विटामिन और लोहतत्वों से परिपूर्ण
इन्क्रिमिन में, विशेष अमीनो एसिड,
लायसिन भी शामिल है—जो आहार के
सभी पोषक तत्वों को ग्रहण करने में
सहायता देता है।



**वाहवाह!
व्याकह्वे!**
घणाघप वो स्वाये-
झटपट बढ़ता जाये!

डॉप्स— २ महीने से २ साल के बच्चों के लिये
सिरप— १४ साल तक के बच्चों के लिये

इन्क्रिमिन* टॉनिक अधिक आहार से अधिक बढ़ाये- स्वाया पिया अंग लगाये!

डाक्टरों का विश्वासपात्र नाम **Ledarte** सायनामिड इन्डिया लिमिटेड का एक विभाग

* अमेरीकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

175 ml

Incremin syrup

WITH IRONIC TONIC APPETITE STIMULANT

Incremin syrup WITH IRONIC TONIC APPETITE STIMULANT IS A FAVORABLE CHILDREN OF ALL AGES

Sista's-INC-202 D/75 N in

उकड़ें हुए
कलपुर्जे
किरकिराने वाले
कानखवाह साइकलें
चिरचिराने वाले फायदर
मरम्मत के खर्चे

आप ऐसा महसूस
करने लगे

हमेशा
के लिए आवाजों से
बचाए



सिंगर

जो पेश करती है
वह चीज बढ़िया होती है

चिकनाहट, सुरक्षा और मरम्मत
के खर्चों की बचत

* सिंगर कंपनी का ट्रेडमार्क

maa-SSM 27 HIN

मुन्ने के लिए आपका आजमाया हुआ
सर्वोत्तम पाउडर...



आप के लिए भी
सर्वोत्तम है



जान्सन्स बेबी पाउडर, केवल आप जैसे लोगों के लिए एक खास पाउडर, आनंद का ऐसा अनुभव आपको अन्य किसी पाउडर से न हुआ होगा, इसे छिड़किए, आपकी त्वचा पर कोमलता बरसेगी—ऐसी कोमलता, जिसमें संसार की सबसे स्वाभाविक सुगंध रचीबसी है, जान्सन्स बेबी पाउडर को विशेष ढंग से शुद्ध और मुलायम बनाया जाता है ताकि नर्म त्वचा पर यह पतली समान लगे, इसीलिए ७५ वर्षों से यह शिशुओं के लिए विश्वव्यापी है, और इसीलिए आप के लिए भी सर्वोत्तम।

जान्सन्स
बेबी पाउडर

नन्हे मुन्ने यही चाहें, आप भी जान्सन्स बेबी पाउडर लगाएं

* Trade Mark © Johnson & Johnson



आपका
सुंदर चेहरा
आपकी
सबसे बड़ी
पूंजी



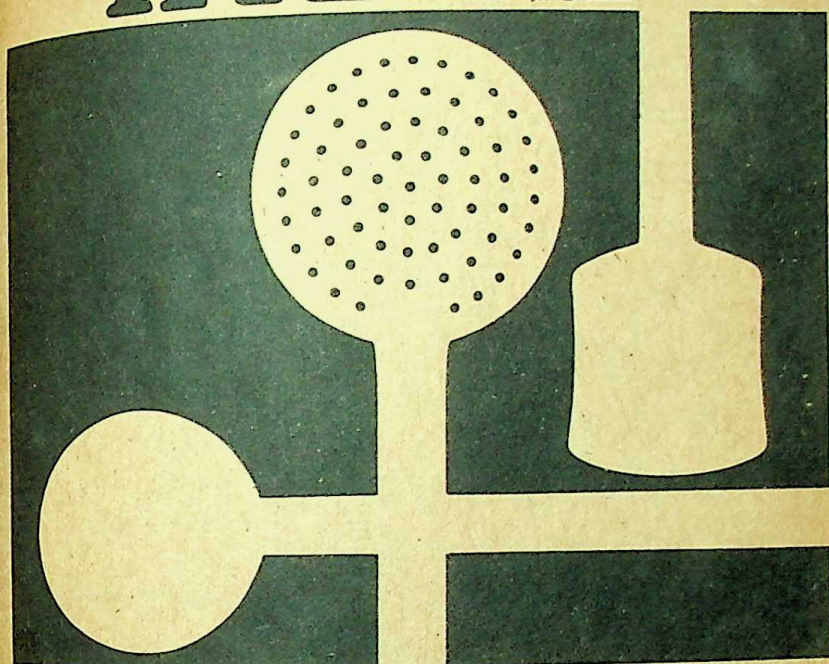
इसकी सही
साजसंवार कीजिए

अफगान स्नो. एक संपूर्ण सौंदर्य प्रसाधन. आप को
त्वचा को सुबह की ओस की पंखुड़ियों की तरह
मुलायम रखने के लिए.

महिलाएं अपने सौंदर्य के लिए अफगान स्नो के
ऊपर पूरा भरोसा करती हैं. इस के पीछे कोई न
कोई रहस्य जरूर छिपा हुआ है.

अफगान स्नो . एक संपूर्ण सौंदर्य प्रसाधन.

सिर्फ पोस्टमेन ब्रान्ड न और कोई ची या तेल की जरूरत



एक अच्छी आदत, एक सेहतमंद आदत

पोस्टमेन सबसे परिशुद्ध मूँगफली का तेल है। और इसके इतने सेहतमंद होने का कारण यह है कि इस में कम चिकनाई है, विटामिन ए और डी हैं और यह पचने में आसान है। पोस्टमेन में कोई स्वाद या गंध नहीं, इसलिए इसमें पकाने से खाने का प्राकृतिक मजेदार स्वाद उभर आता है। पोस्टमेन तेल न तो जमता है और न धुआँ छोड़ता है। इसका मतलब है कम बिगाड़ और कम तकलीफ़। और चूँकि पोस्टमेन तेल दुबारा इस्तेमाल किया जा सकता है इसलिए ज्यादा किफ़ायती है। घर में पोस्टमेन तेल के होते हुए, अन्य किसी घी, वनस्पति या तेल की जरूरत नहीं। इसीलिए और ज्यादा गृहिणियाँ अपनी रोज़-रोज़ की रसोई पकाने के लिए पोस्टमेन ही पर भरोसा रखती हैं। पोस्टमेन—रसोई के सर्वोत्तम माध्यम के जानकार उत्पादक ने तैयार किया है।



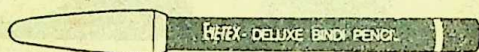
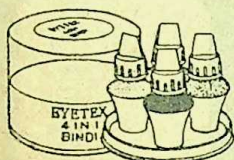
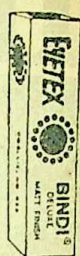
पकाइये, भूनिये या तलिये
पोस्टमेन

सब प्रकार की रसोई का सेहतमंद माध्यम।

अहमदमिल्स बम्बई • कलकत्ता • नई दिल्ली • बंगलौर • अहमदाबाद

OBM/4496 HIN

एटेटेक्स सौंदर्य प्रसाधन



ARAVIND LABORATORIES MADRAS-600 033

बीरबल की सूफबूझ



अकबर और बीरबल के मजेदार हास्यव्यंग्य और छटकुलों से परिपूर्ण यह संग्रह बड़ी मेहनत से तैयार किया गया है. बीरबल की हाजिरजवाबी और सूफबूझ तो संकड़ों बरों से विख्यात है ही. यदि एक बार पुस्तक पढ़ना आरंभ कर दें तो उसे पूरी समाप्ति किए बिना आप रह नहीं सकते.

प्राण ही मगा कर पढ़िए और भरपूर आनंद उठाइए.

मूल्य : 4.00 रुपए (डाक खर्च अतिरिक्त)

दिल्ली बुक कंपनी

एम/12, कानूनी सचिव, नई दिल्ली-1

10,000 रुपए का पुरस्कार

मौलिक उपन्यास प्रतियोगिता

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना

सरिता ने सदैव ही प्रेरक और सार्थक साहित्य को एक नई दिशा दी है और प्रतिभाशाली कथाकारों को अपना स्थान बनाने का अवसर दिया है. इसी अभियान के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ मौलिक हिंदी उपन्यास पर 10,000 रुपए के पुरस्कार की घोषणा की जा रही है.

नियम एवं शर्तें :

1. उपन्यास मवंथा मौलिक, अप्रकाशित और अप्रसारित होना चाहिए. प्रकाशित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा.
2. उपन्यास राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति की प्रगति व चरित्र निर्माण में सहायक होना चाहिए. कथानक उद्देश्यपूर्ण हो, मनोरंजक हो और प्रेरणादायक हो तथा पाठकों को कुछ सोचनेसमझने तथा अपने परिवार, समाज व देश के प्रति कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दे सके. असफल प्रेम, जामूसी, तस्करी, मारघाड़, वेश्यावृत्ति आदि पर आधारित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा.
3. पांडुलिपि फुलस्केप आकार के कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर टाइप की हुई होनी चाहिए. शब्द संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है, पर अनावश्यक रूप से लंबे विवरण नहीं होने चाहिए.
4. पुरस्कार योजना के लिए भेजे गए उपन्यास को निर्णय घोषित होने तक कहीं और विचारार्थ नहीं भेजा जाना चाहिए.
5. सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार को 10,000 रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा.
6. अन्य उपन्यासों को भी उन के स्तर के अनुसार उपयुक्त पुरस्कार/पारिश्रमिक दिया जा सकता है.
7. पुरस्कृत उपन्यासों के सर्वाधिकार (कापीराइट) सरिता के पास सुरक्षित रहेंगे.
8. रचनाओं के संबंध में सरिता संपादक मंडल का निर्णय अंतिम और मान्य होगा.
9. यद्यपि पांडुलिपि की यथासंभव देखभाल की जाएगी. फिर भी कार्यालय, किसी रचना के खो जाने, फट जाने या नष्ट हो जाने अथवा लेखक या उस की कृति को किसी तरह की हानि-पहुंचने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा.
10. असफल पांडुलिपियों की वापसी के लिए पर्याप्त डाक टिकट आने आवश्यक हैं अन्यथा उन्हें वापस नहीं किया जाएगा.
11. इस प्रतियोगिता के लिए भेजे गए उपन्यासों के संबंध में पत्रव्यवहार करना संभव नहीं होगा.
12. प्रत्येक पांडुलिपि के साथ यह प्रमाणपत्र आना आवश्यक है कि वह लेखक की मौलिक रचना है, किसी अन्य रचना पर आधारित नहीं है और पहले कहीं किसी भी रूप में प्रकाशित, प्रसारित, प्रदर्शित नहीं हुई है तथा लेखक की रचना के विषय में सरिता संपादक मंडल का निर्णय स्वीकार होगा. पांडुलिपि के साथ पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ सहित उपन्यासकार का संक्षिप्त परिचय आना भी आवश्यक है.

अपनी पांडुलिपियां 31 अक्टूबर, 1975 तक निम्न पते पर भेजें :

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना,

चिन्मय प्रोस. प्रबन्ध, आंध्रवाङ्मय, एस्टेट, नई दिल्ली-55.

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब में अलग हैं- विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद
अपने संक्षिप्त जीवन का
और संक्षिप्त बना देना
चाहता था, ऐसे में नीला
ने निस्वार्थ भाव से विनोद
को नई जिंदगी दी,
स्त्री और पुरुष के सात्विक
प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिल्लुड़े:
गीता की शादी इंग्लैंड में
वसे राम के साथ तय
हुई तो उसे लगा जैसे वह
भावना के स्वर्गलोक में
जा रही है, मगर...
ब्रिटेन में बसने वाले
भारतीयों की अपमान-
जनक जिंदगी की सच्ची
तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:

तैमूर लंग ने एक दिन में
एकएक लाख हिंदुओं को
कत्ल कर के भारत की
धरती को खून से लाल
कर दिया, फिर भी कई
हिंदू उस के पैर चूमने
में अपना मौभाग्य समझते
थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:

अनाथ राजा करज और
आर्य कन्या अंजलि का
प्रेम?—असंभव.
परिणाम क्या हुआ?...
ईसा से तीन हजार वर्ष
पूर्व की भारतीय सभ्यता
व संस्कृति की रोमांचक
कहानी.

उत्तरदान:

रहस्य, रोमांस व रोमांच
का पुट लिए स्वतंत्रता
संग्राम में भाग लेने वाले
उन वीरों की कहानी
जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में
असफल होने के बावजूद
भी अपने बच्चों के
उत्तरदान में स्वतंत्रता
पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:

टिशांग कमवे के भोले-
भाले नागरिकों को
चीनी गुलाम बनाना
चाहते थे, क्या वे इस
में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4



पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

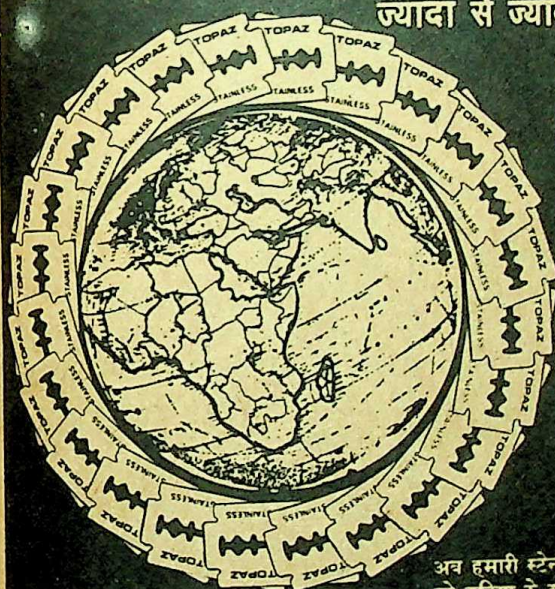
विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
पूरा सेंट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए ग्रगिम भेजें.

टोपाज़ संबंधी तथ्य-संख्या २.

अब टोपाज़ दुनिया भर में।

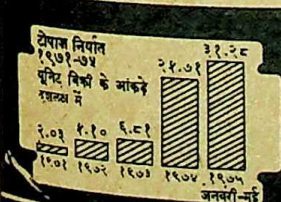


ज्यादा से ज्यादा देशों में ज्यादा से
ज्यादा लोग विदेशी
ब्लेडों के मुकाबले में
टोपाज़ को ज्यादा
पसंद करते हैं।

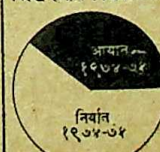
कच्ची सामग्री के आयात के लिए हमें जितनी विदेशी मुद्रा खर्च करने की अनुमति दी गई थी, उस से डेढ़ गुनी विदेशी मुद्रा हमने अपने टोपाज़ के उत्पादन के केवल कुछ भाग के निर्यात द्वारा कमा ली। वह भी विदेशी सहयोग और विदेशी व्यापारिक नाम के बिना।

अब हमारी स्टेनलेस टेक्नोलॉजी ने भारत को दुनिया के दूसरे देशों के साथ खड़ा किया है।

यह चौंका देनेवाले आंकड़े खुद ही देख लीजिये :



अनुमति प्राप्त आयात के
विरुद्ध हमारा निर्यात कार्य



जुड़ पर ज्यादा खर्चा क्यों करते हैं जबकि केवल २५ पैसे* में टोपाज़ ज्यादा अच्छा काम करता है ?
*आन्वीर टैक्स व ड्यूटी प्रतिशित ।

CONCEPT-MI-2072H

रवींद्र साहित्य

पर
दस प्रतिशत
छूट



गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की पुस्तकों के बिना आप का घरेलू पुस्तकालय अधूरा है। विश्वविख्यात रवींद्र साहित्य अब हिंदी में भी सुलभ है। दक्ष अनुवादकों द्वारा तैयार रवींद्रनाथ की पुस्तकें अब बहुत ही सस्ते मूल्य में उपलब्ध हैं। ये पुस्तकें स्वयं पढ़ने तथा उपहार देने योग्य हैं— आज ही इन का आर्डर दीजिए।

रवींद्रनाथ की कहानियां				रवींद्रनाथ के निबंध (प्रथम खंड)	
21 कहानियां, 403 पृष्ठ	8.00			धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा ग्रामसुधार संबंधी चुने हुए निबंध.	15.00
रवींद्रनाथ के नाटक (प्रथम खंड)				रवींद्रनाथ के निबंध (द्वितीय खंड)	
'विसर्जन,' 'चित्रांगदा' और 'चिरकुमार सभा' का				आत्मकथा, साहित्य समीक्षा, चारुलेख आदि विविध विधाओं के 45 प्रेरणाप्रद लेख, पृष्ठ 479.	12.00
305 पृष्ठ का संग्रह	8.00			रवींद्रनाथ की कविताएं	
रवींद्रनाथ के नाटक (द्वितीय खंड)				एक सौ एक चुनी हुई कविताओं का संग्रह, पृष्ठ 326	12.00
'राजा,' 'डाकघर,' 'मुक्तधारा' और 'रक्त करवी' का				गोरा	
286 पृष्ठ का संग्रह	8.00			उपन्यास, पृष्ठ 455	8.00
रवींद्रनाथ का बाल साहित्य				योगायोग	
73 बालोपयोगी कहानियां, कविताएं व निबंध, 312 पृष्ठ	7.50			उपन्यास, पृष्ठ 252	6.00
आंख की किरकिरी					
प्रसिद्ध उपन्यास 'चोखेर बालि' का हिंदी रूपांतर, पृष्ठ 230	5.00				

डाक खर्च अतिरिक्त. वी. पी. पी. से मंगाने के लिए
5 रु. अग्रिम भेजें.

प्राप्ति स्थान—

दिल्ली बुक कंपनी,

12-एम, कनाट सरकस, नई दिल्ली-I

संपादक के नाम



आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, विशेषकर उन विद्यार्थियों को, जो इंजीनियरिंग या मेडिकल के छात्र हैं। महंगी पुस्तकें व उपकरण उन्हें खरीदने होते हैं। ऐसी स्थिति में लेखक के मुझाव अत्यंत उपयोगी हैं।

—भूपेंद्र कुशवाहा, उज्जैन

अप्रैल (द्वितीय) अंक में 'दुश्मनों के बोच' (धारावाहिक उपन्यास : सुशील अग्रवाल) की समापन किस्त पढ़ी। सरिता-मुक्ता के अन्य धारावाहिक उपन्यासों की अपेक्षा इस में विलकुल रस नहीं था। स्थानों के नाम असली होने के बावजूद यह पूर्णतया काल्पनिक लगा। जिस प्रकार हिंदी फिल्मों एवं जासूसी पुस्तकों के नायक हर कार्य में सफलता प्राप्त कर लेते हैं, उसी प्रकार छोटी उम्र के अविनाश को भी सफलता मिलती जाती है।

—रमेश छावरीया, रायपुर

अप्रैल (द्वितीय) में प्रकाशित 'पढ़ाई और महंगाई' (लेख : श्याममनोहर व्यास) बेहद पसंद आया। आज जब कि हर वस्तु के भाव आसमान छू रहे हैं, मध्यम वर्ग के छात्रों को अपने अध्ययन में भारी

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं। साथ ही, आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं। प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो। पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, संडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

अप्रैल (द्वितीय) अंक में 'रीता जैन' (भेंटवार्ता : विनयकुमार झैलावत) रोचक लगी। रीता जैन को कलकत्ता में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में आमंत्रित नहीं किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के खेल की तकनीक देखने और समझने का इस से अच्छा अवसर अब शायद उसे उपलब्ध न हो सके। अधिकारियों ने उस की उपेक्षा क्यों की, इस का कोई उचित कारण नहीं है।

—मदन दावड़ा, इंदौर

अप्रैल (द्वितीय) के 'मुक्त विचार' में 'अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष : मखौल ही मखौल' शीर्षक में व्यक्त आप के विचार बहुत ही तर्कपूर्ण लगे। आप के कथनानुसार अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष से साधारण महिलाओं को कुछ लाभ हो या न हो, कुछ पढ़ीलिखी स्वयंभूषित नेत्रियों को घड़ाधड़ हो रहे सेमिनारों व गोष्ठियों में चायपानी उड़ाने का अच्छा मौका अवश्य मिल रहा है। इस विषय में जहां तक हमारे देश का संबंध है, केवल कागजी कार्रवाई से साधारण महिलाओं की गिरी दशा पर कोई हितकारी प्रभाव नहीं पड़ सकेगा। समाज सेवा या राजनीति इतना सरल खेल नहीं। यह खेल भी है, परंतु ऐसा खेल, जिस में तन, मन, धन सब कुछ अपित कर देना होता है।

—प्रसेज कमर जिया, लखनऊ

अप्रैल (द्वितीय) अंक पढ़ा। इस में प्रकाशित 'शरद यादव' (भेंटवार्ता : चैतन्य भट्ट) में बेरोजगारी की समस्या के विषय में पूछा गया एक प्रश्न है, जो गलत लगता है। प्रश्न की शब्दावली पर गौर कीजिए,

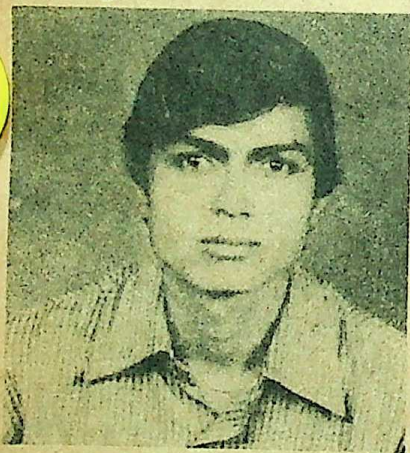
“छात्रों की बढ़ती बेरोजगारी के विषय में आप के क्या कदम होंगे?” यदि कोई छात्र है तो उस का रोजगार अध्ययन है। अतः वह बेरोजगार नहीं, और यदि वह बेरोजगार है तो छात्र नहीं हो सकता।

मेरी राय में प्रश्न इस तरह होना चाहिए था, “शिक्षित बेरोजगारों की बढ़ती संख्या के बारे में आप के क्या कदम होंगे?”

—श्याम आठले, सतना

मई (द्वितीय) अंक में प्रकाशित ‘शोध छात्र और उन के निर्देशक’ (लेख :

मुक्ता के लेखक



उत्सवकुमार चतुर्वेदी

इस अंक में प्रकाशित लेख ‘सेक्स फर्मोंस’ के लेखक श्री उत्सवकुमार चतुर्वेदी का जन्म मार्च, 1952 को मुबारकपुर गांव में हुआ। आप ने भौतिक शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है तथा संप्रति भौतिकी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय में शोध कार्य कर रहे हैं। कहानी, नाटक, उपन्यास तथा वैज्ञानिक लेख लिखने में आप की रुचि है।

व निर्भीक चित्रण किया गया है। ऐसी स्थिति में कुंठाग्रस्त केवल वह छात्र होता है जो वास्तव में कुछ कर दिखाना चाहता है और उस की राह में रोड़े अटकाए जाते हैं। बाकी जो समय काटने के लिए शोध करते हैं, उन के लिए तो यह अनुकूल स्थिति है कि निर्देशक को मक्खन लगाया और किसी प्रकार पीएच. डी. की डिग्री हासिल कर ली। निर्देशकों के हाथ में इतने अधिकार होते हैं कि वे किसी भी शोध छात्र का कैरियर बिगाड़ सकते हैं।

शायद इसी कारण निर्देशकगण शोध छात्रों से कार्य की कम और अनुनय-विनय की अधिक आशा करते हैं।

सुनीलकुमार जैन, दिल्ली

मई (प्रथम) में ‘मुक्त विचार’ के अंतर्गत ‘परीक्षार्थी और न्यायालय’ पढ़ा। अहमदाबाद उच्च न्यायालय ने परीक्षा में नकल करने के बाद शेष प्रश्नपत्रों की परीक्षाओं में बैठने के लिए दे कर छात्रों के प्रति न्याय किया है। पर दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा कम उपस्थिति वाले छात्रों की याचिका स्वीकार किया जाना गलत लगता है। कम उपस्थिति होने पर छात्र पाठ्यक्रम पूरा नहीं कर सकेंगे, फिर कम उपस्थिति वाले छात्र जब परीक्षाओं में बैठेंगे तो शिक्षा के स्तर में गिरावट आएगी।

“कालिजों के अधिकारी अदालत के झंझटों से बचने के लिए परीक्षा में नकल या कम उपस्थिति जैसे सीधे मामलों में भी कोई कदम न उठाएंगे, इस से अनुशासनहीनता को बढ़ावा मिलेगा,” आप की इस बात से मैं सहमत हूँ। इन मामलों से निपटने के लिए मासिक परीक्षाएं ली जानी चाहिए। मासिक परीक्षाओं के परीणामों के आधार पर ही वार्षिक परीक्षा का परिणाम निर्धारित हो। इस से छात्रों की उपस्थिति भी बनी रहेगी।

—संतोष मालवीय, इटारसी •

बहुत दिनों तक सुनिये बढ़िया आवाज़ में सुनिये



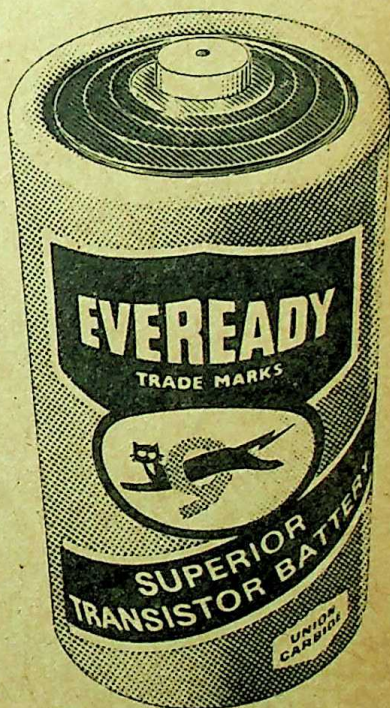
लीकप्रूफ़

१०५५ ट्रांज़िस्टर बैटरियाँ

बढ़िया काम के
साथ-साथ सुरक्षा

इस बैटरी में इस्तेमाल किये
जाने वाले ई एम डी रासायनिक
मिश्रण इस बात को सुनिश्चित
करते हैं कि आवाज़ ज़्यादा साफ़
होगी और बैटरी ज़्यादा
दिनों तक चलेगी।

सेल की विशेष बनावट और कई
तहवाले इसके जैकेट तथा
मेलुलोज़ ऐसिटेड लेबल के कारण
बैटरी लीकरोधक होती है,
जिससे आपके ट्रांज़िस्टर को कोई
नुकसान नहीं पहुँचता।



एवरेडी

हमेशा ही सबसे आगे और लाजवाब

UNION
CARBIDE

HT-UC-8185

जब भी आप क्रीमती शैंपू से बाल धोती हैं अपना बहुमूल्य पैसा
पानी के साथ बहा देती हैं. इसलिये अब बाल धोने के लिये लाइये...

卐 स्वस्तिक
शिकाकाई
शैंपू साबुन

लिक्विड शैंपू के
सभी गुणों से युक्त...
और स्पर्च कम !



卐 स्वस्तिक शिकाकाई शैंपू साबुन में
शिकाकाई मिला है—भारतीय महिला के मनोरम बालों का
पारम्परिक रहस्य.

क्या यह समय नहीं है कि आप भी पहनें ?



कब से आप, यदि
और लोगों से नहीं तो
अपने आप से, कहते आ
रहे हैं कि ग्वालियर सूटिंग
आपकी मनपसन्द सूटिंग है ? फिर
क्या कारण है कि आपने अब तक इसे नहीं
अपनाया। अपने वर्तमान सूटिंग से संतोष ?
एक बार अगर 'ग्वालियर सूटिंग' पहन लें तो आपके
यह विचार बदल जायेंगे।

कीमत ? वह तो बहुत ही उचित है। ग्वालियर सूटिंग के असाधारण गुणों की तुलना
पैसे से नहीं की जा सकती और इसकी किस्म तो बेमिसाल है। आप कहीं यह तो नहीं महसूस
करते कि वर्षों से आपके सूटिंग के बारे में जो विचार बन गये हैं, उसका मुकाबला
ग्वालियर सूटिंग नहीं कर सकेगा ? आप निश्चित रहिए, ग्वालियर सूटिंग का कोई जवाब नहीं।
इसमें उत्तम डिजाईन और उत्कृष्ट बनावट का ऐसा मेल है कि यह आपकी
आशा के अनुरूप उतरेगा और पूरी संभावना है कि यह
आपको उम्मीद से भी ज्यादा अच्छा साबित हो।
ग्वालियर सूटिंग में आपका व्यक्तित्व सही तरह से
निसरेगा। अब और क्या सोचने को शेष है ?

**GWALIOR
SUITING** 

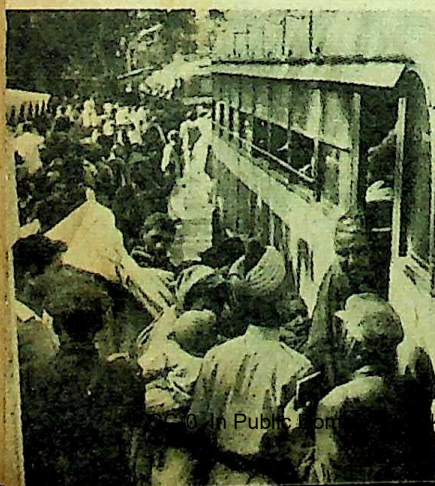
आपके पैसे का सर्वोत्तम मूल्य

दि ग्वालियर रेयान सिल्क मेन्यूफैक्चरिंग (वीविंग) कं० लि०, बिरलानगर, ग्वालियर (म० प्र०)

राजधानी में
प्रायः हर साल
बसों की संख्या
बढ़ाई जाती है
और उस के
साथ अमला-
फैला भी,
लेकिन फिर भी
परिवहन की
दशा दिन प्रति
दिन बदतर
क्यों होती जा
रही है?

दिल्ली परिवहन निगम

लेख
विशेष
प्रतिनिधि



एक प्रतियोगी परीक्षा में एक बार सवाल पूछा गया, राजधानी की सब से बड़ी समस्या क्या है? 95 प्रतिशत परीक्षार्थियों का जवाब था : स्थानीय परिवहन. यह उत्तर अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है.

दिल्ली में 40 लाख लोग इधर से उधर यात्रा के लिए बसों पर निर्भर रहते हैं. सुबहशाम के व्यस्त घंटों के अलावा भी बस स्टॉपों पर प्रतीक्षारत लोगों के झुंड घंटों बाद आई बस के पीछे गिरते-पड़ते भागते हैं.

असाई (द्वितीय) 1975

दिल्ली में पुलिस विभाग हर रोज दैनिक अपराधों और दुर्घटनाओं के लिए एक विवरण निकालता है. पुलिस के जन संपर्क अधिकारी के अनुसार परिवहन की बसों में फुटवोर्ड पर लटकने के कारण कभीकभी मर जाने वालों का इन विवरणपत्रों में प्रायः उल्लेख नहीं किया जाता. आखिरकार इस में नया है भी क्या?

गत बीस वर्षों में दिल्ली परिवहन का ढांचा कई बार बदल चुका है. पहले यह दिल्ली परिवहन सेवा कहलाती थी. फिर इस का नाम दिल्ली परिवहन अधिकरण हो गया. इन दोनों स्थितियों में यह दिल्ली नगर निगम के अधीन थी. कुछ रास्तों पर प्राइवेट बसें भी चलाने की इजाजत दी गई. पर स्थिति नहीं सुधरी. 1971 में इसे दिल्ली परिवहन निगम बना दिया गया. इस प्रकार इसे

खास मार्गों के लिए परिवहन ने 300 प्राइवेट बसों को भी धरने की अनुमति दी हुई है जिन से यह एक रुपया 10 पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से किराया लेते हैं. हालांकि प्राइवेट बसों को दिए गए अधिकांश रूट आमदनी के हिसाब से काफी खराब हैं, फिर भी प्राइवेट बस वालों का दावा है कि वे 50 से 100 रुपए तक रोज कमा लेते हैं.

दिल्ली परिवहन की बसों को 18 हजार चक्कर रोज लगाने चाहिए, लेकिन ये केवल 11 हजार चक्कर लगाती हैं. क्योंकि हर रोज कुल मिला कर 356 बार बसें खराब हो जाती हैं. वर्कशाप के मुख्य इंजीनियर श्री पी. आर. सुब्रह्मण्यम के अनुसार एक बस को ठीक करने में 30 से 350 दिन लग सकते हैं. यह अवधि खराबी और बदले जाने वाले पुर्जों की उपलब्धता पर निर्भर करती है. दिल्ली में



स्वायत्त संस्था का रूप दे कर सीधे केंद्रीय यातायात मंत्रालय के अधीन कर दिया गया.

अधिकृत जानकारी के अनुसार दिल्ली परिवहन के पास 1,680 बसें हैं जब कि आवश्यकता 3,000 बसों की है. इन 1,680 बसों में से केवल 900 ही चालू हालत में सड़कों पर चलने योग्य हैं. शेष मरम्मत के लिए उस वर्कशाप में हैं जिसे एशिया की सर्वश्रेष्ठ साधनयुक्त बस वर्कशाप माना जाता है. इन खराब बसों की कमी को पूरा करने के लिए कुछ



प्रति 10,000 किलोमीटर पर ब्रेक डाउन
की 14 शिकायतें आती हैं। बंबई में यह
संख्या पांच है।

इस प्रश्न का किसी भी अधिकारी के पास कोई जवाब नहीं था कि वसों इतनी जल्दी क्यों खराब होती हैं और उन के ठीक होने में इतना समय क्यों लगता है।

विदेशों में बसों के टायर 1,20,000 किलोमीटर के बाद बदले जाते हैं। कलकत्ता में औसत टायर 60,000 किलोमीटर चलता है जब कि दिल्ली में 20,000 किलोमीटर के बाद टायर बेकार करार दिया जाता है। सैकड़ों बसों केवल नए टायरों के अभाव में वर्कशाप में खड़ी रहती हैं। 20,000 किलोमीटर के बाद टायर बदलने का नियम बहुत साल पहले बना था जो न जाने आज भी क्यों चल रहा है। कुछ महीने पहले 2,000 नए टायरों के लिए धन का भुगतान किया गया था, पर वे आज तक नहीं पहुंचे।

बस चालकों की आम शिकायत है कि जब वे खराब बस के पुर्जों बदलवाने के लिए वर्कशाप जाते हैं तो उन्हें इंजीनियर से जांच करवा कर स्टोर में यह लिखवाना पड़ता है कि उन्हें क्या-क्या सामान चाहिए। हर बार इंजीनियर उन्हें आवश्यकता के अलावा सामान लिखवाने पर मजबूर करते हैं। इस अनावश्यक सामान को चोरबाजार में बेच दिया जाता है। जो ड्राइवर मान जाते हैं उन्हें उन का हिस्सा दे दिया जाता है, अन्यो के खिलाफ खराब रिपोर्ट लिखवा कर उन्हें दंडित किया जाता है।

यूनियनबाजी

वर्कशाप में यूनियनबाजी का भी खूब बोलबाला है। अनुशासनहीनता के कारण प्रायः काम नहीं होता। नए प्रमुख इंजीनियर ने आते ही कुछ सख्त कदम उठाए जिस के कारण अधीनस्थ कर्मचारियों ने विद्रोह कर दिया। इस पर परिवहन ने पुराने कर्मचारियों को रखते हुए नए कर्मचारियों की भर्ती कर ली। थोड़े दिनों में नए भी पुरानों के साथ मिल गए।

गत 16 अगस्त, 1974 को राज्य सभा में दिल्ली परिवहन पर एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के दौरान सरकार की ओर से स्वीकार किया गया कि 5,000 टायरों पर रबड़ चढ़ाया जाना (रिट्रीडिंग) बाकी है। इस के अभाव में सैकड़ों बसों खड़ी हैं। रबड़ चढ़ाने की व्यवस्था दिल्ली परिवहन के पास उपलब्ध है, लेकिन इस का ठेका किसी और को दिया गया।

दिल्ली परिवहन के पास केवल एक तर्क है कि उस के पास नई बसें खरीदने और नए पुर्जे उपलब्ध कराने के लिए पैसा नहीं है। मार्क्सवादी संसद सदस्य मैथ्यू कूरियन के अनुसार परिवहन ने 20 लाख रुपया सरकार से 10 प्रतिशत पर उधार ले कर हैदराबाद के बस ढांचे बनाने वाली एक कंपनी को 7 प्रतिशत पर उधार दे दिया।

प्राइवेट बसों का दावा है कि वे प्रति मास 2,000 रुपए प्रति बस कमा सकते हैं और जब परिवहन ने बसें चलाने की अनुमति दी हुई थी तब कमाया भी था। तब क्या कारण है कि दिल्ली परिवहन की बसें घाटे में चलती हैं?

बस यात्रियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस के लिए किन्हीं आंकड़ों की जरूरत नहीं है। इस के विपरीत गत वर्षों की आडिट रिपोर्टों के अनुसार यात्रियों की संख्या घट रही है। अर्थात् विकने वाली टिकटों की संख्या घट रही है। साफ है कि बगैर टिकट यात्रा करने वालों की संख्या बढ़ रही है।

दिल्ली परिवहन के पास 4,500 कंडक्टर हैं। 17 साल से परिवहन में काम कर रहे एक कंडक्टर का गौरवपूर्ण दावा है कि वह तथा उस के साथी कंडक्टर प्रति दिन 25 रुपए के हिमात्र से कमा रहे हैं। यह ए. टी. आई. (टिकट चैकर) के हिस्से के अलावा है। इस प्रकार दिल्ली परिवहन को सवा लाख रुपए रोज का घाटा केवल टिकटें न विकने की वजह से हो रहा है। परिवहन का यह कहना है कि उस के पास इतने कर्मचारी नहीं हैं कि वह टिकटों की चोरी रोकने के लिए हर बस में दो कंडक्टर तथा अधिक ए. टी. आई.



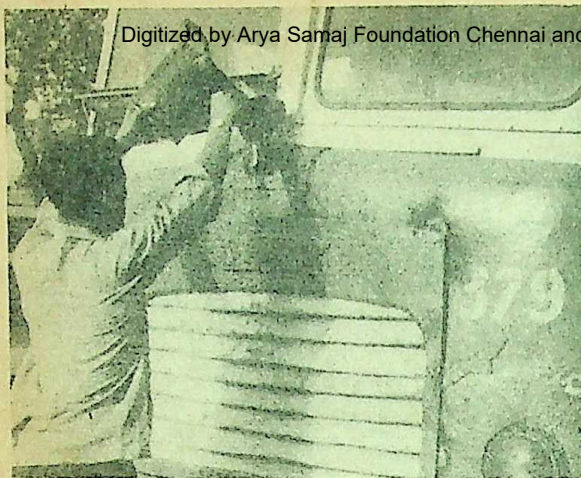
बसों की अनियमितता के कारण स्टैंडों पर इतनी भीड़ हो जाती है कि बस में घुसना आनेजाने वालों के लिए एक बहुत बड़ा सिरदर्द बन जाता है।

मुहैया कर सके। फरवरी, 1974 में 'नैशनल हेरल्ड' को दी गई एक भेंटवार्ता में परिवहन के महानिदेशक श्री एस. के. शर्मा ने कहा था कि दिल्ली परिवहन के घाटे का कारण अधिक कर्मचारियों का होना है। ये कर्मचारी क्या काम कर रहे हैं, यह समझ में नहीं आता।

हर बस में दो कंडक्टरों के अलावा यदि टिकटें हर स्टॉप पर बस में चढ़ने से पूर्व दी जाएं और ड्यूटी खत्म करने के बिंदु पर यदि हर कंडक्टर की नकदी की जांच हो तो टिकटों की चोरी की समस्या सुलझ सकती है।

दिल्ली परिवहन की बुराईयों को दूर करने हेतु गठित अखिल भारतीय यात्री संघ के उपाध्यक्ष जवाहर गोयल ने बताया कि दिल्ली परिवहन ने सिद्धांततः यह माना है कि सब से ज्यादा टिकट बेचने वाले कंडक्टर को भारी इनाम देने के प्रावधान से भी टिकटों की चोरी रुक सकती है। क्योंकि कंडक्टरों का यह उलाहना रहता है कि उन्हें वेतन इतना कम मिलता है कि चोरी के अलावा उन के पास कोई चारा नहीं बचता।

परिवहन के काम करने के तरीके में एक भारी अनियमितता प्राइवेट स्कूलों को



बीच रास्ते में ही बसों के
खराब हो जाने से यात्रियों
को भारी कठिनाई उठानी
पड़ती है

दी जाने वाली बसों में होती है. 900 चालू बसों में से व्यस्त घंटों में दिल्ली परिवहन 300 बसें प्राइवेट स्कूलों को अपने बच्चों को लाने ले जाने के लिए किराए पर देता है. इस के लिए वह एक रुपया 10 पैसे प्रति किलोमीटर किराया लेता है जब कि उस का अपना खर्च एक रुपया 70 पैसे पड़ता है.

ये स्कूल अपना अलग इंतजाम कर सकते हैं तथा अधिक किराया भी दे सकते हैं. उस के बावजूद घाटा उठा कर व्यस्तता के समय आम जनता की सुविधा की कीमत पर इन बसों को देना सरासर ज्यादाती है. क्योंकि इन स्कूलों में अफसरों के बच्चे पढ़ते हैं इसलिए शायद परिवहन मना भी नहीं कर सकता.

प्रायः देखा गया है कि यदि स्कूल बंद होने का समय तीन बजे हो तो भी ये बस वाले 12 बजे से ही वहां लाइन लगा कर खड़े हो जाते हैं. इस प्रकार इन 300 बसों को तो कुल हिसाब में से घटा ही देना चाहिए.

यात्री संघ ने बसों की इंतजार में बरबाद होने वाले समय का एक हिसाब लगाया है. मान लो, एक यात्री औसतन दिल्ली परिवहन की बसों के लिए एक घंटा इंतजार करता है. इस प्रकार हर रोज 40 लाख घंटे इंतजार करने में बरबाद हो रहे हैं. सरकारी हिसाब से आम भारतीय एक घंटे में छह आने कमाता है.

अदालती बसें

इस हिसाब से दिल्ली के नागरिकों को हर वर्ष दिल्ली परिवहन के कारण 48 करोड़ रुपए की हानि हो रही है.

दिल्ली परिवहन के पास पांच चलती-फिरती अदालतें हैं. इन में से केवल दो में प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट नियुक्त हैं. शेष में दिल्ली परिवहन के कर्मचारी तैनात रहते हैं. चलती बस में चढ़ने या उतरने वाले, बिना टिकट उतरने वाले और लाल बत्ती पर उतरने वाले यात्रियों को ये कर्मचारी पकड़ कर इन अदालतों में ले जाते हैं. यदि वहां मजिस्ट्रेट मौजूद हो तो जुर्माना कर देता है. जुर्माना न देने की स्थिति में यात्री को जेल भेज दिया जाता है.

यदि मजिस्ट्रेट उपस्थित नहीं है तो उन सब यात्रियों को 'अदालत' में भर कर परिवहन के मुख्यालय सिधिया हाउस ले जाया जाता है और वहां उस का फैसला होता है. अब इस में कई स्थितियां हैं. प्रायः कंडक्टर टिकट नहीं देते और पैसे ले कर यात्रियों को चलती बस से उतार देते हैं या ड्राइवर नियत स्टॉप पर बस नहीं रोकते. ऐसी स्थिति में यात्री को चलती बस में उतरना पड़ता है. यात्री कभी कंडक्टर पर आरोप लगाए तो उसे सच नहीं माना जाता. यदि यात्री मजिस्ट्रेट को अपनी बात समझाने का प्रयास

करे तो जुमले की रकम बढ़ जाती है इस स्थिति को न्यायसंगत बनाने के लिए केवल एक रास्ता है। पकड़े जाने पर यदि यात्री यह शिकायत करे कि कंडक्टर ने उसे पैसे लेने के वावजूद टिकट नहीं दिया तो वहीं पर कंडक्टर की नकदी को चैक किया जाए और टिकटों की कुल विक्री से ज्यादा होने पर उसे भी बराबर का दोषी माना जाए।

कंडक्टर को हमेशा सच्चा और ईमानदार तथा यात्री को हमेशा भूठा मानने वाली नीति गलत है। अकसर यह देखा गया है कि शिकायत की किताब मांगने पर या टिकट के लिए जोर देने पर कंडक्टर अपने पैसे की थैली नीचे गिरा कर यात्री पर उस की नकदी छीनने का आरोप लगा देता है।

यही नहीं, कई बार मनचले कंडक्टर फुटबोर्ड पर खड़े हो जाते हैं और चार-आठ आने की रेजगारी सीढ़ी पर डाल देते हैं। स्वाभाविक है कि हर यात्री निगाह पड़ते ही उसे उठाने की कोशिश करेगा। तभी कंडक्टर की आवाज आएगी, "भाई साहब, क्या कर रहे हो? पैसे भरे गिरे हैं," और हर बार ठहाकों से उस का मनोबल बढ़ाया जाएगा। फुटबोर्ड पर खड़े हो कर महिलाओं को हाथ से उतारने और चढ़ाने का 'अनिवार्य सुख' तो हर कंडक्टर अपनी नौकरी की अतिरिक्त सुविधा मान कर चलते हैं।

छात्रों से भिड़ंत

दिल्ली परिवहन और दिल्ली विश्व-विद्यालय के छात्रों के बीच भिड़ंत एक दैनिक त्योहार है जो पिछले कई सालों से मनाया जा रहा है। इस समस्या को सुलझाने के लिए कई संयुक्त समितियां गठित की गईं, पर वही ढाक के तीन पात। लज्जाजनक बात यह है कि दिल्ली परिवहन की 25 प्रतिशत सेवा आम जनता की आवश्यकताओं को काट कर विद्यार्थियों को 'यूनिवर्सिटी स्पेशल' के रूप में दी जा रही है। उस के वावजूद विद्यार्थियों का उच्छृंखल व्यवहार और परिवहन के मुक्तता

सामान को नुकसान पहुंचाने का कार्यक्रम ठीक नहीं है।

प्रायः कंडक्टर भी छात्रों के साथ मिल कर छात्राओं और आम जनता को तंग करने में पूरे मजे लेते हैं। इस के लिए कई बार सुझाव दिया गया है कि स्पेशल बसों में दोदो सिपाही तैनात कर दिए जाएं, पर प्रशासन इस संबंध में खामोश है। इधर हाल के महीनों में दिल्ली परिवहन ने दो प्रकार की नई सेवाएं—मुद्रिका और सुगम सेवा चालू कर के यह प्रचारित करने का प्रयास किया है कि यातायात में क्रांतिकारी सुधार हुआ है। सुगम सेवा के लिए 61 और मुद्रिका सेवा के लिए 84 बसों का प्रावधान रखा गया है। यह आम सेवा में से काट कर किया गया है। अतः इस का वहां असर पड़ना तो स्वाभाविक ही था। दफ्तर के समय तो ये बसें भरी रहती हैं, अन्य समय खाली चलती रहती हैं और पहले से विद्यमान नियमित सेवाएं ठप्प हो गई हैं। मुद्रिका सेवा रिंग रोड पर चलती है। अंतिम स्टॉप से पूर्व उतरने वाले यात्रियों को मुख्य शहर में आने के लिए एकदो फ्लांग से ले कर मील भर पैदल चलना पड़ता है। ये सेवाएं और कनाट प्लेस की नई यातायात व्यवस्था एक साथ लागू हुई है। इस व्यवस्था के कारण कनाट प्लेस के बीच की तो छोड़िए, आसपड़ोस से भी बसों का आनाजाना बंद हो गया है।

केवल 10 प्रतिशत यात्री एक बार में दोतीन किलोमीटर से ज्यादा यात्रा करते हैं। इस अनुमान में कार्यालय आनेजाने वालों को शामिल नहीं किया गया। अतः इन व्यस्त घंटों को छोड़ कर शेष समय कुछ रूटों को छोड़ कर बसें खाली चलती हैं। यदि यात्रियों की संख्या को देखते हुए बस के रूटों का पुनः निर्धारण किया जाए तो शायद समस्या कुछ सुलझ सकती है। क्योंकि एक बात बहुत साफ है कि वर्तमान घाटे को देखते हुए गुजारा तो वर्तमान बसों से ही करना होगा।

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● बी. एससी. की कक्षा में कुछ लड़कें पीछे की सीटों पर बैठ कर बातें कर रहे थे. प्रोफेसर साहब ने उन से चुप होने के लिए दोतीन बार कहा, मगर वे फिर भी बातों में लगे रहे. तब प्रोफेसर साहब बोले, “ठीक है, भाई, मैं कौन होता हूं आप को चुप कराने वाला? आप तो कहेंगे कि जब हम ने बोलना सीखा था तो हमारे मांबाप ने मिठाइयां बांटी थीं, फिर मैं आप को कैसे चुप करा सकता हूं?”

उन की बात पर कक्षा में हंसी का फव्वारा फूट पड़ा. वे लड़के अपना सा मुंह ले कर रह गए.

—नरेश शर्मा, पठानकोट

● एक दिन हमारे रसायनशास्त्र के अध्यापक हमें ‘उत्प्रेरण’ के विषय में पढ़ा रहे थे. जब वह विषय को अच्छी तरह समझा चुके तो एक लड़का खड़ा हो कर बोला, “सर, मेरी समझ में नहीं आया.”

अध्यापक महोदय कुछ देर चुप रहे. फिर उसे समझाते हुए बोले, “यदि तुम में और किसी लड़के में झगड़ा हो रहा हो और उधर से तुम्हारी प्रेमिका गुजरे तो क्या होगा?”

लड़का चुप रहा तो उन्होंने फिर बोलना शुरू किया, “प्रेमिका के सामने तो तुम दूसरे लड़के को उठा कर पटक ही दोगे. यहां तुम और वह लड़का तो ‘रासायनिक पदार्थ’ हैं, झगड़ा ‘क्रिया’ है और तुम्हारी प्रेमिका ‘उत्प्रेरक’, जिस की उपस्थिति में क्रिया और तेज हो गई.”

लड़का झेंप कर नीचे देख रहा था.

—वीरेंद्रकुमार, मुरांदा

● इंदौर मेडिकल कालिज के अस्पताल (महाराजा यशवंतराव हास्पीटल) में हमारे एक अध्यापक जब वार्ड में कोई केस समझाते तो समझातेसमझाते अपना एक पैर पलंग के किनारे पर रख कर पास खड़े छात्र के गले में हाथ डाल देते थे.

एक दिन हम छात्रछात्राएं एक मरीज के पलंग के चारों ओर खड़े थे. अध्यापक महोदय के पास एक छात्रा खड़ी थी. अपनी आदत के अनुसार उन्होंने अपना पैर पलंग पर रख कर हाथ पास खड़ी छात्रा के गले में डाल दिया. दूसरे ही क्षण उन्हें अपनी गलती मालूम पड़ी. तुरंत हाथ हटा कर ‘सारी’ कहने लगे. इधर हमें हंसी रोकना मुश्किल हो रहा था. वह छात्रा भी झेंप गई. उस दिन के बाद उन की वह आदत जाती रही.

—चंद्रशेखर, इंदौर

● आठवीं कक्षा में एक खुशमिजाज अध्यापक हमें अंगरेजी पढ़ाया करते थे. स्वभाव के विनोदी होने पर भी पढ़ाई के मामले में वह बहुत कठोर थे. एक बार एक छात्र, जिस का नाम ‘महबूब’ था, गृहकार्य कर के नहीं लाया. उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और स्वर से गा कर कहा, “बहारो फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है.” फिर अचानक ही उसे एक जोरदार झापड़ रसीद कर के अगली पक्ति जोड़ी, “लेकिन बिना पढ़े लिखे ही आया है.”

सारी कक्षा जोर से हंस पड़ी. वह लड़का झेंप गया. इस के बाद हम में से कोई भी बिना गृहकार्य किए उन की कक्षा में नहीं जाता था. —परवीन, नसीराबाद ●

प्रसिद्ध कथक नर्तक

गोपीकृष्ण

गोपीकृष्ण को पुरुष

होने के बावजूद स्त्रियों की तरह श्रृ गार कर के स्टेज पर नाचने में कोई शर्म नहीं महसूस होती. क्योंकि उन्होंने कूल्हे मटकाने और भवें नचाने के अलावा कथक शैली को तांडव रूपी पौरुष प्रदान किया है.

गोपीकृष्ण को आज स्टेज से ज्यादा फिल्मों के कारण जाना जाता है. उन्होंने



गया हूं. वैसे कलाकार के लिए इन विभूषणों की कोई जरूरत नहीं होती. उस के लिए सब से बड़ा सम्मान तो उस के प्रशंसकों की वाहवाही है."

गोपी ने कथक शैली को लोकप्रिय बनाने के लिए कई परिवर्तन किए हैं. "मैं भिन्न चरित्रों का अभिनय करते समय स्टेज पर उन का स्थान निश्चित कर देता

एक कलाकार जो सिर्फ कलाकार बना रहना चाहता है...

लेकिन फिर इतनी आत्मप्रशंसा क्यों?

बताया, "वैसे तो मेरा जन्म ही फिल्मों में हुआ था. पैदाइश से ही मेरा पालन-पोषण मोसी सितारादेवी के यहां हुआ है. तीन वर्ष का होते-होते मुझे आड़ेतिरछे पैर मारना सिखा दिया गया था. किसी तरह रोपीट कर सीनियर कैंब्रिज पास किया और तब से कथक ही कथक चल रहा है."

इस वर्ष गोपीकृष्ण को पद्मश्री से विभूषित किया गया. पर वह इस से खुश नहीं थे, "मैं इस सम्मान से ऊपर उठ

हूं—नायक का अभिनय एक स्थान से, नायिका का दूसरे स्थान से और खल-नायक का तीसरे स्थान से. इस से दर्शकों को नृत्य का कथ्य समझने में आसानी रहती है. आम दर्शक नृत्य की बारीकियों में न जा कर स्टेज पर सौंदर्य और एक्शन देखना चाहता है. इस के लिए मैं ने तांडव शैली को कथक में जोड़ा है. स्टेज पर खड़े-खड़े 15-20 फुट से उछलना कोई हंसीखेल नहीं है, पर अपने को बेचने के लिए यह सब करना ही पड़ता है."

“क्या देशविदेश में इतने सारे दर्शक
वास्तव में शास्त्रीय नृत्य समझते हैं?”
Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

“समझने और आनंद लेने में भेद है।
आनंद तो निश्चित रूप से बहुत लोग लेते
हैं और यही अधिक महत्त्वपूर्ण है। उत्तर
भारतीयों के लिए कथक समझना आसान
है, क्योंकि इस का मूल इसी क्षेत्र से है।
यद्यपि नृत्य की अपनी भाषा होती है, पर
वह भाषा भी क्षेत्र विशेष के चालचलन
और रस्मों से प्रभावित होती है। इस
कारण समझने के लिए वहां का थोड़ा
सा ज्ञान आवश्यक है।”

एक आरोप

गोपीकृष्ण पर हाल ही में यह आरोप
लगाया गया था कि उन्होंने कोकशास्त्र
पर बन रही एक विदेशी फिल्म के लिए
अश्लील पोज दिए हैं। इस के उत्तर में
उन्होंने बताया, “काम में श्लीलअश्लील
क्या होता है? काम काम है। जब भारत
सरकार खजुराहो को पर्यटन स्थल के
रूप में विकसित कर सकती है, यहां की
मैथुन मूर्तियों की तस्वीरें निर्यात कर
सकती है तो इस पर बनी फिल्म में काम
करने में आपत्ति क्यों?”

सेक्स के बारे में गोपी के विचार
बड़े स्वस्थ लेकिन खुले थे। “सेक्स में
अतृप्ति होने पर व्यक्ति का समुचित
विकास नहीं हो सकता। सेक्स का भोग
मनुष्य की आदिम आवश्यकता है। और
इस की हर कीमत पर पूर्ति होनी ही
चाहिए।” गोपीकृष्ण का विवाह 13 वर्ष
की आयु में हो गया था, लेकिन पत्नी के

गर्भाशय में खराबी के कारण कोई संतान
नहीं हुई। पत्नी से अत्यधिक प्रेम के कारण
उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया।

“मेरी कोई संतान नहीं है। मेरी
मृत्यु के बाद मेरी कला, मेरे व्यक्तित्व
और मुझ को अनंतता तक ले जाने का
कोई माध्यम नहीं है। मुझे इस का बड़ा
अफसोस है। इस कारण मरने से पहले मैं
ऐसा कुछ करना चाहता हूं, जिस से मेरा
नाम इतिहास में अमर हो जाए। इस
करने का स्वरूप क्या होगा, इस बारे में
मैं अभी स्पष्ट नहीं हूं। मैं जानता हूं कि
नृत्य की कोई सीमा नहीं है। हर कला का
यही हाल है। सुनते हैं कि तानसेन गाता
था तो वारिश हो जाती थी। बँजू बावरा
जंगल में आग लगा देता था। पता नहीं
ये बातें सच भी हैं या नहीं। पर ये
किंवदंतियां उन कलाकारों की साधना के
बारे में बोलती हैं। मैं भी चाहता हूं कि
मैं स्टेज पर उतरूं तो जब मैं चाहूँ तब
दर्शक रोएं, जब मैं चाहूँ तब वे हँसें।”

गोपीकृष्ण ने नृत्य विद्या गुरु महात्मा
सावित्रीयोग से सीखी। वैसे उन के विकास
में सितारादेवी का प्रमुख हाथ रहा। उन
की पहली फिल्म ‘शनक शनक पायल बाजे’
थी। फिल्मों में वह इसलिए आए ताकि
अधिक से अधिक दर्शक उन की कला देख
सकें।

अब तक वह सैकड़ों फिल्मों में नृत्य
कर चुके हैं और नृत्य निर्देशन दे चुके हैं।
उन्होंने लगभग सभी भाषाओं की फिल्मों
में काम किया है। सिहली भाषा में भी
उन की एक फिल्म बन चुकी है।

फिल्मों में फैली गंदगी

फिल्मों में फैली गंदगी के बारे में
गोपीकृष्ण झुंझला उठे, “गंदगी कहां नहीं
है? सब कुछ देखने वाले की निगाह पर
निर्भर करता है। हम लोग सेक्स से इतने
परेशान क्यों हैं? आदमी औरत एकदूसरे
की मर्जी से संबंध बनाते हैं तो इस में बाकी
लोगों को परेशानी क्यों होती है?”

अपनी कला को अनंतता तक फैलाने
के उद्देश्य से गोपी ने खार, बंबई में

आप के बच्चों के लिए

चंपक

अनुपम उपहार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

‘मैट्रवर नृत्य मंडल’ नाम से एक नृत्य विद्यालय खोला हुआ है। इस में 20 विद्यार्थी हैं। नौ अध्यापक नृत्य सिखाते हैं। अधिकांश संख्या लड़कियों की है।

“यह इस देश में ही नहीं, सब जगह भ्रांति है कि नृत्य केवल लड़कियों के लिए है। बात यह है कि दर्शक स्टेज पर सौंदर्य देखना चाहता है। पुरुष नर्तक कितना ही निपुण हो, कभी उतनी प्रशंसा नहीं पा सकता जितनी कि एक आधी-पौनी नर्तकी पा सकती है। यह स्थिति बदल रही है, पर अनुपात सदा स्त्रियों के पक्ष में रहेगा।”

गुरुशिष्याओं के अनैतिक संबंध

गुरुशिष्याओं के तथाकथित अनैतिक संबंधों के बारे में गोपीकृष्ण की टिप्पणी थी, “पड़ोस का घर तो डायन भी छोड़ देती है। अधिकांश गुरु ऐसा नहीं करते। ऐसा करना भी नहीं चाहिए। इस से गुरु कभी सिखा नहीं सकता। जिन गुरुओं (उन्होंने कई बड़े नाम लिए, पर न छापने की शर्त पर) ने ऐसे संबंध बनाए हैं उन की शिष्याएं कभी औसत से ऊपर नहीं उठ सकीं।”

गोपीकृष्ण ने कड़ा प्रतिवाद किया कि उन्हें गुरु म कहा जाए, वह केवल कलाकार हैं और केवल यही रहना चाहते हैं। अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है और वह अंत तक सीखते रहना चाहते हैं। इन दिनों वह ‘ओडिसी’ में निपुणता प्राप्त कर रहे हैं। धारणा है कि ‘ओडिसी’ मुख्यतः स्त्रियों का नृत्य है, पर कथक की भांति वह इस धारणा को भी तोड़ना चाहते हैं।

गोपीकृष्ण को शिकायत है कि उदीयमान कलाकार मेहनत नहीं करते। वह गत 20 वर्षों से रोज घंटों अभ्यास करते हैं। नृत्य के अलावा व्यायाम और योगिक क्रियाएं भी करते हैं। इस के अलावा सब कुछ खूब खातेपीते हैं और जीवन तथा पुरुष का पूरा भोग करते हैं। उन का विश्वास है कि जीवन उपभोग के लिए है और इस के हर क्षण को पूरे आनंद से जीना चाहिए।

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण लेखों के रिप्रिंट सेट नं. 1.

1. प्राचीन हिंदू संस्कृति
2. शंभूक वध
3. अतीत का मोह
4. पुरोहितवाद
5. गोपूजा
6. हमारी धार्मिक सहिष्णुता
7. कृष्ण नीति : हमारा नैतिक पतन
8. ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद
9. राम का अंतर्द्वंद्व
10. राम का अंतर्द्वंद्व : आलोचनाओं का उत्तर
11. भारत में संस्कृति का ब्राह्मणनियंत्रित विस्तार
12. हिंदू धर्म
13. संस्कृत
14. भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
15. कर्ण
16. भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
17. तुलसी और वेद
18. रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
19. युगोंयुगों से शोषित भारतीय नारी
20. भ्रष्टाचार
21. रामचरितमानस में नारी
22. सत्यनारायण व्रत कथा
23. क्या नास्तिक मूल्य हैं?
24. गांधीजी का बलिदान
25. यज्ञोपवीत
26. जंत्र तंत्र मंत्र
27. कर्मयोग
28. गरुड़ पुराण

सेट नं. 1 का मूल्य तीन रुपए, मूल्य मनी/पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. पी. द्वारा भेजना संभव नहीं। अध्यापकों, ग्राम सेवकों, ग्राम पंचायतों के लिए आधा मूल्य।

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-1.

शोर

परीक्षाएं सिर पर आ गई थीं. विद्यार्थी जी तोड़ परिश्रम कर रहे थे. आधी रात के बाद भी उन के कमरों की बिजली जली हुई थी और वे किताबों में नजरें गड़ाए सुबह होने वाली परीक्षा की तैयारी कर रहे थे. अचानक रात को सन्नाटा तोड़ते हुए लाउडस्पीकर चीखने लगा. सारे वातावरण में शोर फैल गया. इस का परिणाम यह हुआ कि विद्यार्थियों की पढ़ाई में विघ्न तो पड़ा ही, वे सो भी नहीं पाए. इस से उन के मनोबल और विषय की तैयारी को गहरी चोट पहुंची. अगले दिन जब वे उनींदे और अधूरी तैयारी के साथ परीक्षा देने पहुंचे तो उन का धैर्य साथ छोड़ चुका था. ऐसी कौन सी रात बीतती होगी जिस में लाउड-स्पीकर जोरजोर से चीख कर लोगों की नींद न हराम करता हो. पर कौन ध्यान देता है!



शोर की बात करते हुए मुझे एक घटना और याद आ रही है. एक दिन हम एक भीड़ भरे बाजार से गुजर रहे थे. अचानक एक धमाके की धड़धड़ आवाज कानों को चीरती हुई गायब हो गई. एक बच्चे के दिल में हौल बैठ गया और उसे थोड़ाबहुत बुखार भी हो आया. यह सब हंगामा एक मोटर साइकिल का खड़ा किया हुआ था. हर आदमी उस के चालक को कोस रहा था. कोई कोसे चाहे गालियां दे, कौन परवा करता है!

इस प्रकार वातावरण में हम तरह-तरह से शोर पैदा करते रहते हैं. इस शोर के हम इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि छोटोमोटे धमाकों का हम पर कोई असर नहीं पड़ता. हालांकि खतरे का भौंप सूत कर हमारे कान तुरंत खड़े हो जाते हैं. ज्वालामुखी का विस्फोट या शेर की दहाड़ हमें हिला कर रख देती है. हमारा मस्तिष्क कुछ इस प्रकार का बना है कि हम या तो खतरे से सीधे टकराएंगे या बच कर निकल जाएंगे. उस समय हम पर कैसी प्रतिक्रिया होती है जब तीन टन का ट्रक भीषण शोर करता हुआ हमारी बगल से गुजर जाता है? वस्तुतः शोर ने हमारी मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों का वेड़ा गरक कर के रख दिया है. शोर हमारा भीषण शत्रु है.



आज के मशीनी युग में आप शोर से बच नहीं पाएंगे, लेकिन आप जानते हैं कि इस का प्रभाव आप के मस्तिष्क पर क्या पड़ता है?

यदि हम शोर के बीच काम करने वाले किसी व्यक्ति का अध्ययन करें तो यह बात एकदम स्पष्ट हो जाएगी। शोर-रहित यानी शांत वातावरण में भी वह व्यक्ति चीख कर बात करेगा और उसे दूसरे की बात भी तब तक नहीं सुनाई देगी जब तक कि वह जोर से न बोले। आखिर ऐसा क्यों होता है? ध्वनि की तरंगें सब से पहले कान के परदे से टकराती हैं और तब भीतर कान में पहुंचती हैं। वहां से ये तरंगें आवेगों में परिवर्तित हो कर दिमाग द्वारा ग्रहण की जाती हैं। शोर में रहने का परिणाम यह होता है कि दिमाग तब तक उन ध्वनियों को ग्रहण करने में असमर्थ रहता है जब तक कि वे शोर के सामान्य स्तर को पार न कर जाएं। इसलिए इस प्रकार के व्यक्ति ऊंचा सुनने लगते हैं।

शक्तिहीनता और तनाव

विशेषज्ञों का कथन है कि 80 से लेकर 95 डेसिबिल के बीच का शोर मानसिक एवं शारीरिक बीमारियों को जन्म देना शुरू कर देता है। अब आप पूछेंगे कि डेसिबिल क्या चीज है। डेसिबिल ध्वनि की वह इकाई है जिस से ध्वनि को नापातोला जाता है। मोटे तौर पर यदि हम 1 से लेकर 130 डेसिबिल तक की ध्वनियों का आकलन करें तो हम रेशम की फुरफुराहट को 1 पर रख सकते हैं और 130 पर वह शोर जिस से हमारे दिमाग में दर्द होना शुरू हो जाता है। 130 डेसिबिल हमारे मस्तिष्क की आखिरी सीमा है। सामान्यतः 95 डेसिबिल का शोर भी दिमाग बर्दाश्त नहीं कर

पाता। इस से दिमाग को 'अस्थीनिया' (अधिक होनहारता) बनाने की प्रतीति दे सकती है। इस बीमारी से मनुष्य थकावट और चिड़चिड़ा अनुभव करने लगता है।

हम किन परिस्थितियों में जीवन बिताते हैं? उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप थके हुए घर लौटते हैं। आप को आराम की सख्त जरूरत है। लेकिन वास्तव में होता क्या है? बच्चे चिल्लपों मचा रहे हैं। छोटा बच्चा गला फाड़ कर रो रहा है। पड़ोसी का लड़का पूरी ताकत से सीटी बजा रहा है। घर के बाहर कोई सवारी तेज शोर करती हुई गुजर रही है। मैं नहीं जानता, इस सब की आप पर क्या प्रतिक्रिया होगी, पर यदि मेरे साथ ऐसा हो तो मैं कानों पर हाथ रख कर घर से भाग जाऊंगा।

आप इन स्थितियों में रेडियो सुनना चाहते हैं? ठीक है। लेकिन इस से शोर और अधिक बढ़ेगा। शोर ध्वनि की तरंगों से उन का संगीत छीन लेगा। अतिरिक्त शोर हमारी पेशियों को कमजोर बना देगा, जिस से 'हाइपरटेंशन' (अत्यधिक तनाव) हो सकता है।

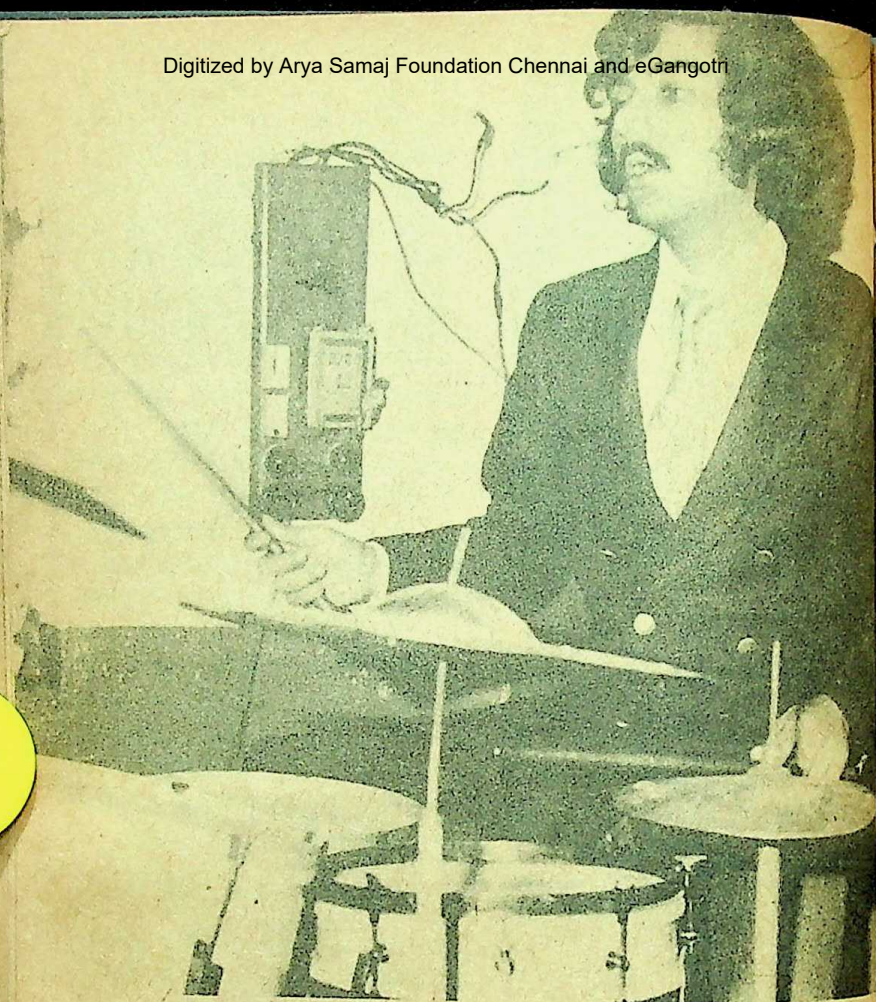
शोर कम करने के ढंग

यदि आप शांति चाहते हैं तो शोर से बचिए। उन तरीकों पर गौर कीजिए जिन से आप शोर को कम कर सकते हैं। यहां शोर को कम करने के कुछ नुस्खे दिए जा रहे हैं।

जब आप सोने जाते हैं तो घड़ी को अपने पास रखिए। सुबह ज्यों ही अलार्म सुन कर आप की आंखें खुलें, तुरंत अलार्म बंद कर दीजिए। इस से औरों की नींद में बाधा नहीं पड़ेगी।

अपने टाइपराइटर के रोलर पर कागज चढ़ा दीजिए। इस से शोर कम होगा। यदि कोई भी रेडियो नहीं सुन रहा हो तो उसे बंद कर दीजिए। हमेशा रेडियो को हलका बजाइए। बात करते समय, पढ़ते समय या पढ़ाते समय कभी भी रेडियो मत खोलिए।

हो सकता है, आप का कोई मित्र



बड़ेबड़े होटलों में लोग मन बहलाने जाते हैं, लेकिन वहां शोर के सिवा और क्या मिलता है!

आप से इस ढंग से बात करता हो जैसे एक वहरे से की जाती है, या वह पागलों की तरह जोरजोर से हंसता हो. तो वैसी हालत में कानों में रूई लगा कर उस से बात क्रीजिए. इस से बेहतर कोई भी तरीका नहीं हो सकता.

यदि संभव हो तो किसी शांत स्थान में रहिए. अपने मकानों के आसपास पेड़ लगाइए. पेड़ शोर को जज्व कर लेते हैं. खिड़कियों में बीच में थोड़ी सी जगह छोड़ कर दोहरे शीशे लगवाइए. इस से भी फालतू शोर में नजात मिलेगी.

एक बात और. कल रात 'टपटप' की

आवाज ने मेरी नींद तोड़ दी. मैं रसोई घर की तरफ गया तो देखा वहां नल चल रहा था. मैं ने नल बंद किया और सो गया. सुबह एक मधुर संगीत सुन कर मेरी आंख खुली. एक स्वरबद्ध संगीत की ध्वनि सुनाई दी. नल से पानी की बूंदें बरतन पर गिरगिर कर संगीत पैदा कर रही थीं. वह संगीत वास्तव में भला लग रहा था.

कलियों के चटकने की महीन आवाज, पक्षियों का चहचहाना एक प्राकृतिक संगीत है. इस संगीत को एकांत में बैठ कर सुनिए और रस लीजिए.

कांसवाला

यह जो सामने गेहूं का लहलहाता खेत दिख रहा है, इस की भी एक अजीब कहानी है. वैसे तो गांव के चारों ओर छोटेमोटे हजारों खेत हैं और सैकड़ों में गेहूं बोया हुआ है, पर इस जैसा गेहूं किसी में भी नहीं है. कैसा गहरा हरा रंग है पत्तियों का! एकएक डंठल में से बीसियों कोपलें निकल रही हैं. पूरे खेत में चारों कोने एक सा गेहूं, मानो किसी कलाकार के सवें हाथों साजसंवार दिया गया हो. यह कोई फार्म नहीं है. मुश्किल से आठ बीघे का खेत है. इस में कुल मिला कर पांच पेड़ हैं—तीन आम के, एक नीम का और एक पीपल का. इन में पीपल का पेड़ सब से पुराना है. इस पीपल के पेड़ की अपनी अलग कहानी है. मथुरा और वृंदावन के कुंजों या जमुना किनारे के कदवों से कम रसीली नहीं है इस की कहानी. उन कदवों पर तो रासलीला करने वाला कन्हैया केवल एक व्यक्ति था, इस पीपल पर रासलीला करने वाले सैकड़ों कन्हैया हैं. गांव के सभी वर्गों के छोकरे, जवान, बूढ़े, अमीर, गरीब और घोबी, नाई, चमार, भंगी, ब्राह्मण, बनिया सब का रासस्थल है यह पीपल. इधर दिन छिपा और उधर पीपल के आसपास जा छिपते हैं गांव के कन्हैया और अंधेरा होते

ही गांव की राधाएं हाथ में पानी का लोटा लिए एकएक कर पीपल की ओर बढ़ने लगती हैं. चौदहपंदरह साल की छोकरियों से ले कर चालीसपंतालीस की प्रौढ़ाओं तक सब अपनेअपने कन्हैयाओं को ढूंढ़ लेती हैं इस पीपल के आसपास. यह तो शुक है प्रकृति का कि यह पीपल एक कोने पर उगा, यदि बीच में होता तो पैरों तले ही दब जाती सारी फसल.

खैर, छोड़िए इस पीपल की रोमांचकारी कहानी को. मैं खेत के बारे में बता रहा था. हां, तो इस खेत का नाम 'कांसवाला' है. यह इस का बहुत पुराना नाम है. जब हम छोटेछोटे बच्चे थे तब भी इसे इसी नाम से पुकारा जाता था. इस का कारण यह था कि इस में कांस, एक किस्म की घास, बहुत ज्यादा थी. मैं ने अपनी आंखों देखा है, सारे दिन गांव के पशु खड़े रहते थे इस खेत में. इस में कभी एक छटांक भी अनाज पैदा नहीं हुआ. गांव के करीब होने के कारण यह शाम-सुबह मलत्याग के काम आता रहा है और रासलीलाएं व रोमांस भी उसी समय से होते आ रहे हैं इस में. पहले नट्यू नंबरदार के पास था यह खेत. नट्यू पूरी पट्टी का नंबरदार था. अच्छा खाता-पीता घर था. इसलिए उस ने इसे जोतने-

'कांसवाला' खेत के लिए मंगलिया ने अपनी बेटियां बेच दीं, उस घासफूस वाली जमीन को लहूपसीने से सोंच कर सोने की खान बना दिया था... लेकिन मंगलिया को क्या मिला?

बोने की कभी लेटा भी नहीं की मरे दो
 सौ बीघा जमीन थी उस के पास. उस
 में बहुत से अच्छे खेत थे, जो गांव में सब
 से अव्वल दर्जे के समझे जाते थे.

जब जमींदारी और नंबरदारी का
 उन्मूलन हुआ तो नत्थू ने सारी
 जमीन अपने दोनों लड़कों के नाम कर
 दी. हलफनामे के बाद सौसौ बीघे की
 रजिस्ट्री दोनों के नाम हो गई. किंतु
 कांसवाला खेत त्रिशंकु की स्थिति में रह
 गया. उस का बंटवारा नहीं हुआ. जब
 बड़े लड़के ने नत्थू से उस के बारे में पूछा
 तो उस ने कहा, "इस के दो टुकड़े
 करने से क्या फायदा? कौन सी ईख पैदा
 होगी इस में! दोनों भाइयों के पशु चर
 लेंगे इस में. पड़ा रहने दो शामिल ही."
 बात रफादफा हो गई. वर्षों उस में दोनों
 भाइयों और गांव के पशु चरते रहे.

सरकारी पंचवर्षीय योजनाएं शुरू
 हुई. एक के बाद दूसरी और दूसरी के
 बाद तीसरी योजना चली. हर चीज की
 कीमतें आसमान छूने लगीं. जमीन भी
 खूब महंगी हो गई. कांसवाला खेत पर
 नत्थू के दोनों लड़कों की नीयत बिगड़ने
 लगी. दोनों को उस पर लालच हो गया.
 असाढ़ में पानी बरसते ही दोनों अपना-
 अपना हल ले कर पहुंच गए. झगड़ा हो

गया. हल चलते से पहले लाठियां चल
 गई. छोटे भाई हरपाल के सिर पर एक
 ऐसी लाठी लगी कि खोपड़ी फट गई और
 दूसरे दिन अस्पताल में उस की मृत्यु हो
 गई.

सरकारी मुकदमा चला. डाक्टर,
 थानेदार, नायब, सरिश्तेदार, गवाह, जब
 सब ने खूब पैसा खाया. दोनों घर लास से
 लीख हो गए. बड़े भाई जगतपाल को
 तीन वर्ष का कारावास हो गया. नत्थू की
 भी बुढ़ापे में मिटटी पलीद हो गई. उस
 ने अपनी जवानी में हल का हत्था कभी
 नहीं पकड़ा, और अब बुढ़ापे में आकर
 दोनों लड़कों की जमीन जोतनी पड़ी.

नत्थू की हालत ज्यादा पतली हो गई
 थी इसलिए उस ने कांसवाला खेत
 मंगलिया के हाथ दो सौ रुपए बीघा
 के हिसाब से ही बेच डाला. हमारे गांव
 में और आसपास कहीं भी इस से सस्ता
 खेत कोई नहीं बिका. वैसे देखा जाए तो
 यह बंजर खेत सोलह सौ रुपए का ब्याब
 भी पैदा नहीं कर सकता था. फिर भी
 खुलेआम बेचने पर उस की ज्यादा कीमत
 लगती पर नत्थू ने अपनी बेइज्जती के
 डर से ऐसा नहीं किया. और बराबर
 वालों के हाथ वह बेचना चाहता नहीं
 था इसलिए चुपचाप मंगलिया के नाम



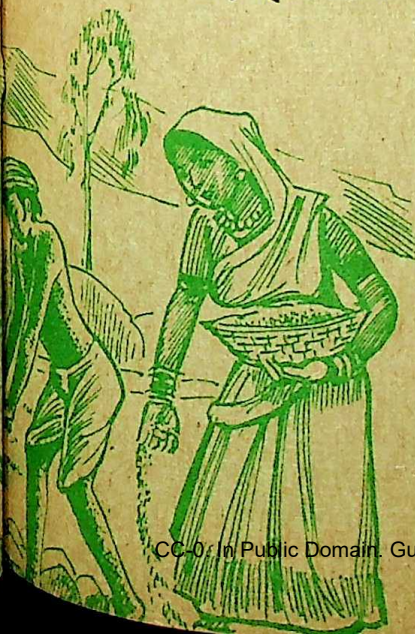
मंगलिया स्वयं बैल की तरह
 हल खींचता, उस का लड़का हल
 के हत्थे को पकड़ता और बीबी
 पीछेपीछे बीज डालती जाती थी.

खसरादीप कर दी। ^{Digambari Arya Samaj Foundation, Chikhal and Chikhal} के बाद जब मंगलिया से जमा वसूल किया तब गांव वालों को पता चला कि नत्थू ने कांसवाला बेच डाला।

इस प्रकार मंगलिया जो पीढ़ियों से भूमिहीन की श्रेणी में चला आता था, अब भूमिधरों की श्रेणी में हो गया। पटवारी के खसरे से ले कर जमाबंदी तक सब में उस का नाम चढ़ गया—मंगलिया उर्फ मंगल राम, पुत्र रुडिया, कौम हरिजन, लातेदार आठ बीघा, साकिन हाल हलका मैनपुर, ताल्लुका मंडावर।

लोगों को ताज्जुब हुआ कि मंगलिया के पास इतनी मोटी रकम कहां से आ गई कि उस ने कांसवाला खरीद डाला। मंगलिया के घर में कुल मिला कर सात व्यक्ति थे। वह स्वयं, उस की पत्नी, तीन लड़कियां और दो लड़के। सब से बड़ी लड़की की उम्र पंद्रह वर्ष, उस से छोटी की तेरह वर्ष तथा सब से छोटी की मुश्किल से सात आठ महीने। बड़ा लड़का दस और छोटा सात वर्ष का था। उस के बाद दो बच्चे, एक लड़की और एक लड़का हुए थे जो चेचक के शिकार हो गए थे।

मंगलिया सरपंच का हलवाहा था। उसे बतौर खर्च साठ रुपए महीना मिलते



ये वही लड़की और पटवारी के दोनों में घास खोद कर डेढ़ रुपए प्रति औरत के हिसाब से तीन रुपए प्रति दिन कमाती थीं। बड़ा लड़का घर की काली बकरी चराता था और बाकी दो छोटे बच्चे घर में रहते थे जिन्हें मंझली लड़की खिलाया करती थी। यही मंगलिया का परिवार और उस का संपूर्ण कारोबार था। मुश्किल से दो जून रोटी का इंतजाम हो पाता था।

कांसवाला की खरीदारी पर लोगों का अचंभे में पड़ना स्वाभाविक था। गांव वालों को भी दो महीने तक इस की खबर नहीं लगी। रहस्य तब खुला जब मंगलिया के घर बरात आ गई। दो बूढ़े दूल्हा आए जिन की आयु तीसपंतीस के बीच थी और मंगलिया की पंद्रह और तेरह वर्ष की लड़कियों को डोली में बिठा कर ले गए। गांव में कानाकानी बात फैली और दूसरे दिन मालूम हुआ कि पूरे दो हजार रुपए लिए थे मंगलिया ने। सोलह सौ में कांसवाला खरीदा था और बाकी चार सौ रुपए बरात की आंवभगत और कन्यादान में खर्च हुए।

पांच सात दिन तक गांव के चौपाल में, नुक्कड़ों पर और खेतों के रास्तों पर यह चर्चा का विषय बना रहा। मैनपुर गांव के लिए यह कोई नवीन घटना नहीं थी। चारपांच के नाम तो मैं भी गिना सकता हूं। मंगलिया कुछ दिन शर्म के मारे चौपाल के रास्ते से नहीं निकला। वह सुबह अंधेरेअंधेरे सरपंच का हल जोतने चला जाता और शाम को दिन छिपने के बाद घर लौटता। धीरे-धीरे लोगों के ध्यान से बात उतर गई और मंगलिया की भी झिझक दूर हो गई।

मंगलिया ने कांसवाला खेत लेने के बाद भी सरपंच की नौकरी नहीं छोड़ी। वह सुबह आठ बजे से शाम पांच बजे तक सरपंच का हल चलाता और दो घंटे आराम कर के सात बजे से जब तक उसे नींद न आती कांसवाला खोदता रहता। जब कभी सरपंच के हल से छुट्टी

मिल कर खेत चला जाता और दिन भर खुदाई करता. उस की पत्नी और बच्चे पीछे से रोटी ले कर जाते और वे सब भी कांस चुनने लग जाते. आप को शायद यकीन न हो, उस ने घास का एकएक तार बीन कर खेत से निकाल दिया. सिर्फ एक लंगोटी पहने पसीने में एड़ी से चोटी तक लथपथ भूखाप्यासा पूरे तीन महीने उसे संवारते और साफ करने में लगा रहा. गांव वाले कहा करते थे कि अधिक भूखे आदमी की मौत खाने से ही होती है. मंगलिया को एक फिसड्डी सा खेत मिल गया, अब वह इस से सोना उपजाना चाहता है. मरेगा बिना मौत!

तीन महीने बाद जमावसूली के लिए पटवारी आया. मंगलिया ने भी अपने खेत का जमा चालीस रुपए सरपंच से उधार ले कर दिया. बीचबीच में सरपंच ने खाने को अनाज भी उधार दिया. खेत पर काम करते समय पसीने और मिट्टी से कपड़े गल गए थे. इसलिए पचास रुपए कपड़ों के लिए भी सरपंच से उधार ले कर आया. इस प्रकार असाढ़ से पहले कुल मिला कर व्याजबट्टा सहित तीन सौ रुपए सरपंच के हो गए. अभी असाढ़ का बीज लेना बाकी था. उसे चिंता होने लगी. वैसे तो बीज बोने के लिए ऊंट या बैल भी चाहिए पर उस का भाड़ा बहुत अधिक पड़ता था. उस की क्षमता इतनी नहीं थी. इसलिए उस ने अपनी कुल्हाड़ी से एक छोटा सा हल तैयार कर लिया जिसे वह स्वयं खींच सके.

असाढ़ का पानी बरसा. गांव में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई. सुबह से शाम तक लोग खेतों पर बीज बोने में व्यस्त हो गए. मंगलिया दिन में सरपंच का हल चला कर बीज बोता और रात को अपनी पत्नी और बड़े लड़के को साथ ले कर कांसवाला में बीज बोता. वह स्वयं बैल की तरह दोनों हाथों से हल खींचता. उस का लड़का हल के हथके को

इस प्रकार चौदह दिनरात में मुश्किल केवल चारपांच घंटे वह सो पाया, बोआई के काम से निश्चित हो बाजरा बोया गया था सारे कांसवाला में.

सरपंच एक दिन खेतों का चक्का लगाता हुआ कांसवाला के से गुजर रहा था. उसे मंगलिया के का बाजरा देख बड़ी ईर्ष्या हुई. मन मन सोचने लगा कि यदि चारपांच ऐसी ही मंगलिया ने पैदा कर ली तो उस के चंगुल से निकल जाएगा. हल कौन चलाएगा, बेगार कौन करेगा उस के दिमाग में तुरंत इस का सूझा कि मंगलिया की जमीन की खसरी टोप अपने नाम करा लेनी चाहिए. वारी अपने कहने में है ही, और जरा से ज्यादा दोचार सौ रुपए ले लेगा. दुर्भाग्य चाल यह सोची कि शाम को वह मंगलिया से अपने रुपए मांगेगा और देने से इनकार करने पर कांसवाला को रेहन रख लेगा. उस ने घर आ कर वैसा ही किया. पटवारी उस का पहले से ही एहसास था, जब सरपंच ने उस को 'कलावती' को से बचाया था. कलावती कांड अपने को में एक पूरी कहानी है इसलिए उस जिक्र यहां नहीं करूंगा. चुनांचे पटवारी ने बिना पैसे लिए सरपंच को कांसवाला का जोतदार दिखा दिया अपने कांपवा में.

शाम को जब मंगलिया खेत से पहुंचा तो सरपंच ने उस को अपने



बुना लिया और रुपए लौटाने या जमीन गिरवी रखने का प्रस्ताव रखवा दिया।
 बेवारे के सारे रास्ते पहले से ही बंद थे।
 उस ने जमीन गिरवी रखने के प्रस्ताव को मान लिया।

दूसरे दिन सरकारी कागज पर पक्का रेहननामा लिखवा लिया गया और उस पर हाकिम के दस्तखत भी हो गए। सरपंच की मनचाही बात हो गई और मंगलिया जाल में फंस गया। उस ने सरपंच के पैर पकड़ लिए थे और अपने पेट को दिखाते हुए दया की भीख मांगी थी पर सरपंच पर उस का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। उस की आंख तो कांस-वाला पर लगी हुई थी।

मंगलिया ने कांसवाला को दो वर्ष जोता, जिस में चार फसलें पैदा कीं। उन में उस को इतना अनाज पैदा हुआ कि उस ने सारे पैसों सरपंच के चुका दिए थे और लत्तेकपड़े से अपने परिवार की दशा भी अच्छी कर ली थी। इसके साथसाथ उस ने सरपंच की नौकरी छोड़ दी तथा एक बैल खरीद लिया। उस ने अपने पड़ोसी से बात तय कर ली थी कि वे दोनों मिल कर एक हल की खेती करेंगे। पड़ोसी के पास भी एक बैल था।

सरपंच यह सब बर्दाश्त नहीं कर सका। उस ने मंगलिया द्वारा लौटाए पैसों को न तो रसीद दी, न रेहननामे का कागज ही लौटाया। पटवारी से विचार-विमर्श करने के बाद अदालत में गया

बिल ले के...

दिल ले के गया चार कदम
 ही कि मुझे फिर
 दामन नजर आया न
 गिरवा नजर आया।
 —जगन्नाथ आजाद

और मंगलिया के विरुद्ध दावा कर दिया।
 कांसवाला खेत का दखल अपने नाम करा लिया।

मंगलिया ने भी मुकदमे में अपनी ओर से कुछ उठा न रखा, किंतु सरपंच के विरुद्ध गवाही देने को गांव का कोई भी व्यक्ति तैयार न हुआ। इस के अतिरिक्त मुकदमे के लिए रुपए देने से भी सब ने इनकार कर दिया। इन परिस्थितियों में उसे कांसवाला से हाथ धोना पड़ा।

कांसवाला छिन जाने के बाद मंगलिया की दशा पहले से भी खराब हो गई। गांव में कोई सहारा न था। किसी से एक किलो अनाज भी नहीं मिल सकता था। उस ने अपनी पत्नी से शहर चलने को कहा। पहले तो उस ने इनकार कर दिया, किंतु समझाने पर वह मान गई।

दूसरे दिन कुछ सामान बोरो में बांध कर वह अलवर चला गया। स्टेशन के सामने जामुन के एक पेड़ के नीचे उस ने लकड़ी और फूस की एक झुग्गी बनाई और उस के सामने पालिश करने और जूता मरम्मत का काम शुरू किया। उस की पत्नी जंगल से कीकर की दातून काट कर लाती है, जिन्हें बच्चे आतीजाती गाड़ियों में फेरी लगा कर बेचते हैं।

पूरे पांच वर्ष हो गए उसे गांव छोड़े। मैं जब कभी शहर जाता हूं, वह जबर-दस्ती मेरे जूतों में पालिश करता है और पैसे देने पर नाराज होता है। मैं मुश्किल से पांचसात मिनट उस के पास रुकता हूं। इस दौरान वे दोनों पतिपत्नी कांसवाला खेत को याद कर के रो लेते हैं।

गांव में जब भी मैं इस खेत के पास से गुजरता हूं, मुझे ऐसा लगने लगता है जैसे मंगलिया के पसीने की बू आ रही है। गेहूं के इन हरेभरे डंठलों और पत्तियों में मंगलिया का लहू बहता हुआ दिखाई देता है।

अभी संझा नहीं हुई थी, क्षितिज पर
 सूर्य लाल गुब्बारे के समान
 दिखाई पड़ता था। फँकटरी का भोंपू चीख
 उठा। शिपट बदलने लगी। तेलकोयले में
 सने हुए काले और रुई के रेशों में लिपटे
 हुए सफेद मजदूर भेड़बकरियों की तरह
 फँकटरी से बाहर निकलने लगे—हारेथके,
 दुबलेपतले, फटेहाल—अकाल के अवतार
 से। उन में स्त्रियाँ भी थीं।

टाइम कीपर सब के हाथों में टोकन
 देता जाता था। टाइम कीपर—उजले
 कुरते वाला, बांकी टोपी वाला। उस की
 मूँछें नुकीली, आँखें चमकीली, लाललाल।
 शोखी और शक्ति का अवतार। उस की
 खुली हथेली में टोकन रखते हुए वह दबे
 स्वर में कुछ बोला। वह कांप गई, सहम
 गई। टाइम कीपर की आँखें चमक उठीं—
 क्षितिज पर उठे लाल गुब्बारे के समान।

आधी रात बीते वह सोच रही थी।
 'श्यामा, नहीं मानेगी तू?' टाइम कीपर
 ने कहा था। फिर जमना के जरिए उस
 ने कहलवाया था, 'यदि न मानेगी तो

किसनू भी डिमिस हो जाएगा और
 भी। भूखे मर जाएंगे सभी.'

किसनू, हड्डियों का जानदार दाँव,
 काला रंग, मैला शरीर, जिस के जीव
 में यौवन की बहार आई ही नहीं। दुतकार
 फटकार का मारा किसनू। वह श्यामा
 का सर्वस्व था। कितना प्यार करता था
 वह उसे! श्यामा—गरीब किसान की
 बेटी, गरीब मजदूर की पत्नी। बिना
 शृंगार के भी रूप की रानी जंचती। बड़े
 पेट, अधढकी रहती, किंतु यौवन उस के
 फटे वस्त्रों में से झाँके वगैर न मानता।

'नहीं मानेगी तू? किसनू भी डि-
 मिस हो जाएगा.' सोचतेसोचते वह धबका
 उठी।

झोंपड़ी के एक कोने में दीया टिम-
 टिमा रहा था। दीपक के पास एक चटाई
 पर किसनू सो रहा था—अधमरा सा।
 दिन भर की कड़ी मेहनत से थका हुआ।
 उस के पास ही पड़ा था श्यामा का
 लाल—दो साल का बच्चा, मैलाकुचला,
 कुरूप, बाप जैसा। लेकिन कितना प्यारा!



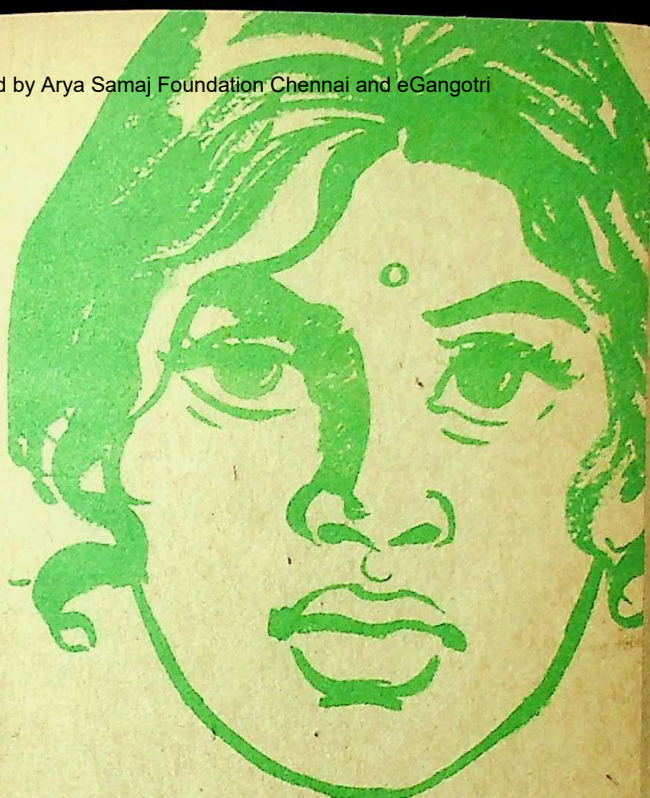
गरीब का धर्म

कहानी

विनोदकुमार व्यास

जुलाई (द्वितीय) 1971

एक ओर गरीबी
की मजबूरी और
दूसरी ओर टाइम
कीपर के आगे
घुटने टेक देने का
दबाव.....श्यामा
एक दिन अपने
पति को धोखा
दे बैठी...



उस के जिगर का टुकड़ा बाहर बरामदे में किसनू का बाप पड़ा था—अंधा, अपाहिज, बीमार; और किसनू की मां, पैंसठ बरस की बुढ़िया, दमे से पीड़ित. राम, राम! इन की भी उमर कब तक चलेगी! श्यामा ने सब को देखा. भूखे मर जाएंगे. उस का कलेजा मुंह को आने लगा, हृदय फटने लगा.

“अरी पगली, गरीब का धरम क्या!” जमना ने कहा. श्यामा चुप रही.

“किसनी के कारण उस के बाप, भाई—दोनों कमाऊ निकाले गए. घर बरबाद हो गया. भीख मांगने की नीबत आ गई.”

श्यामा चुप थी. कुछ दूर पर एक पांचछः वर्ष का बालक एक बाबू साहब के पीछे दौड़ रहा था—पैसा मांगता हुआ, “बाबू, मैं भूखा हूं.” उस ने झिड़क दिया. वह ठिठक कर रह गया.

श्यामा कांप उठी. उस के दिल पर सांप लौटने लगा. “गरीब का धरम क्या!”

श्यामा ने आंख उठा कर देखा. जमना की आंखों में दुख का भाव था. पिछले दस साल से मजदूरी करतेकरते वह सब जान गई थी. श्यामा तो अट्टारह-उन्नीस साल की छोकरी थी उस के सामने—अनजान, अल्हड़, नातजुखेकार.

उस दिन श्यामा देर से घर पहुंची—इयूटी खत्म होने के तीनचार घंटे बाद.

“कहां गई थी?” किसनू ने पूछा. वह इंतजार में बैठा था.

“जमना के घर चली गई थी,” श्यामा ने दूसरी ओर देखते हुए कहा. फिर न जाने क्यों वह चुपचाप पड़ रही. खायी भी नहीं उस ने.

“क्या माथा दुख रहा है?” किसनू ने प्यार से पूछा.

“नहीं.” वह रो पड़ी.

किसनू माथा दबाने लगा, वह रोती रही. दीए का प्रकाश मध्यम होतेहोते खो गया. अंधेरी झोंपड़ी में गरीब का प्यार आलोकित हो उठा. उस की प्रेयसी उस के हृदय से लिपट कर रोती रही.

डेढ़ महीने बाद. रात के थारह बजे
 किसनू झोंपड़ी के बाहर खड़ा हुआ था।
 देख रहा था. श्यामा अब तक नहीं आई.
 वह व्यग्र हो उठा. अंधेरी रात. भूसला-
 धार वर्षा हो रही थी. शायद जमना के
 घर चली गई हो. वह कंवल और लाठी
 ले कर निकल पड़ा.

“यहां तो नहीं आई,” जमना ने
 कहा.

किसनू के पैर तले से जमीन निकल
 गई. “मैं ने सोचा, और कहां जाएगी.
 उस दिन भी तुम्हारे ही घर आई थी.”

“कब? श्यामा तो आज तक मेरे
 घर नहीं आई.”

“कभी नहीं आई?”

जमना को एकदम गलती महसूस हुई.

पर अब क्या करती? मुंह से
 निकला शब्द वापस नहीं आता. वह कुछ
 कहना चाहती थी, पर किसनू एकदम
 चला गया.

रात को तीन बजे श्यामा लौटी.
 किसनू भूखे पागल बाघ की तरह झोंपड़ी
 में इधरउधर टहल रहा था.

“कहां थी तू?” उसे देखते ही वह
 चिल्ला उठा.

श्यामा के मुंह से शब्द नहीं निकला.
 वह पीली पड़ गई. किसनू धमकाता रहा.
 वह चुप रही. “तू जमना के घर नहीं थी.
 उस दिन भी वहां नहीं गई थी. झूठी!
 बदमाश!” किसनू ने लातघूसों की चौछार
 शुरू कर दी. वह उस के पैरों पर गिर
 कर बिलखबिलख कर रोने लगी.

“कहां गई थी?” किसनू ने फिर

उस ने सब बता दिया, “तुम्हारी
 नौकरी चली जाती... उस ने कहा था.
 हम सब, रामू के बाबा, दादी और रामू
 भूखों मर जाते.” वह बहुत रो चुकी
 थी, अब उस की छाती फटी जा रही थी.

किसनू के हाथ रुक गए. क्षण भर
 अवाक खड़ा रहा. फिर पागल की तरह
 बाहर भागा और आंधीवारिश के अंधड़
 में खो गया. श्यामा कटी डाल की भांति
 पृथ्वी पर पड़ी रही, सिसकती रही.

अगले दिन फैक्टरी में कोलाहल मच
 गया. एक मजदूर ने टाइम कीपर की
 छाती में छुरा भोंक दिया, और पकड़े
 जाने के पहले उस की लाश को पैरों से
 ठुकराया, उस पर थूका. पुलिस ने बयान
 लेना चाहा, पर वह चुप रहा. उस ने
 हत्या का कारण नहीं बताया. किंतु जुर्म
 तो प्रत्यक्ष था. खून बोल रहा था. खूनी
 को कानून के शिकंजे में कस दिया गया.
 अपराध का दंड, पाप का फल देने के
 लिए ही तो कानून है. किंतु पापी कौन
 था, किसी ने न देखा.

किसनू के बूढ़े मांवाप—टूटे हुए
 छप्पर के समान बेकार, समाज के बूझा-
 करकट—व्यथा से कराह उठे. उन की
 धंसी हुई आंखों से आंसू न निकले. और
 श्यामा—उजड़े हुए दयार सी, भग्न हृदय,
 क्षतविक्षत. और रामू—बेचारा अवोष
 बालक, लुटी बहार का बचा फूल. उफ!
 सब के जीवन में अंधकार छा गया. किंतु
 किसी ने न देखा.

आज मेरे लिए...

तेरी रुस्वाई न बन जाए कहीं मौत मेरी,
 आज मेरे लिए हर्गिज न परेशां होना.
 आओ सो जाएं खिजां आने से पहले एक रात,
 कौन देखेगा बहारों का परेशां होना.

—अब्दुल मजीद ‘अदम’

इस बारे में अब लभ्यमान वैज्ञानिक एकमत हैं कि नपुंसकता शारीरिक बीमारी न हो कर मानसिक बीमारी है। इसलिए इस का निदान भी मनोवैज्ञानिक चिकित्सा प्रणाली से ही संभव है। यद्यपि उत्तम दवाएं भी आजकल काफी प्रचलित हैं, परंतु बाद में उन से हानि ही होती हुई देखी गई है। इस प्रकार की ओषधियां (स्टीम्युलेंट्स) प्रयोग करने वाले उन के मोहताज हो जाते हैं और उन में पुंसत्व की प्राकृतिक प्रक्रिया समाप्त हो जाती है।

किन्हीं लोगों के उपचेतन में किन्हीं कारणों वश यह बात घर कर जाती है कि वे अपने साथी के साथ किसी खास स्तर के संबंध स्थापित नहीं कर सकते। ओं ही वे अपने साथी के साथ समागम के लिए प्रवृत्त होते हैं, यही हीन ग्रंथि उन्हें दबोच लेती है, जिस से उन की सायु पद्धति गड़बड़ा जाती है और वे अपने आप को असहाय अवस्था में पाते हैं।

इस के मूल में उन का विकृत मानसिक विकास ही है। बचपन से ही एक विशेष प्रकार के वातावरण में पलने अथवा हस्तमैथुन आदि को भयावह मान बैठने से प्रायः इस प्रकार की हीन ग्रंथियां बनती देखी गई हैं। इस प्रकार के लोग प्रायः अत्यंत कामुक होते हैं। इस के अतिरिक्त वह अपने बाल्यकाल में ही काम संबंधों के प्रति सजग हो उठते हैं। काम का अल्पायु में प्रस्फुटन कई बार बाद में काममूलक उपरामता (सेक्सुअल फ्रिजि-

नपुंसकता

डिटी) को जन्म देता हुआ भी देखा गया है।

इस के अतिरिक्त स्त्रीपुरुषों के आपसी संबंध भी इस में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यदि स्त्रीपुरुष के प्रेम संबंध सामान्य एवं सहज हैं तो इस प्रकार की ग्रंथि प्रायः जन्म नहीं लेती, परंतु स्त्री यदि किसी भी प्रकार से पुरुष पर जरा भी हावी हो जाती है तो काम संबंधों में बाधा उपस्थित हो जाना निश्चित सा ही है।

इसलिए आजकल तथाकथित नपुंसक व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक इलाज करते हुए उन की पत्नियों को भी मनोवैज्ञानिक चिकित्सा दी जाती है। उन की पत्नियों को उन कारणों से परिचित कराया जाता है, जिस के कारण उन के पति नपुंसकता की बीमारी से ग्रस्त हो जाते हैं। उन कारणों से परिचित कराने के बाद उन्हें समझाया जाता है कि वे समय विशेष पर अपने पतियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करें। इस के लिए चिकित्सक रोगी से कई बार मिल कर उस की स्थिति का उचित जायजा लेते हैं। फिर उस की पत्नी से मिल कर इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि रोगी की नपुंसकता कैंसी और कितने दर्ज की है।

मान लीजिए, रोगी कहता है कि उसे उसी क्षण नपुंसकता का एहसास होना आरंभ होता है जब आफिस से घर लौटते ही उस की पत्नी उस का चुंबन लेती है। ऐसी स्थिति में चिकित्सक पत्नी को ऐसा न करने की सलाह देगा और तब तक

शरीर में उत्पन्न विचार का प्रभाव मन पर पड़ता है और मन के विचार का प्रभाव तन पर। आखिर नपुंसकता तन का विकार है या मन का?

सहवास के लिए मना कर देगा जब तक कि वह वे सब तरीके नहीं खोज निकाल लेता जिस से पति को पूर्ण रूप से संभोग के लिए मानसिक रूप से तैयार किया जा सके. ऐसा न करने पर परेशानियां काफी बढ़ सकती हैं और दांपत्य जीवन में कटुता आ सकती है.

ऐसी बीमारी में बिना पत्नी तथा चिकित्सक को उलझाए पहला तथा सब से आसान कदम यह उठाया जाएगा कि रोगी को समझाया जाए कि वह अपनी पत्नी को किस प्रकार बिना किसी उत्तेजना के चुंबन दे. उस से इस तरह

कितने ही कारण इस के लिए गिनाए जा सकते हैं. इन कारणों से छुटकारा पा बिना कोई भी पुरुष पूर्ण होते हुए अपनेआप को नपुंसक मान बैठ सकता है. यहां यह बात बता देना जरूरी है कि नपुंसकता जैसी कोई भी चीज नहीं होती. ऐसा प्रायः कभी नहीं होता कि कोई पुरुष एकाएक नपुंसक हो जाए. नपुंसकता दरअसल कोई बीमारी न हो कर एक प्रकार की हीन ग्रंथि है, जिस से चिकित्सा की सहायता से बड़ी आसानी से छुटकारा पाया जा सकता है.

नपुंसकता को भयंकर बीमारी मान देने में सब से महत्वपूर्ण भूमिका नुकझिहकीमों ने अदा की है. उन्होंने रोगी को इस मनोवैज्ञानिक डर का लाभ उठा कर उसे बुरी तरह गुमराह किया है. लगातार तरहतरह के ताकती विज्ञापनों तथा मजमेबाजों के किस्सों ने नपुंसकता के स्तर पर मनुष्य के मस्तिष्क को खोखला कर के धर दिया है और आज स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि 90 प्रतिशत पुरुष किसी न किसी रूप में स्वयं को नपुंसक समझते हैं. इस में जहां एक ओर व्यक्तिगत जीवन तबाह होता है, वहीं दूसरी ओर दांपत्य एवं सामाजिक जीवन में भी दरारें पड़ने लगती हैं.

इसलिए यह बात जान लेने के बाद कि नपुंसकता का कोई अस्तित्व ही नहीं है, इस के खिलाफ मानसिक युद्ध किया जाना चाहिए. इस मामले में पत्नियां अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं. उन्हें चाहिए कि वह पुरुषों को सहज होने में उनकी सहायता करें. व्यक्ति को सहज होने पर नपुंसकता स्वयमेव हल हो जाएगी. बहुत बार संभोग कर लेने पर समर्थ होने से कोई पुरुष पुरुष नहीं होता जाता. यदि कोई व्यक्ति महीने में एक बार संभोग करता है तो वह भी उतना ही पुरुष है जितना कि एक रात में बार बार संभोग करने वाला. इसलिए जाइए कि नपुंसकता भी कोई बीमारी होती है और सहज हो कर जीने की आदत डालिए.

कमजोरी

हमारी कुछ कमजोरियां पैदा-यशी होती हैं, अन्य हमारी शिक्षा का परिणाम. प्रश्न यह है कि इन में से कौन अधिक दुखदायी हैं.

—गेटे

कमजोरी का इलाज कमजोरी की चिंता करना नहीं पर शक्ति का विचार करना है.

—स्वामी विवेकानंद

कमजोर होना दुखी होना है.

—मिल्टन

का पूर्वभ्यास कराया जाएगा. इस प्रकार के चुंबन ले लेने में सफलता प्राप्त कर लेने के बाद उसे वास्तविक चुंबन लेने का परामर्श दिया जाएगा. आत्मविश्वास जाग्रत होने पर इस बीमारी का इलाज स्वयं हो जाएगा.

नपुंसकता कई कारणों से विकसित हो सकती है. असुरक्षा की भावना, आर्थिक अभाव, मनोवैज्ञानिक डर, हीनता का बोध, काम संबंधों का अपर्याप्त ज्ञान, गलत संस्कार, स्त्रीपुरुषों की परस्पर असहजता, काममूलक तटस्थता आदि

ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए प्रकाशित होने पर दस रुपये की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी।

भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● हमारे कालिज में वार्षिक उत्सव होने वाला था। मैं अपने दोस्तों के साथ एक गलस कालिज में निर्मंत्रणपत्र देने गया। कालिज के गेट पर ही कुछ लड़कियां हमारा मजाक उड़ाते हुए बोलीं, “आइए, आइए, किस की शादी का कांड है?”

मेरे दोस्त ने तपाक से उत्तर दिया, “अजी, शादी कहां, अभी तो लड़की पसंद करने आया हूं。”

सुनते ही लड़कियां झेंप गईं।

—मुरेंद्रकुमार, भोपाल

● जनवरी में मैं अपने एक मित्र के साथ दार्जिलिंग घूमने गया। एक दिन सूर्योदय देखने के लिए सुबह पांच बजे हम टाइगर हिल पहुंचे। वहां काफी भीड़ थी। उसी समय लड़कों की एक टोली आई और वहां खड़े लोगों पर तरहतरह की फन्तियां कसने लगी। जब वे हमारे पास से गुजरे तो मेरे मित्र ने पूछा, “आप लोग कहां से आए हैं?”

“आगरा विश्वविद्यालय से,” जवाब मिला।

“हां, वह तो आप की हरकतों से ही लग रहा है,” मैं ने कहा।

यह सुनते ही आसपास के लोग हंस पड़े और वे न जाने कहां भीड़ में खो गए।

—हरीसिंह, रायपुर

● मेरठ के एक डिग्री कालिज के कुछ छात्र नेताओं ने अपना एक उड़ाकू दस्ता बना कर प्रोफेसरो के लिए सिरदर्द पैदा कर दिया है और ‘नकल करो अभियान’ में एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है।

छात्रों का कहना है कि जब प्राध्यापक उन्हें परीक्षा भवन में पुस्तकों और पत्रों का प्रयोग करने से रोकते हैं तो हम भी उन्हें कक्षाओं में किताबों और नोट्स का प्रयोग नहीं करने देंगे। वे जो भी विषय पढ़ाएं, पुस्तकों का सहारा लिए बिना पढ़ाएं।

छात्र नेताओं का उड़ाकू दस्ता विभिन्न कक्षाओं में अचानक जा कर यह देखेगा कि कोई प्राध्यापक पुस्तक की सहायता से तो नहीं पढ़ा रहा है?

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : अनिलकुमार, टोंक)

● विधान सभा के चुनावों के दौरान कुछ लड़के दीवार पर कांग्रेस के प्रचार के लिए पोस्टर चिपका रहे थे। एक लड़का नारा भी लगा रहा था, “कांग्रेस को वोट दो。”

तभी किसी ने टोका कि अंगरेजी में नारा लगाओ। लड़का जोर से चिल्लाया, “वोट फार काउ एंड...”

“बछड़े को अंगरेजी में क्या कहते हैं?” उस ने रुक कर अपने साथी से पूछा। लेकिन उस से भी बताते नहीं बना। लड़का कुछ देर तक सोचता रहा फिर जोरजोर से नारा लगाने लगा, “वोट फार काउ एंड चिलड्रन。”

—चंद्रशेखर अग्रवाल, सतना ●

“अमीनान, अभी तक अशरफ तहजीब को संतुष्ट करते हुए बोले, “आप अभी तक बेंठी हुई हैं? कीजिए, फिल्म शुरू हो जाएगी.”

तहजीब ने अपनी कलाई घड़ी की ओर देखते हुए उत्सुकता से पूछा.

“आता होगा. तुझ से कितनी बार कहा कि उसे ‘भाई’ मत कहा कर. उस का नाम लेने में तुझे क्या परेशानी होती है? आखिर वह तुझ से सिर्फ एक ही साल तो बड़ा है,” तहजीब की मां ने तहजीब को टोकते हुए कहा

“एक साल बड़े हों या एक दिन, हैं तो बड़े ही. फिर भाई तो वह दोदो रिश्ते से लगते हैं. तब क्यों न भाई कहूं?” तहजीब बोली.

तहजीब की मां कहने वाली थीं कि अशरफ से तहजीब का एक अलग ही रिश्ता होने वाला है जो भाईबहनों के रिश्तों से बिल्कुल भिन्न होता है. इसी लिए वह बारबार ‘भाई’ शब्द का प्रयोग न करने पर जोर डाला करती हैं. परंतु वह कुछ न कह सकीं क्योंकि उसी समय तहजीब की मां की बड़ी बहन वहां आ कर खड़ी हो गई.

ठीक उसी समय बाहर एक कार रुकने की आवाज आई.

“शायद अशरफ आ गया,” तहजीब की मां ने कहा.

अशरफ ने घर में प्रवेश किया और

तहजीब को संतुष्ट करते हुए बोले, “आप अभी तक बेंठी हुई हैं? कीजिए, फिल्म शुरू हो जाएगी.”

“जाइए, मैं नहीं बोलती आप ने सात बजे आने को कहा था, अब साढ़े सात हो रहे हैं,” बनावटी प्रदर्शित करते हुए तहजीब ने अपनी मां की ओर दृष्टि डाली

“मेरी बिल्लो! यादव टांका से सीधे ही चला आ रहा हूं. तुम्हारे ही तो जिद थी कि देखेंगे तो ‘दीवार’ फिल्म देखेंगे. नई फिल्म लगी है. मां का कोई ठिकाना नहीं है. फिर भी कि तरह दो टिकट निकाल लाया हूं बाल्मिकी के,” अशरफ ने सफाई दी.

“मैं अभी तैयार हो कर भाई कह कर तहजीब तैयार होने चली गयी. शीघ्र ही तहजीब कपड़े बदल आ गई. दोनों घर से बाहर निकल गए. कुछ ही देर में कार के स्टार्ट होने की आवाज आई.

“कितनी खूबसूरत जोड़ी लगती है दोनों की!” तहजीब की मौसी ने तहजीब की मां से कहा.

“इसी लिए तो मैं बारबार तहजीब से कहती हूं कि अशरफ को ‘भाई’ कहना छोड़ दे.” तहजीब की मां बोलीं.

“अब हमें इन दोनों की शादी बन ही कर देनी चाहिए,” तहजीब की मौसी ने कहा.

“मेरा भी यही खयाल है कि शादी जल्द हो जाए तो अच्छा है. इसी ईद के चांद के बाद किसी तारीख को शादी हो जानी चाहिए. मैं इस फर्ज से जितना जल्दी हो सके मुक्त हो जाना चाहती हूं,” तहजीब की मां बोलीं.

“पर हमें दोनों को पहले से ही इतिला दे देनी चाहिए,” तहजीब की मौसी बोलीं.

“दोनों एकदूसरे से इतने घुल मिल गए हैं कि शादी की बात सुनते ही खुश से उछल पड़ेंगे,” कहते हुए तहजीब की मां का चेहरा खुशी से एकदम खिल उठा.

भांदा
रिवाज

कहानी

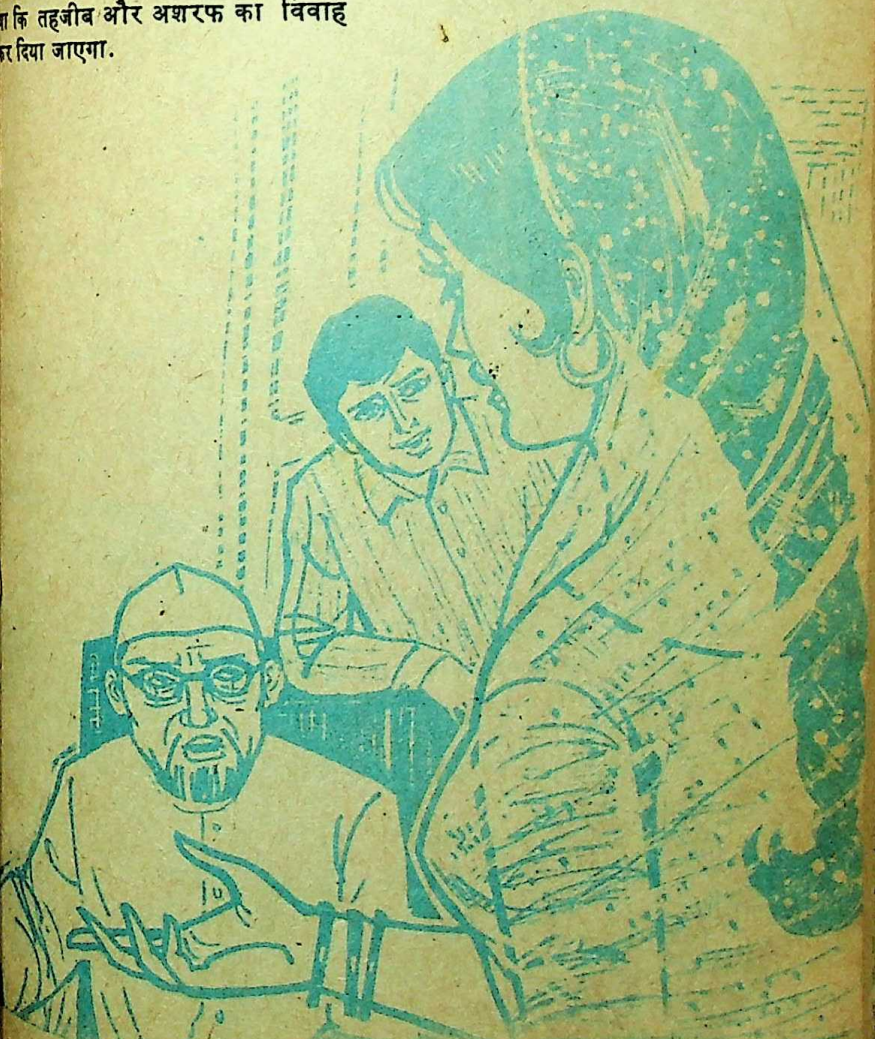
अजीज अफसर ‘राही’

तहजीब की मां तथा अशरफ की मां दोनों सगी बहनें थीं. दोनों के विवाह भी दो सगे भाइयों से हुए थे. तहजीब के पिता छोटे भाई थे और अशरफ के पिता बड़े.

सगे भाई तथा सगी बहनें होने के कारण ये दोनों परिवार संयुक्त रूप से साथसाथ रहते थे. अशरफ के पिता अभी बिदा थे और लकड़ी के व्यापार में लगे हुए थे. तहजीब के पिता का किसी बीमारी के कारण देहांत हो गया था.

जब तहजीब और अशरफ छोटे थे, उसी समय तहजीब के मातापिता और अशरफ के मातापिता में यह तय हो गया था कि तहजीब और अशरफ का विवाह कर दिया जाएगा.

अशरफ ने बचपन से जिसे बहन माना था, अब उसे ही बीवी मानने के लिए मजबूर किया जा रहा था... लेकिन अशरफ ने क्या निर्णय किया?



"तुम तो अपने इस लकड़ी के काम से ऐसे चिपक गए हो कि घर की कुछ खबर ही नहीं है. कल तुम जंगल नहीं जाओगे. आज ही अपने नौकरों को कल का काम समझा आना," अशरफ की मां ने अशरफ के पिता से कहा.

"क्यों, क्या कोई खास बात है?" अशरफ के पिता बोले.

"लड़का जवान हो रहा है. कुछ उस की भी फिक्र है तुम्हें?" अशरफ की मां ने तुनक कर कहा.

"भई, इस में फिक्र करने की क्या बात है? लड़की तलाश करने कहीं जाना नहीं है. कोई तारीख तय कर लो और शादी कर डालो," अशरफ के पिता ने हंसते हुए कहा.

"पर अशरफ को तो बताना है. तुम कल दिन में रुक कर उसे सब समझा देना. मेरी हिम्मत नहीं पड़ती."

"ठीक है, कल मैं घर पर ही रहूंगा," अशरफ के पिता ने कहा.

"बेटे, अब तुम होशियार हो गए हो. हम चाहते हैं कि तुम्हारी शादी कर के अपना फर्ज पूरा कर दें. लड़की हम ने पसंद कर ली है," अशरफ के पिता ने अशरफ से कहा.

"पर, अब्बाजी, लड़की मैं भी देखना चाहूंगा. बिना लड़की को देखे मैं शादी की मंजूरी नहीं दे सकता," अशरफ बोला.

"हम ने इसी लिए तो तुम्हें इतनी आजादी दे रखी थी कि तुम दोनों एकदूसरे को अच्छी तरह समझ सको." अशरफ के पिता ने कहा.

"मैं आप का मतलब नहीं समझा, अब्बाजी," अशरफ ने कुछ उत्सुकता से कहा.

"मेरा इशारा तहजीब की तरफ है," अशरफ के पिता ने बात को स्पष्ट करते हुए कहा.

"क्या? तहजीब से मेरी शादी!" अशरफ लगभग चौंकते हुए आश्चर्यमिश्रित शब्दों में बोला.

"क्यों, इस में आश्चर्य की क्या बात

है?" अशरफ के पिता ने पूछा.

"एक बहन के साथ एक भाई शादी! नहीं, नहीं. अब्बाजी, मैं बड़ा अजाब नहीं कर सकता."

"बेटे अशरफ, इसलाम में दूध का रिश्ता बचाने को कहा गया यानी सिर्फ सगे भाईबहन की शादी नहीं है. फिर इस शादी में अजाब की खुद हम दोनों भाइयों ने भी चचेरी बहनों से शादी की थी."

"आप ने जो कुछ भी किया अब्बाजी, पर मैं इस तरह के रिश्तों शादी का तरफदार नहीं हूँ," अशरफ दृढ़ता के साथ कहा.

"क्यों?" अशरफ के पिता ने संक्षिप्त सा प्रश्न किया.

"इसलिए कि भाईबहन के बहुत पाक रिश्ते होते हैं. उन रिश्तों मियांबीबी में बदलना ठीक नहीं है. चाची, खाला के लड़के या लड़कियाँ आपस में शादी नहीं होनी चाहिए, कौन पारिवारिक रिश्तों में वही खून लड़का होता है जो लड़के में होता है. तब की नसों में तो शतप्रतिशत वही बह रहा है, जो मेरी नसों में है. फिर दोनों की आपस में शादी कैसे हो सकती है?" अशरफ ने जवाब दिया.



“क्या मतलब ?” अशरफ के पिता ने पुनः प्रश्न किया।

“मेरी माँ की बहन की लड़की होने की वजह से 50 प्रतिशत और मेरे बाप के भाई की लड़की होने की वजह से 50 प्रतिशत, इस तरह तहजीब में शतप्रतिशत वही खून है जो मुझ में है। इसलिए मैं बहन के रिश्ते को बीबी के रिश्ते में बदलने को तैयार नहीं हूँ,” अशरफ ने बात साफ करते हुए कहा।

“तुम्हें मालूम होना चाहिए कि बाबा आदम अपनी संतानों की आपस में ही शादी कर दिया करते थे। उन्हीं संतानों की हम औलाद हैं,” अशरफ के पिता ने अपने पक्ष में दलील दी।

“अब्बा हुआ, तब में और अब में जमीनआसमान का फर्क है। वह जमाना ‘पत्थर युग’ कहलाता था, जिस में आदमी निरा जंगली था। आज हम ‘अणु युग’ में रह रहे हैं। फिर आदम की संतानों की आपसी शादी की बातें महज किस्से-कहानी भी तो हो सकती हैं।”

“किस्सेकहानी किस तरह?” अशरफ के पिता भुंझला उठे।

“इतिहास हमें कहीं पर भी यह नहीं बताता कि महज एक या दो आदमी ही जमीन पर पहले पैदा हुए थे। हो सकता

है, माफिक माहौल या कर हजारों आदमी पहले पैदा हुए हों। ऐसी हालत में भाई-बहन की आपस में शादी करने की शायद जरूरत ही न पड़ी हो,” अशरफ बहस करने पर आमादा था।

“तुम क्या समझते हो कि इसलाम ने इन सभी रिश्तों में आपस में शादी की इजाजत दे कर भूल की है?” इस बार अशरफ के पिता ने मजहबी तर्क पेश किया।

“हो सकता है कि जब इसलाम के कायदेकानून बने थे उस वक्त ऐसे रिश्तों की जरूरत रही हो। उस वक्त यह सोच कर कि कहीं लड़कियों की शादी में दिक्कत न आ जाए, शायद यह रिवाज चालू कर दिया होगा। इस की खास वजह यह भी हो कि उस वक्त मुसलमानों की संख्या कम रही होगी। जो भी हो, आज के युग में यह एक गंदा रिवाज है और इसलिए इसे खत्म कर देना चाहिए,” अशरफ अपनी बात पर अड़ा रहा।

“तुम्हें मालूम होना चाहिए, बर-खुरदार, कि इसलाम के कायदेकानून बहुत सोचसमझ कर बनाए गए हैं। इन्हें हम हजारों साल तक चालू रख सकते हैं,” अशरफ के पिता ने कहा।

“नहीं, अब्बाजी, यह सोचना हमारी

तबाही दिल की

तबाही दिल की देखी है जो हम ने अपनी आंखों से,
हो अब कैसी ही बस्ती हम उसे बीराना कहते हैं।
खिजां अंजाम है सब की बहारे चंद रोजा की,
बहुत रोता हूँ सूरत देख कर गुलहाए खंदा की।
परदा उठा दे इक दिन तू ऐ हिजाबे हस्ती,
पाता हूँ उस की दिल में देखा मगर नहीं है।

—नजर लखनवी

ऐ रहनुमा तू बैठ यही हम खुद मंजिल को जा लेंगे,
दोचार कदम चल कर ही तेरा दम टूट गया, जी छूट गया।

—अर्श मल्लिकानी

भूल है कि कल जो कायदेकानून बन चुके हैं, उन में तबदीली की जरूरत कभी नहीं होगी। कायदेकानून हमेशा लचीले होने चाहिए, जो वक्त के साथ चल सकें और बदल सकें। अगर ऐसा नहीं होगा तो समाज की तरक्की रुक जाएगी," अशरफ टस से मस होने को तैयार नहीं था।

अशरफ और उस के पिता में वाद-विवाद हो रहा था। उन दोनों की आवाजें सुन कर अशरफ की मां और तहजीब की मां भी वहां आ कर खड़ी हो गई थीं।

"सुना तुम ने?" अशरफ के पिता ने अपनी पत्नी को संबोधित किया, "आप के साहबजादे फरमाते हैं कि इसलाम में फूफी, चाची, खाला के बच्चों की आपस में शादी एक गंदा रिवाज है, इसे बदल डालना चाहिए!"

"बेटे, बड़ों से जिद नहीं करते," अशरफ की मां ने प्रेमपूर्ण शब्दों में समझाते हुए अशरफ से कहा, "तुम्हें मालूम

होना चाहिए कि तुम्हारी और तहजीब की शादी तो बचपन में ही तय कर दी गई थी।"

"यह तो बच्चों के साथ और भी ज्यादा होती है, अम्मीजान, कि उन की शादी का मसला उस वक्त तय कर दिया जाता है, जब वे नासमझ होते हैं। खैर, मैंने कह दिया कि मैं ऐसी लड़की से शादी हरगिज नहीं कर सकता जिस की रंगों में वही खून बह रहा हो जो मेरी रंगों में है," अपना अंतिम निर्णय सुनाते हुए अशरफ ने कहा।

"तुम्हारी इस बारे में क्या राय है?" अशरफ के पिता ने अपनी साली, अर्थात् तहजीब की मां से प्रश्न किया।

"जब लड़का तैयार न हो तो मैं क्या कर सकती हूं? पर हमें तहजीब से भी पूछ लेना चाहिए कि उस की क्या राय है," तहजीब की मां ने कहा।

तहजीब का नाम लिया ही गया था कि तहजीब स्वयं आ उपस्थित हुई।

"बेटी तहजीब, अशरफ ने..."

"मैं ने आप लोगों की सारी बातें बराबर के कमरे में बैठ कर सुनी हैं," तहजीब ने अशरफ के पिता की बात बीच में ही काटते हुए कहा, "अशरफ भाई ठीक कहते हैं। जिस आदमी को मैं आज तक भाई मानती आई हूं, उसे मैं एक शौहर में कैसे बदल सकती हूं? अशरफ भाई ने मेरा परिचय अपने दोस्तों में एक बहन के रूप में दिया है। कल अपनी बीवी के रूप में परिचय कराते हुए क्या अशरफ भाई शर्म से पानीपानी न हो जाएंगे?"

तहजीब कुछ देर के लिए चुप हो गई और पुनः बोली, "यह गंदगी नहीं तो और क्या है कि जो आदमी एक लड़की को बहन कहता रहे, उसी की बीवी बना कर अपने बिस्तर पर...? मेरे बुजुर्गों, वास्तव में यह एक गंदा रिवाज है, जिसे खत्म होना ही चाहिए," इतना कह कर तहजीब उस स्थान से तीर की भांति निकल गई।

सरितामुक्ता विकास योजना

सरितामुक्ता विकास योजना के अंतर्गत सरितामुक्ता के 48 अंक बिना कुछ खर्च किए पढ़िए (इन का मूल्य 96 रुपए होता है...)

इस योजना के अंतर्गत जमा राशि केवल 750 रुपए है जो 3 किस्तों में जमा कराई जा सकती है, यह राशि 6 महीने के नोटिस पर लौटाई जा सकेगी।

चेंक या ड्राफ्ट इस पते पर भेजे :

दिल्ली प्रिंटिंग एंड पब्लि-

शिंग कंपनी प्रा. लि.

दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, भंडेवाला

एस्टेट, नई दिल्ली-55

जुलाई (द्वितीय) 1975

बच्चों के लिए उपन्यास मनोरंजन तीन बाल उपन्यासों का सेंट



वीरान टापू

डाकू लाखन का गिरोह बच्चों को उड़ा कर उन के मातापिता से रकम ऐंठने लगा। यही लाखन जब नीलू को बहका कर ले गया तो मोहन को बड़ी ठेस पहुंची। डाकुओं को रंगे हाथ पकड़ा कर उस ने अपना लक्ष्य पूरा किया.....मोहन वीरान टापू पर डाकुओं के अड्डे तक कैसे पहुंचा? उस ने पूरे गिरोह को कैसे गिरफ्तार करवाया? इन प्रश्नों का हल इस रोमांचक बाल उपन्यास में मिलेगा।

योगीराज

कपटी बंदर और उस के घूर्त साथी लोमड़ और गीदड़ ने भक्ति के नाम पर नंदनवन के जानवरों को खूब लूटा। और नंदनवन के सीधेसादे जानवर 'योगीराज' कह कर बंदर के चरणों में सिर नवाने लगे.....लेकिन तभी समाजसेवक भालू ने उन की घूर्तता की पोलपट्टी खोल दी। बच्चों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही यह उपन्यास उन्हें पाखंडियों से बचने की राह भी दिखाएगा।



मंगल की सैर

मंगल पर जाना था उमेश चाचा को लेकिन चला गया वीपू जिसे अंतरिक्ष यात्रा का कोई अनुभव नहीं था.....वहां की उड़नतश्तरियां, मशीनी आबमो, विचित्र लालहरी रोशनियां, बौना मिक् और उस के साथी—इन सब की ढेर सारी यादें ले कर वीपू जब धरती पर लौटा उस के चाचा बेसब्री से उस का इंतजार कर रहे थे।

प्रत्येक रु. 2.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.
पूरा सेंट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए ग्रन्थिम भेजें.

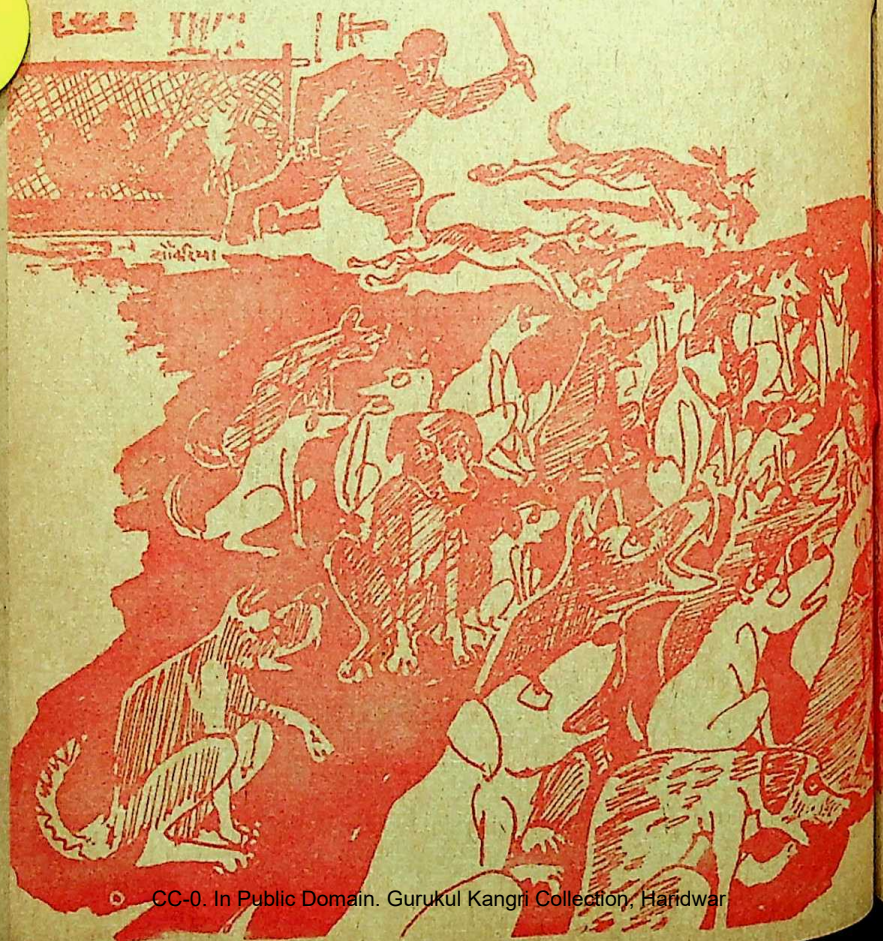
नरनारी मलदान करने जाते हैं, वहाँ कल रात के बारह बजे नगर के कुत्तों ने 'कुत्ता सम्मेलन' का आयोजन किया था. यह कुत्ता सम्मेलन 'दरबारी कुत्तों' और 'पूँजीपति कुत्तों' का सम्मेलन न हो कर खालिस बाजारू, शोषित और सर्वहारा कुत्तों का सम्मेलन था. इस सम्मेलन में कुत्तों की भोजनीय एवं सांस्कृतिक समस्याओं पर विचार हुआ था. सम्मेलन में अधिक से अधिक कुत्तों को पधारने का अनुरोध किया गया था. कुत्तों को अपने 'कुत्ता सम्मेलन' की सफलता की पूरी आशा थी.

सम्मेलन में समय से पहले ही नगर की दूरदूर गलियों से कुत्ते और कुतियां झुंड बना कर पधारने लगे थे. लगता था, आदमियों की अपेक्षा कुत्ते वक्त के ज्यादा

कुत्ता

पाबंद हैं. तरहतरह के कुत्ते और कुतियां बड़ी संख्या में पधार रहे थे. रात के अंधेरे में उन के रंग का अनुमान लगाना तो कठिन था, हाँ, उन के आकारप्रकार, छोटेबड़े, मोटेपतले, मरियल और लंगड़े होने का साफसाफ पता चल रहा था.

ऐसा लगता था, संयोजकों ने एक 'स्वागत समिति' भी गठित की थी. स्वागत समिति के नेतानुमा कुत्ते, जिन में



सम्मेलन

एक कुतिया भी थी, स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे थे. मैदान में उस सिरे पर जहां से कुत्तों और कुतियों की भीड़ आ रही थी, स्वागत समिति के सदस्य खड़े हो कर भौंकभौंक कर उन का स्वागत कर रहे थे. आगंतुक 'कुत्ता जनता' में कुछ विशिष्ट कुत्ते और कुतियां भी थीं, जो अपनी-अपनी गलियों के नेता और नेत्रियों रहे होंगे. स्वागत समिति के सदस्य इन नेताओं

व्यंग्य

महेशचंद्र 'स्वदेशी'

और नेत्रियों का स्वागत विशिष्ट तरीके से मुंह सूंघसूंघ कर और दुमों को विशेष प्रकार से हिलाहिला कर कर रहे थे.

ठीक समय पर सम्मेलन की कार्य-वाही आरंभ हुई. सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए श्री झपटारामजी का नाम प्रस्तुत किया गया, जो सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया. श्री झपटारामजी अध्यक्ष के आसन को अपनी दुम से साफ कर के ठाट से बैठ गए. एक 'बाबूनुमा' कुत्ते श्री मरियलजी ने सम्मेलन में बोलने वाले कुत्तों और कुतियों के नाम की लिस्ट अध्यक्ष के हवाले की. अध्यक्ष को कुछ कहना नहीं पड़ा. मरियलजी ने अपनी 'भौंक वाणी' में श्री झब्रजी पत्तलचाट का नाम पुकारा और बताया कि श्री पत्तलचाटजी कुत्तों की भोजनीय एवं अन्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट करेंगे. मंच पर एक शक्ल उभरी और एक 'लीडरनुमा' कुत्ता दुम दबा कर माइक थाम कर बड़ी गंभीर वाणी में बोला :

"आदरणीय अध्यक्ष महोदय एवं प्यारे कुत्ते और कुतियो! आप को यहां इतनी बड़ी संख्या में अनुशासनबद्ध और शांत देख कर मुझे बड़ी खुशी हो रही है. आज आप ने आदमी के इस आरोप को गलत सिद्ध कर दिया है कि 'कुत्ते का कुत्ता बैरी' होता है. आप के अनुशासन और सम्मेलन में समय पर पहुंचने से सिद्ध होता है कि मनुष्य की अपेक्षा कुत्ता ज्यादा समझदार जानवर है. मनुष्य का अपने को जानवरों में सब से बुद्धिमान समझने का गर्व झूठा है. निस्संदेह हम

मनुष्य ने कुत्तों का अधिकार भी छीन लिया और गुण भी, लेकिन उन्हें कैसे बर्दाश्त होता कि उन की संस्कृति भी छीनी जाए...और सहूल्ले के कुत्तों ने एक सम्मेलन कर डाला...

कुत्ते अपनी प्रशंसा और इनसानों की बुराई सुन कर जोरजोर से भौंकने लगे। शायद वे 'शेमशेम' कर रहे थे और जबान से तालियां बजा रहे थे,

श्री पत्तलचाटजी तालियों की गड़-गड़ाहट रुकने पर बोले, "आज हम यहां पर कुत्तों की समस्याओं पर विचार करने के लिए एकत्र हुए हैं। अपनी महान श्वान जाति की दुर्दशा देख कर मुझे रोना आ जाता है। आज इनसान नाम का यह जानवर हमारे प्रति कितना कृतघ्न, अनुदार और क्रूर हो गया है। हमारी निःस्वार्थ सेवाओं को कितना भूल गया है। जिस गंदेसड़े भोजन को खाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, वह अब आदमी स्वयं खा कर हमें भूखा मारने का षड्यंत्र कर रहा है। भाइयो! मैं दावे के साथ कह सकता हूं, राशन में जो गंदा और सड़ा गेहूं आदमियों को मिल रहा है वह हमें रोटियां बना कर खिलाने के अंश

मुक्ता

1972 के छमाही सेट

केवल 10 रुपए में

डाक खर्च 2 रुपए अतिरिक्त

83 कहानियां, 108 लेख, 39 कविताएं, एक धारावाही उपन्यास तथा ढेरों अन्य रोचक सामग्री।

जनवरी से जून और जुलाई से दिसंबर तक मुक्ता के बारहबारह अंकों के सेट प्राप्त हैं। प्रत्येक सेट का मूल्य 10 रु. मात्र है।

आज ही मनीआर्डर द्वारा धन भेजिए।

मनीआर्डर कूपन पर यह लिखें : "प्रथम/द्वितीय, 1972 के मुक्ता के सेट के लिए धन."

दिल्ली प्रकाशन, ई-3, भंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

"यही नहीं, अब न तो हलवाईयों की कढ़ाईयों में और न गृहिणियों के दूध के बर्तनों में मलाई लगी होती है। मैं जानता हूं, दूध में से मक्खन निकाल कर सिर्फ फीका दूध कढ़ाई और बर्तनों में उबाल दिया जाता है, जिस से हम बेचारे कुत्ते 'मलाई चाट' अधिकार से वंचित रह जाते हैं। मगर साथियो, हम अब ये अत्याचार सहन नहीं करेंगे। हम आंदोलन, हड़ताल और आमरण अनशन करेंगे। मर जाएंगे, किंतु अपने अधिकार अवश्य वापस लेंगे।"

कुत्तों ने भौंकभौंक कर करतल ध्वनि की। पत्तलचाटजी पता नहीं कितनी देर बोलते, परंतु समय खत्म होने के कारण माइक छोड़ कर दूसरी ओर बैठ गए।

श्री मरियलजी ने अब बब्बरजी का नाम पुकारा। एक नवाबनुमा कुत्ता लंगड़ाता हुआ मंच पर पधारा और माइक थाम कर बोला, "आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मेरे दोस्तो और प्यारी कुतियो! भाई पत्तलचाटजी से हम कुत्तों ने भोजनीय समस्याओं पर बड़ा प्रभावशाली भाषण सुना। उन्होंने आप को काफी कुछ बताया, किंतु उन्होंने एक महत्वपूर्ण समस्या पर प्रकाश नहीं डाला। मैं आप का ध्यान भोजनीय समस्या के अलावा दूसरे अहम मसले पर आकर्षित करने जा रहा हूं। यह हमारे जीवनमरण का प्रश्न है। मुझे आशा है, आप सब बड़ी गंभीरता से इस मसले पर विचार करेंगे, साथ ही आक्रमण से मुक्ति के लिए संघर्ष भी करते रहेंगे।

"भाइयो! अब आदमी हमारे भोजनीय एवं 'मलाई चाट' अधिकारों का ही हनन नहीं कर रहा, बल्कि अब उस ने हमारी महान कुत्ता संस्कृति पर भी आक्रमण करना शुरू कर दिया है। आदमी ने हमारे भौंकने, गुरानि, काटने और दुम हिलाने आदि गुणों को अपनाया, हमें इस का दुख नहीं। साथ रहने से एकदूसरे की आदतों का एकदूसरे में समावेश हो ही जाता है। किंतु उस ने हमारी सामाजिक

जुलाई (द्वितीय) 1975

व्यवस्था को भीतर से ही सही मना
सांस्कृतिक आक्रमण किया है। मसलन,
आजकल की माडर्न लड़कियां हमारी
कुतियों की नकल कर के, 'मुक्त प्रेम'
का नाम ले कर एक साथ कईकई ब्वाय
फ्रेंड बना कर कुत्ता संस्कृति का अपहरण
कर रही हैं। इस से मुझे इनसान के कुत्ता
संस्कृति पर सांस्कृतिक आक्रमण का
षड्यंत्र मालूम देता है।

"हमें अपनी कुत्ता संस्कृति पर गर्व
है, जिस में न कोई मां है न बहन, न बाप
है न भाई, न मामा है न चाचा। हम सिर्फ
कुत्ते और कुतियां हैं। मुझे डर है, कहीं
इनसान हमारी अन्य विशेषताएं भी
अपना कर हमारी महान संस्कृति
को नष्ट न कर दे। आशा है आप सब
एकजुट हो कर आदमी के इस सांस्कृतिक
आक्रमण का डट कर मुकाबला करेंगे।

"मेरा निवेदन है कि यदि आप कहीं
अपनी संस्कृति का अपहरण होते देखें तो
ऐसे इनसानों पर अविलंब दूट पड़ें..."

पता नहीं किस समय कुत्तों की भीड़

छोड़ कर थोड़ी दूर पर मुन्ने मियां के
मुर्गियों के दड़वे पर पहुंच गए और मौका
मिलते ही झपट्टा मार कर दो मुर्गियां
मुंह में दबा कर ले उड़े। मुर्गियों की
चीख और चिल्लाहट सुन कर मुन्ने मियां
चारपाई छोड़ लाठी ले कर कुत्तों के पीछे
भागे। आगे कुत्ते और पीछे मुन्ने मियां।
कुत्ते बेतहाशा भाग कर कुत्ता सम्मेलन
की भीड़ में गायब हो जाना चाहते
थे, पर मुन्ने मियां कहां छोड़ने वाले थे।
पता नहीं कुत्ता सम्मेलन की काररवाई
कितनी देर और चलती, लेकिन
मुर्गियां मुंह में दबोचे दोनों शरारती
कुत्ते जैसे ही भीड़ की ओर भागे,
वहां तहलका मच गया। मुन्ने मियां की
ललकार सुन कर और लाठी देख कर
सम्मेलन में भगदड़ मच गई और सारे
कुत्ते टायटाय करते और चीखतेचिल्लाते
छूमंतर हो गए। इस तरह कुत्ता सम्मेलन
आगे की काररवाई को छोड़ समय से पूर्व
ही समाप्त हो गया। ●

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रकाशित
एक मात्र लोकप्रिय वैज्ञानिक मासिक

विज्ञान प्रगति

● दूरगो चित्रों से भरपूर ● बहुरंगा आकर्षक आवरण ● सरल सुबोध भाषा ●

प्रति मास पढ़िये :

- क्या क्यों कैसे? (वैज्ञानिक प्रश्नोत्तर) ● गणित मनोरंजन ● वैज्ञानिक समाचार
- स्वास्थ्य और चिकित्सा ● उद्योग की सेवा में विज्ञान
- अधुनातन जानकारीयों से भरपूर वैज्ञानिक लेख

विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा जनसाधारण के लिए समान रूप से उपयोगी।
एक प्रति 0.75 पैसे



सम्पादक

वार्षिक मूल्य 8.00 रु. मात्र

भारतीय भाषा यूनिट (सी. एस. आई. आर.),
पी. आई. डी. बिल्डिंग, हिलसाइड रोड, नई दिल्ली-12. (110012)
फोन नं. 586301, 585359

“भाई साहब, ओह कल वहीं तो हम मजदूरी ही कर लेंगे,” हम एक

साथ गिड़गिड़ाए.

“जरूर. बी. ए. पास हो और मजदूरी करोगे? अजी, हम सब जानते हैं, दो ही दिन में मजदूरों को भड़का कर रख दोगे.” यहां भी टका सा जवाब मिला. चल, भाई!

“अब क्या हो?”

“पहले कोई ठिकाना खोजो.”

“यार, क्यों न एक झुग्गी बना लें?”

“हां, भाई, अब यही सही. फुटपाथ से तो अच्छा रहेगा.”

जगह खोजी. सरकारी मकानों के बीच एक बड़े मैदान के किनारे हम ने छोटी सी कुटिया बना ली.

अगले ही दिन नगर निगम की गाड़ी आई.

मंदिर लिया



"यह झुग्गी क्यों बनाई है?"
 "रहने के लिए."
 "दस रुपए निकालो."
 "दस रुपए क्यों?"
 "तुम्हारे बाप का राज है, झुग्गी बना ली?"
 "दस रुपयों से बाप का राज हो जाएगा?"
 "बको मत."
 "भाई, दस रुपए क्या हमारे पास तो

हमारे भी नहीं है।"
 भीड़ जुट आई, "अजी, निकालो इस गंदगी को."
 झुग्गी ढा दी गई।
 मैं परेशान, मित्र भी परेशान।
 "यार, एक उपाय है."
 "क्या?"
 मैं ने बताया।
 "आजमाया जा सकता है."
 उसी समय एक झुग्गी का निर्माण

चिन्ताथ

बी. ए. पास की थी बल्क बनने के लिए लेकिन कुछ ऐसा हुआ कि पुजारी बन बैठे...



हुआ. पहले से बड़ी. मैदान के बीचोंबीच. झुग्गी में हम ने रामसीता की मूर्ति स्थापित कर दी. बाहर गते पर लिख कर टांग दिया—मंदिर.

श्रद्धालु आने लगे.

अगले दिन फिर नगर निगम की गाड़ी आई, "तुम लोगों ने फिर झुग्गी बना ली?"

"झुग्गी नहीं जी, मंदिर है. आप को पढ़ना नहीं आता?"

"शट अप!"

भीड़ जुट आई. कर्मचारियों का विरोध करने लगी, "मंदिर के साथ हमारी जान जाएगी."

"तानाशाही...नहीं चलेगी."

"हम खून की नदियां बहा देंगे."

भीड़ मरनेमरने पर उतारू हो गई. कर्मचारियों को लौटना पड़ा.

मंदिर से पर्याप्त कमाई भी होने लगी. नौकरी के चक्करों से बचे. बी. ए. की डिग्री न होती तो कहीं मजदूरी कर रहे होते. हां, बोली, शिक्षा प्रणाली—जिंदाबाद!

ऐसा प्यार कहता है...

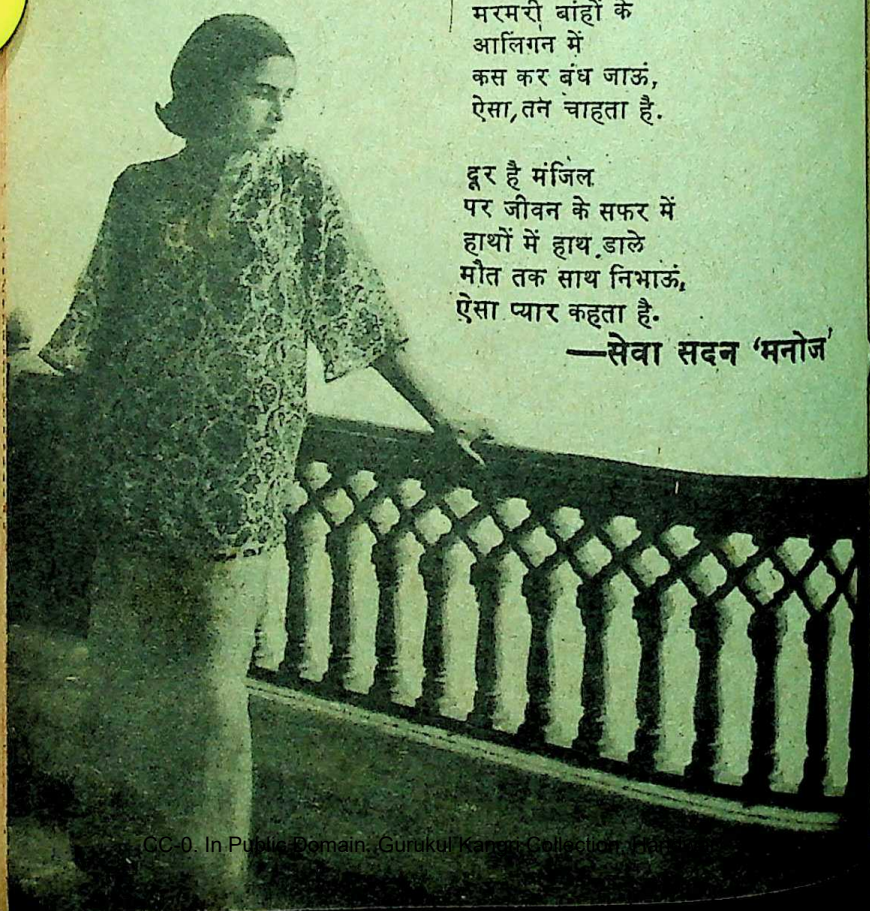
गुलाबी गालों पे
चिंकुटी काट
रक्ताभ अधरों की
हलकी सी लाली चुरा लूं,
ऐसा मन करता है.

हटा कर
पलकों का पहरा
झील सी गहरी
तेरी आंखों में डूब जाऊं,
ऐसा नयन कहता है.

बिखरा कर
तेरे आंचल को.
मरमरी बांहों के
आलिंगन में
कस कर बंध जाऊं,
ऐसा, तन चाहता है.

दूर है मंजिल
पर जीवन के सफर में
हाथों में हाथ डाले
मौत तक साथ निभाऊं,
ऐसा प्यार कहता है.

—सेवा सदन 'मनोज'





बड़े नवाब के जमाने में जिन बेगमों ने बेशुमार दौलत से खेला था, वे अब महज पांचदस रुपए की पेंशन पर दिन काट रही थीं...लगता था जैसे 'रेनबो' की ईंटईट भी उन के बुरे दिनों पर सिसक रही हो.

आप पढ़ चुके हैं :

पुरबिया हाट के नवाब नईमुद्दीन का महल 'रेनबो' लगभग दो सौ बेगमों से भरा था, जिन पर वह बेशुमार दौलत लुटा रहा था. चंदर वहीं हरखू चाचा की सहायता से नौकरी करने लगा और धीरेधीरे बड़े नवाब का विश्वासपात्र खिदमतगार बन गया. 'रेनबो' की महलसरा में रहने वाली आयशा बेगम की निगाह चंदर पर पड़ी. वह उस की आंखों में गड़ गया. वह आयशा बेगम के चंगुल से छूट न सका और एक दिन जबरदस्त गुनाह कर बैठा. कुछ दिनों बाद बड़े नवाब का देहांत हो गया और अचानक 'रेनबो' पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा.

असलम मियां की परिपक्व वाकपटुता के पीछे रेंगती हुई मनोर्गति के हलके से परिचय पर ही मेरा मन सिहरने लगा. वह कब और क्यों पधारे थे.

नए नवाब ने उन्हें क्यों बुलाया था, सभी कुछ अज्ञात था अभी.

मैं ने मनोभावों को छिपाते हुए क्षीण मुसकान से कहा, "आप सही फरमाते हैं,

और भोले हैं."

वह बोले, "तभी तो, तभी तो आप को इतनी बड़ी कुरसी दे रखी है उन्होंने," वह हंस कर अपनी बात का प्रभाव देख कर आगे बोले, "वरना अब तक तो न जाने क्या हो जाता. फरमाते थे, वेगमात की सनदें पिछले चार महीने से आप के पास तैयारी में पड़ी हैं. हम ने अर्ज किया, इतना मुरादों के ऊपर हजारों रुपया महीना खर्च हो रहा है और आप बेखबर हैं. तब उन्होंने हमें आप के पास भेजा है. उधर लखनऊ से कुछ मेहमान आ रहे हैं, जिन का मुनासिब इंतजाम भी करना है आप को. वल्लाह, आप कौन सा सिगरेट पीते हैं?" और उन्होंने मेरे सिगरेट केस से एक सिगरेट निकाल कर बिना अनुमति लिए मुंह से लगा ली.

"चलिए, मैं नवाब हुजूर के पास चल रहा हूँ." मैं ने उन की किसी बात का उत्तर न दिया और आगे बढ़ा तो उन्होंने रोकते हुए कहा, "अजी जनाब, वहां क्या करेंगे आप? जो कुछ अर्ज कर रहा हूँ, उसी को हुक्म तसलीम कीजिए. वह कल तक तमाम सनद तैयार चाहते हैं. परसों तक 'बी' ब्लाक खाली हो जाना चाहिए. वालिद हुजूर और वहन तशरीफ ला रही हैं. अब वही 'बी' ब्लाक में रहेंगी."

मैं ने खामोशी से स्वीकृति देते हुए दूल्हा भाई से विदा ली.

मन असंत और परेशान हो रहा था. असलम मियां के बारे में बहुत कुछ सुना था अब तक. आज सहसा ही मन के किसी कोने में एक भय व्याप्त गया. कौन जाने 'रेनवो' के इतिहास में इस महान पुरुष के आने से किस नए जीवंत आख्यान का उदय हो.

मैं ने शाम तक सभी सनदों की खाना-पूरी समाप्त की. किसी वेगम को दस रुपया, किसी को आठ, किसी को पचास तो किसी को बीस का पेंशन देने का सरकारी फरमान था यह.

रात भोजन से पहले ही नए नवाब के हस्ताक्षर कराने को पहुंचा. दूल्हा

मियां उन के दाएँ आसन पर विराजमान थे. नए नवाब उन से हंसहंस कर बात कर रहे थे और दस्तखत करते जा रहे थे. मैं हादी वेगम की पेंशन की राशि के बारे में शायद कुछ कहता जो बहुत बुरा थी, लेकिन न कह सका.

उसी रात, भिन्नभिन्न कमरों में पहुंच, रोतीसिमकती, किस्मत को कोसते बड़े सरकार की मुताशुदा वेगमात को उनकी सनदें सौंपता, तत्काल 'बी' ब्लाक छोड़ जाने की हिदायत देता, आखिर मैं इकसठ नंबर महलसरा की मुसकाने स्मृतियों की ओर अग्रसर हुआ जिन्हें पिछले पूरे एक वर्ष से प्रायः भुला बैठा था.

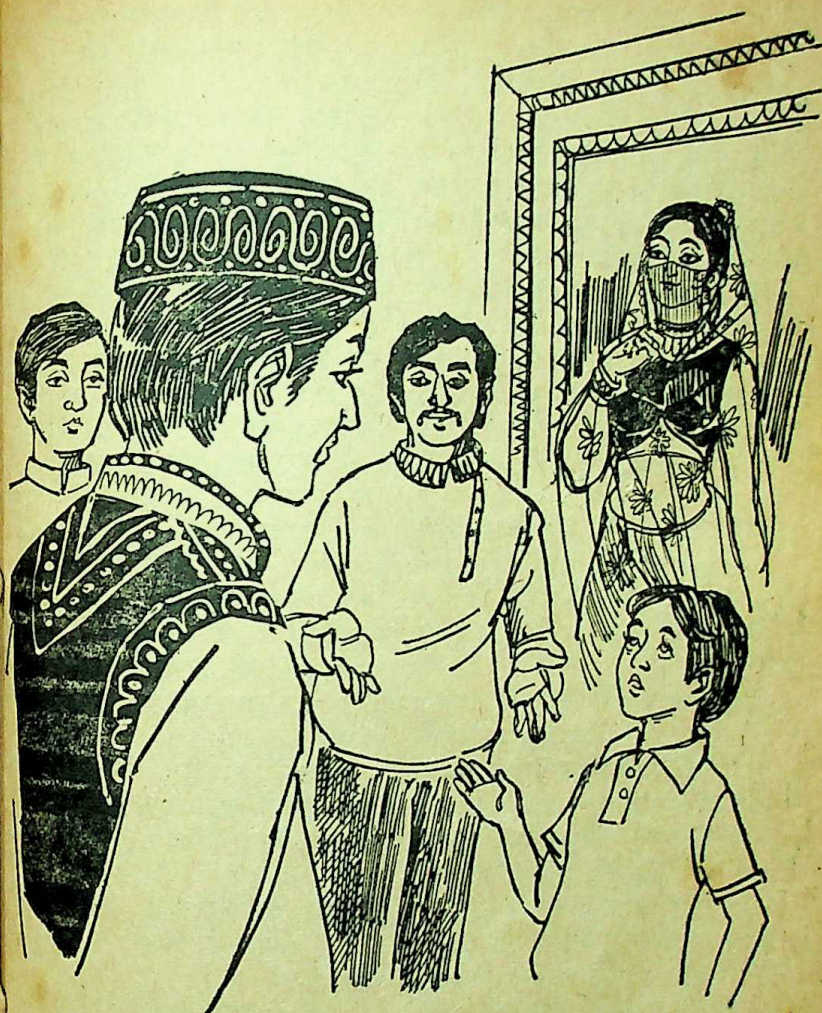
हादी वेगम और आयशा एक ही कमरे में रहा करती थीं. वह जाफर खां ने मेरा स्वागत किया तो मैं में ज्वाला जाग उठी. जाफर खां को देखना तनिक भी न भाया मुझे.

हादी वेगम ने हंसते हुए सनद को और टुकड़ेटुकड़े कर के वहीं फर्श पर फेंक दी. "पांच रुपया महीना! मैं भिखारी नहीं हूँ, चंदर. मैं ने बड़े सरकार से ज्ञात की थी. जाओ, अपने नवाब से कहना कि हादी वेगम उन की भीख पर शुकृत है."

मैं चुप. जाफर खां और हादी वेगम के मेलमिलाप के कारण मुझे जो भी व्यक्तिगत कटुता या असहयोग था, उस घड़ी, मानो हादी वेगम के प्रति नए नवाब के अन्यायी निर्णय के कारण तिरोहित हुआ. मैं ने चुपके से एक बार सांत्वना देते यकीन दिलाना चाहा कि समय आते ही मैं नए नवाब से पेंशन बढ़ाने की सिफारिश करूंगा.

जाफर ने आगे बढ़ कर संकुचित दृष्टि डाली और तपाक से कहा, "वही, जनाब. हमें एहसान से मत लादिए. हम भीख मंजूर नहीं करेंगे. जब तक हाथपांव में दम है, हादी वेगम को कोई तकलीफ न होगी."

दबा हुआ विक्षोभ जाफर के स्वर में आप से आप प्रकट हुआ, "जी हाँ, जुलाई (द्वितीय) 1915



नवाब हुजूर के पास असलम द्वारा हफीज मियां के कुत्ते को गोली मार दिए जाने के मामले पर बहस चल रही थी, तभी दरवाजे पर सफेद रेशमी कपड़ों में चमकदमक बिखेरती गुलबानू के दर्शन हुए.

यह तो मैं भूल ही रहा था कि आप हैं इन की देखभाल करने वाले, खिलाने-खिलाने वाले. इन्हें पेंशन की क्या जरूरत है? उम्मीद है कल ही ब्लाक से ले जाएंगे इन्हें."

उन के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ये आयशा के सामने आया.

वह हमारी बातें सुन रही थी. सनद के लिए इनकार करते हुए बोली "हादी बेगम ने नहीं माना तो मुझे भी बीस रुपया

महीना ले कर क्या करना है? हम कल ही चले जाएंगे."

मैं बंधी दृष्टि से आयशा बेगम को घूर रहा था. वहां आज भी मुझे उस रात जैसा अपनापन और नयापन नजर आ रहा था जो इकसठ नंबर महलसरा में पहली रात को भेंट के समय दिखाई दिया था. उस दिन उन बिल्लोरी पुतलियों में स्पर्धा और अहंकार के अतिरिक्त जलती हुई कामनाओं का नशा भी था.

मगर आज वे रीतीरीती थीं. मानो बड़े सरकार के जाते ही संसार को किसी हृदयस्पर्शी कथा का स्मरण करा रही थीं.

मैं सनद हाथों में लिए विक्षिप्तों के समान वर्षों पूर्व की मध्यरात्रि के उस सलौने व्यक्तित्व की मधुर स्मृति में डूबा हुआ था, जिस ने मेरे आगे अपने हाथ पसारते एक कामना की थी, भीख मांगी थी, एक बच्चे की याचना की थी. महल-सरा का सफेद बुर्रक चांदनी वाला फर्श और उस पर फैले गावतकियों के सहारे लेटी उस मीठी आयशा के दृश्यों में मन आज भी विमोहित सा हुआ जाता था.

सनद मेरे पास थी, आयशा का उत्तर सुन चुका था, लौटने की बारी थी. बोला, "क्या आप अपने वालिद साहब के यहां लौट जाना चाहती हैं, आयशा बेगम?"

वह खिलखिलाई, जोर से इनकार में सिर हिलाया और कहा, "कौन जालिम है मेरा बाप? वही, जिस ने मुझे जागीर के लिए बड़े सरकार के हाथों बेचा था? नहीं, चंदर, तुम तो ऐसा न कहो." सहसा उस का स्वर मंद होने लगा, "मगर हमें 'बी' ब्लाक से चला जाना है. इसलिए जाऊंगी. हां, यही पूछना चाहते हो तो ठीक है, पूछो. लेकिन यह मत पूछो कि कहां जाऊंगी." फिर वह रोने लगी, "जिदगी की कड़वाहट में और बढ़ोतरी मत करो, चंदर. मुझे आयशा बेगम कह कर मेरा जी हमेशा दुखाया है, अब मत दुखाओ."

मैं कांप सा रहा था उस समय. परीक्षा की घड़ी थी मेरे लिए. आयशा अपने पिता के यहां न जा कर कहां रहेगी, क्या करेगी, सोचते हुए बारबार थर्रा रहा था.

"आप कहें तो मैं आप का इंतजाम कर दूं. हुक्म दीजिए."

"तुम?" वह सुनते ही रुक कर मुझे घूरने लगी. आंखों में लजीला आत्म-विश्वास की धार और सिलोहित हो

पल भर बाद ही आंचल से आंसू निकल आए, कहा, "नहीं, हादी बेगम के ही जाऊंगी. उन का इसरार टाला जाएगा. जाफर खां को जानते हो वह भी कह रहे हैं. उन के मन में जाने क्या भेद है, चंदर. लेकिन, से तो न बनेगा यह. जाफर खां मुझे अपना बोझ बनाना चाहते हैं."

मैं आयशा का तात्पर्य भांपा फिर एक तीक्ष्णता का बोध मन आत्मा को वेधने लगा. तनिक तेज आवाज में कहा, "क्यों नहीं? जाफर खां के जाने जाना चाहती हैं तो जाइए, रोकता है? हादी बेगम आप की सहेली हैं? मैं तो कहता हूं कि जाफर से शादी डालें आप."

वह बोली, "हां, हां, हादी बेगम भी यही कहती हैं. मिरजे पुरबे में जा ले लिया है उन्होंने. वहीं जा रहे हैं तुम कभीकभी मिलने तो आओगे न मुझे सहन न हुआ. तेजी से आया."

अगले ही दिन 'बी' ब्लाक का किया जाने लगा. एकएक कर के मामाएं जाने लगीं.

शाम को पता चला, हादी बेगम आयशा जाफर के साथ गई हैं.

मैं ने अपने बंगले की खुली छत से 'रेनबो' के दोनों ब्लाकों पर सूनी डालते हुए पल भर कुछ सोचा. अब का कोलाहल क्या सदासदा के लिए हो रहा है? नए नवाब का चारित्र्य क्या इतना दृढ़ है कि वहां तक से चले आ रहे विलास का हाथ पहुंच सकेगा?

दूसरे दिन हम स्टेशन पर भाई की वालिदा और उन की बहन स्वागत करने पहुंचे. बहन का नाम था. वह पाश्चात्य वेशभूषा में जागृति की सजीव काया सी जान उन की चालढाल, बातचीत, मोहक



चंदर जब उठ कर चलने लगा तो आयशा बेगम ने रोकते हुए कहा, "जा रहे हो? चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ."

आकर्षण छिपा हुआ था. कौन जाने वह 'रेनबो' क्यों आ रही थीं. दूल्हा भाई के उत्साह का ठिकाना नहीं. मैं ने उन लोगों के बारे में अधिक नहीं सोचा. शीघ्र ही उन के रहनेसहने की व्यवस्था उसी 'बी' ब्लाक के कमरों में कर डाली, जहां चंद घंटों पहले तक आयशा और हादी बेगम, नन्ही और छम्मन बेगम की हंसी-खिलखिलाहट गूंजा करती थी.

नए नवाब की हर आज्ञा का संतोषजनक पालन करने में लूक न छोड़ें, यह मने

हरखू चाचा के उपदेशों में घोटघोट कर पिलाया गया था. भले ही बाद में उन आदेशों के पीछे छिपे लक्ष्यों की ओर मेरी गंभीर और पैनी बुद्धि दौड़ती और मन का भरम तोड़ती रहती थी.

उस रात भी अपने बिस्तर पर पड़ापड़ा मैं 'रेनबो' के परिवर्तनों की बात सोच रहा था. सोच रहा था 'बी' ब्लाक की नई किस्मत के बारे में जो अब तक हादी बेगम और आयशा बेगम की ऐयाश कथाओं से कलंकित, नए नवाब की घृणा-

वदनमा टीका बनी थी, और अब गुलबानू के आ जाने के बाद, शायद, नई आभा और शोहरत की ओर अग्रसर हो रही थी।

नवाब हुजूर के बड़े सुपुत्र का नाम हफीज मियां था। अब उन की आयु लगभग बारह साल थी। स्वभाव के उच्छृंखल और भावुक थे। बहस करने की आदत न जाने किस से सीखी थी। यदि किसी बात पर अड़ते तो तरहतरह के तर्क उपस्थित कर के अपना पक्ष समर्थन किया करते।

उस दिन नवाब हुजूर की खाबगहाह से निकलते ही मैं ने छरहरे हफीज मियां को किसी कदर नाराजगी में तेजतेज नवाब साहब के कमरे की तरफ जाते देखा। नवाब हुजूर तभी आराम में गए थे। अतः रोकते हुए कारण पूछा।

“हद हो गई,” वह चरपरी आवाज में बोले, “फूफा साहब (दूल्हा मियां असलम से था उन का तात्पर्य) हमें कुछ समझते ही नहीं, सेक्रेटरी साहब। उन्होंने हमारे कुत्ते को गोली मार दी।”

मैं एकाएक कुछ न समझा। संकेत से नवाब हुजूर के सो जाने और उन्हें हलकी आवाज में बोलने की हिदायत देते हुए बोला, “बात क्या हुई भला? आप बहुत खफा लगते हैं, छोटे सरकार।”

वह हाथ नचाते हुए कहने लगे, ‘रेनबो’ में वह हमारे मेहमान हैं, चंदर-परकाश, हमारे आका नहीं। हमें कुत्तों से शौक हो, बिल्ली से हो, घोड़ों से हो, या गधों से, उन की मरजी नहीं चलेगी। हम अभी नवाब हुजूर से शिकायत करने जा रहे हैं। उन्होंने बिना बात मोती को हलाक कर डाला।”

यह बात चल रही थी कि असलम मियां वहां आ पहुंचे। वही हंसती आकृति, लखनवी चाल और अंदाज। निकट आने पर हफीज मियां को घूरते हुए बोले, “तो बरखुरदार, शिकायत करने आए हो?”

हफीज मियां चहके, “आप ने हमारे

चुनौती नहीं कर सकते।” हम

असलम ने उत्तर दिया, “कुत्ता जिंदा रहे, अच्छी बात नहीं। आप को पहले भी आगाह कर चुके बरखुरदार कि वह हमारे पीछे दौड़ता है हम ने हमेशा के लिए यह किस्सा कर डाला।”

हफीज मियां इस बार पूरी से चिल्ला कर बोले, “आप किस्सा करने वाले होते कौन हैं? हम अभी हुजूर से...”

मैं उन्हें शांत करना चाहता था। नवाब हुजूर आवाज सुनते ही खाबगहाह से बाहर निकल आए, “कौन शोर है? क्या बात है, हफीज मियां?”

उन्होंने जैसे ही पूछा, हफीज मियां तेजतेज कदमों से चल कर उन के बगल आ पहुंचे और अपने प्यारे कुत्ते की हलकी शिकायत करने लगे। हम सभी लोग नवाब हुजूर भी जानते थे कि मोती ने हफीज मियां को अत्यधिक प्रेम था, वह शिकायत सुनते ही कुछ पल सोचते रहे फिर असलम की ओर घूमते हुए पूछे लगे, “क्यों, दूल्हा भाई?”

असलम मियां को भरोसा था कि नवाब हुजूर उन से एक भी सवाल

न करेंगे। अतः सुनते ही तनिक बौखलाहट से आगे बढ़ कर बोले, “आदाब बगल लाता हूं, सरकार। बात दरअसल यह है कि मोती ने कल शाम गुलबानू का पैर मुंह में भर लिया था। बड़ा शरारती हो गया था मोती।”

हफीज मियां को कैसे सहन होता। बात पूरी होने से पूर्व ही चीखे, “यह झूठ बोल रहे हैं, अब्बा हुजूर। मोती ने कभी बेगम का पैर नहीं पकड़ा। आप उन्हीं को बुला कर पूछ लीजिए। यह सरासर गलत कह रहे हैं।”

असलम ने जल्दीजल्दी कहा, “मियां साहबजादे, ऐसी बात मत कीजिए जो आप की उम्र के तकजे से बाहर हो। हम क्यों झूठ बोलने लगे? झूठ बोलने की

तोहमत लगाने से पहले कुछ सीचा ता होता, हम इस घर के दामाद हैं, भाई, और आप के फूफा हैं।”

इसी समय दरवाजे पर सफेद रेशमी कपड़ों में चमकदमक बखेरती गुलवानू के दर्शन हुए। वह संभवतः नवाब हुजूर की ख्वाबगाह में आ रही थीं जो अब हर दोपहर उन का नियम बन चुका था। जैसे ही वह हमारे पास आई, हफीज मियां उन के नजदीक दौड़े और जल्दी से बोले, “आप ही कहिए, खाला वेगम, कल हमारे मोती ने आप की टांग पकड़ी थी, कभी पकड़ी है उस ने आप की टांग? असलम मियां ने उस पर झूठी तोहमत लगा कर उसे जान से मार डाला है।”

नवाब गुल की तरफ देखने लगे। असलम की आंखें भी उधर ही उठीं। गुलवानू विचित्र संशय में कभी हमारी ओर देखतीं, कभी नवाब की ओर और कभी अपने भाई की ओर। फिर शीघ्र मामले को समझ कर जल्दी से बोली, “अरे हां, कल पकड़ी तो थी उस ने हमारी टांग। बट, हैव यू शाट दि पुअर कीचर? भाईजान, आप ने मार डाला उसे?”

मैं ने देखा, असलम ने शांति का लंबा सांस लिया, हफीज भाँचकके से खड़े देखते रहे। नवाब हुजूर दो कदम आगे बढ़ कर हफीज से बोले, “अब जाओ, बेटे, ऐसे कुत्ते को मार डालना ही बेहतर था।”

सुन कर हफीज मियां कुछ पल

सन्नट में खड़े रहे। फिर जैसे थूक सटकते वहां से चले गए।

नवाब हुजूर और गुल ख्वाबगाह की तरफ चले तो असलम मियां मेरे साथ मेरे कमरे में आ पहुंचे।

मैं हफीज मियां की मानसिक उत्तेजना की बात अभी भी महसूस कर रहा था। आहिस्ता से बोला, “दूल्हा भाई, मोती को शूट कर के आप ने हफीज मियां को जहनी तकलीफ पहुंचाई है।”

उन्होंने बहुत स्वाभाविक स्वर में, जैसे मैं ने कोई अजूबा बयान किया हो, आश्चर्य बखेरते हुए टोका, “लाहौलविला, अमां तुम भी हमीं से कहने लगे। मियां, यह तो कुत्ता है, हम चाहें तो किसी आदमी को मार डालें और नवाब हुजूर तू न करें। क्या समझे?”

मैं ने हलके से कहा, “समझ रहा हूं।”

वह बोले, “तो यार, समझ लेने के बाद भी तुम हफीज की तरफ-दारी कर रहे हो? आईदा खयाल रखना इस बात का। ‘रेनबो’ में आराम और सुकून से नौकरी करनी है तो हमारी तरफ तवज्जोह रखो। दूसरी तरफ देखने से मजा नहीं मिलेगा तुम्हें।”

मैं अवाक। वह उसी स्थिति में मुझे वहां छोड़ कर चले गए।

असलम मियां मुझे शायद धमका गए थे। क्यों धमका गए थे, यह बात तब भी मुझ पर स्पष्ट थी और आज भी।

गुलवानू, नए नवाब हुजूर के सुदृढ़ चरित्र की लौह दीवारों का विभेदन करती

किस ने पायल की...

मेरे ख्वाबों के दरीचों से यह झांका किस ने?
नींद की झील पे यह किस ने कंबल फैलाए?
लाल पर्दों में यह आंचल का किनारा थामे
किस ने पायल की मधुर ताल पे दोहे गाए?

—अहमद ‘नदीम’ कासमी

उन्हें पाश्चात्य सभ्यता का रंगारंग प्रवंचना की ओर बांधती उस स्थल पर घसीट लाई थी जहां विवादों के पार, तर्क के बाहर, आदर्शों की नींव खोखली हो जाती है, मनुष्य नए चटपटे स्वादों की ओर ललचाई दृष्टि से ताकता, चखता और उस की दासता मनोनीत करता जाता है।

असलम मियां यदि इस के बाद भी धमकी न दें तो और क्या करेंगे बेचारे?

मुझे यहीं 'रेनबो' का एक और परिच्छेद स्मरण होता है। नए नवाब की दूसरी बहन अफसरी बेगम स्वर की कटु थीं, स्वभाव की तेजतर्र और शायद चरित्र की भी कुछ ढीली थीं। तथापि विवाह के बाद अब तक, अर्थात् असलम मियां के आने तक उन्हें 'रेनबो' में रहने को स्थान, माहवारी खर्च के लिए आर्थिक सहायता मिली हुई थी, और उन के पति को राजकीय फार्म की देखभाल पर नौकर भी नियुक्त किया हुआ था। सहसा ही असलम मियां के आने के बाद परिस्थितियों ने विकट मोड़ लिया और चंद ही महीनों में नवाब हुजूर ने अपनी बहन के उन सभी अवगुणों का यथार्थ प्रतीत किया जो अब तक ग्रंथकार में ढकेछिपे थे। आरंभ में एकदो बार साधारण कहना सुनना हुआ जिसे अफसरी बेगम का उग्र स्वभाव साध न पाया और फिर विवाद में बढ़ोतरी होती गई।

अतः म वह दिन आया जब अफसरी बेगम को 'रेनबो' से विदा लेनी पड़ी वह अपने पति और एकमात्र पुत्र को लेकर अस्पताल के निकट वाली एक टूटी-फूटी कोठी में रहने चली गई जो उन्हें नवाब ने दहेज में प्रदान की थी। आता लगता है जैसे असलम मियां 'रेनबो' उन सभी तत्वों को मिटा देना चाहते हैं जो उन की प्रतिभा के रास्ते में आड़े पड़ें हों अथवा जिन से उन के व्यक्तित्व को उभरने का अवसर न मिलता हो। तब उनकी धमकी को साधारणतया हजम करने की शक्ति मैं तो क्या शायद ही कौन संजो पाता।

उन दिनों की स्मृति बड़ी कसब है। 'गुलबानू' नवाब के निकट आने के अपने यत्न में जल्द ही सफल हो चुकी थीं। नवाब हुजूर प्रायः उन के साथ दिल्ली, बंबई या नैनीताल की सुस्त पहाड़ियों पर घूमने जाते। वहां गुल नए पाश्चात्य समाज का विशद दर्शन करातीं। शराब और बाल डांस की रंगीन महफिलों की धूम मची रहती। पैसा मिट्टी की तरह उड़ाया जाता। असलम मियां नवाब की पीठ पर रेस और ताश में हजारों का जुआ खेलते। यहां तक कि एक बार दिल्ली प्रवास से वापस आने के बाद लोगों ने सुना कि वहीं नवाब हुजूर ने गुलबानू के साथ दूसरा निकाह कर लिया था। अर्थात् कोर्ट में उन दोनों

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास बढ़ाने की रीति यह है कि तुम वह काम करो जिसे तुम करते हुए डरते हो। इस प्रकार ज्योंज्यों तुम्हें सफलता मिलती जाएगी तुम्हारा आत्मविश्वास बढ़ता जाएगा।

—डेल कारनेगी

हमारी मानसिक शक्तियां हमारे आत्मविश्वास और धैर्य पर अवलंबित रहती हैं।

—स्वेट माइन

का विवाह संपन्न हो चुका था।

कैसा निर्मम होता है यौवन का प्रगाढ़ आलिंगन, कितनी विचित्र होती है स्वार्थपरता से मदांध स्त्री की पराकाष्ठा! नए नवाब की सुदृढ़ता गुलबानू के स्निग्ध स्पर्श से पानी की दीवार के समान ढह गई। उन से कौन पूछने जा रहा था, कौन जानना चाह सकता था कि तख्तपोशी से पूर्व स्वच्छता और सच्चरित्रता का दावा करते हुए महलसराओं का संसार वितण्डित करने के उन के ठोस इरादों को आखिर क्या हुआ?

ग्राह, इस विवाह का समाचार बहू बेगम ने कितनी व्यथा से सुना और समझा था! मलिका जमानी तो बेचारी सुन कर बीमार ही पड़ गई और कालांतर में दिवंगत हुई। हम और सक्सेना असलम मियां के नए साधिकार व्यक्तित्व की मौलिकता के प्रति अपनी-अपनी शंकाओं का समाधान करते रहे। नए नवाब ने गुलबानू के वात्याचक्र में अपने सभी पुराने वादे तोड़ कर हमें और 'रेनबो' के सभी प्राणियों को हतप्रभ किया था।

उन्हीं दिनों बहू बेगम के पिता अनवर कमाल, हमारे पुराने चीफ, एक दिन मुझ से मिलने आए। उन की आंखों में आंसू और स्वर में कंपन था। वह मुझ से शिकायत करने लगे, "तुम ने देखा, चंदर-प्रकाश, तुम ने देखा, भाई? इसी दिन के लिए मैं ने अपनी रेहाना को रईस मियां

के पल्लू से बांधने से इनकार किया था। तुम नहीं माने लेकिन मैं जानता था कि इस तख्त की गर्मी में नवाबों के आदर्श हमेशा मोम के समान पिघलते रहे हैं, पिघलते रहेंगे। तुम ने मेरी बेटी का जीवन बरबाद कराया है, चंदर, तुम ने."

मैं कोई उत्तर न दे पाया। उन का आरोप किसी सीमा तक उचित था। मुझे नवाब हुजूर के उस वादे का स्मरण था जो उन्होंने मुझ से एक बार नहीं बार-बार किया था। कहां गया वह वचन? कहां गया वह आदर्श? चीफ मेरी चुप्पी पर अधिक व्यग्र नजर आए और बोले, "सब कहने की बातें हैं, चंदर, सब भुलावे के लिए कही जाती हैं। मेरा जमाना इन्हीं राजौनवाबों में बीता है। कोई लाख कह लेकिन बदलेगा नहीं। वह अपना ढंग बदल सकता है मगर रंग नहीं। पूछो रईस मियां से, उन में और उन के वालिद हुजूर में गुनाहगार कौन ज्यादा है? बड़े सरकार जिन्होंने नवाबी परंपरा के उजड़ू विचारों को पनाह दे कर रनिवासों की आनवान को नवाबी की आनवान समझा और नित नए स्त्री संबंध कायम करने के बाद अंत तक उन्हें निम्नाने का कौल भरा अथवा यह रईस मियां जिन्होंने बड़े-बड़े दावे कर के आखिर उन्हें मटिया-मेट किया और अंगरेजी सभ्यता के नशे में अनगिनत स्त्रियों के साथ संबंध स्थापित कर मानवता का नाम कलंकित

परिस्थिति

मनुष्य के बारे में, हमें अपनी सारी युक्तियों में यह सिद्धांत के रूप में मान लेना होगा कि जीवन का अधिकांश भाग परिस्थितियों द्वारा निर्मित होता है।
—राबर्ट हाल

मनुष्य परिस्थितियों की क्रीड़ा है, जब कि परिस्थितियां ही मनुष्य को क्रीड़ा मालूम पड़ती हैं।
—बायरन

किया? इन दोनों में कौन पापी है, कौन? मैं कहता हूँ बड़े सरकार लाख अच्छे थे, उन का अपना चरित्र था उस चरित्र में परस्त्री के साथ संबंध स्थापित करने का महत्व था। उन्होंने इस महत्व को मान्यता दे कर महलसरा को सजाया-संवारा, रईस मियाँ, के समान चरित्र का मोड़तोड़ और विलास का नंगा नाच नहीं दिखाया।”

वह अपनी बेटी के लिए बारबार दुख मनाते और आंसू बहाते रहे। चलते-चलते उन्होंने अंत में कहा, “अभी और देखना, भाई, अभी और समझना, चंदर। ‘रेनबो’ की बदलने वाली फिजा जवान हो चुकी है। मुलाजिमों को निकाल बाहर करने और ‘बी’ ब्लाक की वेगमात को

युद्ध

जब मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ आरंभ होता है तब उस का कुछ मूल्य होता है।

—ब्राउनिंग

दरदर की ठोकें खिलाने के बाद अजीब नहीं कि किसी दिन मेरी बहू वेगम भी इस गुलवानू की खुशफहमी का शिकार हो जाए। बेटे, दुनिया बहुत अजीब है। इस अजूबे में पैसा आग लगाता है। ताकत और अख्तियार की दीवारों से इनसानियत और फर्ज की बुलंदियाँ भी नजरों से ओझल हो जाती हैं। अगर ऐसा हुआ, चंदर, किसी दिन मेरी बहू वेगम को भी दरदर की ठोकें खानी पड़ें, तो याद रखना, उस दिन, उस दिन यह ‘रेनबो’ न रहेगा, यह रियासत न रहेगी, यह नवाब और इस की शान हमेशाहमेशा के लिए मिट जाएगी।”

हरखू चाचा बीमार थे। सूचना मिलते ही उन्हें देखने उन के घर जा पहुंचा। वह रेनबो के बारे में कई सवाल पूछते

रहे। मैं निश्चित उत्तर न दे पाया। नवाब ने उन्हें नौकरी से अलग करने पहले ही उन का मन दुखा रखा था। अब वहाँ की नईनई बातों से हरखू चाचा की सहनशील स्वामिभक्ति को अक्षिप्त करने का अवसर नहीं देना चाहता था।

उन की आर्थिक स्थिति खराब की नौकरी भर में जितना बचाया था, दवादात में खत्म कर चुके थे। मुझ से उन का कष्ट देखा न गया। तुरंत अपनी सामर्थ्य भर उन का इलाज कराने लगा। बुझने वाले दिए के समान इस अंतिम तेल का स्पर्श उन में जीवन के चिह्न दिखला रहा लेकिन मृत्यु इतनी निकट आ पहुंची थी कि उसे दुत्कारना संभव न हुआ। मरने के दिन वह मानो प्रलाप सा करते रहे, “तू मुझे बताना नहीं चाहता लेकिन सब सुन रहा हूँ। नए नवाब ने पुराने नौकरों को बर्खास्त करने के बाद वेगमों को दरदर का भिखारी बनाया है। क्या होने वाला है इस रियासत का? क्या होने वाला है बहू वेगम का?”

मैं उन्हें चुप रहने की हिदायत देने लगता तो वह व्यग्र हो कर बोलने लगते, “ना रे बच्चू, ना। अब काहे को चुप रहूँ? बचपन से अब तक चुप ही चुप रहा हूँ मैं। बड़े सरकार के जमाने में भी चुप रहा और अब भी। यहां रियासतों में क्या कुछ होता है, बच्चू, किसी को कब तक किसी बताना? हीराबाई पूना वाली का किस्सा याद है तुझे? मेरी नौकरी ले गई बदबला। बड़े सरकार की जरा सी जिद ने उस गरीब को तवाहीवरबाद कर डाला। कहीं नया नवाब इस से और बड़ी कोई खतरनाक जिद न कर बैठे। बदला हुआ मिजाज पाया है रईस मियाँ ने। कहते हैं तख्तनशीन होते ही गिरगिट की तरह बदल गया है वह। तू बच कर रहना, बच्चू, सांप की तरह खतरनाक समझना उसे। आह....”

उन के मन की बात मैं बहुत कोशिश करने पर भी न समझ सका। उन्हें नवाबी में रहने से भला कौन सा ऐसा तीव्र दुःख

था, जो वह बीसवें वर्ष की आयु में ही कर लेना चाहता था, जो वह प्रकट कर रहे थे? नहीं नहीं, मैं अंत तक न सोच पाया, न समझ पाया। लेकिन आज समझता हूँ। नवाबों की गुलामी के लंबे जीवनकाल में उन्होंने बहुत कुछ देखा था, बहुत कुछ सुना था। बड़े सरकार का जमाना और फिर नए नवाब का जमाना। रियासती दुनिया में जितना कुछ अजीब हो सकता है, होता है। यह 'अजीब' मनुष्यता के नाम पर कलंक है। हरखू चाचा शायद उस समय इसी कलंक के प्रति अपनी दीर्घकालीन आस्था पर विचलित हो कर बारबार पश्चात्ताप कर रहे थे। वर्षों बाद स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जो कुछ इन रियासतों के विलीनीकरण को ले कर किया जाना था, शायद उसी की कोई प्रतिच्छाया उन के मस्तिष्क को बारबार दुखा रही थी। वह सोच रहे होंगे, 'काश ऐसा हो सकता हो, काश इस रियासती पाखंड का अंत हो सकता हो, काश नवाबी प्रथा के संकोची वातावरण से पुरबिया हाट के जीवन को राहत मिल सकती हो! काश, काश....'

हरखू चाचा मर गए। उन के साथ ही समाप्त हुआ वह सुदृढ़ कवच, जिस की ओट में अब तक रियासती छल-प्रपंचों से बचने का मार्ग मिलता रहा था, जिस के उजाले में ऊंचनीच के समय मुझे राह दिखाई देती थी, अथवा जिस की सहानुभूतियों के हाथों मुझे अपना कैरियर बनाने का प्रेरणासूत्र मिला करता था।

हां, एक बात और। मृत्यु से पहले हरखू चाचा को न जाने क्यों आयशा बेगम की याद हो आई थी। उन्होंने पूछा था, "कहां है वह, कभी देखने गया है?" और मेरा नकारात्मक उत्तर सुनते ही बोले, "हाय राम, पत्थर है पत्थर। आयशा को अब तक न पहचाना तू ने? उस के पास जा, बेटे। एक बार तो पाप कर ही चुका, अब और न दुखा उसे। बेसहारा है, कमजोर है, सताई हुई है। एक बात मैं ने तुझे कभी नहीं बताई, बच्चू। वह तुझ से प्यार करती है, बहुत प्यार करती है।"

वह चुप हो कर सोस भरने लगे थे कहते-कहते। मैं खामोश बैठा था। आगे बोले, "उस ने मुझ से एक दिन कहा था यही कुछ। मैं ने बड़ा लताड़ा था उसे। तुझे अपनी महलसरा में बुला कर पाप का भागी बनाया था इस पर नाराज हुआ था। जानता है, बच्चू, उस दिन वह क्या कहने लगी? अरे, वह तो रोने लगी और बोली कि तेरे अलावा किसी भी आदमी ने उसे न तो पहले छुआ है न आइंदा छुएगा। उंह! मैं ने बुरी तरह झंझोड़ा था उसे। मगर देखा न तू ने, तेरे अलावा इतने बड़े किले में उस ने किसी तरफ आंख उठा कर भी न देखा? सच, बच्चू, सच। वह आवाज नहीं थी।" मैं ने इस पर उन्हें याद दिलाया कि 'रेनबो' से जाते हुए आयशा

विधान

किसी सर्वश्रेष्ठ निरंकुश शासक की अपेक्षा एक अच्छा विधान अधिक उत्तम होता है।

—मैकाले

ने खुद जाफर खां से शादी करने के बारे में कहा था।

चाचा ने सुन कर कहा, "बकती होगी, झूठ बोलती होगी। और क्या करती, रे? आखिर तो बेगम है न। किस तरह तुझ से कहतीं कि तू मुझे अपने साथ ले जा कर कहीं रख ले? अरे बच्चू, इतनी समझ आ जाए तो बात ही बदल जाए तेरी। ना रे ना। वह जाफर से कैसे शादी करेगी? वह तुझे प्यार करती है, तुझी को अपना सब कुछ मानती है, पगले।"

मैं ने उन की इस बहक को बारबार सोचा और मन ही मन आयशा को तोला।

हरखू चाचा के दाहकर्म से निपट कर मेरा दिल आयशा से किसी दिन मिलने को मचलने लगा। वह मिरजा पुरवे में रह रही थी। अब दो ढाई साल बीतने को

आ रहे थे 'रेनबो' छोड़ हुए। इस बात कभी उस के पास न गया, कभी याद ही न किया, अपनी व्यस्तताओं में विलकुल भूलाभरमा रहा था। सो, एक दिन चला। मन पर शायद हरखू चाचा के नश्वरों का प्रभाव था। रास्ते भर न जाने कैसा महसूस करता रहा।

नन्ही सी तंग गली में उन लोगों का पता खोजने में तनिक भी समय न लगा। दरवाजा खुला तो सामने एक बूढ़ी, कमजोर, भट्ठी, सांवली सी स्त्री खड़ी थी। हादी वेगम को इस रूप में देख पाने का विचार ही न आया। अतः देर तक देखता और पहचानता रहा।

फिर ज्यों ही स्वर से परिचय ज्ञात हुआ, उछल सा पड़ा। यह क्या? महल-सराओं को अपने साजशृंगार और हंसी-खिलखिलाहटों से जवान बनाए रखने वाली हादी वेगम थी यह? नहीं! विश्वास न आया। पर वही थीं, संदेह कैसे करता, कैसे जानता कि जीवन का घुन उन्हें खा रहा था, दबा रहा था? आर्थिक तंगी में न उन का स्वास्थ्य सुधर सकता था, न उन का विगत यौवन लौट सकता था। वह कभी किसी दिन किले की शोख, मचलती, यौवन के अंगारों में जलती आग भले रही हों, लेकिन अब नहीं थीं। अब वह

सिर्फ हादी वेगम थी। दुर्बल, असहाय, दुखी और परेशान।

लेकिन उन्होंने मेरा स्वागत हमेशा मिलने वाली उसी मुसकान से किया जिस से किले में करती थीं।

"तुम भला कैसे पहचानोगे, मियां, बड़े लोग हो, 'रेनबो' के बड़े अफसर हो।"

मैं ने इनकार में सिर हिलाया तो बोलीं, "मगर हम नहीं भूल सकते, भैया। आ जाओ, भीतर आ जाओ।"

मैं उन के पीछेपीछे उन के छोटे से गंदे और अंधेरे मकान में दाखिल हुआ।

हादी वेगम की दयनीय अवस्था से, घृणा और हीनभावों की मोटी परतों पर से मानो हलकेहलके धूल उड़ने लगी थी। मैं एक टूटे से मोढ़े पर बैठा उन के भूत और वर्तमान को किसी एक सूत्र में बाँधने का असफल सा प्रयत्न कर रहा था। तभी जाफर खां ने कमरे के दूसरे दरवाजे से प्रवेश करते मुझे सलाम किया।

जाफर रियासती वरदी में ही था।

मुझे ज्ञात था कि उस की नौकरी बरकरार थी। नवाब हुजूर शायद उस के प्रति उदार थे अथवा उस के पूर्व चरित्र की भयानकता भूल चुके थे। मुझे यह भी ज्ञात था कि पिछले दिनों मोटर चलाना सीख कर अब वह 'रेनबो' के मोटरखाने

किराए की बीवी

सानफ्रांसिस्को के एक केमिस्ट एनमंड वॉन ड्यूसन ने विज्ञापन दिया था कि उसे किराए पर एक पत्नी की आवश्यकता है। उसे 200 से अधिक प्रार्थना-पत्र मिले, जिन के साथ फोटो भी थे। उस ने एक 33 वर्षीय महिला को चुना और उस के साथ एक व्यापारिक करार किया कि उन दोनों के बीच कैसे संबंध होंगे। यह शादी का करार नहीं था। 'पति' ने वादा किया कि वह अपनी 'किराए की पत्नी' को प्रति मास कुछ रकम और छुट्टियों के लिए 'विशेष भत्ता' देगा। 'पत्नी' के कर्त्तव्यों में पति के साथ बिस्तर पर सीना और रसोईघर में काम करना भी शामिल था। अब 'पति' और 'किराए की पत्नी' ने मिल कर अपने अनुभवों के बारे में एक पुस्तक लिखी है।

—तरुण भारत, लखनऊ (प्रेषक : गिरिजाशंकर पांडेय 'अंकुर', लखनऊ)

में झाड़वरी का काम करता था।

मैं ने जाफर के सलाम का जवाब देते हुए मुंह दूसरी तरफ किया, मानो घृणा की परतों पर एक साथ कई और परतें चढ़ गई हों।

वह बिना कुछ बातचीत किए वहां से चला गया।

हादी वेगम प्रश्न करने लगीं, “तुम लोग बड़े नाराज हो हम से. है न, चंदर?” मैं ने सुन कर प्रसंग बदलने के लिए आयशा के बारे में पूछा. वह बोलीं, “हमारे साथ ही रहती है. अभी बाजार गई है. बड़ी खुदर औरत है, भैया. मेरी खातिर पेंशन छोड़ी, अब अपनी गुजरबसर भी आप करती है. वीमार है बेचारी लेकिन चाकरी नहीं छोड़ती.”

मैं आयशा की नौकरी का जिक्र सुनते ही बेचैन हो रहा था. ‘रेनबो’ के पूर्ववर्ती मालिक की बेवा वेगम, और कहीं नौकरी करती फिरे? फिर तनिक संशय से बोला, “जाफर खां आप लोगों को नहीं खिलातेपिलाते?”

हादी वेगम ने उत्तर दिया, “क्यों नहीं करता, वही तो है हमारा सब कुछ. उसी के भरोसे तो रह रही हैं हम दोनों. जितना कमाता है हमारे लिए खर्च कर देता है.”

मैं ने हादी वेगम की उदंडता का बुरा मानते हुए व्यंग्य किया, “बड़ा होनहार है जाफर खां. लोग बुरे दिनों में भूल जाते हैं, जाफर खां नहीं भूला.”

हादी वेगम मेरा व्यंग्य सहज ही सटकती हुई बोलीं, “हां, यह तो है, शायद जाफर उन में नहीं.”

मैं आयशा की प्रतीक्षा करना चाहता था लेकिन हादी वेगम के सामने बैठ कर उन से बातें न करना चाहता था. देख रहा था आज भी उन में वही घिनावना अपवाद मौजूद था जिस ने महलसरा में उन की अप्रतिष्ठा की थी. आज भी उन्हें अपने अवैध प्रेमी की चर्चा करते तनिक क्षोभ न होता था. आज भी अपनी पहले जैसी अस्थिर विचारधारा को प्रकट करती थी।

मैं तनिक लाज न आती थी.

आधा घंटा व्यतीत होते न होते मैं परेशानी अनुभव करने लगा. अपने स्थान से उठा और बोला, “जा रहा हूं, हादी वेगम. आयशा वेगम को मेरे आने के बारे में बता दीजिएगा.”

“अरे,” उन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए मुझे घूरा, “बिना मिले ही चले जाओगे?” मैं ने उत्तर न दिया तो तनिक भीगे कंठ से कहा, “बड़े जालिम हो, भैया. आयशा के ऊपर तनिक भी रहम नहीं आता तुम्हें? आज इतने दिनों बाद खबर ली और फिर भी बिना मिले जा रहे हो.”

मुझे अनजाने ही क्रोध आने लगा. आवाज में तुरी लाते हुए बोला, “सचमुच बहुत दिनों से खैरखबर लेने नहीं आया. मगर देख रहा हूं कोई खास हानि नहीं हुई इस से. यहां आप हैं, जाफर खां है और सब से बड़ी बात तो यह है कि खुद आयशा वेगम की खुदारी भी है. मैं आ कर भी क्या कर सकता था उन के लिए?” और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए कमरे से बाहर निकल आया.

मिरजा पुरवे का अंतिम मकान पीछे छोड़ा ही था कि सामने से बुरके में ढकी एक छरहरी स्त्री को देख कर कदम ठिठक गए. बुरके वाली आयशा थी. चलतेचलते रुक कर उस ने पृकारा तो मैं घमसा हुआ देखने लगा. वस्तुतः आयशा ही थी. नकाब पीछे फेंकते हुए मुझे घूर रही थी. हाथ में विविध वस्तुओं से भरा एक थैला था. बोली, “जहे नसीब, आए तो. मगर इंतजार कौन करे, जा रहे थे बिना मिले!”

मैं चुप खड़ाखड़ा देखने लगा. शरीर यदि जरा सा गदरा न गया होता तो आयशा आज भी पहली ही जैसी सुंदर आयशा थी. हादी वेगम के समान उसे काल के क्रूर हाथों ने निर्जीव न किया था. चेहरे पर वही आकर्षण, बिल्लौरी आंखों में वही निमंत्रण और मुद्रा में वही सलोनी हंसी. मुझे कई पल निर्वाक खड़ा देखने के बाद शांति भंग करती बोली, “न बोलने

की कसम खाई है जैसे, चंदर. मुझे पहचाना तो है न? उंहक. यहाँ बात नहीं करोगे, चलो मेरे साथ." और मेरा हाथ पकड़ वापस उसी तरफ चल दी जिधर से आई थी. मंत्रमुग्ध सा किसी अज्ञात शक्ति के अधीन खिंचाखिंचा कब मैं साथसाथ चलता निकट एक पार्क में जा पहुँचा, मुझे ज्ञात ही न हुआ. होश आया तो सरकारी बेंच पर हम दोनों निकट बैठे एक दूसरे को घूर रहे थे.

सहसा मैं ने पूछा, "आप नौकरी करती हैं, आयशा बेगम? हादी बेगम ने अभीअभी मुझ से कहा था."

वह क्षीण मुसकान बखेरती कहने लगी, "आयशा बेगम को मरे तो ढाई साल गुजरे, चंदर, तुम अगर आयशा से सवाल पूछो तभी ठीक." मैं ने उस की आंखों में झाँकती व्यथा पहचान कर नजरें झुका लीं. तभी वह आगे बोली, "क्या कलं, जिंदगी की गाड़ी किसी न किसी तरह तो ढोनी होगी. नौकरी न कलं तो काम कैसे चले?" मैं ने तपाक से जाफर का नाम ले कर व्यंग्य किया. वह आंखें ऊपर उठाए मुझे पागलों की भाँति घूरने लगी. मेरे स्वर की क्लिष्टता को शायद समझ चुकी थी अतः हंस कर बोली, "उस गरीब के लिए अब भी दिल में गुस्सा भरे हो? मगर मैं पूछती हूँ, क्यों?"

इस बार मैं तड़पते स्वर में चीखा, "महलसरा में गैरकानूनी तौर पर बेगमात से मुहब्बत करने वाला कोई आदमी प्यार करने के काबिल नहीं होता. बदकिस्मती

है कि कुछ लोग, खास कर कुछ नाममन्न और बेवकूफ औरतें इस के वावजूद उन्हें प्यार करने पर मजबूर होती हैं."

वह हंसते हुए उत्तर देने लगी, "साफसाफ नाम ले कर गालियाँ क्यों नहीं देते? महलसराओं में इशक करने वाला जाफर है और उस से प्यार करने वालों मैं हूँ, यही कहना चाहते हो न?"

मैं ने मौन स्वीकृति दी. वह अस्थिर बैठी रही. फिर तनिक झुंझलाए स्वर में बोली, "लेकिन अगर यह सच भी है तो तुम्हें किस बात की तकलीफ होती है चंदर?"

"बको मत," मैं पहली बार आयशा के प्रति इतना निर्मम हुआ, "मैं तुम्हें एक फाहशा औरत नहीं समझता था."

उस का चेहरा सुनते ही लाल हो गया. उछल कर अपने स्थान से खड़ी हुई और गुस्से से बोली, "फाहशा कहने की जुरत तुम कैसे कर सके, चंदर? खबरदार, अपने अल्फाज वापस लो. मैं ने तुम्हें किसी दिन अपनी असमत जरूर सौंपी थी लेकिन जिंदगी भर का सुख नहीं. तुम पत्थर की तरह हमेशा ही चोट पर चोट करते रहो, यह तुम्हारा हक नहीं. मैं नहीं जानती तुन मुझ से क्यों मिलने आए हो, लेकिन यह जानती हूँ कि अगर न मिले होते तो ज्यादा बेहतर था. आईदा भी कभी न मिलो तो बेहतर होगा."

वह जा रही थी कि मैं ने हाथ पकड़ कर रोका. अपने शब्दों पर मुझे क्षोभ होने लगा था. न जाने जाफर खाँ का नाम सुनते ही मन में कैसी कटुता उत्पन्न हो जाती है. आयशा बेगम के साथ रह कर वह किस आजादी से गुलछर उड़ा रहा होगा, यही सोचसोच कर घुटा जा रहा था. कभीकभी मनुष्य कितना अविवेकी हो जाता है. आयशा अपने जीवन का कोई सहारा न पा कर यदि जाफर खाँ को अपनी बागडोर थमा ही दे तो इस में अपराध क्या था? किंतु स्वार्थ की काली छाया मन को असंयमी कर देती है.

दुनिया में अपनी...

दुनिया में अपनी सुबह न शामें,
दिल के अंधेरे दिल के उजाले.
ऐ हमसफ़ीरो, गुलशन कफस है,
आंखों पे मुहरें होंठों पे ताले.

—आबिद अली 'आबिद'

अधिकार बोध हो चुका था, नहीं जानती। उसी अधिकार पर किसी परपुरुष के नुकीले पंजों का अनुभव मन में वितृष्णा जागृत करता था।

हुंघे कंठ से बोला, “बैठ जाओ, आयशा बेगम, बैठ जाओ। माफ कर दो मुझे। जाफर खां का नाम सुन कर मेरे तनवदन में आग लग जाती है। तुम ने ही तो एक दिन कहा था कि वह तुम से शादी करना चाहता है, हादी बेगम भी इस पर जोर देती हैं। मैं न जाने क्यों यह बात सह नहीं सकता। आयशा बेगम, मेरा तुम पर कोई हक नहीं, लेकिन....”

आयशा बैठने लगी। उस ने मेरे भीतर झांकती आंखों से मन का आग्रह समझने का प्रयत्न किया। फिर तनिक सी मुसकान बखेरती बोली, “हक की बात करते हो न? मुझ पर तुम्हारा कोई हक नहीं? हांहां, यह बात तो ठीक ही है। किसी पर किसी का हक होने का सवाल ही क्या है? फिर जाफर खां से मेरे प्यार का चर्चा तुम्हें दुखाता क्यों है?”

“मैं नहीं जानता।” मैं ने कहा।

“मैं जानती हूं।” वह बोली, “तुम्हारा हक मुझ पर है। उसी दिन से है जिस दिन मैं ने तुम्हें अपनी सुहागरात का फूल समझ कर माथे से लगाया था, चंदर। लेकिन...लेकिन तुम उस हक से जानबूझ कर नादान बने रहना चाहते हो। मुझे सचाई तस्लीम नहीं करना चाहते, फरेब मान रहे हो। मगर मैं फरेब नहीं हूं। मैं हकीकत हूं, मेरे दोस्त। और जानते हो कौन सी हकीकत हूं? मैं हूं समाज की खूनी बंदिशों में जकड़ी सिसकती हकीकत। बड़े सरकार ने मुझे खरीद कर अपनी महलसरा की सजावट का सामान करने के बाद मेरे लिए चारों तरफ अंधेरा फैला दिया था, चंदर। मैं उस अंधेरे में भटकना चाहती थी। भूखी जवानी के कदमों में सिहरन थी। महलसरा की रंगी-नियों से चिपट कर भीतर उभरने वाली आग मुझे कभी भी जला कर खाक कर डालने की तैयारी कर रही थी। मगर मैं

न और हादी बेगम ने इस पर काबू पाया।

“हम ने हकीकत को हकीकत का जामा पहनाया। आग कोरी बातों से तो नहीं बुझ सकती। हम ने मिल कर अपना अलग रास्ता चुना। महलसरा के जाने-अनजाने खिदमतगारों, किले के बाबर्चियों, नायकों और पहरदारों से दौड़ती हुई हमारी नजर तुम पर आ पहुंची, चंदर। मैं इम्तिहान के लिए तैयार हुई। उस सुहागरात की बात तो तुम कभी न भूल पाओगे न? आह, सचमुच वह मेरी सुहागरात ही थी। जिंदगी की पहली और आखिरी सुहागरात। बड़े सरकार के घिनावने पिंजरे में मैं ने भी और बेगमात की तरह जीने का सहारा तलाश किया था। लेकिन वह भी मजबूत न था। तुम ने...तुम ने...” वह कहतेकहते रोने लगी।

हरखू चाचा की अंतिम बातें शूल सी चुभने लगीं। आयशा उन्हीं का अनुमोदन कर रही थी। उस ने मुझे चाहा था, प्यार किया था और अपने भूखे जीवन में मुझी को अपनी भूख मिटाने का साधन बना कर शांत रह जाना चाहा था। ठीक, पर मैं आगे क्या करता? महलसराओं का जीवन समाप्त हुआ। ‘रेनबो’ के नए सवरे में आयशा को निकाल बाहर किया गया। हरखू चाचा ने इस पर लताड़ा था मुझे। सहारे की जरूरत को न मानते हुए आयशा को मैं ने बेसहारा छोड़ दिया था। ऐसा करने का मुझे हक नहीं था और तब जाफर के साथ अपनी जिंदगी गुजारने के निर्णय पर क्रोध व्यक्त

रोशनी दे गए...

खोल कर इन स्याह वालों को,
रोक दो सुबह के उजालों को,
इस तबस्सुम से उम्र भर के लिए
रोशनी दे गए खयालों को.
—कयूम ‘नजर’

करने का भी हक कैसे हो सकता था मुझे।

हलके से बोला, “मुझे अफसोस है, आयशा, कि मैं तुम्हें कुछ न दे सका। सचमुच, कुछ भी न दे सका। मगर, मगर, जाफर तुम से प्यार तो करता है न? तुम उस के साथ क्यों रहती हो? मैं आबारा जाफर से नफरत करता हूँ, आयशा।”

आयशा ने आंचल से आंसू पोंछते हुए धीमे स्वर में कहा, “डरते हो, मुझ पर भरोसा नहीं करते?”

मैं ने आश्चर्य व्यक्त किया, “क्या कहना चाहती हो तुम?”

वह रुक-रुक कर कहने लगी, “जाफर वाकई मुझे प्यार करता है, चाहता है, लेकिन मैं तो नहीं चाहती। हादी बेगम के साथ रहने का गलत मतलब क्यों निकालते हो तुम?” कुछ ठहर कर बोली, “हम दोनों एक-दूसरे को प्यार करते तो अब तक न जाने कब की शादी हो गई होती। लेकिन जानते हो ऐसा कभी नहीं होगा। कितनी सुहागरातें मना सकती हूँ मैं? एक बार बड़े सरकार के शानदार स्वावगाह में नकली सुहागरात मना चुकी थी, दोबारा तुम्हारे साथ मनाई, अब और तीसरी बार वही कहानी दोहराने की हिम्मत नहीं हुई, चंदर। इसी लिए उन लोगों के साथ रहती हूँ लेकिन अपनी मेहनत से कमाती-खाती हूँ। अब तो मैं सचमुच बेवा हूँ। एक बेवा की इज्जत सुहागन की इज्जत से कई गुना ज्यादा बढ़ जाती है। बड़े सरकार मर गए हैं इसलिए बेवा नहीं हूँ, बेवा हूँ चूंकि मेरा शौहर... मेरा शौहर... मुझ से रूठ गया है।”

मेरा मन कांप उठा, बोला, “अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारा उन लोगों से अलग इंतजाम कर दूँ।”

वह हंसने लगी। हलके-हलके उत्तर दिया, “कभी-कभी अहसान की बातों से भरमा देते हो, चंदर। मानो मैं बेवा नहीं सधवा हूँ। ऐसा क्यों करते हो तुम?”

मुझे क्रोध सा आया। तेज स्वर में बोला, “पहेलियों से मुझे पागल बनाने की कोशिश मत करो आयशा। दो मैं

सि एक बात मानो। जाफर के रहना चाहती हो इसलिए अलग नहीं सकती?”

वह पूर्ववत् हंसती हुई बोली, “फिर वही जाफर। अच्छा, रहने दो इस को। इतने दिन बाद मिले हो लेकिन कोई दूसरी बात नहीं है तुम्हारे पास? जानो हो मैं क्या नौकरी कर रही हूँ? हकीम अरशद के मतब पर जा कर औरतों के नुस्खे की दवा तैयार करती हूँ। बड़े सरकार ने कभी ऐसा सोचा भी न होगा।”

मैं उठ कर चलने लगा। वह रोक्ती हुई बोली, “जा रहे हो? चलो, मैं साथ चलती हूँ।” फिर उस ने मुझे धक्का देकर पूछा, “लेकिन एक बात का यकीन दिलाते जाओ, चंदर। मैं भूल पर नहीं, जब कहती हूँ कि जाफर खां से प्यार या शादी करने का मुझे कोई हक नहीं क्योंकि मैं एक बेवा हूँ? बोलो।”

मैं उत्तर न दे पाया। जल्दी-जल्दी पार्क से निकलता बाहर आने लगा।

वह हंसी, “नहीं बताना चाहते नहीं बता सकते? अच्छा, जाओ। लेकिन किसी दिन इस सवाल का जवाब जरूर देना। महलसरा नंबर इकसठ का आयशा बेगम का सवाल अटपटा तो है लेकिन बेकार और गलत नहीं। सवाल उस का है लेकिन जवाब आयशा को देना।”

मैं तेज-तेज सड़क पार करता अपने रास्ते चला गया। आयशा कुछ देर खड़ी खड़ी मुझे घूरती रही।

अगले अंक में...

‘रेनबो’ की अब तक की जिंदगी बड़े शानशौकत और ऐशोआराम में बीती थी, लेकिन अब, द्वितीय महायुद्ध की घोषणा होने से जैसे उस के भी दिन पूरे होने लगे।

आ गया सावन...

प्यार की सौगात ले कर
आ गया सावन.

फिर लगी नीले गगन में बादलों की हाट,
फिर जुड़े अंबर तले उल्लास के मेले.
जिंदगी की कल्पनाएं फिर हुई साकार,
फिर मिलन के आ गए दिनरात अलबेले.
खनखनाए कोपलों के
हाथ के कंगन.

रूप ने आंजा नयन में प्रीत का अंजन,
बढ़ गया सामान्य से कुछ अधिक स्पंदन.
सिहरनों की विजलियां कौंधी फुहारों में,
धोर भी उत्तप्त बूंदों से हुआ यौवन.
मीत के आलिंगनों में
कसमसाया तन.

डफलियों पर थाप पड़ते ही चरण ठुमके,
बीसियों स्वर एक हो कर गा उठे कजरी.
रूप झूलों पर चढ़ा स्वर वासुणी छलकी,
पेंग के लप बढ़ गए छूने चले बदरी.
टूट कर गिरने लगे सब
लाज के बंधन.

—जहीर कुरेशी



मैं क्या करूँ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूँ? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

● मैं इंदौर में रहती हूँ. जानना चाहती हूँ कि होंठों व टुड्डी के अनावश्यक बालों के लिए 'इलेक्ट्रोलाइसिस' कहाँ से कराऊँ.

—नैना, इंदौर

इंदौर जैसे बड़े नगर में 'ब्यूटी क्लिनिक' अवश्य होंगे. आप टेलीफोन डायरैक्टरी से पता देख कर पूछताछ करें. यशवंत अस्पताल में भी शायद 'इलेक्ट्रोलाइसिस' की व्यवस्था मिल जाएगी.

● मैं ग्यारहवीं कक्षा का विज्ञान का विद्यार्थी हूँ. घर में कई छोटे भाईबहन और हैं. घर में शोर व पढ़ाई के लिए अलग कमरा न होने से रात आठनी बजे तक मैं पढ़ नहीं पाता. दूसरे, पढ़ने बैठता हूँ तो सुस्ती व नींद आने लगती है. सुबह तीन बजे उठ कर पढ़ने बैठता हूँ तो भी नींद आने लगती है. क्या करूँ? —धर्मपाल केशव, नई दिल्ली

आप को अपनी पढ़ाई की व्यवस्था किसी मित्र के साथ उस के घर में कर लेनी चाहिए. दोनों मिल कर एकदूसरे की मदद भी कर सकोगे व अकेले में न होने के कारण नींद भी नहीं सताएगी.

● मैं अपने मंगेतर से दो इंच लंबी हूँ. मेरी कमर चौड़ी व पेट आगे को निकला हुआ है. मेरे छोटे बाल व छोटी नाक भी मेरे मंगेतर को पसंद नहीं. इसलिए बहुत शर्म आती है. क्या करूँ?

—दर्शनकौर, मंदसौर

आप का मंगेतर इन बातों को ले कर केवल आप को चिढ़ाता है या आप से नफरत करता है, इस का सही अनुमान तो आप ही लगा सकती हैं. यदि पहली बात ठीक है तो निश्चय ही वह आप से प्रेम करता है व आप को हर स्थिति में अपनाने को तैयार है, वरना वह सगाई तोड़ भी सकता था. पर आप को दूसरी बात ठीक लगती हो तो एक बार उस से खुल कर बात कर लें व इस की पुष्टि होने पर अलग हो जाना ठीक होगा. बहरहाल, आप को अपने शरीर के संतुलन पर तो ध्यान देना ही चाहिए. किसी 'ब्यूटीशियन' से भी इस बारे में सलाह लीजिए.

● मैं 18 वर्षीय तरुणी हूँ. छः वर्ष पूर्व माँ की मृत्यु हो गई. दीदी की शादी के कुछ दिन बाद पिताजी ने दूसरी शादी कर ली. सौतेली माँ हमेशा दुत्कारती रही. तो दीदीजीजा मुझे अपने पास ले आए. दो वर्ष से अब मैं इन के पास हूँ. इन के मेरे ऊपर एहसान हैं. अब ये लोग मेरा रिश्ता जीजाजी के छोटे भाई से करना चाहते हैं, जो मुझ से कम पढ़े हैं व मुझे पसंद भी नहीं. मैं ने इनकार भी किया, तब भी ये मुझ मजबूर कर रहे हैं. मैं हीन भावना से ग्रस्त हूँ. क्या करूँ? —उषाकुमारी, पतराव

घर आप लौट नहीं सकतीं. दीदीजीजा को नाराज नहीं कर सकतीं. इस प्रकार आप की समस्या सचमुच विकट है. पर धैर्य व साहस से काम लीजिए. इस शादी को टालिए और शीघ्र से शीघ्र अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करिए. फिर नौकरी मिलते ही उसी शहर में या दूसरे शहर में अलग रहने लगिए. इस के बाद अपनी पसंद का साथी खोज कर आप विवाह कर सकेंगी. किसी समाजसेवी महिला संस्था की सहायता भी ले सकती हैं. नई दिल्ली में 6, भगवानदास रोड पर स्थित 'बापन घर' भी आप को अस्थायी निवास की सुविधा दे सकता है. इस के लिए चाहें तो सेक्रेटरी, अखिल भारतीय महिला परिषद को उपरोक्त पते पर लिखिए.

● मैं 16 वर्षीय थी। मैंने अपने पिता की मृत्यु के बाद ही कालिज जाते शर्म लगती है। मन में उदासी व हीन भावना घर कर गई है। क्या करूँ?

—क. ख. ग., संबलपुर

● 16 वर्षीया ग्यारहवीं की छात्रा हूँ। दुबलीपतली व लंबी हूँ और सीना सपाट। कोई उपाय बताइए।

—अनीता राजा, ब्यावर

चिंता छोड़ सामान्य स्वास्थ्य सुधारने पर ध्यान दीजिए। पौष्टिक व संतुलित भोजन के साथ लंबी सांसों का व्यायाम लीजिए। रोज सुबह की ताजी हवा में लंबी सांस भर खूब हवा फेफड़ों में भरिए व धीरेधीरे बाहर छोड़िए। दूसरा व्यायाम इस प्रकार भी करें : पहले स्तनों पर गोलाई में मालिश करें। फिर बांहों को तान गोलाई में घुमाएं। इस क्रिया को पांचसात बार दुहरा लेने के बाद स्नान करें। कुछ समय बाद अंतर न दिखाई दे तो लेडी डाक्टर की राय लें। आप को हार्मोन के इलाज की भी जरूरत हो सकती है।

● मैं चाहता हूँ कि मेरी पत्नी माथे पर बिंदिया लगाए, हाथों में चूड़ियाँ और पांवों में पायल पहने और सिर पर पल्लू ले कर नारीत्व की शोभा बढ़ाए। मैं ने हजार बार उस से कहा, पर वह इस सब को पुराना फैशन कह कर टाल जाती है। कृपया मेरी इस समस्या का समाधान बताएं।

—जान भाटी, कानपुर

यह कोई समस्या नहीं है। आप को विवाह से पूर्व ही नारी का यह रूप देख कर चुनाव करना चाहिए था। अब तो दोनों को ही एकदूसरे की इच्छाओं का सम्मान करना होगा। बदले समय में नारी की शोभा उस की अन्य योग्यताओं में भी देखी जानी चाहिए।

● कृपया 'जूडो' प्रशिक्षण के बारे में जानकारी दीजिए कि यह कहां मिल सकता है।

—नीरू जैन, नई दिल्ली

आप 'अखिल भारतीय महिला परिषद' के 6, भगवानदास रोड स्थित कार्यालय से संपर्क स्थापित कीजिए। कक्षाएं परिषद द्वारा वहीं चलाई जाती हैं।

● मेरी आयु 17 वर्ष है। मैं एक हिंदू लड़की से प्यार करता हूँ। हम दोनों विवाह करना चाहते हैं। पर मातापिता राजी नहीं होते। क्या करना चाहिए?

—मुजफ्फरखां शीरानी, इसलामनगर

हिंदूमुसलिम का प्रश्न न हो तब भी आप की उमर अभी शादी लायक नहीं है। पहले पढ़लिये कर अपना कैरियर बनाइए, फिर इस दिशा में सोचिए। आत्मनिर्भर होने तक यदि आप का यह प्रेम स्थिर रहा तो इस लड़की से ही विवाह कर सकते हैं। पर समय के साथ आप अपना निर्णय बदलेंगे क्योंकि अभी आप जिसे प्रेम समझ रहे हैं वह प्रेम नहीं, मात्र किशोरावस्था में विपरीत लिंग का आकर्षण है। अभी इस ओर से ध्यान हटा कर पढ़ाई में लगाइए। उस लड़की से मिलनाजुलना छोड़ अधिक से अधिक व्यस्त रहिए। आप का समाधान हो जाएगा।

● मेरा विवाह बचपन में हो गया था। लड़की अनपढ़ देहाती है। वह मुझे बिलकुल पसंद नहीं। अब मैं उसे त्याग विवाहबंधन से फिलहाल मुक्त रह कर विद्याध्ययन करना चाहता हूँ। मेरी उमर 17 वर्ष है और 11वीं का छात्र हूँ।

—रणवीरसिंह, लाड़नू

आप अपनी पत्नी को अभी मायके भेज दीजिए व समुराल वालों से उसे पढ़ाने के लिए कहिए। स्वयं पत्नी को भी इस ओर प्रोत्साहित कर अपने योग्य बनाने का प्रयत्न करिए। आप की पढ़ाई जब समाप्त होगी, तब तक वह भी काफी पढ़लिये और सीख कर आप के योग्य बन जाएगी। छुटकारा आसान नहीं है। आप पत्नी से सहानुभूति रखिए व उस में रुचि लीजिए तो वह भी आप के योग्य बनने की कोशिश करेगी।

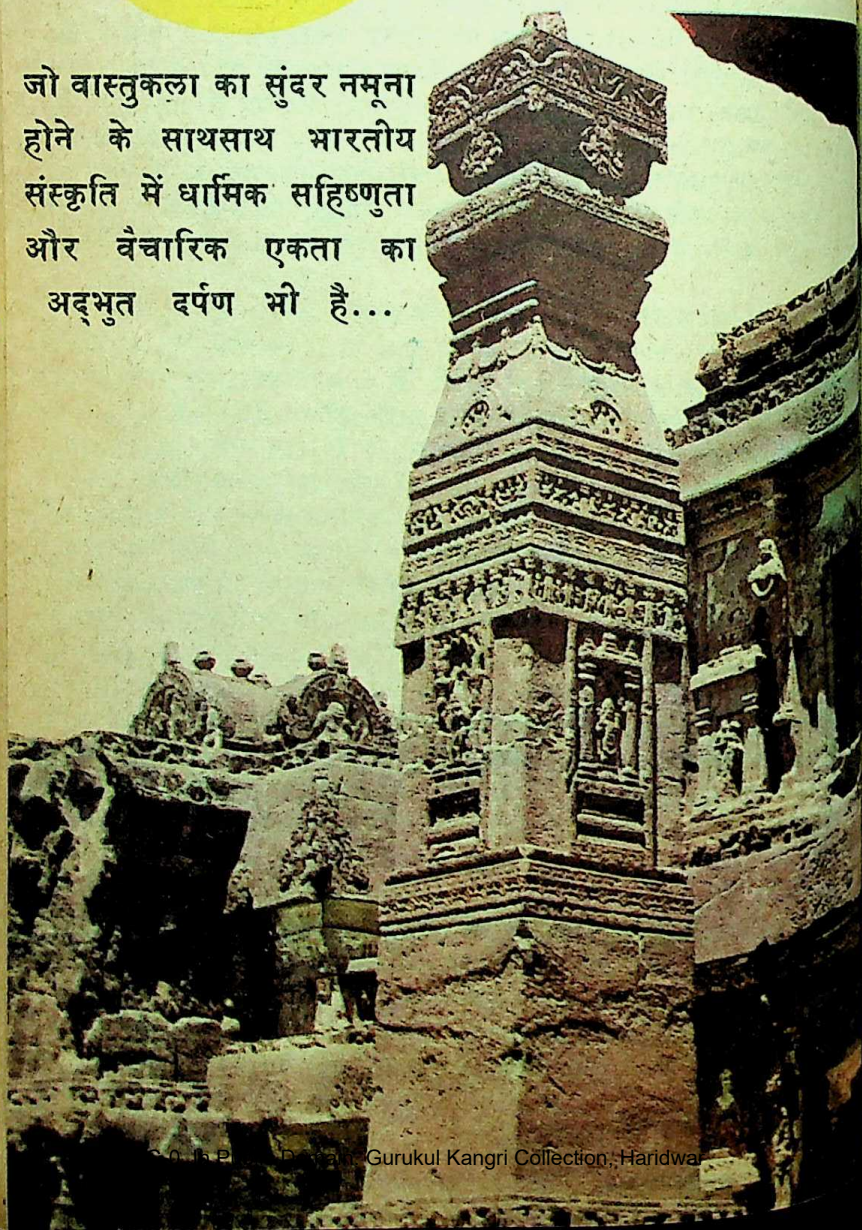
—नीरजा ●

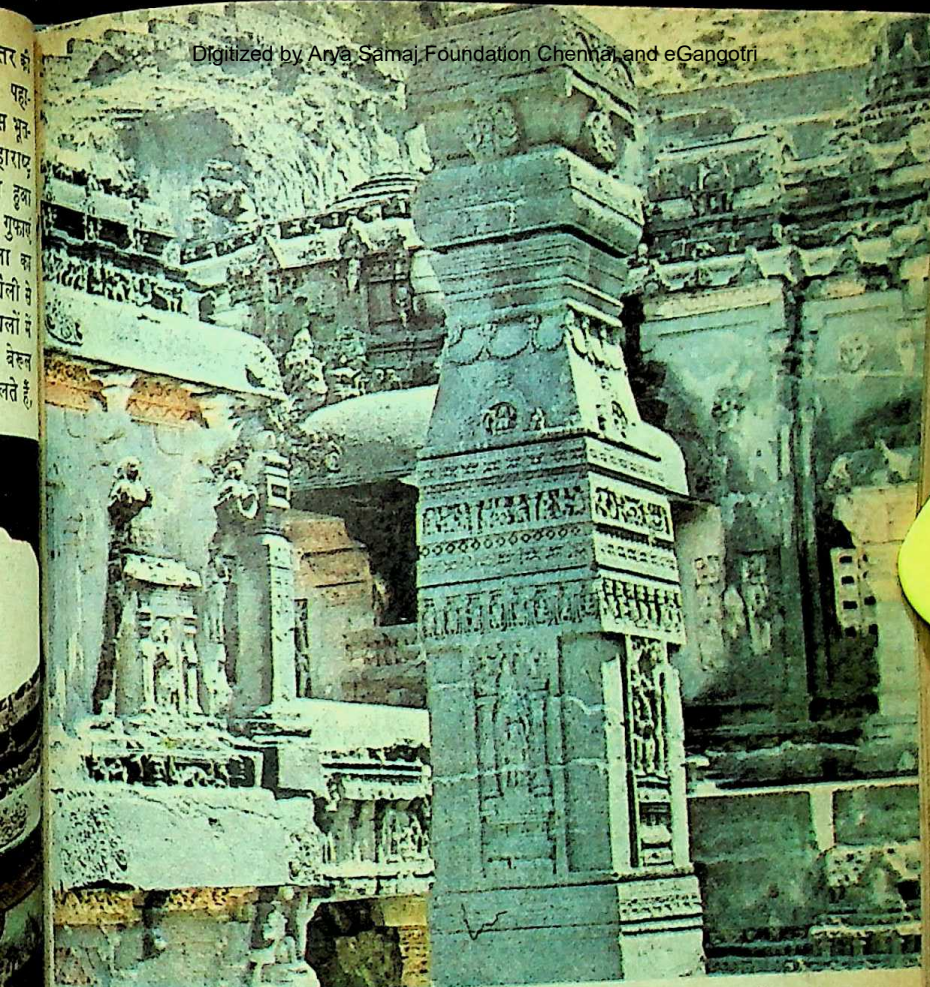
एलोरा

लेख • मनमोहन वशिष्ठ

एलोरा अजंता से 60 मील उत्तर की ओर औरंगाबाद की पहाड़ियों में स्थित है। एलोरा के पास भूत-पूर्व हैदराबाद राज्य और अब महाराष्ट्र का प्रसिद्ध नगर औरंगाबाद बसा हुआ है। यहां पर पहाड़ियां काट कर गुफाएं बनाई गई हैं। ये गुफाएं वास्तुकला का अनुपम रूप हैं। गुफाओं की कला शैली से पता चलता है कि ये विभिन्न कालों में बनी हैं। एलोरा का स्थानीय नाम वेरुन है। इस के अनेक प्राचीन नाम मिलते हैं।

जो वास्तुकला का सुंदर नमूना होने के साथसाथ भारतीय संस्कृति में धार्मिक सहिष्णुता और वैचारिक एकता का अद्भुत दर्पण भी है...





पत्थर की एक ही पहाड़ी को काट कर बनाए गए कैलाश मंदिर का स्तंभ. कहा जाता है कि पहले इस पर एक गुरु भी बना था.

जिन में इल्लवलपुर, एलगिरि और इलापुर प्रमुख हैं. आदि शंकराचार्य ने इलापुर में घुश्मेश्वर तीर्थ का उल्लेख किया है. जैन ग्रंथ घर्मोपदेशमाला में समयज्ञ मुनि की कथा में एलउर का वर्णन हुआ है. उस समय में यह प्रसिद्ध था.

एलोरा 17वीं शती तक प्रसिद्ध रहा. मेघविजय नामक जैन कवि ने मेघदूत के आधार पर रचित अपने ग्रंथ में एलोरा के तत्कालीन वैभव का वर्णन कर इस के महत्त्व को काफी स्पष्ट किया है. प्रसिद्ध जैन विद्वान विबुध विमलसूर की एलोरा यात्रा का भी उल्लेख मिलता है. 'प्राचीन

तीर्थमाला संग्रह' नामक पुस्तक में जैन मुनि शील विजय द्वारा 18वीं शती में एलोरा की यात्रा का भी उल्लेख हुआ है.

कला समीक्षकों तथा इतिहासकारों का मत है कि इन गुफाओं का निर्माण काल ईसा की पांचवीं शताब्दी में शुरू हुआ. चालुक्य राजाओं के काल में एलोरा में काफी उन्नति हुई. एलोरा कला क्षेत्र का चरम सीमा काल आठवीं शताब्दी बतलाते हैं. इस काल में बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मणों द्वारा इस स्थान को गुफाओं, मंदिरों और मूर्तियों से सजाया व संवारा

गया. दसवीं शताब्दी के बाद इस स्थान में गुफाओं के और निर्माण कार्य का कोई उल्लेख नहीं मिलता है. इस से पता चलता है कि बाद में गुफा निर्माण कार्य बिलकुल बंद हो गया.

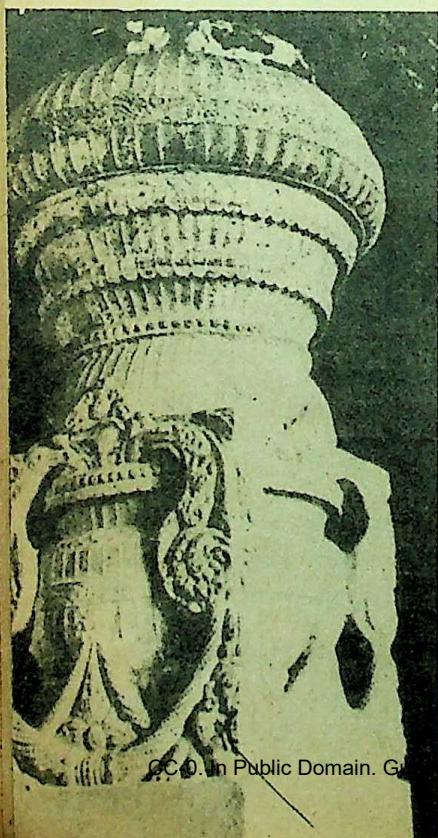
एलोरा क्षेत्र की पहाड़ियां पठारों के रूप में काफी दूर तक फैली हुई हैं. उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हुए पठार की लंबाई सवा मील से अधिक है तथा पश्चिम की तरफ ऊंची चोटियां फैली हुई हैं. पश्चिमी चोटी के पास से ही सब से प्राचीन गुफा प्रारंभ होती है. जो गुफाएं उत्तर से पूर्व की ओर गई हैं वे सब से बाद की जैन गुफाएं मानी जाती हैं. कुल मिला कर यहां 34 गुफाएं हैं, जिन्हें तीन भागों में बांटा गया है :

बौद्ध गुफाएं—1—12 तक,

ब्राह्मण गुफाएं—13—29 तक,

जैन गुफाएं—30—34 तक.

गुफा के भीतरी भाग में स्थित कलात्मक खुदाई वाला एक स्तंभ.



गुफाओं को देख कर ऐसा लगता है कि ये गुफाएं बौद्ध भिक्षुओं, दार्शनिकों और धर्म प्रचारकों का निवास स्थान रही होंगी. गुफाओं को देख कर इस बात का पता भी चलता है कि यहां के बौद्ध भिक्षु या साधु मूर्तिपूजक थे तथा धर्म, दर्शन, शिक्षा और कला का यह केंद्रस्थल था.

बौद्ध कला की गुफाएं (459 ई. से 650 ई.)

बौद्ध कला कब प्रारंभ हुई—यह विषय विवाद का ही रहा है, पर इतना स्पष्ट है कि भारत में बौद्ध धर्म एक हजार वर्ष तक रहा और भारत की कला-कृतियों में नया जीवन और नई प्रेरणा भरता रहा. चूंकि बौद्ध कला का विषय धार्मिक रहा, अतः यह धर्म की भांति धीरेधीरे बढ़ती गई. बुद्ध की स्मृति, सिद्धांत व उपदेशों को स्थायी आधार देने के लिए स्तूप, स्तंभ, गुफाएं, मूर्ति, मठ, विहार तथा चैत्य बनाए गए.

बौद्ध कला का इतना चरम विकास हुआ कि यह उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत की एकता का प्रतीक बन बैठी. इस एकता के प्रतीक हम उत्तर में तक्षशिला तथा गांधार से ले कर दक्षिण में जटिटा रामेश्वर, पूर्व में बारबरा की गुफाएं तथा पश्चिम में बैराठ तक इस कला का चरम उत्कर्ष देख सकते हैं. बौद्ध कला का चरम उत्कर्ष काल हम अजंता व एलोरा में देख सकते हैं, जहां एक साथ बौद्ध कला ने स्थापत्य कला, मूर्ति कला व चित्र कला में विकास की चरम सीमा प्राप्त की है. बौद्ध ग्रंथों में उल्लेख है कि बुद्ध ने भिक्षुओं को गुहा में निवास करने की आज्ञा दी थी. 'गुहा' शब्द के लिए संस्कृत शब्द लयनम (प्राकृत लेण) विश्रामगृह या आराम के लिए काम में लिया गया है. पुरातत्त्व प्रमाणों के आधार पर इस बात का पता चलता है कि लयनम (लेण) पर्वत खोद कर तैयार किए जाते थे, जहां भिक्षु निवास करते थे. भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी भागों के पर्वतों में खोदी गई गुफाओं को 'लेण' शब्द से संबोधित किया गया है.

ऐसा भी उल्लेख है कि समीप लगे मुख्य नगर से पांच से दस मील की दूरी पर बनाए गए हैं। संभवतः इस का कारण नगर जीवन से दूर रहना और प्राकृतिक वातावरण में जीवन व्यतीत करना रहा होगा। इस तरह 'गुहा' और 'लेण' पर्यायवाची हैं और 'लेण' साधुओं के लिए पर्वतों में खोदी गई गुफाओं के लिए काम में आया है। बौद्ध धर्म में सामूहिक प्रार्थना तथा भिक्षु समूह की परिपाटी चलती थी। इसी को ध्यान में रख कर गुहा निर्माण किया जाता था। गुफाओं के साथ धर्म का संबंध जुड़ा होने के कारण कई सदियों तक अनेक राजाओं ने गुफा दान और निर्माण की परिपाटी को प्रोत्साहन दिया।

एलोरा में बौद्ध गुफाओं की संख्या 12 है। ये गुफाएं दक्षिणी किनारे के आखिर के निचले पहाड़ों के पास हैं। बौद्ध गुफाओं का निर्माण बुद्ध की स्तुति तथा बौद्ध भिक्षु निवास के लिए किया गया है। अतः यहां चैत्य व विहार दोनों ही प्रकार की गुफाएं मिलती हैं। गुफा संख्या 1—4 तक की 'थेरवाड़ा' कहलाती हैं। डाक्टर जे. विल्सन का नामकरण के बारे में कहना है कि बौद्ध भिक्षु, जिन्हें 'थेरा' कहा जाता था, थेरवाड़ा स्थान के रहने वाले थे। इन बौद्ध भिक्षुओं को ब्राह्मण 'डेडवाडा' कहते थे। क्योंकि ये लोग निम्न जातियों या आदिवासियों में से होते थे। लेकिन बौद्ध धर्म के साथ इस तरह की जातियों को निम्न या पिछड़ी कहना अनुपयुक्त लगता है। विदेशी यात्रियों के वृत्तान्त में इस तरह की निम्न जातियों का कोई विवरण नहीं है। लगता है, यह सब बाद में बौद्ध धर्म को एक जाति विशेष का धर्म बताने की चाल रही हो।

प्रार्थनागृह तथा विहार

बौद्ध गुफाओं में हर गुफा के अंदर एक प्रार्थनागृह तथा उस के साथ ही भिक्षुओं के विहार हैं। इन गुफाओं में एक विशेष प्रकार के स्तंभ हैं और उपरी हिस्सा चट्टानों से काट कर बनाया गया

मुक्ता



तांडव नृत्य करते हुए शिव का चित्र।

लगता है। बौद्ध गुफाओं के बारे में स. क. सरस्वती ने 'सर्वे आफ इंडियन स्कल्पचर' में लिखा है, "एलोरा में चट्टानों में कलाकारों द्वारा अंकित की गई सीधी रेखाएं, सही कोण और स्पष्ट व यथार्थ अंकन शिल्प कला की पूर्णता के सूचक हैं।"

गुफा संख्या 1 : एलोरा के दक्षिणी क्षेत्र की यह सब से प्राचीन गुफा है। 41 फुट से भी अधिक चौड़ी, आठ स्तंभों वाली यह गुफा भिक्षुओं का विहार थी।

गुफा संख्या 2 : चैत्य लगाने वाली यह गुफा 48 वर्ग फुट की है। इस की छत 12 अलंकृत खंभों पर टिकी है। इस गुफा में बुद्ध की एक बड़ी सिंहासन पर बैठी हुई प्रतिमा है। मूर्ति के पीछे की तरफ बोधिसत्व के चित्र अंकित हैं। ऐसा लगता है जैसे बुद्ध उपदेश दे रहे हों। इस प्रतिमा के अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर बुद्ध प्रतिमाएं हैं, जो छोटी हैं।

गुफा संख्या 3 : यह गुफा भी विहार के रूप में है। इस में बुद्ध की प्रतिमा है, जो कमल पर दिखलाई गई है।

गुफा संख्या 4 : यह गुफा खंडहर के रूप में है और इस का आधे से भी अधिक हिस्सा नष्ट हो गया है। इस गुफा में भी बुद्ध की प्रतिमा है, लेकिन इस का एक नया रूप है; वह है कंधों तक लटके बाल, कंधों पर रखी हरिण की खाल, दाएं हाथ में माला और बाएं हाथ में कमल।

गुफा संख्या 5 : यह गुफा काफी बड़ी है और इस की छत 24 खंभों पर टिकी है। खंभों की कतारों में एक छोटा चैत्य है जहां पद्मासीन बुद्ध की प्रतिमा है। प्रतिमा के इर्दगिर्द अंगरक्षक भी दिखाए गए हैं।

गुफा संख्या 6 : यह गुफा भी विहार है। इस में एक बड़ा हाल, दो साथ के छोटे हाल और एक मंदिर है। इस गुफा में पद्मपाणि की खड़ी मूर्ति,

हाथ में मोख दिख औरत का चित्र और पुस्तक पढ़ते पंडित का चित्र तो बहुत ही सुंदर हैं।

गुफा संख्या 7 : यह गुफा भी एक विहार की तरह है और इस में जाने का रास्ता गुफा संख्या 6 में से जाता है। विहार की छत बड़े चौकोर खंभों पर टिकी हुई है।

गुफा संख्या 8 : इस गुफा का रास्ता गुफा संख्या 7 में से जाता है। इस गुफा में भी मंदिर है, जिस में बौद्ध मूर्तियां हैं। मंदिर की सजावट भक्तों की प्रतिमाओं और विराजमान बुद्ध व अन्य कई प्रकार की प्रतिमाओं से की गई है।

गुफा संख्या 9 : यह गुफा छोटी है। गुफा के केंद्र में बुद्ध की मूर्ति है। इस गुफा के नीचे पश्चिम की तरफ चट्टान पर बनी पुरुषनारी की प्रतिमा है।

गुफा संख्या 10 : इस गुफा को विश्वकर्मा बुद्ध की गुफा कहते हैं। यह एक बहुत बड़ी चैत्य वाली गुफा है, जिस में

कलाश मंदिर के पीछे का गलियारा। पत्थर को काट कर बनाया गया यह गलियारा बेजोड़ है।



और
हो
एक
का
है
पर
स्ता
गुफा
है
आ
कार
है
गुफा
पर
को
एक
न
में



दीवारों पर नाचती अप्सराएं. लगता है ये अभी साकार हो उठेंगी.

II फुट ऊंची बुद्ध की बैठी हुई प्रतिमा है. प्रतिमा के दोनों तरफ सेवक जन दिखाए गए हैं.

गुफा संख्या II : इस गुफा का नामकरण दो मंजिल आकार की होने के कारण 'दो बाल' किया गया है. लेकिन यह गुफा दो मंजिल की न हो कर वस्तुतः तीनमंजिली है. तीसरी मंजिल की खुदाई सन 1876 ई. में की गई, लेकिन बाद में रोक दी गई. तब से इस का यही नामकरण चला आ रहा है. यह गुफा काफी बड़ी है. इस में बोधि वृक्ष के नीचे सात बैठी हुई बुद्ध प्रतिमाएं दिखाई गई हैं. दीवारों पर भी बुद्ध प्रतिमाएं अंकित की गई हैं.

गुफा संख्या 12 : बौद्ध गुफाओं में सबसे बड़ी गुफा तीनमंजिली है, लेकिन यह बहुत ही आकर्षक. इस में बौद्ध भिक्षुओं के रहने के लिए अनेक कमरे हैं. इस गुफा का अंदर का भाग अलंकृत है. गुफा की हर मंजिल में संगतराशी और

नक्काशी के काम अलगअलग हैं. दीवारों पर अंकित बुद्ध प्रतिमाओं के चित्रण में तो बड़ी मेहनत की गई लगती है.

ब्राह्मण गुफाएं (650 ई. से 800 ई.)

एलोरा धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है. यहां बौद्ध, ब्राह्मण व जैन धर्म की गुफाएं इस बात का प्रतीक हैं कि विचारधाराओं की भिन्नता होते हुए भी इन में धार्मिक एकता थी.

जिस समय एलोरा में सातवीं शताब्दी के मध्य में बौद्ध गुफाओं का निर्माण कार्य समाप्ति की ओर था, उसी समय ब्राह्मणों द्वारा प्रभावित हिंदू धर्म में पुनः जागृति के लक्षण दिखाई देने लगे थे. हिंदू धर्म वालों ने भी अपने धार्मिक विश्वासों के आधार पर एलोरा में गुफाओं का निर्माण कार्य शुरू कर दिया था. कुछ एक पाश्चात्य विद्वान एलोरा की हिंदू गुफाओं पर विदेशी प्रभाव व शैली का आरोप लगाते हैं

लेकिन यह बात गलत है। एलोरा की हिंदू गुफाएं विशेषतः शैव धर्म से प्रभावित थीं। एलोरा के हिंदू मंदिर तथा गुफाओं में प्राप्त जो प्रतिमाएं हैं, भवनों की जो बनावट है और देवीदेवताओं का जिस प्रकार से चित्रण किया गया है, वह सब हिंदुओं के सगुण (साकार) अवतार के विश्वास को चित्रित करते हैं। एलोरा में हिंदुओं की जो गुफाएं हैं वे ज्यादातर हिंदू धर्म की विशेषताओं के आधार पर निर्मित की गई लगती हैं। गुफाओं के स्तंभमय कमरे बनाना इस बात का प्रतीक है।

ब्राह्मण धर्म की गुफाओं के संबंध में एक उल्लेखनीय बात यह है कि गुप्त युग से ले कर 10वीं सदी तक जितनी भी ब्राह्मण धर्म संबंधी गुफाएं तैयार हुईं, उन में देवता की मूर्ति स्थापित है। इस का सब से बड़ा कारण यह रहा है कि बौद्ध धर्म की तरह सामूहिक प्रार्थना या सामूहिक निवास की कोई व्यवस्था नहीं थी। ब्राह्मण यदि एक स्थान पर निवास नहीं करता था। अतः निवास स्थान को कोई महत्त्व नहीं मिला। हां, देव स्थान को अवश्य स्थान मिला। इसी लिए गुप्त, चालुक्य, राष्ट्रकूट तथा पल्लव आदि नरेशों ने गुफाएं खुदवा कर देवता का निवास (देव स्थान) घोषित किया।

ब्राह्मण गुफाएं एलोरा पहाड़ी के पश्चिमी भाग की ओर करीब आधा मील की दूरी तक फैली हुई हैं। ब्राह्मण गुफाएं भी बौद्ध भिक्षुओं की तरह ब्राह्मण साधुओं के पूजापाठ निवास स्थान की तरह बनी हुई हैं। इन गुफाओं की कुल संख्या 17 है, जो गुफा संख्या 13 से 29 तक फैली हुई हैं। इन गुफाओं का नामकरण भी किया गया है, जिन का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

गुफा संख्या 13—भग्न अवस्था में है।
गुफा संख्या 14—रावण की काई।
गुफा संख्या 15—दशावतार (विष्णु के दस रूपों का चित्रण)।

गुफा संख्या 16—कैलाश मंदिर।

गुफा संख्या 17 से 20 तक—

दुमार लेमा।

गुफा संख्या 21—रामेश्वर नाम देव मंदिर।

गुफा संख्या 22—नीलकंठ।

गुफा संख्या 23—अधूरी गुफा है।

गुफा संख्या 24—तेली का घाघ।

गुफा संख्या 25—कुंभरवाड़ा।

गुफा संख्या 26—जनवासा।

गुफा संख्या 27—ग्वालिन

वुपला।

गुफा संख्या 28—लक्ष्मी का पू गृह लगता है।

गुफा संख्या 29—सीता नहानी।

इन गुफाओं में कला की दृष्टि पांच गुफाएं उल्लेखनीय हैं, जिन में संख्या 14, 15, 16, 21 और 29 हैं।

गुफा संख्या 14 : इस गुफा निर्माण काल सातवीं शताब्दी के आसपास का माना जाता है। चौकोर बनावट का यह गुफा 52 फुट चौड़ी और 87 फुट गहरी है। इस गुफा के चौकोर स्तंभ दो तिहाई भाग में स्तंभयुक्त कमरे और बाकी के हिस्से में मंदिर। यहां स्तंभों की कतारें हैं। मंदिर के सम्मुख पुरुष द्वारपालों की प्रतिमाएं बड़ी हैं। मंदिर की दीवारों पर विभिन्न प्र के चित्रों की अधिकता है।

गुफा संख्या 15 : दशावतार की दोमंजिली गुफा है, जो चट्टानों के भाग को काट कर बनाई गई है। इस बिल्कुल सामने दीवार है। बीच में गृह तथा छोटेछोटे कमरे तथा पानी का कुंड है। सब से नई बात है कि इस गुफा का प्रवेशद्वार चट्टानों काटा गया है। यहां अनेक प्रतिमाएं अंकित की गई हैं।

गुफा संख्या 16 : ब्राह्मणों की गुफाओं में से यह सर्वश्रेष्ठ गुफा स्थापत्य कला के लिए तो यह कैलाश है। इस गुफा में स्थित कैलाश के बारे में पाश्चात्य वास्तुशिल्पियों समीक्षकों ने प्रशंसा की है। यह कैलाश मंदिर का निर्माण राजा कृष्ण प्रथम (सन 757-783) जुलाई (द्वितीया)



इंद्र देवता की एक विशाल प्रतिमा.

निर्देशन में हुआ था. कैलाश का गुफा मंदिर एक स्वतंत्र चट्टान पर बना हुआ है. मंदिर में चित्रित विष्णु और 84 देवताओं की प्रतिमाएं इस की सुंदरता को और बढ़ाती हैं.

पर्सि ब्राउन का इस मंदिर के बारे में कहना है कि "एलोरा का कैलाश मंदिर शिल्पकला का विश्वप्रसिद्ध उदाहरण है."

गुफा संख्या 21 : बाहर से सरल-सादी लगने वाली यह गुफा अंदर से नक्काशी की विशालता और कलात्मकता

के लिए विख्यात है. गुफा के अंदर हिंदुओं के विभिन्न देवीदेवताओं की प्रतिमाएं हैं.

गुफा संख्या 29 : 'सीता नहान' के नाम से जानी जाने वाली यह गुफा अपनी चट्टान की स्थिति और आकार के कारण प्रसिद्ध है. गुफा के अंदर शेरहाथियों की प्रतिमाएं हैं. इन के अतिरिक्त स्तंभयुक्त कमरे व देवीदेवताओं की प्रतिमाओं के कारण भी गुफा दर्शनीय है.

जैन कला की प्राचीनता कला समीक्षकों के लिए समस्या बनी हुई है। कुछ इतिहासकार इस कला का प्रारंभ सिंधु घाटी की सभ्यता के विकास चरण से मानते हैं और कुछ बाद से। जिस तरह जैन धर्म धीरेधीरे अपने सिद्धांतों और विचारकों द्वारा आगे बढ़ा, उसी तरह जैन कला भी धीरेधीरे विकसित होती गई। यह बात बिल्कुल सत्य है कि जैनों द्वारा निर्मित तीर्थ, मंदिर तथा मूर्तियां मात्र उपासना के ही अंग नहीं माने गए अपितु इन्होंने अपने से पूर्व परंपरा में पली शिल्पकला की रक्षा की और सामयिकता को ध्यान में रखते हुए अपना विकास किया।

जैन कला आठवीं शताब्दी के बाद से आगे बढ़ी और भारतीय कला पर इस का प्रभाव पड़ता गया। जैन कला गुफा, मंदिर, स्तंभ आदि में अभिव्यक्त हुई मिलती है और उस के मुख्य स्थल रहे हैं एलोरा, गुजरात, राजस्थान व मध्य-प्रदेश।

जैन कलाकारों ने महावीर व अन्य तीर्थंकरों की जीवन संबंधी घटनाओं से

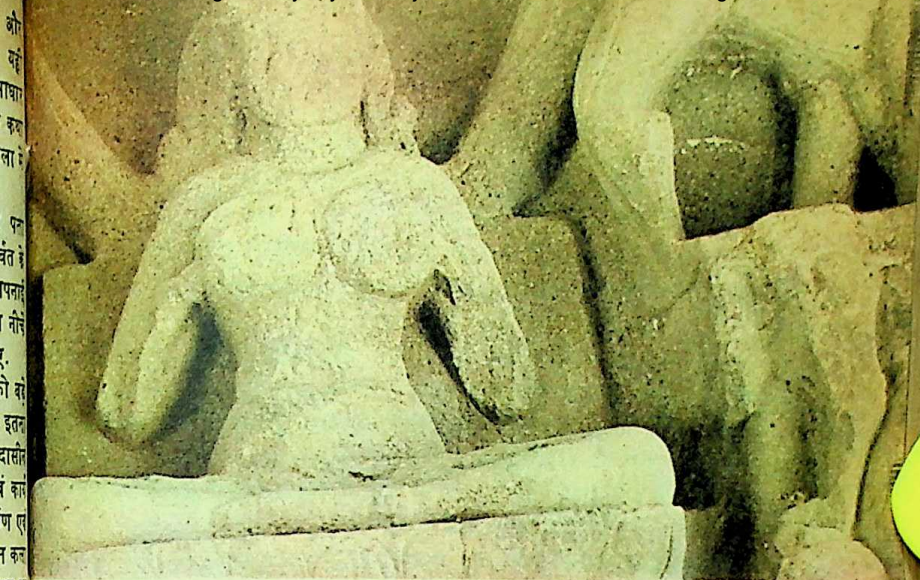
प्रेरणा पा कर पाषाणों, भित्तियों और धातुओं पर उन का अंकन किया। यह नहीं, कलाकारों ने जैन धर्म के आध्यात्मिक प्रतिपादक दृश्यों और पौराणिक कथा साहित्य को अंकित कर शिल्प कला में नई अभिव्यक्ति की।

जैन गुफाओं को देखने पर पता चलता है कि संगतराशों ने पर्वत के ऊपरी भाग से खुदाई की परंपरा अपनाई जब कि बौद्ध गुफाओं में संगतराशों के भाग से ऊपर की ओर बढ़ते गए।

यह सच है कि जैन गुफाओं को बड़े सुंदर ढंग से संवारा गया है। पर इतना होते हुए भी जैन गुफा मंदिरों में उदासीन व अलंकृत भाव रहे हैं। शैली एवं कार्य बहुत उच्च कोटि का है पर निर्माण ए रेखाएं अव्यवस्थित ढंग की हैं। जैन कला पर सब से बड़ा आरोप पसी ब्राउन का है, जिन्होंने कहा है कि "भारत में जैन कला नाम की कोई कला नहीं थी। इस कला के मंदिर बौद्ध और ब्राह्मण कला की शैली का अनुकरण मात्र हैं।" पसी ब्राउन का यह भी कहना है कि "जैन गुफाओं के बाद ही पर्वत के भीतर हो कर अंधेरे स्थान में भिक्षुओं के रहने

बुद्ध की योगी मुद्रा में मूर्ति.





हाथियों तथा अन्य पशुओं के मध्य पशुपति की पत्नी पार्वती.

लिए बनाई गई गुफा की आवश्यकता नहीं रही."

जैन धर्म से संबंधित कुल पांच गुफाएं हैं जो गुफा संख्या 30 से 34 तक हैं. मुख्यतः दिगंबर संप्रदाय की ये सभी गुफाएं एलोरा की पहाड़ी की उत्तरी चोटी की तरफ हैं.

गुफा संख्या 30 : यह गुफा अपूर्ण व खडहर जैसी लगती है. खंभों पर खड़ी दीवार दिखाई गई है जिसे हाथियों के द्वारा उठाया गया लगता है. खंभों पर सुंदर ढंग से चित्रकारी की गई है.

गुफा संख्या 31 : दक्षिण दिशा की तरफ स्थित जैन धर्म की यह 'छोटा कैलाश' नाम से जानी जाने वाली गुफा बड़ी सुंदर है. इस गुफा के मंदिर पर प्रविड शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है. इस के मंदिर का मंडप चौड़ा है और उस के भवन में 16 खंभे हैं. मंदिर का निखर नीचा है.

गुफा संख्या 32 : गुफा संख्या 32 का नाम 'इंद्र सभा' है और यह 'सामूहिक जैन गुफाएं' के नाम से जानी जाती है. दो मंजिल वाली दो गुफाएं और कई

मंदिर इस में हैं. पहली गुफा में नीचे की तरफ 50 वर्ग फुट का चौगान है, जिस के बीच में एक मंदिर है. ऊपर के हिस्से में जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं व छोटे मंदिर हैं. दूसरी गुफा भी अलंकृत है. यहां छोटा मंदिर है जहां चौमुखी मूर्ति खड़ी हुई मुद्रा में है. मंदिर की छत अलंकृत है और स्थानस्थान पर दीपक रखने के लिए आले बने हुए हैं. दीवारों पर जैन भिक्षुओं के चित्र अंकित हैं.

गुफा संख्या 33 : यह गुफा भी गुफा संख्या 32 की तरह दोमंजिली है परंतु उतनी कलात्मक नहीं है. इस गुफा के सामने भी एक चौगान है और पीछे की तरफ चौमुखा मंडप है. इस गुफा में पार्श्वनाथ की प्रतिमा तथा मंडप में महावीर की एक प्रतिमा स्थापित की गई है.

गुफा संख्या 34 : यह गुफा उत्तरी पहाड़ियों की तरफ स्थित है. छोटी गुफा होते हुए भी इस की वास्तुकला दर्शनीय है. यहां भी एक मंदिर है, जिस में मातंगा, पार्श्वनाथ, गोमटेश्वर और महावीर की प्रतिमाएं हैं.

ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को इस रूप की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
भेजने का पता: ये लड़कियां, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● हमारे शहर में एक ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट है, जिस में लड़कें लड़कियां साधना पढ़ते हैं. लड़कों को विभिन्न तकनीकी काम तथा लड़कियों को सिलाई, टाइप आदि सिखाई जाती है.

एक बार मैं अपनी सहेली के साथ उसी रास्ते से आ रही थी. तभी लड़कालिज की छुट्टी हुई. पुल के पास 10-12 लड़कियों का झुंड था तथा उन के पीछे साइकिल पर लड़के. जब लड़के उन लड़कियों के पास से गुजरे तो उन्होंने नाच-लगाया, "बोल, भवानी माता की जय!"

हम उन की इस हरकत पर हैरानी में ही थे कि अचानक लड़कियों का नाच सुनाई पड़ा, "बोल, बजरंग बली की जय!"

अब तो उन लड़कों की शकलें देखने लायक थीं.

—संध्या शरण, खंडवा

● मेरी सहेली पिक्चर देखने गई थी. मध्यांतर में जब खाने का सामान ले बाहर आई तो उस के साथ उस की बहन भी थी. दोनों जरा छोटे कद की हैं. उन्हें देख कर एक छ: फुट लंबे लड़के ने मजाक उड़ाने वाले भाव से अपने साथी से कहा "देखो, ये दोनों मेरी 'बच्चियां' हैं."

मेरी सहेली ने उस की बात सुन ली. उस ने दो पापकार्न के पैसे काउंटर पर खड़े व्यक्ति से, उस लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा, "पैसे हमारे 'पिताजी' दे देंगे." और दोनों बहनें चलती बनीं. पैसे 'पिताजी' बने उस लड़के को ही देने पड़े.

—रानी अरोड़ा, नई दिल्ली

● एक दिन हम चार मित्र विश्वविद्यालय से पैदल लौट रहे थे. हमारी विपरीत दिशा से कई लड़कियां साइकिलों पर तेजी से आ रही थीं. उन के पास आते ही हम में से एक जोर से बोला, "अरे, यार, ये लड़कियां साइकिल कब से चलाने लगी हैं?"

"जब से लड़के बड़े-बड़े बाल रखा कर पैदल चलने लगे हैं," उन में से एक तेजतर्रार लड़की ने तुरंत जवाब दिया.

वह लड़का शर्म से कुछ कह न सका, क्योंकि सचमुच उस के बाल बड़े-बड़े थे.

—विश्वनाथ वर्मा, इलाहाबाद

● मैं अपने दोस्त कमल के साथ फिल्म देखने गया था. हमारी सीटों के ठीक बगल में दो लड़कियों की सीटें थीं. मैं तो लड़कियों से घबराता हूं, अतः कमल को ही लड़कियों के बगल में बैठाया. जब फिल्म शुरू हो गई, लड़कियों ने कमल को ताली बजाकर नाच-लगाया करना शुरू कर दिया. पहले तो कमल ने कुछ नहीं कहा, मगर जब लड़कियां बहुत आगे बढ़ने लगीं, तो कमल ने उन्हें डांट दिया. लड़कियां उस समय तो शांत हो गईं. मगर जब मध्यांतर हुआ तो एकाएक उन में से एक लड़की ने कमल का हाथ पकड़ लिया और शोर मचाना शुरू कर दिया. लोगों ने कमल को पकड़ा और मारने-पीटने लगे. उन दोनों लड़कियों ने भी बेइज्जती की. मैं और कमल चिल्लाते ही रह गए. उन्होंने लोगों की गलती है. मगर किसी ने कुछ न सुना. लड़कियों के साथ यह पसंद कब तक चलेगा?

—मुकुंदमुरारी 'पत्रलेख', कलकत्ता

● नागरिकशिक्षण की कक्षा थी। अध्यापक महोदय तब तक उठे थे कि डाक्टर राजेंद्रप्रसाद हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति थे, डाक्टर राधाकृष्णन दूसरे, डाक्टर जकिर हुसैन तीसरे व श्री व. व. गिरि चौथे राष्ट्रपति। अचानक अध्यापक महोदय ने लड़कियों की तरफ इशारा कर के पूछा, “श्री फखरुद्दीन अली अहमद कौन हैं?” एक लड़की ने तुरंत उत्तर दिया, “सर, हमारी क्लास में कोई फखरुद्दीन अली अहमद नहीं है।”

कक्षा छात्रछात्राओं के ठहाकों से गूंज उठी।

—प्रणवकुमार, मनावर

● मेरे एक दोस्त को लड़कियों पर फिकरे कसने की आदत है। एक बार सड़क पर कालिज जा रही एक अकेली लड़की को देख कर उस ने फिकरा कसा, “चाचाजी कह गए हैं कि बेटा, अगर शादी करना तो किसी ग्रेजुएट लड़की से ही करना।”

लड़की अपने को अकेली देख कर चुप रही। उसी समय उसे सामने एक आदमी आता दिखाई दिया तो उस का हौसला बढ़ा और उस ने अपनी चाल धीमी कर दी। मेरा दोस्त जब उस आदमी और लड़की के बीच में पहुंच गया तो लड़की ने अपना सैंडिल उतारा और दोस्त महाशय पर तड़ातड़ जमाते हुए कहने लगी, “चाचाजी यह भी तो कह गए हैं कि बेटा, अगर सैंडिलें खाना तो किसी ग्रेजुएट लड़की से ही खाना।”

—जगगी अरोड़ा, नई दिल्ली

● हमारी कक्षा में एक लड़की अपने को माडर्न कहलाने में बहुत गौरव महसूस करती थी। हमेशा कहती रहती कि लड़के और लड़कियों को समाज में समान अधिकार मिलने चाहिए।

एक बार मैं और मेरे कुछ साथी बस में कहीं जा रहे थे। उसी बस में वह लड़की अपनी एक सहेली के साथ सवार हुई। बस में काफी भीड़ थी। जब उन्हें कोई खाली सीट न मिली तो वे हमारे पास आ कर खड़ी हो गईं। हम ने भी उन्हें देख लिया था। थोड़ी देर तो वह खड़ी रही, फिर हम से बोली, “आप में जरा भी कामन सेंस नहीं है।”

मैं ने पूछा, “क्या हुआ?”

वह कुछ तीखे स्वर में बोली, “हम यहां खड़ी हैं और आप बैठे हुए हैं। आप को हमारे लिए सीट छोड़ देनी थी, लड़के लड़कियों के लिए सीट छोड़ ही देते हैं।”

इतना सुनते ही मेरा एक साथी बोल उठा, “सीट में क्या लड़की और क्या लड़का? लड़के व लड़कियों के समान अधिकार होने चाहिए।”

अब उस लड़की की हालत देखने लायक थी। फिर उस ने कभी समान अधिकारों के बारे में नहीं कहा।

—रविंद्रकुमार, खरखोदा

● मेरी एक सहेली बड़ी चंचल प्रवृत्ति की है। एक बार हमारे स्कूल में वार्षिक पाठ देखने उदयपुर से परीक्षक महोदय पधारे। उन के स्वागत हेतु स्कूल में भांतिभांति के मिष्ठान्न मंगाए गए। जब वह नाश्ता करने लगे तब मेरी सहेली हम सब के साथ वहां जा पहुंची और प्लेट में से एक रसगुल्ला उठा कर खा लिया।

हम ने कहा, “यह क्या अशिष्टता है?”

यह सुन कर वह परीक्षक महोदय तपाक से बोले, “यह अशिष्टता नहीं, अनिष्टता है।”

यह सुन कर सभी खिलखिला उठे।

—मनोरमा जैन, झालरापाटन

● मुंबई के एक महल्ले में एक कामुक व्यक्ति ने एक खूबसूरत युवती का सोदा किया। कई हजार रुपए खर्च कर के वह लड़की खरीदी गई और शादी संपन्न हुई।

मुहागरात को जब उस ने अपनी दुलहिन का मुखड़ा देखा, तो वह हतप्रभ रह गया। वह लड़की उस की पत्नी थी। यह सारा खेल उस खूबसूरत लड़की ने किया, जो उस का शिकार बनने जा रही थी। —न्याय, अजमेर (प्रेषक: सूरज कपूर, अजमेर) ●

ओ श्यामल कजरारे बदरा

भीगाभीगा मन हो जिस का भीगी हुई बयार से,
ओ श्यामल कजरारे बदरा, छितरो ऐसे द्वार से.

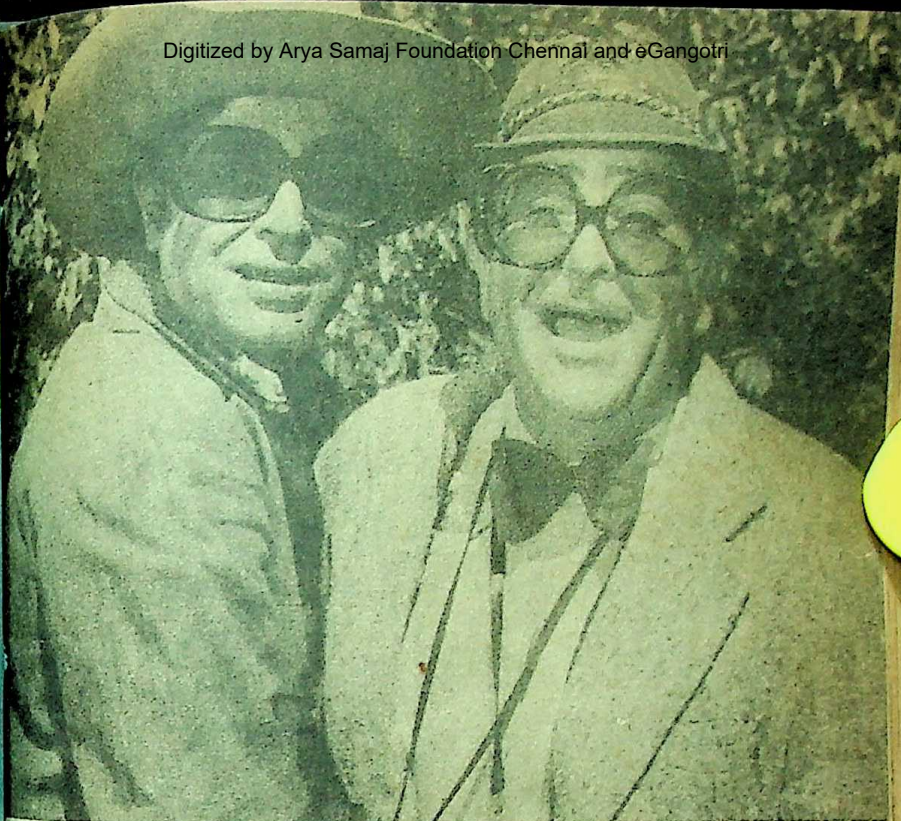
जब से धुमड़ी घटा गगन में,
उमड़ी पीड़ा नैन में
कैसे रहे अकेली कोई,
इस पावस की रैन में:
बारबार ही बिजुरी कौंधे दूर क्षितिज के पार से,
ओ श्यामल कजरारे बदरा, छितरो ऐसे द्वार से.

पहले ही बिखरा सा जीवन,
टूटन भरा शरीर है.
धुलाधुला सा काजर तिस पर
बूदबूद यह नीर है.
एक साथ कैसे लड़ना हो दोतरफा बौछार से,
ओ श्यामल कजरारे बदरा, छितरो ऐसे द्वार से.

ऐसे क्षण जीता दूभर है,
जहां न कोई पास हो.
मन की जगह खुरच देता जब
अपना ही विश्वास हो.
तहीं उजाला अच्छा लगता ऐसे में अंधियार से,
ओ श्यामल कजरारे बदरा, छितरो ऐसे द्वार से.

—तारादत्त 'निर्विरोध'





‘दो जासूस’ के दो जासूस कर्मचंद (राजेंद्रकुमार) और धर्मचंद (राज कपूर).

कहानी लेखक क. अ. नारायण ने ‘विक्टोरिया नं. 203’ की ही तरह ‘दो जासूस’ में भी नकल की है. अंतर केवल इतना है कि उस में राजा (अशोक कुमार) और राणा (प्राण) एक हीरे की तलाश करते हैं और दो जासूस धर्मचंद (राज कपूर) और कर्मचंद (राजेंद्रकुमार) एक लड़की की तलाश में मारेमारे घूमते हैं. जहां ‘विक्टोरिया नं. 203’ में अशोककुमार और प्राण दोनों बराबर की टक्कर के कलाकार थे, ‘दो जासूस’ में राजेंद्रकुमार राज कपूर के मुकाबले कमजोर रहा है. वस, कहानी को किसी प्रकार घसीट ले गया है.

फिल्म की घटनाएं एकदम बचकाना हैं, पर राज कपूर जैसे मंजे हुए कलाकार की उपस्थिति और अभिनय उन में भी जान डाल गया है और कुछ हद तक

पखवाड़े की फिल्म

दो जासूस

बच्चों के साथ वयस्कों का भी मनोरंजन करने में समर्थ रहा है. यह भूमिका मूलतः राज कपूर के उपयुक्त भी थी. इसी लिए वह पूर्णतः उस में ढल गया है और फिल्म के हास्य में शिष्टता आ गई

मुक्ता

है. अन्यथा डिग्रीज का अर्थ संचारित होने वाला शब्द होता है। पता चलता जाता. फिल्म में 'लारेल हार्डी' की जोड़ी तो वह क्रोध से आगवबूला हो जाता है. की नकल की गई है. लेकिन लारेल और इसी क्रोध में वह एक पत्रकार (मनमोहन हार्डी दोनों चोटी के हास्य कलाकार थे, कृष्ण) की हत्या कर देता है, जिस ने उसे 'दो जाबूस' में राजेंद्रकुमार हास्य व जेल भिजवाया था. पिकी उसे हत्या कलाकार के रूप में नहीं जम सका. करते हुए देख लेती है. वह उसे भी मारने

धर्मचंद (राज कपूर) और कर्मचंद (राजेन्द्रकुमार) दो प्राइवेट जासूस हैं। एक सेठ (असित सेन) उन्हें अपनी भागी हुई बेटी को ढूंढने की जिम्मेदारी सौंपता है, लेकिन गलती से वह उन्हें अपनी लड़की (फरीदा जलाल) की जगह उस की सहेली पिकी (भावना भट्ट) का फोटो दे देता है।

पिकी (भावना भट्ट) एक विधवा अंधी स्त्री (दुलारी) की बेटी है। एक आवारा युवक प्रेम चोपड़ा (प्रेम चोपड़ा) का पिता मरते समय अपनी करोड़ों की जायदाद अपने बेटे के नाम न कर के पिकी के नाम कर जाता है। जेल से रिहा

तो वह क्रोध से भागवतूला हो जाता है। इसी क्रोध में वह एक पत्रकार (मनमोहन कृष्ण) की हत्या कर देता है, जिस ने उसे जेल भिजवाया था। पिकी उसे हत्या करते हुए देख लेती है। वह उसे भी मारने के लिए दौड़ता है, पर वह बच कर भाग जाती है। अब पिकी की दो व्यक्तियों को तलाश है। उधर धर्मचंद और कर्मचंद दो जासूस उस के पीछे लगे हुए हैं, इधर प्रेम चोपड़ा के गिरोह के आदमी उस को खोज में हैं। वह कई बार प्रेम चोपड़ा के हाथ आती है, पर दोनों जासूस हर बार उसे छुड़ा कर ले जाते हैं। मजे की बात यह है कि वह हर बार जासूसों के पंजे से भी भाग निकलती है।

अंत में प्रेम चोपड़ा को पता चलता है कि पिकी वही लड़की है, जिस के नाम उस का पिता करोड़ों रुपए की संपत्ति लिख गया है। वह उस से शादी कर के उसे मार देने की योजना बनाता है, ताकि वह संपत्ति का कानूनी उत्तराधिकारी भी बन जाए और रास्ते का कांटा भी निकल जाए। इस बार भी दोनों जासूस आड़े आते हैं और पिकी को बचा कर उस के प्रेमी (शैलेंद्रसिंह) से उस का विवाह करवाते हैं और प्रेम चोपड़ा को गिराह सहित पुलिस के हवाले करते हैं।

‘दो जासूस’ की इस कहानी में लेखक क. अ. नारायण ने ऐसा फार्मूला अपनाया है कि कहानी अनेक बार उलझती और सुलझती है। हर बार पहले से ज्यादा खतरनाक उलझन आती है और सुलझ जाती है। कहानी को और भी अधिक तबाखींचा जा सकता था, पर 16 रीलें बना कर निर्माता नरेशकुमार ने बस कर दी।

कहानी में उद्देश्य पक्ष का तो काफ़ी प्रश्न ही नहीं था. हास्य एवं मनोरंजन पर ही ध्यान दिया गया है. धर्मचंद और कर्मचंद फिल्म में छाए हुए हैं. बैसे तो एक प्रेमी (शैलेंद्रसिंह) और प्रेमिका (भावना भट्ट) का युगल भी है. किंतु वे

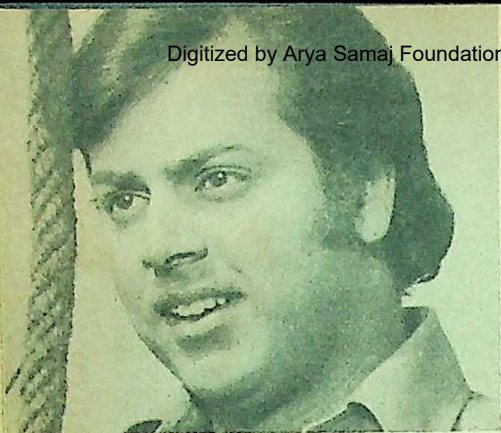
निर्माण संस्था : डिपल
फिल्म्स, निर्माता व निर्देशक :
नरेशकुमार, संगीत : रवींद्र जैन,
गीत : हसरत व तुलसी, कहानी :
क. अ. नारायण.

फोटोग्राफी : बाबूभाई उदेशी,
संवाद : इरशाद, संपादन : गोविंद
दलवाड़ी, कला : मनजूर, ध्वनि :
ज. प. सहगल, मेकअप : जगत-
कुमार व बाबू, पार्श्व गायक :
लता, मुहम्मद रफी, मुकेश, आशा
भोसले, शैलेंद्रसिंह.

मुख्य कलाकार : राज कपूर,
राजेंद्रकुमार, भावना भट्ट, शैलेन्द्र-
सिंह, प्रेम चौपड़ा, अरुणा ईरानी,
कमल कपूर, मनमोहनकृष्ण, राम-
मोहन, असित सेन, रणवीर,
जगदीश राज, अप्पी उरमानी,
दुलारी, फरीदा जलाल, अलका,
संजना, सुंदर, राम अवतार, वेणु
गोपाल.

पिकी (भावना भट्ट) : भावहीन चेहरा





अशोक (शैलेंद्रसिंह) : हर रूप में असफल.

हर तरह से दब गए हैं. कहानी की केंद्र बिंदु होने के कारण भावना भट्ट तो फिर भी कहानी के आगे बढ़ने में सहायता करती है, पर शैलेंद्रसिंह फिल्म में बोझ बन गया है.

इस हास्य कथा में भी कहानी लेखक व निर्देशक सभी तरह के फार्मूले डालना भूले नहीं हैं. मारपीट, हत्या, रेस, प्रेम दृश्य, कैबरे आदि सभी कुछ मसाले फिल्म में आ गए हैं. अगर शुद्ध रूप से हास्य पक्ष पर ही जोर दिया जाता तो फिल्म बहुत अच्छी बन सकती थी. अतः यह दोनों तरह से अधिकचरी है—यह न हास्य फिल्म है न बंबड्या.

अभिनय की दृष्टि से केवल राज कपूर उल्लेखनीय है. सचाई तो यह है कि वह अकेला ही कहानी को सफलतापूर्वक लक्ष्य तक ले गया है. मूलतः वह एक जोकर है, हास्य कलाकार है और धर्मचंद की भूमिका उस ने चरित्र में गहरे पैठ कर निभाई है. वह भारीभरकम हो गया है और यह मोटापा बजाए एक दोष होने के उस की भूमिका में सहायक रहा है. राज कपूर पहली बार पूर्ण रूप में परदे पर उतरा है और सफल रहा है.

दूसरा जासूस कर्मचंद है और यह भूमिका निर्माता नरेशकुमार के भाई राजेंद्रकुमार ने निभाई है. जहां धर्मचंद को पूर्णतः मूर्ख दिखाया है कर्मचंद को कुछ बुद्धिमान दिखाया है, जो धर्मचंद की

भूमिकाओं पर परदा डाला है. राजेंद्रकुमार इस भूमिका में जल नहीं. वह अपनी पुरानी हीरो की छवि लिए हुए है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह इस बारे में पूर्णतः सतर्क रहा है उस की हीरो की इमेज खराब न हो. उसके विपरीत राज कपूर अपनी भूमिका इतना खो गया है कि वह धर्मचंद जासूस के अतिरिक्त कुछ नजर नहीं आता.

इन भूमिकाओं की एक अन्य विशेषता यह है कि उन्हें मानवतावादी दिखाया गया है जिस से आम दर्शक के हृदय को छू जाती हैं. ये दोनों मूर्खताएं करते हैं, गलतियां करते हैं, लेकिन समाज की सेवा की भावना को नहीं छोड़ते. यद्यपि यह कुछ बनावटी लगती है.

भावना भट्ट पहली बार परदे पर आई है और किसी भी रूप में प्रभाव नहीं करती. न तो वह सुंदर है और न ही उस में शारीरिक आकर्षण है. इसी तरह शैलेंद्रसिंह भी पहली बार परदे पर आए हैं और पूर्णतः असफल रहा है. 'बाबी' गायक के रूप में उसे लोकप्रियता प्राप्त हुई थी, जो उस ने 'दो जासूस' में खो कर खो दी है. उस का कोई गीत दर्शकों को आकृष्ट नहीं कर सका. उस का चेहरा भावशून्य है—उस का (फिल्म) बाप मर गया है और उस के चेहरे पर इतना भी गम नहीं है जितना एक सच्चे रूप का नोट खो जाने से होता है.

प्रेम चोपड़ा की भूमिका भी कम बड़ी है. वह अपने उसी घिसेपिटे रूप में है. बास के रूप में कमल कपूर भी सफल रहा है. लगता है निर्देशक व निर्माता नरेशकुमार ने जानबूझ कर अन्य सफल कलाकारों को दबा दिया है ताकि राजेंद्र कुमार और राज कपूर पूरी तरह उभर सकें. इस में वह सफल भी रहा है.

इरशाद के संवाद चुटीले हैं. भाई उदेशी की फोटोग्राफी सुंदर है. हसरत और तुलसी ने लिखे हैं. रवींद्र जैन ने धुनों में बांधा है. गीतों को छोड़ कर सभी गीत बेकार हैं. गोविंद दलवाड़ी का संपादन कुशल है.

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स
प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं



विश्व पाकेट बुक्स

● युवतियों से

मनोवैज्ञानिक सुझावों व अनुभवों के आधार पर लिखी गई पुस्तक जो ग्राम युवतियों के समक्ष आने वाली समस्याओं को सुलझाने में सहायक होगी।

रु. 5

● भटकता राही

स्पेन, अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए।

● एक बंद सागर की

एक निधन परिवार की सीधीसाधी लड़की की कहानी जो गृहस्थों, वस्त्र व कारखाने की समस्याओं से उलझती सुलझती अपना लक्ष्य पा लेती है।

● दिल्ली की रोमांचक सत्यकथाएं

भारत का इतिहास वस्तुतः दिल्ली का ही इतिहास है। यह नगरी 18 बार बसी और उजड़ी है। इस के बारबार बसने और उजड़ने की रोमांचक राखी कहानियां।

● बंधनमुक्ति

आज की नारी पुरुष की तरह स्वावलंबी होना चाहती है। लेकिन क्या वह वस्त्रों जिवनों में कैद हो कर छटपटाने नहीं लगी है? एक कामकाजी वृत्ति की संघर्षपूर्ण खोखली जिवनी की रोचक कथा।

प्रत्येक रु. 4

पूरे परिवार के लिए
मनोरंजक व सुदृष्टिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें।

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12,
कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकचार्ज की छूट।
आदेश के साथ पांच रुपए ग्रहण करें।

रीना को सब कुछ मिल चुका था, लेकिन एक चीज

रीना ने सरसरी नजर घड़ी पर डाली। पांच वज्र रहे थे। उस ने जल्दी से दुकानदार को कहा, “बस, आप जरा बिल बना दीजिए।” सेल्समैन बड़ा चुस्त था। दूसरे, रीना अकसर उस दुकान पर जाती रहती है, इसलिए उसे जानता भी है। हंस कर बोला, “आप हमेशा जल्दी में रहती हैं। जरा बैठिए न। नई साड़ियां आई हैं, देख लीजिए।” रीना टाल गई, “नहीं, फिर कभी देखूंगी। साहब के आने का वक्त हो रहा है।”

कनाट प्लेस के चक्कर खाती टैक्सी जब तेजी से दौड़ने लगी तो रीना ने लंबी सांस ली। यह भी क्या खरीदारी है! मशीन की तरह जल्दीजल्दी सामान खरीदो। लदेलादाए भागदौड़ कर टैक्सी में जा बैठो। घर पहुंचने की जल्दी। वरना विशाल परेशान होते रहेंगे।

सामने से एक दंपती गुजरे। पुरुष ने बच्चागाड़ी पकड़ रखी थी। उस में एक सुंदर सा बच्चा बैठा था। दोनों पतिपत्नी हंसहंस कर बातें कर रहे थे।

रीना की समझ में न आया कि उस की जिंदगी के खालीपन को विशाल क्यों दूर नहीं कर पाए। सब कुछ होते हुए उसे सुख नाम की चीज क्यों नहीं दे पाए? वह जिंदगी के छोटेछोटे सुख क्यों नहीं बटोर पाई? उस दिन बाजार में श्री और श्रीमती मलहोत्रा मिल गए थे। श्रीमती मलहोत्रा ने उसे टोका था, “आप हमेशा अकेली ही बाजार आती हैं?” वह कट कर रह गई थी। फिर भी मुसकरा दी और बोली, “उन्हें बाजार आ कर दुकानदारों से झकझक करना पसंद नहीं। इसलिए दोनों ऊबने से बच जाते हैं। मैं फालतू समय में खुद ही खरीदारी कर लेती हूं। वक्त भी गुजर जाता है।”

मलहोत्रा साहब से न रहा गया और बोले, “विशाल बड़ा खुशकिस्मत है जो ऐसी बीवी मिली। मजे से फैक्टरी जाता

है और बस। सब तरफ से निर्दिष्ट तो दफ्तर से आते ही भागदौड़ हो जाती है। यदि औरतें बाजार का काम न कर सकें तो पढ़ीलिखी लड़कें शादी करने का क्या फायदा?”

ये सब बातें रीना शुरू से सुन रही है। वह पति का, बच्चे का, कितना प्यार रखती है, यह जानपहचान वालों से नहीं। परंतु...क्या वह वास्तव में खुश

अंतिम

कहानी



मिली थी, जिस की कमी उसे बारबार सालती रहती...

क्या वास्तव में उस की इच्छा नहीं होती कि कोई उस के लिए साड़ी लाए, उस के ताजनखरे उठाए, कभी उसे मौका मिले कनाट प्लेस में घूमनेफिरने का, आइस्क्रीम खाने का?

टैक्सी तेजी से घर की तरफ बढ़ रही थी और रीना उतनी ही तेजी से पीछे लौट रही थी. एक बार उसे बुखार हुआ था 103-104 डिग्री. विशाल ने पूछा था,

“तबीयत कैसी है?” वह चिढ़ गई थी. थर्मामीटर लगा कर उसे दिया तो वह चौंक पड़ा था, “अरे, तुम्हें तो बहुत तेज बुखार है! डाक्टर को बुलाऊं?” और उस रात डाक्टर को बुला कर वह निश्चित हो गया था. उस के बाद न दवा को पूछा, न खाने को. न फल लाया, न उस बीच बच्चे को ही संभाला. रीना खुद ही दवा लाती रही. महरी को फालतू पैसे दे कर काम करवाती रही. परंतु विशाल ने कभी न पूछा कि सब कैसे चल रहा है.

निर्याय

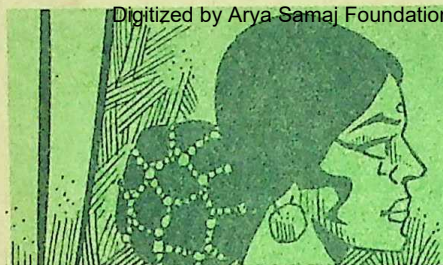
• विजयालक्ष्मी

रीना का मन नफरत से भर गया. एकतरफा प्यार कब तक चलता रहेगा? जरा सा कुछ बोलने पर वह बुरी तरह चिढ़ जाते हैं. खामोश रहो तो सब ठीक चलता रहेगा, नहीं तो लड़ाईझगड़ा छोटी सी बात से शुरू हो कर मरनेमारने और तलाक की बात तक पहुंच जाता है. समझौते की हर पहल रीना ही करती है. विशाल तो एक अनजान पत्थर की तरह हो जाते हैं, जैसे उसे पहचानते ही न हों.

ड्राइवर ने ब्रेक लगा कर टैक्सी रोकी तो उस ने देखा, घर आ गया है. उस ने मुन्ने को संभाला, ताला खोला और ड्राइवर की मदद से सामान अंदर रखने लगी, “बच्चे के साथ बाजार से सामान लाना बहुत मुश्किल है. आप किसी और से सामान मंगा लिया कीजिए या बच्चा किसी के पास छोड़ कर जाया करें,” ड्राइवर सलाह दे रहा था. वह चुपचाप सुनती रही क्योंकि सामान उतार कर उस ने एहसान किया था, जो उसे कहने का हक था.

वह दरवाजा बंद कर ही रही थी कि उसे कार का हार्न सुनाई दिया. वह समझ गई कि विशाल आ गए हैं. चेहरे पर अजीब सा सजीलापन आ गया. दरवाजा खोला तो देखा, लंबी सी काली कार सामने खड़ी थी. विशाल मुसकरा





विशाल क्रोध में उलटासीबा
जानता था कि यह सब भूखा
आया तब तक रोना अपना

रहा था. लेकिन रीना का ध्यान कारं की तरफ था. “क्या सोचने लगी?” विशाल ने उस के कंधे पर हाथ रख कर पूछा.

“सोच रही हूं, हमारे पास भी कार है, वरना टैक्सी, रिक्शास्कूटर में बैठते-बैठते भूल ही जाती हूं कि हमारे पास कहीं आनेजाने का वह साधन है जिसे लोग हसरत भरी नजर से देखते हैं.”

विशाल ने गरदन को झटका दिया, “तुम्हें तो, डार्लिंग, कहानीकार होना चाहिए, जो अपनी ऊब लिख कर दूर कर सको, और पाठक ऊब जाएं. इस से कम से कम मुझे जरूर फायदा होगा. तुम्हारा मन हलका हो जाएगा और मैं तुम्हारी हर चीट से बच सकूंगा.” वह हंसता हुआ अंदर चला गया, बिना यह जानने की कोशिश किए कि उस की बात का सुनने वाली पर क्या असर हुआ है.

सामान अभी तक ड्राइंग रूम में ही पड़ा था. मुन्ना उस की गोद में था परंतु विशाल अपने कमरे में जा चुका था. वह समझ रही थी कि उसे एकदम चाय तैयार करनी है. बाजार से जल्दी लौट आने का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया था. आने वाले से उस के आने का इंतजार हमेशा सुखद होता है, कम से कम रीना का यही अनुभव था.

मुन्ने को बिस्तर पर पटका. वहीं विशाल अखबार पर झुका था. ट्रांजिस्टर की आवाज तीखेपन की हद तक पहुंच रही थी. सब को नजरअंदाज कर वह रसोई की तरफ लपकी. स्टोव में तेल न था. जल्दी से बोतल भरी. मुन्ने के रोने की आवाज आ रही थी. वह भूखा था. बाजार जाने से पहले ही उस ने दूध

पिया था, सो उस का वक्त हो रहा था. उस ने दूध गरम किया. चाय बनाई. और जब कमरे में पहुंची तो मुन्ना उसी तरह रोए जा रहा था. लेकिन वह आवाज विशाल के कानों में शायद नहीं जा रही थी. वह चीख पड़ी, “आप बहरे हैं या पत्थर, जो पंदरह मिनट से बच्चे को रूलाए जा रहे हैं?”

विशाल हकबका गयी, “क्या बकती हो? बात करने की तमीज है या ऊटपटांग जो मुंह में आया कह दिया?” उस ने चाय का प्याला एक तरफ पटक दिया. “मुझे नहीं चाहिए ऐसी चाय.” थोड़ी ही देर बाद उस ने ट्रांजिस्टर बंद किया, अखबार फेंका और मुन्ने को उस की गोद से छीन कर लान में जा बैठा. बच्चे का घोड़ा बना, विल्ली बना और काफी देर उसे खेलाता रहा. थक कर बच्चा सो गया. तब विशाल झिझकता हुआ वापस आया. रीना उदास खड़ी थी. विशाल ने उसे बांहों में समेट लिया. “मुझे माफ करना, रीना. मुझे बड़ा अफसोस है. रीना, तुम्हें मालूम है कि मैं शुरू से ही अकेला रहा हूं. वही आदत पड़ी हुई है. रीना, मैं तुम्हें, बच्चे को बहुत प्यार करता हूं. लेकिन चाह कर भी वैसा नहीं कर पाता जो मुझे करना चाहिए. रीना, डार्लिंग, इसी लिए मैं शादी करने की सोचता भी नहीं था. क्योंकि मैं जानता हूं, मैं शादी करने लायक आदमी नहीं हूं. मैं अकेला ही रह सकता हूं. एकदम अकेला, भूत की तरह, खंडहर के पिशाच की तरह.”

“चुप रहिए.” रीना चीख पड़ी, “जाने क्याक्या कहे जाते हैं, निप्पूर कहीं

बोल तो गया, लेकिन वह
है... और जब सच सामने
निर्णय ले चुकी थी...



के! किसी तरह भी नहीं जीने देते."

"यह बात नहीं है," विशाल की आँखें भर आईं, "रीना, तुम नाराज हो जाती हो तो लगता है, जीने का यह एक सहारा भी खत्म हो गया. मैं अपने को अपराधी महसूस करने लगता हूँ, जिसे जिंदा रहने का कोई हक नहीं."

"लेकिन मैं औरत हूँ. औरत स्वभाव से ही कमजोर होती है. मुझे भी तो सहारा चाहिए. आप के सिवा मेरा है ही कौन जो मुझे सहारा दे? बताइए, क्या मैं गलत कह रही हूँ?" रीना की बात सच थी, यह विशाल अच्छी तरह जानता था.

"मैं जानता हूँ, सब जानता हूँ. कोशिश कर रहा हूँ अपने को बदलने की. रीना, तुम थोड़ा सब्र करो. मुझ पर विश्वास करो. मैं तुम्हें प्यार करता हूँ. जो कुछ भी ऐसा होता है जिस से तुम्हारे दिल को चोट पहुँचती है, वह सब अनजाने ही हो जाता है. मैं जानबूझ कर तुम्हें दुखी नहीं करना चाहता. सच, मैं... मैं मजबूर हूँ. कभीकभी लगता है, मैं ने अपने साथ तुम्हारी जिंदगी खराब कर दी. तुम्हें सुखी न रख सका. तुम किसी सामान्य आदमी से शादी कर के ज्यादा सुखी रह सकती थीं. लेकिन अब सोचने से क्या फायदा, अब बहुत देर हो चुकी है."

"कौन कहता है कि मैं दुखी हूँ? मैं सुखी हूँ. आप के साथ जैसे भी रहूँ, जिस हाल में भी रहूँ, उसी में संतुष्ट हूँ."

दूध वाले की आवाज सुन कर रीना भागी और विशाल उस की जाती हुई की पीठ देखता रहा.

विशाल सोचने लगता है—काश,

रीना उसे समझ सकती. काश, वह इतनी भावुक न हो कर थोड़ी व्यावहारिक होती. रीना की माँग कितनी ज्यादा है. वह नहीं जानती कि उसे भौतिक सुखों से संतुष्ट नहीं किया जा सकता. और स्त्रियों की तरह उसे सिनेमा और पिकनिक से नहीं बहलाया जा सकता. पैसे दे कर खुश नहीं किया जा सकता. उसे मानसिक तुष्टि चाहिए. जो विशाल जैसे आदमी के वश की बात नहीं—जिस का जीवन इतना एकांत में बीता है, जिसे जिंदगी में किताबों का घेरा ही मिला है. तीन साल की उमर से बाईस साल तक किताबें... किताबें... किताबें. सिर्फ आकार का फर्क आया, अक्षर वही. प्यार के नाम पर उसे चाकलेट, टाफी, बिस्कुट मिले. आया मिली, बच्चागाड़ी, ट्राइसिकिल और फिर स्कूटर. पिता के नाम पर वह उस आदमी को जानता है जो नए-नए खिलौने ला कर दे. उसे उन के सिर्फ ये शब्द याद हैं, "चल बैठ कर पढ़. क्या सारा दिन आवारों की तरह घूमता रहता है!"

रीना ने घड़ी देखी. साढ़े छः बज रहे हैं. वह तैयार बंठी है. लेकिन विशाल अब तक फैंकट्री से नहीं आए. सात बजे पार्टी शुरू हो जाएगी. आज खन्ना साहब के लड़के का जन्मदिन है. वहाँ जाना बहुत जरूरी है, वरना वे लोग क्या सोचेंगे, इतना बुलाया फिर भी नहीं आए. तभी फोन की घंटी खनखनाई. उधर से आवाज आई, "रीना, डालिंग, एक जरूरी काम आ पड़ा है. मैं 10 बजे से पहले नहीं आ सकूंगा. तुम अकेली ही पार्टी में चली जाओ, वरना खन्ना बुरा मान जाएगा. कट..."

अकेली वह खड़ी की खड़ी रह गई। यह अकेली जाती है। और वहां अकेली ही रहती है। इतनी भीड़ भी उस के अकेलेपन को नहीं भर पाती। उस ने साड़ी उतार कर फेंक दी। नहीं, मैं नहीं जाऊंगी। सब मेरा मजाक उड़ाएंगे। मुझ से बारबार विशाल के न आने का कारण पूछेंगे।

रीना विस्तर पर लेट गई। ऐसा क्यों होता है उस के साथ? क्या विशाल जानबूझ कर उस के साथ नहीं जाना चाहता, या सचमुच उसे काम आ पड़ता है? लेकिन ऐसा अकसर होता है, कभीकभी ही नहीं। उस की आंखों में आंसू आ गए। या तो वह कहीं जाती ही नहीं और अगर जाती भी है तो अकेली, जब कि जिस समाज में वे लोग रहते हैं, उस में यह उपहास की बात है।

विशाल 10 बजे से पहले ही आ गया। उस ने पूछा, “तुम गईं नहीं?”

रीना रसोई में जाने लगी, “नहीं गई। आप के लिए खाना लाऊं?”

विशाल ने उसे मना कर दिया, “अरे, नहीं, डार्लिंग। कुछ लोग बाहर से आ गए थे, सो उन के साथ ही होटल में खाना खा लिया।” वह कपड़े बदल कर विस्तर पर लेट गया। कमरे में चुप्पी छा गई। उस सन्नाटे को एकाएक रीना ने तोड़ा, “आप को मालूम है, मैं आप से पहले खाना नहीं खाती? आप ने सोचा कि मैं भूखी हूँ?” विशाल चौंक पड़ा, “अरे, तो तुम ने खाना नहीं खाया? रीना, जा कर खा लो न. भई, ये क्या दकियानूसी बातें करती हो। व्यस्तता की जिंदगी में इतना सब ध्यान रखना कैसे संभव है?”

“और मेरे लिए सब संभव है? आप के सो कर उठने से ले कर रात में सो जाने तक आप का एकएक काम करना, ध्यान रखना मेरे लिए संभव है, आप के लिए इतना भी संभव नहीं कि मैं ने खाना खाया या नहीं यह पूछ लें? एक मैं हूँ कि आप के बिना पार्टी में नहीं गई, खाना नहीं खाया। एक आप हैं कि दोस्तों के

साथ होटल में खा आए और आ कर मैं ने खाना खाया नहीं।” रीना रोने लगी।

विशाल को रोने से बड़ी चिड़चिड़ी रीना की मजबूरी की आखिरी सीमा आंसू। वह चीखने लगा, “मैं खाना होटल में खा आया तो तुम्हें आग क्यों नहीं गई? तुम चाहती हो कि सिर्फ तुम्हें गिर्द ही मंडराता रहूं, कभी चार लोगों के बैठ कर हंसबोलूं नहीं। यह कैसे हो सकता है? मैं तुम्हें रोकता हूँ किसी बात में तो तुम जराजरा सी बात पर मेरा रास्ता रोकती हो और आंसू वहाना शुरू कर देती हो?”

रीना शांत हो चुकी थी। दोनों

“चिल्लाइए मत. बात असमंजस है कि हम एक साथ नहीं रह सकते। ठीक है, गलती मेरी ही सही। आज रात सो जाइए. सुबह होते ही मैं चली जाऊंगी। कभी आप का रास्ता रोकने नहीं आऊंगी। कभी आप को अपने आंसू दिखाने नहीं आऊंगी। आप मुझे, मेरे प्यार को नहीं समझ सकते तो साथ रहने से क्या फायदा? वैसे, मुझे आज से कई साल पहले चला जाना चाहिए था। कुछ सोच कर नहीं गई. अब चली जाऊंगी।”

“तुम्हें इतना गरूर है, इतना पक्का इरादा है तो जाओ, चली जाओ, रोकना कौन है?” विशाल गुस्से में था। दोनों चुप हो गए। अगले दिन उस की आंखें



खुलीं तो देखा, रीना जाने की चपचाप तैयारी कर रही थी। उस को सूनी आँख बता रही थीं कि वह सारी रात रोती रही है।

“रीना, हो सके तो मुझे माफ कर देना,” विशाल की आवाज में सचमुच दर्द था। कोई और मौका होता तो रीना विशाल की आवाज का वह दर्द शायद ही बरदाश्त कर पाती। लेकिन आज उस पर कोई असर नहीं हो रहा था। वह हलके से मुसकरा दी। “माफी! कैसी माफी? किसी की जिंदगी बरबाद कर के कह दो मुझे माफ कर देना—वस, हो गया सारा फर्ज पूरा! इतनी बड़ी दुनिया में साल भर के बच्चे को ले कर मैं कहाँ जाऊँ?” रीना की आँखें दीवार पर टिकी थीं। लगता था, वह कहीं दूर, बहुत दूर बोल रही है।

“कौन कहता है कि तुम चली जाओ? जब तुम्हीं मेरे साथ नहीं रहना चाहतीं तो मैं कर ही क्या सकता हूँ?”

विशाल की बात सुन कर रीना की आवाज में तेजी आ गई, “क्या कहने से कुछ होता है? मैं इतना भी नहीं समझ सकती कि आप क्या चाहते हैं? मैं कब खाना खाती हूँ, कैसे कपड़े पहनती हूँ, कहाँ जाती हूँ, आप को कभी इन बातों से मतलब रहा है? घर में सद्जी है या नहीं, आप को मतलब है? सिर्फ होटल की तरह आ कर खाना खा लिया और

सो रहे या कोई किताब पढ़ने लगे। घर से वस इतना ही तो मतलब है। हर महीने एक चैक दे देने भर से सब फर्ज पूरे हो गए जैसे कि मैं कोई मिखमंगिन होऊँ।”

वह न जाने क्याक्या कहती यदि विशाल चीख न पड़ता, “हट जाओ मेरी आँखों के सामने से। पांच साल से मेरा जीना हराम कर रखा है। जाओ, यहाँ से चली जाओ। रोज मायके जाने की धमकी देती हो। मेरी जान लेने पर क्यों तुली हुई हो?”

रीना साड़ियाँ सूटकेस में रखती हुई बोली, “जा रही हूँ। मेरी ही गलती है, जो पांच साल से आप के साथ रह रही हूँ। इस उम्मीद में कि आप अपनी गलती शायद समझ सकें। आप शायद सुधर सकें। लेकिन सुधरते वे हैं जो अपनी गलती मानते हों, जिन्हें एहसास हो। आप क्या सुधरेंगे जिन्हें मेरा बोलना भी बुरा लगता है! मैं जा रही हूँ और एक बात याद रखिएगा, कभी मुझे लेने न आएँ, न ही आज के बाद कभी बच्चे से कोई संबंध रखने की कोशिश करें। क्या समझ रखा है आप ने मुझे? मेरे मांबाप के घर किस चीज की कमी है? फिर मैं पीएच.डी. हूँ, खुद कमाखा सकती हूँ।”

विशाल परेशान सा उसे देखता रहा। फिर कुछ सोच कर बोला, “हमें तलाक ले लेना चाहिए। उस के बाद कोई

तेरे फिराक में हम...

यूँही हमेशा उलझती रही है जुलूम से खल्क,
न उन की रस्म नई है, न अपनी रीत नई।
यूँही हमेशा खिलाए हैं हम ने आग में फूल,
न उन की हार नई है न अपनी जीत नई।
इसी सबब से फलक का गिला नहीं करते,
तेरे फिराक में हम दिल बुरा नहीं करते।

—फैज

गुंजाइश नहीं रहेगी हमारे झगड़े की या दोस्ती की।

रीना की तैयारी पूरी हो चुकी थी। वह विककी को कपड़े पहना रही थी। बोली, "मुझे कौन दूसरी शादी करनी है जो तलाक लूं? हां, आप जब शादी करने की सोचें तो तलाक ले लेना।"

"मैं शादी करूंगा?" विशाल उछल पड़ा, "अरे, बाप रे! एक बार शादी की तो यह हाल हुआ। दोबारा करने की कौन पागल सोचेगा? ठीक है, तलाक की कोई जरूरत नहीं। मैं तुम्हें 500 रु. महीना भेजता रहूंगा।"

"थू है आप के रुपयों पर. हमेशा रुपया, रुपया! क्या कमीनापन है इस घर में! मैं भीख मांग लूंगी, परंतु आप से रुपए नहीं लूंगी. न ही आप के जेवर ले जाऊंगी, न कपड़े ही. सब रखें आप." रीना की आवाज के तीखेपन ने विशाल का मन कड़वाहट से भर दिया। यह औरत सब कुछ कर सकती है लेकिन अपनी जबान पर लगाम नहीं रख सकती। परंतु वह उसे प्यार करता है, अपने बच्चे को प्यार करता है। उस का मन करता है रीना को रोक ले, जाने न दे. परंतु... वह डरता है. रोजरोज की झकझक एक बार खत्म हो जाए तो कितना अच्छा हो।

फैक्टरी में वर्क्स मैनेजर का पद सब से खराब है. नीचे के अफसर तंग करते हैं—उन्हें अच्छा क्वार्टर, अच्छा फर्नीचर चाहिए. मजदूरों को वेतन ज्यादा चाहिए, वरना वे हड़ताल कर देंगे. ऊपर से सेठों को मुनाफा चाहिए. चारों तरफ से पिटापिटाया घर आए तो मेम साहब सिनेमा जाने को तैयार या किसी पार्टी में जाना है या बाजार जाना है. और कुछ नहीं तो विककी को ही जरा संभालो, जैसे कि कहीं से आराम कर के आया हो वह. जाने दो इसे, चले ही जाने दो. इतना सोचतेसोचते वह अध्ययन कक्ष में चला गया और दरवाजा बंद कर लिया.

रीना तैयार बैठी थी. इतने में महरी

ने दरवाजा खटखटाया. वह खीज कर दरवाजा खोलने उठी. उसे देर हो रही थी पर महरी के सामने क्या कहे? अगली बस से जाना पड़ेगा. फिर दिल्ली से बस में बैठो, सीधे देहरादून पहुंच जाओ, कौन सी देर लगती है. रसोई में जा कर उसे याद आया कि आज सुबह से चाय नहीं बनी. 10 बज गए. रविवार का दिन है. विशाल ने न स्नान किया, न दाढ़ी बनाई. उस ने जल्दीजल्दी चाय का पानी चढ़ाया और नाश्ता तैयार करने लगी.

उसे याद आया वह दिन, जब वह नईनई आई थी. तब उसे न ठीक से खाना बनाना आता था न जल्दी उठ कर नाश्ता तैयार कर सकती थी लेकिन विशाल ने उसे कभी नहीं टोका, न घर गंदा रखने पर न देर तक सोने पर. न कभी पैसे का हिसाब मांगा, न ही किसी बात में रुकावट डाली, विशाल का जेबखर्च सिर्फ बीस रुपए महीना. वह भी कोई चंदा मांग ले या उधार ले जाए तभी खर्च होंगे, जब मैं ही पड़े रहूँगे. कितना प्यार करते हैं वह उसे और विककी को. उन की जिदगी में कितना सूनापन आ जाएगा अगर वह उन्हें छोड़ कर चली गई तो. कौन उन्हें खाना बना कर देगा? कौन उन्हें कपड़े सिला कर देगा? वह तो खुद अपने जूते भी खरीद कर नहीं लाते. अगर वह चली गई तो बीमार होने पर कौन दवा लाएगा विशाल के लिए?

रीना मन को ढीला पड़ते देख चौंक गई. उस ने विचारों को झटक दिया. 'उंह, मैं जाऊंगी, जरूर जाऊंगी. ऐसे आदमी के साथ कब तक निभाऊंगी जो मेरा जरा भी खयाल नहीं रखता? लेकिन...लेकिन वह अपना ही कौन सा खयाल रखते हैं? सुबह से अब तक चाय तक नहीं पी. एक बार भी तो चाय के लिए नहीं कहा है.'

पानी उबल रहा था. रीना ने चाय बनाई. प्लेट में बिस्कुट रखे और अध्ययन कक्ष का दरवाजा खटखटाया. विशाल ने

दरवाजा खोल दिया. रीना ने फँसला कर
 लिया था कि वह जाएगी, जरूर जाएगी।
 बरना विशाल उसे कमजोर समझेंगे. वह
 समझेंगे कि वह जा नहीं सकती. चाय
 मेज पर रख कर वह तेजी से बाहर
 निकल आई. उसे पसीना आने लगा.
 सोचने लगी कि वह अगर रुक गई तो
 विशाल समझेंगे इस को कहीं ठिकाना
 नहीं जहाँ जाए, और फिर हमेशा के लिए
 वह उन के सामने कमजोर पड़ जाएगी.

तभी अखबार वाले की आवाज आई,
 "साहब, अखबार का बिल." विशाल ने
 जवाब दिया, "अपनी मेमं साहब से पैसे
 ले लेना, भई. हमें नहीं मालूम कितने
 पैसे देने हैं." इतने में सामने वाले घर में

रहने वाले शर्माजी हँसते हुए आ गए,
 "अरे, यार, अगर कोई तुझ से पूछे कि
 आज सांस ली या नहीं तो कह देना, मेम
 साहब से पूछो."

"आओ बैठो, शर्मा." विशाल की
 आवाज टूट रही थी. "शर्मा, रीना मेरी
 जिंदगी पर कुछ इस तरह छा गई है कि
 मैं उस के सामने वेबस सा हो गया हूँ.
 अब चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता,
 भले ही रीना नाराज हो. उस पर सारा
 जंजाल लाद दिया है. पर मैं क्या करूँ?
 चाह कर भी कुछ कर सकने की क्षमता
 नहीं है मुझ में."

रीना इस से आगे न सुन सकी.
 हँसते हुए बाहर निकल आई. वह सब

और अब आ रहा है...

चंपक

विज्ञान कथा विशेषांक

सितंबर (प्रथम) 1975 अंक

चंपक में परी कथाओं तथा लोक कथाओं के नाम पर अंधविश्वास,
 जादूटोने, छलकपट आदि की कहानियों के बजाए सदा ही बच्चों को साहसी
 तथा परिश्रमी बनाने वाली कहानियाँ दी जाती रही हैं. विज्ञान कथा विशेषांक
 के माध्यम से अब चंपक बच्चों के लिए विज्ञान की गूढ़ बातें मनोरंजक कहानियों
 में प्रस्तुत कर रहा है.

● चिपांजी स्कूल से भाग कर सारे दिन तितलियाँ, कीड़ेमकोड़े पकड़ता
 रहता था. सब उस से बहुत परेशान थे. लेकिन एक दिन जब उस के चाचाजी
 ने उस की कोटशाला देखी तो बहुत खुश हुए...

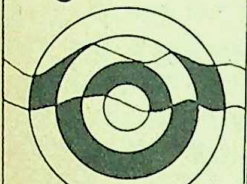
● अशोक प्रतिदिन अपने पिताजी की प्रयोगशाला से एक मरे हुए जानवर
 को बाहर ले जाते देखता था. एक दिन छिप कर उस ने पिताजी को जानवरों
 पर प्रयोग करते देखा तो हैरान रह गया...

● पोकरण में बम विस्फोट की खबर सुनते ही जंगल के जानवरों ने भी
 विस्फोट की योजना बनाई. जब भाल ने बम विस्फोट किया तो सब जानवर
 खुशी से उछल पड़े. लेकिन यह विस्फोट कैसे हुआ?

इस के अतिरिक्त और भी बहुत सी रोचक और ज्ञानवर्धक कहानियाँ,
 लेख तथा हंसाहंसा कर लोटपोट कर देने वाले कार्टून, रसीली कविताएँ और
 चोक्, मीकू के नए अंदाज देखने को मिलेंगे. इस के अतिरिक्त सभी स्यायी
 स्तंभ.

आज ही अपने अखबार वाले से कह कर अपनी प्रति मुरक्षित करा लें.

हिंदू समाज के पथप्रष्टक तुलसीदास



संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य घोषित कर दिया। प्रशंसा की चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में हिंदू समाज के पथप्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

तुलसी की वास्तविकता पाठकों के सामने ला कर रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है। इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी।

मूल्य रु. 8. डाक खर्च रु. 2.

स्कूलों/कालिजों के अध्यापकों के लिए 50 प्रतिशत की छूट। मनी-आर्डर द्वारा 5 रुपए भेजिए। बी. बी. पी. से भेजना संभव नहीं है।

विश्व विजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-1.

कुछ सह सकती है, विशाल को किसी के सामने इस तरह वेवसी जाहिर करते नही देख सकती, "क्या कहने हैं जनाब के अरे, छः बजे तो फैक्टरी से आते हैं, उस पर फाइलें साथ. भला आ कर क्या कर सकते हैं? कौन आप से नाराज होता है भला?"

विशाल हैरान था. वह जानता था, रीना जो निर्णय कर लेती है उसे बदलना आसान नहीं.

तो क्या वह शर्मा के सामने दिखावे के लिए यह सब कह रही है? काश, रीना न जाती उसे छोड़ कर.

शर्माजी चले गए तो वह अंदर गया. ड्राइंग रूम सजासजाया. वेड रूम अपनी सही हालत में था. जैसे ही पलटा रसोईघर में से आवाज आई, "बाथरूम में गरम पानी रखा है, जल्दी से नहा लें."

विशाल ने खिड़की में से देखा, फिरोजी रंग की साड़ी पहने रीना स्टोव पर झुकी हुई उसे जलाने की कोशिश कर रही थी. कंधे पर उस के लंबे बाल लहरा रहे थे. एकाएक वह कमरे में आ गई. "कितनी देर कर रहे हैं. बाथरूम में पानी ठंडा हुआ जा रहा है. वही तौलिया, साबुन, कच्छा, गंजी सब है."

विशाल उसे एकटक देखता रहा. "वह तुम ही तो हो जिस ने खुद ही मेरे सब काम छीन लिए हैं. फिर मुझे ही दोष देती हो कि मैं कुछ करता नहीं. छोटीछोटी बातों के लिए अपना मुहताज बना लिया, उस पर मुझे ही सजा देती हो." विशाल भावावेश में बह गया, "रीना, तुम समझ नहीं सकतीं... रीना, तुम मेरी आध्यात्मिक मां हो. अब तुम मुझे कभी छोड़ कर नहीं जाओगी न?"

रीना के चेहरे पर दृढ़ निश्चय झलक रहा था, "मैं ने फैसला कर लिया है. आप जैसे गैरजिम्मेदार आदमी की वजह से अपनी भरीपूरी गृहस्थी कभी नहीं उजड़ने दूंगी, कभी नहीं."

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छाया : धर्मनाथ प्रसाद, कलकत्ता



कम दाम में उच्च कौटि की साहित्य

विश्व पाकेट बुक्स

सितारा (ऐतिहासिक उपन्यास : आनंदसागर)

रियासत नौरंगपुर के मालिक की बेटी परिस्थितियों के चक्कर में पड़ कर सितारा बन बैठी. उस के मन में एक आग जल रही थी...

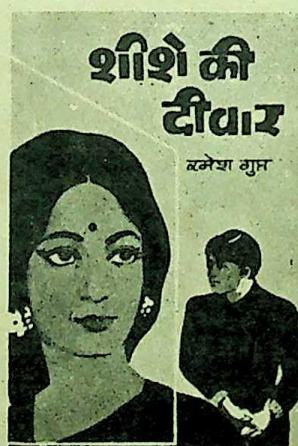
एक दिन सितारा शाही रक्कासा से नादिरशाह के दिल की मालिक बन गई. उस ने दिल्ली में कल्लेआम बंद कराने के लिए अपनी जिंदगी की हर खुशी कुर्बान कर दी. दिल्ली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया रोमांचक उपन्यास.

शीशे की दीवार (उपन्यास : रमेश गुप्त)

एक स्त्री और एक पुरुष रात को कमरे में अकेले हों, फिर वे पतिपत्नी भी तो भावनाओं के खिंचे तार ढीले पड़ जाते हैं. मदमाती रात की खूब उम्र के आप खिंचाव को कम कर के एक हो जाने का संदेश देती है जिस का वे विरोध नहीं कर सकते. लेकिन अनुराधा और अनुराग की जिंदगी इस का अपवाद सिद्ध हुई. उन बीच शीशे की एक अभेद्य दीवार थी. रमेश गुप्त का दांपत्य जीवन की व्याख्या करने वाला लघु उपन्यास.

बच्चों के मुख से (संपादक : विश्वनाथ)

कहते हैं हिंदी में शुद्ध हास्य की कमी है, लेकिन यह पुस्तक इस का अपवाद सिद्ध होगी, क्योंकि इस में दिए गए हास्य के मूल स्रोत आप के अपने बच्चों जैसे नन्हे मुख हैं, जिन की भोली बातें सुन कर आप हंसे बिना नहीं रह सकते.



आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अधिम भेजें.

पसंद अपनी अपनी

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए, सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी। इस वंक के पुरस्कार विजेता श्री सैनी कन्हैया 'धाकड़', जयपुर, हैं। भेजने का पता : पसंद अपनी अपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● कहानीकार फिल्म निर्माता से मिलने गए। सुबह से शाम हो गई लेकिन चप-रासी हर बार 'साहब विजी हैं,' कह देता था। आखिर अंत में कहानीकार को बुला ही लिया गया।

निर्माता ने कहा, "आप सौभाग्यशाली हैं। सुबह से मैं ने सात कहानीकारों को डाला है."

"वे सातों कहानीकार मैं ही हूँ," कहानीकार ने जवाब दिया।

—सैनी कन्हैया 'धाकड़', जयपुर

● मरीज : डाक्टर साहब, मेरे कानों में कुछ हो गया है। मुझे बहुत कम सुनाई देता है। यहां तक कि मुझे अपनी खांसी की आवाज तक अच्छी तरह सुनाई नहीं देती।

डाक्टर : कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। यह लीजिए गोलियां। सुबहशाम गरम पानी से एकएक ले लीजिएगा।

मरीज : इन से मुझे साफ सुनाई पड़ने लगेगा न, डाक्टर साहब?

डाक्टर : जी नहीं, इन से आप की खांसी की आवाज तेज हो जाएगी।

—मानिक मुले, सतारा

● एक डाक्टर ने मरीज के आपरेशन की फीस 500 रुपए मांगी थी। आपरेशन के बाद डाक्टर ने बिल 510 रुपए का बनाया।

मरीज ने पूछा, "दस रुपए अधिक क्यों?"

डाक्टर बोला, "अरे, भाई, दस रुपए मैं कोई फालतू थोड़े ही ले रहा हूँ? असल में आपरेशन के समय एक कैंची आप के पेट में रह गई थी। दस रुपए उसी के हैं।"

—हरबीरसिंह बतरा, भोपाल

● पहला मित्र : आशा बड़ी चीज है।

दूसरा मित्र : पर मुझे तो उस से डर लगता है।

पहला मित्र : क्यों?

दूसरा मित्र : वह अपने पिता से मेरी शिकायत कर देती है।

—उत्तमकुमार सरकार, झांसी

● एक आदमी एक मनोवैज्ञानिक के पास जा कर बोला, "किसी की बुद्धि की परीक्षा करने के लिए कोई सरल सा तरीका बताइए।"

मनोवैज्ञानिक ने कहा, "तुम उस से सवाल पूछना कि कर्नल बड ने हवाई जहाज से धरती की तीन बार परिक्रमा की और उस में से एक बार वह मारे गए। बताओ, वह कौन सी परिक्रमा करते हुए मारे गए?"

उस आदमी ने थोड़ी देर सोचने के बाद जवाब दिया, "यह तो इतिहास का मामला है। बिना इतिहास पढ़े कोई कैसे बता सकता है?"

—मनोज श्रीवास्तव, भोपाल ●

हर चांद

जाड़ों की उस रात में बुधिराम की अपने पुत्र गयाप्रसाद की आंखों के सामने ही नीलहट की छोटी सी दुकान में हत्या हो गई. उस की गलती केवल इतनी ही थी कि उस की दुकान में एक बार पुलिस का दारोगा आया था और उस ने नए आंदोलन में लगे कुछ लड़कों की गतिविधियों के बारे में उस से पूछा था और उसे सतर्क रहने को कहा था. इस प्रकार आंदोलन की दृष्टि से बुधिराम लोगों का शत्रु बन गया था और हत्या का लक्ष्य.

परिवार और उस की दुखिया विधवा पत्नी के भरणपोषण की जिम्मेदारी उस के किशोर पुत्र गयाप्रसाद पर आ पड़ी. वह कातिलों को जानता था और उन के रहने के स्थान भी. लेकिन नीलहट के नेता चिल्टू गांगुली से कुछ न कहने और उसे असंतुष्ट न करने की अक्ल उस में थी.

यह पूछने पर कि क्या वह भी अपने बाप के पास जाना चाहता है, वह डर गया और उस ने जवाब दिया, "नहीं, चिल्टू दा, नहीं. बिना तुम्हारे सहारे के

मैं आधी रात तक अपनी दुकान खुली रख सकता हूं जब कि सारी दुकानें शाम को ही बंद हो गई हैं और नौ बजे तक सारी सड़कें पड़ जाती हैं?"

"गयाप्रसाद, तू बहुत चालाक क्या तू इस चिट्ठी को एक घंटे के अंदर चित्रा तक पहुंचा सकता है चिल्टू ने अपनी होने वाली बीबी का दिया.

"खुशी के साथ, चिल्टू दा. मैं तुम्हें मेरी दुकान के नजदीक नहीं आना चाहिए. क्योंकि गुप्तचर विभाग लोग मुझे परेशान करेंगे और तुम्हारे बारे में बताने के लिए मुझे तरहवार कष्ट भी देंगे. जब तुम्हें मेरी आवश्यकता पड़े, तुम केवल अपना कोई विश्वस्त व्यक्ति ही मेरे पास भेजना."

चिल्टू ने कुछ गालियां बकी, भड़े हावभाव प्रदर्शित किए और चेतावनी दी, "यदि कोई भी जासूस नीलहट में घुसने का साहस करेगा तो मैं उस की गरदन..." यह कह कर उस अपनी जीभ से 'कट' की आवाज

'नया आंदोलन' का आतंक बंगाल की रगरग में समाया हुआ था और लोग जैसे अंदर ही अंदर सिमटते जा रहे थे...और उस रात के अंधेरे में चलने वाले आंदोलन में पहचानना मुश्किल था कि कौन देशभक्त है और कौन बागी...

लेख चांदतर्क

उस अभागे व्यक्ति की जीवन लीला को समाप्ति का संकेत किया। "लेकिन, गयाप्रसाद, तू मेरे अनुमान से अधिक समझदार निकला। बहादुर मेरा विश्वास-पात्र मित्र है। दरजी की दुकान 'फिट टाइट' के मालिक बहादुर के सिवा अन्य किसी पर विश्वास मत करना।"

गयाप्रसाद ने कहा, "बहादुर तुम्हारी पार्टी के लक्ष्यों के बिल्कुल उलटा करता है। वह तुम्हारी पार्टी के कामों की बहुत आलोचना करता है और आंदोलन से गुप्त रूप से संबद्ध अनेक लोगों की निंदा करता है।"

"धीरज रख, गयाप्रसाद, धीरज रख," चिल्लू ने अपनी आंखों में चमक लाते हुए कहा, "अगर पुलिस वाले अपने काम में उस्ताद होते हैं तो हम भी उन से कुछ कम नहीं। हमारे विरोधियों की भावनाओं का पता लगाने के लिए ही बहादुर से कहा गया है कि वह हमारे कार्यों के विरुद्ध बात किया करे। आंदोलन में शामिल होने के लिए अंतिम वर्ष में बी. ई. की पढ़ाई मैंने व्यर्थ ही नहीं छोड़ी थी। एक दिन यह आंदोलन हमारे संपूर्ण देश और जनता को मुक्त कर देगा। गयाप्रसाद, वह दिन अब दूर नहीं



की कल्पना से अभिभूत हो उठा था और उस की गल्ला लगभग खूब गया था।

“लेकिन, चिल्डू दा, पुलिस के कुत्तों, थानों और फौज के रहते यह संभव कैसे हो सकता है?” गयाप्रसाद ने पूछा।

“गयाप्रसाद, इन सब के बारे में मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा और तुम्हें एक ऐसी चीज दिखाऊंगा जिस से तुम्हें विश्वास हो जाएगा। लेकिन अब तुम चित्रा के पास जाओ,” उस ने उस के कंधे थपथपाए और चल देने के लिए कहा।

चित्रा एक धनी व्यक्ति की सुंदर लड़की थी। वह एक प्रतिभाशाली छात्रा थी। उस के शिक्षकों और मातापिता को यह आशा थी कि एक दिन वह बड़ी हस्ती बन जाएगी। तभी उस के जीवन में चिल्डू आया। उस की क्रांतिकारी विचारधारा, साहसपूर्ण कार्यक्रम व बलिदान भावना के कारण चित्रा उस की पार्टी और उस में आसक्त हो गई। उस ने चिल्डू और उस के आंदोलन की धन से सहायता की और महिलाओं में उन्हें लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया। जो बहुत सी महिलाएं इस ओर आकर्षित हुईं उन में से कुछ नई क्रांति का स्वाद चखने के निमित्त काम करने की इच्छा से शेरनियों से भी अधिक भयानक हो गईं। उन सब का गुरु चिल्डू था। उसी का शब्द कानून माना जाता था।

जब गयाप्रसाद ने वह पत्र चित्रा को दिया तो उस का मुख फक पड़ गया। उस ने उसे रजिया से मिलने को कहा जो शहर में ही लगभग पांच मील की दूरी पर रहती थी। रजिया पार्टी की एक सदस्या थी जो हमेशा कुछ करने के लिए तड़पती रहती थी। उसे चारों ओर फैला हुआ शत्रु का रक्त देखने से अधिक किसी भी वस्तु से प्यार नहीं था। पार्टी के सदस्यों में वह शेरनी रजिया के नाम से प्रसिद्ध थी। जब गयाप्रसाद उस के घर पहुंचा तो वह घर से बाहर निकली, उसे

गुरु चिल्डू दा के शब्द कानून थे और उस की पंक्तों के उठनेगिरने में भी कुछ कुछ संकेत होते थे... लेकिन कानून को चकमा देने वाला चिल्डू भी एक दिन सजाया गया कि उस को भी चकमा देने वाला कोई और है...

डाइंग रूम में बिठाया और गयाप्रसाद संदेश सुनाने से पहले ही चाय लाने के अंदर गई। चाय पीने के बाद गयाप्रसाद को अपना सिर धूमता हुआ और चिड़िया के पंख सा प्रतीत हुआ। फर्श पर गिर पड़ा और उसे ऐसा लगा मानो उस की सांस रुक रही हो।

तब रजिया हमेशा की तरह भयभीत हो गई। गयाप्रसाद के चित पड़े पर एक पैर रख कर उस ने उस पुर्ण एजेंट का नाम जानना चाहा, बिना उसे इस प्रकार का काम सौंपा था। उस ने यह भी बता दिया कि उस ने अभी उस के कालिज की प्रयोगशाला तैयार हुआ जहर पिया है और उस असर दूर करने का तरीका केवल जानती है तथा उस की रक्षा केवल केवल वही समर्थ है। उस ने यह भी कहा कि यदि वह उसे सच्चीसच्ची बात बताएगा तो उस की अवश्य ही मृत्यु जाएगी।

गयाप्रसाद ने पूछा कि इस प्रकार अनुचित उपायों के द्वारा किसी से निकलवाना और साथ ही यह भी कि नहीं बताने पर मौत का शिकार पड़ेगा, क्या बंगाल की एक बड़ी हस्ती लिए ठीक होगा? उस ने यह भी कहा कि इस से न तो उस का कोई सिद्ध होगा और न उसे ही अपनी कहने का मौका मिलेगा तथा यह भी

जुलाई (द्वितीय) 1947



पूर्णतया उस के हाथों में था। तब रजिया ने उसे एक प्याला दूध देने के लिए दिया। गयाप्रसाद को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ कि केवल कुछ मिनटों के भीतर उस में नई ताकत आ गई। सिर घुमना बंद हो गया और उस के दिमाग ने फिर सामान्य रूप से काम करना शुरू कर दिया।

तब उस ने उस को बताया कि यह कार्य उसे चिल्टू ने सौंपा था। “अरे ब्रेव-कूप, यह बात तुम ने पहले क्यों नहीं बताई?” रजिया ने उस से मजाक के स्वर में पूछा।

“कौन सी बात?” गयाप्रसाद ने आश्चर्य से पूछा।

“उसे भूल जाओ। मेरा अनुसरण करो।” तब रजिया उसे अपने मकान के बगल अहाते के पीछे ले गई और उस को सीढ़ियों से होते हुए नीचे उतर जाने को कहा।

रजिया के पिता कलकत्ता हाई कोर्ट के जज रह चुके थे और इसलिए वह गेट के साथ रहते थे। उन की बेटी रजिया नए आंदोलन में शामिल हो गई। उस का स्पष्ट उद्देश्य लाखों अशिक्षित, गरीब, नंगे और गरीब भारतीयों को परंपरागत शोषण से मुक्ति प्रदान करना था। वह चिल्टू के प्रभाव में भी आ गई। तहलाने में जाने पर, चारों ओर

अंधकार होने के कारण उस की आंखें कुछ भी नहीं देख पाईं। दो छायाएं कुछ मशीनों पर झुकी हुई थीं। उन्होंने उन की ओर देखने के लिए मुश्किल से अपने सिर उठाए। केवल ‘तोक, तोर, तोक, तोर, तोक’ की लगातार एक जैसी आवाज उस के कानों में पड़ती रही। उस ने गयाप्रसाद को बताया कि यह ट्रांसमीटर की आवाज है, जिस का कोड नाम ‘याक’ है। इस प्रकार गयाप्रसाद को उन के जीवन की एक झांकी देखने को मिली। आखिर उसे वापस जाने की अनुमति प्राप्त हुई।

कुछ दिनों बाद बहादुर गयाप्रसाद की दुकान से कुछ खरीदने के लिए आया। उसे देख कर गयाप्रसाद का शरीर ठंडा पड़ने लगा। बहादुर साक्षात् काल था। गलती करने वाले लोग आंदोलन के सर्वोच्च नेता से बच सकते थे, लेकिन बहादुर से नहीं। इस बात का किसी को ज्ञान नहीं था कि उस की मंत्री मौत को बुलवा देने का ही दूसरा नाम था क्योंकि वह ‘गुप्त रिपोर्टर’ था।

“गया, मुझे 100 ग्राम सूखी लाल मिर्च दो,” बहादुर ने कहा।

“अच्छा, बहादुर,” वह उसे खज करने के लिए मुसकराया। वह मन ही मन डर रहा था कि उस से आंदोलन के खिलाफ कहीं कोई अपराध तो नहीं हो गया।

“और 200 ग्राम सूखी हरी मटर भी,” बहादुर ने फिर कहा।

“यह भी देता हूं, बहादुर。”

गया की आवश्यकता से अधिक तम्रता पर बहादुर उसे प्रसन्न करने के लिए हंसा, “गया, मैं ने सुना है कि हाल ही में तू ट्रैफिक जाम में फंस गया था。”

गयाप्रसाद तुरंत समझ गया कि उस का क्या मतलब है। वह भी हंसने लगा, “बहादुर, तुम्हें कैसे पता?”

“ब्रेवकूप, हंस मत,” बहादुर का रुख तुरंत कठोर हो गया, क्योंकि नए आंदोलन का प्रमुख मिशन था अनुशासन। गया को यह सोच कर कुछ शांति मिली

कि उसे बहादुर की नालियाँ नहीं चुननी पड़ी।

एक आदमी ने, जो गया की दुकान से कुछ खरीदारी करने के लिए आया था, कहा कि कीमतें दिन प्रति दिन बढ़ रही हैं और लोगों के लिए अपना खर्च ढंग से चलाना लगभग असंभव हो गया है। बहादुर ने उस से पूछा कि क्या वह इस क्षेत्र के लिए नया है क्योंकि उस ने उस आदमी को पहले कभी नहीं देखा था। महिंद्रनाथ ने उत्तर दिया कि वह 10/2 जी. लेन में हाल ही में किराएदार के रूप में आया है। खरीदारी करने के बाद महिंद्रनाथ वहां से चला गया। बहादुर ने जाने से पूर्व गया की ओर देख कर आंख मारी, जिस का यह अर्थ था कि वह उस आदमी पर नजर रखे।

नीलहट के इलाके से दूर, लेकिन इतनी दूर नहीं कि वहां तक जाने में कठिनाई हो, शहर को जाने वाली रेलवे लाइन थी। लाइन से एक मील की दूरी से एक घना जंगल शुरू होता था। हिंदुस्तान में जहां पर दलदल होती है वहां विषधर सर्प भी होते हैं। वह स्थान भी इस का अपवाद नहीं था। इस भयानक दलदल भरे जंगल में जाड़ों की रात में 'नया आंदोलन' के सर्वोच्च नेता एकत्र हुए।

ये थे चिल्टू (गुरु), नरोत्तम शाह (दूसरे नंबर का नेता और 'याक' साप्ताहिक का संपादक), दा कोस्टा (पश्चिमी क्षेत्र का नेता), राजाराव (दक्षिणी क्षेत्र का नेता), चित्रा (चिल्टू की होने वाली पत्नी), बहादुर (गुप्त रिपोर्टर), शेरनी रजिया, नारायणी (राजाराव की होने वाली पत्नी, अंगरक्षक और सिद्धांत विशेषज्ञ सब कुछ एक साथ), और सिसीलिया (दा कोस्टा की महिला मित्र। कहा जाता था कि वह किसी कालिज में प्रोफेसर थी और छात्राओं को खुले आम हिंसा के लिए भड़काने के कारण उसे वहां से निकाल दिया गया था।)

इस-समय का जेडएसएस समय स्पष्ट

हो गया। जब महिंद्रनाथ के मुख आंखों पर पट्टी बांध कर उसे वहाँ ले जाया गया। परिषद की कार्यवाही जल्दीजल्दी पूरी की गई। बहादुर सरकारी जासूस महिंद्रनाथ के खिलाफ आरोप पढ़ कर सुनाए, जिस की गुप्तता के काम का अत्यंत सावधानीपूर्वक निष्पत्ति किया गया था। पार्टी के सारे नेता ने जी. लेन के 10/2 नंबर के चारों ओर कड़ा पहरा डाल दिया था। उन्होंने एक अलग जो सूचनाएं दी थीं, उन का निष्पत्ति किया गया था। अंत में यह निष्पत्ति किया गया कि उस आदमी को मार कर देना चाहिए।

शुरू में गयाप्रसाद पर कुछ शक हुआ। "बहादुर, चिंता मत कर। वह हमारी पार्टी का विधिवत मत नहीं है, फिर भी उसे हमारे उद्देश्यों सहानुभूति है। इस के अतिरिक्त, क्या के पिता के साथ जो कुछ हुआ, उसे उसे शिक्षा नहीं मिलेगी?" गुरु चिल्टू ने कहा।

"यह ठीक है। मैं ने भी मोतिलाल ने न तो पलक गिराई और न अलग कठिन परिस्थिति में भी हमारे मान की कोई जानकारी ही प्रकट होने उस पर संदेह नहीं किया जा सकता। शेरनी रजिया ने इस बात की पुष्टि की।

"इस का यह अर्थ है कि वह 'आंदोलन' के तीन परीक्षणों में से



जुलाई (द्वितीय)

उतरा है, जो हैं संतुष्ट, वृद्धिमान और बलिदान। हमें अपने बढ़ते हुए परिवार में एक और सदस्य के शामिल करने में कोई आपत्ति नहीं है।" गुरु चिल्टू ने निर्णय दिया।

"स्त्रियो और पुरुषो, अब मुझे जनता के शत्रु को समाप्त करने की अनुमति प्रदान करें।" शेरनी रजिया ने लंबाई में सीधे पड़े व्यक्ति की श्वास नली काटने के लिए चाकू निकालते हुए परिषद से पूछा। श्वास नली कटते ही फन्वारे की तरह खून बहने लगा और कुछ समय तक शरीर वहीं पर पड़ा तड़पता रहा। लगभग आधे घंटे के बाद तड़पता हुआ शरीर शांत हो गया। रजिया ने मृत व्यक्ति का कुछ खून लिया और उसे इस आशा में उपस्थित लोगों के ललाट पर लगाया कि वह खून पाटी के सदस्यों को उस समय तक के लिए आपस में बांध देगा जब तक कि 'नया आंदोलन' अपने लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेता।

प्रभात काल में सब नीलहट लौटे। अपनी सफलता के उपलक्ष्य में समारोह करने का उन का मन था। गयाप्रसाद की बंद दुकान की छत के नीचे वे एक चटाई पर बैठ गए। उन्होंने देसी शराब की बोतलें निकालीं और एकदूसरे से "जनता के शत्रुओं की मौत हो," कह कर शराब पीना शुरू किया। गयाप्रसाद अपनी दुकान के भीतर आंदोलन के लग-

भग सभी बड़े-बड़े नेताओं के सामने पड़ कर भयमिश्रित आदर और आश्चर्य से अभिभूत हो उठा।

"गया, डरने की कोई बात नहीं," चिल्टू ने उसे आश्वासन दिया, "क्या मैं ने तुम्हें कुछ दिखाने का वादा नहीं किया था? कुछ तो तू पहले ही देख चुका है... क्यों, गया?"

"ठीक है, चिल्टू दा," गया ने हामी भरी।

"अब रात की रानी रजिया से मिलो," चिल्टू ने गयाप्रसाद से रजिया का परिचय कराया, जो शराब पीते हुए संक्षेप में यह बता रही थी कि जनता के शत्रु महिंद्रनाथ की रात में किस प्रकार हत्या की गई थी।

"हम पहले ही मिल चुके हैं," गयाप्रसाद ने मुसकराते हुए कहा। सब के ललाट पर लगे मानव रक्त को देख कर उसे भीतर ही भीतर बहुत अजीब सा लग रहा था।

"लेकिन तुम उन स्त्रियों और पुरुषों से नहीं मिले हो। उन से भी मिलो," चिल्टू ने एक ओर इशारा किया।

गयाप्रसाद ने उन का हाथ जोड़ कर अभिवादन किया।

"अरे बाप रे! क्या झुक कर सलाम करना जरूरी है? क्या हम सब एक बराबर पैदा नहीं हुए?" सिद्धांत विशेषज्ञ नारायणी ने धिक्कारा।

शेरनी रजिया, जिस की आंखें गुरु

पा गए हैं मंजिल...

सब्रो जन्त के ले के बेशुमार नजराने,
तेरी याद आई थी आज मुझ को समझाने।
पा गए हैं मंजिल को खुद बखुद ही दीवाने,
अकल के दोराहे पर खो गए हैं फरजाने।
तुम ने बात कह डाली कोई भी न पहचाना,
हम ने बात सोची थी बन गए हैं अफसाने।
—जहराबानो

द्वारा प्रशंसा और शराब के असर से धुंधली हो गई थी, शराब का गिलास गुरु के हाथों तक ले गई ताकि वह उस में से एक घूट पी सके. साथ ही उस ने कहा, "और हमारा मत है कि औरत किसी व्यक्ति विशेष की संपत्ति नहीं है," उस ने गुरु की होने वाली बीवी चित्रा की ओर कठोर नेत्रों से देखा, जो अपने प्रेमी चिल्द्र को बारबार चूमे जा रही थी. वह अपने दिल में यह सोच रही थी कि गुरु की प्रेमपात्री केवल उसी को होना चाहिए, अन्य किसी को नहीं.

इसी समय गयाप्रसाद ने चिल्द्र के कानों में कुछ कहा. चिल्द्र जोरों से हंसा और शराब के नशे में बोला, "नहीं, गयाप्रसाद, नहीं." तब सब को संबोधित करते हुए उस ने कहा, "मित्रो, गयाप्रसाद को इस बात का भय है कि नीलहट के सुबह जल्दी उठने वाले लोगों को हमें देख कर कुछ शक हो सकता है. मैं अपने मित्र को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ऐसा कुछ नहीं होगा."

वह अपने विचारों को क्रमबद्ध करने के लिए कुछ रुका. नारायणी ने दा कोस्टा का सिर सहलाते हुए कहा, "क्या शताब्दियों के अत्याचार से लाखों मूक लोग परेशान नहीं हुए हैं? क्या उन्होंने सब कुछ नहीं देख लिया है, सब कुछ नहीं सहन कर लिया है और अनेक प्रकार के कष्ट नहीं उठाए हैं? क्या उन्होंने परंपरा का अनुसरण करने के नाम पर अपना शोषण नहीं होने दिया है? क्या उन्होंने वास्तव में किसी बात के विरुद्ध विरोध प्रदर्शित किया है?"

दा कोस्टा, जो इतनी देर तक शराब का मजा ले रहा था, नारायणी की गोद में पसर गया. उस ने अपनी कुहनियों की मदद से उठने का प्रयत्न किया और गयाप्रसाद को आश्वासन दिया, "गया-प्रसाद, क्रूर परंपराओं का विरोध करने के लिए हमारे 'नया आंदोलन' की स्थापना की गई है. उस से लाखों साधन-

हीन लोगों को नैतिक समर्थन और प्रेरणा प्राप्त हो रही है. हम उन्हें मुक्त करने पर तुले हुए हैं..."

वह अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया और फिर नारायणी की गोद में लुढ़क गया. सिसीलिया, जो राजाजी के शरीर पर लेटी हुई थी, उठी और बोली, "हम उतारे हुए कपड़ों की तरह सारे रीतिरिवाजों और परंपराओं का परित्याग करा के उन्हें मुक्त करना चाहते हैं." वह निर्वस्त्र हो गई और अपने धात कपड़े नाली में फेंक दिए.

"भारतीय नारी के मागं में आने वाली सारी बाधाओं को ठीक इसी प्रकार पुराने कपड़ों की भांति उतार फेंकना चाहिए," अपना ब्लाउज उतारते हुए नारायणी ने कहा, "लो, मैं शालीनता और विनम्रता सब छोड़ रही हूं."

अपना पेटीकोट उतारते हुए उस ने कहा, "अब मैं अपनी लज्जा छोड़ रही हूं." अपनी चोली और जाधिए को भी उतार कर पांवों से रौंदते हुए और नाली में फेंकते हुए उस ने घोषणा की, "अब मैं नई परंपरा अपनाने के लिए सारा पाखंड पुरानी परंपरा के कूड़ाखाने को भेंट कर रही हूं."

"कमाल है, कमाल है, बहादुर लड़की!" सब लोग चिल्ला पड़े और प्रशंसापूर्ण नेत्रों से उस का जयगान करने लगे.

हाथ में शराब का गिलास ले कर रजिया ने मौन बने गया को विश्वास दिलाया, "गयाप्रसाद, तुम ने भारतीय नारी द्वारा किए जा सकने वाले पापों के बारे में सुना होगा. अब तुम हमारी नई परंपरा देख कर हमारे भावी समाज के तौरतरिकों की कल्पना कर सकते हो. कितना अच्छा समय आने वाला है."

उस ने शराब का एक कड़ा घूट गले के नीचे उतारा, गुरु का प्रगाढ़ आलिंगन किया और उसे खींच कर गया-प्रसाद की दुकान के सब से अंधेरे कोने

में ले गई. केवल उसकी हीने वाली की बहुत सस्ता माना जाने लगा है और
 बीवी चित्रा को इस बात से धक्का लगा
 और वह अपनी आंखों में निराशा और
 अविश्वास को भरे बिना हिलेडुले बैठ
 रही तथा दोनों आकृतियों को एकदूसरे
 को लड़खड़ाते कदमों से खींच कर अंधेरे
 के खोखलेपन की ओर ले जाते हुए
 देखती रही.

गुप्तचर विभाग के एक आदमी के
 बिलकुल गायब हो जाने के कारण पुलिस
 ने नई ताकत के साथ नीलहट में चारों
 ओर अपना जाल फैला दिया. यह इलाका
 सारे राष्ट्रीय दैनिक पत्रों में खोजपूर्ण
 संपादकीयों की विषयवस्तु बन गया. वे
 इस बात में घोर संदेह प्रकट करने लगे
 कि क्या कोई सुसंस्कृत सरकार चल
 रही है या नहीं, क्योंकि मनुष्य के जीवन

इस प्रकार प्रशासन के इसपाती ढांचे का
 अपमान किया जा रहा है. सैनिक गाड़ियों
 में पुलिस इस इलाके में गश्त लगा रही
 थी. उस ने कुछ ऐसे लोगों को गिरफ्तार
 भी किया जिन पर संदेह हो सकता था,
 लेकिन उसे कोई सूत्र नहीं मिल पाया.
 पुलिस ने गंदे तरीकों का भी प्रयोग किया
 जो न केवल असफल हो गए बल्कि उन
 से पुलिस के तरीकों पर यह कलंक भी
 लग गया कि वे बेकार हैं.

एक फेरी वाले को पकड़ लिया
 गया और उस से पूछताछ की गई. जब
 अपने नामपते के बारे में उस ने कोई
 संतोषजनक उत्तर नहीं दिया तो भरी
 दोपहरी में उस की हत्या कर दी गई.
 जनता के शत्रुओं को चेतावनी देने के



“ओह, तो तुम ने मेरे दस्ताने को यहां रख दिया है?”

लिए एक सप्ताह के बाद बहादुर कुछ खरी-
कटे हुए सिर का प्रदर्शन किया गया।
जमीन पर खून ही खून था, जिस से
नीलहट की पहले से ही खून से भरी
मिट्टी और खून से भर गई। दृश्य इतना
भयानक था कि कठोर से कठोर दिल भी
डर से कांपने लगे।

इसी बीच गयाप्रसाद को यह खबर
मिली कि 'नया आंदोलन' के सदस्यों
द्वारा जेल तोड़ने का प्रयास किए जाने के
उपरांत अनेक स्थानीय युवकों की हत्या
कर दी गई, जिन में एक इस इलाके की
गतिविधि का निदेशक कांगकांग भी था।
जब आतंक फैलना शुरू हुआ तो नील-
हट की पार्टी में दरार पड़ने लगी।

एक सप्ताह के बाद बहादुर कुछ खरी-
दारी करने के लिए गयाप्रसाद
की दुकान पर आया। उस ने यह समा-
चार दिया कि रेडियो डाइरेक्शन फाइंडर
के जरिए 'याक' का पता लगा लिया
गया है और उस के दो कर्मचारियों को
बंदी बना लिया गया है। बाहरी संसार
के साथ सारा संपर्क समाप्त हो गया था
और शेरनी को छोड़ा दिया गया था।

"गन पाउंडर के एक पैकेट और
50,000 रुपए के साथ तू आज ही
पुरुलिया जल विद्युत केंद्र की ओर जा।
गन पाउंडर का कोड नाम है : 'गोल्डन
टैल्क' " बहादुर ने फैसला दिया।

"पुरुलिया? आज ही?" गयाप्रसाद
बबराहट में लगभग चीख पड़ा।

"गया, हीलाहवाला मत कर."
बहादुर ने कठोर शब्दों में आदेश दिया।

जब गयाप्रसाद पुरुलिया पहुंचा, उस
समय तक शाम के सात बज चुके थे। वह
तुरंत एक साइकिलरिक्षा पर सवार
हो गया।

रिक्षा वाले ने उस से पूछा, "कौन
से रंग?"

रंग? वह यह सोच कर अवाक
रह गया कि रंग का क्या मतलब। तब
उस के दिमाग में तुरंत यह बात आई
कि शेरनी ने अपनी पहली मुलाकात में

उस से सही पहचाना था और अगले
दिन बहादुर उस की दुकान से लाख
मिर्च और हरी मटर खरीदने के लिए
आया था। अब कड़ी पूरी तरह जुड़ गई
थी।

उस ने उत्तर दिया, "लाल और
हरा।"

रिक्षा वाले ने बिना एक भी शब्द
बोले 'गोल्डेन टैल्क' का एक पैकेट अपने
रिक्षा में चढ़ा लिया और जल विद्युत
केंद्र की ओर चल पड़ा। जब गयाप्रसाद
वहां पहुंचा तो चिल्डू गुरु, जो वहां पर
जाली नाम से रह रहा था, वह सामान
लेने के लिए तैयार बैठा था।

"अरे गया, तुझे देख कर मुझे
कितनी तसल्ली हुई। अगर तुझ से जरा
सी भी गलती हो जाती तो तू निश्चय
ही यहां तक नहीं पहुंच पाता। दोनों
चीजों में से एक के भी जरा से दुरुपयोग से
तेरे टुकड़े टुकड़े हो जाते, क्योंकि वह..."
रिक्षा वाले की ओर संकेत करते हुए
गुरु ने कहा, "वह भी हमारे भाइयों में से
एक है और पूरी तरह हथियारबंद है।
गया, तू वाकई बहुत साहसी है। लेकिन
हमें एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए।
मैं ने आधी रात के समय सफ़िक हाउस
में एक पार्टी की व्यवस्था की है। ये चीजें
उस समय हमारे मित्रों में वितरित की
जाएंगी।"



“कल की रात नए चांद की रात है, क्यों, चिल्दू दा?”

“गलत नहीं, ठीक है और इस में हमारा फायदा ही है,” चिल्दू ने उसे आश्वासन दिया।

गयाप्रसाद असाधारण रूप से गंभीर और विचारमग्न हो गया। उस ने जल्दी-जल्दी कुछ सोचा। गुरु के कानों में कुछ फुसफुसाया और वापस चल पड़ा। रिक्शा वाला पहले ही जा चुका था।

गयाप्रसाद ने रात में 11 बजे कलकत्ता जाने वाली आखिरी गाड़ी पकड़ी। सुबह तक वह कलकत्ता पहुंच गया। जिस से मिलना था उस से मिला और फिर पुरुलिया लौट आया। इस बार उस के साथ कई साथी थे।

जब गयाप्रसाद गुरु के पास पहुंचा, उस समय तक रात के 10 बज चुके थे। अपने क्रोध पर नियंत्रण न कर पाने के कारण चिल्दू ने इतनी देर से उस के आने का कारण जानना चाहा।

“चिल्दू दा, मैं बंगालबिहार सीमा के उस पार स्थित अपने गांव में अपनी मां को देखने चला गया था। वह गांव यहां से अधिक दूर नहीं है।”

इस से गुरु कुछ नरम पड़ा। उस की आंखों के सामने उसी के हाथों गया के बाप बुधिराम की हत्या का दृश्य घूम गया। “गया, अतीत को भूल जा,” उस

ने उसे सात्वनी देने की निरर्थक प्रयास किया। “विशेष बात यह है कि भविष्य में क्या होता है, क्योंकि हम अपने आंदोलन का लक्ष्य लगभग प्राप्त कर चुके हैं।”

वह जाने को तैयार हुआ लेकिन जाने से पहले उस ने गयाप्रसाद को यह बता दिया कि सर्किट हाउस वास्तव में पुरुलिया से पांच मील दूर पहाड़ी जंगल में स्थित स्कूल की एक पुरानी जीर्णोद्धार इमारत है। उस रात की बैठक वहीं पर होनी थी। सब बड़े नेता वहां इकट्ठे होंगे और युगान्तरकारी निर्णय लेंगे।

बैठक आरंभ होने के काफी पहले ही गयाप्रसाद एक उपयुक्त अंधेरे कोने में जा कर बैठ गया। वह पुरानी इमारत पार्टी के लोगों से घिरी थी। जब घड़ी ने 12 बजाए, बड़ेबड़े नेता—राजाराम, सिसीलिया, दा कोस्टा, गुरु, नारायणी, नरोत्तम शाह और कुछ थोड़े से ऐसे युवक आने लग गए, जिन्हें उस ने पहले कभी नहीं देखा था।

सब लोग लंबी मेज के चारों ओर बैठ गए। नरोत्तम शाह और उस के युवा साथी एक ओर बैठ गए तथा गुरु और उस के पुराने साथी दूसरी ओर। कमरे में केवल एक ही मोमबत्ती का प्रकाश हो रहा था। सब किसी की गन पाउडर और रुपए-पैसे वितरित किए जा रहे थे। सम्मेलन आरंभ हो गया।

नरोत्तम शाह ने बोलना शुरू किया, “चूंकि शेरनी रजिया को छोड़ा दिया गया, इसलिए ‘याक’ बंद हो गया। कांग-कांग की हत्या कर दी गई। हमारे आंदोलन को अज्ञात कारणों से ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है जिन का पहले से अनुमान नहीं किया जा सकता था।”

“अज्ञात कारणों से?” सिसीलिया ने पूछा।

“हां, सिसीलिया। अत्यंत साधारण लोगों के कारण। हमारे नेतृत्व संभालने के बाद से जिन्होंने हमारी ओर एक उंगली तक उठाने का साहस नहीं किया

नगमात हुस्न...

हर एक चलन में
उसी मेहरबां से मिलती है,
जमीं जरूर कहीं
आसमां से मिलती है।
सरोदे इश्क में
नगमाते हुस्न शामिल हैं,
तेरी खबर भी
मेरी दास्तां से मिलती है।

—सफीद्दुन ‘सैफ’

था, वे ही अब हमारा विरोध कर रहे हैं।

“तू दिवास्वप्न देख रहा है,” गुरु चिल्द्र ने बीच में ही टोका।

“क्या आप यह जानते हैं,” एक युवक ने गुरु को परिस्थिति का सही ज्ञान कराने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली, “कि हमारे साधारण कार्यकर्त्ताओं ने संपूर्ण देश का कितना अहित किया है? धनी या गरीब समाज का ऐसा एक भी वर्ग नहीं है जिस में हमारे कार्यकर्त्ताओं ने घुस कर उसे आर्थिक दृष्टि से पूरा दुह न लिया हो और नैतिक दृष्टि से बिलकुल पतित न बना दिया हो। प्रोत्साहन पा कर वे लोग बहुत गहरे पैठ गए हैं। उन्होंने हमारे समानता के सिद्धांत को बहुत तोड़ामरोड़ा है। वे कहते हैं कि जो जन्म से नहीं मिल पाता उसे समाज प्रदान करने में समर्थ है। वे न केवल सामाजिक संपत्ति का बल्कि भोगविलास के साधनों का भी एक भाग लेने की मांग कर रहे हैं। हमारे इस सामाजिक सिद्धांत की कि ‘नारी किसी व्यक्ति विशेष की संपत्ति नहीं होती,’ यह एक विकृत व्याख्या है। वस्तुतः संपूर्ण देश नीलहट्ट का एक विकृत रूप बन गया है। इस में लोगों का कोई दोष नहीं कि वे इस अंधकार, जड़ता और नैतिक दिवालियापन से उबर नहीं पाते।”

“अब मुझे असली बात पर आ जाना चाहिए,” नरोत्तम ने कहा, “हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में हमारे ‘नया आंदोलन’ का चित्र अत्यंत भयावह है। हत्याकांड, मदिरापान, सामूहिक यौन संबंध, पैसा ऐंठना और व्यक्ति प्रधान नेतृत्व—ये सब मिल कर लोगों को अमानवीय अधिनायकवाद का आभास दे रहे हैं। यहांवहां कुछ राज्यों में भूमि सुधार सही ढंग से नहीं किया गया है और फसल फिर लौट कर जमींदारों के पास आ जाती है—जमीन पर नाम सिर्फ उन के संबंधियों का रहता है। किसानों तक फसल के पहुंचने के बहुत पहले ही हमारे नीति संबंधी लक्ष्य छिप

जाते हैं। इस के अतिरिक्त जिन युवकों पर हम अपने आंदोलन की सफलता के लिए इतने अधिक निर्भर हैं, वे आम लोगों की भाषा में बात नहीं करते। इस का यह परिणाम होता है कि वे आम लोगों से दूर पड़ गए हैं। इस में आतंक को और जोड़ दीजिए।”

राजाराव, जो मानसिक तनाव पर नियंत्रण न पा सकने के कारण फर्श पर टहल रहे थे, बोले, “तुम्हारा निराशावादी विश्लेषण विश्वास की अभिव्यक्ति की जगह आरोपत्र अधिक प्रतीत होता है।”

“यह मुझ पर छोड़ो, राजा,” गुरु ने टोका और कहा, “दोनों भाइयों की आलोचना असंतुलित है। उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात को भुला दिया है। जब किसी राष्ट्र के जीवन में उग्र उपायों के सहारे शीघ्रतापूर्वक और क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए प्रयास किया जाता है तो जीवन व समाज के सारे पक्षों में अनेक प्रकार की अतियां प्रविष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार जो शक्तियां उत्पन्न होती हैं, वे वास्तव में स्वीकारात्मक शक्तियां होती हैं, जिन से सामाजिक मूल्यों का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। जब उन पर नियंत्रण नहीं हो पाता तो वे नकारात्मक और नाशकारी सिद्ध होने लगती हैं और अपने जन्मदाताओं का ही अहित करने लगती हैं। इसी कारण यह कहा जाता है कि क्रांति अपने बच्चों को स्वयं खा जाती है।”

साथ ही उस ने यह भी कहा, “हमारे आम कार्यकर्त्ता इस समय जो कुछ भी कर रहे हैं, उसे उन के उत्साह का प्रथम परिणाम कहा जा सकता है। इस से अधिक कुछ नहीं। थोड़ीबहुत काट-छांट से हमारे नीति संबंधी लक्ष्य लोगों को फिर स्वीकार्य हो सकते हैं,” गुरु ने अत्यंत कुशलता के साथ वास्तविक स्थिति का जो चित्र प्रस्तुत किया वह उस के सारे आलोचकों का उत्तर प्रतीत होता था, “और जहां तक व्यक्तिवादी नेतृत्व

का संबंध है..."

एक युवक ने तब गुरु का चेहरा पुराने निहित स्वरों का है."

"यह बात नहीं..." गुरु का चेहरा स्याह पड़ गया।

एक अन्य युवक ने उतने ही जोर से कहा, "और हम अपने नीति संबंधी परिवर्तित लक्ष्यों से युक्त विकासशील नई शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो जनता की आकांक्षाओं और इच्छाओं के अधिक अनुकूल हैं। इस के अतिरिक्त, उन्हें ऊपर से नहीं थोपा गया है। वस्तुतः हम ने अपना नया घोषणापत्र आप के घणा के सिद्धांत से अलग हो कर तैयार किया है। आप के किताबी तर्कों को भी हम अब स्वीकार नहीं करते।"

"और तू, नरोत्तम?" गुरु ने अचानक उस को ओर रुख कर के कहा, "क्या मुझे यह मान लेना चाहिए कि नया मसीहा तू ही है? अरे, हमारी इस मैत्रीपूर्ण बैठक का क्या बन गया?"

"एक अन्य शक्ति परीक्षण..." एक अन्य युवक की आवाज उस अर्ध प्रकाशित हाल में गरजी।

पूरा सन्नाटा छा गया। कोई भी अपने स्थान से नहीं हिला। तभी उस रात के सर्वाधिक नाटकीय व्यक्ति ने प्रवेश किया।

"युवक! तुम एक प्रकार से ठीक हो," गयाप्रसाद ने स्पष्ट और विश्वासपूर्ण आवाज में कहा, "लेकिन, सज्जनो, अपने चारों ओर देखो, आप संकट में हैं और लोह पुरुषों से घिरे हैं।"

रात्रि के अर्ध प्रकाश में अनेक बंदूकें उन के शरीरों को निशाना बना कर तनी हुई थीं।

"गयाप्रसाद, तू?" चिल्लू गुरु ने चीख कर कहा।

"हां, चिल्लू दा। कई महीने पहले ठीक ऐसी ही एक रात को तुम ने मेरे पिता की हत्या की थी। तब से..."

एक युवक को अपना हाथ अपनी जेब में डालने की कोशिश करते देख

मुक्ता

निर्णय मुक्ति में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण लेखों के रिप्रिंट सेट नं. 2.

ईश्वर, आत्मा और पाप
कितना महंगा धर्म
कितना महंगा धर्म : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
राम कथा व सीता चरित्र
सताई गई नारी
सरिता और हिंदू समाज
तुलसी साहित्य अनुवादों की सफल नुमाइश के सिवा क्या है?
तुलसी साहित्य : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?
रवण
रामचरितमानस के अविश्वसनीय प्रसंग
रामचरितमानस के कुछ असंगत स्थल
श्रीकृष्ण
गीता : कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण का आत्मप्रचार
क्या कौमार्य रक्षा दकियानूसी है?
कृष्ण और राधा
श्रीमद्भागवत
भागवत और भूगोल
समाजवाद बनाम स्वतंत्रता
हिंदू विवाह पद्धति
कामायनी
पुत्रेष्टि यज्ञ
तुलसीदास और हिंदू समाज
हिंदी साहित्य का गलत इतिहास
धनुषयज्ञ
कृष्ण और गोपियों
हमारे देव मंदिर
क्या समाजवाद अनिवार्य है?
विवाहपूर्व यौन संबंध
श्रीकृष्ण अपने जीवन की संघ्या में
कितना महंगा धर्म (निर्णय)
कृष्ण और कुन्जा

सेट नं. 2 का मूल्य पांच रुपए. मूल्य मनी/पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें. वी. पी. पी. डांग भेजना संभव नहीं. अध्यापकों, ग्राम सेवकों, ग्राम पंचायतों के लिए आधा मूल्य.

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस,

नई दिल्ली-1.

गयाप्रसाद गरजा, "बच्चो, बेवकूफ मत बनो, नहीं तो तुम्हारे पिता के नाम पर भी तुम्हारे पिता की जगह मिलेगी, और तुम सब मारे जाओगे।"

उस ने कहना जारी रखा, "तब से मैं तुम्हारा शिकार करने की ताक में था। लेकिन मेरे जीवन का यह अवसर कल आया। नहीं, चिल्द दा, मैं पुलिस वालों से निश्चय ही नहीं मिला हुआ था, नहीं तो मैं तुम्हारा विश्वासपात्र न बन पाता। मैं ने केवल आज सुबह कलकत्ते में, जहां से मैं लौट रहा था, उन की सहायता लेने का प्रयास किया। यही कारण था कि मैं तुम्हारे पास उतनी देर से आया। मैं कल सुबह बंगालविहार सीमा के उस पार अपनी मां के पास लौट जाना चाहता हूं। मैं उसे बताना चाहता हूं कि मैं हजार बार मर चुका हूं। अब तक मैं अपने पिता के हत्यारों की गुलामी करता रहा।"

पुलिस ने सब को गिरफ्तार कर लिया।

"नीच गयाप्रसाद! क्या तू यह

समझता है कि तू बच कर भाग सकेगा?" चिल्ला पड़ा।

"आशावादी बने रहो, चिल्द दा, आशावादी बने रहो। लेकिन इस से पहले कि मैं तुम सब से विदा लूं, मुझे तुम से यह बता देना चाहिए कि शेरनी को गुरु की प्रेमिका चित्रा के सिवा अन्य किसी ने धोखा नहीं दिया, जिस का गुप्तरिपोर्टर बहादुर और शायद अन्य अन्य छोटेमोटे कार्यकर्त्ताओं के साथ इस समय कलकत्ते में पीछा किया जा रहा है। नमस्कार!"

यह गर्व तथा संतोष की भावना से मिश्रित विदा थी। गयाप्रसाद स्कूल की पुरानी इमारत से नीचे उतर आया और रात्रि के शीतल तथा गहन अंधकार में खो गया।

बंगाल में एक युग समाप्त हो गया और वहां का एक साधारण सा नागरिक गयाप्रसाद उस का नवनिर्माता बन गया।

विवाह और सुखी जीवन

मूल्य : ४ रुपए. (डाक खर्च अतिरिक्त)

सरिता, मुफ्ता के स्यादी ग्राहकों से केवल २.५० रु.

मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक खर्च माफ.



विवाह से पहले आप को क्या जानना चाहिए? पतिपत्नी एकदूसरे को समझने में कहां गलती करते हैं? और पारिवारिक शांति, सुख और सफलता की कुंजी क्या है?

इस पुस्तक में सुखी पारिवारिक जीवन से संबंधित सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर सहज, सरल भाषा और रोचक शैली में प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक दाम्पत्य जीवन की उलझी गुत्थियों को सुलझाने और टूटते परिवारों को बचाने में सहायक सिद्ध होगी।

दिल्ली बुक कंपनी, एम.१२, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

जुलाई (द्वितीय) १९७१



इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री विश्वेश्वरनाथ, नई दिल्ली, हैं.

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी हांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● मित्र के लिए जान दी

वर्दवान (पश्चिम बंगाल). यहां अटवा क्षेत्र के अगरदीप गांव में गत 14 मई को एक किशोर छात्र संजीव भट्टाचार्य अपने एक सहपाठी को गंगा में डूबने से बचाते समय स्वयं डूब गया. तैरते समय उस ने देखा कि उस का मित्र भंवर में पड़ गया है. उस ने तत्काल कूद कर उसे बचा लिया पर स्वयं भंवर में पड़ कर डूब गया.

—दैनिक विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक : सुशील छाबड़ा, गौहाटी)

● ईमानदार चौकीदार

अलीगढ़. स्थानीय डी. ए. वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का चौकीदार पृथ्वीपालसिंह चार सौ रुपए का चैक ले कर एक स्थानीय बैंक में भुनाने गया. खजांची ने गलती से उसे 11,800 रुपए 60 पैसे दे दिए, जिन्हें देख कर उस ने कहा, "बाबूजी, यह आप ने क्या थमाया है?"

इस पर खजांची ने गरम हो कर कहा, "तेरे चैक के जितने रुपए हैं, तुझे दे दिए. अब बकवास न कर, यहां से चला जा."

चौकीदार, जिस के पास कोई थैला आदि नहीं था, झोली में उन रुपयों को ले कर सीधा प्रधानाचार्य के पास पहुंचा. उस ने सारे रुपए उन की मेज पर रख दिए और वहीं मूर्छित हो गया. प्रधानाचार्य ने फोन कर के बैंक से आदमी बुलाए और रुपए सौंप दिए. —नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : विश्वेश्वरनाथ, नई दिल्ली)

● भिखारिन ने बालक को अपहरणकर्ताओं से बचाया

बलौदावाजार. कुछ असामाजिक तत्त्वों द्वारा इस क्षेत्र के बच्चों का अपहरण एक लंबे अरसे से किया जा रहा बताया जाता है. यहां एक कार सेवासदन भोजनालय के करीब आ कर रुकी, जिस में से दो आदमी उतरे. वे अंतिम छोर पर सीए हुए एक बालक को उठा कर कार में बिठाने का प्रयास करने लगे. तभी एक भिखारिन बुढ़िया की निगाह अचानक उन पर पड़ी. उस ने शोर मचा दिया. वहां का पालतू कुत्ता भी आवाज सुन कर अपहरणकर्ताओं पर दूट पड़ा. अपहरणकर्ता बालक को वहीं छोड़ कर फरार हो गए.

—दैनिक देशबंधु, भोपाल (प्रेषक : राजेश गुप्ता, भोपाल)

● वधू द्वारा विवाह से इनकार

बड़नगर. वर पक्ष द्वारा दहेज की मांग व मारपीट की वजह से यहां एक वधू शकुंतला ने शादी करने से इनकार कर दिया और बरात बिना शादी के वापस चली गई. इस घटना के बाद नगर के एक अन्य युवक ने शकुंतला से शादी करने की स्वीकृति दे दी. घटना के अनुसार बड़नगर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की भृत्या अयोध्याबाई की पुत्री शकुंतला की बरात उज्जैन से आई थी. दहेज के प्रश्न पर झगड़े की वजह से वधू ने शादी से इनकार कर दिया. बाद में वर पक्ष के लोग तो शादी के लिए तैयार हो गए, किंतु वधू अपने निर्णय पर अडिग रही. बरात को बिना वधू के वापस लौटना पड़ा.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : सूरजमल आचोलिया, कोटा)

भरतपुर से लगभग 15 किलोमीटर दूर भरतपुरमथुरा सड़क मार्ग पर स्थित सैन्ट्रल ग्राम में छात्रों ने हाल ही में श्रमदान कर गांव में लगभग 15 फुट गहरा एक कुआं खोदा है और उस पर ग्रामीणों की सहायता से एक पंपिंग सैट लगा कर गांव की लंबे समय से चली आ रही पानी की समस्या दूर कर दी है। लगभग 60 परिवारों की इस बस्ती के आसपास 5 किलोमीटर के दायरे में पहली बार यहीं जमीन के नीचे से भीठा पानी निकला है और वह भी काफी मात्रा में।

—अमर उजाला, आगरा (प्रेषक : गिरीशचंद्र अग्रवाल, फिरोजाबाद)

● महिला की दिलेरी

लखनऊ. एक महिला श्रीमती मुनिया की दिलेरी से 6 मई को नाका थाने के अंतर्गत भूसा मंडी स्थित सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान से चावल की चोरवाजारी पकड़ी गई। पुलिस के अनुसार महिला सड़क पर लगे नल से पानी भरने गई थी। अचानक उस ने देखा कि एक व्यक्ति अपनी साइकिल पर राशन की दुकान से एक गठरी ले गया। थोड़ी देर बाद वह फिर आया और दूसरी गठरी ले जाने लगा। महिला ने उसे रोक लिया। उस व्यक्ति ने भागने की कोशिश की, लेकिन महिला की गिरफ्त से निकल न पाया। महिला अन्य लोगों के सहयोग से उसे पकड़ कर विधायक श्री रमेशचंद्र श्रीवास्तव के पास ले गई और उन्हें सारी घटना बताई। श्री श्रीवास्तव ने तत्काल जिला पूर्ति अधिकारियों को बुलाया। जिला पूर्ति अधिकारियों ने राशन की दुकान के मालिक, राशन तोलने वाले तथा चावल ले जाने वाले व्यक्ति को पुलिस के सुपुर्द कर दिया। —स्वतंत्र भारत, लखनऊ (प्रेषक : रामसेवक 'बोधन', लखनऊ)

● कृषकों ने शेर को मारा

आष्टा. पिछले दिनों ग्राम कोठरी के कृषकों ने एक शेर को मारने में सफलता हासिल की। यह शेर गन्ने के खेत में कार्य कर रहे किसानों पर अचानक ही दूट पड़ा था। कृषकों ने धैर्य एवं साहस से काम लिया। उन्होंने शेर को चारों ओर से घेर कर कुल्हाड़ी से उस पर वार किया और उसे मार डाला। इस संघर्ष में कुछ ग्रामीण भी घायल हो गए। —नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : जवाहरलाल डोसी, महिंदपुर)

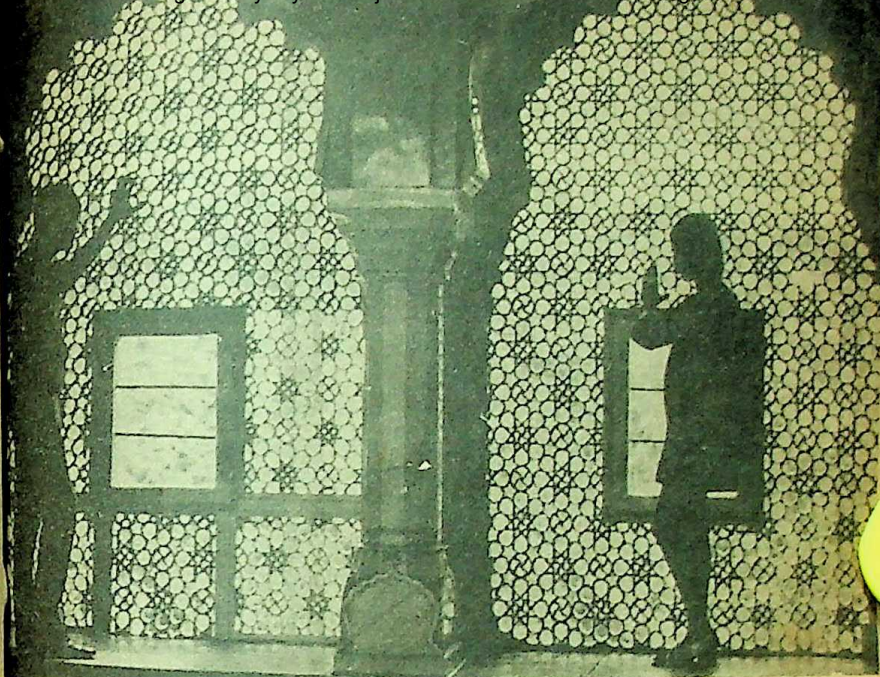
● अर्दली की ईमानदारी

अमृतसर. यहां के एस. पी. सरदार हरमेलसिंह के अर्दली सेवासिंह को कोतवाली के निकट बैंक आफ बड़ौदा के एक कर्मचारी की पासबुक मिली, जिस में 2,400 रुपए के नोट तथा 2,500 रुपए का एक चैक रखा था। सेवासिंह ने पासबुक, रुपए व चैक एस. पी. को दे दिए, जो बाद में बैंक कर्मचारी को पहुंचा दिए गए। —पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : मनोहरलाल जैन, भटिंडा)

● चीते से साहसिक संघर्ष

बीजापुर. 20 अप्रैल को यहां से 20 किलोमीटर दूर ग्राम कुटूरु में मैदा नामक एक साहसी युवक ने अपनी जान पर खेल कर न केवल एक लड़के के प्राण बचाए बल्कि चीते से संघर्ष कर उसे मार डाला।

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि एक लड़का जंगल में अपना बेल खोव रहा था। अचानक एक खूंखार चीते ने उस पर हमला कर दिया। वह लड़का किसी तरह घायल अवस्था में ही बच कर भागा और चिल्लाया। चिल्लाने की आवाज सुन कर पास के छात्रावास का चपरासी मैदा घटनास्थल पर पहुंचा। उस ने लड़के को उठाया। पर चीते ने उसी पर हमला कर दिया। चपरासी मैदा लड़के को जमीन पर छोड़ चीते से संघर्ष करने लगा। वह धैर्यपूर्वक चीते से लड़ता रहा। अंततः उस ने चीते के गले में हाथ फंसा कर उसे मार डाला। इस संघर्ष में मैदा बुरी तरह घायल हुआ। —दैनिक नवभारत, रायपुर (प्रेषक : डाक्टर कौशलचंद्र दुबे, रायगढ़)



लेख • उत्सवकुमार चतुर्वेदी

वैज्ञानिक हलचल

सेक्स फर्मोस

प्रत्येक विपरीत लिंगी स्वभावतः एकदूसरे पर आकर्षित होते हैं, लेकिन आकर्षण का शारीरिक अवयवों से क्या संबंध है?

यदि आप महिला हैं तो ईमानदारी से बताइए, आप पुरुषों के प्रति क्यों आकर्षित हो जाती हैं? आप लाख बचाएं लेकिन आकर्षक पुरुषों का व्यक्तित्व विभाग पर छा ही जाता है, विशेषकर जब आप कुमारी हों। आप दिल, भावना या कुमारीमुलभ स्वभाव पर दोष मढ़ सकती हैं, लेकिन इस का वास्तविक कारण कोई

भावना नहीं, बल्कि आप के शरीर में पाए जाने वाले 'सेक्स फर्मोस' हैं, जो आप को पुरुषों के प्रति आकर्षित करते हैं।

अभी हाल में ही तीन अमरीकी वैज्ञानिकों, डा. मिचवेल, डा. वांसली और डा. वॉर्नर ने युवा नारियों में भी फर्मोस की उपस्थिति का पता लगाया है। इस के विव-

भी इस फर्मास के उपस्थित होने की बहुत पहले से ही आशा की जा रही थी, क्योंकि एक साधारण कीड़े से ले कर बंदर तक में नरमादा में आकर्षण के लिए वही रसायन उत्तरदायी पाया गया था। इधर वैज्ञानिकों को आश्चर्य हो रहा था कि यदि महिलाओं में फर्मास नहीं है तो मनुष्यों में विपरीत-लिंगी आकर्षण का क्या कारण है।

फर्मास कम अणुभार के कार्बनिक पदार्थ हैं और प्रायः वसीय अम्लों और टरपींस के बने होते हैं। फर्मास कई प्रकार के होते हैं और विभिन्न कार्य भी करते हैं, लेकिन मुख्य 'सेक्स फर्मास' ही हैं। इन का पता सर्वप्रथम कीड़ों की कामक्रिया का अध्ययन करने से चला। कीड़े तो अपने कामकलाप के लिए फर्मास पर बहुत ज्यादा निर्भर रहते हैं, लेकिन अन्य जंतुओं में भी यह उपस्थित रहता है। यही नरमादा में आकर्षण का मुख्य कारण है। कुछ जीवों में फर्मास की विशेष गंध कामसंदेश देती है, तो कुछ में उस का स्वाद।

इन वैज्ञानिकों ने 50 युवा महिलाओं के योनिस्त्रावों को ले कर 'गैस क्रोमोटोग्राफी' से उन का विश्लेषण किया। इन में अधिकांश वही फर्मास थे जो पहले विभिन्न प्रकार के बंदरों में पाए जा चुके थे। मुख्यतः एसिटिक, प्रोपियोनिक, मिथाइलप्रोपियोनिक, ब्यूटियोनिक, मिथाइलब्यूटियोनिक आदि। ये फर्मास बंदरों में अपनी विशेष गंध द्वारा कामसंदेश प्रसारित करते हैं।

घड़ी, जो आप के शरीर में है

जी हां। भले ही आप की कलाई में घड़ी न हो, लेकिन आप के शरीर में प्रकृति की दी हुई एक महान घड़ी तो है ही, जो आप को हमेशा समय की सूचना देती रहती है। और आप ही क्यों, प्रायः हर जीव के पास एक प्राकृतिक घड़ी है, पेड़पौधों के पास भी। इस घड़ी में न तो कभी चाभी देनी पड़ती है, न ही इसे कभी मिलाना पड़ता है। यह मृत्युपर्यंत जीव को

सही समय की सूचना देती रहती है। हम आप तो बंद कमरे में

अपनी कलाई घड़ियों से समय का अनुमान कर लेते हैं, लेकिन गुफा में हुए शेर को कौन सूचना देता है कि हो चुकी है? अंधेरी खोहों में लटके चमगादड़ों को कौन बताता है कि सूर्य डूब चुका है? फूलों से कौन कहता है कि दिन हो चुका है? वानस्पत्य सूर्य के पूर्णतया छिप जाने के बाद पक्षियों को कैसे पता चलता है कि होने वाली है? मधुमक्खियां तो इसमें में कमाल ही कर देती हैं। वे तब अपने अंधेरे छत्तों में छिपी रहती हैं तक कि उन के मनपसंद फूलों के का समय नहीं हो जाता। इतना ही नहीं मौसम बदलने के साथ यदि उस खिलने का समय भी बदल जाता है तो उन की घड़ी उन्हें सही ही सूचना देती है। अवश्य ही जीवों के शरीर में यह विचित्र घड़ी धातुओं की बनी कर जैविक टिशुओं और सेलों की होती होगी।

इस घड़ी को समय की अनुभूति होती है? प्रकाश के घटनेबढ़ने से उड़ने वाली गिलहरियों को एक रखा गया, जिस में उन के खानेपाने समुचित व्यवस्था थी। ऐसी की गई थी कि उन की सारी विधियों की सूचना दूर बैठे को बराबर मिलती रहे। कि प्रत्येक शाम को वे बहुत ही हो जाती हैं, ठीक अपने स्वतंत्र जीव ही तरह। कई दिनों तक ये प्रयोग और अंधेरे में किए गए, लेकिन वही नाम निकले।

इसी सिलसिले में एक अन्य किंतु यातनापूर्ण प्रयोग किया जीववैज्ञानिक डा. मिशेल स्टिफर ने में। वह एक पूर्णतः अंधकारपूर्ण लगभग दो महीने तक बंद साथ खाने, पीने, सोने वगैरा सुविधाएं थीं। लेकिन समय जानने साधन न था और न वह

जुलाई (द्वितीय)

कोई आवाज ही सुन सकते थे। ऐसा प्रबंध किया गया था कि डा. स्टिफर की गतिविधियों की सूचना बाहर बैठे वैज्ञानिकों को मिलती रहे। यह साश्चर्य देखा गया कि डा. स्टिफर की सारी गतिविधियां प्रायः 24 घंटे के ही चक्र में थीं। हालांकि उन के जागने और सोने का समय ठीक-ठीक नहीं मालूम होता था।

किंतु डा. स्टिफर उस तहखाने में बिताए गए दिनों को सही-सही गिन नहीं सके। 20 सितंबर, 1965 को जब उन्हें बाहर निकाला गया तो उन्होंने 14 अगस्त होने की बात कही।

इतने पर भी जीवघड़ी की कल्पना को कोई ठेस नहीं लगती। प्रायः देखा गया कि छोटे-छोटे जीवजंतुओं की जीवघड़ी उन्हें बड़ी सही सूचनाएं देती है।

पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूर्णन भी इस घड़ी के कार्य का आधार नहीं है। इस सिलसिले में एक भारतीय वैज्ञानिक डा. सिरौही ने बड़े साहसपूर्ण प्रयोग किए। उन्होंने ठीक दक्षिणी ध्रुव पर जा कर एक प्लेटफार्म तैयार किया, जो पृथ्वी के घूर्णन की विपरीत दिशा में ठीक उतने ही समय में एक चक्कर पूरा कर लेता था। जितने समय में पृथ्वी करती थी। इस प्रकार प्लेटफार्म पर रखी किसी चीज के लिए पृथ्वी का घूर्णन होगा ही नहीं। इस प्लेटफार्म पर अनेक जीवों को रख कर प्रयोग किए गए और पाया गया कि जीवघड़ी वहां भी ठीक काम करती है। इस से यह स्पष्ट पता चलता है कि जीवघड़ी का

संचालन पृथ्वी के घूर्णन से संबद्ध नहीं है। अन्य प्रयोगों से पता चलता है कि अवश्य ही दिन और रात के ताप का अंतर इस जीवघड़ी के संचालन में सहायता करता है। जीवघड़ियां स्थानीय मौसम के अनुसार संचालित होती हैं।

अभी तक वह रासायनिक प्रक्रिया नहीं मालूम हो सकी है जिस से यह घड़ी संचालित होती है। लेकिन आशा है कि शीघ्र ही वैज्ञानिक इस रहस्य पर से भी पर्दा हटा देंगे।

सागर से बिजली

आप जानते हैं, 21वीं शताब्दी में हमें ऊर्जा कहां से मिलेगी? क्या सूर्य से? हां, यह एक संभावना है।

एक दूसरी और भी प्रबल संभावना है। हमें उस समय विद्युत ऊर्जा मिलेगी सागर से। जी हां, सागर का भारी जल (ड्यूट्रियम मानो आक्साइड) से प्राप्त ड्यूट्रियम (इस की नाभि में केवल दो ही प्रोटॉन होते हैं) का नाभिकीय संगलन (न्यूक्लीयर फ्यूजन) कर के हम बड़ी मात्रा में ऊष्मा प्राप्त कर सकेंगे और उस से अंततः बिजली प्राप्त कर लेंगे।

हमारे जीवन में बिजली का दिन-प्रतिदिन उपयोग इस कदर बढ़ता जा रहा है कि हर दस साल बाद उस की खपत दोगुनी होती जाएगी। यदि यही रवैया रहा तो सन 1995 में हमें आज की तुलना में चौगुनी बिजली चाहिए। कहां

नहाने का यंत्र

ऐसे व्यक्तियों के लिए जिन्हें अपने-आप नहाना और सुखाना मुश्किल लगता है, अमरीका के रूडोल्फ लाम्प्ट ने एक नई शरीर धोवक युक्ति बनाई है, जो वास्तव में एक बेलनाकार खोल है और फर्श पर या उस से निचाई पर एक आधार पर स्थित रहती है। इस में लगे फुहारक उचित ताप पर पानी, द्रव, साबुन और गर्म हवा प्रवाहित करते हैं। नहाने के लिए इस में घुस जाने पर इस के गर्दन के गिरद अच्छी तरह फिट हो जाने की व्यवस्था है।

से आएगी इतनी बिजली? हमारे बिजली-घर, बिजलीघर भी हमारी इस मांग को पूरा नहीं कर पाएंगे।

और तब हमारे पास केवल दो विकल्प रह जाएंगे—सूर्य या सागर।

ड्यूट्रियम, हाइड्रोजन से दूना भारी तत्व है, जो भारी जल के विच्छेदन से प्राप्त किया जा सकता है। ड्यूट्रियम के परमाणु का अत्यंत उच्च ताप पर नाभिकीय संगलन कर के हीलियम का एक परमाणु, एक न्यूट्रान तथा 3.27 मेगा इलेक्ट्रान वोल्ट ऊर्जा मिलती है। यही ऊर्जा बिजली में बदल दी जाएगी।

किंतु इस दिशा में सब से बड़ी कठिनाई यह है कि यह प्रक्रिया तभी संभव है जब ड्यूट्रियम परमाणुओं की गतिज ऊर्जा अत्यधिक (कई सौ किलो इलेक्ट्रान वोल्ट) हो और कई अरब डिग्री सेंटीग्रेड तापक्रम पर ही संभव है। यद्यपि इतना उच्च तापक्रम उत्पन्न करना उतना कठिन नहीं है (यूरेनियम, प्लूटोनियम आदि के नाभिकीय संगलन से इतना अधिक ताप आसानी से प्राप्त किया जा सकता है), तथापि इतने ऊंचे ताप पर इन अणुओं

को संभालने के लिए पात्र बनाना ही समस्या है। कोई ऐसा ज्ञात पदार्थ है, जो इतने अधिक ताप पर भी बना रहे। किंतु चुंबकीय बोटलों के निर्माण के बाद यह समस्या भी हल जाएगी।

एक अनुमान के अनुसार सागरों में इतना भारी जल है कि हम 1×10^{17} किलोग्राम (1 के ताप शून्य लिखने पर बनने वाली संख्या) ड्यूट्रियम प्राप्त कर सकते हैं। ड्यूट्रियम इस मात्रा से उत्पन्न बिजली 1×10^{17} किलोग्राम कोयले से उत्पन्न ऊर्जा बराबर होगी, जो हमारे लिए कई वर्षों के लिए पर्याप्त होगी। यह पूर्णतः विकसित हो जाने पर अन्य विकल्पों से सस्ती भी पड़ेगी। इस विधि के विकसित हो जाने के बाद हम ऊर्जा संकट शायद हमेशा के लिए मुक्ति पा लेंगे।

अनेक देश इस दिशा में जोर दे रहे हैं जिन में अमरीका मुख्य है। इस काम में सब से मुख्य समस्या लीकप्रूफ चुंबकीय बोटलों के निर्माण की ही है। आशा है हमारे वैज्ञानिक इस समस्या को सुलझाने में अवश्य ही सफल होंगे।

जन्मोत्सव, विवाह
व अन्य
शुभ अवसरों पर



पुस्तकें भेंट में दीजिए

जुलाई (द्वितीय)

बच्चों के लिए स्वस्थ मनोरंजन तीन बाल उपन्यासों का नया सेट

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्रत्येक रु. 2.75



राजा की अंतरिक्ष यात्रा :

खेलखेल में ही राजा एक नए लोक में पहुंच गया, जहां की हर चीज इस दुनिया से अलग थी.....राजा ने निश्चय किया कि वह अपने साथियों को भी इस जगह लाएगा और एक नई दुनिया बसा कर स्वयं यहां का राजा बनेगा. क्या इसका यह सपना सच हो पाया? एक मनोरंजक और प्रेरणादायक बाल उपन्यास.

अज्ञात द्वीप :

'बाल कहानी प्रतियोगिता' में पुरस्कृत सात बालक व तीन बालिकाएं विमान द्वारा मिस्र जा रही थीं. तूफान में विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया मगर वे सभी बच निकले..... जिस द्वीप पर वे पहुंचे, वहां आदमी का चिन्ह तक न था. पास ही के एक अन्य द्वीप पर उन्हें एक खजाने के होने का पता चला, जिस की खोज में कुछ अंग्रेज डाकू आए थे. छोटे बालकों की डाकुओं से मुठभेड़ की रोचक कथा.

खोज की खोज :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक उमेश अपने विमान के साथ अंतरिक्ष में खो गए थे. कोई पता न चलने पर वैज्ञानिकों ने उन्हें लापता घोषित कर दिया. मगर उन का भतीजा दीपू इस निर्णय से संतुष्ट न था. और वह अपने मंगलवासी मित्र मिर्क के साथ उमेश चाचा को खोजने निकल पड़ा.....उन्होंने उमेश चाचा को किस तरह ढूंढा? इस खोज के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में क्याक्या देखा? बच्चों के लिए एक शिक्षाप्रद और मनोरंजक उपन्यास.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

शतरुद्र प्रकाश

युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व
करने वाला उत्तर प्रदेश का
सब से कम उम्र का युवा
विधायक...

उत्तर प्रदेश विधान सभा के सब से कम उम्र के सदस्य श्री शतरुद्र प्रकाश ने पिछले चुनाव में विजय के बाद अब तक लगभग एक साल में अपने क्षेत्र तथा युवकों के कल्याण के लिए काफी प्रयास किया है। कुल 27 साल की उम्र के और राजनीति के क्षेत्र में कुछ कर दिखाने के अभिलाषी युवक शतरुद्र प्रकाश का विधान सभा के लिए चुना जाना अपने-आप में काफी महत्वपूर्ण है।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय में एलएल. बी. के छात्र शतरुद्र प्रकाश जब चुनाव लड़ रहे थे, लोगों को उन की विजय में शंका थी, पर काफी मतों से हुई उन की विजय युवा शक्ति की प्रगति की द्योतक है। वाराणसी के छावनी विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित शतरुद्र प्रकाश काशी हिंदू विश्वविद्यालय के छात्र नेता रह चुके हैं और पिछले कई वर्षों से अपने चुनाव क्षेत्र की जनता की कठिनाइयों के विरुद्ध उन्होंने संघर्ष किया है। जिस आत्म-विश्वास के साथ शतरुद्र चुनाव लड़े थे, उसी आत्मविश्वास के साथ वह आज भी विधान सभा में विपक्षी सदस्य की

हैसियत से कार्य कर रहे हैं।

शतरुद्र प्रकाश का अपना व्यक्तित्व है। वह पिछले लगभग सात वर्षों से नेता रहे हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय बी. एससी. की परीक्षा में उत्तीर्ण के बाद वह एलएल. बी. करने लगे। बीच उन्होंने छावनी विधान सभा क्षेत्र ग्रामीणों की समस्याओं के लिए शुरु किया और उन के प्रयास से इन में कई नलकूप लगाए गए, नहरें सड़कों बनीं और अन्य विकास कार्य इस के लिए उन्हें कई बार अनवरत आंदोलन भी करने पड़े।

लगभग पांच फुट ऊंचे और शरीर के शतरुद्र प्रकाश अभी भी क्षेत्र का प्रायः दौरा करते रहते हैं। विधान सभा की बैठकों से छुट्टी मिलने पर अधिक समय अपने चुनाव क्षेत्र में बिताते हैं। कसरत, बागवानी और खेलों में उन की गहरी अभिरुचि है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी दिलचस्पी से भाग लेते हैं। "आराम एक निश्चित अधिक होने पर व्यक्ति को निश्चित देता है," शतरुद्र प्रकाश का कहना

उन्होंने इतनी दुःख में ही काफी उतारचढ़ाव देखे हैं। कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। पिछले दिनों गुंडों के किसी गिरोह से उन का मुकाबला हो गया था। रात के समय वह घर पर ही थे, तभी पड़ोस के किसी घर पर गुंडों का दल आ पहुँचा। सूचना मिलते ही युवकों के साथ उन्होंने उस घर को घेर लिया। गुंडों ने काफी क्षमा याचना की। आसपास या शहर में जब कभी किसी को परेशानी होती है, वह रात या दिन कभी भी शतरुद्र प्रकाश जी के पास जा कर उन से सहायता प्राप्त कर सकता है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के पिछड़ेपन की वह प्रायः चर्चा किया करते हैं। उन का कहना है कि यदि पूर्वी उत्तर प्रदेश का पिछड़ापन दूर करना है तो यहां लघु

उद्योगों की स्थापना करनी होगी और कृषि के लिए प्राथमिकता के आधार पर बिजली और पानी की सुविधा प्रदान कर किसानों को उन के उत्पादन का पूरा मूल्य देना होगा।

छात्रों की समस्याओं पर भी शतरुद्र प्रकाश प्रायः चिंतन करते रहे हैं। उन का कहना है कि छात्रों की समस्याओं का स्थायी समाधान जरूरी है। शिक्षा को व्यवसाय नहीं, दायित्व मानना चाहिए। छात्रों, अध्यापकों और छात्राओं को समाज के और अधिक नजदीक ला कर उन्हें सामाजिक दायित्व के प्रति जागरूक बनाना होगा।

मेरे प्रश्न और शतरुद्र प्रकाश के उत्तर निम्नलिखित हैं :

प्रश्न : क्या छात्रों और युवकों को राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए?

छात्राओं की एक सभा में शतरुद्र प्रकाश.





शतरुद्र प्रकाश

उत्तर : आज तक नौजवानों की उपेक्षा की गई है और बुनियादी सवालों की ओर से उन का ध्यान हटा कर उन्हें कुछ ऐसे कामों में फंसा दिया जाता है कि या तो वे विद्रोह कर बैठते हैं या फिर चुपचाप खुद को खपा देते हैं। प्रश्न तो यह होना चाहिए, युवकों को राजनीति में आने के लिए कैसे प्रोत्साहित किया जाए? नई पीढ़ी में निराशा और कुंठा व्याप्त है, स्कूल और विश्वविद्यालय भर चुके हैं, अगर जगह है तो भी वहां उसे कोई लाभ नहीं दिखलाई पड़ता, और नौकरी पा लेना भी कम मुश्किल काम नहीं ऐसी दशा में राजनीति का दरवाजा बंद पा कर युवक कभी समाज विरोधी कामों में लग जाते हैं तो कभी जीवन से ऊब कर समाज से कट जाते हैं। राष्ट्रीय नवनिर्माण में उन की कोई भी स्पष्ट भूमिका नहीं रह जाती। मैं तो यही समझता हूं कि युवकों और छात्रों को सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहिए।

प्रश्न : उत्तर प्रदेश के पिछड़ेपन के बारे में आप के क्या विचार हैं?

उत्तर : उत्तर प्रदेश के पिछड़ेपन की जब चर्चा की जाती है, तो अन्य बातों

के साथ ही यहां की युवा शक्ति के योग की बात पर ध्यान नहीं दिया जाता। प्रदेश आर्थिक रूप से पिछड़ा है पर प्रदेश का पिछड़ापन दूर करने के लिए यदि यहां के लाखों बेरोजगार शहरी श्रमिकों को खाली भूमि पर खेती करवाकर खास कर ग्रामीण युवकों का सहयोग करने की योजना तैयार की जाए तो बहुत कुछ किया जा सकता है। कृषि पर आधारित लघु उद्योगों का विकास कर यहां का विकास किया जा सकता है।

प्रश्न : क्या राजनीति से अलग कर भी प्रदेश के युवक प्रदेश के विकास के लिए कुछ कर सकते हैं?

उत्तर : उत्तर प्रदेश के युवकों की जागृति का अभाव है और उन में कुछ करने की चेतना उत्पन्न हो जाये तो वे प्रदेश में भ्रष्टाचार दूर करने में बहुत कुछ और उद्योग संबंधी तमाम समस्याओं का हल खुद ढूंढ निकाल सकते हैं। दृष्टि से मैं ने 'सिचाई सेना' नामक संगठन की योजना बनाई है, जिस में युवक और अन्य कामों में लगे युवक निरंतर संबंधी परेशानियां दूर करने का खुद प्रयास करेंगे। इसी तरह लघु उद्योगों की स्थापना और विकास तथा भ्रष्टाचार दूर करने के लिए भी युवक संगठित होकर प्रयास कर सकते हैं।

प्रश्न : एक विधायक के रूप में आप का क्या कार्यक्रम होगा?

उत्तर : अपने चुनाव क्षेत्र की समस्याओं को सदन में रखने के साथ ही हर ऐसी बात का विरोध करूंगा जो समाज में वर्गविभेद को प्रोत्साहित करती है। इसी कारण से अब तक प्रदेश में निरंतर गरीबी और अमीरी की बढती गई है। अब गरीबों को ऊपर उठाने तथा युवा शक्ति को आगे लाने का प्रयास होना चाहिए। मेरा पूरा प्रयास होगा प्रदेश सरकार के सभी कामकाज में हों और मेरा यह भी प्रयास होगा प्रदेश सरकार युवा शक्ति को आगे बढ़ाने के लिए अलग से कार्यक्रम तैयार कर विरोधी पक्ष का सदस्य होने के तहत

तो दावा नहीं कर सकता कि अपने हर कार्य में पूरी सफलता प्राप्त कर लूँगा, पर इतना अवश्य है कि सदन में मैं सरकारी अथवा गैरसरकारी हर गलत काम का भरसक विरोध करूँगा।

प्रश्न : हो सकता है आप को सदन में अकेलापन महसूस हो और ऐसा लगे कि बजुर्ग लोग आप की बहुत सी बातों को नहीं समझते। ऐसी दशा में आप क्या करेंगे?

उत्तर : पहली बात तो यह कि मैं कभी घबराता नहीं, और दूसरी यह कि खुद को अकेला भी नहीं महसूस करता। हो सकता है, सदन में लोग साथ न दें, पर मैं अपने उद्देश्य से पीछे नहीं हटूँगा, हालांकि मुझे पूरी उम्मीद है कि मुझे सदस्यों का पूरा सहयोग मिलेगा। मुझे विश्वास है कि मेरे साथ पूरे प्रदेश और देश की युवा पीढ़ी चल रही है। मैं हर बात को मजबूती से कहूँगा और कभी निराश नहीं होऊँगा।

प्रश्न : विरोधी पक्ष का सदस्य होने के नाते आप विरोध के कौन से तरीके अपनाएंगे?

उत्तर : मेरा विरोध का स्वरूप सदा जनतांत्रिक होगा। जनतांत्रिक

मान्यताओं का उल्लंघन मेरा कदापि ध्येय नहीं। पुरानी मान्यताओं से मेरा न तो समझौता हुआ है और न होगा ही। विरोध का मेरा स्वर भी कभी दवेगा नहीं। मैं ऐसे मौकों पर चाहूँगा कि पूरे प्रदेश के युवक मुझे अपना सहयोग दें और उन्हें तथा बजुर्गों को पूरा अधिकार होगा कि यदि मैं कुछ भी गलत करूँ तो वे मेरा मार्गदर्शन करें। उन का आदेश शिरोधार्य होगा।

प्रश्न : इस चुनाव में आप ने क्या अनुभव किया?

उत्तर : मेरा यह अनुभव रहा है कि यद्यपि पैसे और जाति के आधार पर चुनाव लड़े जाते हैं, फिर भी यदि कोई प्रत्याशी अपने कार्यक्रमों, अपनी ईमानदारी और कार्यशक्ति का जनता को भरोसा दिला सके तो वह कभी नहीं हारेगा। नौजवानों को रणनीति में आने के लिए जोखिम लेना होगा और त्याग करना होगा। यद्यपि सफलता निश्चित नहीं है, फिर भी यदि युवक लगन से काम करें तो शहर और ग्रामीण क्षेत्र की जनता का विश्वास वे आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, उन की सफलता को रोका नहीं जा सकता।

वह शरमा के गर...

न आबाद होती
मेरे दिल की दुनिया,
वह शरमा के गर
मुसकरा न देते.

—नैयर आसमी

उन के जलवों से
दिल गुलिस्तां है,
हुस्त कहने को
सादा होता है.

—अख्तर नज्मी



शायद कोई आ रहा है ...



‘दि इंडियन इंडस्ट्रीट्यूट आफ ब्रेन टेक्ना-
लाजी’ में काम पूरा ज़ोर पर था।

हर कोई किसी न किसी काम में व्यस्त था। नीमा भी कंप्यूटर के बोर्ड पर झुकी हुई विभिन्न डायलों और मीटरों से आंकड़े नोट कर रही थी।

तभी कमरे में डाक्टर रोशन आए, “हैलो, नीमा डार्लिंग!” हमेशा की तरह वह उस के पास आए और उस के कंधे पर हाथ रख कर खड़े हो गए।

“मालूम है, आज लंदन से चीफ आ रही हैं?”

“हां, डाक्टर.”

कंधे पर उन की पकड़ और मजबूत हो गई और उन्होंने चुटकी ली, “क्या तुम ने मेरी रिपोर्ट पूरी कर ली है?”

डाक्टर मोहन चाहता था कि

नीमा उस के चंगुल में फंस जाए, लेकिन मोहन की घूरती नजरों से नीमा बेहद घृणा करने लगी थी...

दुल्हनें सपने

कहानी • क. न. रामचंद्रन



नीमा हौले से अलग हट गई और बोली, "हां, डाक्टर, वह तुम्हारे मेज पर रखी है."

"थैंक यू, डॉलिंग," रोशन ने कहा और वह उस के वक्ष की खुली जगह पर एक भूखी नजर डालते हुए चले गए.

नीमा ने कुर्सी पर बैठ कर चैन की सांस ली. इस के बाद डाक्टर लाल आ धमके, "हैलो, हनि." और उन के सीधे हाथ की हथेली नीमा की पीठ पर आ टिकी. नीमा खड़ी हो गई. उसे महसूस हुआ कि रीढ़ पर जैसे कोई कीड़ा हौले-हौले रेंग रहा है. डाक्टर लाल ने कमर पर उंगलियां फिराते हुए कहा, "चीफ का जहाज सांताक्रुज हवाई अड्डे पर पहुंच चुका है. वह वहां से इंस्टीट्यूट के लिए चल भी पड़ी हैं."

"हां, डाक्टर. अभीअभी उन का टेलीफोन आया था."

"ओह! अच्छा, क्या तुम मेरे कमरे तक चल सकोगी? वहां पहले हफ्ते के आंकड़े पड़े हैं, जरा उन पर एक नजर डाल लेतीं."

"क्यों नहीं, डाक्टर. मैं आधे घंटे में, चीफ से मिलने के बाद पहुंच जाऊंगी."

डाक्टर लाल की उंगलियां उस की पीठ पर घूमघूम कर गोले खींच रही थीं. वह मेज पर से फाइल उठाने के बहाने वहां से हट गई.

"अच्छा, नीमा, तुम से आधे घंटे बाद मुलाकात होगी." और डाक्टर लाल वहां से इस तरह चले गए जैसे किसी ने बच्चे के हाथ से लालीपाप छीन ली हो.

अगली बार आने वालों में नंबर था डाक्टर मोहन का. उन के चेहरे पर चौड़ी मुसकराहट थी. उन्होंने आते ही तपाक से कहा, "हैलो!" और नीमा से हाथ मिलाया. उस के हाथ को बिना छोड़े ही उन्होंने पूछा, "स्वीटी, चीफ कब पहुंच रही हैं?"

"जल्दी ही पहुंच जाएंगी. वह अब

रास्ते में ही होंगी."

"ओह, वह कितनी महान महिला है!" और उन्होंने अपने दोनों हाथों से उस का हाथ दबाना शुरू कर दिया.

"क्यों नहीं, डाक्टर. कमाल की औरत हैं वह! और कौन हो सकता है उन की तरह, जो विज्ञान के लिए अपना जीवन दे दे?"

"हां, उन का काम से इतना गहरा लगाव है कि उन्होंने शादी तक नहीं की. कभी नहीं चाहा कि उन का भी कोई परिवार हो, बालबच्चे हों."

"काश, मैं उन जैसी बन पाती!"

"तुम! खाली तुम ही क्यों, कौन नहीं चाहेगा उन जैसा बनना? उन्होंने तो हम पुरुषों को भी शर्मिदा कर के रख दिया है."

"यह हम लोगों का सौभाग्य है कि हमें उन के साथ काम करने का मौका मिला है."

"हां, वास्तव में सौभाग्य नहीं तो और क्या है? उन के समान वैज्ञानिक तो इक्केदुक्के ही हैं."

नीमा उत्साह से भर गई, "इस वर्ष हो सकता है कि उन्हें नोबेल पुरस्कार भी मिल जाए."

"भई, मिलना तो चाहिए, लेकिन वहां बड़ी राजनीति चलती है." और उन का हाथ अब नीमा के कंधे पर पहुंच गया.

अचानक उसे महसूस हुआ कि उन का हाथ उस के वक्ष के एक-दम नजदीक आ गया है. "चीफ अब किसी भी क्षण यहां पहुंच सकती हैं," वह कहते हुए एकदम खड़ी हो गई.

डाक्टर के हाथ शिथिल हो गए. नीमा को जाते देख कर उस के पीछे के उभार को चाह भरी दृष्टि से देखते रहे.

इन हरकतों से नीमा को कभीकभी तो गुस्सा भी आ जाया करता. ये सब लोग क्यों कुत्ते की तरह उस के पीछे पड़े रहते हैं? वह उसे इस तरह से दबाते पीचते और झिकोटी काटते हैं मानो वह

जुलाई (द्वितीय) 1971

लड़की न हो कर इनलोपिलो का गद्दा हो।
 ओह! उसे अकेले रहना कितना अच्छा
 लगता है! फिर उस ने यह सोच कर
 दिल को तसल्ली देनी चाही कि नौकरी
 में तो ऐसा सभी कुछ चलता है। उसे इन
 चीजों को नजरअंदाज कर देना चाहिए।
 लेकिन कभी न कभी वह इन आदमियों
 को अपनी भावना की कद्र करना सिखा
 कर रहेगी। फिर उस ने चीफ के बारे में
 सोचना शुरू कर दिया। ये सब लोग चीफ
 को देख कर कैसी भीगी बिल्ली बन जाते
 हैं। वह किसी भी प्रकार चीफ की तरह
 महान और शक्तिशाली बनेगी।

तभी अचानक डाक्टर जान आए
 और उस को चिकोटी काटने की चेष्टा
 करते हुए बोले, "कहो, नीमा!" उस ने
 तेजी से अपने को बचाया और एक
 नकली हंसी हंस पड़ी। तब एक घायल
 दृष्टि से देखते हुए डाक्टर जान बोले,
 "क्या बात है, डार्लिंग? क्या कोई आदमी
 थोड़ा बहुत मजाक भी नहीं कर सकता?"
 नीमा हंस दी। इस से पहले कि वह

कुछ कह पाती, दरवाजे पर कार के रुकने
 का आवाज सुनाई दी। चीफ आ गई। सब
 के सब उन्हें लेने के लिए दरवाजे की
 ओर लपके। डाक्टर रोशन तेजी से
 सीढ़ियों से उतरे और आगे बढ़ कर चीफ
 की कार का दरवाजा खोल दिया। वह
 झुकते हुए बोले, "पधारिए, चीफ। घर
 पहुंचने पर आप का स्वागत।"

चीफ कार से उतरीं। वह चालीस के
 आसपास थीं और देखने में लंबी व
 आकर्षक थीं। उन को देखने मात्र से उन
 के प्रति आदर की भावना जाग्रत होती
 थी। वह देखने में काफी थकी हुई नजर
 आ रही थीं। अपने साथियों से मिल कर
 उन के चेहरे पर प्रसन्नता की आभा तैरने
 लगी थी।

"चीफ, ट्रिप कैसा रहा?"

"चीफ, हम ने आप की लंदन वाली
 स्पीच पढ़ी थी। बहुत बढ़िया बोलों आप।"

"चीफ, मेरे विचार से आप का
 विना वाला भाषण सब से बढ़िया रहा।"

"आप को मालूम है कि आप का

नीमा अकसर सोचती रहती थी

कि वह चीफ की तरह बन

जाए। लेकिन एक दिन जब

उस ने टेप रिकार्डर

पर चीफ के शब्द

सुने तो वह

चौंक उठी...



नाम नोबेल पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया है। Digitized by Arya Samaj Foundation, Chakraborty, Haridwar eGangotri

हर कोई उन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा कर रहा था और वह इस का आनंद ले रही थीं।

नीमा ने चीफ को गुलाबों का एक गुलदस्ता भेंट किया। चीफ ने नीमा को थपथपाया। भीतर पहुंचकर चीफ ने काम की बात शुरू कर दी।

“रोशन, क्या तुम ने ब्रेन टिशु कल्चर पर अपनी रिपोर्ट पूरी कर ली?”

“हां, चीफ。”

“बहुत अच्छे! मैं जरा उन्हें एक बार देख लूं, फिर उन्हें बर्कले भेज दिया जाएगा। और लाल साहब, ‘स्मिथसेनियन’ से कुछ हाथ लगा?”

“हां, चीफ। डाक्टर आरनाल्ड खुद हमारे आविष्कारों के अध्ययन के लिए यहां आ रहे हैं。”

“आरनाल्ड? अरे हां! याद आया। मैं उन से गत वर्ष शिकागो में मिली थी। उन्होंने एंस्फेलोग्राफी में मौलिक काम किया है。”

“चीफ, वह हमारी उपलब्धियों से काफी प्रभावित हुए। उन के दिल में आप के प्रति काफी श्रद्धा है। उन का एक-तिहाई पत्र तो आप की प्रशंसा से ही भरा हुआ था。”

चीफ हलके से मुसकराई और बोलीं, “मेरा खयाल है कि हम उन्हें अब कुछ दिखा सकने की स्थिति में हैं。”

“क्यों नहीं, चीफ? हम उन लोगों में हैं जिन्होंने सब से पहले दिमाग का पूरा नक्शा बनाया है और हम ने सफलतापूर्वक मस्तिष्क का प्रत्यारोपण भी कर दिखाया। हम ने मेमोरी सेल्स (स्मृति के पुद्गल) भी अलग कर दिखाए हैं। वह तो हक्केबक्के रह जाएंगे。”

चीफ ने मोहन की तरफ मुखातिब होते हुए कहा, “और भई, मेमोरी सेल्स वाले तुम्हारे पेपर का क्या हुआ?”

“चीफ, उसे रायल सोसाइटी के पत्र ने स्वीकार कर लिया है। यहां तक कि

उन्होंने अलग किए हुए कुछ स्मृति पुद्गल भी निकाले हैं।”

“हां, मुझे मालूम है। मैं ने वहां स्मृति पुद्गलों के प्रत्यारोपण के बारे में भाषण दिया था, जिस से वे काफी प्रभावित हुए। उन का विचार था कि यह दिमाग की पुनः संरचना के लिए काफी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। वहां के राजपरिवार में भी इस की चर्चा हुई। राजमहल में मुझे आमंत्रित किया गया, जहां ड्यूक ने स्वयं मुझ से इस विषय पर बातचीत की और रानी ने ध्यानपूर्वक हमारी बात सुनी。”

“हां, चीफ, हम ने भी इस के बारे में पढ़ा था। रायल सोसाइटी के चीफ न्यूरोसर्जन डा. जानसन ने इस के बारे में टिप्पणी करते हुए कहा था कि यदि आप का प्रयोग सफल रहा तो दिमाग में सिरिज की सहायता से ‘क्वांटम मशीन’ तक पहुंचाई जा सकेगी。”

“क्यों नहीं!” चीफ ने हंसते हुए कहा, “सोचने तथा याद रखने की प्रक्रिया मात्र मस्तिष्क के पुद्गल में चलने वाली ‘इलेक्ट्रो केमिकल’ प्रक्रिया है। हम बिल्कुल वैसा ही मस्तिष्क से अलग प्रयोगशाला में भी कर सकते हैं। प्रयोगशाला में तैयार यह द्रव्य बाद में मस्तिष्क में पहुंचाया जा सकता है。”

नीमा सब कुछ इस तरह से सुनती रही मानो एकएक शब्द को पी रही



हो. चीफ ने क्या बला की बुद्धि पाई है!
उस का मन श्रद्धा से भरे उठा.

मोहन ने हंसते हुए कहा, "चीफ, नीमा भी आप ही जैसी महान वैज्ञानिक बनना चाहती है. क्या उस के दिमाग में किसी तरीके से विज्ञान को इंजेक्ट करना संभव है?"

चीफ मुसकराई और बोलीं, "क्यों नहीं? मैं अपना दिमाग दान कर जाऊंगी, जिसे तुम नीमा में प्रत्यारोपित कर देना."

तभी जान दौड़ते हुए आए, "चीफ, दिल्ली से ट्रंक काल है. राष्ट्रपति आप से मिलना चाहते हैं."

"धन्यवाद, जान! लाइन मेरे कमरे में दे दो," चीफ ने बिना किसी उत्तेजना के कहा.

सब यह सोचते हुए खड़े रह गए कि आखिर ऐसी क्या बात है जो राष्ट्रपति चीफ से करना चाहते हैं. अवश्य ही कोई जरूरी बात होनी चाहिए.

"शायद नोबेल पुरस्कार के बारे में कुछ बात करना चाहते हों," जान ने कहा.

नीमा सोचने लगी, चीफ का कितना दबदबा है! उन की अनुपस्थिति में भी कोई उन का नाम नहीं लेता. सब कुत्तों की तरह उन के पांव चाटते रहते हैं. और एक वह है जिसे सब मिट्टी की गुड़िया समझते हैं. जो जैसे चाहता है,

उस से वैसे खेल लेता है.

नीमा के लंबे सिस छोड़ी. काश, वह चीफ की तरह बन पाती! ये सब पुरुष उस से कोमों दूर रहते और वह सब वैज्ञानिकों के बीच बराबरी से बैठ पाती. राष्ट्रपति और राजारानियां उसे भोजों पर बुलाते. नीमा यह सब सोच ही रही थी कि अचानक टेलीफोन की घंटी से उस की विचार शृंखला टूट गई.

"हेलो, मैं नीमा बोल रही हूं."

"नीमा, मैं मोहन बोल रहा हूं. तुरंत प्रयोगशाला पहुंचो. दिल का दौरा पड़ जाने से चीफ की मृत्यु हो गई है."

दो दिन बाद नीमा डाक्टर रोशन के सामने बैठी थी, जो अब चीफ बन गए थे. उन के पीछे पुराने चीफ का चित्र लटक रहा था. जिस को देख कर नीमा चाह कर भी अपनी सिसकियां नहीं रोक पाई.

तब डा. रोशन ने भारी स्वर में कहा, "उन्होंने अपना सर्वस्व इंस्टीट्यूट को दान कर दिया, यहां तक कि अपना मस्तिष्क भी. उन्होंने यह निर्देश भी दिया कि उन के मस्तिष्क का उपयोग वैज्ञानिक खोजों के लिए किया जाए."

नीमा ने अपना चेहरा हथेलियों से ढक लिया और फिर फूटफूट कर रोने लगी. डाक्टर रोशन ने हॉल से अपना हाथ उस के कंधे पर रखा और बोले, "देखो, नीमा! हम चीफ के मस्तिष्क का

जब दम निकल गया...

क्यों कर यहां तुम्हारी तबीयत बदल गई,
इतनी ही जिंदगी हमें ऐ खिज्र, खल गई.
जब एक रोज जान का जाना जरूर है,
फिर फर्क क्या वह आज गई, स्वाह कल गई.
जब दम निकल गया खालिशे गम भी मिट गई,
दिल में चुभी थी फांस जो दिल से निकल गई.

—सफी लखनवी

अच्छा उपयोग करना चाहते हैं. हमें तुम्हारी मदद की जरूरत है.

“मेरी? मैं क्या मदद कर सकती हूँ आप की?”

“नीमा, हम चाहते हैं कि चीफ का मस्तिष्क फिर काम करने लगे. हम उन के मस्तिष्क के स्मृति पुद्गल को तुम्हारे मस्तिष्क में प्रत्यारोपित करना चाहते हैं.”

नीमा की आंखें फैल गईं. डाक्टर रोशन ने कहना जारी रखा, “हम नहीं चाहते कि चीफ की प्रतिभा बेकार जाए. सौभाग्य से हम उन का मस्तिष्क सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित कर सकते हैं. तुम्हें कुछ असामान्य बात महसूस नहीं होगी. तुम

अभिलाषा

अभिलाषा तभी फलोत्पादक होती है जब वह दृढ़ निश्चय में परिणित कर दी जाती है.

—स्वेट मार्टेन

तो बस चीफ की चिंतन प्रणाली को अपनी आवाज उधार दोगी. हम उन सब चीजों को रिकार्ड कर लेंगे जो चीफ इतने बरस तक सोचती रही हैं. इस के बाद तुम पुनः पुरानी नीमा बन जाओगी.”

नीमा खुशी और रंज की मिलीजुली भावनाओं से रो पड़ी.

दो सप्ताह बाद नीमा इंस्टीट्यूट के न्यूरो क्लीनिक के पलंग पर लेटी हुई थी. उस के मस्तिष्क में चीफ के स्मृति पुद्गल सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किए जा चुके थे. बिजली के झटकों से चीफ के ज्ञान भंडार के पुद्गलों को उत्तेजित कर उन के शब्द रिकार्ड किए जा चुके थे. नीमा बड़ी बेचैनी से अंतिम परिणामों की प्रतीक्षा कर रही थी.

तभी हाथों में फूलों का गुच्छा लिए

डाक्टर मोहन ने प्रवेश किया. उन्होंने नीमा पर एक शरीरत भरी दृष्टि डाली और फिर बोले, “कहो, नीमा! कैसा महसूस कर रही हो?”

“डाक्टर, मैं बिल्कुल ठीक हूँ. नीमा ने अधीरतापूर्वक कहा, “मुझे तो कल रात के बारे में बताइए. क्या रिकार्डिंग सफल रही? चीफ ने क्या कहा?”

“क्या तुम सुनना चाहोगी कि मेरा जीवन के अंतिम दिनों में क्या सोच रही थी?”

नीमा तो जैसे उछल पड़ी, “जरूर, क्या तुम्हारे पास रिकार्डिंग है?”

मोहन ने टेप रिकार्डर निकाला और टेप चला दिया. नीमा की तेजबंद आवाज अचानक शुरू हो गई. आवाज तो नीमा की ही थी परंतु उस के बोलने में चीफ का लहजा और आत्मविश्वास थुलामिला था. टेप को सुन कर ऐसा लगता था मानो नीमा चीफ की आवाज को नकल उतार रही हो...

“कितनी खूबसूरत गुड़िया है नीमा और कितनी भाग्यवान भी...उसे देखते ही नवयुवक आहें भरने लगते हैं...आ मुझे उस से ईर्ष्या है?...हो भी सकता है...काश! मैं नीमा की जगह होती...वैसी ही सुंदर और युवा बन पाती...मुझे भी सब प्यार करते...मेरे चारों तरफ चक्कर काटते...बनिस्बत इस बात के कि वे मुझ से आतंकित हो कर दूरदूर रहते...आग लगे ऐसे नोबेल पुरस्कार को...मुझे रंगबिरंगे तमगों से अब वितृष्णा होने लगी है...मुझे सब तरह के पुरस्कारों से घृणा हो चली है...एक जगह से दूसरी जगह जाते और बूढ़ों से सिर खपाते मैं थक चुकी हूँ...भगवान, यह मैं ने क्या किया कि जीवन की सारी खुशियां गंवा दीं! क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है जिस से मैं फिर जवान और आकर्षक बन सकूँ...क्या कोई फिर मेरे अंदर वासना की चिनगारियां सुलगा सकता है, जिस से मैं दर्द और खुशी से भर सकूँ...हाय, भगवान, मैं कैसी महामूर्ख रही हूँ!”

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री ओमप्रकाश, मेरठ, हैं.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● छेड़छाड़ के आरोप में लड़कियां गिरफ्तार

अभी तक ऐसे समाचारों का जोर रहता था कि लड़कों ने लड़कियों को छेड़ा, लेकिन इलाहाबाद नगर में पुलिस ने पिछले दिनों सात लड़कियों को लड़कों के साथ छेड़छाड़ करने के आरोप में गिरफ्तार किया है. इन लड़कियों पर राह चलते लड़कों पर फन्तियां कसने व उन की काम भावना भड़काने के आरोप हैं. गिरफ्तार की गई सात लड़कियों में से पांच कालिज की छात्राएं एवं दो स्कूल छात्राएं हैं.

—दैनिक स्वदेश, ग्वालियर (प्रेषक : हरीशकुमार पाठक, ग्वालियर)

● लाइन की नौकरी

कलकत्ता. आवश्यक वस्तुओं की कमी व जमाखोरी का चाहे कितना ही विरोध किया जाए, इस से कुछ लोगों की बेरोजगारी जरूर खत्म हो गई है. कलकत्ता जैसे बड़े नगरों में कुछ बेरोजगार व्यक्ति आवश्यक वस्तुओं की दुकानों पर खरीदारों की लंबी लाइनों में खड़े हो जाते हैं और सामान खरीद कर असली उपभोक्ता को दे देते हैं. इस के बदले असली उपभोक्ता उन्हें 50 पैसे से दो रुपए तक देते हैं. कुछ लोग इसी प्रकार प्रति दिन 10 से 25 रुपए तक कमा लेते हैं.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : ब्रजमोहन यादव, आगरा)

● राधाकृष्णन कौन थे?

बलौदाबाजार. पिछले दिनों भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जनपद पंचायत द्वारा एक शोक सभा का आयोजन किया गया. शोक प्रस्ताव एवं श्रद्धांजलि के बाद वहां उपस्थित एक विधायक ने अपने मित्र से पूछा, “भई, यह राधाकृष्णन कौन थे? इन का नाम पहले कभी सुना नहीं.”

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : जया अग्रवाल, रायपुर)

● एक ही खानदान की तीन पीढ़ियां एक साथ जेल में

पख्तून नेता खान अब्दुल गफ्फार खां की गिरफ्तारी से पाकिस्तान सरकार ने एक ही परिवार की तीन पीढ़ियों को एक साथ जेल में डाल दिया है. दादा बादशाह खान को अप्रैल माह में गिरफ्तार किया गया था, जब कि उन के पुत्र खान अब्दुल वली खां और पौत्र खान इसकिंदर यार खां गत फरवरी से ही पाकिस्तानी जेलों में बंदी हैं. उन्हें पेशावर में प्रांतीय गृहमंत्री मुहम्मद हयात खां की हत्या के बाद गिरफ्तार किया गया था.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : राकेशकुमार, नई दिल्ली)

● आदत बुरी बलाय

गोरखपुर के एक नामी जेबकतरे को सजा पूरी करने पर 20 मई को जेल से रिहा किया गया था, मगर घर पहुंचने के पहले ही उसे फिर जेल पहुंचना पड़ा. उस ने घर के रास्ते में किसी की जेब काट ली और पकड़ा गया.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : ओमप्रकाश, मेरठ) ●

चित्रावली

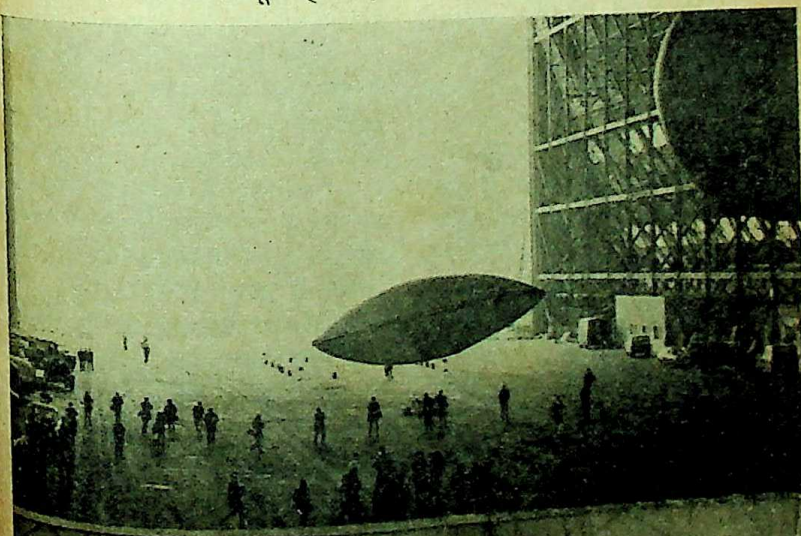
वियतनाम के बच्चे आस्ट्रेलिया में :
वियतनाम युद्ध में हताहतों के हजारों बच्चे अनाथ
हो गए हैं. अमरीकियों ने वियतनाम छोड़ने से पहले
बहुत से अनाथ बच्चों को गोद लिया था. उन के
देखादेखी आस्ट्रेलिया और यूरोपीय देशों ने भी इन
बच्चों को बुलाया. चित्र में दर्शाए ये बच्चे अब
आस्ट्रेलिया में अनजान मातापिता के पास जा रहे
हैं. पर क्या वे एक गैर देश में कभी खुश रह सकेंगे?





● हांगकांग में एलिजाबेथ : हांगकांग में अभी भी विशिष्ट अतिथियों का पुराने चीनी ढंग से स्वागत करने का रिवाज चला आ रहा है. ब्रिटेन की सम्राज्ञी एलिजाबेथ जब हाल ही में हांगकांग गईं तो उन का स्वागत रंगीत कागजों से बने इस अजगर के नृत्य से किया गया. यह अजगर छोटा मोटा नहीं, 460 फुट लंबा है. इसे चीनी युवक डंडों पर लगा कर नचाते हैं.

● सर्वप्रथम मानव निर्मित उड़न तश्तरी : रायल एयर फोर्स (ब्रिटेन) के कार्डिगटन हवाई अड्डे के हैंगर की चारदीवारी में यह जमीन से केवल 25 फुट की ऊंचाई पर उड़ रही है. इस का व्यास 30 फुट है. लेकिन यह सिर्फ एक नमूना है. इसी के अनुरूप एक बृहदाकार तश्तरीनुमा वायुयान ब्रिटेन के एक वायुयान संस्थान जीन डी. वेस्ट डिजाइन एसोसिएट्स द्वारा विकसित किया जा रहा है, जिस का व्यास 700 फुट होगा. 1978 तक इस का निर्माण पूरा हो जाएगा.



सुरेंद्र चौहान

मध्य प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ तैराक

जानामाना नाम है। मध्य प्रदेश में तैराकी का इतिहास सुरेंद्रसिंह चौहान से ही शुरू होता है क्योंकि उन की असंख्य सफलताओं के पहले प्रदेश के तैराक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं कर सके थे। उन की सफलता की कहानी लंबे संघर्ष की कहानी है क्योंकि उस वक्त न तो उचित प्रशिक्षण की सुविधा उन्हें प्राप्त हुई और न अन्य किसी प्रकार की सुविधा या प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। चौहान की विजयों की लंबी सूची यह प्रदर्शित करती है कि अगर दिल में किसी चीज के प्रति समर्पण का भाव हो तो विजयश्री अपनेआप वरण करती है। यह भी सच है कि सुरेंद्रसिंह की टक्कर का मध्य प्रदेश में इस समय कोई दूसरा खिलाड़ी नहीं है। पिछले कई वर्षों से राष्ट्रीय स्तर की तमाम बड़ी प्रतियोगिताओं में सुरेंद्रसिंह ने अपने नाम को चमकाया है।

गत कई वर्षों से असंख्य छोटीबड़ी सफलताएं प्राप्त करने वाले सुरेंद्रसिंह ने हाल ही में बी. काम. किया है और इस समय वह बैंक में काम करते हैं।

“तैराकी से कब नाता जुड़ा?” चाय की चुस्की लेते हुए मैं ने उन से प्रश्न किया।

“बचपन से ही। पिताजी, दिवंगत श्री लक्ष्मणसिंह चौहान एक अच्छे तैराक थे। उन्हीं की देखादेखी मैं ने भी तैरना शुरू कर दिया।”

“और प्रतियोगिता में कब उतरे?”

अतीत की स्मृतियों में खोए से सुरेंद्र बोले, “मेरे जीवन की पहली बड़ी प्रतियोगिता शायद सन 1963 में आयोजित इंदौर जिला तैराकी प्रतियोगिता थी। उस के बाद 1969 की कार्पोरेशन एरिया स्वीमिंग एसोसिएशन की चैंपियनशिप, सन 1972-73 की मध्य प्रदेश राज्य तैराकी प्रतियोगिता, 1972-73 में ही जूनियर चैंबर की तैराकी चैंपियनशिप, सन 1972 की लायंस क्लब की तैराकी

प्रतियोगिताएं जीतीं व व्यक्तिगत चैंपियनशिप प्राप्त की। सन 1973 में भारतीय वाटरपोलो टीम में चुना गया। इस टीम में रह कर भारत से श्रीलंका तैराकी प्रतियोगिता में, जो केरल में आयोजित हुई थी, भारत का प्रतिनिधित्व किया। श्रीलंका व भारतीय टीम के मध्य हुए वाटरपोलो मैच में दो गोल किए और स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इस के अलावा 1970-72 में मध्य प्रदेश का व्यक्तिगत चैंपियन रहा। सन 1974 में पुनः भारतीय वाटरपोलो टीम का सदस्य चुना गया। सन 1970 से 1974 तक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करता रहा हूं। इस के अलावा 100 मीटर ‘ब्रेस्ट स्ट्रोक’ तैराकी में भारत के प्रथम आठ खिलाड़ियों में स्थान पाता रहा हूं। इन के अलावा कितनी ही स्थानीय और आसपास की नामी प्रतिस्पर्धाओं में उतरा, कितनों में जीता या हारा, याद नहीं। कोई याद भी नहीं रख सकता। एकदो प्रतियोगिताओं में भाग लिया हो तो याद भी रखा जा सकता है।”

“खेल में प्रशिक्षण कितना आवश्यक है?”

मेरे इस प्रश्न के उत्तर में सुरेंद्र बोले,

जुलाई (द्वितीय) 1973



“बगैर उचित प्रशिक्षण के अच्छा से अच्छा खिलाड़ी भी सफल नहीं हो सकता.”

सुरेंद्र अपने प्रशिक्षक श्री कस्वे के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बोले, “उन के मार्गदर्शन से ही मैं ने उपर्युक्त सफलताएं प्राप्त की हैं. उन का अधिक परिश्रम ही मेरी सफलता का राज है.”

“वर्तमान समय में खेल को राजनीति ने बुरी तरह जकड़ लिया है, इस के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?”

सुरेंद्र ने सहमत होते हुए इस बात पर गहरा आक्रोश प्रकट किया. उन्होंने कहा, “खेल और राजनीति, दोनों बिल्कुल अलगअलग क्षेत्र हैं. जब खिलाड़ी, राजनीतिज्ञों के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते हैं तो वे क्यों खेल को राजनीति का अखाड़ा बनाते हैं?”

इसी प्रकार पुरस्कारों में भी घांचली की जाती है. योग्य खिलाड़ियों को छोड़ कर अनुचित प्रभाव के कारण अयोग्य खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान कर दिए जाते हैं. यही हाल छात्रवृत्ति के संबंध में है. इस के लिए आवश्यक है कि सभी खिलाड़ियों का एक संगठन हो जो इस प्रकार के अन्याय के खिलाफ आवाज उठाए. साथ ही ‘पुरस्कार समिति’ में

अनुभवी खिलाड़ियों को ही निर्णय करने के लिए रखना चाहिए.

सुरेंद्र का कहना था कि ‘सरिता’ और ‘मुक्ता’ जैसी पत्रपत्रिकाओं को भी खिलाड़ियों के प्रोत्साहन के लिए आगे आना चाहिए तथा पुरस्कार आदि प्रदान करने चाहिए. सुरेंद्र ने इस बात पर भी खेद व्यक्त किया कि हमारे देश में फ़िल्मी अभिनेता अभिनेत्रियों को खिलाड़ियों से अधिक महत्व दिया जाता है.

सुरेंद्र का मध्य प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में अग्रणी स्थान है. अच्छे स्वास्थ्य के और लंबे समय तक संघर्ष करने वाले इस खिलाड़ी से देश को बहुत उम्मीदें हैं.

मध्य प्रदेश क्रीड़ा परिषद ने प्रदेश के 53 प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए 600 रुपए वार्षिक छात्रवृत्ति देने की घोषणा की है, जिस में सुरेंद्र को भी यह सम्मान प्राप्त हुआ है. इस के अलावा उन्हें ‘विक्रम पुरस्कार’ से भी सम्मानित किया गया है.

—विनय झैलावत

सरितामुक्ता विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

क्रिकेट की शव

अपनी जिंदगी के सौ साल पूरे करने के बाद आखिरी सांस लेती क्रिकेट को जिलाने के लिए विलायत की प्रूडेंशियल बीमा कंपनी ने 20 लाख रुपए का जुआ खेला है। दुनिया के मुश्किल से बटोरे गए 88 खिलाड़ी इन दिनों टेंट ब्रिज और मानचेस्टर की तेज पिचों पर इस पैसे से क्रिकेट के लिए लोकप्रियता खरीदने की कोशिश में लगे हैं।

यह बात हिंदुस्तान में टेस्ट मैचों के लिए मारामारी करने वाले दर्शकों को अटपटी लग सकती है, पर उन भारतीय स्टारों से पूछिए जिन के टेस्ट मैच देखने के लिए पांचसात सौ से ज्यादा विलायती दर्शक जमा नहीं होते हैं। ये दर्शक भारत के लिए ही ज्यादा बेरहम नहीं हैं। वेस्ट इंडीज और पाकिस्तान के साथ होने वाले मैचों में भी यही होता है। केवल एशेज के लिए आस्ट्रेलिया के साथ होने वाले टेस्टों में भीड़ जुटती है। वजह सिर्फ एक है। टेस्ट मैचों में सिर्फ पांच दिन की बरबादी और ऊपर से हिंदुस्तानी और पाकिस्तानी बल्लेबाजों की टिपटिप और गेंदबाजों की घिसघिस।

उम्मीद की गई थी कि भारी रकम का लालच 60-60 ओवरों के मैच और एक ही दिन में खत्म होने की शर्त शायद खिलाड़ियों के हाथपैरों में बिजली भर सके। पर अब तक के आठ मैचों से ऐसी कोई अम्मा नहीं बंधती। यदि आस्ट्रेलिया और इंग्लैंड वाले तेज खेल भी लेते हैं तो उस में क्या नई बात है, वे तो वैसे भी तेज खेलते हैं।

धीमे 'कलात्मक' भारतीय खिलाड़ी तो इन तेज पिचों पर ढह ही गए।

गावस्कर जैसा अनुभवी खिलाड़ी सहसा अभ्यास सा करता नजर आता बाकी बल्लेबाजों का भी बुरा हाल रहा हीसही कसर नए कप्तान कैप्टन राघव ने इंजीनियर और वेदी को न खिलाऊ पुरी कर दी। भारत के धीमे बल्लेबाज और गेंदबाजों ने सिद्ध कर दिया कि इस नए क्रिकेट के बिल्कुल अनुकूल नहीं हैं। हालांकि स्वयं कप्तान राघव पांच खिलाड़ियों को इस किस्म की क्रिकेट खेलने का तजुर्बा है, लेकिन सब धरा गया।

एक दिन की इस नई क्रिकेट में जीत के लिए चार धुआंधार बल्लेबाजों के अलावा दो तेज और दो दरम्याने दर्जे के गेंदबाजों की आवश्यकता होती है—बल्लेबाज ऐसे जो आननफानन में 300 रन बना डालें और तेज गेंदबाज विपक्ष के बल्लेबाजों को उकसा कर गलती करावें के लिए तथा धीमे गेंदबाज उन के रन की गति को रोकने के लिए। भारत के पास इन योग्यताओं पर पूरा उतरते बल्लेबाज कुल जमा दो खिलाड़ी हैं—इंजीनियर और वेदी। मजे की बात, इंग्लैंड के खिलाफ मैच में इन्हीं दोनों को खेलाया गया। ऐसे में किस से और क्या उम्मीद की जा सकती है?

हाकी की राजनीति

हाकी की जीत का जादू उतरते ही हाकी की राजनीति ने फिर रंग पकड़ा और खासी रस्साकशी के बाद अब हालत यह है कि सरकारी खेमा जीत के काबिल करीब है। ताजा खबर यह है कि भारतीय ओलंपिक संघ की शह पर

जुलाई (द्वितीय) 1973

परीक्षा

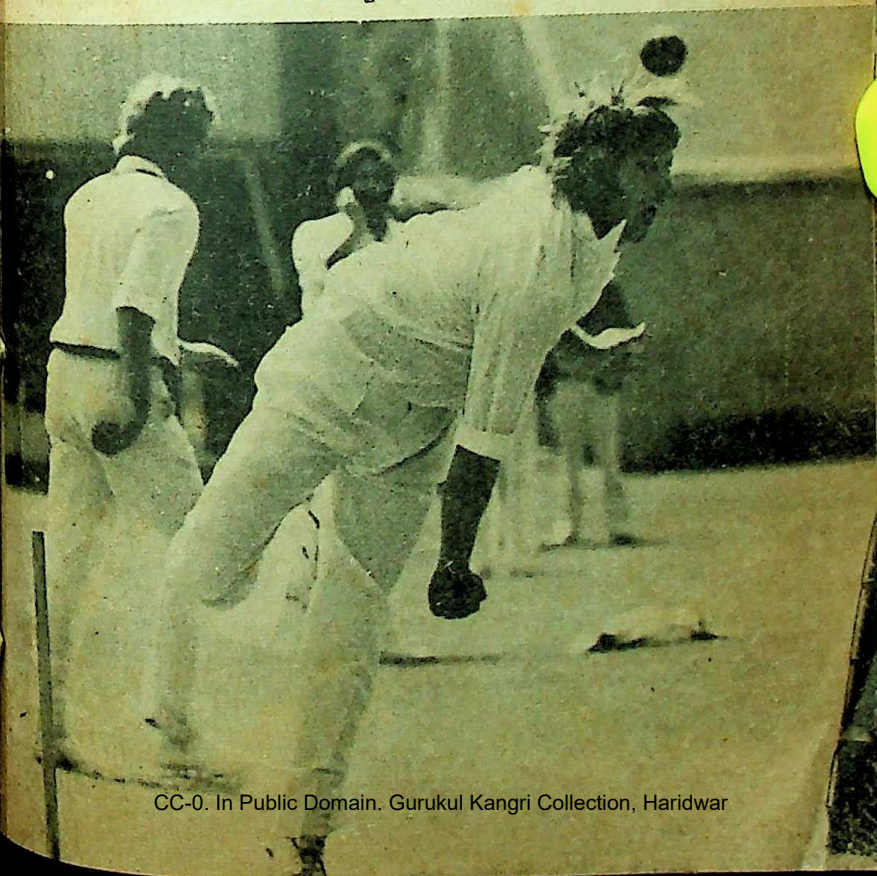
अपने देश में घोंसपट्टी जमाने
वाले खिलाड़ी विदेशों में भीगी
बिल्ली क्यों बन जाते हैं?

रहे साहनी गुट ने यदि हाकी पर अपनी ठेकेदारी का दावा नहीं छोड़ा तो सरकार समर्थित रामास्वामी गुट आगामी दिनों में मांट्रियल में होने वाले पूर्व ओलंपिक मेले में भारतीय टीम नहीं भेजने देगा. जाहिर है, जब सरकार साफ है तो वह वैसा कर सकता है.

वैसे भी हवा रामास्वामी गुट की तरफ बह रही है. पांच शाखाओं को छोड़

कर बाकी सभी रामास्वामी गुट में अपना विश्वास व्यक्त कर चुके हैं. यह गुट जूनियर तथा सीनियर स्तर की राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिता भी करवा चुका है. इस के अलावा इस के झंडे के नीचे एक युवा हाकी टीम पूर्वी अफ्रीका का दौरा भी कर चुकी है. दूसरी तरफ साहनी गुट केवल कागजी काररवाई के बल पर अपनी दुकान जमाए बैठा है.

आस्ट्रेलिया का माना हुआ खिलाड़ी जेफ थामसन गेंद को सिर पर रोक कर जाल तक पहुंचाने का प्रयास करते हुए.



इधर यह हालत है और दूसरी ओर केंद्रीय शिक्षा विभाग के खेल प्रचारियों की तानाशाही रोकने के लिए प्रस्तावित छः सूत्री निर्देशों पर सख्ती से अमल करवाने के लिए कमर कस रखी है। एथलेटिक्स, कुश्ती, बैडमिंटन और फुटबाल के महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय खेल संगठन उन की बात मान चुके हैं। इस प्रकार भारतीय ओलंपिक संघ को यह दोहरी चोट लगी है। अगर भारतीय ओलंपिक संघ चलाने वाले अभी भी नहीं माने तो हो सकता है कि संघ को भंग कर के इस की जगह कोई तदर्थ संस्था गठित कर दी जाए।

संघ अब तक सरकार को यह धौंस दिया करता था कि भारतीय खिलाड़ियों और अंतर्राष्ट्रीय खेल संस्थाओं के बीच वह कड़ी का काम करता है। पर सरकार को यह समझ में आ गया है कि यदि कुछ साल के लिए यह कड़ी टूट भी जाए तो लंबाचौड़ा फर्क नहीं पड़ता। वैसे ऐसी कोई बात नहीं है। उम्मीद करनी चाहिए कि खेल संघों में खेलों के स्तर में कुछ सुधार होगा।

रंग का महत्त्व

दक्षिण अफ्रीका और रोडेशिया अंतर्राष्ट्रीय खेल विवादों के मुख्य पात्र रहे हैं। इस का कारण काले खिलाड़ियों के बारे में उन की भेदभाव वाली नीति रही है। पिछले कुछ महीनों से प्रिटोरिया सरकार यह प्रचारित करने की कोशिश करती रही है कि अब उस की नीति में अंतर आया है। अब उस की टीमों में काले खिलाड़ियों को उचित प्रतिनिधित्व मिल रहा है। इस बिना पर उस ने यह अर्जी दी है कि दुनिया के खेलों से उस का हुक्कापानी बंद न किया जाए। पर लंदन टाइम्स में छपे एक ब्यौरेवार सर्वे के मुताबिक यह सही नहीं है।

आज भी वहां काले खिलाड़ियों का कोई सम्मान नहीं है। काले लोगों के अपने क्लब हैं। दुनिया को बेवकूफ बनाने के लिए काले और गोरों के जो थोड़ेबहुत

मैच खेलाए भी जाते हैं, उन में काले और गोरों के खिलाड़ी बंटने का अलगअलग इंतजाम होता है। पिछले ही महीने एक इंतजाम के विरोध में बड़ा झगड़ा हुआ गया। कुछ लोग घायल हो गए और ऐसी मैचों को कुछ दिन के लिए स्थगित करवा पड़ा।

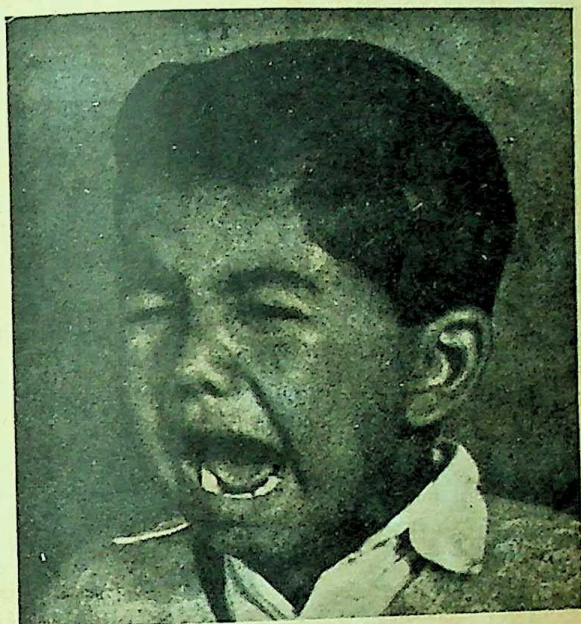
क्रिकेट में प्रोक्टर, बालों और गोबर जैसे महान खिलाड़ियों के कारण दक्षिण अफ्रीका को यह गलतफहमी है कि वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर की टीम बनाए रख सकता है। पर नियमित अनुभव के बिना यह कैसे संभव होगा। इस खतरे को मद्देनजर रखते हुए दक्षिण अफ्रीका और रोडेशिया के कुछ उदारवादी लोगों ने वोरस्टर सरकार पर यह दबाव डाला है कि इस नीति को बदला जाए। पर वहां शासक कर रहे मुट्ठी भर गोरे लोगों के दिलों में वहां के मूल निवासी काले लोगों के लिए घृणा कूटकूट कर भरी है।

वोरस्टर जानते हैं कि यदि उन्होंने एक सीमा से अधिक यदि कालों को हिमायत की तो उन की गद्दी चली जाएगी। ऐसी हालत में वे यह ड्रामा बरकपूर रखना चाहते हैं कि हम काले लोगों को प्रतिनिधित्व दे रहे हैं, जब कि वास्तव में ऐसा नहीं हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रंगबी की टीम में भले ही एकदो काले खिलाड़ी हों, लेकिन राष्ट्रीय, राज्य और जिला जैसे स्थानीय स्तरों पर तो काले लोगों को कोई पास भी नहीं फटकने देता। ऐसी हालत में एक ही इलाज है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के मानव अधिकार चार्टर पर दस्तखत करने वाले देश मिल कर न केवल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बल्कि उस के हिमायती अन्य गोरे देशों के खिलाफ भी खेलने से इंकार कर दें।

इस बारे में यह तर्क कि खेलों की राजनीति से नहीं मिलाया जाना चाहिए निहायत ही बेहूदा है। आज किसी भी चीज को राजनीति से हट कर नहीं देखा जा सकता। कम से कम अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं को तो कतई नहीं।

जुलाई (द्वितीय) 1975

तो क्या आप का बच्चा जिद्दी है ?



और छोटी छोटी बातों पर रोता है ?

आप उसे चंपक पढ़ने को दीजिए

चंपक की रचनाएं आप के बच्चों को मृदुभाषी, संयमी, स्वावलंबी और साहसी बनने की प्रेरणा देती हैं. साथसाथ उन्हें बहुत सारी ज्ञान की बातें भी बताती हैं.

बच्चे तो चंपक को एक बार ही पढ़ कर बारबार मांगने लगते हैं. चंपक की रंगीन छपाई, मोटा टाइप, आकर्षक चित्र और हास्य देख कर आखिर कौन बच्चा चंपक पढ़े बिना रह सकेगा ?

आप के बच्चों को राजा बेटा बनाने वाली पत्रिका

चंपक

आज ही से नियमित रूप से खरीदिए

सरिता, कैरेवान, मुक्ता के प्रकाशकों की भेंट.

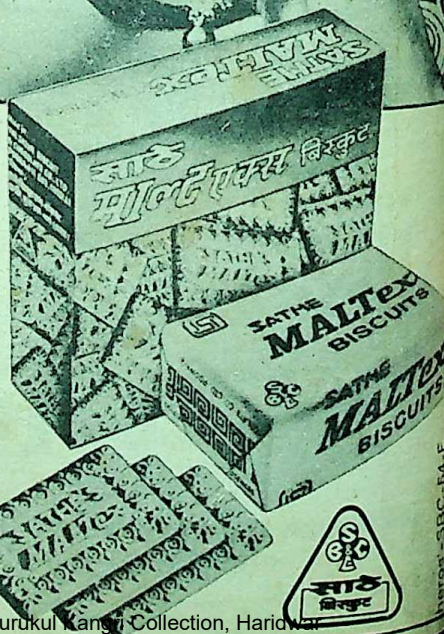
साठे माल्ट एक्स

इतने
स्वादिल है
क्यों कि उनमें
माल्ट है



ताज़ा, क़रारा व स्वाद में अनोखा
इस अनोखे स्वाद का कारण है मॉल्ट,
जो इस बिस्कुट में भरपूर है। पचने में
हलका यह बिस्कुट चाहे जितने भी
खायें, और खाने को जी चाहता है।
इसलिये कि इसमें मॉल्ट है।

उपहार में देने के लिए सुंदर पेकेट
में और घर लेजाने के लिए
खुला मिलता है।



आई. एस. आई मुहर वाले
माल्ट एक्स का मतलब है अच्छी
किस्म की माल्टी वाले बिस्कुट



मुक्ता

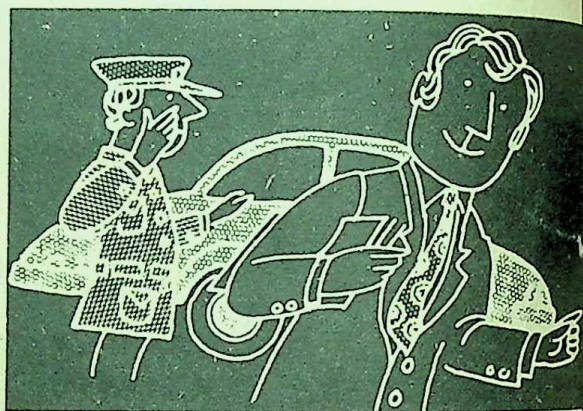
सितंबर (प्रथम)

2 रुपए

युवक-युवतियों की पत्रिका



Do you know the art of living?



Merely earning a living is not the only thing in life . . . you must know how to make the best of your life in other important spheres also . . . your relations with your wife and children, your friends, the society, the country. How to derive the maximum satisfaction in life at the minimum cost and effort ?

**CARAVAN HELPS YOU LIVE
A BETTER, FULLER, RICHER LIFE.**

CARAVAN

Fortnightly for the Intelligent & Discriminating.

For specimen copy send 50 p. in stamps to Delhi Press, New Delhi-55.

अपने बच्चे को अतिरिक्त शक्ति दीजिए उसे दूसरों से आगे रखिए!

स्वास्थ्य में
सबसे तेज़ दिमाग
आइस-क्रीम से ज्यादा
गणित पर ध्यान है।
इसका मिय फार्मुला:
(बोर्नविटा + अ = शक्ति^२)



लम्बी दौड़ का
विजेता
स्कूल भी दौड़ कर ही
जाता है।



अपने बच्चे को रोज़ बोर्नविटा दीजिए

कोको, मॉल्ट, दूध और शक्कर से भरपूर
बोर्नविटा आपके बच्चे को, दूसरों से
आगे रहने के लिए ज़रूरी अतिरिक्त
शक्ति देता है। बोर्नविटा का हर प्याला
अत्यन्त आवश्यक प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट
और कैलोरी से भरपूर है।
इस लिए अपने बच्चे को हर दिन
बोर्नविटा दीजिए — और आप भी लीजिए।
यह पूरे परिवार का मनपसन्द पेय है।

शक्ति, उत्साह और
स्वाद के लिए

कॉडबेरीज़

बोर्नविटा!



OBM-4024 R Hin

मँहगी मरम्मतों का खर्च बचाइए

Digitized by Arka Samod Foundation, Chennai and eGangotri

नियमित रूप से तिहरे असर वाला श्री-इन-वन आयल इस्तेमाल कीजिए

3 IN

श्री-इन-वन आयल

सिलाई की मशीनों, साइकिलों, पंखों, तालों, कब्जों और दूसरी कई घरेलू चीजों को नियमित रूप से तेल देने की जरूरत होती है। नहीं तो वे जंग से खराब हो जाती हैं, या मैल जम जाने से ठीक तरह से काम नहीं करतीं।

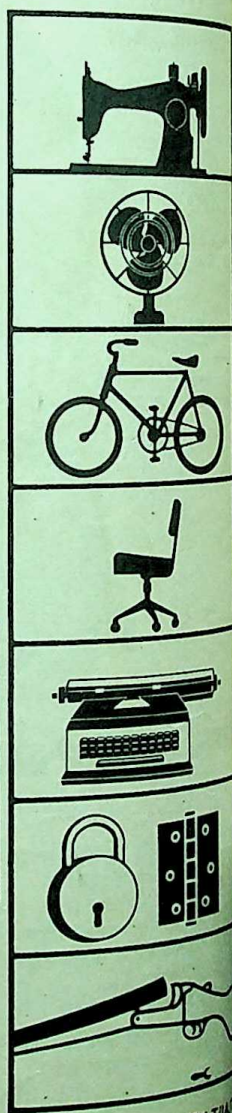
सभी तेल अच्छी तरह से काम नहीं करते। श्री-इन-वन आयल बहुत बढ़िया तेल है, क्योंकि यह तीन तरह से असर करता है—

- ✓ **चिकनाई** — कल-पुर्जे ठीक तरह से काम करते रहते हैं
- ✓ **सफ़ाई** — खास तौर से पतला होने के कारण यह पुर्जों में अच्छी तरह फैलता है और धूल या मैल से उन्हें जाम नहीं होने देता
- ✓ **जंग से बचाव** — केवल इसी तेल में एक विशेष जंग-रोधक पदार्थ है

अपनी कीमती घरेलू चीजों को बचाने के लिए नियमित रूप से सही तेल दीजिए। श्री-इन-वन आयल।

श्री-इन-वन आयल कल-पुर्जों का बेजोड़ रक्षक

* Licenced user of TM : Geoffrey Manners & Co. Ltd.



लेख		
मुगोस्लाविया	26	शिवदास वनर्जी
अच्छी पुस्तकें पढ़िए	32	रामकुमार जायसवाल
अभिभावकों का...	35	गोपालप्रसाद 'वंशी'
प्रसन्नता	39	रजनी गोपालन
राजस्थान के आदिवासी	42	भूरचंद जैन
शातुराज स्वर्ण	46	चतुर्वेदी व अग्रवाल
सूबसूरत पोशाकें	86	...
मधुर क्षणों में...	90	...
देव आनंद	96	रमन
सरला व कल्पना...	150	आदिल कुरेशी
महिला फुटबाल...	152	वीरेंद्र शुक्ल

कथा साहित्य

जोती हुई बाजी	51	मोहम्मद हुसेन
पान का बीड़ा	60	सुनीति रावत
सिंहगढ़ का गौरव	108	कुंती निगम
सनरोजेरियो के दोस्त	118	ओ' हेनरी
चट मंगनी पट ब्याह	131	सत्यकुमार
तमाचे	140	महावीर 'राजेश'

धारावाहिक उपन्यास

रंगमहल	67	आनंदसागर 'श्रेष्ठ'
--------	----	--------------------

कविता

ऐसे क्यों बहके...	83	भोलाराम शर्मा
जिवगो हो गई...	130	रमेश सोनी

स्तंभ

संपादक के नाम	23	94	नई फिल्में
ये शिक्षक	31	103	पल्लवाड़े की फिल्म
में क्या करें?	84	107	ये लड़कियां
चित्रावली	88	117	पसंद अपनीअपनी
घूपछांच	92	139	ये लड़के

सावधान 146

आवरण : वीरेश सक्सेना

मुख्य : एक प्रति : 2.00 रुपए, एक वर्ष 40.00 रुपए,
 दो वर्ष : 75.00 रुपए.

विदेश में (मधुद्री डाक से) : एक वर्ष 65.00 रुपए,
 दो वर्ष : 130.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का
 स्थान :

दिल्ली प्रकाशन विवरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट,
 नई दिल्ली-55.



सितंबर (प्रथम) 1975

अंक 219

मुक्तता

युवकयुवतियों की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक

विश्वनाथ



अभिभावकों का उत्तरदायित्व—पृष्ठ 35 पर.

संपादन व प्रकाशन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी
 सांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

दिल्ली प्रेस समाचारपत्र के लिए विश्वनाथ
 द्वारा दिल्ली प्रेस, गाजिबाबाद में मुद्रित व
 प्रकाशित.

मुक्तता नाम ट्रेडमार्क एक्ट के अंतर्गत
 रजिस्टर्ड है.

मुक्तता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वा-
 धिकार दिल्ली प्रेस समाचारपत्र द्वारा सुरक्षित हैं.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा
 पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना
 आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई
 नहीं जाएंगी.

ngri Collection, Haridwar

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं— विश्व पाकेट बुक्स

धुएँ के बीच

चीनी शासकों द्वारा संपत्ति हड़प लिए जाने के भय से लू हांग भारत चला आया। मगर चीनियों ने उसे यहाँ भी आ दबोचा। तभी भारतीय छापामार दल ने उस की रक्षा की... एक निरीह नागरिक के विरुद्ध चीनी शासकों की निर्ममतापूर्ण कहानी.

मौत के आंसू

राजन मृदुला के साथ रंग-रलियाँ मनाने अलकापुरी पहुँचा मगर वहाँ उस की मुलाकात मृदुला की बजाए उम की लाश से हुई। हालात राजन को ही हत्यारा साबित करते थे मगर हत्यारा कौन था?

कलंक रेखा

पतिपत्नी की मुमकराती जिंदगी में लीला ने अविश्वास की दलदल पैदा कर दी और राजेश रानी से नफरत करने लगा। क्या मचमुच ही रानी के डा० घोष के साथ अनैतिक संबंध थे? या राजेश ही लीला के गदराएँ जिस्म का प्यासा हो गया था?

हंसने की बारी

रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे जिसे आप बारबार पढ़ना चाहेंगे.

प्रतिशोध

एक जरमन सैनिक की मक्की कहानी जिस ने अपनी सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया.

आंख मिचौनी

एक ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोग... निर्लिप्त से मम्मीपापा, जीवन से कटीकटी रीता भाभी, जिंदगी की घनीभूत पीड़ा की शिकार पल्लवीजी, जोने की अदम्य लालमा से प्रेरित सुधीर बाबू और राज?— शायद इन सब का योगफल.

—प्रत्येक रु. 4



पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुवचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. प्रादेश के साथ पांच रुपए ग्रथिम भेजें.

**नहीं मामी, मुझे और कोई बलूकोज़
बिस्किट नहीं — सिर्फ पारले ही चाहिए।**



मुझे उनका
स्वाद बहुत अच्छा
लगता है।

दूध, गेहूं, शक्कर और
बलूकोज़ के गुणकारी
तत्वों से भरपूर
बिस्किट —
बच्चों को
विटामिन, प्रोटीन
और कैल्शियम
देते हैं।



वर्ल्ड
डिलीव्रान
पारितोषिक विजेता



पारले

ग्लुको

भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट

everest/120/PP-hn

10,000 रुपए का पुरस्कार

मौलिक उपन्यास प्रतियोगिता

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना

सरिता ने सदैव ही प्रेरक और सार्थक साहित्य को एक नई दिशा दी है और प्रतिभाशाली कथाकारों को अपना स्थान बनाने का अवसर दिया है। इसी अभियान के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ मौलिक हिंदी उपन्यास पर 10,000 रुपए के पुरस्कार की घोषणा की जा रही है।

नियम एवं शर्तें :

1. उपन्यास संस्था मौलिक, अप्रकाशित और अप्रसारित होना चाहिए। प्रकाशित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा।
2. उपन्यास राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति की प्रगति व चरित्र निर्माण में सहायक होना चाहिए। कथानक उद्देश्यपूर्ण हो, मनोरंजक हो और प्रेरणादायक हो तथा पाठकों को कुछ सोचनेसमझने तथा अपने परिवार, समाज व देश के प्रति कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दे सके। असफल प्रेम, जासूसी, तस्करी, मारधाड़, वेश्यावृत्ति आदि पर आधारित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा।
3. पांडुलिपि फुलस्केप आकार के कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर टाइप की हुई होनी चाहिए। शब्द संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है, पर अनावश्यक रूप से लंबे विवरण नहीं होने चाहिए।
4. पुरस्कार योजना के लिए भेजे गए उपन्यास को निर्णय घोषित होने तक कहीं और विचारार्थ नहीं भेजा जाना चाहिए।
5. सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार को 10,000 रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।
6. अन्य उपन्यासों को भी उन के स्तर के अनुसार उपयुक्त पुरस्कार/पारिश्रमिक दिया जा सकता है।
7. पुरस्कृत उपन्यासों के सर्वाधिकार (कापीराइट) सरिता के पास सुरक्षित रहेंगे।
8. रचनाओं के संबंध में सरिता संपादक मंडल का निर्णय अंतिम और मान्य होगा।
9. यद्यपि पांडुलिपि की यथासंभव देखभाल की जाएगी। फिर भी कार्यालय किसी रचना के खो जाने, फट जाने या नष्ट हो जाने अथवा लेखक या उस की कृति को किसी तरह की हानि पहुंचने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।
10. असफल पांडुलिपियों की वापसी के लिए पर्याप्त डाक टिकट आने आवश्यक हैं अन्यथा उन्हें वापस नहीं किया जाएगा।
11. इस प्रतियोगिता के लिए भेजे गए उपन्यासों के संबंध में पत्रव्यवहार करना संभव नहीं होगा।
12. प्रत्येक पांडुलिपि के साथ यह प्रमाणपत्र आना आवश्यक है कि वह लेखक की मौलिक रचना है, किसी अन्य रचना पर आधारित नहीं है और पहले कहीं किसी भी रूप में प्रकाशित, प्रसारित, प्रदर्शित नहीं हुई है तथा लेखक को रचना के विषय में सरिता संपादक मंडल का निर्णय स्वीकार होगा। पांडुलिपि के साथ पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ सहित उपन्यासकार का संक्षिप्त परिचय आना भी आवश्यक है।

अपनी पांडुलिपियां 31 अक्टूबर, 1975 तक निम्न पते पर भेजें :

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना,

दिल्ली प्रेस भवन, भंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

एल्पार सूर्टिंग पहनिए... शान से चलिए!

एल्पार सूर्टिंग — विश्वास के साथ आगे बढ़नेवाले
मर्दों के लिए जो अपनी मंज़िल जानते हैं
और सफलता जिनके कदम चूमती है.

एल्पार के बेशुमार सूर्टिंग इन्हीं मर्दों के लिए हैं...
आकर्षक रंगों और बेहतरीन डिज़ाइनों में!
साथ ही शर्टिंग और साड़ियां भी उपलब्ध हैं!

हर प्रसिद्ध स्टोर में मिलते हैं.

सिर्फ एल्पार ही पैसा लौटाने की
बेजोड़ गारंटी देता है.



पेरिगॉन टेक्सटाइल मिल्स, बम्बई ४०० ०१३



NOW a unique

CHAMPAK

A colourful, captivating, monthly magazine in English from the publishers of
CARAVAN & WOMAN'S ERA

Delhi Press, the publishers of famous and fast-selling Hindi and English magazines, now bring a new magazine in English for your young children. A magazine that is modern, colourful and beautifully printed. No longer dependence on foreign comics that teach your children violence and mischief in the name of adventure and entertainment.

CHAMPAK on one hand, rejects the comic formula and on the other hand, liberates young minds from the cocktail of mythological and tragic tales of horror, romance and magic. **CHAMPAK** is the modern magazine for children of jet age which teaches them values of honesty, hardwork, friendship and bravery.



gift for your children

CHAMPAK is also the key to knowledge for young children as it brings to them the latest information and keeps them ahead of others.

Short Stories of **CHAMPAK** do not have princes or princesses as characters. They are either young children like the readers or animals which fascinate children.

Your children can remember its poems in a jiffy and recite them in classrooms or to your guests. Its jokes will entertain them. Its picture stories will amuse them for hours.

Buy CHAMPAK for your children today

One Copy Re 1 only

One Year Rs 10 only

*Available from your nearest newspaper agent.
For subscription write to:*

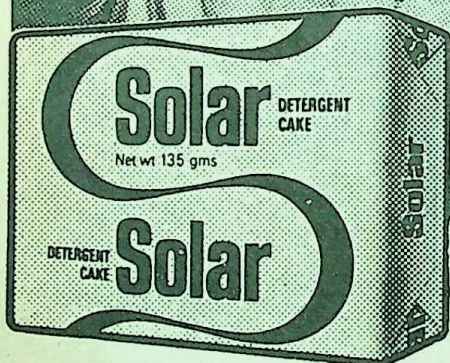
CHAMPAK

Delhi Press Building,

Jhandewala, New Delhi - 55.



मेहनती कपड़ों के लिए



मेहनती

डिटर्जेंट टिकिया

सोलर

कड़ी से कड़ी मैल की मात

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिटास - SOLAR.3A - 77 HI

रेशमी निखार का आधार

लौकमे

अल्ट्रा सिल्क फेस पाउडर और कॉम्पैक्ट

रेशम से छना, कोमल चिकना,
चेहरे पर लगा, हल्का धुलका
रेशम का पारदर्शी अर्धा
लौकमे अल्ट्रा सिल्क फेस पाउडर
विखरे निखरे, खिले त्वरा पर
मेक-अप पर तो कहना ही क्या
छोटी सी डिबिया में बंद,
अल्ट्रा सिल्क कॉम्पैक्ट आसानी से
साथ घुसाएँ—बटपट इसे लगाएँ
आठ रेशमी रंगों में से अपनी
पसंद चुन लीजिए!

सब कुछ रूप
रंग के
हक से.

लौकमे

©CP/LEP/13 HIN.

बच्चों के लिए स्वस्थ मनोरंजन तीन बाल उपन्यासों का नया सेट

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्रत्येक रु. 2.75



राजा की अंतरिक्ष यात्रा :

खेलखेल में ही राजा एक नए लोक में पहुंच गया, जहां की हर चीज इस दुनिया से अलग थी..... राजा ने निश्चय किया कि वह अपने साथियों को भी इस जगह लाएगा और एक नई दुनिया बसा कर स्वयं यहां का राजा बनेगा. क्या उसका यह सपना सच हो पाया? एक मनोरंजक और प्रेरणादायक बाल उपन्यास.

अज्ञात द्वीप :

'बाल कहानी प्रतियोगिता' में पुरस्कृत सात बालक व तीन बालिकाएं विमान द्वारा मिला जा रही थीं. तूफान में विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया मगर वे सभी बच निकले..... जिस द्वीप पर वे पहुंचे, वहां आदमी का चिन्ह तक न था. पास ही के एक अन्य द्वीप पर उन्हें एक खजाने के होने का पता चला, जिस की खोज में कुछ अंग्रेज डाकू आए हुए थे. छोटे बालकों की डाकुओं से मुठभेड़ की रोचक कथा.

शुक्र की खोज :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक उमेश अपने विमान के साथ अंतरिक्ष में खो गए थे. कोई पता न चलने पर वैज्ञानिकों ने उन्हें लापता घोषित कर दिया. मगर उन का भतीजा वीपू इस निर्णय से संतुष्ट न था. और वह अपने मंगलवासी मित्र मिर्क के साथ उमेश चाचा की खोजने निकल पड़ा..... उन्होंने उमेश चाचा को किस तरह ढूंढा? इस खोज के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में क्या-क्या देखा? बच्चों के लिए एक शिक्षाप्रब और मनोरंजक उपन्यास.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.



बिनोला

ऊन - मिश्रित
एक मुलायम कपड़ा-
हल्की-हल्की ठंड के लिए
नर्म-गर्म कपड़ा।

जब ठंड का मौसम आए तो आरामदेह
कपड़े लीजिए; सुखद, गर्म बिनोला कपड़े
पहनिए। मुलायम ऊन-मिश्रित एक नया
कपड़ा - बिन्नी का नया उत्पादन।

बदन पर मखमल जैसा। मोहक रंगों से
सजा। बिनोला कपड़े जैसे चाहिए
वैसे पहनिए। गर्द, कुर्ता, सलवार-
कमीज, बदन पर चुस्त-दुरुस्त
टॉप्स, धरती को चूमती -
लहराती मैक्सी। ठंड की
घड़ियों को मजेदार और
आरामदेह बनाए—बिनोला!



बिन्नी

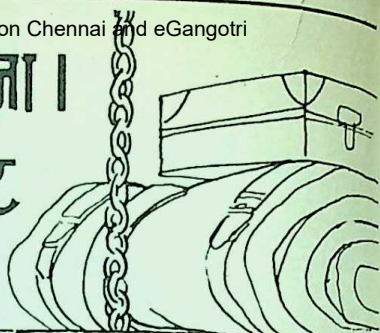
मिश्रित कपड़ों के सर्वोत्तम जानकार।

OBM 3094/3 HIN

सफ़र में मज़ा ही मज़ा ।

यदि पानबहार

साथ हो



पानबहार

सादे पान का
मसाला

सादे पान में अथवा
ऐसे ही खाने के लिए
एक अनोखा सुगन्धित
तथा स्वादिष्ट मसाला



अशोक एण्ड कं०, ५२/३४, नयागंज, कानपुर

सिन्थॉल का वचन...

*सौंदर्य का
निरवार

*मनमोहक
सुगंध

*शारीरिक
दुर्गंध से रक्षा



जो केवल सिन्थॉल ही निभा सकता है.

Interpub/GSC/11/74

Digitized by Arva Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब में अलग हैं— विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद
अपने संक्षिप्त जीवन को
और संक्षिप्त बना देना
चाहता था. ऐसे में नीला
ने निस्वार्थ भाव से विनोद
को नई जिंदगी दी.
स्त्री और पुरुष के सात्विक
प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रोता की शादी इंग्लैंड में
बसे राम के साथ तय
हुई तो उमे लगा जैसे वह
भावना के स्वप्नलोक में
जा रही है. मगर...
ब्रिटेन में बसने वाले
भारतीयों की अपमान-
जनक जिंदगी की सच्ची
तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन में
एकएक लाख हिंदुओं को
कत्ल कर के भारत की
धरती को खून से लाल
कर दिया. फिर भी कई
हिंदू उस के पैर चूमने
में अपना सौभाग्य समझते
थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनाथ राजा करंज और
आर्य कन्या अंजलि का
प्रेम?—असंभव.
परिणाम क्या हुआ?...
ईसा से तीन हजार वर्ष
पूर्व की भारतीय सभ्यता
व संस्कृति की रोमांचक
कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच
का पुट लिए स्वतंत्रता
संग्राम में भाग लेने वाले
उन वीरों की कहानी
जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में
असफल होने के बावजूद
भी अपने बच्चों के
उत्तरदान में स्वतंत्रता
पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कमवे के भोले-
भाले नागरिकों को
चीनी गुलाम बनाना
चाहते थे. क्या वे इस
में सफल हो मके?

—प्रत्येक रु. 4



पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

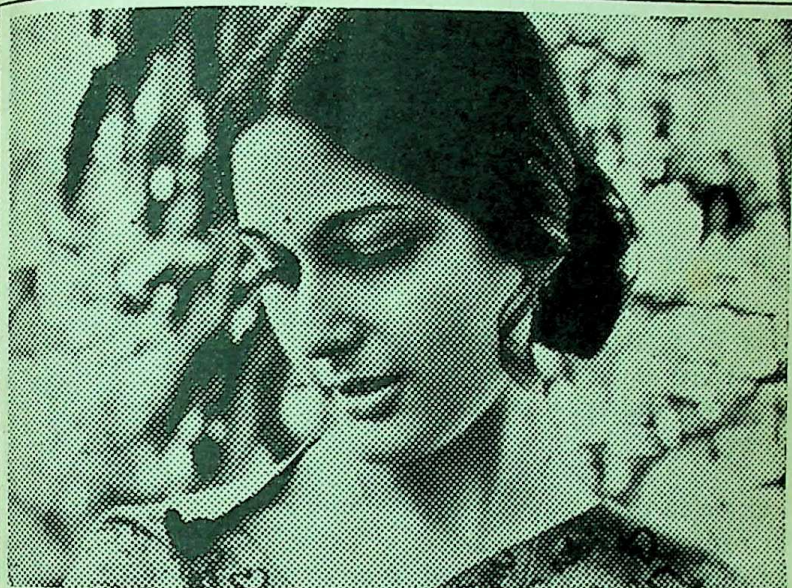
विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

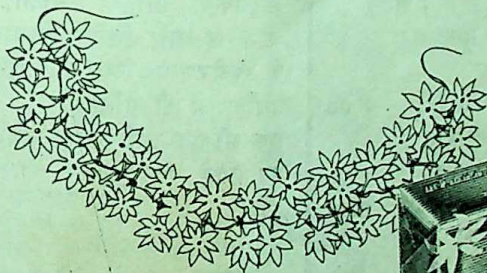
प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. घादेश के साथ पांच रुपए ग्रामिण भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, India. सितंबर (प्रथम) 1975



पंखुरी की ताज़गी सा जय का सिंगार
खिली खिली चमेली सी नवेली नार



सौन्दर्य की बहार ही बहार *जय*

चमेली की मनमोहक सुगन्ध में रचा सौन्दर्य साबुन

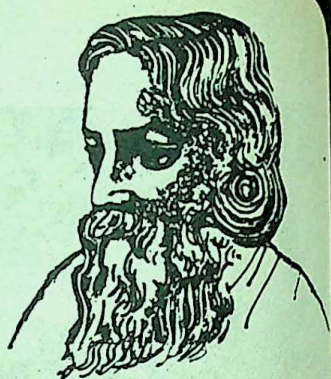


टाटा-उत्पादन

OBM/2067 HIN

रवींद्र साहित्य

पर
दस प्रतिशत
छूट



गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की पुस्तकों के बिना आप का घरेलू पुस्तकालय अधूरा है. विश्वविख्यात रवींद्र साहित्य अब हिंदी में भी सुलभ है. दक्ष अनुवादकों द्वारा तैयार रवींद्रनाथ की पुस्तकें अब बहुत ही सस्ते मूल्य में उपलब्ध हैं. ये पुस्तकें स्वयं पढ़ने तथा उपहार देने योग्य हैं. आज ही इन का आर्डर दीजिए.

रवींद्रनाथ की कहानियां	
21 कहानियां, 403 पृष्ठ	8.00
रवींद्रनाथ के नाटक (प्रथम खंड)	
‘विसर्जन,’ ‘चित्रांगदा’ और ‘चिरकुमार सभा’ का	
305 पृष्ठ का संग्रह	8.00
रवींद्रनाथ के नाटक (द्वितीय खंड)	
‘राजा,’ ‘डाकघर,’ ‘मुक्तधारा’ और ‘रक्त करवी’ का	
286 पृष्ठ का संग्रह	8.00
रवींद्रनाथ का बाल साहित्य	
73 बालोपयोगी कहानियां, कविताएं व निबंध, 312 पृष्ठ	7.50
आंख की किरकिरी	
प्रसिद्ध उपन्यास ‘चोखेर बालि’ का हिंदी रूपांतर, पृष्ठ 230	5.00

रवींद्रनाथ के निबंध (प्रथम खंड)	
धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा ग्रामसुधार संबंधी चुने हुए निबंध.	15.00
रवींद्रनाथ के निबंध (द्वितीय खंड)	
आत्मकथा, साहित्य समीक्षा, चारुलेख आदि विविध विधाओं के 45 प्रेरणाप्रद लेख, पृष्ठ 479.	12.00
रवींद्रनाथ की कविताएं	
एक सौ एक चुनी हुई कविताओं का संग्रह, पृष्ठ 326	12.00
गोरा	
उपन्यास, पृष्ठ 455	8.00
योगायोग	
उपन्यास, पृष्ठ 252	6.00

डाक खर्च अतिरिक्त. वी. पी. पी. से मंगाने के लिए

5 रु. अग्रिम भेजें.

प्राप्ति स्थान—

दिल्ली बुक कंपनी,

12-एम, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

आपके रूप के अनेक चहेते...
आपकी त्वचा के अनेक दुश्मन
पॉण्डस वैनिशिंग क्रीम को अपना
साथी बनाइए.

हवा, धूल और मौसम के तीखे प्रभाव से आपकी त्वचा की रक्षा करती है पॉण्डस वैनिशिंग क्रीम. आपके रूप को और भी सलोना बनाने के लिए इसमें एक लाख पदार्थ सुमेकटेट मिला है जो आपकी त्वचा की गयी को सरकित रखता है. तभी आपका मुख मोतीयारा दीखता है और तैलमुक्त गी. इसे आप आदर पाउडर बेस के रूप में प्रयोग कर सकती हैं. थंडो-फरों यह आपके लीवर को अम्लान और मोहक बनाए रखती है. आप इसे संपूर्ण लीवर प्रत्यक्ष के रूप में भी प्रयोग कर सकती हैं आप तो जानती ही हैं, आपकी त्वचा को भी उतना ही प्यार दुलार चाहिए जितना कि आपको.

पॉण्डस वैनिशिंग क्रीम - आदर्श पाउडर बेस



पौलमो-पॉण्डस हन्कापॉरेटेड (सीमित दायित्व सहित द. द. द. में संस्थापित)

एटेटेक्स सौंदर्य प्रसाधन



ARAVIND LABORATORIES MADRAS-600 033

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रकाशित
एक मात्र लोकप्रिय वैज्ञानिक मासिक

विज्ञान प्रगति

● दूरंगे चित्रों से भरपूर ● बहुरंगा आकर्षक आवरण ● सरल सुबोध भाषा

प्रति मास पढ़िये :

- क्या क्यों कैसे? (वैज्ञानिक प्रश्नोत्तर) ● गणित मनोरंजन ● वैज्ञानिक समाचार
- स्वास्थ्य और चिकित्सा ● उद्योग की सेवा में विज्ञान
- अधुनातन जानकारीयों से भरपूर वैज्ञानिक लेख

विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा जनसाधारण के लिए समान रूप से उपयोगी।
एक प्रति 0.75 पैसे

वार्षिक मूल्य 8.00 रु. मात्र



सम्पादक

भारतीय भाषा यूनिट (सी. एस. आई. आर.),
पी. आई. डी. बिल्डिंग, हिलसाइड रोड, नई दिल्ली-12. (110012)
फोन नं. 586301, 585359

संपादक के नाम



जुलाई (प्रथम) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत 'परीक्षाओं में नकल' से मैं सहमत नहीं हूँ। यह बात सत्य है कि न केवल उत्तर प्रदेश वरन लगभग समस्त प्रदेशों में नकल का रोग बुरी तरह व्याप्त है। किंतु बंबई विश्वविद्यालय ने 'उत्तर प्रदेश बोर्ड आफ हाई स्कूल एंड इंटरमीडिएट' की मान्यता केवल इस आधार पर रद्द कर दी थी कि कुछ विद्यार्थियों के सर्टिफिकेट जाली पाए गए थे। मान्यता रद्द करने का आधार 'नकल' नहीं था। जाली सर्टिफिकेटों के लिए बोर्ड को दोषी नहीं कहा जा सकता क्योंकि दोषी तो वे लोग हैं जो ऐसे सर्टिफिकेट बनाते हैं और खरीदते हैं।

—विवेक सक्सेना, कानपुर

सई (प्रथम) में 'मुक्त विचार' में

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं। साथ ही, आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं। प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो। पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

शिक्षा ही नहीं, खेल भी' पढ़ कर खुशी हुई। स्कूलों में खेलकूद को एक पूर्ण व अनिवार्य विषय के रूप में करना एक सराहनीय कदम होगा, यदि यह ठीक ढंग से कार्यान्वित किया गया। दोतीन वर्ष पहले हम भी एक राजकीय विद्यालय में पढ़ चुके हैं। विद्यार्थियों के चाहने पर और मांगने पर और गोदाम में खेलकूद का सामान होने के बावजूद खेल अध्यापक विद्यार्थियों को डांटडपट कर भगा देते हैं। पर इस के बावजूद वर्ष के अंत में सारा सामान टूटा हुआ दिखाया जाता है। टूटा हुआ सामान विद्यार्थियों के खेलने का परिणाम नहीं होता। वह आता है खेल अध्यापकों के चहेतों के यहां से, जो कि अपना सामान टटने पर अपने परिचित खेल अध्यापक को दे कर बदले में नया ले लेते हैं, और वही टूटा हुआ सामान वार्षिक लेखेजोखे में दिखा दिया जाता है। इस प्रकार विद्यार्थी नए सामान से खेलने से वंचित रह जाते हैं। खेलकूद के नाम पर उन्हें थोड़ीबहुत कवायद करा दी जाती है। यदि व्यवस्था ऐसी ही रही और खेलकूद को एक अनिवार्य एवं पूर्ण विषय बना दिया गया तो विद्यार्थी लाभान्वित होने के स्थान पर हानि में ही रहेंगे।

'आइने का चेहरा' (कहानी : शारदा छाबड़ा) पसंद आई। एक रूपगर्विता का सुंदर चित्रण किया गया है। इस कहानी से युवतियों एवं उन के अभिभावकों को सावधान हो जाना चाहिए।

—सुनीलकुमार जैन, दिल्ली

जून (द्वितीय) में 'हमारी शिक्षा—कितनी उपयोगी' (लेख : न. न. सच्चिदानंद) के विचार पढ़े।

मुझे लगभग तीन पृष्ठों का यह लेख अपूर्ण लगा। लेखक ने जो शिक्षा को यथार्थ के आधार पर देने का विचार रखा है, वह तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक कि पाठ्यपुस्तकों की पृष्ठसंख्या को घटाया न जाए। वर्तमान में तीसरी कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक की जो शिक्षा है, उस में प्रत्यक्ष दर्शन द्वारा ज्ञान

नहीं दिया जा सकता। प्रत्येक कक्षा में आठनौ विषय होते हैं। प्रत्येक विषय को कम से कम दो पुस्तकें होती हैं। यहां तक कि हिंदी व अंगरेजी में तो तीनचार पुस्तकें होती हैं। इन की-पृष्ठ संख्या दोतीन सौ के लगभग होती है, जब कि पढ़ाने वाला (प्रत्येक विषय का, चाहे पुस्तकें कितनी ही हों) एक ही रहता है। उसे एक निश्चित समय में संपूर्ण 'कोर्स' पूरा करवाना पड़ता है, जब कि उस के पास कुल 40 मिनट का समय होता है। अब वह किस प्रकार छात्रों को बाजारों में, संग्रहालयों में, खेतों में, कारखानों में ले जा कर उन्हें ज्ञान दे सकता है?

मैं लेखक की इस बात से सहमत हूं कि वर्तमान शिक्षा का यथार्थ से बिलकुल भी संबंध नहीं है। रहते हैं भारत में लेकिन इतिहास रटते हैं इंग्लैंड का। कैसी विडंबना है!

—ओम 'पवन', व्यावर

मई (प्रथम) में 'आइने का चेहरा' (कहानी : शारदा छाबड़ा) बहुत पसंद आई। अकसर आजकल की नवयुवतियों को न जाने क्यों यह घमंड हो जाता है कि वे बहुत सुंदर हैं तथा उन से सुंदर कोई नहीं है। लेखक यहां पर यह बताना भूल गया कि जिन युवतियों को इस प्रकार का घमंड होता है वे चापलूसी का शिकार भी बहुत जल्दी बन जाती हैं। लेखक ने काफी अच्छे ढंग से युवतियों का भ्रम मिटाने का प्रयास किया है। आशा करता हूं कि समझदार युवतियां इस लेख को पढ़ कर अंधेरे से उजाले की ओर आएंगी ताकि उन का जीवन बरबाद होने से बच जाए।

—महेश्वरप्रसाद भट्टकोटि, सहारनपुर

जून (द्वितीय) में 'वह न समझ सका' (कहानी : हरिओम उपाध्याय) ने बहुत प्रभावित किया। इस कहानी से प्रबुद्ध पाठकगण अवश्य ही प्रभावित हो कर लाभान्वित होंगे। 'मुक्ता' में इसी प्रकार की रचनाओं को स्थान दिया जाए, जिस

से युवा पीढ़ी को नए विचार, चेतना, नई दिशा, प्रेरणा मिल सके और वे अपने भावी जीवन में सफल हों।

—प. व. पराडकर 'ललित', सिवनी

जुलाई (प्रथम) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत 'परीक्षा में नकल' पढ़ा। नकल की समस्या केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे देश भर में कम या अधिक रूप में विद्यमान है। शिक्षाजगत में यह एक ऐसा घुन है जिसे समाप्त करने में शायद बड़ेबड़े शिक्षाशास्त्रियों के साधन भी फेल हो जाएं। लेकिन इस नकल का वास्तविक कारण है शिक्षा में व्यावहारिकता का अभाव। आज की शिक्षा पद्धति योग्य छात्रों को उचित रोजगार देने में असमर्थ है। नौकरी सिर्फ परीक्षा में प्राप्त श्रेणियों के आधार पर दी जाती है, न कि छात्र की वास्तविक योग्यता के आधार पर। ऐसी स्थिति में यदि छात्र नकल की प्रवृत्ति अपना कर परीक्षा में सफल होने या उच्च श्रेणियां प्राप्त करने की कोशिश करें तो इस में छात्रों का क्या दोष है? इस के अतिरिक्त, भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों में शिक्षा हिंदी माध्यम से दी जाती है जब कि उच्च नौकरी, जैसे आई. ए. एस. आइ. एफ. एस. इत्यादि में नौकरी अंगरेजी माध्यम के आधार पर दी जाती है।

—विजय राठी, रायपुर

जुलाई (प्रथम) में छपी 'अंधेर न चलेगा' (कहानी : यूसुफ हाशमी) बहुत पसंद आई। कनीज और मजीद के चरित्र आदर्श चरित्र हैं। स्थल और घटनाओं का वर्णन सजीव लगता है।

कहानी को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए तथा संघर्ष के लिए मुश्ताक का चरित्र अच्छा रहा। कहानी के अंतिम भाग में नायिका ने कोई भाग नहीं लिया। यदि अंतिम भाग में कनीज भी हिस्सा लेती तो नवयुग की विद्रोही आत्मा जाग्रत हो जाती।

—मदनमोहन शर्मा, अहमदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar सितंबर (प्रथम)



लाल डिब्बा भी वही,
मशहूर कीटनाशक
भी वही
बदला है तो सिर्फ
हमारा नाम—
नया नाम है

फिनिट

घरभर के उड़नेवाले और रेंगनेवाले
कीटों से छुटकारा दिलाता है—
बेखटके और निश्चित रूप से !

फिनिट घरभर की मक्खियों, मच्छरों,
तिलचट्टों, खटमलो व अन्य कीट-पतंगों का नाश
करता है — बेखटके और असरकारक ढंग से !

नाश करे घरभर के कीट,

छिड़किए इन पर घातक **फिनिट**

फिनिट—इन्सेक्टिसाइड्स एक्ट १९६८ के
अन्तर्गत रजिस्टर किये गये पहले कीटनाशक का
नया नाम है ।

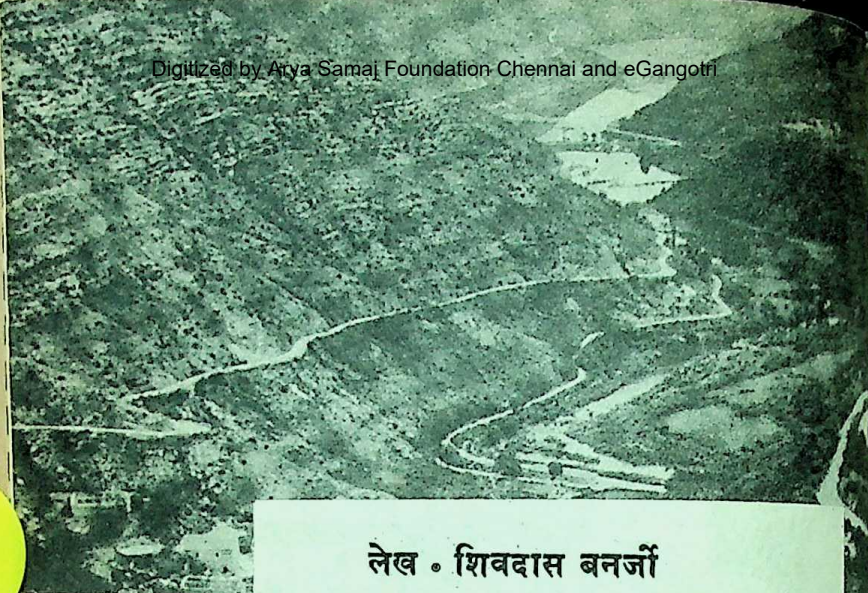


हमारा नया नाम



नये ज़माने का प्रतीक !

CMHPF I-162-Hin



लेख • शिवदास बनर्जी

युगोस्लाविया

कई उतारचढ़ाव देखने के बाद अब प्रगति की राह पर तेजी से बढ़ता हुआ एक साम्यवादी देश...

मैं ने पहले भी बहुत यात्राएं की हैं। लेकिन युगोस्लाविया पहला साम्यवादी देश था, जिस की मैं ने यात्रा की। मेरे मन में सदा से उत्सुकता थी कि ऐसे देश के जनजीवन को करीब से देखूं और उस का विवेचन करने का प्रयास करूं। यही कारण था कि मैं इस के हर रोएरेसे को बड़ी बारीकी और प्रत्येक कोण से देख लेना चाहता था। अपने वर्तमान रूप में आने से पूर्व युगोस्लाविया बहुत कुछ हमारे अपने देश भारत जैसा ही था। हमारी ही तरह यहां के लोग भी बहुभाषाभाषी, विभिन्न संस्कृतियों एवं संप्रदायों से संबंधित तथा विभिन्न मतवादों को मानने वाले थे। हमारी ही तरह इन्होंने गुलामी की कड़ी चोट अपनी पीठों पर सही है और बहुत समय तक ये लोग

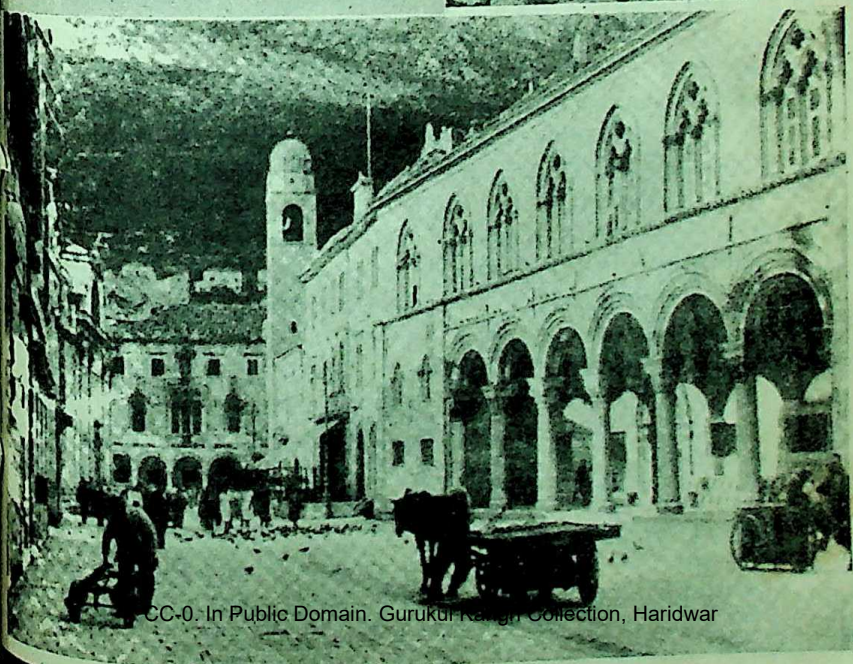
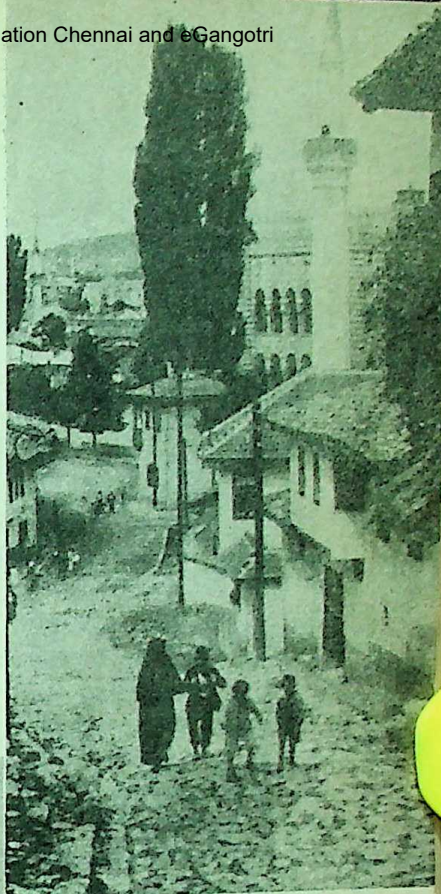
विदेशियों के क्रूर शासन एवं शोषण का शिकार रहे हैं।

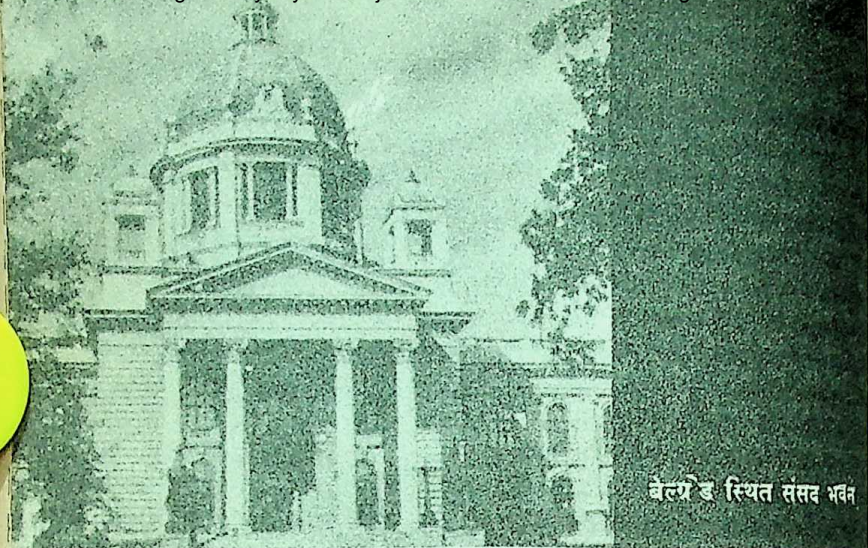
युगोस्लाविया के जनमानस को समझने के लिए यह जरूरी था कि उस को काफी करीब से देखा जाए। मैं रात को घर से बाहर निकला। बेलग्रेड में सिबेनिक और तदुपरांत एरकेग्नेवी गया। फिर मैं दोबारा उत्तर दिशा की ओर पलटा और सेंटा, आसिजेक तथा जांजेव की सैर की। मैं ने वहां की गंदी से गंदी सड़कों, सूनी पगडंडियों से ले कर भीड़ और राजपथों, निजी झोपड़ों और मकानों से ले कर भड़कीले होटलों तक का भ्रमण किया। तब स्टीमबोट से डैन्युब पहुंचा और उस के बाद रेलगाड़ी पकड़ कर तड़के ही जब बेलग्रेड पहुंचा तो सारा शहर आंखों में नींद लिए ऊंच रहा था।

साम्यवादी वातावरण में सांस लेते हुए घुटन महसूस हो रही थी? क्या मैं साम्यवाद के भय से आक्रांत था? क्या किसी गुप्तचर की चोर नजर मेरी पीठ पर गड़ी चुपचाप मेरा पीछा कर रही थी? क्या हर जगह पुलिस मेरे पारपत्र की जांच करना चाहती थी? क्या मेरी गैर-साम्यवादी पृष्ठभूमि मुझे वहां के पर्यावलोकन से रोक रही थी? सवाल पर सवाल मुझे एकएक कर घेर रहे हैं।

आज मैं पुनः बैठ कर दोबारा अपनी यात्रा के अनुभवों को जीवंत करना चाहता हूं। मेरी लेखनी मेरी तरफ प्रश्नसूचक मुद्रा से देख रही है। एक बार फिर उन अनुभवों को जी लेना चाहता हूं जो मुझे वहां की सड़कों और दुर्गम स्थानों से गुजरते समय हुए थे। मैं उन छापों को एक बार फिर रेखांकित करना चाहता हूं जो मार्शल टीटो और मिलोवन जिलास के बारे में बातचीत सुन कर मुझ पर पड़ी थीं। मैं यह सब इसलिए सोच रहा हूं कि

(दाएं) सराजेवो की एक पहाड़ी सड़क,
(नीचे) एड्रिएटिक सागर के किनारे स्थित
इयूक्लाविक में रेक्टर का भव्य भवन.





वेल्फेड स्थित संसद भवन

मैं इन अनुभवों के आधार पर आप लोगों के समक्ष युगोस्लाविया का चित्र खींच सकूँ, संभव है, इस प्रक्रिया में मुझ में भी जीवन के प्रति कोई नया दृष्टिकोण उजागर हो जाए।

किसी भी देश के बारे में कुछ टिप्पणी करने के लिए वहाँ का वर्षों का अनुभव अपेक्षित है। लेकिन जहाँ तक जनमानस को समझने का प्रश्न है, कई बार तो इस के लिए बातचीत के कुछेक टुकड़े ही काफी होते हैं। देश मात्र कोई भूखंड तो होता नहीं। वह तो वहाँ के निवासियों में रचाबसा होता है। इस बात को यदि सीधे कहें, तो एक देश के निवासी ही देश होते हैं। चलतेफिरते निवासियों के चेहरे ही देश की गतिविधियों का दर्पण होते हैं। कुछ अदद मुसकानें, कुछ मिलतेबिछुड़ते हाथ, थोड़े से आंसू, विदाई के समय पिघलते चेहरे—सब मिला कर एक देश का चित्र आप की आंखों में खींच देते हैं।

यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि गत दोतीन दशकों में युगोस्लाविया ने अभूतपूर्व उन्नति की है। न जाने कितनी शताब्दियों के बाद वहाँ की जनता को सुख और चैन की नींद मयस्सर हुई है, उन्हें वह सब मिल पाया

है जो उन के लिए कभी वंजित था। आज उन की समस्याएं बदली हुई हैं और उन्हें सुलझाने का उन का ढंग भी। बने ही कुछ मुट्ठी भर लोगों के लिए यह व्यवस्था क्यामत का परवाना सिद्ध हुई हो, परंतु जहाँ तक आम जनता का सवाल है, यह उन के लिए वरदान सिद्ध हुई है। बरसों तक पृथक्तावादी शक्तियों का खिलौना रहने के बाद 1929 में इस देश को 'युगोस्लाविया' नाम मिला।

युगोस्लाविया सदियों तक शोषण का शिकार रहा है। बरसों तक रोमन इन्हें लूटतेखसोटते रहे। फिर इस के बाद तुर्की, इटली, आस्ट्रिया, बुल्गेरिया और हंगरी के शासकों ने यहाँ के लोगों का जम कर शोषण किया।

1941 तक यहाँ जैसे घृणा, आतंक और कट्टरपंथियों का बोलबाला था। रोमन कैथोलिकों, पुरातनपंथी चर्च, मुसलमानों तथा जिप्सियों की परस्पर कलह होती रहती थी। युगोस्लाविया बनें अलबानिया, हंगरी, जर्मनी, बुल्गेरिया, इटली, तुर्की, रूथानिया, चैकिया, स्लोवनिया आदि की नीतियों का अजायब बन कर रह गया था। 1945 में यह साम्यवादी व्यवस्था आई। 1948 तक यह

सितंबर (प्रथम) 1947

स्तालिनवाद का Dholized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri को अधिक के बाद युगोस्लाविया अपने नए स्वतंत्र रूप में विश्व के मानचित्र पर उभर कर आया।

मेसोडोनिया, क्रोशिया, मांटेंग्रो, स्लावेनिया, बोस्नेदोनिया तथा सर्बिया समेत छः गणतंत्रों को मिला कर इस महासंघ की रचना की गई। 19 लाख की आबादी में यहां अब मुश्किल से कुछ हजार लोग साम्यवादी दल के सदस्य हैं। स्तालिनवाद के प्रभुत्व के पतन के बाद लादी हुई सामूहिकता की रीढ़ टूट गई। गुप्तचर विभाग की गतिविधियां बंद हुईं। संविधान नए सिरे से तैयार हुआ।

युगोस्लाविया में पहले कभी भले ही शोषण का बोलबाला रहा हो, परंतु आज यह हर समाजवादी देश के लिए आदर्श बन सकता है। कभी जहां पूर्ण निरक्षरता थी, आज वहां 95 प्रतिशत लोग पढ़ेलिखे हैं। वहां का शासनतंत्र जनता के हितों का ध्यान रखता है और नौकरशाही पत्थरदिल कठपुतलियां नहीं है। वह जनता के साथ पूर्णरूपेण सहयोग करती है। युगोस्लाविया के मंत्रिमंडल के सदस्य और दफ्तर के क्लर्क की तनखाहों में कोई लंबाचोड़ा फर्क नहीं है। उन के यहां के मंत्रिमंडल के सदस्य व्यर्थ के सैरसपाटों और कागजी काररवाइयों

महत्त्व देते हैं। शासकों और जनता के बीच सही तालमेल होने के कारण ही वे लोग आज विकास के सोपान पर तेजी से चढ़ रहे हैं।

लोगों की मनोवृत्तियां

अभी तक मैं आम अनुभवों की बात कर रहा था। अब मैं कुछ व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बताऊंगा, जिस से वहां के लोगों की मनोवृत्तियों के बारे में पता चलता है। एक बार मैं स्प्लिट नगर के एक 'बार' में बैठा टर्किश काफी पी रहा था। वहां मेरी मुलाकात एक सज्जन से हुई जो किसी दफ्तर में क्लर्क थे। उन्होंने मुझे अजनबी जान कर मुझ से पूछा कि मैं ने किस होटल में कमरा आरक्षित कराया है। जब मैं ने उन्हें बताया कि मैं अभी कमरा लेने की सोच ही रहा हूं तो उन्होंने मुझे अपने घर ठहरने का आमंत्रण दिया। वहां की सरकार व्यक्तिगत आवास को प्रोत्साहन देती है, यह सोच कर मैं इस के लिए तैयार हो गया।

मैं ने इन महाशय के घर दो दिन व्यतीत किए। वह सीधीसादी आदतों के सुलझे हुए आदमी थे। वह अपनी बीबी और बच्चों के साथ दो कमरे के फ्लैट में



कुएं से पानी भरती हुई
कुछ युगोस्लाव औरतें।

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए। उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी।

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● हिंदी की क्लास थी। पंडितजी के आने से पहले क्लास में शोर हो रहा था। इसी बीच एक लड़का गुनगुनाने लगा, “पंडितजी, मेरे मरने के बाद...” उस का वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि पंडितजी, जो अचानक क्लास में आ गए थे, बोल पड़े, “हां, बेटे, तेरे मरने के बाद तेरे श्राद्ध में जरूर आऊंगा。” उन का इतना कहना था कि हम सभी हंस पड़े।
—संपतराज डागा, पूर्णिया

● एक दिन कक्षा में जनसंख्या पर वार्तालाप चल रहा था कि हमारे शिक्षक महोदय, जो कि बहुत ही गंभीर स्वभाव के हैं, अचानक मुसकरा कर बोले, “आवादी क्षण प्रति क्षण बढ़ती जा रही है। पता नहीं, मशीनें ही लगी हुई हैं。”

उन की गंभीर प्रकृति के कारण उन के मुख से यह अप्रत्याशित बात सुन कर कक्षा में हंसी का फव्वारा छूट पड़ा। तभी एक लड़का उन की बात को आगे बढ़ाता हुआ बोला, “सर, उस मशीन के आधे पुर्जे (यानी लड़के) तो इधर बैठे हैं और आधे पुर्जे (लड़कियों की तरफ इशारा कर के) उधर बैठे हैं。”

यह सुन कर कक्षा में तो हंसी का शोर कई गुना बढ़ गया, परंतु शिक्षक महोदय जेंप कर कक्षा से बाहर चले गए।
—वीरेंद्रकुमार, देहरादून

● एक बार हमारे विज्ञान के अध्यापक ‘ध्वनि’ और ‘शोर’ का अंतर समझा रहे थे। सिद्धांतों को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने अनेक उदाहरण भी दिए, लेकिन बहुत से विद्यार्थी समझ न सके। अध्यापक महोदय ने तब एक और उदाहरण दिया, “पिछले सप्ताह मेरे घर लड़का हुआ। अगर वह रोता है तो उस के रोने की आवाज मेरे लिए तो ध्वनि है, पर आप के लिए वह रोने की आवाज केवल शोर ही है。”

—चंद्रमोहन गुप्ता, दिल्ली

● एक दिन एक प्रोफेसर साहब, जो कि छात्रावास के प्रमुख थे, सारे दिन अपने केबिन में बहुत परेशान हो रहे थे। पिछले महीने का मेस का खर्च काफी ज्यादा आया था। इस वजह से कोई न कोई छात्र हर दोचार मिनट पर आ कर उन्हें तंग कर रहा था। आखिरकार शाम को जब केबिन बंद कर के प्रोफेसर साहब बाहर जाने को हुए तो उन्हीं के छात्रावास का एक सीधासादा छात्र उन के सामने आ खड़ा हुआ। वह तुरंत तुनक कर चीखे, “मैं उस बात के लिए बिलकुल ही जिम्मेदार नहीं हूँ। मुझे कुछ मत कहो。”

छात्र धीरे से बोल पड़ा, “मैं तो आप को पुत्रजन्म की बधाई देने आया था。”
कुछ ही दिनों पूर्व प्रोफेसर साहब के प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ था।
—डा. आशा रागेणकर, बंबई

● बेगमगंज. रायसेन हायर सेकंडरी स्कूल परीक्षाओं के दौरान यहां एक शिक्षक अपने ही पुत्र को नकल कराते हुए पकड़े गए। सामाजिक अध्ययन की परीक्षा चल रही थी। उक्त शिक्षक महोदय कमरे में पहुंच कर अपने पुत्र को नकल कराने लगे। इस पर निरीक्षकों ने विरोध किया। मगर वह नहीं माने। तब प्राचार्य स्वयं आए और उन्होंने शिक्षक और उन के पुत्र, दोनों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए बोर्ड को लिख दिया।
—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : पुरुषोत्तम श्रीवास्तव, बीना) ●

अच्छी पुस्तकें पढ़िए

गणता चला कि उन सब व्यक्तियों में से अधिकतर की सफलता प्रमुख कारण थे—अच्छा शब्द भंडार तथा पढ़ने की आदत. वस्तुतः पढ़ने की आदत से ही शब्द भंडार भी अच्छा बन सकता है.

यह ठीक है कि आप संसार की सभ्य श्रेष्ठ पुस्तकें नहीं पढ़ सकते, किन्तु आप जितना अधिक पढ़ेंगे, उतना ही आप सच्चा और उपयोगी ज्ञान प्राप्त होंगे. यह मत सोचिए कि अध्ययन के लिए समय निकालना केवल विद्यार्थियों के लिए ही संभव है.

चाहे आप एक व्यस्त गृहिणी हों या भारी जिम्मेदारियों वाले मिनिसटर, चाहे आप सुबह से शाम तक काम में जुटे रहने वाले व्यवसायी हों या मिलमालिक, पढ़ना

पुस्तकें आप के सब से अच्छे मित्र हो सकती हैं

यदि आप जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, तो पढ़ने की आदत डालिए—और पढ़ने का सही तरीका सीखिए. पुस्तकें कुवेर के खजाने की भांति अगणित रत्नों से भरी हुई हैं. कौन सी ऐसी समस्या है जो सही पुस्तकों के अध्ययन तथा तदनुसार कार्य करने से हल नहीं हो सकती?

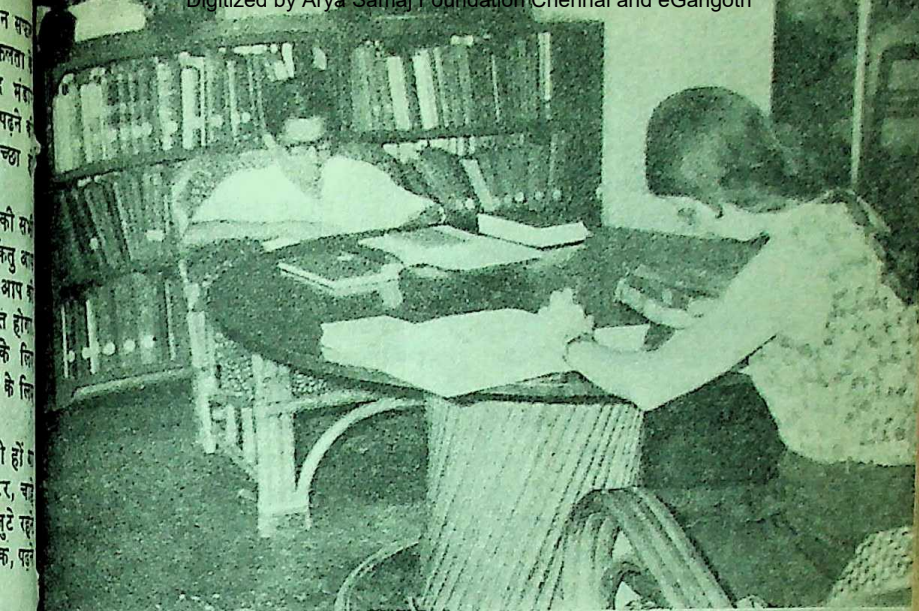
यदि आप एक सफल विद्यार्थी होना चाहते हैं या अपने व्यवसाय में सफलता पाना चाहते हैं या अपने समाज के लोक-प्रिय और प्रमुख व्यक्तियों में से एक होना चाहते हैं, तो पुस्तकों की दुनिया में आइए. यहां संसार का समस्त ज्ञान और अनुभव भरा पड़ा है. यहां तो 'जिन खोजा, तिन पाइयां' के अनुसार जितना ही गहरे पैठेंगे, उतने ही कीमती मोती आप को प्राप्त होंगे.

हाल ही में अमरीका की 'ह्यूमन इंजीनियरिंग लेबोरेटरी' में अमरीका के सफल व्यक्तियों के जीवन के वास्तविक तथ्यों के आधार पर सर्वेक्षण किया गया

के लिए आप दिन भर में अधिक नहीं तो कम से कम एक या दो घंटे तो निकाल ही सकते हैं.

सुबह कुछ जल्दी उठने या रात में घंटा, आध घंटा देर से सोने की आदत डाल कर आप अपनी व्यस्त से व्यस्त दिनचर्या में अध्ययन के लिए समय निकाल सकेंगे. क्या ही अच्छा हो, यदि आप ऐसा नियम बना लें कि सप्ताह में कम से कम एक पुस्तक अवश्य समाप्त कर लेंगे. यदि आप में लगन है और आप का निश्चय दृढ़ है, तो इतने अध्ययन से ही आप अपनी दुनिया बदल सकते हैं.

हां, आप का अध्ययन अनियमित और अव्यवस्थित नहीं होना चाहिए. अन्यथा आप उस से पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे. आप को अपनी रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार एक योजना बनानी चाहिए. पढ़ने का एक सुंदर और उपयोगी तरीका यह है कि लगभग एक महीने तक किसी भी एक विषय को पढ़ कर आप उसी के संबंध की पुस्तकें पढ़ें.



बशर्ते कि आप का चुनाव अच्छा हो...

जैसे, आप ने प्रेमचंद अथवा डिकेंस का कोई उपन्यास पढ़ा. वह आप को बहुत पसंद आया. अब आप को चाहिए कि उसी लेखक के कुछ अन्य उपन्यासों का रसास्वादन करें. यदि आप मनोविज्ञान या मनोविश्लेषण के संबंध में अपनी जानकारी बढ़ाना चाहते हैं, तो अच्छा यह होगा कि आप किसी नौसिखिए लेखक की बाजारू रचना से आरंभ न करें. बल्कि क्रमशः फ्रायड, जुंग और एडलर की विचारधाराओं से अवगत हो कर वैज्ञानिक ढंग से लिखी हुई आधुनिक लेखकों की श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ें.

इस दौर में परिवर्तन के लिए यदि आप किसी उत्तम मनोवैज्ञानिक उपन्यास, कहानी पढ़ें, तो आप देखेंगे कि आप उस का आनंद पहले से कहीं अधिक उठा रहे हैं और उपन्यास या कहानी के प्रतीकों तथा उस के पात्रों की प्रवृत्तियों को पहले से कहीं अधिक समझ पा रहे हैं.

पढ़ने में सदा एक ही विषय में अटके रहना भी अच्छा नहीं होता. इस से आप

का ज्ञान एकांगी और सीमित रह जाएगा. जिस विषय में आप अपना ज्ञान अपर्याप्त समझते हैं या जिस विषय में जानकारी बढ़ाना चाहते हैं, उस को समयसमय पर पढ़ते रहिए.

अध्ययन के संबंध में अपना कार्यक्रम बहुत कठोर या अपरिवर्तनशील न बनाइए. अध्ययन के विषय के चुनाव में अपनी दृष्टि उदार रखिए और सभी ओर अपनी रुचि बढ़ाइए. किसी अच्छे पुस्तकालय या पुस्तकों की दुकान पर जाइए. देखिए, कितने विविध विषयों पर रोचक तथा ज्ञानवर्धक पुस्तकें भरी पड़ी हैं.

यह देखिए, फ्रेंच कलाकार पाल गोगिया की रंगीन जीवनी है. उधर चर्चिल की 'क्लोजिंग द रिग' पड़ी हुई है. उस अलमारी में अरविंद, राधा-कृष्णन और बट्टेड रसेल की रचनाएं हैं, तो इधर जैनेंद्र और अज्ञेय के श्रेष्ठ उपन्यास रखे हुए हैं. इन के पन्ने उलटिए, और यदि कोई पुस्तक आप को भा जाए तो घर ला कर उसे पढ़िए.

और हां, यदि आप अपना अध्ययन आधुनिक विज्ञान के क्षेत्रों पर, मनोविज्ञान व राजनीति आदि विषयों पर उच्च स्तर की पत्रिकाएं पढ़ना कभी मत भूलिए. इन पत्रिकाओं से न केवल आप का श्रेष्ठ मनोरंजन होगा, बल्कि अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक समस्याओं को सुलझाने में सच्चे मित्र की सी सहायता भी मिलेगी. आप का बौद्धिक क्षेत्र विस्तृत होगा और समाज में आप का आदर तथा लोकप्रियता बढ़ेगी.

जो पुस्तक आप को अच्छी नहीं लग रही है, उसे जबरदस्ती कभी न पढ़ें. इस में क्या बुद्धिमानी है कि जब संसार में असंख्य अच्छी पुस्तकें मौजूद हैं, तब आप ऊँघऊँघ कर किसी ऐसी पुस्तक को जैसेतैसे समाप्त करने में जुटे हैं, जिस में न रस मिल रहा है और न ज्ञान.

पर यदि आप विद्यार्थी हैं या किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो कहीं किसी पाठ्यपुस्तक को ही न छोड़ बैठिएगा. यह न भूलें कि यदि विद्वानों में सत्कृत और मान्य किसी पुस्तक में आप का जी नहीं लगता, तो अधिक संभावना इसी बात की है कि दोष आप में है, न कि उस पुस्तक में.

पढ़ने की आदत न होना, सीमित और संकुचित ज्ञान, पुस्तक का विषय ठीक से समझ में न आना—ये ही सब ऐसे कारण हैं, जो संसार की महानतम कृति का अध्ययन करते समय भी जम्हाई ला सकते हैं या अरुचि पैदा कर सकते हैं.

पर इस से हताश होने की कोई

वजह नहीं. यह तो एक अस्थायी स्थिति है. जैसे-जैसे आप की पढ़ने की आदत बढ़ेगी और आप का ज्ञान बढ़ेगा, यह अरुचि रुचि में परिवर्तित हो जाएगी और आप सफलता के पथ पर तेजी से बढ़ने लगेंगे.

नोट्स बनाइए

पुस्तकों को मशीन की तरह कभी मत पढ़िए. आवश्यक नोट्स बनाइए. जो स्थल या बातें पसंद आएँ, उन पर निशान बना लीजिए. इस से दोबारा पुस्तक देखने में तथा उन स्थलों को याद रखने में बड़ी सहायता मिलती है. (पर किसी इष्टमित्र या पुस्तकालय से लाई हुई पुस्तक को लालनीली लाइनों से सुसज्जित करना अच्छी आदत नहीं.)

अपने मस्तिष्क को चिंतन और मनन करने का अवसर दीजिए. पुस्तक की बात को आंख मूंद कर न मान लीजिए. पढ़ने के बाद सोचिए और अपने निजी विचार निश्चित कीजिए. विभिन्न विषयों में परस्पर संबंध स्थापित करने की कला सीखिए.

उचित अवसर पर मित्रों, क्लबों और सभासोसाइटी में भी अपने विचारों का आदानप्रदान कीजिए. आप शीघ्र ही देखेंगे कि आप के जीवन में एक महान परिवर्तन हो रहा है. जी हां, आप को स्वयं अपना व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली और अपना जीवन अधिक सुखी प्रतीत होने लगेगा. इसलिए हमेशा अच्छी पुस्तकों के पढ़ने की आदत डालिए.

पुस्तक

पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं जो संतों और वीरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं. —विग्बन

संसार एक महान पुस्तक है जिस में वे लोग जो कभी घर से बाहर नहीं निकलते, केवल एक पृष्ठ पढ़ पाते हैं. —आगस्टाइन



लेख . गोपालप्रसाद 'वंशी'

अभिभावकों का उत्तरदायित्व

हर व्यक्ति अपनी संतान को प्रगतिशील देखना चाहता है,
लेकिन क्या वह अपना उत्तरदायित्व निभा पाता है?

संसार में निर्बल और प्रभावहीन रह कर जीने में कोई मजा नहीं है। जो निर्बल अथवा प्रभावहीन होता है उसे कोई पूछता नहीं। सभी उसे अपना शिकार बनाने की कोशिश किया करते हैं। निर्बल होने का अर्थ है संसार के कुटिल तथा स्वार्थी लोगों का भोजन बन जाना।

निर्बलता और प्रभावहीनता का कारण है अज्ञान, और अज्ञान का कारण है अशिक्षा व संसार की गतिविधियों से अपरिचित रहना। जो अशिक्षित है वह किसी से न तो ठीक तरह बात कर सकता है और न दूसरों की बात ही ठीक से समझ सकता है। वह अध्ययन द्वारा महा-पुरुषों के विचारों तथा अनुभवों का लाभ नहीं उठा सकता। इसलिए ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है।

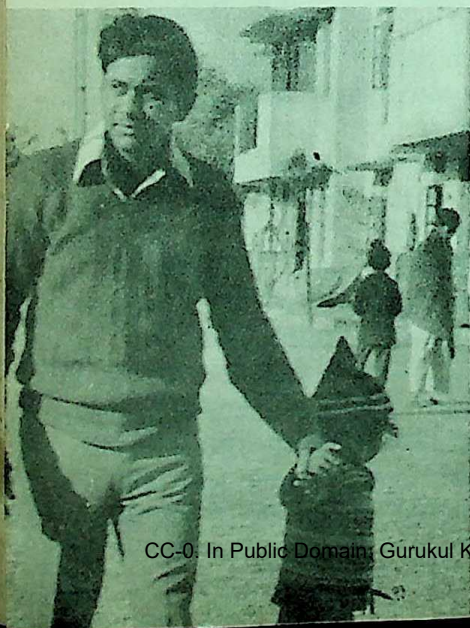
किंतु केवल शिक्षा ही ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं। किसी ने एम. ए., बी. ए. तक की शिक्षा तो प्राप्त कर ली, किंतु अगर वह समाज से कटाकटा बिलकुल तटस्थ रहता है, तो उस की शिक्षा सार्थक नहीं होती। इस प्रकार एकाकी रह कर वह अपनी विद्या का लाभ न स्वयं उठा पाता है और न किसी दूसरे को दे पाता है। संसार में कहां क्या हो रहा है, लोगों की विचार-धारा किस ओर बह रही है, वर्तमान परिस्थितियों में हमें क्या और कैसे करना चाहिए—इस का ज्ञान प्राप्त किए बिना दिशा, कार्यपद्धति और साधनों का निर्णय नहीं किया जा सकता। जिसे अपने आस-पास की गतिविधि तथा परिस्थिति की जानकारी नहीं, वह शिक्षित होने पर भी

अज्ञानी हो जाते हैं। जिनसे साक्षात् सम्बन्ध प्राप्त करने के लिए शिक्षा पाना और साथ ही संसार का अध्ययन करते रहना बहुत आवश्यक है।

शिक्षा का प्रारंभ

शिक्षा का प्रारंभ वचपन से होता है। पांचछः वर्ष की आयु में जब शिक्षा प्रारंभ की जाती है, बच्चों के पास अपनी स्वयं की समझ नहीं होती। वे अपना अच्छाबुरा भी नहीं समझ पाते। साथ ही, उन में पढ़ने की स्वतः प्रेरणा नहीं होती। उस समय तो उन्हें खेलना और शरारत करना ही पसंद होता है। पढ़ने के लिए जिस दिन वे बैठाए जाते हैं, उस दिन उन का एकमात्र काम खेलना ही होता है। पढ़ाई उन के लिए सर्वथा नवीन तथा स्वभाव और अभ्यास के विरुद्ध होती है। किंतु जब धीरेधीरे अन्य बच्चों के साथ अभ्यस्त हो जाते हैं तो अपनेआप पढ़ने में रस लेने लगते हैं। किंतु इस के लिए अध्यापकों को काफी परिश्रम करना पड़ता है। उन्हें इस संबंध में बड़ा सावधान तथा सतर्क रहना होता है।

बच्चे हर चीज को देख कर उत्सुक हो जाते हैं और अभिभावकों से उस का परिचय जानना चाहते हैं।



चल निकलने के बाद बहुधा उन के अभिभावक उन की शिक्षा की ओर से असावधान या उदासीन हो जाते हैं। पर अभिभावकों की इस उदासीनता से बच्चों की शैक्षणिक प्रगति मंद हो जाती है। जब तक बच्चे पूरी तरह प्रबुद्ध न हो जाएं, अभिभावकों को उन की पढ़ाई और प्रगति में पूरीपूरी दिलचस्पी ले कर उन्हें प्रेरणा देते रहनी चाहिए। इस से वे उत्तरोत्तर तेजी से बढ़ते चले जाते हैं।

अभिभावकों को चाहिए कि वे नित्य सायंकाल घंटा, आध घंटा बच्चों की पढ़ाईलिखाई देखने के लिए बैठ करें। इस समय वे उन से स्कूल में क्या पढ़ाई कर रही है, कितना पाठ्यक्रम हो चुका है और कितना शेष है, यह पूछा करें। साथ ही उन से पढ़े पाठों के विषय में प्रश्न कर के यह पता लगाया करें कि बच्चे जो पाठ पढ़ चुके हैं, वह याद भी करते हैं या नहीं। उन की कापियां भी देखा करें कि जो गलतियां ठीक की जाती हैं उन्हें वे बारबार लिख कर अभ्यास कर लेते हैं या यों ही छोड़ देते हैं।

इस देखभाल के अतिरिक्त अभिभावकों को चाहिए कि वे उस समय बच्चों से पढ़ाई के विषय में इस प्रकार बातचीत करें जिस से वे शिक्षा की गरिमा अनुभव करें और प्रेरणा पाएं। इसी समय बच्चों को स्वयं भी कुछ न कुछ पढ़ाना चाहिए और कभीकभी उन की परीक्षा ले कर यह पता भी करना चाहिए कि वे किस गति से प्रगति कर रहे हैं। इस प्रकार बच्चों की पढ़ाई में स्वयं भाग ले कर उन की अभिभावक बढ़ाते रहनी चाहिए। जो अभिभावक बच्चों की पढ़ाई में स्वयं रुचि नहीं लेते, उन के बच्चे प्रायः पढ़नेलिखने में रुचि नहीं लेते और पिछड़ जाते हैं।

बच्चों की शिक्षा के लिए माता अध्यापकों पर ही निर्भर नहीं रहनी चाहिए। अध्यापकों के लिए कोई एक ही विद्यार्थी नहीं होता। उन्हें तो पचास विद्यार्थियों के साथ माथापच्ची करनी

पड़ती है। पचास जगह बच्चों को अधिक लाभ
ध्यान तथा समय बच्चों को अधिक लाभ
नहीं पहुंचा पाता, इसलिए अभिभावकों
को बच्चों को स्वयं भी थोड़ा समय दे
कर उस कमी को पूरा करते रहना
चाहिए।

यथार्थ शिक्षा

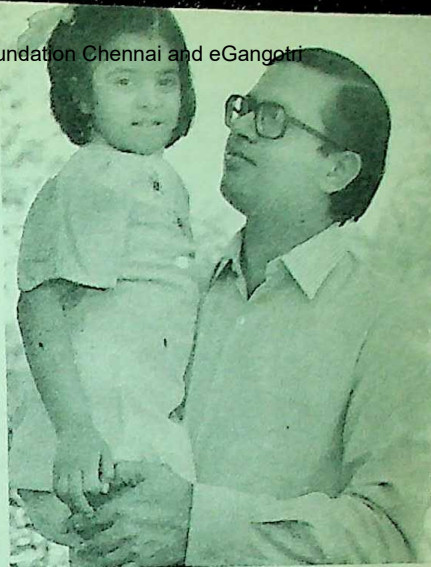
यह तो रही पुस्तकीय शिक्षा की
बात। इस के अतिरिक्त एक शिक्षा और
है जिसे अनुभववीय अथवा यथार्थ शिक्षा
कहा जा सकता है। वह यह कि बच्चों
को संसार का यथार्थ अथवा व्यावहारिक
ज्ञान कराया जाए। इस के दो तरीके हैं।
एक यह कि बच्चों को अपने साथ बाजार,
सभा, मेलों और उत्सवों में ले जाना
चाहिए। ऐसे अवसरों पर अभिभावक
बाजार की चीजों, उन के भाव तथा उप-
योग के विषय में बतलाएं और दिखलाएं
कि लोग एकदूसरे से किस प्रकार व्यवहार
करते हैं। व्यावहारिक ज्ञान के लिए बच्चे
बड़े ही उत्सुक तथा जिज्ञासु होते हैं।
अभिभावकों को अपने बच्चों की उत्सुकता
और जिज्ञासा का समाधान अवश्य करते
रहना चाहिए।

साथ ही, अभिभावकों को चाहिए
कि वे नित्यप्रति सुबहशाम बच्चों को
बस्ती से दूर कुछ देर के लिए धुमाने ले
जाएं। ऐसे अवसर पर उन्हें प्राकृतिक
दृश्यों, पक्षियों, सामान्य वनस्पतियों तथा
यदि मिल सकें तो पशुओं की वाबत भी
बतलाएं। साथ ही, सूर्य, चंद्र, ग्रहनक्षत्रों
तथा एकांत, शून्य आदि के आधार
पर आध्यात्मिक जिज्ञासा भी जगाते
चलनी चाहिए। इस प्रकार बच्चों में
पुस्तकीय ज्ञान के साथ इस जगत और
इस से बाहर की चीजों के ज्ञान का क्रम
बढ़ता चलेगा।

बुद्धिमान अभिभावक

एक बुद्धिमान अभिभावक ने अपनी
इस व्यावहारिक विधि का वर्णन करते
हुए एक स्थान पर लिखा है—

“मैं अपने दोनों किशोर बच्चों को



बच्चों को केवल स्कूली ज्ञान पर ही
नहीं रखना चाहिए बल्कि समयसमय
पर व्यावहारिक शिक्षा भी देनी चाहिए।

अपरिचित सड़कों पर भेजता हूं और
निर्देश देता हूं कि एक घंटे घूम कर आएँ
और मुझे बतलाएं कि उन्होंने कहां क्या
देखा। जब वे लौट कर आते हैं तो मैं उन
से उन की जानकारी के विषय में प्रश्न
करता हूं। उत्तर संतोषजनक न होने पर
दूसरे दिन उन्हें फिर इस निर्देश के साथ
भेजता हूं कि वे रास्ते की हर चीज और
हर घटना को खूब ध्यान से देखते चलें
और उन का महत्त्व तथा विशेषताएं
हृदयंगम करते जाएं। वे जाते हैं और
वैसा ही करते हैं। वापस आने पर मेरे
प्रश्नों का ठीकठीक उत्तर देते हैं। इस
प्रकार मैं देख रहा हूं कि मेरे दोनों बच्चों
का सांसारिक तथा व्यावहारिक ज्ञान
दिनदिन बढ़ता जा रहा है। यह आगे चल
कर उन की जीवनयात्रा में बहुत सहायक
तथा उपयोगी होगा, ऐसा मेरा पूरा
विश्वास है।

निस्संदेह यह अभिभावक एक बुद्धि-
मान अभिभावक हैं और बच्चों के प्रति
किसी पिता का क्या कर्तव्य है, इस को
अच्छी तरह जानते तथा पालन करते हैं।
जिन बच्चों में हर चीज तथा घटना को

ध्यान से देखने का अभ्यास हो जाता है। वे आगे चल कर बड़े अनुभवों तथा कुशल नागरिक होते हैं। उन का यह गुण हर बात और हर समस्या को ठीक से समझने और उस का हल निकालने में बड़ा सहायक होता है।

शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकें पढ़ कर परीक्षा पास कर लेना भर ही तो नहीं है। परीक्षा पास करना अनिवार्य है और उन के लिए स्वाध्याय करते रहना भी नितांत आवश्यक है, जो प्रत्येक छात्र को करना ही चाहिए। परंतु सच्चा ज्ञान तब तक नहीं होता जब तक विद्यार्थी ब्रह्मांड के इस विशाल विश्वविद्यालय में मृशमंशिता के साथ पदार्थों तथा घटनाओं का अध्ययन नहीं करता। इस के अभाव में स्कूली शिक्षा अधूरी रह जाती है।

सफलता का द्वार

यदि बच्चों में जीवन के हर क्षेत्र में सावधान तथा जिज्ञासु हो कर हर चीज को ठीक से देखने और समझने की आदत का विकास कर दिया जाए तो समझें कि उन के लिए ज्ञान के साथ सफलता का भी द्वार खोल दिया। पशुपक्षी, कीड़ेमकोड़े, नदी, पर्वत, आकाश तथा प्रकृति के सुंदर दृश्य अपने मुखर मौन में महानतम शिक्षा

का भंडार भरे उठते हैं। जो उस ज्ञान का लाभ उठाने की पात्रता प्राप्त करता है वह विद्वान होने के साथसाथ यथार्थ ज्ञान से परिपूर्ण अनुभवी मनुष्य बन जाता है। उस का प्रभाव बढ़ जाता है, उस की मनोशक्ति का विकास होता जाता है, उस की आत्मा प्रकाशित हो उठती है और वह सफलता के सोपान पर कदम रखता हुआ दिनदिन बढ़ता जाता है।

हारवर्ड विश्वविद्यालय के महान जीवशास्त्री प्रोफेसर श्री एगार्जिस के पास जब कोई नया छात्र आता तब वह उसे एक मछली देते और कहा करते थे कि आधे या एक घंटे तक इसे अच्छी तरह देखो। जब छात्र मछली देख कर वापस आता तो वह उस से उस के विषय में पूछते और कहते कि तुम ने अभी मछली को ऊपरी तथा सरसरी नजर से देखा है इसे गहरी नजर से गहराई तक देख का आओ। ऐसा वह अनेक बार करते थे और जब छात्र में किसी चीज को गहराई से साथ देखने और समझने की बुद्धि का विकास हो जाता था तब उस की शिक्षा प्रारंभ करते थे। ऐसा करने में उन ने सभी छात्र न केवल परीक्षा में ही अनेक अंकों से पास होते बल्कि शिक्षा के बावजूद एक सफल नागरिक भी सिद्ध होते थे।

उत्तरदायित्व

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूल कर भटकने लगते हैं तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथप्रदर्शक बन जाता है।

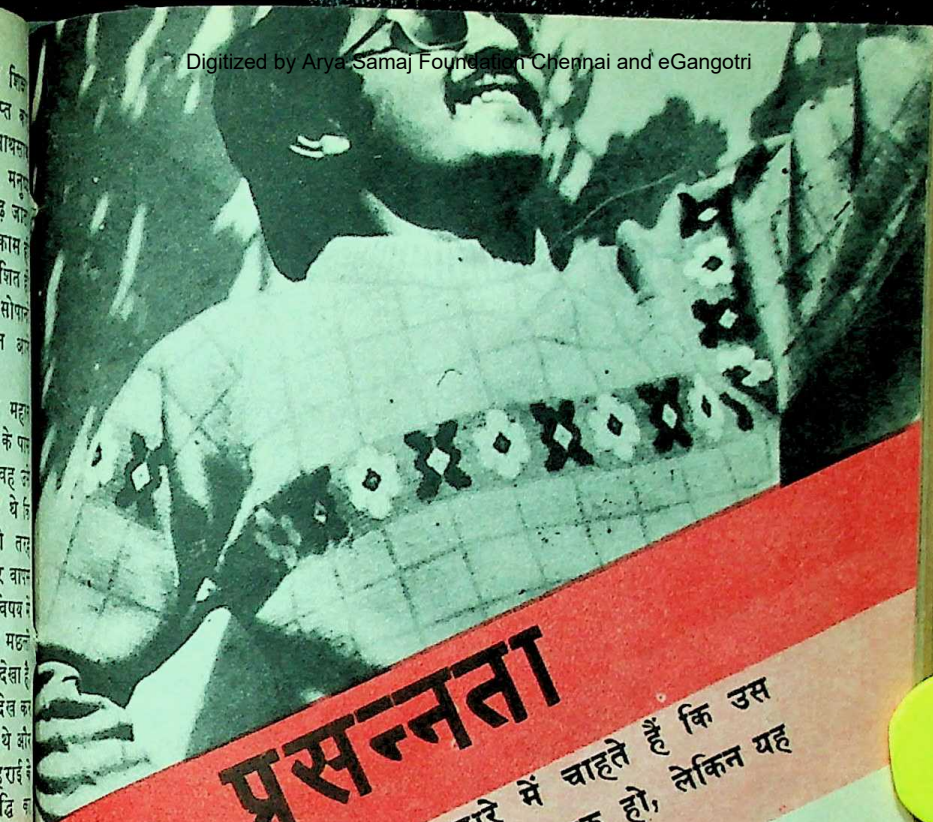
—प्रेसबंद

उत्तरदायित्व योग्यता और शक्ति के साथसाथ चलता है।

—जे. जी. हालैंड

उत्तरदायित्व से शिक्षा मिलती है।

—वैंडेल फिलिप



प्रसन्नता

हम अपने प्रत्येक प्रयत्न के बारे में चाहते हैं कि उस का परिणाम सुखद व प्रसन्नतादायक हो, लेकिन यह प्रसन्नता कहां मिलती है?

कुछ दिन पूर्व

मेरी प्रिय

सहेली का एक पत्र

आया था. उस ने लिखा था, "मैं इतने तनाव से ग्रस्त हूँ कि लगता है, मस्तिष्क की नसें फट जाएंगी, इतनी उदास हूँ कि मन करता है, सब कुछ छोड़ कर कहीं दूर चली जाऊँ. हमेशा सोचती हूँ, काश, मुझे कहीं कोई थोड़ी सी खुशी दे देता!"

पत्र पढ़ कर मैं दंग रह गई. पत्र

लेख . रजनी गोपालन

बड़ा विचित्र था. मेरी सहेली रूपा सुंदर है. गोरा चेहरा, तीखी नाक, छरहरा बदन, एम. ए. तक की शिक्षा, संपन्न कुलीन डाक्टर पति—क्या कुछ नहीं है उस के पास. लगा, कहीं कुछ बहुत बड़ी भूल हो गई है, जो केवल रूपा को ही नहीं, वरन ऐसे हजारों लोगों को आज जीवन से निराश हो कर दूर भागने के लिए मजबूर कर रही है.

ऊबड़खाबड़ राहों में गिरतेपड़ते जीवनयापन के लिए जीतोड़ परिश्रम करने के पीछे इन्सान का एक ही लक्ष्य होता है और वह है प्रसन्नता की प्राप्ति. यदि एड़ीचोटी का पसीना एक करने के उपरांत भी इन्सान को प्रसन्नता नसीब न हो तो निश्चय ही हृदय बैठ जाता है तथा सारा उत्साह धुआं बन कर उड़ जाता है.

निराशा का प्रधान कारण है असफलता। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के दानों की तरह न जाने कितनी कल्पनाएं पंक्तिबद्ध सजी रहती हैं। किंतु—सृष्टि का नियम कुछ ऐसा विचित्र है कि किसी की भी कल्पनाएं पूरी नहीं होतीं। जीवन के किसी न किसी आयाम में हर व्यक्ति के सपने टूटते हैं, कल्पनाएं बिखर जाती हैं। असफलता जब मुंह बाए अट्टहास करने लगती है, तब व्यक्ति असहाय सा चीख उठता है तथा जीवन से दूर भागने की कोशिश करता है।

स्थिति अनोखी है। हमें जीवित रहना ही होगा। जब तक सांस चले, हम चाह कर भी जीवन से भाग नहीं सकते और प्रसन्नता के अभाव में जीवित रहना दुष्कर है। यदि प्रसन्नता बाजार में विकाऊ होती तो शायद उस को भी खरीदने के लिए लाइन में खड़े रहना पड़ता। परंतु सृष्टि बड़ी सदय है। उस ने प्रसन्नता के खजाने की चाबी प्रत्येक प्राणी के हृदय में छिपा कर रख दी है। जी हां, प्रसन्नता का स्रोत और कहीं नहीं, स्वयं आप के हृदय में ही है। किंतु मृगमरीचिका के पीछे दौड़ते मरुस्थलीय पथिक की भांति हम जीवन भर न जाने कहांकहां प्रसन्नता की खोज में भटकते रह जाते हैं। कबीर के शब्द 'कस्तूरी का मृग ज्यों, फिरफिर ढूंढ़े घास' शायद इस स्थिति को अधिक स्पष्ट करते हैं।

प्रसन्नता प्राप्ति के लिए हम ने स्वयं ही कुछ पूर्व धारणाएं बनाई हैं, जिन में प्रधान हैं—धन की प्राप्ति, सुंदर स्वास्थ्य, परिवार में शांति, मनोनुकूल कार्यक्षेत्र, आदिआदि। पर प्रसन्नता क्या केवल इन चीजों पर आश्रित है? यदि वे सब कुछ हों तो जीवन परम सुखमय होगा, ऐसा ही आम लोग सोचते हैं।

क्या आप को पूरा विश्वास है कि अधिक धन से प्रसन्नता की प्राप्ति होगी? यदि हां, तो आप गलती पर हैं। यदि धन, संपत्ति और ऐश्वर्य प्रसन्नता दे सकते तो विश्व की परम सुंदरी अभिनेत्री मलिन मनरो को आत्महत्या नहीं करनी पड़ती।

और अमरीका के धनाढ्य एबेन जेकलीन को मानसिक शांति की तलाश में साठ वर्षीय ओसिस से विवाह नहीं रचाना पड़ता। किंतु, क्या ये तथाकथित धनकुबेर प्रसन्न रहते हैं? बिलकुल नहीं।

धन की लिप्सा

धन की लिप्सा स्वयं ही एक घाव है। धीमे जहर की तरह मनुष्य के जीवनरस को सुखा डालती है।

यदि आज हमारे पास धन है तो गाड़ी की इच्छा जोगी। वह भी पा जाए तो एक प्राइवेट प्लेन रखने की इच्छा जोगी। वेगवती नदी की धारा भांति तृष्णा बढ़ती ही जाती है और अनुपात में प्रसन्नता हम से कोसों दूर भागती जाती है।

हमारे शरीर की बनावट ही कुछ ऐसी है कि शरीर में कभी न कभी, कोई कोई विकार हो जाता है और चिकित्सकों के चक्कर में फंसना ही पड़ता है। जब हम बीमार पड़ जाते हैं तो हम बैठने लगता है तथा उदासी के बंधन बंध कर हम न जाने क्याक्या सोचने लगते हैं। कहा भी गया है—“शरीर व्याधि मंदिरम्。” इसलिए जीवन भर पूर्ण स्वस्थ बने रहना असंभव नहीं तो बहुत कठिन जरूर है।

शांतिपूर्ण परिवार की आकांक्षा सब को है, पर स्थिति क्या है? अधिकांश परिवारों में पीढ़ियों का गुंथ संघर्ष चल रहा है। मातापिता बदलती मान्यताओं को न समझ कर अपने विचारों को बच्चों पर थोपना चाहते हैं। अकसर वे शिकायत करते हैं, 'क्या बताना यह लड़का क्या हुआ है, जहर हुआ है हमारे लिए। न कोई नियमकायदा, न बुजुर्गों का सेवासम्मान। इस के नए तरीकों से हम तो परेशान हो गए हैं।' उधर बच्चों की सुनिए तो वे बुराई बरबादी का कारण मातापिता के पुराने गत आचारविचारों को तथा

सितंबर (प्रथम)

अक्षमता को ही मानते हैं। युवकयवतिया कहती फिरती है, हमारे पापों में विलकुल बैकवर्ड हैं। हमेशा सिर पर सवार रहते हैं, जैसे हम दूध पीते बच्चे हों। तभी तो हम मर रहे हैं इन के साथ।

आधुनिक आर्थिक जगत में कुछ ऐसा विशेषीकरण तथा तकनीकी विकास हुआ है कि रचनात्मक आनंद की प्राप्ति बहुत कठिन है। रोजगार की ऐसी भयंकर प्रति-योगिता है कि जो कुछ मिल जाए आंख मंद कर उसे ही स्वीकार करना पड़ता है। मतलब यह कि जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य की कुछ न कुछ विवशता है ही।

देखा आप ने यह चक्कर। यानी प्रसन्नता की हमारी सारी पूर्वधारणाएं विलकुल बेकार हैं। इन के साथ रह कर हम प्रसन्नता की प्राप्ति भला कैसे कर सकते हैं? अरस्तू ने सोच कर ही लिखा था कि 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है' यानी व्यक्ति अपने में ही सब कुछ नहीं, उस का जीवन दूसरे व्यक्तियों से भी जुड़ा हुआ है। उस की प्रसन्नता भी दूसरों की ही प्रसन्नता पर निर्भर है। क्या आप ने कभी गौर किया है कि दूसरों के लिए कुछ उपकार करने पर आप का हृदय स्वयं ही खिल उठता है?

समाज में कुछ परंपराएं होती हैं, नियमकायदे होते हैं। उन का पालन स्वार्थ की बलि चढ़ा कर करना होता है। हमारी हर इच्छा न ही उचित हो सकती है, और न ही पूरी हो सकती है। फिर जब आप दूसरों की इच्छाओं का सम्मान नहीं करेंगे तो यह क्यों आवश्यक है कि आप की इच्छा का सम्मान दूसरे लोग करें?

अतः प्रसन्नता की पहली कसौटी है, समझौता करने की शक्ति। बिना 'स्व' का त्याग किए 'पर' से समन्वय कर हम कभी प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए सच्ची प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए हमें कुछ आवश्यक गुणों का विकास करना होगा, सहनशीलता, धैर्य, अनुशासनबद्धता तथा त्याग—इन अनुपम गुणों का विकास करने पर हम अपने वातावरण पर विजय पा सकते हैं।

मुक्ता

रामेश्वर टांटिया के साथ द्वीपों महाद्वीपों की सैर कीजिए



विश्वयात्रा के संस्मरण

कैलीफोर्निया में हालीवुड की चमचमाहट, अमरीका की राजधानी वाशिंगटन, पेरिस की जगमगाती रातें, हीरों का देश बेल्जियम, माक्स के बाद का रूस, पिरामिडों की धरती मिस्र, झीलों और द्वीपों का देश फिनलैंड, रात में चमकने वाले सूर्य की धरती स्वीडन और अन्य बहुत से रोमांचपूर्ण अनुभवों तथा रोचक संस्मरणों का सजीव चित्रण...

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें।

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी

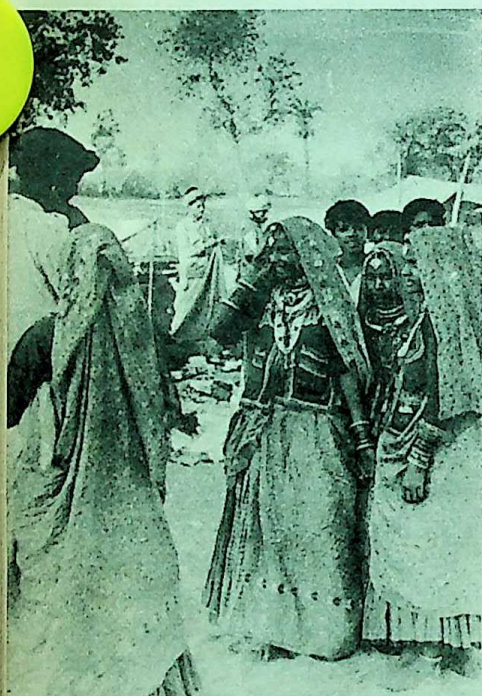
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

राजस्थान के आदिवासी

आधुनिक वातावरण से दूर रहते हुए भी जो सदैव अपनी मस्ती में खोए रहते हैं.

गिरासिया

गिरासिया युवक अपनी मनपसंद युवती के समक्ष प्रेम प्रकट करते हुए.



अतीत काल की संस्कृति, सामाजिक अवस्था, इतिहास और संघर्षों पर प्रकाश डालने के लिए उस स्थान की आदिवासी जातियां माध्यम होती हैं. राजस्थान प्रदेश के कई भागों में अनेक आदिवासी जातियां प्रकृति की छत्रछाया में दरिद्रता एवं शोषण से पीड़ित होते हुए भी अपनी कर्तव्यपरायणता, देशभक्ति के लिए आज भी प्रसिद्ध हैं. अन्याय, अवहेलना और अत्याचारों को निरंतर सहन

करने के पश्चात भी आज वहां के आदिवासी अपने धर्म, आस्थाओं, रीतिरिवाजों पर दृढ़ बने हुए हैं. इन आदिवासियों में गिरासिया जाति के आदिवासी पहाड़ों की गोद में, नदियों के किनारे स्वच्छंद रूप से निवास करते हैं. राजस्थान में ये लोग पाली, सिरोही एवं मेवाड़ के पहाड़ों भाग में अधिक संख्या में रहते हैं, जो कृषि और पशुपालन के अतिरिक्त जीवन निर्वाह के लिए पशुओं का शिकार कर अपनी उदरपूर्ति करते हैं. गरीबी एवं प्राकृतिक विपदाओं से पीड़ित होने पर भी सचाई और ईमानदारी के लिए राजस्थान की गिरासिया जाति सर्वविख्यात है. इस जाति के पुरुष वीर हैं तो महिलाएं परिश्रमी. संकटों का मुकाबला करने में इन्हें आनंद का अनुभव होता है.

राजस्थान में गिरासिया जाति की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित है कि राजपूत पुरुष एवं भील स्त्री के संसर्ग से हुई संतान गिरासिया कहलाई. इस संबंध में पाया जाता है कि जालौर का चौहान राजा कान्हड़देव स. 1388 में तुर्कों के पराजित हुआ तो वह अपने सैनिकों के साथ पहाड़ी स्थानों की ओर चल दिया जहां आदिवासी भील बहुत बड़ी संख्या में रहते थे. कान्हड़देव के पुत्र ने भी

सितंबर (प्रथम) 1975



(ऊपर) गिरासियों के मेले में
अविवाहित युवक युवतियां नृत्य करते
हुए. (नीचे) गहनों से सजी युवती.

स्त्री से विवाह किया और उन से उत्पन्न हुई औलाद गिरासिया कह जाने लगी. गिरासिया अन्य आदिवासी जातियों से अपने को आज भी सर्वोपरि मानते हैं और राजपूतों की सिसोदिया, चौहान, पवार, सोलंकी, परिहार, मोरी आदि गोत्रों से इस जाति के लोग संबंधित हैं. राजपूतों की भांति इन में वीरता अधिक होती है. गिरासिया जहां कहीं भी होगा, तीरकमान, बंदूक, फरसा, तलवार, धारिया, लाठी आदि कोई न कोई शस्त्र अवश्य ही धारण किए हुए होगा. तीर चलाने में वे इतने निपुण होते हैं कि छोटी से छोटी वस्तु को छेदने में इन का निशाना कभी नहीं चूकता. शिकार करने का इन को अधिक चाव है. ये लोग पहाड़ों में जंगली जानवरों के बीच निर्भयता से रहते हैं.

आदिवासी होने के नाते गिरासियों की वेशभूषा भी अजीब ही है. पुरुष धोती, कुरता, अंगरखा, पोतिया, साफा, कमर-बंध पहनता है. इन की स्त्रियां काले, आसमानी, लाल रंग के घाघरे, अंगरखी, ओठणा आदि पहनती हैं. स्त्रियों को गहने पहनने का अधिक चाव होता है. शरीर के सभी अंगों में गहने पहनती हैं. इन के गहने अधिकतर चांदी और पीतल के बने



होते हैं. पुरुष भी गले में कंठी, कानों में बाली, गोखरू, हाथों में अंगुठियां और पैरों में कड़े पहनते हैं. गरीबी के कारण चांदी और पीतल के गहने न मिलने पर वे कृषि गहनों को पहन कर अपना शौक पूरा करते हैं. गहने पहनने में स्त्रियों को अधिक रुचि है. वहां पुरुषों को मूंछ और दाढ़ी सजाने एवं संवारने का शौक भी है. गणगौर और होली के तीजत्योहारों पर गिरासिया जाति के स्त्रीपुरुष विशेष

रूप से शृंगार करते हैं।

Digitized by eGangotri Foundation

पहाड़ियों की भाँति में लक्ष्मी के किनारे पर रहने के कारण गिरासिया जाति के लोग कृषि, पशुपालन के साथ-साथ शिकार कर के अपनी उदरपूर्ति करते हैं। ये मकई खाना अधिक पसंद करते हैं। जब तक इन के यहां खाद्य सामग्री रहती है, तब तक ये परिश्रम नहीं करते। पुरुष अधिकतर महिलाओं के श्रम एवं मजदूरी से होने वाली आय पर निर्भर रहता है। गिरासिया महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा अधिक परिश्रमी होती हैं। बच्चे को जन्म देने के तुरंत पश्चात भी वे मजदूरी करने लग जाती हैं, जब कि पुरुष अत्यंत ही आलसी होते हैं। अफीम खाने और शराब पीने का इन का शौक अधिक पनप रहा है। वीर गिरासिया कभी भी लुटेरा नहीं बनेगा और न ही झूठ बोलेगा। कई गिरासियों ने समयसमय पर वीरोचित कार्य कर के अपनी जाति का नाम उज्ज्वल किया है। महाराष्ट्रा प्रताप द्वारा स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने में ये सहयोगी के रूप में रहे हैं। आज भी ये लोग वस्त्रहीन हो कर घास पर सोते हैं और पत्तों पर भोजन करते हैं। ये लोग कभी भी समूह में बैठ कर भोजन नहीं करते हैं।

गिरासिया जाति के लोग पहाड़ों और नदियों के किनारों पर टूटीफूटी, घासफूस की झोपड़ियां बना कर रहते हैं। घरेलू सामान इन के पास नगण्य सा ही होता है। इन के निवास स्थान दरिद्रता की निशानी हैं। फिर भी ये लोग अलमस्त रहते हैं। शिकार के शौकीन गिरासिए कभी भी सफेद पशु का शिकार नहीं करते हैं।

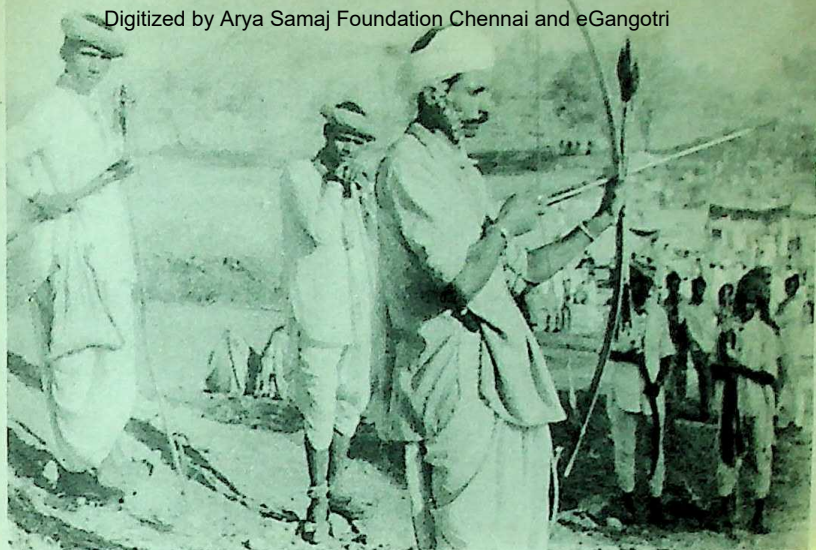
विवाह प्रथा

इन में विवाह करने की प्रथाएं बड़ी ही विचित्र हैं। इन के यहां प्रेम विवाह अधिक मात्रा में होते हैं। एक गिरासिया ने किसी लड़की को पसंद कर लिया तो वह उसे भगा कर छिप जाता है और उस के साथ पारिवारिक जीवनयापन करता

है। जब लड़की वालों को लड़की के भाग जाने की सूचना मिलती है तो वे लड़के वालों के यहां जा कर उस की शिकायत करते हैं और घर पर पत्थर मारते हैं। तब पंच और मुखिया (सहलोट) बीच में पड़ कर लड़की के पिता को दापा दिलाते हैं। दापे में आजकल 500 से 1,000 रुपये तक दिए जाते हैं। पहले वस्त्र और पशु दापा के रूप में दिए जाते थे। उस समय एक पशु एवं वस्त्र पंच एवं मुखिया को देना भी आवश्यक होता था। दापा देना स्वीकार होता है तभी विवाह पक्का समझा जाता है। दापा तत्काल देने के अतिरिक्त दोतीन पीढ़ी तक चलता रहता है। यदि लड़के का पिता दापा देने से इनकार करता है तो उस पर 50 रुपये तक जुर्माना डाल कर लड़की वापस उस के मांबाप को लौटा दी जाती है। इस स्थिति में भले ही लड़की कई बच्चों की मां क्यों न बन गई हो। दापा देने या अस्वीकृति के समय तक दांपत्य जीवन के सुखभोग बराबर कायम रहते हैं। ऐसे प्रेम संबंध अक्सर गिरासियों के लगने वाले मेलों में होते हैं। इस प्रकार के प्रेम विवाह को 'तनाणा' कहते हैं। इस विवाह में न सगाई, न फेरे, न ब्राह्मण की धर्म क्रिया होती है।

प्रेम विवाह

प्रेम विवाह इन में अधिक प्रचलित है। यदि एक भाई की बहन को कोई गिरासिया भगा कर ले जाता है तो उसे बुरा नहीं समझते हैं। इस विवाह के अतिरिक्त हिंदुओं की भांति चवरी, फेरा, मोर बांधना, ब्राह्मण द्वारा शादी करवाने का भी प्रचलन है, जिसे 'मोर बांधा' विवाह कहते हैं। विवाह करने का दूसरा तरीका केवल फेरे होते हैं, जिस में ब्राह्मण की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे विवाह को 'फहरावणे' कहते हैं। विवाह करने के पश्चात किसी गिरासिए की पत्नी को गाली दी जाए या उस के साथ अभद्र व्यवहार किया गया तो वे उसे जान से मार डालने पर उतारू हो



धनुषधारी गिरासिया युवक.

जाते हैं. मां को दी गई गाली को ये वरदाश्त कर लेते हैं, परंतु पत्नी के लिए नहीं. शादी करने के पश्चात् यदि पुरुष का देहांत हो जाता है तो गिरासिया महिला अन्य पुरुष के साथ विवाह कर लेती है, जिसे 'कैरवा' कहते हैं. भतीजा अपनी चाची से और चाचा अपने भतीजे की वहू से भी नाता जोड़ सकता है. ऐसे संबंध को ये लोग बुरा नहीं समझते हैं. जीवित पति के होते हुए भी ये लोग नाता करते हैं. इस प्रकार के संबंध स्थापित करने से पूर्व नए पति बनने वाले को पुराने पति को दापा देना आवश्यक होता है. प्राकृतिक सौंदर्य के साथ इन की अठखेलियां खुल कर होती हैं. इन में संभोग क्रिया की भावना अधिक प्रबल हुआ करती है.

शादीविवाह की भांति मरण में ये लोग मुर्दों को जलाते हैं और उन के पीछे बराबर बारह दिन अपने सगे-संबंधियों को मांस और मक्के का दब्बिया खिलाते हैं. जिसे 'कांनधिया' कहते हैं. ये ओसरमोसर अपनी इच्छा और सुदृढ़ स्थिति होने पर कभी भी कर सकते हैं.

गिरासिया महिलाओं में सौंदर्य की

भरमार रहती है. इन के गठीले शरीर, मृगनयन, आदिवासी वेशभूषा से स्वतः ही आकर्षण बना रहता है. प्राकृतिक जीवनयापन करने वाले गिरासियों का अधिकतर नामकरण भी वीरों से संबंधित होता है. ये शिव, भैरव एवं देवी के अधिक उपासक होते हैं. होली और गणगौर का त्योहार ये बड़े ही उत्साह और उमंग से मनाते हैं. राजस्थान में गिरासिया जाति के कई मेलों का आयोजन होता है, जिस में हजारों की संख्या में गिरासिया स्त्री-पुरुष एकत्रित होते हैं. कई मेले तो ऐसे हैं, जो रात्रि में लगते हैं और दूसरे दिन सायं तक समाप्त होते हैं. ऐसे मेले कुंवारे अर्थात् बिना शादीशुदा गिरासिया स्त्री-पुरुषों के होते हैं, जिन में इन के प्रेम विवाह की शुरुआत होती है. रात्रि के इन मेलों में इन की प्रेम लीलाएं खुल कर होती हैं.

गिरासिए अपने नजदीक आदिवासी भीलों के अतिरिक्त किसी को रहने देना पसंद नहीं करते हैं. अशिक्षा का प्रभाव, विकासशील साधनों की कमी, आधुनिक वातावरण से दूर रहते हुए भी ये लोग सदैव मस्त रहते हैं.

धातुराज

स्वर्ण

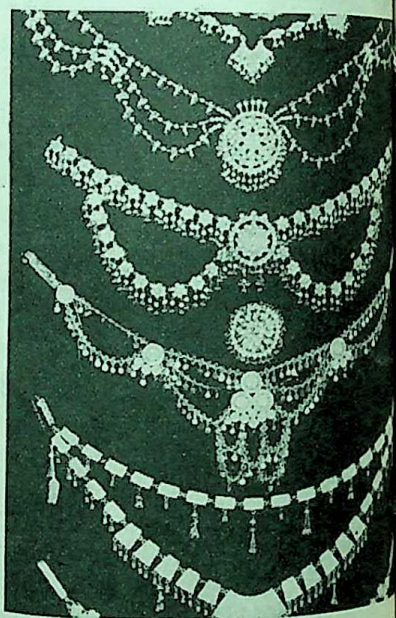
यह तो ठीकठीक कहना मुश्किल है कि सोना कब से मानव जाति की नींद हराम किए हुए है, लेकिन इतना तो कहा ही जा सकता है कि मनुष्य का इस धातु से परिचय कई हजार वर्षों पुराना है। युग बदले, लेकिन मनुष्य का सोने के प्रति लगाव कम नहीं हुआ, बढ़ता ही गया। सोने को ले कर आदिकाल से आज तक खून की नदियां बही हैं। इस धातु ने न जाने कितनी सुहागिनों के सिंदूर पोंछे हैं, माताओं से नवयुवक पुत्र छीने हैं और बहनों की राखियां तोड़ी हैं। युद्ध के दो मुख्य कारणों में से सोने का मोह प्रथम है।

सोने के प्रति मनुष्य की जिज्ञासा शायद बालू में उपस्थित चमकदार पीले कणों को देख कर हुई और तभी से आज तक वह हमेशा इस की खोज में रहता है। सोने को ले कर अनेक पागल धारणाएं भी बनीं। बहुत दिनों तक सारे संसार के प्रौढ़ मस्तिष्क पारस पत्थर की खोज में लगे रहे, जिस के बारे में धारणा थी कि उस के छूने से लोहा भी सोना हो जाता है। आज भी लोग प्रायः पूछा करते हैं कि वैज्ञानिक लोहे से कब सोना बनाने जा रहे हैं।

ऐसा प्रमाण है कि ईसा के जन्म से 2,000 से 3,000 वर्ष पहले भी संसार में

सोने की खानें थीं। आयों के आने के पहले भी भारत में इस धातु का प्रचार था। सिंधु घाटी के लोग सोने के आभूषणों से लदे रहते थे, अनुमान है कि भारत, मिस्र और यूनान जैसी प्राचीन संस्कृतियों का सोने से परिचय अत्यंत पुराना है और उन्होंने ही संसार के कोनेकोने में इस धातु का प्रचार किया। 1887 ई. में ट्रांसवाल (द. अफ्रीका) में स्वर्ण खानों की खोज के बाद बड़ा भयंकर संघर्ष मचा और अंत में ये खानें ब्रिटेन के हाथ आईं। आज संसार की सब से धनी सोने की खानें यहीं हैं, जो 80×32 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैली हुई हैं।

सोने के प्रति लोगों का इतना लगाव क्यों है? क्या इस का कारण यह है कि



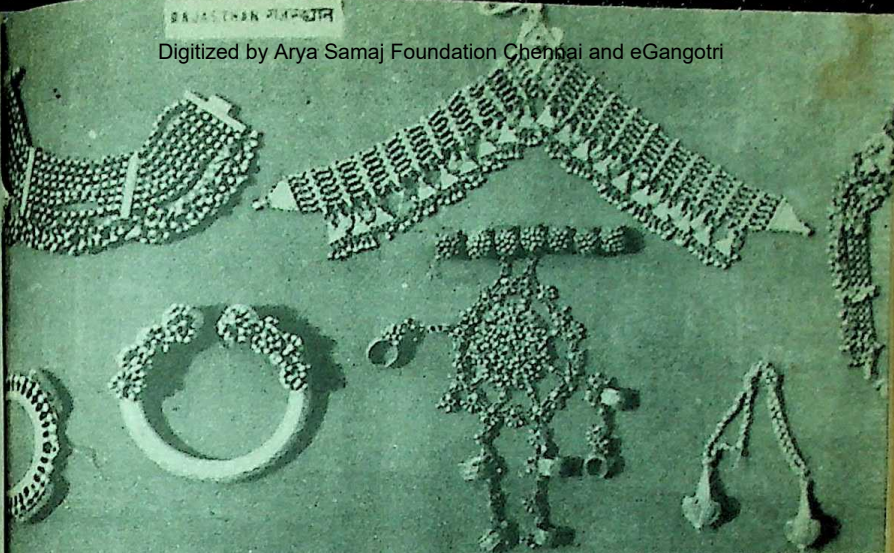
यह अन्य धातुओं की अपेक्षा बहुत ही कम मात्रा में पाया जाता है? कदापि नहीं। अनेक ऐसे भी तत्त्व हैं, जिन की उपस्थिति पृथ्वी पर सोने से भी कम है, लेकिन उन का कोई भी संग्रह नहीं करता। अवश्य ही सोने की दुर्लभता ने नहीं, अपितु इस के गुणों ने इसे धातुराज बनाया है।

आइए, सोने से आप का वैज्ञानिक परिचय कराएं। सोना हलके पीले रंग की

के
वार
भू-
कि
नीन
यंत
के
या.
में
कर
टेन
से
32
व
कि

म
श्री.
ति
उन
ही
के
क
ही

75



एक चमकदार धातु है। इस की चमक इतनी विशिष्ट और हृदयग्राही होती है कि उस का नाम ही 'सुनहरी चमक' पड़ गया है। शुद्ध अवस्था में सोना इतना मुलायम है कि इसे नाखूनों से खरोंचा जा सकता है। यह आदर्श धातु माना जाता है, क्योंकि हवा और पानी में वर्षों तक खुला रखने पर भी न तो इस की चमक नष्ट होती है, न ही इस में जंग लगता है। इतना ही नहीं, वे अम्ल भी इस का कुछ नहीं बिगाड़ पाते, जो अन्य धातुओं को क्षण भर में ही नष्ट कर देते हैं। सांद्र तथा गर्म गंधक का अम्ल भी इस में कोई क्रिया नहीं करता। सोने पर केवल जिस अम्ल की प्रतिक्रिया हो पाती है वह है 'अम्लराज', वह भी तब जब कि अत्यंत सांद्र तथा गर्म अवस्था में हो। 'अम्लराज' शोरे और नमक के अम्लों का मिश्रण होता है। कुछ हैलोजन और अनेक जहरीले रासायनिक लवण भी सोने पर क्रिया करते हैं।

सोना आक्सीजन और जल के प्रति पूर्णतः उदासीन है, किसी भी ताप पर आक्साइड या हाइड्राक्साइड नहीं बनाता। यही कारण है कि वर्षों तक हवा और पानी में खुला रखने पर भी इस की चमक में कोई कमी नहीं होती। कहना न होगा, सोना इसी गुण के कारण आदि

काल से ही आभूषणों में प्रयोग होता रहा है।

अत्यंत भारी धातु

सोना अत्यंत भारी धातु है। इस का घनत्व 19.3 है अर्थात् यह लोहे से लगभग ढाई गुना भारी है। घनत्व के अधिक होने का कारण इस का भारी नाभिक है, जिस में 79 प्रोटान और 118 न्यूट्रान होते हैं। सोने का केवल यही एक आइसोटोप अभी तक ज्ञात है, जब कि अनेक धातुओं के दस से भी अधिक आइसोटोप खोजे जा चुके हैं। स्वर्ण परमाणु में प्रत्येक इलेक्ट्रान कक्षा में इलेक्ट्रान इस तरह से बंटे रहते हैं कि दूसरे किसी भी परमाणु के इलेक्ट्रानों से मिल कर 'बंध' (बांड) बनाने की संभावना अत्यंत कम हो जाती है।

सोने का नाभिक भी बहुत स्थायी

आज विज्ञान के इतना उन्नत होने के बावजूद सोना केवल आडंबर की वस्तु बन कर क्यों रह गया है?

होता है, जो डिजिटल मीर सिस्टम द्वारा आधारित है। लोगों को यह आम धारणा है कि सोना संसार में बहुत ही कम मात्रा में विद्यमान है, लेकिन यह जान कर आप को आश्चर्य होगा कि अभी तक हम पृथ्वी में उपस्थित सोने का दस लाखवां भाग भी नहीं प्राप्त कर सके हैं। पृथ्वी की ऊपरी पर्पटी (अथ- क्रस्ट) में 0.00000005 प्रति शत सोना है, और इतना ही क्यों, हमारे समुद्र भी सोने से भरे पड़े हैं।

गर्म करने पर सोना $1,000^{\circ}$ सें. पर पिघल कर एक अत्यंत चमकदार पीला द्रव हो जाता है, जिस का वाष्पन अत्यंत कठिन होता है, उस के लिए $2,600^{\circ}$ सें. जैसे उच्च ताप की जरूरत होती है। सोना अत्यंत तन्य है और एक ग्राम सोने से तीन किलोमीटर लंबे तार खींचे जा सकते हैं। सोने की पत्तियां तो इतनी बारीक बनाई जा सकती हैं कि वे लगभग पारदर्शी हो जाती हैं। ऐसी 10,00,000 पत्तियों की मोटाई एक सें. मी. होगी। यों समझिए कि एक ग्राम सोने को पीट कर 5.17 वर्ग मीटर क्षेत्र में आराम से फैलाया जा सकता है। सोना उष्मा और विद्युत, दोनों का सुचालक है।

अन्य धातुओं की ही तरह सोना भी 'बहुकेलासीय' (पालीक्रिस्टलाइन) संरचना का है और अल्यूमीनियम की ही भांति इस की भी संरचना का 'यूनिट सेल' एफ. सी. सी. होता है।

खानों में या तो सोना मुक्त अवस्था में मिलता है या 'बिस्मिथ ओराइट' और 'टेल्यूरियम ओराइट' के रूप में। इस के खनिज प्रायः चांदी, लोहा, बिस्मिथ और प्लेटिनम के खनिजों के साथ पाए जाते हैं। दक्षिणी अफ्रीका के अतिरिक्त सोना उत्पन्न करने वाले अन्य प्रमुख देश संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत रूस, ब्राजील और आस्ट्रेलिया हैं। भारत में भी थोड़ा-बहुत सोना, कोलार की खानों से निकाला जाता है।

एक अनुमान के अनुसार सारी मानव जाति अब तक लगभग 50,000 टन सोना निकाल चुकी है। जिस का आधे से भी अधिक भाग विभिन्न बैंकों के लाकरों की शोभा बढ़ा रहा है और शेष आभूषणों,

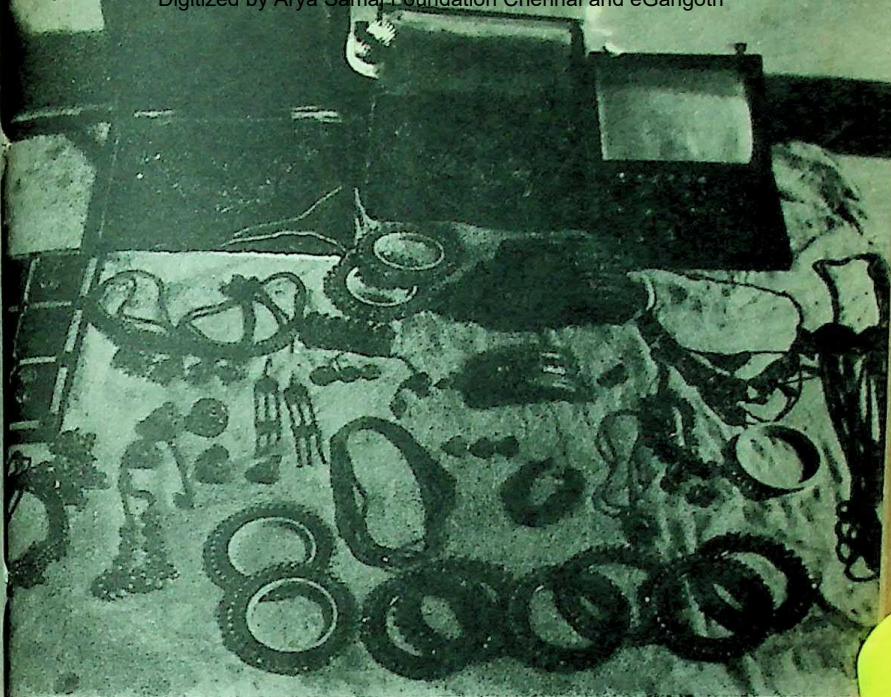
मिलकों में अथवा हथंगों में है। लोगों को यह आम धारणा है कि सोना संसार में बहुत ही कम मात्रा में विद्यमान है, लेकिन यह जान कर आप को आश्चर्य होगा कि अभी तक हम पृथ्वी में उपस्थित सोने का दस लाखवां भाग भी नहीं प्राप्त कर सके हैं। पृथ्वी की ऊपरी पर्पटी (अथ- क्रस्ट) में 0.00000005 प्रति शत सोना है, और इतना ही क्यों, हमारे समुद्र भी सोने से भरे पड़े हैं।

नवीनतम सूचनाओं के आधार पर प्रति लिटर सागर जल में 0.000004 मिली ग्राम सोना उपस्थित रहता है, आप यदि इस आधार पर गणना करें तो एक घन किलोमीटर समुद्री जल में चार किलोग्राम सोना पाएंगे। इतना ही नहीं, सोने की थोड़ीबहुत मात्रा कोयले में भी उपस्थित रहती है। खनिजों के अतिरिक्त हमारे खाने के अनाज भी सोने से मुक्त नहीं रहते। मक्के में तो सोने की मात्रा सभी अनाजों से अधिक पाई गई है। सोना अनेक पेड़पौधों के रसों में भी देखा गया है। कई समुद्री जानवरों की राख में तो प्रति किलोग्राम 0.0014 मिली ग्राम तक सोना पाया गया है।

सूर्य की सतह पर सोना

पृथ्वी के बाहर भी सोना विद्यमान है। सोना सूर्य की सतह पर भी उपस्थित है और अनेक उल्कापिंडों में भी पाया गया है। वैज्ञानिकों का विचार है कि सोना स्वल्प मात्रा में सारे ब्रह्मांड में वितरित है, लेकिन कहीं भी उस की बड़ी मात्रा नहीं है।

समुद्री जल के सोने को ले कर अनेक मनोरंजक घटनाएं भी हुई हैं। एक अनुमान के अनुसार हमारे समुद्रों में 60,00,000 टन से भी अधिक सोना है, और वह भी तब, जब यह माना जाए कि प्रति लिटर सागर जल में मात्र 0.000004 मिली-ग्राम सोना होता है। निश्चय ही, सोने की यह मात्रा किसी को भी पागल बना देने के लिए काफी है। समुद्र से सोना निकालने का प्रयास कोमियागरो (आदिकाल



सोने से बने विभिन्न आभूषण.

के रसायनज्ञों) ने ही नहीं, बीसवीं शताब्दी के नोबल पुरस्कार विजेता रसायनज्ञों ने भी किया. लेकिन अंततः असफल ही रहे. अभी भी संसार के अनेक वैज्ञानिक ऐसी विधियां खोजने में लगे हुए हैं, जिन से सागर में छिपी यह विशाल स्वर्ण-राशि निकाली जा सके.

सर्वप्रथम फ्रांसीसी विज्ञान अकादमी ने 1866 में घोषणा की कि इंगलिश चैनल के एक टन पानी में 65 मिलीग्राम सोना घुला हुआ है. बाद में 1903 के नोबल पुरस्कार विजेता रसायनशास्त्री डा. आरेनियूस ने इस घोषणा में सुधार किया और इस मात्रा को मात्र 6 मिली-ग्राम बताया. लेकिन सागरों की अपार जलराशि देखते हुए सोने की प्रति टन पानी में इतनी कम मात्रा भी सारे संसार के लोगों को लखपति बनाने के लिए पर्याप्त थी.

प्रथम विश्व युद्ध में बुरी तरह से परास्त हो कर

जाने के बाद जर्मनी की अर्थव्यवस्था बुरी तरह छिन्नभिन्न हो गई थी. इस कर्ज को पाटने के लिए 1918 के नोबल पुरस्कार विजेता रसायनशास्त्री डा. फिट्ज हेबर ने एक दीवानी तरकीब सोची. उन्होंने सागर से बड़े पैमाने पर सोना निकाल कर सारा कर्ज चुकाने की ठानी. उन्होंने एक बड़ी धनराशि और अपना दस वर्षों का कीमती समय इसी योजना के पीछे कुर्बान कर दिया. वह सोना तो क्या निकाल पाए, हां, देश का कर्ज कुछ और बढ़ा गए.

लेकिन इन असफलताओं का कारण केवल यही था कि समुद्री जल में सोने की मात्रा वैज्ञानिकों के अनुमान से कहीं कम थी, जिसे निकालने में उन की तकनीक सफल नहीं हो सकी. आज भी वैज्ञानिक निराश नहीं हुए हैं और आशा है, वे एक दिन अवश्य ही सफल होंगे. फिर देखना है, सागर के खारे पानी को ले कर क्या-क्या गुल खिलते हैं, कितनी लड़ाइयां

इतना महंगा क्यों?

सोना चांदी की अपेक्षा इतना महंगा क्यों है? अपने विशिष्ट गुणों के कारण नहीं। चांदी भी इन गुणों में सोने का बहुत हद तक मुकाबला कर लेती है। फिर क्या इसलिए कि केवल सोना संसार में चांदी की अपेक्षा बहुत कम मात्रा में उपस्थित है? यह कारण भी नहीं है। पृथ्वी पर चांदी की मात्रा सोने से केवल दूनी है, फिर भी इन के मूल्यों में बहुत अंतर है। इस का सब से बड़ा कारण यह है कि सोना अपने खनिजों में चांदी की अपेक्षा बहुत कम मात्रा में उपस्थित रहता है, जिस से इस को पृथक् करना चांदी की अपेक्षा कहीं महंगा पड़ता है। चांदी जहां है, वहां बड़ी मात्रा में है, लेकिन सोना कहीं भी बड़ी मात्रा में न हो कर थोड़ा थोड़ा चारों ओर फैला हुआ है।

संसार में सोने की खानों का वितरण भी प्रकृति ने बड़े ही असमाजवादी ढंग से किया है। संसार के कुल उत्पादन का 50

प्रति शत अकेले टांस्वाल की खानों में ही निकलता है, जब कि अनेक देशों के पास सोने की कोई खान नहीं है।

आज विज्ञान के इतने उन्नत हो जाने के बाद भी सोने का कोई विशेष वैज्ञानिक या औद्योगिक महत्व नहीं है और यह केवल आमोदप्रमोद की धातु हो कर रह गया है। केवल वहीं, जहाँ अम्लों से अवरोधी लेकिन सुचालक धातु की जरूरत होती है, इस का प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में स्वर्ण भस्म का उपयोग अनेक औषधियों में होता है जो वास्तव में इस का आक्साइड होता है। अनेक वैज्ञानिकों का विचार है कि इस का स्पर्श और सामीप्य स्वास्थ्यप्रद होता है। आभूषणों और सिक्कों में तो इस के प्रयोग की चर्चा करना ही व्यर्थ है।

देखना है, जब भविष्य में हम समुद्रों से भी सोना निकालने लगेंगे, धातुराज का क्या उपयोग होता है। क्या तब भी यह केवल बैंकों के लाकरों और सुंदरियों के गलों की शोभा बना रहेगा या किसी औद्योगिक उपयोग में भी आएगा। ●

विवाह और सुखी जीवन

मूल्य : ४ रुपए. (डाक खर्च अतिरिक्त)

सरिता, मुक्ता के स्यादी ग्राहकों से केवल २.५० रु.

मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक खर्च माफ.



विवाह से पहले आप को क्या जानना चाहिए? पतिपत्नी एकदूसरे को समझने में कहां गलती करते हैं? और पारिवारिक शांति, सुख और सफलता की कुंजी क्या है?

इस पुस्तक में सुखी पारिवारिक जीवन से संबंधित सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर सहज, सरल भाषा और रोचक शैली में प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक दांपत्य जीवन की उलझी गुत्थियों को सुलझाने और टूटते परिवारों को बचाने में सहायक सिद्ध होगी।

दिल्ली बुक कंपनी, एम.१२, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

कहानी • मोहम्मद हुसैन Samaj Four भाभी की ओर देखते हुए गफूर मियां

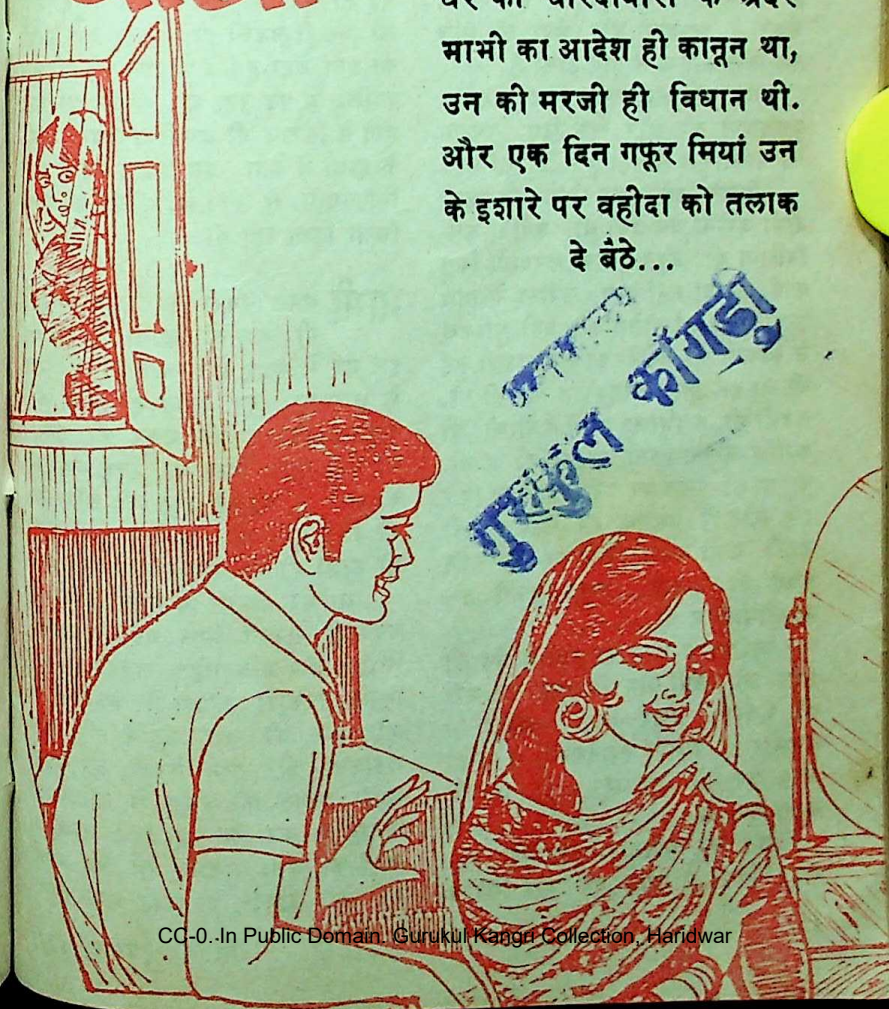
जीती हुई बाजी

ने एलान कर दिया, "शादी करूंगा तो किसी कुंवारी, पढ़ीलिखी और खूबसूरत लड़की से, वरना जिंदगी यों ही गुजार दूंगा."

भाभी ने करुण दृष्टि से गफूर मियां को देखा. वह इतमीनान से अपने बालों में खिजाव लगा रहे थे. आज रविवार था और हर आठवें रोज गफूर मियां खिजाव लगा कर अपनी उमर को घोखा देने की कोशिश करते. मगर इस कमवस्त दाढ़ी का क्या किया जाए, जहां चंद दिनों बाद सफेद बाल सिर उठा कर शान से खड़े हो जाते और उन को मुंह चिढ़ाते?

घर की चारदीवारी के अंदर भाभी का आदेश ही कानून था, उन की मरजी ही विधान थी. और एक दिन गफूर मियां उन के इशारे पर वहीदा को तलाक दे बैठे...

गुरुकुल कांगड़ी



रशीदा जैसी लड़की मिलनी फिर मुश्किल है," भाभी ने एक तीर और छोड़ा कि शायद निशाने पर जा बैठे.

"मैं तलाक़शुदा लड़की से शादी नहीं करूंगा. यह मेरा आखिरी फैसला है, और फिर रशीदा लड़की कहां है? वह तो पूरी औरत है, तीस साल की."

"तुम भी तो पंतालीस के पेटे में हो. भला तुम्हारे लिए कुंवारी लड़की ढूँढ़ने कहां जाएं? तुम जानते हो, मुसलिम घरानों में पंद्रहसोलह वर्ष की उमर में लड़कियों की शादी कर दी जाती है."

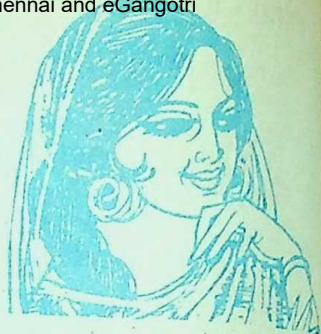
"मैं तो जानता हूँ, भाभी, कि पैसे से सभी काम हो सकते हैं. अगर तुम मेरा दोबारा विवाह न कराना चाहती हो तो न सही. मुझे तुम्हारा हर फैसला मंजूर है. तुम्हारी और भैया की आज तक मैं ने कोई बात नहीं टाली है."

यह कह कर गफूर मियां उठ कर गुसलखाने की ओर चल दिए. गुमसुम सी भाभी कुछ सोचती हुई बैठी रह गई.

पिछले वर्ष गफूर मियां की पहली बीवी जरीना चल बसी थी. जरीना अर्ध-विक्षिप्त थी. बहुत इलाज करवाया किंतु कोई फायदा नहीं हुआ. जरीना के साथ उन्होंने 18 वर्ष रोज़ेझींखते बड़ी मुश्किल से निकाले थे. जरीना की एक लड़की हुई थी जो इस समय तेरहचौदह वर्ष की थी. लड़की की देखभाल भाभी ने ही की थी क्योंकि जरीना किसी मतलब की न थी. वह या तो पलंग पर पड़ी रहती या फिर एक कोने में गुमसुम सी बैठी ताकती रहती. कभी समझ में आता तो अपने कपड़े धो डालती, वरना हफ्तों तक नहातीघोती न थी.

जरीना के मरने पर सभी ने चैन की सांस ली. लंबी बीमारी भुगत कर मरी थी बेचारी. गफूर मियां कचहरी में पेशकार थे, पेशियां बढ़ानेघटाने में अच्छी आय कर लेते. इस से भाभी उन से बहुत खुश थीं.

उन का परिवार लंबाचौड़ा था. गफूर मियां से छोटा एक भाई सिराज



था, जो विद्युत विभाग में क्लर्क था. रशीदा भाभी की छः संतानें थीं—तीन लड़कियां और तीन लड़के. जाहिर है कि इतने प्राणियों का खर्च चलाना अकेले भाभी के मियां अलताफ के बस के बाहर था. वह तो खुदा का शुक्र था कि गफूर मियां की एक ही लड़की हो कर रह गई. भाभी का बड़ा बेटा हमीद भोपाल के मेडिकल कालिज में पढ़ रहा था. संयुक्त परिवार होने से सिराज भी अपनी तनख्वाह भाभी के हाथों में देता. इस प्रकार भाभी बड़ी निश्चितता से अपने बेटेबेटियों को ऊंचे शिक्षा दिला रही थीं.

भाभी अपने देवरों को बहुत चाहती थीं. सच तो यह था कि जब वह इस घर में ब्याह कर आई थीं तब उन के सासससुर का देहांत हो गया था. नन्हेनन्हे सिराज और गफूर को उन्होंने मां जैसा प्यार दिया था. उन्हें कभी मां की कमी न महसूस होने दी और उनकी जिंदगी पूरी की. इसलिए दोनों देवर भी भाभी को मां जैसा सम्मान देते थे.

आखिर भोपाल में गफूर मियां की मनचाही लड़की मिल गई, खूबसूरत, शिक्षित और अविवाहित. लड़की का बाप किसी सरकारी महकमे में चपरासी था और उस की आठ संतानें थीं, पांच लड़कियां और तीन लड़के. वह अपनी खस्ता हालत की वजह से बेटियों का विवाह न कर पा रहा था. भाभी ने चांदी का जूता लगाया तो वह अपनी बड़ी बेटी वहीदा का ब्याह गफूर मियां

भाभी ने शतरंज बिछा रखा
था और गफूर मियां व
हमीद मोहरे की तरह चल
रहे थे... फूंकफूंक कर चाल
चलने के बावजूद भाभी
बाजी हार गई...

से करने के लिए तैयार हो गया. वधूपक्ष
को गफूर मियां की आयु 30 वर्ष बताई
गई और शादी की तैयारियां होने लगीं.

इस शादी से घर में सभी खुश थे.
नाराज था तो सिर्फ हमीद. उस ने अपनी
मां से इस विवाह का कड़ा विरोध प्रकट
करते हुए कहा कि उन्हें एक मासूम और
धुलहनी की जिंदगी यों वरवाद नहीं
करनी चाहिए. गफूर मियां का क्या है,
दसपंदरह वर्ष जिएं, न जिएं. भाभी ने
हमीद को समझाते हुए कहा, "बेचारे
देवरजी ने अपने जीवन में कभी स्त्रीसुख
नहीं देखा. उन की मुराद पूरी करना
हमारा फर्ज है. और फिर, हम जबरदस्ती
तो लड़की ला नहीं रहे हैं. लड़की का
बाप इस विवाह से खुश है."

लेकिन मां की इस दलील से वह
संतुष्ट न हुआ. निश्चित तिथि पर गफूर
मियां का व्याह संपन्न हुआ और वह
दुलहन लेकर आ गए. उस दिन घर में
खासी रौनक रही. महल्ले की औरतें
दुलहन देखने आती रहीं, जाती रहीं
और उस की खूबसूरती की प्रशंसा करती
रहीं. अपनी नवोढ़ा बीवी की तारीफ
सुन कर गफूर मियां का दिल बल्लियों
उछलने लगा.

घड़कते दिल से रात को 10 बजे
गफूर मियां ने अपने कमरे में प्रवेश किया.
वहीदा सुर्ख जोड़े में पलंग पर बैठी थी.
गफूर मियां ने दुलहन के पास बैठते हुए
उस का घूँघट उलट दिया. उन्हें लगा,
जैसे अंधेरी रात में एकाएक चांद निकल
आया हो. पंखुडियों से कोमल गुलाबी

हाठ, गहरी काली आंखें और सुर्ख दमकते
हुए गाल—गफूर मियां ठगे से अपनी
पत्नी का सौंदर्य निहारते रहे.

लेकिन यह क्या? अचानक ही वहीदा
की बड़ीबड़ी आंखें भर आईं और टपटप
आंसू टपकने लगे. उस ने आंचल में मुंह
छिपा लिया और सिसकने लगी.

"क्या हुआ, बेगम? रो क्यों रही
हो? घर की याद आ रही है क्या?" गफूर
मियां ने हैरत से पूछा.

वहीदा ने कोई जवाब नहीं दिया.
धीरेधीरे उस की सिसकियां जरूर बंद हो
गईं. गफूर मियां ने वर्षों से संचित अपनी
अभिलाषाएं पूर्ण कीं लेकिन उन्हें वहीदा
का सक्रिय सहयोग न मिला. उस की
समूची देह बर्फ सी ठंडी और शांत हो
गई थी.

सुबह गफूर मियां सो कर उठे तो उन
के मन में एक कसक थी. वहीदा
के ठंडे व्यवहार का रहस्य उन की समझ
में नहीं आ रहा था. तीनचार दिन रह
कर वहीदा अपने मायके चली गई. उस
का बाप उसे लिवाने आ गया था. यों
इन तीनचार दिनों में वहीदा से उन की
बातचीत भी हुई थी, लेकिन संक्षिप्त और
जरूरत भर की. घर की औरतों और
बच्चों से भी वहीदा घुलमिल न पाई थी.
भाभी ने इस बात को अधिक महत्त्व
न दिया. वह समझती थीं, पहली बार
ससुराल आने पर प्रायः शर्म और संकोच
के कारण लड़कियां खुल नहीं पाती हैं.
धीरेधीरे वे परिवार के जीवन में बिल्कुल
मिल जाती हैं.

हमीद भोपाल में मेडिकल कालिज के
अंतिम वर्ष में था. भाभी ने उसे खत
लिख दिया कि जब भी वह आए, वहीदा
को लेता आए. करीब एक माह बाद
वहीदा हमीद के साथ ससुराल आ गई.

पहले की अपेक्षा उस के व्यवहार में
कुछ परिवर्तन अवश्य था, लेकिन अकसर
वह बुझीबुझी और खामोश रहती. गफूर
मियां ने उसे खुश रखने की कई कोशिशें
कीं लेकिन उन्हें कामयाबी न मिली. वह

उसे प्रायः सिनेमा दिखाने लगे और नए-नए कपड़े खरीद कर ला देते, लेकिन वहीदा की शाश्वत उदासी वह दूर नहीं कर पाए।

घर की औरतें भी वहीदा की इस बेरुखी से नाराज थीं। पासपड़ोस की तथा रिश्ते की औरतें उन के घर आतीं तब भी वहीदा प्रायः खामोश रहती। न तो वह उन की बातचीत में हिस्सा लेती और न ही उस के चेहरे पर किसी प्रकार के भाव होते। एक अटूट खामोशी और उदासी में डूबी वहीदा को देख कर महल्ले की औरतें प्रायः अव्यक्त सहानुभूति से भर उठतीं।

अंततः हार कर गफूर मियां ने भी हथियार डाल दिए। जैसे-जैसे दिन गुजरते गए, वहीदा को खुश रखने का उन का जोश भी खत्म होता गया। जीवन रोजमर्रे के ढर्रे पर चलने लगा।

गफूर मियां पहली तारीख को अपनी सारी तनख्वाह भाभी के हाथों में रख देते। इस नियम में वहीदा के आने के बाद भी परिवर्तन नहीं आया। भाभी घर की एकमात्र स्वामिनी थीं। जिसे भी पैसों की जरूरत होती, वह भाभी से मांग लेता। महल्ले भर में इस घर के अनुशासन, सहयोग और आपसी प्रेम की चर्चा होती रहती थी।

पहले भाभी घर के कामों में कुछ हिस्सा लेती थीं, लेकिन वहीदा के आने के बाद उन्होंने पूरी जिम्मेदारी उस पर डाल दी। वहीदा सुबह छः बजे उठ जाती।

भाभी के बच्चे की लिए नाश्ता तैयार करती, उन्हें नहलाधुला और कपड़े बदल कर स्कूल भेजती। फिर सुबह का भोजन बनाने में जुट जाती। घर में कुल मिला कर बारह सदस्य थे। दोपहर एक बजे तक सब कामों से निवृत्त जाती। घंटा, आधा घंटा कमर सीधी कर के दो बजे चाय का पत्र चढ़ा देती और फिर तीन बजे से शाम का भोजन बनाना शुरू कर देती। बच्चों को खाना खिलाते और फिर बरत मांजते-धोते रात के दस बजे तक फाँस होती। इस समय तक वह थक कर चूर हो जाती।

शुरू-शुरू में भाभी उस से अच्छी तालमेल पेश आती रहीं। लेकिन बाद में उन्होंने उसे जरखरीद बांदी समझ लिया, जिसकी न कोई अपनी इच्छा होती है, न कोई वजूद। वहीदा कुछ दिन चुपचाप सहती रही। फिर एक दिन उस ने दबी जवाब से कहा, “भाभी, दिन भर अकेली काम कर के मैं बुरी तरह थक जाती हूँ। नहाने-धोने का भी वक़्त नहीं मिलता। एक महरी रख लें तो ठीक रहेगा।”

सुन कर भाभी के माथे पर बल पड़ा। व्यंग्य भरे लहजे में उन्होंने कहा, “बस, अभी से थक गई! मैं तो इस घर में इतना काम करते-करते बूढ़ी हो गई हूँ पर मैं ने तो कभी किसी महरी की मांग नहीं की।”

वहीदा सहम गई। उस ने फिर कुछ न कहा। इधर भाभी ने गफूर मियां के कान भरना शुरू किया और उस के कामों में मीनमेख निकालने लगीं। लेकिन



चांदनी रात में...

चांदनी रात में मगर देते
हो गम जरूर तुम,
इस की नजर में चाह है
मेरी नजर में दूर तुम,
—अहमद अली 'शौक'

बुचचाप वहीदा की तनखाह में से उस के पल्ले कुछ नहीं पड़ता था। यदि कोई जरूरत होती तो भाभी के आगे हाथ फैलाना पड़ता।

एक दिन गफूर मियां ने उस के मँले-कुचँले कपड़ों पर व्यंग्य करते हुए कहा, "वेगम, कभी नहा भी लिया करो."

वहीदा तो भरी बैठी थी। बोली, "दिनरात तो गुलामों की तरह काम में लगी रहती हूँ। नहानेधोने की फुरसत ही कैसे है?"

"यह भी खूब कहो तुम ने."

"तुम इस के अलावा और क्या कहोगे? शादी तो कर ली तुम ने, मगर शादी के बाद बीवी का जो दर्जा होता है, उस से मुझे आज तक महरूम रखा है."

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"यही कि इस घर में मेरा कोई वजूद नहीं है। तुम्हारी निगाह में भी मेरी कोई कीमत नहीं है। यहां तक कि तनखाह में से मुझे एक फूटी कौड़ी भी नहीं मिलती। ऐसी मुफ्त की नौकरानी पा कर तो इस घर के भाग्य जाग गए."

गफूर मियां विमूढ़ से वहीदा का मुँह ताकते रहे। आज पहली बार वहीदा ने इस घर की व्यवस्था के खिलाफ मुँह खोला था। लेकिन गफूर मियां मानसिक रूप से इतने पंगु हो चुके थे कि अपनी युवा बीवी के जज्बात वह प्रायः समझ नहीं पाते, और यदि समझते भी तो उतरती उमर के कारण उन में वह भाव-प्रवणता नहीं रह गई थी।

कुछ दिन बाद वहीदा ने अलग होने

हुए। और जब भाभी को इस की भनक मिली तो उन्होंने उसे आड़े हाथों लिया। जिस गृहस्थी को उन्होंने इतनी मेहनत से संवारा था, उसे कैसे बिखरने देतीं। और फिर, गफूर मियां की तनखाह भी भाभी के लिए महत्वपूर्ण थी, जिस के बिना घर चलाना असंभव ही था। वहीदा इस तज-बीज के कारण और भी उपेक्षित हो गई।

गर्मी की छुट्टियों में हमीद घर आया तो खासी रोनक हो गई। वह अंतिम वर्ष की परीक्षा दे कर आया था और अब वेतावी से परीक्षाफल निकलने का इंतजार कर रहा था।

तेईसचौबीस वर्ष का हमीद वेहद हंसमुख और सहृदय था। उस की सबल ऊंची देह, सांवला किंतु आकर्षक चेहरा और विश्वास भरी आंखों की चमक बर-बस सब का मन मोह लेती थीं। उसे साहित्य से गहरा लगाव था। देशविदेश के प्रख्यात लेखकों की कृतियों के अलावा स्तरीय पत्रिकाएं भी पढ़ने का उसे शौक था। हर विषय में उस के विचार निर्भीक व स्पष्ट थे।

हमीद ने जब घर में वहीदा की उपेक्षा और दुरवस्था देखी तो उस का दिल सहानुभूति से भर उठा। वह वहीदा से बहुत ही नरमी, उदारता और इज्जत से पेश आने लगा। घर में हमीद अकेला था, जो जबतब वहीदा का पक्ष ले कर उस का बचाव किया करता।

धीरेधीरे वहीदा खुश रहने लगी। वह

तेरी कद्र नहीं...

तू कि बाजार में पहली
सी तेरी कद्र नहीं,
इतनी अजी है मगर
फिर भी खरीदार कहाँ.

—कतील शिफाई



सभी काम पूर्वी से निबटा देती और उन्होंने डायरी शुरू किया।

नहानेघोने का वक्त निकाल लेती. हमीद की सहानुभूति और अपनत्व पा कर वहीदा में नए जीवन का संचार हुआ. घर के सदस्यों के प्रति उस का व्यवहार मृदु होने लगा. साथ ही उस का रूप भी निखर आया. उस की देह भर गई और उस का चंपई रंग और भी खिल उठा.

गफूर मियां वहीदा के बदलते रुख से बहुत प्रसन्न हुए. भाभी चकित थीं कि एकाएक वहीदा के स्वभाव में यह परिवर्तन क्यों? शीघ्र ही भाभी की अनुभवी आंखों ने यह भेद पा लिया. वह देखतीं कि हमीद जब तक घर में रहता, वहीदा खिलीखिली रहती. उसे सामने बैठा कर खाना खिलाती और दोनों जमाने भर की बातें करते रहते. हमीद को कभीकभी एकटक अपनी ओर देखते पा कर वहीदा के गाल गुलाबी हो जाते और आंखें झुक जातीं.

हमीद की भी आंखों की भाषा पढ़ते भाभी को देर न लगी. उस की आंखों में वहीदा के प्रति युवजनसुलभ प्रेमभावों का उद्रेक दिखाई देता था. भाभी के दिमाग में खतरे की घंटियां बजने लगीं. वह समझ गई कि शीघ्र ही कोई उपाय न किया तो उन का बेटा उन्नीस वर्षीया वहीदा के रूपजाल में उलझ जाएगा.

उन्होंने शीघ्र ही मौका देख कर बात गफूर मियां के कान में डाली. गफूर मियां एकदम भिन्ना उठे. वहीदा के स्वभाव में परिवर्तन का राज अब वह समझ गए. बस, भाभी से सलाहमशविरा कर के एक दिन वह वहीदा को उस के मायके छोड़ आए.

भाभी तो पहले से ही वहीदा से असंतुष्ट थीं. उन्होंने गफूर मियां को बहकाना शुरू किया कि ऐसी लड़की को घर में रखना ठीक नहीं. एक दिन ट्रंक में कुछ कागजात बूढ़ते समय गफूर मियां को वहीदा की डायरी मिल गई जो उर्दू लिपि में लिखी थी. उन के मन में

उत्सुकता ज्योती थी और उन्होंने डायरी शुरू किया.

'5 सितंबर. आज मेरा विवाह लेकिन मैं उदास हूं. सुना है कि दुहाजू हैं और उमर भी ज्यादा है. पैसें के लालच में अपनी उन्नीस वर्षीय बेटी का विवाह अघेड़ आदमी से करने को तैयार हो गए हैं. मैं क्या करूं. मुझे समझ में नहीं आता. भावी जीवन के खबसूरत सपने मैं ने देखे थे, वे सब यहीं में मिल गए.

'10 सितंबर. वह अफवाह न निकली. सचमुच वह अघबूरे हैं. हम आदमी के साथ मेरी लंबी जिरत कैसे कटेगी? मैं ने क्याक्या स्वाद सजाये और क्या हो गया! आंसू तेजी से पड़ना चाहते हैं.

'15 मार्च. मेरी जिंदगी जहर हो गई है. घर में मेरी कोई पूछ नहीं है. यहां तक कि छोटे बच्चे भी मुझ पर रोट गांठते हैं. दिनरात काम करतेकरते काम टूट जाती है, लेकिन फिर भी मुहब्बत के दो बोल नहीं मिल पाते. वह भी मुझे इज्जत नहीं देते. सारी तनस्वाह भाभी को दे देते हैं.

'25 अप्रैल. आज मैं ने अलग होने की राय दी थी, लेकिन वह राजी नहीं हुए. मैं ने बहुत चाहा कि मैं अपनी खिदमत और लगन से सब के दिल जीत लूं और स्थिति से समझौता कर लूं. लेकिन लगता है कि यह संभव नहीं. कभीकभी सोचती हूं कि ऐसी जिंदगी से तो मौत अच्छी है. लेकिन बुलाने से जो मौत आती तो कौन जीता इस जमाने में?

'17 मई. मेरी जिंदगी में जैसे फूल खिल गए हैं. घर में सिर्फ हमीद ऐसे हैं जो मेरा दर्द समझते हैं, मुझे सम्मान देते हैं और मुझ से हमदर्दी रखते हैं. मैं बुझ हूं कि कोई तो मेरा दुखदर्द बंटाने वाला मिला.

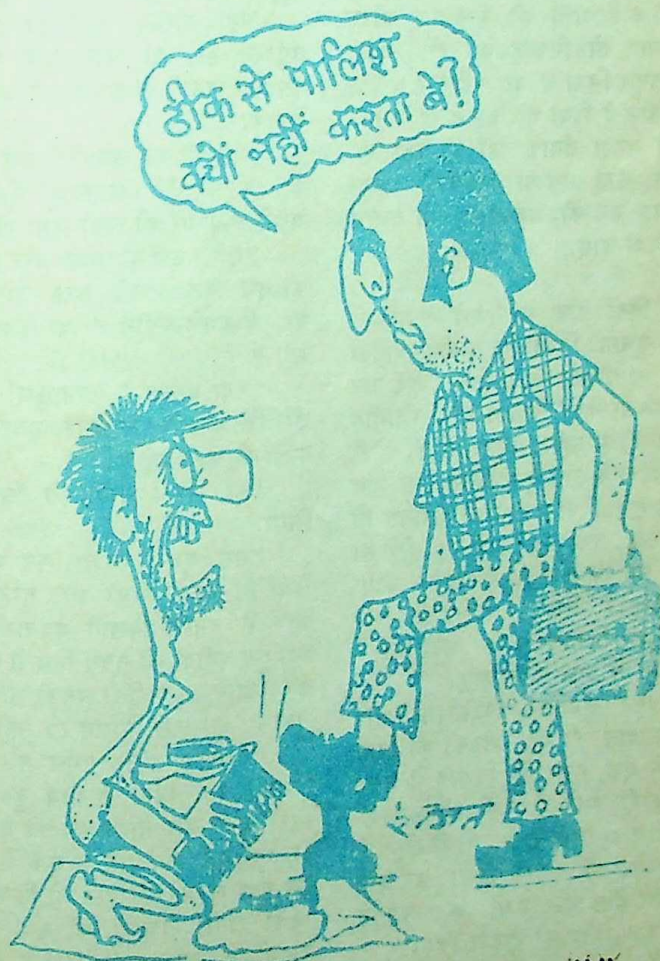
'8 जून. यह सब क्या हो रहा है. मेरी समझ में नहीं आता. मैं हमीद की ओर खिचती चली जा रही हूं. शायद वह भी मुझ से मुहब्बत करते हैं. हम बहक

दे हैं. यह गलत, मोर्चा है जिस पर हमारे दिलों में ठिठाना कर रहे हैं. कुछ सोच कर भाभी के सामने मसला रखा. भाभी पहले से ही शंकित थीं. उन्होंने सुझाव दिया कि वहीदा को तलाक दे दिया जाए. कई दिनों तक स्थिति पर मनन करने के बाद गफूर मियां ने रजिस्टर्ड पत्र से तलाकनामा भोपाल भेज दिया. तीसरे दिन ही वहीदा का बाप रोताकलपता आया, लेकिन उसे उन्होंने समझाबुझा कर तथा मेहर की रकम दे कर लौटा दिया. हमीद का परीक्षाफल आ गया था

पढ़ कर गफूर मियां पसीने में नहा गए. उन का माथा घूम गया. वह पत्थर की मूर्ति की तरह बहुत देर तक बैठे रहे. कुछ दिन उन्होंने डायरी का रहस्य अपने

दिलों में ठिठाना कर रहे हैं. कुछ सोच कर भाभी के सामने मसला रखा. भाभी पहले से ही शंकित थीं. उन्होंने सुझाव दिया कि वहीदा को तलाक दे दिया जाए.

कई दिनों तक स्थिति पर मनन करने के बाद गफूर मियां ने रजिस्टर्ड पत्र से तलाकनामा भोपाल भेज दिया. तीसरे दिन ही वहीदा का बाप रोताकलपता आया, लेकिन उसे उन्होंने समझाबुझा कर तथा मेहर की रकम दे कर लौटा दिया. हमीद का परीक्षाफल आ गया था



“जबान संभाल कर बोलिए, साहब, मैं डबल एम. ए. हूँ।”

और उसे हमीदिया अस्पताल भोपाल में हाउस सर्जन होने का आदेश मिला था। हमीद भोपाल चला गया। भाभी को शंका थी कि कहीं हमीद पुनः वहीदा से संपर्क स्थापित न कर ले। अतः उन्होंने भोपाल-वासी कुछ रिश्तेदारों से अनुरोध किया कि वे हमीद की गतिविधि पर नजर रखें और कोई विशेष बात हो तो सूचित करें।

भाभी ने फिर गफूर मियां की शादी के लिए दौड़घूप शुरू की। इस बार कुंवारी और खूबसूरत लड़की के लिए गफूर मियां का आग्रह न था। वह चाहते थे कि कोई भली सी निसंतान औरत मिल जाए तो निकाह कर लें। लेकिन इधर गफूर मियां ने दस महीने में वहीदा को तलाक दे दिया था। इस वजह से कोई लड़की वाला तैयार नहीं हो रहा था। संभवतः उन्हें भय था कि कहीं वहीदा की तरह उन की लड़की को भी तलाक न दे दिया जाए।

कुछ दिनों बाद भाभी को भोपाल से सूचना मिली कि हमीद वहीदा के घर आताजाता रहता है और कई बार उसे कमला नेहरू उद्यान और स्थानीय सिनेमाघरों में वहीदा और उस की छोटी बहन सईदा के साथ घूमतेफिरते देखा गया है। यह सूचना पा कर भाभी चिंतित हो उठीं। उन्हें लगा कि कहीं यह हीरे सा लड़का उन के हाथ से न निकल जाए। अतः उन्होंने शीघ्र ही हमीद के लिए लड़की ढूँढ निकाली ताकि शादी कर के उसे बंधन में डाल दिया जाए।

लड़की खूबसूरत, पढ़ीलिखी और ऊँचे खानदान की थी। लड़की का पिता इंदौर में एक सरकारी विभाग में उच्च पदाधिकारी था और वे लोग काफी प्रगतिशील खयालों के थे। भाभी जल्द से जल्द हमीद को लड़की दिखा कर बात पक्की कर देना चाहती थीं। अतः उन्होंने तार दे कर हमीद को बुलवा लिया।

हमीद दो दिन की छुट्टी लेकर आ गया। उस ने आते ही इस प्रकार

बुलवाने की वजह पूछी। भाभी ने बताया "तुम्हारे लिए इंदौर में एक लड़की है। तुम भी चल कर देख लो। मैं जल्द तुम्हारी शादी कर देना चाहती हूँ क्योंकि घर में काम करने वाली कोई नहीं है।"

"ऐसी भी क्या जल्दी है, माँ!" हमीद एकाएक ऐसे प्रस्ताव से चौंक गया।

"मुझे जल्दी है। देखता नहीं, मेरे तंदुरुस्ती दिनबदिन गिरती जा रही है। अब इस उमर में मुझ से घरगृहस्थी के काम नहीं होते।"

माँ के इस सफेद झूठ पर हमीद हँस पड़ा। बोला, "अभी तो तुम काफी तंदुरुस्त हो, माँ। और शादी मैं अपने पसंदीदा लड़की से करूँगा। मैं उसे जवाब दे चुका हूँ।"

"कौन है वह लड़की? उस का नाम क्या करता है? खानदान कैसा है?" भाभी ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

"उसे, उस के बाप और खानदान को तुम खूब अच्छी तरह जानती हो, माँ। मैं अगले महीने वहीदा से शादी कर रहा हूँ।"

"क्या बकता है, नामाकूल!" भाभी जंसे कि आसमान से गिरीं। उन की आँखें फटी की फटी रह गईं।

"हां, माँ।" हमीद ने सिर झुका लिया।

"उस चुड़ैल ने तुम पर जादू कर दिया है, बेटा। सोचो तो, तुम्हारे ऐसा करने से हमारी कितनी बदनामी होगी। क्या तुम वहीदा को सच्चे दिल से स्वीकार कर पाओगे—एक ऐसी लड़की जो तलाक-शुदा है? तुम्हारा दिमाग तो सही है?"

"मैं ने बहुत सोचसमझ कर फैसला किया है, माँ। वहीदा के साथ तुम सब ने भारी जुल्म और नाइंसाफी की है। सोचो तो, एक बूढ़े को पति के रूप में पा कर एक युवा लड़की के दिल को कितनी ठंड पहुंची होगी! बेचारी को जब अनचाहे आदमी के साथ लंबी ज़िंदगी बितानी पड़ती है तो वह अपने जीवन की सब से बड़ी बाजी हार जाती है।"

“मैं यह बंध नहीं आती, हमीद।”

लुटी सा भीभी।

“तुम्हें यह सब जानना होगा, मां। तुम सब ने मिल कर बेकसूर वहीदा का जीवन तबाह कर दिया है। तुम्हारे गुनाह का मैं प्रायश्चित्त करूंगा। जब तक मैं वहीदा के सून और उदास जीवन में खुशी के फूल न बिखेर दंगा, तब तक मैं चैन से नहीं रह सकता।” हमीद की आंखों में कुछ कौंध रहा था और मुख पर पत्थर के बुत की कठोरता मौजूद थी।

“हमीद, तुम मेरे अरमानों का खून मत करो। तुम्हारी शादी के लिए मैं ने कितने ही ख्वाब देखे हैं, बेटा। मैं तुम्हारे लिए वहीदा से भी सुंदर दुलहन लाऊंगी। तुम उस चुड़ैल का खयाल दिल से निकाल दो,” भाभी के स्वर में कातरता थी।

“तुम्हें अपने अरमानों और ख्वाबों के टूटने पर इतना दुख हो रहा है तो यह सोचो, मां, कि वहीदा के अछूते अरमानों और उन रंगीन सपनों का क्या हुआ होगा जब तुम उस की मरजी के खिलाफ उसे दुलहन बना लाई और आठदस महीनों में तलाक भी दिलवा दिया?”

इस प्रश्न का भाभी के पास कोई जवाब न था। हमीद उठ कर बाहर निकल गया और कमरे में रह गई बुत की तरह खामोश, संज्ञाशून्य और लुटी-

विवेकशून्यता की स्थिति में वह न जाने कब तक यूँ ही बैठी रहती अगर गफूर मियां ने आ कर यह न पूछा होता, “हमीद इतनी जल्दी वापस क्यों चला गया, भाभी?”

“हमीद चला गया क्या?” भाभी के स्वर में अविश्वास था। उन की आवाज जैसे कि गहरे कुएं से आ रही थी।

“हां, अभीअभी वह अपना सूटकेस ले कर गया है। लेकिन बात क्या है?” गफूर मियां ने विस्मित हो कर पूछा।

“हम बाजी हार गए, छोटे भैया— छोकरा हाथ से निकल गया,” भाभी ने डूबे हुए स्वर में कहा और फूटफूट कर रोने लगीं।

गफूर मियां सारा माजरा समझ गए। इधर वहीदा तो गई ही, उधर वह रशीदा भी हाथ से निकल गई थी, जिस से पहलेपहल भाभी ने निकाह कर लेने की खुशामद की थी।

गफूर मियां और भाभी, दोनों छत की कड़ियां गिन रहे थे और अपनी भूलों पर पछता रहे थे। मगर अब क्या हो सकता था? तीर कमान से निकल चुका था और वे जीती हुई बाजी हार गए थे।

बिजली चप्पल

सांगली. स्थानीय जूतों के एक निर्माता ने ऐसी चप्पल बनाई है जिस से अंधेरे में चलते समय चप्पल में लगा हुआ छोटा सा बल्ब प्रकाश देता है। चप्पल देखने में सुंदर तथा हलकी है। चप्पल को पहन कर अंधेरी रात में चलने पर प्रकाश दिखाई देता रहेगा। रुकने पर बल्ब प्रकाश देना बंद कर देता है।

अभी हाल ही में एक प्रदर्शनी में यह बिजली चप्पल रखी गई थी, जो सभी के आकर्षण का केंद्र रही। चप्पल निर्माता श्री वाघमारे को प्रदर्शनी के आयोजकों ने पुरस्कार भी प्रदान किया।

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक: कुंवर रतनसिंह, पाली)

पान का बीड़ा

बरात दरवाजे पर आ लगी थी. भीड़ का एक रेला उमड़ कर मुख्य द्वार की ओर चल पड़ा, और उसी धक्कम-धक्के में वह चुपचाप खिसक कर बारजे की ओर बढ़ गई. बारजे के एक खंभे की आड़ ले कर उस ने नीचे झांका...पूरे गलियारे में दिपदिपाते रंगीन लट्टू, द्वार पर शहनाई के गूंजते स्वर और बाजे की धुन में नाचते कई अलमस्त कदम. पल भर वह वातावरण की रंगीनी में डूब सी गई, सहसा उस की निगाहें सफेद घोड़ी पर बैठे दूल्हे पर जा अटकीं. सेहरे की झिलमिल लड़ियों के उस पार छिपे हुए चेहरे की एकएक रेखा उस की आंखों में उतरने लगी...माथे तक बिखरे घुंघराले बाल, बड़ीबड़ी आंखें और होंठों पर बिखरा सदाबहार हास. वह वर्तमान को भुला कर अतीत में डोलने लगी...

...उस के पड़ोस में शादी थी, आशु दी की शादी. गणेशपूजा में जब दूल्हे के साथ उन के कुछ अंतरंग मित्र भी पूजा-गृह में घुस आए तो वधू पक्ष की एक तेजतर्रार लड़की ने फिकरा कसा, "भई बाह! दूल्हे साहब के साथ तो जासूस भी चलते हैं. पर, जनाब, घबराइए नहीं.

कोई उन्हें उड़ा न ले जाएगा. और फिर यह तो वैसे भी 'रिजर्व' हैं."

"यह रिजर्व हैं इसी लिए तो सेवा में हम हाजिर हुए हैं. कसम खुदा की, हम तो राह देख रहे हैं, कुछ सेवा हो तो कहते न शरमाइएगा." इस बार वर पक्ष के किसी तीसमारखां ने तीर छोड़ा था.

"ओ हो! गोया, आप जासूस नहीं, सेवक हैं. सेवकरामजी, देखिए भीड़ बढ़ने से कमरे में गरमी बहुत बढ़ गई है, जरा यह पंखा झल दीजिए न!" उसी शोख लड़की ने हंसते हुए एक पंखा लड़के की ओर बढ़ा दिया, और साथ ही ढेर सी महीन हंसी के कतरे वातावरण में बिखर गए.

दोनों पक्षों में ऐसी ही नोकझोंक चल रही थी. वह दुलहन के ठीक पीछे खड़ी इस सब का जायका ले रही थी. सहसा दुलहन के सिर से कामदार ओढ़नी सरक कर गिर पड़ी. वह झट झुकी. ओढ़नी ओढ़ातेओढ़ाते उसे एक शरारत सूझी और उस ने झट दूल्हे साहब की कामदार अचकन के कोने को नीचे बिछे गलीचे के साथ नत्थी कर दिया, और फिर चुपचाप ज्यों की त्यों खड़ी हो गई.

"वर व कन्या, कृपा कर दोनों खड़े हो जाएं." वर महोदय के उठते ही कमरा सम्मिलित ठहाकों से गूँज उठा. खिसिया कर वर महोदय पीछे पलटे तो वह चहकी, "भई, वाह! जीजाजी क्या शानदार दुम लटकाए चले जा रहे हैं." दूल्हे साहब ने क्रोध से अपने मित्रों को ताका तो वह फिर बोल उठी, "गुस्सा न कीजिए, जीजाजी. जासूस जरा पक्के हैं." फिर मोटेबारीक कई स्वर लहराने लगे.

वेचारे पंडितजी ताली बजा कर बोले, "अब सब लोग चुप हो कर मेरे साथ आरती गाइए."

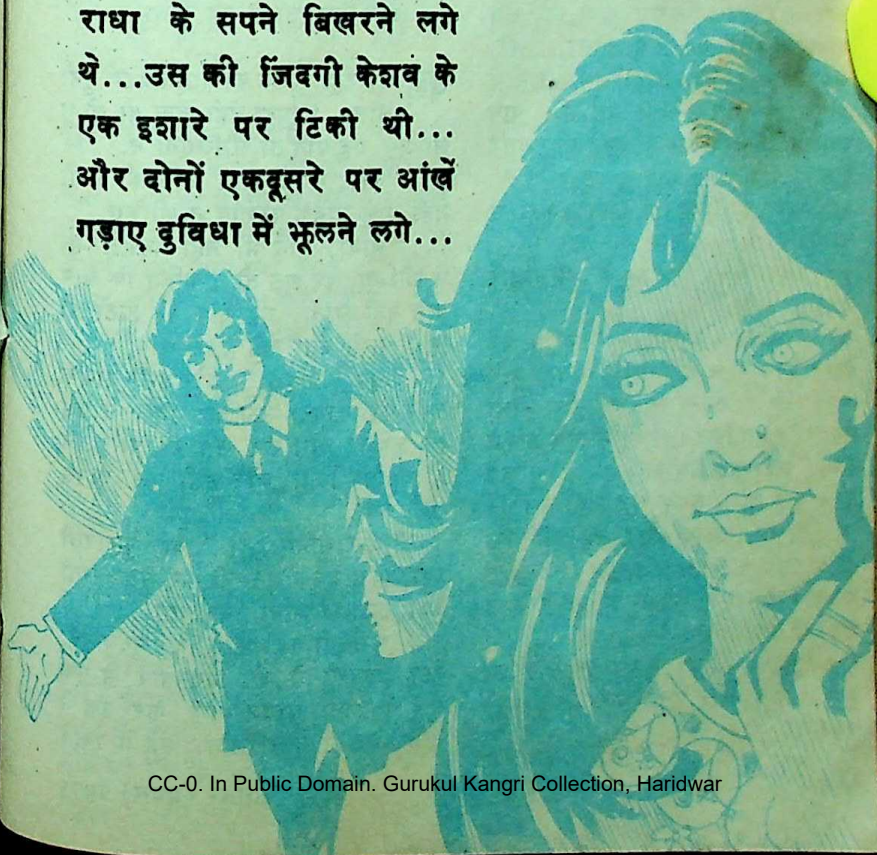
आरती की समाप्ति पर पंडितजी ने कहा, "कृपया रास्ता दीजिए. जोड़ा लग्न मंडप में जाएगा." वरवधू ने बाहर का रुख किया. भीड़ भी पलट पड़ी. तभी

अपनी आंखों के सामने ही राधा के सपने बिखरने लगे थे... उस की जिंदगी केशव के एक इशारे पर टिकी थी... और दोनों एकदूसरे पर आंखें गड़ाए दुविधा में भूलने लगे...

रास्ता दीजिए. दूसरा जोड़ा भी लग्न-मंडप को जाएगा."

इस स्वर के साथ ही बाहर की ओर उमड़ते कदम थम गए और जोरदार ठहाकों से कमरा भर गया. लोग रहरह कर उसे ताकते हुए हंस रहे थे. वह घबरा गई. पलट कर देखा, वर पक्ष के एक ढीठ युवक ने उस के गुलाबी दुपट्टे को अपनी नीली टाई से नट्थी कर लिया था. क्रोध से उस ने युवक को ताका, तो वह शरारत से मुसकराया, "क्षमा कीजिए. जासूस जरा पक्के ही हैं," पुनः हंसी छिटकने लगी. खीज और शर्म से भरी वह दुपट्टा वहीं छोड़ सरपट बाहर लपकी, और दनादन जीना पार कर जा पहुंची.

ऊपर भी वे सम्मिलित ठहाके गूँजते रहे और नट्थी किया हुआ दुपट्टा उस की



आंखों में लहराता रहा. बड़ी मुश्किल से स्वयं को संयत कर सका वह. मैंने भी कर देखने की लालसा जाग उठी. वह कमरे के लान की तरफ खुलने वाली खिड़की पर जा कर नीचे ताकने लगी. चारों ओर वर पक्ष और वधू पक्ष के लोगों की भीड़ और बीच में मंडप में बैठे दूल्हा-दुलहन उसे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे.

सहसा उस की निगाह एक कोट की जेब से बाहर लटकते अपने दुपट्टे के छोर पर जा टिकी. उस ने कोट के मालिक को निहारा...बड़ीबड़ी आंखें, घुंघराले बाल और गहरे नीले सूट में दमकता उजला रंग. "अच्छा, तो यह हैं वह महाशय!"

और वह महाशय थे कि बारबार दुपट्टे वाली जेब पर हाथ फेरते, तमाम खड़े चेहरों को टटोल रहे थे. वह होंठों में मुसकरा दी. तभी दो नन्हे कदमों की थपक ने उसे चौंका दिया. उस ने पीछे पलट कर देखा. सितांशु खड़ा था, उस का छोटा भाई. देखते ही बोला, "अरे, दीदी. तुम यहां छिपी हो? मैं तो नीचे दूंदूंदू कर हार गया. यह लो, पान खाओगी. मीठा पान है, तुम्हें बड़ा पसंद है न."

"अरे हां. ला; दे, सेतू. कहां से लाया?"

"बरात में बंट रहे थे. मैं तुम्हारे लिए ले आया."

"शाबाश. अच्छा, तू नीचे जा. पर देख, किसी को न बताना कि मैं यहां हूं."

"उंहं," करता सितांशु नीचे चला गया और वह फिर खिड़की से नीचे झांकने लगी. सब कुछ यथावत था. किंतु वह नीले सूट वाला युवक अब कहीं नजर न आ रहा था. शायद इधर हो, जीने के नीचे. सोच कर उस ने गरदन खिड़की से बाहर निकाली कि किसी के बूट पीछे से चरमरा उठे.

"कौन?" हड़बड़ा कर उस ने गरदन अंदर खींची और पलट कर देखा, वही खड़ा था.



"ओह, तुम? बदतमीज. यहां क्या करने आए?"

"जी...जी...यह आप का दुपट्टा..."

"शुक्रिया. दुपट्टों की कमी नहीं है मुझे. आप फौरन नीचे चले जाइए," वह तमक कर बोली.

"तो आप खफा हो गई? हम ने तो मजाक किया था. बस, यह दिखाने के लिए कि हम भी कुछ कम नहीं. और फिर शादीव्याह में तो यह सब चलता ही है," बड़ी विनम्रता से वह बोला.

वह चुप रही. युवक का साहस बढ़ा. पुनः बोला, "दुपट्टा नहीं लेना हो तो न लीजिए, यह पान तो लीजिएगा न."

"जी...मैं पानवान खाने की आदी नहीं. मुझे नाहक परेशान न कीजिए."

"बाबा, पान भी नहीं लेना है तो न लीजिए, पर झूठ तो न कहिए कि आप पान नहीं खातीं. यह आप के होंठों की ताजा सुखी बता रही है कि आप...."

"उफ, आप..." और इसी ताजुक वक्त का फायदा उठा कर युवक ने उस की हथेली थाम कर उस पर पान का बीड़ा रख दिया और उसी पल वापस चला गया.

"अरे. सुनिए...तो." वह पुकारती रही, किंतु युवक अनसुनी कर मुसकराता हुआ, खटाखट जीना उतर गया.

'शरारती कहीं का!' वह बुदबुदाई, फिर खिड़की से बंधे बंदनवार से एक सुखं तिकोना कागज तोड़ कर उस ने बीड़ा उस में लपेट लिया. मुंह में रखने

केशव ने राधा से एक वादा किया था...और अब लग रहा था कि वादा निभा पाने में वह कमजोर पड़ता जा रहा है...लेकिन तभी उस ने कुछ निर्णय ले लिया...

का प्रश्न ही न था, क्योंकि अभीअभी उस ने एक पान खाया था।

उस के बाद वह युवक बिदाई के वक्त तक न जाने कितनी बार उस से मिलता रहा, मुसकराता, खिलखिलाता और हर बार वह सिंहरन के बीच घिरती रही।

बिदावेला पर सामने खड़े युवक ने एक बार उसे ताका, फिर जेब में हाथ डाल कर, उसे चूम लिया। जेब से अब भी दुपट्टे का एक छोर झांक रहा था। वह मुसकराए बिना न रह सकी।

घर लोट कर वह पल भर मुस्ताई-पान का बीड़ा अब भी कागज में लिपटा उस की हथेली में पड़ा था। उस ने कागज खोल कर देखा, बीड़ा दब कर पिचकपिचक गया था। खाने का जी न हुआ। सोचा, क्यों न इसे रख दूं, देखूं, कब तक रहता है। संदूक में एक इयॉरिंग की डिब्बिया खाली पड़ी थी। पान उसी में रख दिया और फिर सुधा को पत्र लिखने बैठ गई :

“सुधा, तू अब तक शिमला में घूम रही है। काश, आशु दी की शादी में यहां होती। सच, बड़ा मजा आया। तू होती तो और भी मजा आता।” फिर धीरेधीरे गणेशपूजा से दुपट्टा के नत्थी होने तक की दोस्तान भी लिख दी।

पांचछः दिन बीत गए थे, एक दिन कपड़े फैलाने छत पर गई। सामने सुधा के लान में डाक्टर चाचा के साथ उसे बैठा देख कर दंग रह गई। युवक ठीक सामने

नीट बैठे मिलते ही युवक ने दाहिने हाथ से माथा सहलाया। उस के इस अनूठे अभिवादन पर वह बिना मुसकराए न रह सकी।

कपड़े फैला कर नीचे उतरी तो रामू काका को मां से बतियाते पाया। उसे देखते ही मां बोली, “राधा, तुझे श्रीमती वर्मा ने बुलाया है। शायद उन की तबीयत ठीक नहीं है। घर में कोई मेहमान आया है। जा, जरा हाथ बंटा देना, सुधा भी तो नहीं है आजकल यहां।”

और वह होंठों में मुसकराती रामू काका के साथ चल पड़ी। रसोई में कदम रखते ही चाची ने प्यार से थपथपाया, “आ गई, राधा बिटिया। तुझे कष्ट दिया है। पर क्या करूं, रामू काका से चूल्हा संभलता नहीं। मेरी तबीयत ठीक नहीं, और सुधा भी...”

“बस...बस...बस...चाचीजी, शुरू कर दी न फिर बेगानेपन की बात। मैं और सुधा क्या अलगअलग हैं?”

“अरे नहीं, बेटी। तुम्हारे दो तन और एक मन की, कौन नहीं जानता। यह हुई न बात।”

डाईनिंग टेबल पर खाना परोसते भी उन निगाहों ने कई बार उस के अंतर को छेदा। कैंसी थरथराहट भरभर जाती उस के तनमन में। किसी तरह काम खत्म कर वह घर लौट आई।

दूसरे दिन कालिज जा रही थी वह चुप खोईखोई, कि किसी ने कान के पास कहा, “आदाब अर्ज है!”

क्रोध से उस ने पलकें उठाई और घक से रह गई। ‘उफ यहां भी पीछा नहीं छोड़ा शैतान ने’—सोचती वह तेज-तेज बढ़ने लगी। वह भी कदमदरकदम बढ़ाता बोला, “दो दिन रूकंगा डाक्टर साहब के यहां। शाम को आएंगी न?”

“घत...क्यों आऊं मैं?” कहती वह झट कालिज के फाटक के अंदर प्रवेश कर गई और वह टुकुरटुकुर ताकता रह गया।

कालिज खेती हो ही थी कि माँ के अघर पर पुनः चाचीजी का निमंत्रण रखा पाया. सोचा, न जाए पर चाची क्या सोचेंगी. माना कि वे रिश्तेदार नहीं, किंतु इतनी आत्मीयता. जाना ही होगा.

कपड़े बदल कर वह जा पहुंची वर्मा साहब के घर. बरामदे में ही हजरत से मुठभेड़ हो गई.

“ओ हो. बड़ा कहना मानती हैं आप.”

“जी...आप का नहीं, चाचाजी का,” कहते हुए वह अंदर भाग गई.

दो दिन पलक झपकते बीत गए. वह जाने लगा था. श्रीमती वर्मा और श्री वर्मा लान पर खड़े उसे बिदाई दे रहे थे. और वह खिड़की की ओट से सब कुछ देख रही थी. मन न जाने कैसाकैसा हो आया.

देखते ही देखते वह चला गया. थोड़ी ही देर में वह भी कालिज के लिए चल पड़ी. रास्ते में उसे लगा—काश, कोई अभी आ कर शरारत से कह दे, ‘आदाब अर्ज है.’ हुंह, अब कौन कहेगा? वह तो मेरे ही सामने चला गया है. धत, कंसी पगली हूं मैं...सोचती हुई फीकी हंसी हंस दी.

“आदाब अर्ज है!” किसी ने सचमुच उस के कानों के पास कहा.

“ऐं...आप?”

“जी...मैं...क्यों अच्छा नहीं लगा क्या?”

“जी, अच्छा लगा...ओ...नहीं... नहीं.” वह सितपिटा गई.

“हुकम हो तो दोचार दिन और रुक जाऊं. क्यों, क्या इरादा है?”

“मुझे क्या मालूम.”

“तो समझिए, मैं रुक गया.” और फिर वे दोनों साथसाथ जा रहे थे, कालिज से दूर :

तिकोने पार्क की बेंच पर बैठ कर युवक ने पहल की...

“मैं यहां एक होटल में रुक गया हूं, किसी को बताए बिना.”

“क्यों?”

“क्या करता. जाने का दिल ही नहीं हुआ.

“दिलजले हो न.” और दोनों खिलखिला दिए.

“अच्छा. एक बात बताइए, आप वर्मा चाचाजी को कैसे जानते हैं?”

“पिताजी के पुराने मित्र हैं. उस दिन शादी में अचानक मिल गए. मुझे देख कर बोले, ‘बेटे, तुम कुछ दिन इधर आओ न.’ और मैं चला आया. तुम से मिलने का ऐसा मौका कहां से मिलता.”

“शरीर कहीं के!” और फिर दोनों दिन भर इधरउधर भटकते रहे थे.

सांझ घिरे घर लौटी तो मेज पर एक लिफाफा पड़ा पाया. सुधा का पत्र था. लिखा था, “राधा, आशु दी की शादी में न पहुंचने का अफसोस हुआ, और अब तो और भी. सुना है, वहां कोई महाशय आए थे. मेरे पास फोटो आया है. कहे तो भेज दूं तुझे. देख कर बताना, कहीं तेरा टाई वाला...” हुंह, टाई वाला! उस का फोटो! वह तो अभी यहीं है. भला कैसे हो सकता है? और फिर निरी कल्पना समझ कर उस ने बधाई दी व फोटो भेजने का आग्रह भी किया.

दूसरे दिन युवक पुनः वहीं पर मिल गया था और दोनों फिर पार्क की ओर बढ़ चले. चलतेचलते युवक ने पूछा, “क्या मैं आप का नाम जान सकता हूं?”

“जी...मुझे राधा कहते हैं.”

“भई, खूब. मैं हूं केशव...केशव यानी कृष्ण, और कृष्ण की राधा...क्या संयोग है!” वह ठठा कर हंस दिया. सुन कर वह भी कैसी लाललाल सी हो उठी थी.

इस के बाद लगभग चार दिन और रुका था वह. फिर बिदावेला में उस ने कहा था, “राधा, आज रात की शादी से चला जाऊंगा. पिताजी के पास नहीं, सीधे नौकरी पर. जाते ही पिताजी को पत्र लिखूंगा कि अब मैं शादी के लिए

तैयार हूँ।” ^{Digitized by eGangotri Foundation} सुधा ने हाथ जोड़कर कहा, “मैं आपसे मिलने का वादा कर के वह चला गया था।

तीन दिन बाद सुधा का पत्र मिला। पत्र खोलते ही एक गुलाबी कागज निकल आया। उस ने समझ लिया कि इस में फोटो होगा। झटपट उस ने कागज की परतें खोलीं और फोटो निकाल लिया। फोटो देखते ही धरती, आकाश, सब उस की आंखों में घूम गए, फोटो केशव का ही था। पीछे तीन वर्ष पूर्व की तिथि पड़ी थी। स्पष्ट नाम लिखा था—केशवचंद्र शर्मा। कितनी देर तक ठगी सी रही थी वह। कुछ संयत हो कर उस ने पत्र पढ़ा—“फोटो कैसा लगा? कुछ दिन यहां भैयाभाभी के पास और रुकूंगी। तुम फोटो वापस भेज देना। और हां, भई तू मेरी पसंद अगर पूछे तो सुन—जालिम सीधे दिल में उतर गया है।”

न जाने कितनी देर सुन्न खड़ी रही थी। फिर उस ने पत्र चुपचाप दराज में सरका दिया, पत्रोत्तर का चाव ही मिट गया था।

दिन सरकने लगे। केशव का कोई पत्र अभी तक नहीं आया था। सुधा का ही दूसरा पत्र आ पहुंचा—“राधा की बच्ची। तू ने अच्छा मोन साध लिया। अपन के तो दम निकल रहे हैं।” पत्र पढ़ कर उस की आंखें भीग आईं। पगली, तुझ से पहले तो मेरा दम...पर उस ने लिखा, “सुधा, सच, बड़ा सुंदर है री! टाई वाला भला ऐसा कहाँ।” पत्र देर से देने का कारण अपनी अस्वस्थता लिख दिया।

की डाक से एक पत्र आ पहुंचा। पत्र केशव का था—“राधा, मैं बिना किसी को बताए तुम्हारे शहर में सातआठ दिन और रुक गया था। इधर पहुंचते ही पिताजी के दो पत्र मिले, जिन में डाक्टर वर्मा की किन्हीं साहबजादी से शादी करने का आग्रह है। आग्रह क्या, आज्ञा समझ लो। शायद फोटो भी वह वर्मा साहब के घर भेज चुके हैं। पर तुम घबराना नहीं, पिताजी दोस्ती भी चाहते हैं और दीलत भी...”

पत्र पढ़ कर उस ने चाहा कि लिख दूँ—केशू, मंझधार में न छोड़ देना मुझे। पर लिखा, “पिताजी की बात मान लो, केशव।”

प्रत्युत्तर में कैसा खराखरा पत्र भेजा था केशव ने, “तुम्हारे लिए शादी का कोई अर्थ नहीं? प्यार का कोई महत्त्व नहीं? पर मैं यह नहीं होने दूंगा। पिताजी को एकदम ना लिखना तो उचित नहीं है। मां हैं नहीं। पिताजी ब्लड प्रेशर के रोगी हैं, पर वर्मा साहब को ही अनिच्छा का पत्र लिख रहा हूँ।”

उफ, केशव ऐसा न करो। बात अभी गोलमटोल ही रहने दो। केशव के पत्र के उत्तर में राधा ने विरोध भरा पत्र भेज दिया।

कई दिन तक केशव का कोई पत्र नहीं मिला। हां, सुधा का ही पत्र आ पहुंचा—“राधा, जल्द दिल्ली आ रही हूँ। पिताजी का परेशान सा पत्र पा कर

तेरी जवानी का...

जब मुझे तेरी जवानी का खयाल आता है,
जाने क्या सोच कर बेचैन सा हो जाता हूँ।
जब कभी दूर तसव्वुर में निकल जाना हो,
मैं तेरी जुल्फ में कुछ अशक पिरो जाता हूँ।

—कतील शिफाई

डर लग रहा है। ^{आर्य समाज Foundation, Chennai and eGangotri} ^{माटी का ढेला है, पराए हृदय की चिता करो."} हाय री किस्मत! राधा ने सिर थाम लिया। कुछ देर बाद उस ने केशव के नाम एक सौगंध भरा पत्र भेज दिया, "केशव, ना न करो. तुम्हें मेरी सौगंध."

प्रत्युत्तर में चौथे दिन केशव स्वयं आ धमका. कालिज के फाटक के बाहर खड़ा वह उस की प्रतीक्षा कर रहा था. उसे आते देख आह भरे स्वर में बोला, "चलो मेरे साथ." और वह यंत्रवत पीछे-पीछे चल पड़ी.

उसी पार्क की वही बेंच थी. पर कितने भारी पल थे. किसी तरह चुप्पी तोड़ता हुआ केशव बोला, "राधा, मेरा मार्गदर्शन करने के बदले यह उपदेशात्मक व्यवहार अपना कर तुम्हें कौन सा सकून मिल रहा है? कसम देने जैसी ओछी बात..."

"केशव..."

"झूठ का परदा हटा दो, राधा. तुम्हें मैं पसंद नहीं तो अब भी साफ-साफ..."

"केशू!" रुआंसी हो उठी राधा. फिर संभल कर बोली, "सब के तय किए रिश्ते में ही मंगल होता है, केशव."

"मेरा मंगल तुम हो, राधा, तुम. तुम्हारे बिना कुछ भी नहीं."

पल भर वह डगमगा उठी. उसे लगा, दौड़ कर केशव के सीने से चिपट जाए, पर मन को थाम कर उस ने कहा, "केशव, तुम्हें ऐसा करना ही होगा."

"क्यों?"

राधा चुप रही. कुछ मौन क्षण गुजर गए. केशव के लिए यह चुप्पी असह्य हो उठी. वह चीखा, "राधा..."

"केशू!" कातर दृष्टि से उस ने केशव को निहारा.

"राधा... नहीं, राधा... मुझ से मेरा जीवन न छीनो..." वह अधीर हो उठा.

"केशव, काश, बात इस तरह से न आ पड़ी होती! काश, मैं ने सुधा को यथार्थ बता दिया होता! अब मैं उस का हृदय न तोड़ सकूंगी."

"तो मेरा हृदय तोड़ दो, राधा. वह

माटी का ढेला है. पराए हृदय की चिता करो." सुन कर उस की आंखें टपटप बरसने लगीं.

"राधा!"

"हूं."

"मैं डाक्टर साहब के पास जा कर सब कुछ बता देता हूं."

"तो तुम ने पत्र में..."

"कुछ स्पष्ट नहीं लिख पाया... तुम्हारी सौगंध ने मुझे रोक दिया, राधा."

"ओह. खुदा, तेरा लाखलाख शुक्र है. अब मेरी लाज रख लो, केशव. मेरी झोली में अपने प्यार का यह दान दे दो. मेरे लिए केशव... मेरे लिए." और उस ने सचमुच अपना आंचल फैला दिया.

"राधा!" केशव ने धीरे से उस के कंधे थपथपाए और फिर चला गया. वह गुमसुम आंसू और मुसकान के बीच उन दूर होती पदचापों को ताकती रही.

सहसा किसी का जोरदार धक्का लगा, "माफ कीजिएगा. वाकई मुझे अफसोस है."

"हूं..." धक्का खा कर उस की तंद्रा टूटी, वह संभली. अतीत एकाएक बिखर गया. उस ने पल भर गीली आंखों को पोंछा, फिर आगंतुक को निहारा. वह एक फोटोग्राफर था. अचानक कैमरे का बल्ब भक से जल उठा. उस की आंखें कैमरे की आंख के साथसाथ लान तक जा पहुंचीं. ठीक उसी वक्त दुलहन ने अपने हाथ की जयमाला दूल्हे के गले में डाल दी. दूल्हे ने भी अपने हाथों दुलहन को माला पहना दी. और कैमरे की एक क्लिक ने सदा के लिए वह समां कैद कर लिया.

उफ! अब वह पल भर भी वहां नहीं ठहर सकी. भाग कर घर लौट आई, कमरे में पहुंच कर उस ने इर्यारिग की वह डिब्बिया खोली. पान का बोड़ा सूख कर चूर हो गया था. सिर्फ सुपारी के एकदो टुकड़े मात्र कागज में शेष थे. हां, खुश अब भी ताजी थी.

तवीं किस्त

धारावाही • आनंदसागर 'श्रेष्ठ'



पूरे 'रेनबो' में चर्चा थी कि हादी बेगम जाफर मियां पर भरती हैं...और हादी बेगम पिघले सीसे की तरह चुपचाप इसे पिए जा रही थीं, लेकिन एक दिन उन्होंने रहस्य खोल ही दिया...

आप पढ़ चुके हैं :

पुरविया हाट के नवाब नईमुद्दीन का महल 'रेनबो' लगभग दो सौ बेगमों से भरा था, जिन पर वह बेशुमार दौलत लुटा रहा था. चंदर उसी महल में नौकरी करने लगा और धीरेधीरे बड़े नवाब का विश्वासपात्र खिदमतगार बन गया. 'रेनबो' की महलसरा में रहने वाली आयशा बेगम की निगाह एक दिन चंदर पर पड़ी और वह उस की आंखों में गड़ गया. आयशा बेगम की आसक्ति से वह बच न सका और एक रात वह हमविस्तर बनने के लिए मजबूर हो गया. कुछ दिनों बाद बड़े नवाब साहब का देहांत हो गया, छोटे नवाब गद्दीनशीन हुए. उन्होंने सभी बेगमों को महलसरा से निकाल बाहर किया. असद मियां जब इलाज के लिए ब्रंबई गए तो वहीं उन की मुलाकात विल्कीस बेगम से हुई, जो वहां एक 'होटल' चला रही थी.

मेरा ताश का पत्ता खुल चुका था. जिस मनोगति को मैं आयशा की वेधक अंतर्दृष्टि से बचाना चाहता था,

वह स्पष्ट हो चुकी थी. अब एक ही रास्ता शेष था मेरे लिए. उसी का अनुसरण करते हुए बोला, "तुम सब कुछ

अभी भूला न होगा. जाफर खां के टुकड़ों पर पलने के कारण आज तुम उस के लिए सिफारिश करो, इस का यह मतलब नहीं कि उस की कहानी की असलियत हमेशा के लिए बदल जाएगी." और हादी वेगम को देखा जो इस अंतिम बात पर बिस्तर से उतरने के लिए टांगें नीचे डाल चुकी थीं और अपने आंचल से आंसू पोंछने का उपक्रम कर रही थीं.

"जाफर के टुकड़ों पर पलने की वजह से मैं ने ऐसा कहा है?" आयशा को अब गुस्सा आने लगा, "आखिर रहे न तुम वही नीच के नीच नौकर! तुम ने हादी वेगम की हालत देख कर यह अंदाजा नहीं लगाया कि यह उस के बिना शायद जिंदा भी न रहें. मैं कहती हूँ, अब और कुछ न कहो मुझ से. चले जाओ यहां से."

मैं स्थिर खड़ा रहा. उस की मुरझाई आंखों में कुछ तलाशता रहा. फिर शूल बिखेरता बोला, "अफसोस, अफसोस, आयशा वेगम! तुम ने किस सहूलियत से इन के जाफर के बिना जिंदा न रहने की बात कह डाली. अफसोस! चाहती हो तुम्हारी तरह मैं भी इन की.. मेरा मतलब है... मोहब्बत के चर्चे तसलीम कर लूँ? आह, तुम कैसे इतना गिर सकती हो, इतनी नीचता तक आ सकती हो...!"

सहसा मेरे शब्द जहां के तहां अटक गए.

पैरों पर गर्मगर्म आंसू बहाती हादी वेगम जमीन पर पड़ीपड़ी बारबार अपना सिर पटक रही थीं, "अब बस करो, बस करो, चंदर, बखुदा नहीं सहा जाता मुझ से. अब और नश्वर न मारो हमारे. चुप रहो... चुप रहो!"

"हादी वेगम, हादी वेगम, यह क्या करती है? पैरों पर से उठिए. भगवान के लिए पैरों पर से उठिए आप," मैं घबरा गया इस दृश्य से.

हादी वेगम ने उसी स्थिति में पड़े गिड़गिड़ाती आवाज में कहा, "नहीं, भैया. अब नहीं सुना जाता. मैं जाने को दिल चाहता है. ला दो जरा सा जहर, तुम्हीं ला दो," वह बराबर रोती रही.

मैं ने पीछे हटने का प्रयत्न किया तो लगा हादी वेगम ने दोनों पैरों को अपनी बांहों में जकड़ लिया है. इधरउधर देखा, आयशा दूर खड़ी मुँह फेरे आंसू बहा रही थी. मेरी तो समझ में ही न आया कि आखिर इस परिस्थिति का कारण क्या था. हार कर जल्दी से बोला, "भगवान के लिए छोड़ दीजिए. लीजिए आप का जाफर अब ही आ जाएगा, मैं इस का वादा करता हूँ. अब तो छोड़िए. मान जाइए, हादी वेगम..."

वह बोलीं, "मर जाने दो जाफर को. इधर मैं जहर खा लूँ उधर उसे फांसी लगे," वह रोंतेरोते आगे कहने लगीं, "हाथ खुदा! कानों में पीप बन गया सुनतेसुनते. जिन्हें अपना समझती हूँ, हमदर्द मानती हूँ, वे भी यही तोहमत लगाते हैं. नहीं, चंदर, भाई नहीं. आज तो बरदाश्त की हद हो चुकी. मुझे बड़े सरकार की परवा न थी, महल के और नौकरोंचाकरों की भी परवा न थी, लेकिन तुम भी मुझे जाफर का आशिक समझोगे, मैं न समझती थी. मेरे खुदा, यह मुझे किस गुनाह की सजा मिल रही है, किस पाप का बदला दे रहा है तू?"

अब मैं सचमुच बेचैन हो रहा था. हादी वेगम का रुदन मन को चीरे जा रहा था. कोई रास्ता न मिला तो कंधों से पकड़ उन्हें ऊपर उठा कर मैं ने मुलायम और मीठे शब्दों में कहा, "माफ करो, हादी वेगम. मेरा कहा बुरा लगा हो तो माफ करो. आइंदा फिर कभी ऐसा न कहूंगा. वादा करता हूँ. जाफर भी आज ही छुट कर आ जाएगा, इतमीनान रखो."



हादी बेगम की कहानी सुन कर चंदर कुरसी से उठ और लड़खड़ाते कदमों से दरवाजे की ओर बढ़ते हुए आर्द्र स्वर में बोला, "जा रहा हूं मैं. जाफर आज ही आ जाएगा. इतमीनान रखिए."

लेकिन नहीं, हादी बेगम ने न तो मुझे क्षमा किया और न रोना बंद किया. अंतर की व्याकुल पीड़ा आंखों से बरबस ही बाहर निकल रही थी, मेरे रोकने से कैसे सकती वह?

आज सोच रहा हूं मैं ने कितना दुस्साहस किया था, कितना घोर पाप किया था हादी बेगम के इतने बहुत से आंसू ढुलकवा कर.

उस समय कमरे का वातावरण बहुत भीगा और कंपायमान कर देने वाला सिद्ध हो रहा था. मैं भावनाओं के विचित्र झूल में झूल रहा था. कभी उन लोगों से सहानुभूति होने लगती तो कभी उन की मूर्खता पर मन ही मन हंसने को जी चाहता. सोचता, कैसा नाटक कर रही हैं हादी बेगम, कैसे अभिनय से भरमाना चाहती है आयशा बेगम!

जिस तथ्य को सारे पुरबिया हाट ने माना और स्वीकार किया है, चाहती है उसी को झूठा समझ लूं. अंधा और बहरा बन कर उन के वाक्जाल की महिमा के कारण उस अधम किस्से को हमेशाहमेशा के लिए भुला दूं. पर नहीं, आयशा के विगत आकषण की भूलभुलैया में किस तरह मैं इतना सब भूल जाता और पाप और दुराचार के नारकीय किस्से को महज किस्सा स्वीकार करता न कि घिनावना सत्य?

और तभी हादी वेगम ने बलात मुझे कुरसी पर बैठा कर चुपकेचुपके, विलखते-सुबकते एक कहानी सुनाई. जो तनिक सहानुभूति, तनिक क्षोभ की मनःस्थिति में सुनता रहा.

इस कहानी के आरंभ में नवीनता नहीं थी. प्रायः वही तथ्य, वही शब्द, वही वयान जो आयशा की कहानी में होने संभव थे, अथवा महलसरा की अन्य वेगमों और यहां तक कि गुलवानू की कहानी में भी होने संभव थे. हां, कहने वाले के भाव और विचारों की शृंखला नई हो सकती थी, ध्येय और कथानक के विषय नहीं. कहीं आयशा जैसी लड़की अपने पिता के लोभ का शिकार बन कर महलसरा की ऊंची दीवारों में कैदी बनती है तो कहीं हादी वेगम का रूप और उस की दुराचारी प्रवृत्ति मांवाप के लिए बड़े सरकार तक पहुंचने का मार्ग खोल देती है.

हादी वेगम का घर अच्छा था, मांवाप अच्छे थे, खानदान भी अच्छा था. लेकिन वह आजादी अच्छी न थी जिस में हादी वेगम का पालनपोषण हुआ था. रंग-बिरंगा बचपन अभी जवानी की चौखट खटखटा भी न पाया था कि आजाद खयाल और चंचल हादी वेगम की प्रकृति मन ही मन उर्दंड होने लगी. यौवन आया, मानो एक मीठी और सुखद निद्रा ने हादी वेगम की आंखों को नशे की खुमारी में युगयुग के लिए बंद कर दिया. एक पड़ोसी नौजवान के साथ कब दिखावटी इश्क

हुआ, कब गुलछरें उड़े और कब धोखे की पहली कैसक से कुछ पलों के लिए विमूढ़ता उत्पन्न हुई, कुछ पता ही न चला. उन की नींद तो उस दिन समाप्त हुई, जिस दिन किसी का पाप समूचा उन के पेट में अंगड़ाइयां भरने लगा. तब वह समझीं कि वह सो रही थीं, स्वाभाविक नींद में नहीं, जवानी के अंधे नशे में सो रही थीं, और इस सोने ही सोने में उन की बरबादी का अध्यात्म आरंभ हो चुका था.

यह बात महल्ले में फैल सकती थी, उस के साथ ही बड़े सरकार के पास तक जा सकती थी, हादी वेगम के मांवाप सोचते हुए सिहरते रहे. कारण था बड़े सरकार का वह निगंय, जो पिछले ही दिनों एक दावत की शिरकत के समय बड़े सरकार हादी वेगम को देखने के बाद दे चुके थे. अर्थात्, यदि यह सचाई प्रकट हो गई होती तो निस्संदेह हादी वेगम का विवाह बड़े सरकार से हो सकता असंभव हो जाता.

हां, हादी वेगम बड़े सरकार की अनगिनत वेगमों में अपने शामिल किए जाने पर एतराज करती रही थीं, लेकिन इस नई परिस्थिति में निर्वाक रहने पर विवश हो गई थीं.

आखिर मांवाप ने उस पाप का निराकरण करने का उपाय सोचा. हादी वेगम को दिल्ली एक रिश्तेदारी में भेजा गया. एक विश्वस्त दाई की सारफत प्रसन्न और वाद में नवजात शिशु की हत्या का प्रबंध कराया गया. हादी वेगम देखती रहीं, सुनती और परेशान होती रहीं.

आखिर प्रसव हुआ. एक नन्हे से सुंदर शिशु ने हादी वेगम के मातृत्व को चुनौती दी. हादी वेगम ने अपने तमाम जेवर दाई के पल्ले में बांध कर उस बच्चे की जिंदगी की भीख मांगी. दाई मान गई. लोगों ने समझा कि बच्चा दाई की कठोर उंगलियों का शिकार हुआ. दस्तुतः दाई उसे अपने बेटे की तरह पालने लगी.

फिर हादी वेगम पुरबिया हाट आई.

हैं सरकार के साथ विवाह की सहज हो
कर हुई.

विवाह हुआ और वह महलसरा
के कंद हो गई. अब अपने अवैध बच्चे की
परवरिश के लिए वह बहुत कुछ दिल्ली
जान सकती थीं, भेजती रहीं और बच्चा
बड़ा होता रहा.

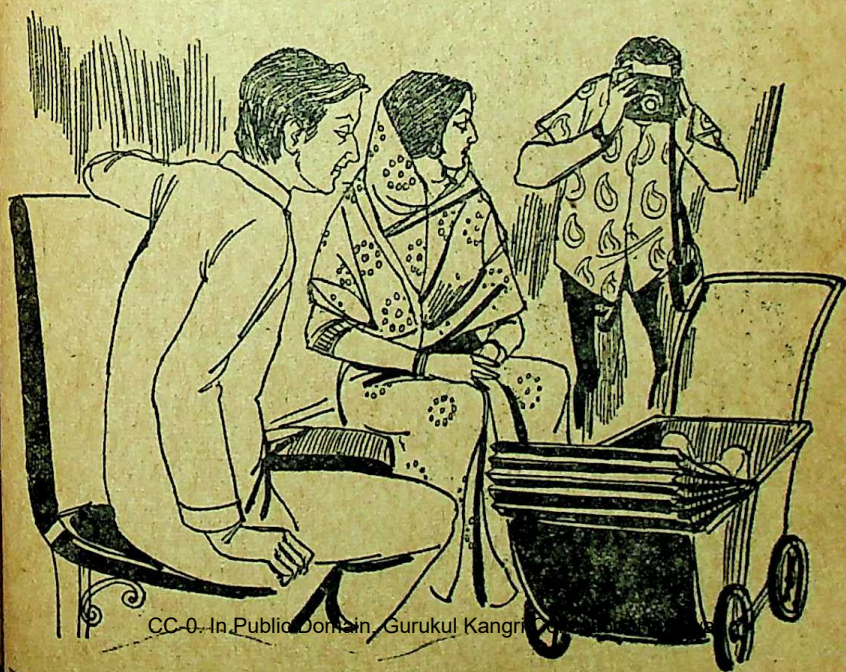
कहानी का अंत बयान करते वक्त
एक हादी वेगम का आंचल पूरी तरह
सोना हुआ था. वह कातरता से कह रही
थी, "न किसी को बता सकती थी न किती
पर यकीन कर सकती थी, चंदर. एक
दर्द था जो मेरा अपना, और सिर्फ अकेले
मेरा अपना दर्द था. मैं उसे तरहतरह से
नकारती, मनाती और सजाती थी.
समता के डोरों से ही इस दर्द ने मेरे जीवन
को नई दिशा में भटकाया था, चंदर.
मर जाना चाहती थी लेकिन भीतर बैठी
मैंने न मना किया, रोका, और मैं न मर
सकी. लेकिन सच कहती हूँ कि महलसरा
ने हरदम हसनेखिलखिलाने और थिरकने

वाली हादी वेगम बहुत पहल मर चुकी
थी. मुरदा थी मुरदा. उस की हंसीखुशी
बनावट थी, धोखा और फरेब थी. मन
में सागर जैसा अथाह दुख समाया हुआ
था. फिर भला महलसरा को रंगीनियों
में अपनेआप को भरमाती भी तो कैसे?
उफ! चौदह साल मैं ने कैसे काटे, बयान
नहीं कर सकती मैं. आखिर वह दिन
आया जब दाई खाला ने मुझे मेरा पला-
पलाया बेटा ला कर दिया. मेरी जिंदगी
मुझे सौंपी, मेरी हंसीखुशी, मेरा थिरकना-
नाचना, मेरा छेड़नामनाना, सब मुझे
लौटा दिया."

मैं सुनतेसुनते किसी अज्ञात, अपरि-
चित, मगर शंकित करने वाले कटु
विचार की विभीषिका पर कांप सा गया.
आहिस्ता से पूछने लगा, "अब कहां है
आप का वह बच्चा? कहां रख छोड़ा है
आप ने उसे?"

और वह सिर उठाए भावविह्वल
स्वर में बताने लगीं, "अरे, यही जाकर खां

पार्क में चंदर और नईसा एक बेंच पर बैठे थे, तभी एक फोटोग्राफर ने वहां आ कर
उन से इजाजत मांगी और बच्चागाड़ी में लेटे फिरोज का फोटो खींचने लगा.



तो है. यही तो है मेरा आशिक, मेरा बेटा जाफर खां. यही तो है मेरी बदकारी और आवारगी का जीताजागता सुवूत."

मैं सुन कर अवाक खड़ा रहा. कांपने लगा. मन पर बोझ सा पड़ने लगा. हादी बेगम की आंखों में झांकने का साहस न हुआ जहां स्निग्ध मातृत्व का दुलार हिलोरें ले रहा था.

वह अपनी बात कहने लगी, "लेकिन तुम जानना चाहोगे, चंदर, कि मैं ने इतनी गंदी तोहमतें जानबूझ कर क्यों मंजूर कीं आह! ठीक है यह सवाल तुम्हारा. लेकिन जवाब भी सुन लो मेरा. बड़े सरकार ने अपने आंचल में मुंह डाल कर देखा होता तो ऐसेऐसे न जाने कितने गुनाहों की काली तसवीरें फैली दिखाई देतीं उन्हें, लेकिन मैं जानती थी कि मेरी जवानी की छोटी सी यह भूल भी उन्हें गंवारा न होगी. कहो, सच है न? वस, तभी मैं ने जाफर को 'रेनबो' में रखने के लिए उसे अपना आशिक तसलीम करना बेहतर समझा. हाय खुदा, बद-नसीबी ने मुझे पत्थरदिल बना दिया था. मेरा अपना बेटा ही मेरा आशिक. कानों में जलता हुआ सीसा डालते रहे लोग और मैं खामोशी से वरदाशत करती रही. बेचारा जाफर, वह भी अपनी बदकार मां की तरह जमाने की तोहमतों का शिकार बना, मगर चुप रहा. कौन सोच सकता है कि कहानी की गहराई में एक बदनूमा सचाई छिपीडंकी है, जिसे हादी बेगम कभी जाहिर नहीं कर सकती थी, तसलीम कर के अपनेआप को कांटों में नहीं घसीट सकती थी."

हादी बेगम ने कहानी इस के बाद खत्म की.

वह चुप हो रहीं लेकिन मैं...? मैं तो मानो सांप के काटे के नशे में कहीं खोया हुआ था. आयशा बेगम अब मेरी तरफ देख रही थी और शायद मन ही मन कुछ तोल भी रही थी.

मैं कुरसी से उठा और लड़खड़ाते कदमों से दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए

आर्द्र स्वर में बोला, "जा रहा हूं मैं, जाफर आज ही आ जाएगा. इतमीनान रखिए" फिर दरवाजे के पास तक आतेआते मेरे कदम किसी अनजानी प्रेरणावश आप से आप लौटे और मैं हादी बेगम के विलकुल सामने पहुंच सहसा ही उन के चरणों की धूल माथे से लगाता अवतल कंठ से बोला, "मुआफ़ी के काबिल तो नहीं, लेकिन हो सके तो माफ़ कर दीजिएगा, मां. मुझ से बहुत बड़ा अपराध हुआ. बड़ा दुख दिया आप को. बड़ा अधम हूं मैं." हादी बेगम चुप रहीं सुन कर. आयशा की आंखों में जैसे दिव्य सी चमक उत्पन्न हुई. मैं वापस दरवाजे पर जा कर रुकते हुए आगे बोला, "मैं आज ही रुपया भी भेजूंगा, हादी बेगम. आप को अपने बेटे की कसम, जा कर भुवाली में पूरा इलाज कराइएगा. अगर ऐसा न हुआ तो आप का यह अधम बेटा सारे जीवन अपनेआप को क्षमा न कर सकेगा." और वहां से चला आया.

नवाब हुजूर से कह कर मैं ने उसी दिन जाफर को रिहाई दिलाने का प्रबंध किया. उसे जेल से लेने भी मैं खुद ही गया. जब वह बाहर आया, मैं दौड़ कर उस के गले से ऐसे लिपट गया जैसे युगों का बिछड़ा मेरा अपना ही भाई हो.

जाफर मेरी मनोगति भला क्या जानता, हैरानी से घूरता रहा और फिर चुपचाप चकितावस्था में मिरजा पुरखे चला गया.

अंत में वह दिन आ पहुंचा जब भारत के क्षितिज पर स्वतंत्रता का रक्तिम सूर्य अपनी निराली आभा लिए चमक उठा.

बंटवारा हुआ, एक देश दो टुकड़ों में विभक्त हुआ, खून की नदियां बहीं, अपहरण और बलात्कार के दयनीय किस्सों की बाढ़ सी आई, उल्लास मनाया गया, दिवालियां सजाई गईं, चारों ओर गुलामी की जंजीरें तोड़ फेंकने का निरुत्साह उभर आया, उग्र नदी की धारा की तरह कणकण में समाने लगा.

पुरविया हाट भी खोला गया, रोजनी से दुलहन जैसा बनाया गया, मिठाइयां बांटी गईं, इनामोइकराम का बोर रहा चारों ओर. शेष भारत के हर्ष के साथ ही हर्ष दर्शाया गया.

लेकिन नवाब हुजूर की मौन आंखों में किसी अज्ञात दुख की पीड़ा के दर्शन भी इसी हर्ष की भावना के साथसाथ होने लगे.

असलम, गुलवान् और नवाब हुजूर की एकांत मजलिसों में हमारी जानकारी के बाहर किसी गुप्त चर्चा पर तर्कवितर्क होता रहा.

एक दिन मालूम हुआ कि नए भारत के निर्माताओं ने इन रियासतों के बारे में अपनी नीति स्पष्ट करते हुए विलीनीकरण की मांग आरंभ की है.

बहुत पहले जो भय उत्पन्न हुआ था, और जिस के बारे में मैं, असद मियां व चीफ साहब बातें करते सोच में डूब डूब जाते थे, अब साकार हमारी आंखों के सामने खड़ा था.

असलम ने संकीर्ण मनोवृत्ति का परिचय दे कर नवाब को समझाना शुरू किया, "यह मुक्त हिंदुओं का होगा, हुजूर. हम लोग गरीब मुसलमान पिस कर रह जाएंगे. इस से तो बेहतर है कि पाकिस्तान में मिल जाने का एलान किया जाए."

नवाब मुखं न थे इसलिए असलम को डपटते, "पागल मत बनो. हिंदुस्तान हिंदूमुसलमान दोनों का है. हम अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी नहीं मार सकते.

हमारी जगुराफियाई हालत पाकिस्तान के बारे में सोचने तक की इजाजत नहीं देती. हम सब से पहले हिंदुस्तान में शामिल हो जाने और अपनी रियासत छोड़ देने का एलान करेंगे."

असलम ने चुटीले सांप की तरह उत्तर में कहा, "आप का फैसला आप की रियाया न माने तब क्या होगा?"

नवाब बोले, "वह तुम्हारी तरह गधी नहीं है, असलम. जाओ, अपना काम करो जा कर."

नवाब के निर्णय से हम लोगों की खुशी का ठिकाना न था. असलम से पहली बार उन्होंने विरोध प्रकट किया था. गुलवान् ने भी निश्चय ही समझाया होगा लेकिन नवाब किसी कीमत पर मानने को तैयार न हुए.

विलीनीकरण एग्रीमेंट तैयार किया जाने लगा. सरदार पटेल के साथ सलाह करने नवाब साहब अपने चीफ के साथ कई बार दिल्ली गए. असलम देखता रहा और मन ही मन घुटता रहा. अब अचानक ही नवाब साहब असद मियां और मेरे ज्यादा करीब आ चुके थे.

समझौता हो गया. पुरविया हाट की नवाबी हमेशा के लिए खत्म कर दी गई. नवाब हुजूर के तमाम अधिकार सरकार ने अपने हाथ में ले लिए. तमाम चल और अचल संपत्ति के टुकड़े किए गए. और अचल संपत्ति तो थी ही 'रेनवो' की लेकिन अचल में से किला, चंद कोठियां, सैरगाह, व अन्य कुछ इमारतें नवाबी से ले कर

तेरी तलाश की मंजिल

ये कामे किस का है अहले चमन कहो तो सही,
चमन में मुझ को मेरा आशियां नहीं मिलता.
तेरी तलाश की मंजिल अभी है दूर ऐ दोस्त,
अभी तो खुद मुझे अपना निशां नहीं मिलता.
—जगन्नाथ 'आजाद'

सरकार में दाखिल की गई. पैलेस, पैलेस का फैला हुआ इलाका, कुछ अरबों कोठियां, बाग और नवाब हुजूर का फार्म नवाब साहब की मिल्कीयत तस्तीम कर ली गई.

तभी पुरबिया हाट में वह घटना— नहीं, उसे दुर्घटना ही कहना अधिक श्रेयस्कर होगा, घटी, जिस से रैनवों की रंगीन आभा का एक सुदृढ़ प्रकाशपुंज हमारे पास से हमेशा के लिए चला गया.

असलम अपनी कुटिलता से बाज कैसे आ सकता था, असद मियां नवाब के नजदीक जा पहुंचे थे, कैसे देख सकता था? मन के लोभी को भविष्य ग्रंधकार-पूर्ण और सूनासूना लग रहा तो प्रतिकार की भावना ने उसे और अधिक हीन व छोटा बना डाला. पुरबिया हाट को ही समूचे निगल लेने की योजना बनाई उस ने. उधर विलीनीकरण के लिए समझौता हो रहा था और इधर असलम ने बेवकूफ पठानों, मुगलों, शिआओं, सुन्नियों को पाकिस्तान की खूब-

सूरती का पाठ पढ़ाना शुरू किया. अंधी प्रेम! जब तो असलम के स्वार्थ से कहा परिचित थी

नवाब के खिलाफ जनता में रोष उमड़ा. चारों तरफ हलकीहलकी आग जागृत हुई. किसीकिसी दुस्साहसी ने दवेदवे अपना मतव्य भी नवाब तक स्पष्ट किया आ कर. लेकिन भला यह व्यावहारिक कहाँ था. बस, असलम की धुआंधार तकरीरों की बाढ़ आने लगी. गुलवान तक अपने भाई के आचरण से क्षुब्ध होने लगी. आखिर तो वह नवाब की अर्धांगिनी थी. उस ने असलम को पागलपन से रोका. लेकिन असलम तो मानो 'रैनवों' को विनष्ट करने की सौगंध खा चुका था, पुरबिया हाट को मिटा डालना चाहता था. शायद नवाबी की समाप्ति के साथ उस की झोलियों में हराम का माल पहुंचने की तमाम आशाएं निर्मूल हो जाने के कारण वह उतावला, निर्लज्ज, क्रूर, अदूरदर्शी और शायद विक्षिप्त हो गया था.

स्ट्रिपटीज नृत्य

स्ट्रिपटीज नृत्य का नाम आप ने बहुत सुना होगा. स्ट्रिपटीज का शाब्दिक अर्थ है एकएक कर कपड़े उतारना. पर असल में इस में होता यह है कि एक नृत्यांगना नृत्य करते हुए लोगों की यौन भावनाओं को उत्तेजित करने के उद्देश्य से एकएक कर कपड़े उतारती है.

सहारा रेगिस्तान की सीमा पर स्थित राइडीग्रोरो नामक प्रदेश के स्ट्रिपटीज नृत्य की तुलना में संसार के सभी बड़ेबड़े नाइटक्लबों और नाचघरों के स्ट्रिपटीज नृत्य फीके हैं.

इस प्रदेश में काफी गरीबी है, लेकिन यहां के लोग काफी रंगीनमिजाज हैं. जिस वर्ष थोड़ी सी भी अच्छी कमाई हो जाती है, लोग उत्सव का आयोजन करते हैं. उत्सव क्या होता है, पूरा कामदेव का भरापूरा दरबार होता है.

कुछ युवक और युवतियां एकदूसरे के समक्ष पंक्तिबद्ध खड़े हो जाते हैं. फिर एक युवक अपने हाथ में भेंट ले कर नाचता हुआ निकलता है और उसे बीच में रख देता है. जिस युवती को वह युवक पसंद होता है, वह नाचती हुई बाहर आती है. उस को भेंट को ले कर चली जाती है. जब सब युवकयुवतियों के जोड़े बन जाते हैं तो सामूहिक रूप से एकदूसरे के भोग का कार्यक्रम चलता है.

बार बगावत की आग नजर आई. लोगों ने असलम के झंडे के नीचे अचानक ही विद्रोह करने की घोषणा की. हां, असलम छिपाछिपा, चुपचाप यह सब कर रहा था.

और फिर दंगे आरंभ हुए. लोग सरकारी आदमियों के खून के प्यासे नजर आने लगे पुरबिया हाट में मानो शिव का तांडव शुरू हुआ. इमारतें धूँ जलाई गईं, बड़े सरकारी अफसरों की हत्या की जाने लगी, चारों ओर असंतोष और क्रोध व्यापने लगा. नवाब दिल्ली दौड़े गए, मदद लाए और रियासत भर में मार्शल ला लगा दिया गया. इधर इन दंगों के विश्व भी एक पक्ष असद मियां के अधीन नवाब के साथ मौजूद था. असद मियां ने जैसे ही असलम की गुप्त कूटनीति का आभास पाया, वह खुल कर मैदान में उतरे. अब एक तरफ असलम अपना विपप्रचार कर रहा था तो दूसरी ओर असद मियां लोगों से शांत रहने की अपील कर रहे थे.

असलम इस कांटे से विक्षुब्ध था. आठ दिन तक पुरबिया हाट के दंगों में प्रति पल इसे निकाल फेंकने की प्रतीक्षा करता रहा.

और आखिर एक दिन उस के गुंडों को अवसर हाथ आ ही गया. असद मियां चौक में खुलेआम लोगों के पागलपन पर उद्देग भरी टीका कर रहे थे कि अचानक कहीं से फायर हुआ और असद मियां का सीना चाक हो गया.

नवाब हुजूर तब बाहर दिल्ली में थे. मुझे समाचार मिला तो हफीज मियां को ले कर पागलों की तरह अस्पताल दौड़ा.

वह अंतिम सांस ले रहे थे. उन की आँखों में चमक थी. असलम से हारने की, शायद अपनी इच्छा पूरी होते देख प्रसन्न थे. जर्मनी से लौटते हुए भी उन के मन में पुरबिया हाट की सेवा

में प्राण न्याछावर करने का कामना थी. आज असलम के कारण वही दिन आ पहुँचा था.

हफीज मियां को अपने खूनसने सीने पर चिपकाते हुए उन्होंने हलकी आवाज में कहा, "बेटे, अब जमाना वहीं आ पहुँचा, जिस के लिए कब से इंतजार कर रहे थे. बड़े सरकार चले गए, नए नवाब भी चले जाएंगे. लेकिन रियासत पुरबिया हाट की कहानी हमेशा एक जैसी, पुरानी, बदरंग नहीं रहेगी. पुरबिया हाट की नवाबी तो अब चली गई. महज उस का खोखला ढाँचा खड़ा है. किसी दिन तुम्हारा भी हक होगा इस ढाँचे पर. मगर याद रखना, नवाबी की झूठी शान कदमों को बहका सकती है, संभाल नहीं सकती. एग्रीमेंट की शर्त के मुताबिक किसी दिन तुम्हें पुरबिया हाट का नवाब तसलीम किया जाए, तो इसानियत को मत भूल जाना, हफीज. मेहनत करना और मेहनत की कद्र करना अपना फर्ज समझना. अब तक बहने वाले ऐयाशियों के दरिया की खानी हमेशा के लिए बंद करना."

हफीज मियां अपने चचा की जुदाई में घंटों सिसकते रहे.

चीफ साहब को अपने पास बुला कर असद मियां बोले, "मेरे अजीज दोस्त, जाने से पहले तुम्हारे सिर एक जिम्मेदारी सौंप रहा हूँ. हफीज का खयाल रखना. इस की परवरिश उसी फिजा में हुई है जिस में बड़े और छोटे सरकार की हुई थी. इसलिए डर रहा हूँ कि कहीं आगे चल कर इस के कदम बहक न जाएं. हमारी बदकिस्मती है यह कि ऐसा खौफ जाग रहा है. तुम इसे संभालना, सक्सेना."

मुझे अपने पास बैठा कर उन्होंने बहुत कुछ अजीब और अनचाहा सा कहा, "कभीकभी तो अफसोस होता था कि मैं किसी किसान के यहां पैदा न हो कर इस आला खानदान में क्यों पैदा हुआ, जहां मुफ्त सोने के निवाले बंटते थे, और मेहनत, खानदानी हलक और मरतबे की दुश्मन मानी जाती थी. चंदपरकाश,

कौन जाने जरमती में पड़ी, जानीसमझी मेरी तालीम पुरबिया हाट को क्या नई सौगात देती, लेकिन नवाबी की झूठी शान के दावरे में ऐसा मुमकिन न हो सका। खुदा न करे किसी की हसरतों पर ऐसा पानी फिरे। अब जा रहा हूं जाने से पहले तुम्हें आगाह करना चाहता हूं कि असलम के खूनी पंजों से पुरबिया हाट की इज्जत मटियामेट होने से बचाना। वह खूंखार दरिदा है, चंदर, जिसे अंगरेजों की दोस्ती हिंदुस्तान की आजादी से कहीं ज्यादा अजीज है। वह अपनी जलन मिटा रहा है। अपने आने वाले दिनों की बद-किस्मती पर गुस्सा उतार रहा है। हो सके तो उसे मनाना और समझाना। हम हिंदुस्तान में पैदा हुए हैं। हिंदुस्तान हम सब का है। हिंदुस्तान को नफरत की निगाह से देखने वाला यहां ज्यादा दिन जिंदा नहीं रह सकता।”

उन्होंने एक और राज की बात कही जिस के बारे में मैं बिलकुल ही न जानता था, “नईमा पुरबिया हाट में ही मौजूद है, चंदर। उसे समझाना, भाई। वह मां बनने वाली है। उस के सदमे में हाथ बंटाना। उसे मैं तुम्हारे सुपुर्द कर रहा हूं। कहीं ऐसा न हो कि पुरबिया हाट के लोग, या ‘रेनबो’ का खोखला प्यार उसे फिर उसी जिंदगी में वापस धकेल दे जहां से मैं खींच कर बाहर लाया था। वह एक नेक

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास हमारे हाथ में एक अमोघ शस्त्र है। किसी भी बात से मन में दुर्बलता आने लगे तो पहले उस बात का त्याग करना चाहिए, नहीं तो दिनदिन तुम्हारा मानसिक बल कम होता जाएगा और आखिर मुस्तकिल तौर से नाश आएगा।

—विवेकानंद

लड़की है, चंदर, प्यार करने के काबिल है। उस के आराम का खयाल करना, उस पर जुल्म मत होने देना, उस की आंखों में आंसू न आने देना, मेरे दोस्त।”

और उन की सांसों का खेल हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हुआ।

हफीज मियां की दहाड़ों से अस्पताल का अहाता बिलखने लगा, ‘रेनबो’ में समाचार पहुंचा तो बहूबेगम पछाड़ खाने लगीं।

नवाब हुजूर जल्दीजल्दी पुरबिया हाट वापस लौटे और तमाम घटनाएं सुन कर अपने प्रतिस्पर्धी भाई के लिए आंसू बहाने लगे।

गुलबानू की गरदन शर्म से झुकी हुई चुपचाप अपने भाई की नग्नता पर आंसू बहाती रही।

असद मियां के बलिदान से लोगों का रोष शांत हुआ। पागलपन को थाह मिली। एकदो दिन में चारों ओर सन्नाटा छा गया। असलम मियां न जाने कब चुपचाप ‘रेनबो’ से—पुरबिया हाट से भाग निकले।

उस जनाजे की शान क्या कहूं वह एक शहीद का जनाजा था। सैकड़ों हजारों लोग अपने किए का परिणाम देख रहे थे और रो रहे थे। बाजारों की बुजियां उस नेकी के फरिश्ते पर फूल बरसा रही थीं। आकाश में उड़ते हुए पक्षी भी रुक जाते और मानो श्रद्धा से सिर झुका लेते।

फुरसत होते ही मैं ने मलिक की बजरिया नामक महल्ले में एक मकान पर दस्तक दी, जहां नईमाबानू को मूर्छित पाया। असमय में ही उसे प्रसव हुआ। नन्हा शिशु उस के बराबर पड़ा। पड़ोस की औरतें, जो नईमा और सद के रिश्ते के बारे में अब तक अपरिचित थीं, सेवा में लगी थीं और नईमा की हालत पर तरस खा रही थीं।

मैं ने तुरंत अस्पताल से डाक्टर और नर्सों की भीड़ इकट्ठी की वहां पागल सा ही उठा और नईमा को बचाने

के लिए. मेरा श्रम सफल हुआ. तीन दिन बाद ही नईमा खतरे से बाहर निकल आई.

मुझे पहचानते ही उस की रुलाई फूट आई. अने मौन की अपरिचित भाषा में वह न जाने क्या कुछ मुझ से कहती रही.

मैं ने भरे गले से समझाने की कोशिश की, "ज्यादा परेशान मत होइए, नईमा-वानू, भगवान को यही स्वीकार था. आप के पास असद मिथां की निशानी है, उसे संभालिए, उस की परवरिश कीजिए."

वह बेचारी कोई उत्तर न दे सकी.

समय व्यतीत होने के बाद जब नईमा विस्तर से पूर्णरूपेण स्वस्थ हो कर उठी तो मेरा वहां आनाजाना चिंता का विषय बनने लगा. महल्ले वाले खुसरपुरसर कर रहे थे. मैं खुद जैसे अपनेआप से डरने लगा था. नईमा को असद मेरे हाथों सौंप गए थे. नईमा अब भी कमल की कली की तरह सुंदर थी.

मैं ने कालांतर में नवाब हुजूर को सब कुछ बताया और नईमा को बहू-बेगम के पास ला रखने की अनुमति चाही.

उन्होंने एक बार भी आपत्ति न की, नईमा से शादी होने के तथ्य पर आश्चर्य जाहिर न किया और अनुमति दे दी.

नईमा बी 'रेनबो' में आई तो मुझे अव्यक्त सी खुशी हुई.

दिन बीतने लगे. नन्हा पौधा फलने-फूलने लगा. नईमा भूतकाल की संचित सुखद स्मृतियों को वर्तमान के सलोने मीठे मातृत्व से घुलामिला कर कटुताओं के प्रति उदासीन होती हुई आखिर जीवन में रस लेने लगी. मैं ने उस रस को देखना, पसंद करना चाहा.

नईमा अनजाने ही कब मेरे निकट आने लगी, मैं नहीं जानता. शायद नईमा भी न जान पाती कि तु सहसा ही एक घटना से हम दोनों के बीच की परदा हट गया और हम एकदूसरे को नजदीक से पह-

नम्रता

अपनी नम्रता का घमंड करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है.

—मारफस औरेलियस

दुख और हानि सहने के बाद आदमी अधिक नम्र और ज्ञानी होता है.

—फ्रैंकलिन

जानते से देखने लगे.

सुखद घटना की याद मैं ने आज भी मन में ज्यों की त्यों संचय की हुई है. घटना से अधिक संयोग ही हो, सकता है, परंतु बहुत मीठा संयोग था बहुत ही वांछित और बहुत मनोहारी.

असद मिथां का नन्हा सा बेटा फिरोज पहले बीमार हुआ और फिर सूखने लगा. उस जमाने के जितने इलाज थे, सभी किए गए किंतु सूखने की बीमारी दिनोंदिन भयंकर होने लगी. नईमा बी को न जाने किस ने भरमा दिया कि यह दैवी आपत्ति है जिस का कोई इलाज नहीं होता और सिर्फ फकीरों, पीरों के गंडे-ताबीज ही काम आ सकते हैं. बहूबेगम तो शायद इसे मानती थी लेकिन नवाब हुजूर ने जिस दिन सुना, उसी दिन चीफ को भेज कर 'बी' ब्लाक में खबर करा दी कि 'रेनबो' में इस किस्म का कोई तमाशा न किया जाए. जहां तक मैं समझता हूं इस के पीछे भी गुलवानू बेगम का हाथ रहा था जो असलम के चले जाने से अकेली पड़ गई थी और असद मिथां की मौत के बाद भी उन से मन ही मन नफरत करती हुई नईमा से चिढ़ती थी, जिसे वह खुद किसी दिन अपनी बहन बना कर रेनबो लाई थी. निःसंदेह नईमा से चिढ़ने का कारण नईमा का अपना

व्यवहार था, जो अरुद के प्रति किया गया था।

मां का दिल ठहरा। नईमा का तो सहारा ही फिरोज था। नन्ही सी जान के बलवृत्ते पर अकेलेपन का जीवन व्यतीत कर रही थी। उस के छिन जाने की कल्पना से ही बेचारी बुझ सी गई। मन में एक ही धुन समाए रही कि किसी तरह पुराने मकबरे के बड़े पीर को दिखा कर बच्चे के लिए कोई ताबीज वगैरा ले आए।

मैं ने ये सब बातें किसी न किसी के मुख से सुनी थीं लेकिन नईमा से आमने-सामने इस बारे में बातचीत कभी न की थी। एक तो वह रहती थी 'बी' ब्लाक में जहां मेरा आनाजाना बहुत कम होता था और दूसरे नवाब हुजूर भी बीमार चल रहे थे, जिस के कारण अधिकतर समय 'ए' ब्लाक में उन की तीमारदारी में रहना पड़ता था। तभी एक दिन रात के समय नईमावान् बुरका ओढ़े अकेली मेरे क्वार्टर में चली आई।

जहां तक याद पड़ता है। बुरका उस ने ज्यों का त्यों पड़ा रहने दिया था और मुझ से अपनी विपदा कह सुनाई थी। फिरोज के लिए कुछ भी करना चाहती थी वह।

मैं ने नवाब हुजूर का समर्थन करते हुए उन्हें समझाना चाहा था, "आप बेकार घबरा रही हैं, नईमा बी. फिरोज ठीक हो जाएंगे। पीरफकीर के गंडेताबीजों से कुछ नहीं होता, जो कुछ होता है हिक्मत या डाक्टरी इलाज से होता है। मैं

खिल गए गुल

हसरतों का सिलसिला कब खत्म होता है 'जलील', खिल गए जब गुल तो पैदा और कलियां हो गईं।

—जलील मानिकपुरी

नवाब हुजूर से कह कर किसी और अच्छे डाक्टर को बुलवा लूंगा।"

मगर वह न मानी। उस का मातृत्व किसी तरह राजी न हुआ। मन में जमा हुआ निश्चय आंसुओं के रूप में मेरे सामने बिलखता रहा। हार कर वचन देना पड़ा कि पुराने मकबरे के बड़े पीर से जा कर मिलूंगा और कोई ताबीज वगैरा ले कर आऊंगा।

बड़े पीर साहब से मिल कर लौटा तो बड़ी कठिनाई में फंस गया। नईमावान् भी उस कठिनाई से विमुख न रह सकी। पीर साहब ने इलाज करना तो स्वीकार किया लेकिन तरीका इतना मुश्किल था कि हमारे लिए किसी तरह संभव न हो सकता, अर्थात् पीर साहब बराबर दस दिन बच्चे को अपने अमल में रखना चाहते और चिल्लाखींच कर सेहतयाबी के लिए ताबीज देना मंजूर करते थे। आखिर नईमावान् ने मुझ से कोई रास्ता खोजने को कहा। मैं हैरान था। बहुत सोचविचार के बाद अंत में एक निर्णय कर सका। यदि नईमावान् किसी तरह बंबई या दिल्ली चलने की अनुमति ले सके तो वहां किसी स्थान पर उस के रहने का प्रबंध कर दूंगा, जहां वह पीर साहब का इलाज जारी रख सकेगी। मगर इस प्रस्ताव को व्यवहार में काफी कठिन पाया। आखिर हम दोनों को नए नवाब का भय भी था कि कहीं उन्हें ज्ञात न हो जाए। तब नईमा बी ने मुझ से कहा कि वह बह्वेगम की मदद से नवाब हुजूर से बंबई जाने की इजाजत तो ले ही लेगी, साथ चलने के लिए मुझे भी मांग लेगी। लेकिन इलाज यहां नहीं, बंबई में ही कहीं होना चाहिए। बड़े पीर को किसी कीमत पर भी साथ चलने के लिए राजी करना मेरा काम था।

मुझे लगा, बड़े पीर के इलाज से चाहें कुछ हो न हो, लेकिन बंबई पहुंच कर और अच्छे डाक्टरों की सहायता मिल पाना सरल होगा, अतः राजी हो गया। इधर मैं ने बड़े पीर को कई अच्छे-अच्छे प्रलोभनों और अनगिनत खूशामदों से राजी किया और उधर नईमावान् ने नवाब हुजूर

से बंबई जा कर कुछ दिन आवासीय वदलने की अनुमति प्राप्त की। आशुचर्य की बात थी कि नवाब हुजूर ने मुझे उन के साथ जाने की आज्ञा प्रदान की।

सब कुछ ठीक हो जाने के बाद एक दिन मैं, नईमावानू, हमारा एक दिव्यस्त नौकर खजानसिंह, फिरोज मियां और बड़े पीर बंबई के लिए रवाना हुए।

मैं तो पहले ही जानता था कि बड़े पीर से इलाज बगैरा हो सकना मुमकिन नहीं, इसलिए जैसेतैसे दस दिन उन के तलवे सहलाए और आखिर कुछ सौ नकदी दे कर पुरविया हाट लौटा दिया और समझा दिया कि इस के बावत वह भूल कर भी किसी को कहें नहीं। फिर मैं ने डाक्टरों से मिल कर फिरोज मियां की बिगड़ती हालत पर रायमशवरा किया।

आखिर हमें एक डाक्टर चंदानी के नसिंग होम का पता चला, जहां बाल रोगों का विशेष इलाज होता था। मेरे कहने पर नईमावानू फिरोज मियां को ले कर उस में दाखिल हुई।

हां, इस बीच एक खास स्थिति पैदा हो चुकी थी। नईमावानू ने मुझ से परदा नहीं किया था, जैसा उस रात 'रेनवो' में किया था और खुले मुंह सामने आती, बातचीत करती थी। साथ ही मेरी दौड़-भाग, मेहनत और फिरोज के लिए हादिक सहानुभूति देख प्रभावित भी हुई थी। कभीकभी तो महसूस होता था मेरे संबोधन पर उस का ध्यान ही न गया हो और वह दत्तचित्त मुझे बेतरह घूरते हुए किसी अनजानी कल्पना में आत्मविभोर सी हो।

बंबई आवास के बीस दिन बीत जाने पर नईमावानू को नसिंग होम में दाखिल किया था। इस के बाद अपने होटल में मेरा अधिकतर समय खाली बीतता था, इसलिए एक दिन अचानक ही बिल्कीस बेगम के बोर्ड एंड लाज की तरफ चला गया।

मैं ने देखा कि बिल्कीस की हालत चिंताजनक थी। साढ़े-जिम्मेदार थी।

बोर्ड एंड लाज का साइनबोर्ड आज भी उन की इमारत के बाहर लटका हुआ था, लेकिन वहां न पहले सी रौनक थी, न लड़कियां थीं और न ग्राहक ही थे। एक बूढ़ी नौकरानी व सिर्फ दो लड़कियों के साथ रह कर किसी तरह दिन काट रही थीं। यह भी पता चला कि हमारे चले जाने के बाद कई बार पुलिस ने उन के यहां छापा मारा व गिरफ्तारियां की थीं, जिस से 'लाज' की बदनामी हो गई। अब वह अपनी बचीवचाई पूंजी के सहारे किसी तरह गुजरबसर कर रही थीं। और इस में तो तनिक भी शक न था कि बिल्कीस की बूढ़ी नौकरानी एवं उस की दो अन्य लड़की सेविकाएं बिल्कीस की भयानक बीमारी में उन के पास आते भी धवराती थीं, जिस के कारण बेचारी बिल्कीस के कपड़े तक बदबू से भर जाते और बदले न जाते।

मुझे न जाने क्या हुआ कि बिना सोचेसमझे बिल्कीस बेगम के यहां जा पहुंचा और वहीं रह कर भरसक उन की सेवा करता रहा।

जहां तक स्मरण होता है, उस घड़ी मेरे दिल पर असद मियां के अंतिम शब्दों का प्रभाव रहा होगा जो उन्होंने इस अधम स्त्री की पाण्डित्य देखने के बाद भी हमदर्दी में कहे थे। न जाने क्यों, मृत्यु के साए में अपने कुकर्मा का दंड भोगने वाली बिल्कीस पर मुझे रहम आने लगा था और उस की सेवा कर के अपनेआप को कर्तव्य विमुक्त करने की बात सोचने

कह दो यह...

कह दो यह कोहकन से कि मरना नहीं कमाल।
भरभर के हिजोयार में जीना कमाल है।

—हफीज जौनपुरी

लगा था.

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

विल्कीस को मेरे बंबई आने का कारण और 'रेनबो' में होने वाली सभी तब्दीलियों का ज्ञान हो चुका था. अब कभीकभी, जब मैं उस की चादर बदल रहा होता, या उस के हाथमुंह धुलाने लगता, वह बड़ी कातरता से कहना आरंभ करती, "चंदर, मेरा सारा जिस्म ठीक 'रेनबो' की महलसरा की तरह सड़ चुका है. मौत करीब आ पहुंची है. मैं ने वह सब कुछ पा लिया जो मैं चाहती थी. रनिवासों, महलसरायों की नापाक मोहब्बत आखिर इतनी ही घिनावनी हो जाती है. लेकिन बखुदा तुम नईमा बी को इस हालत तक मत पहुंचा देना. मैं उसे बहुत दिनों से जानती हूं. वह जलती हुई शमा की तरह तिलतिल कर तबाह हो जाने की बड़ी शौकीन है. उस ने भी दुनिया का जुल्म बरदाश्त किया है. मेरे पास भी रही है वह. मैं ने अच्छी तरह देखा है कि उस की खौफनाक आंखों में जिस्म का सौदा करते हुए कितनी जबरदस्त आग हुआ करती थी. यही आग उसे मेरी नौकरी से बाहर निकाल ले गई. यही आग उसे असद मियां के नजदीक न आने से आगाह करती रही, यही आग अब उसे बेवा जिंदगी विताने पर तुली हुई है, और यही आग, खुदा ऐसा न करे, शायद 'रेनबो' में उस की तबाही का बायस हो. असद की मोहब्बत सीने से लगाए वह हमेशा अकेली रहने को मचलती रहेगी, लेकिन 'रेनबो' की खराब फिजा में उस के अरमान तुम या

तुम्हारे किसी दूसरे भाई के हाथों कुचल दिए जाएंगे. और तब उस की यह आग मेरी तरह ही बदले और बरबादी के रास्ते पर भागने लगेगी. वह दिन आने से पहले, चंदर, तुम अगर नईमा को पसंद करते हो तो उस से शादी कर डालो, मेरे दोस्त."

मैं चुपचाप सुनता रहता तो वह कहती, "मोहब्बत की मंजिल पर पहुंचने वाला आदमी न मजहब देखता है, न ऊंचनीच, न किसी की बुराइयां और न किसी की गरीबी. नईमा में तो ऐसा कोई ऐव नहीं है, चंदर. वह अभी भी जवान है. उस के फूल जैसे रूप को 'रेनबो' में तबाहोवरवाद करने के लिए मत छोड़ देना. मेरी बात हमेशा याद रखना कि बड़े सरकार न रहें, नए नवाब न रहें, रियासतें न रहें, नवाबी न रहे, लेकिन इन की फिजा में पलने वाले इन बड़े लोगों के मिजाज वही रहेगे, ऐयाशियों और बदकारियों का मयार वही रहेगा, और इन का फल भुगतने वाली मुझ जैसी अभागिनों की गिनती भी वही रहेगी. इसलिए कहती हूं कि अपने दोस्त असद को दिया अपना वादा पूरा करना चाहो तो नईमा के साथ शादी कर के उसे अपना लो. वह 'रेनबो' में रह कर हरजार्ड हो गई तो एक दिन आएगा जब उस का जिस्म भी मेरी तरह सड़ रहा होगा, बरवाद हो रहा होगा."

मैं ने विल्कीस के यहां पहुंच जाने की बात अभी भी नईमा को न बताई थी. मौका ही न मिला था इस का. रोज सुबहशाम नर्सिंग होम जाता, नईमा से

आत्मसम्मान

आत्मसम्मान पहला रूप है जिस में महानता प्रकट होती है.

—एमर्सन

आत्मसम्मान समस्त गुणों की आधारशिला है.

—सर जान हरशल

बंद बातें करता, वापस आ जाता और किसी खास प्रसंग पर न उसे का राय पूछता न अपनी बताता। सब से आवश्यक विषय फिरोज के स्वास्थ्य के बारे में था और अब वह धीरे-धीरे ठीक हो रहा था।

एक दिन आया जब फिरोज बहुत अच्छा था, इसलिए हम उसे गाड़ी में लिटा निकटवर्ती एक पार्क में चले गए।

उस दिन खूब घने बादल हो रहे थे। तेज धूप के बाद बादल का आना सुखद लग रहा था। हवा में ताजगी और ठंडक थी। हम दोनों एक बेंच पर बैठे हुए थे और फिरोज अपनी गाड़ी में लेटा-लेटा सो रहा था।

इसी समय न जाने कहां से एक फोटोग्राफर आ टपका और फिरोज को देखता हुआ मुझ से प्रार्थना करने लगा, "एक्स्क्यूज मी, अगर आप और आप की मिसेज को एतराज न हो तो मैं इस बच्चे का फोटो खींच लूं।"

नईमा सुनते ही तन गई। मैं ने उसे कुछ भी कहना उचित न समझ अनुमति प्रदान की। वह सोते हुए फिरोज का मासूम चेहरा कैमरे में भर आभार बिखेरता वहां से चला गया। फिर हम दोनों चुपचाप बेंच पर बैठे रहे।

मिस्टर और मिसेज वाले संबोधन को सुन कर मेरे दिल में एक तीव्र और उन्मादक भाव उदय तो हुआ किंतु नईमा से कहने का साहस न कर सकने से उसे वहां का तहां दबा गया।

नईमा क्या सोच रही थी, मैं नहीं जानता, किंतु कुछ देर बाद उसी ने सलाटा भंग किया :

"खुदा का करम हुआ तो फिरोज चंद रोज में विलकुल ठीक हो जाएंगे, मुझे नर्सिंग होम से डिस्चार्ज कर दिया जाएगा। आप होटल में ही रह रहे हैं न?"

"नहीं," मैं ने जैसे ही बिल्कीस बेगम के यहां रहने की बात कही, वह अचानक चौंकती हुई मुझे घूरने लगी, फिर आहिस्ता-आहिस्ता

हलके से बोली "तुम क्यों रह रहे हैं? शायद पुरानी जानपहचान है आप की?"

"हां," मैं ने उत्तर में तनिक सा मुसकराते कहा, "जब वह 'रेनबो' की बिल्कीस बेगम थीं तब से जानता हूं।" वह सुन कर चुप हो रही। मैं ने बात आगे बढ़ाई, "आप-को शायद यह अच्छा नहीं लगा, नईमा बी।"

"क्या?" उस ने पूछा।

"मैं बिल्कीस के चकलेखाने में क्यों-कर जा पहुंचा।"

"हूं, नहीं नहीं," वह स्कती हुई बोली, "मगर बिल्कीस अच्छी औरत नहीं है।"

"मैं भी यही समझता हूं," मैं ने कहा, "लेकिन होटल का खर्च....."

"खर्च का वहाना मत कीजिए, चंदर-परकाश साहब," वह तनिक विक्षुब्ध स्वर में बोली, "मैं वजह जानती हूं उस की।"

"क्या जानती हैं आप?"

"कुछ नहीं, चलिए," उस ने उठते हुए चलने का संकेत किया तो मैं ने उस का हाथ पकड़ लिया और प्रायः कांपते स्वर में पूछा, "क्या जानती हैं? कहो न।"

वह चुप रही। हाथ झटकती जैसे विवश मेरे सामने बैठे-बैठी धरती पर चप्पल की नोक से लकीरे खींचने लगीं।

मैं ने तीसरी बार अपना प्रश्न दोहराया तो वह बोली, "आप तो जानते हैं कि मैं इन सभी रास्तों पर भटक चुकी हूं, इसलिए किसी भले आदमी को वहां जा कर रहने की बात पर मन नहीं मानता। बस, इसी लिए कहा था।"

मैं हंस पड़ा और बोला, "औरों के लिए चाहे मन माने या न माने लेकिन मेरी आदरगि की बात सुन कर तुम्हें हैरानी हुई, यही न?"

वह बोली, "आप इस का कोई भी मतलब निकाल सकते हैं।"

मैं ने उत्साह प्रकट करते उत्तर दिया, "मतलब निकाल रहा हूं, नईमा, ठीक मतलब निकाल रहा हूं। शुक्र है कि मैं कब से

वह एकाएक अपने स्थान से उठ
 खड़ी हुई।

"आप होश में तो हैं न?"

"हां, पूरे होश में हूं, नईमा। अपने-
 आप को अब और धोखा नहीं दूंगा। तुम
 नहीं जानतीं कि कब से तुम्हें चाहने लगा
 हूं, असद मिथां की अमानत समझ कर
 तुम्हें...."

"उफ, खुदा, यह आप क्या कह रहे
 हैं?"

"कोई बहुत अजीब बात नहीं है,
 नईमा। अभी तुम ने देखा होगा कि वह
 तस्वीर खींचने वाला हमें मिथांबीबी
 तसलीम कर रहा था। क्या यह सच नहीं
 हो सकता, क्या मैं तुम्हें अपना नहीं
 सकता?"

वह धम्म से बेंच पर बैठ गई। उस के
 चेहरे पर हवाईयां उड़ रही थीं।
 आंखें जल रही थीं। शायद यह वही
 ताप था, जिस के बारे में बिल्कीस ने कहा
 था। कांपती हुई मुझ से बोली, "खुदा के
 लिए ऐसी बातें कर के मेरा दिल मत
 जलाइए। मैं किसी की बेवा हूं, मेरे पास
 किसी की धरोहर है, जिसे संभाल कर
 उस दिन तक रखना है जब तक वह बड़ा
 नहीं होता।"

"जानता हूं, नईमावान, लेकिन
 अपनी पूरी जिंदगी कांटों में घसीटती
 हुई कैसे बिता सकती हैं? अपनी तरफ
 देखो, नईमा, अपनी जवानी की तरफ
 देखो। किसी ने सच कहा है कि 'रेनबो'
 की गंदी फिजा में तुम्हारे रूप को कलंक
 लग सकता है। मैं तुम्हें उस गंदगी से
 बचाना चाहता हूं, अपनाना चाहता
 हूं, अपने दोस्त को दिए वादे से सुबकदोश
 होना चाहता हूं।"

"नहीं नहीं, चंदरपरकाश। ऐसी बातें
 मत कीजिए। एक गरीब, कमजोर और
 भटकती हुई लड़की अब अपने ठीकठिकाने
 पर पहुंच चुकी है, जहां से मंजिल करीब
 नजर आ रही है। उसे गुमराह मत

मैं ने आवेश में कहा, "मैं गुमराह
 नहीं कर रहा, नईमावान, रास्ता दिखा
 रहा हूं। वही रास्ता जो किसी दिन असद
 मिथां ने दिखाया था। अफसोस, वह
 तुम्हारी पाक मोहब्बत की सोहबत अधिक
 दिन नहीं उठा सके, लेकिन मरते वक्त
 उन्होंने तुम्हें मुझे सौंपा था। मैं तुम से प्यार
 करता हूं, नईमा।"

वह रोने लगी। उस के आंसू थमने
 में ही न आए। मैं ने महसूस किया कि
 आज मैं ने उस के मर्म को छू दिया है।
 जाने कब से वह मेरे बारे में कुछ सोचने
 बैठी थी। जाने कब से अपने वैधव्य की
 कटुता के कारण उस के होंठ सिले हुए
 थे। जाने कितने समय से उस के मन की
 जवान हिलोरों पर समाज का अंकुश
 लगा था। और आज मैं ने सब कुछ खोल
 दिया। सच ही था कि एक भटकी हुई
 बेजुवान और बरबाद लड़की की मंजिल
 'रेनबो' में चुपचाप बेवा की जिंदगी
 गुजारने तक ही सीमित थी। लेकिन नहीं,
 मैं उस मंजिल को कैसे मानता? नईमा
 की बड़ीबड़ी कजरारी आंखों में वैधव्य
 की सूनी साधना का अनुमान कैसे स्वीकार
 करता? बिल्कीस की हिदायतों में छिपे
 सत्य को कैसे झुठलाता? नईमा ने अभी
 जिंदगी का कितना कुछ देखा था,
 कितना कुछ समझा था। हां हां, कब से
 मन में इस की साध जोड़े बैठा था कि
 नईमा को फिर नए जीवन का दर्शन
 कराऊंगा। एक बार जो भूल आग्रश के
 साथ कर चुका था अब कभी नईमा के
 साथ न करूंगा। —क्रमशः

अगले अंक में :

बड़े नवाब साहब की मृत्यु के
 बाद 'रेनबो' की शानशौकत घटने
 लगी, लेकिन नए नवाब ने उसे
 कायम रखने के लिए क्या प्रयत्न
 लिए?

ऐसे क्यों बहके

ऐसे क्यों बहके
तुम आए न कह के,
आम्र वीर लोटे
गांवगली महके.

बहुत दिनों के बाद
आँखों के दरपन में
संध्या रंग जगे हैं,
बहुत दिनों बाद
प्रणय के गीत
इतने भले लगे हैं.

आँखों में काजल के
छपे बेलवूटे,
मुग्ध आज प्राण
स्वप्न आज दूर छूटे.

नैनों में बंधा जो नेह
किन्हीं और अँखियों का,
मन पापी ने छीना
चैन हृदय का.

आकर्षणहीन दिवस
बाँध नहीं पाते,
धारों की तरह टूट गए
वहीं सभी प्यार के नाते.

रक्तिम रेखाएं ये मन की
कल्पना के चित्र बनातीं,
प्रिय के आकर्षण की मीठी
सुधियां इंगित कर जातीं.

सेमल रंग डूबा
बाँधे मनसूबा,
झुके हवा के झोंके संग
फूलफूल डहके.

—भोलाराम शर्मा 'दुर्विजेय'

मैं क्या करूँ?



अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूँ? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

● मैं 22 वर्षीय युवती हूँ. आप को पहले भी लिखा था कि मुझे 'इलेक्ट्रोलाइसिस' इलाज का पता दीजिए. —मु., नई दिल्ली

क्लीनिक आदि के पते यहां प्रकाशित नहीं किए जाते. पता लिखा, टिकट लगा लिफाफा साथ भेजने पर पते दिए जा सकते हैं. आप दिल्ली में रहती हैं, टेली-फोन डायरेक्टरी से व्यूटी क्लीनिक के पते देखिए व फिर वहां से पूछताछ कीजिए.

● मैं शब्दों को ठीक बोल नहीं पाता. इसलिए न किसी से बात कर सकता हूँ, न कोई नौकरी मिलती है. इसी से पढ़ भी नहीं सका. एक व्यापारी के पास काम करता हूँ तो गूंगे की तरह रहता हूँ. इसलिए बहुत दुखी हूँ. आत्महत्या करने की मन करता है. कृपया जबान ठीक करने की कोई दवा बताइए. —रा. लो., नई दिल्ली

आप दिल्ली में रहते हैं. फीरोजशाह कोटला में 'लेडी नायर मूकबधिर स्कूल' में जा कर 'स्पीच थेरापी' का इलाज कराइए. कुछ समय के अभ्यास से आप ठीक हो सकेंगे.

● तीन बच्चों की 22 वर्षीय मां हूँ. आमदनी कम होने पर भी पति का शगव का खर्च अधिक है. मैं कम पढ़ी हूँ. नौकरी कर के बच्चे नहीं पाल सकती. मिडवाइफ या ग्रामसेविका का कोर्स कहाँ होता है? कृपया रास्ता सुझाएं. —प्र., गिदड़बाह

तीन बच्चों को छोड़ ट्रेनिंग लेना आप के लिए कठिन होगा. आप नौकरी का खयाल छोड़ कर घर में ही अपना कोई छोटा-मोटा उद्योग शुरू कीजिए. सिलाई, कढ़ाई, बुनाई करना और पापड़, बड़ियां, अचार आदि बना कर बेचना या ऐसा ही कुछ और काम समीप के किसी महिला केंद्र में कुछ दिन सीख कर वहीं से काम ला कर घर पर कर सकती हैं. बच्चों को ट्रेनिंग के दौरान पीहर में छोड़ सकें तो ग्रामसेविका या मिडवाइफ की ट्रेनिंग के लिए अपने राज्य के समाज कल्याण परामर्श बोर्ड और समुदाय विकास विभाग को लिखिए. पति की शराब छुड़वाने के लिए उन से झगड़ा न कर के जब वह अच्छे मूड में हों, तब समझाएं. नम्रता और प्यार से बात बनेगी, कलह से और भी बिगड़ सकती है. हो सकता है, घर का वातावरण ठीक मिलने पर वह स्वयं ही शराब छोड़ दें, या कम कर दें.

● इंटरमीडिएट का 21 वर्षीय छात्र हूँ. कुछ कारणवश विज्ञान नहीं ले सका, पर विज्ञान में रुचि है. मैं ने विद्युत संबंधी कुछ अनुसंधान किए हैं, जिन्हें आर्थिक कारणों से आगे नहीं बढ़ा सकता. विज्ञान का छात्र न होने से कोई संस्था भी अपनी प्रयोगशाला या आर्थिक सहायता देने के लिए तैयार नहीं. ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए? —चि. ल., बेहराइन

यदि आप की विज्ञान में गहरी रुचि है और इस क्षेत्र में कुछ उपयोगी कार्य करना चाहते हैं तो दो वर्ष की परवा न कर अब विज्ञान ले लीजिए. और विद्युत क्षेत्र में विशेष लाइन चुन अपने करतब दिखाइए. तब तक व्यक्तिगत स्तर पर अपना यह काम भी करते रह सकते हैं. इस अवधि के कार्य का लाभ भी आगे मिलेगा ही.

● मेरी शादी एक मध्यवर्ग परिवार में एक वर्ष पूर्व हुई थी। पत्नी मैट्रिक पास है। पर रोटी पकाने के अलावा न उसे और कोई काम आता है, न डाँसे बोलना ही। माताजी के ठीक न होने के कारण पिताजी सुबह उठ कर सफाई करते हैं, चाय बनाते हैं, पर पत्नी साढ़े आठ से पूर्व उठती नहीं। बाद में रोटी तो बनाती है, पर हम भाइयों को अकसर देर हो जाने के कारण बिना खाए काम पर जाना पड़ता है। पत्नी न स्वयं समझती है, न किसी की सुनती है। मजाक तक बरदाश्त न करने के कारण घर में सब से उस का बोलना बंद हो गया। मैं ने सेना की नौकरी में उसे अपने साथ अलग भी रख कर देखा। वह न कुछ सीखती है, न घर में आने वालों की इज्जत करती है। अपना परिवार मैं छोड़ नहीं सकता। साथ रखने में मैं भी तंग आ गया हूँ। उस के मायके वालों को कुछ बताओ तो वे उलटे मेरी बेइज्जती करते हैं। क्या करूँ? क्या उसे मायके भेज दूँ? बहुत दुखी हूँ।

—प्र. कु., नवां शहर
लगता है, आप की पत्नी का बचपन में पालनपोषण ढंग से नहीं हुआ। अब भी मायके की शह पर ही वह सहयोग नहीं करती। आप पहले उसे समझाइए कि उसे जिंदगी आप के साथ काटनी है, अपने मायके वालों के साथ नहीं। थोड़े दिन उस की ओर से लापरवाह हो कर या उस की उपेक्षा कर के भी देखिए। शायद इस मौन दंड से ठीक हो जाए। फिर भी असर न हो तो सजा के तौर पर कुछ समय के लिए उसे मायके छोड़ देना ही ठीक होगा। इस बीच आप एकदम मौन रहें। उसे उस के हाल पर ही छोड़ दें व ससुराल के किसी दबाव में न आएँ। कुछ समय बाद वह स्वयं ही महसूस करेगी व सुधरेगी। पर इस के लिए आप में दृढ़ता होनी चाहिए। किसी भी कमजोरी का प्रदर्शन उसे और बिगाड़ सकता है। आजमा कर देखिए।

● एक वर्ष पूर्व मेरी एक लड़की से मित्रता हुई। वह बारबार शादी की बात करती है और मैं मना कर देता हूँ। उस के हठ करने पर मैं ने सचसच बता दिया कि मैं शादी के काबिल नहीं हूँ। फिर भी वह पीछा नहीं छोड़ती। कहती है, सच्चे प्यार के लिए वह मेरी यह कमी स्वीकार कर लेगी। इस से मैं पसोपेश में पड़ गया हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?

—रा. ट., दिल्ली
हो सकता है, आप की यह नाकाबलियत आप का केवल वहम हो। वैसे भी वह समस्या शारीरिक कम, मानसिक ही अधिक होती है। आप किसी अच्छे डाक्टर से (नोम हकीम से नहीं) मिलिए व अपना इलाज कराइए। आप ठीक हो सकते हैं। तब तक लड़की को प्रतीक्षा करने के लिए कहिए। आप ने यह नहीं लिखा कि आप दोनों की उम्र क्या है। बालिग हैं कि नहीं? आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं या नहीं? विवाह में इन बातों का भी ध्यान रखना होगा। जल्दी में कोई निर्णय मत लीजिए।

● मैं 22 वर्षीय विज्ञान स्नातक हूँ। नौकरी लगने वाली है। मातापिता यदा-कदा घर में विवाह की बात करने लगे हैं, पर मैं बचपन में कुसंगति का शिकार हो चुकी बातों में फंसा हूँ। अजीब हीनभावना मन में आ गई है, दोस्तों तक से ठीक बात नहीं कर पाता। गाल पिचक गए हैं। स्वयं को अधूरा व टूटा सा अनुभव करता हूँ। इसलिए विवाह से भी कतराता हूँ। क्या करना चाहिए?

—क. ख. ग., बांसवाड़ा
आश्चर्य है कि विज्ञान स्नातक हो कर भी आप की यह हालत है। चिंता छोड़ कर सहज होने पर ही आप ठीक हो सकते हैं। गाल पिचकना भी चिंता के कारण ही है। यदि किसी यौन रोग से स्वयं को घिरा पाते हैं तो डाक्टर से चिकित्सा कराइए। केवल कमजोरी महसूस करते हैं तो वह भी मानसिक कारण से होती है। मन से अपराध भावना निकाल, हीनभाव से मुक्त हो आत्मविश्वास पैदा कर के देखिए। आप पाएंगे कि आप ठीक हैं। हाँ, ठीक होने के लिए इधर से ध्यान हटा कर हाबियों में, सामान्य अध्ययन व स्वस्थ मनोरंजन में व्यस्त रहना भी जरूरी है।

—नीरजा ●

मक्सी, मिनी स्कर्ट

व

मिनी फ्राक

फैशन की दुनिया में सब से आगे...





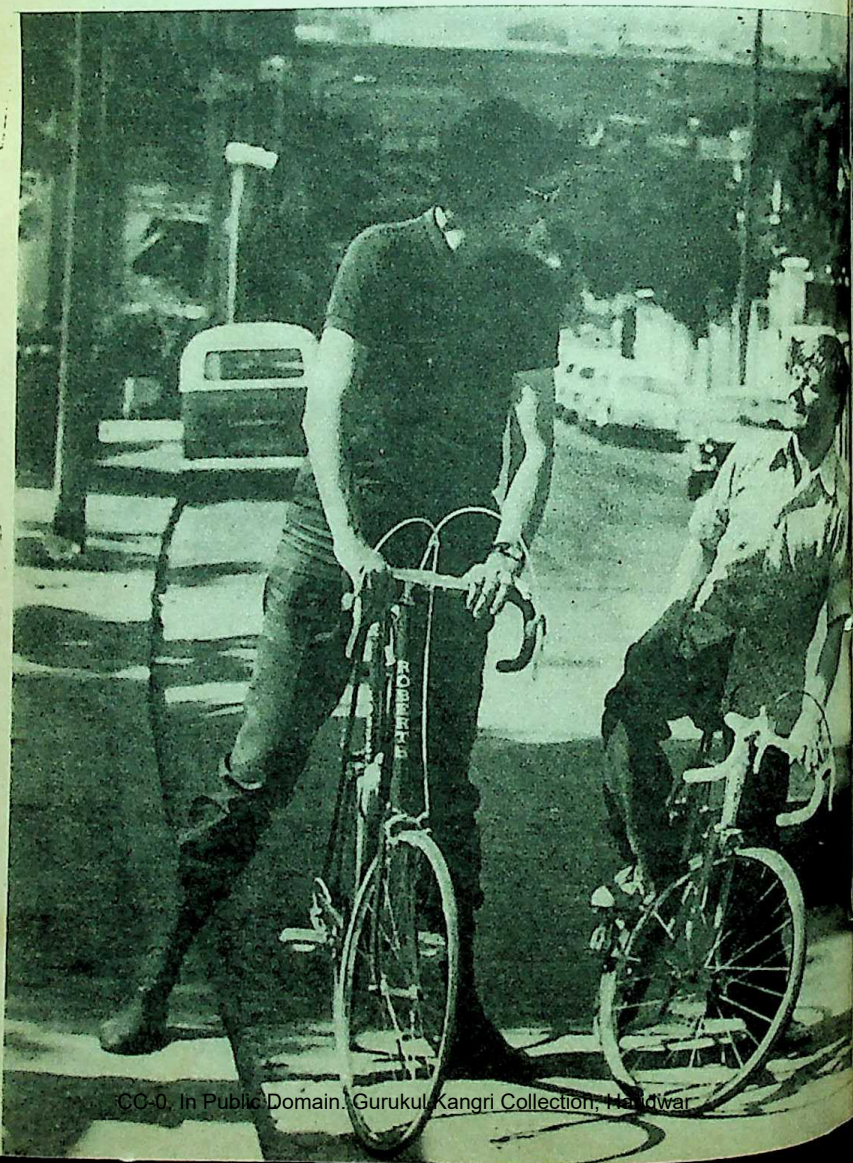
कालीभूरी, बुंद-
कियोंदार, बिना बांहों
की नीचे तक लंबी मैक्सी
आप की खूबसूरती में
चार चांद लगा देगी
और बिना बांहों की
चुन्नटदार, धुटनों से
ऊपर तक की मिनी फ्राक
के तो क्या कहने!

←

↑ जामुनी रंग की
मिनी स्कर्ट के साथ बुनी
हुई सूती टाप कितनी
मनमोहक लगती है और
आसमानी रंग की, खुली
बांहों व पीठ वाली,
एंब्रे ला कट की फ्राक—
सचमुच आप की उमर
में कितना अंतर ला
देती है!

चित्रावली

साइकिलिंग कर के अपना 294 पौंड का भारी वजन घटाने की सूझी. उन का कद है 7 फुट $5\frac{1}{2}$ इंच. इतने लंबे कद वाले व्यक्ति के लिए साइकिल की समस्या सामने आई. आखिर दक्षिणी लंदन की एक साइकिल की फर्म ने उन के लिए 7 फुट $4\frac{1}{2}$ इंच की विशेष साइकिल बना कर उन को समस्या से छुटकारा दिलवाया. इस साइकिल का फ्रेम तीन फुट का है. चित्र में अपनी लंबी साइकिल पर सवार ग्रीनर जैसे नाटी साइकिल का मजाक सा उड़ाते दिखाई दे रहे हैं.



ना :
को
वलन
इंच
न की
एक
इंच
या से
न फुट
सवार
उड़ते



● II बच्चे. वाप रे वाप! गनीमत है ये आदमी के नहीं, इस बढ़िया नस्ल की कुतिया के हैं. अब तो ये कुछ ही घंटों में अलगअलग घरों में पहुंच जाएंगे, जहां इन्हें पालने वाले इन्हें बिस्कुट और दूध देंगे. पर यदि ये आदमी के बच्चे होते तो?

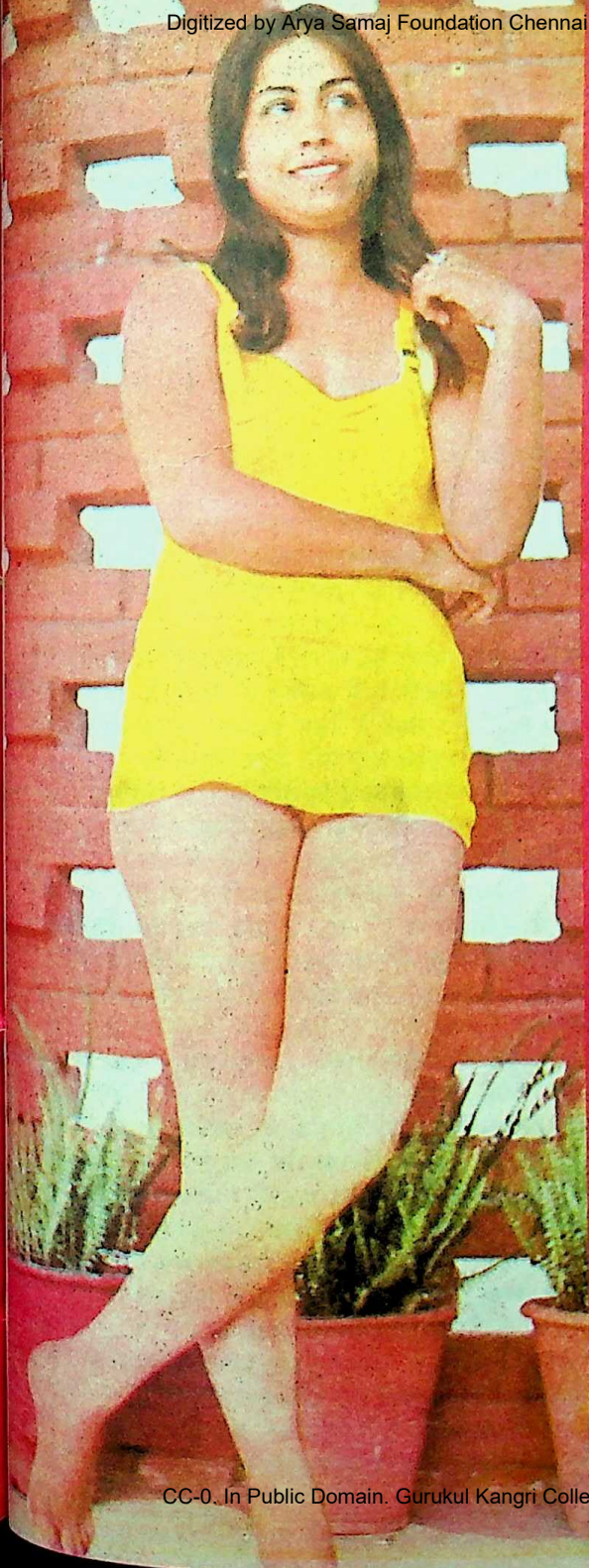
● टैक्सी चालकों का आंदोलन : कुछ सप्ताह पूर्व लंदन के 15,000 टैक्सी चालकों ने हेयमार्किट का यातायात ठप्प कर दिया. यह कार्य भाड़ों में 25 प्रतिशत की तुरंत वृद्धि की मांग को मनवाने के लिए किया गया. चित्र में, हड़ताल के बावजूद उन के अनुशासन की भावना दर्शनीय है.



मधुर क्षणों में...



कालेभूरे रंग का
स्विमिंग सूट पहन कर
लोगों की तजरो के
आकर्षण से आप बच
कैसे सकती हैं!



पीले रंग का स्वि-
मिंग सूट! हर सनचली
तैराक की ललचाई नजरें
आप अपनी इस पोशाक
के इर्दगिर्द घूरती
पाएंगी.

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों को रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री सुकेशकुमार, आगरा, हैं.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● हर कर्मचारी को एक कार्यालय पत्नी

तोक्यो. कार बनाने वाली एक प्रमुख जापानी संस्थान के तोक्यो मुख्यालय में काम कर रहे 371 कर्मचारियों में से प्रत्येक के पास कम से कम एक कार्यालय पत्नी (आफिस वाइफ) है.

इस प्रणाली के अंतर्गत प्रत्येक पुरुष कर्मचारी को, चाहे वह कितना ही जूनियर क्यों न हो, एक महिला सचिव या सहायक दी गई है.

कुल 481 महिलाओं में से अधिकतर 30 वर्ष से कम आयु की हैं और अपना समय कागजात तैयार करने, तोहफे तैयार करने, फोन पर जवाब देने या चाय या काफी बनाने और अन्य दूसरे कार्य, जैसे एस्प्रीन की गोलियां लाने का कार्य करने में बिताती हैं.

कंपनी के एक प्रवक्ता श्री केईमामोतो ने कहा, कि यह एक उत्तम पद्धति है. जापान में ऐसा ही होता है. एक पुरुष, जिस के पास कालिज की डिग्री है, किसी कंपनी में 90,000 येन (लगभग 2,480 रु.) प्रति मास के वेतन पर कार्य शुरू करता है और एक महिला को 63,600 येन (लगभग 2,000 रु.) प्रति मास मिलते हैं.

प्रवक्ता ने कहा कि वेतन में फर्क इसलिए है कि उन के कार्य भिन्न हैं.

—अमर उजाला, आगरा (प्रेषक : सुकेशकुमार, आगरा)

● चम्मचों की चोरी

फ्रांस. 240 पत्रकारों को फ्रांसीसी राष्ट्रपति द्वारा दिए गए पिछले भोज में 13 सोने के भारी कांटे, चम्मच, छुरी गायब हो गए, यह तब हुआ जब कि भोज के समय हर मेज पर चार बैरे और एक प्रमुख बैरे को रखा गया था. राष्ट्रपति जिस्कार दे' स्तां को सोचना पड़ रहा है कि भविष्य में वह आमंत्रित पत्रकारों की संख्या कम करें अथवा बैरों की संख्या बढ़ा दें.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : अशोककुमार जैन, खरगोन)

● सदाबहार घुड़सवार

ब्रिटेन. बिल स्मिथ प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व के वर्षों में एक चोटी का घुड़सवार था. 16 वर्ष की आयु होने के पहले ही 1902 में उस ने क्वींसलैंड सेंटलेजर में विजय प्राप्त की थी. 1903 में उस ने जोकी क्लब डर्बी में विजय प्राप्त की. 1909 और 1910 के इन दो वर्षों में वह विकटोरियम ओक्स में निरंतर प्रथम रहा. चैंपियनशिप की स्पर्धा में वह तीन बार विजेता रहा. हर व्यक्ति बिल स्मिथ को देख कर हर्षध्वनि करता था और बहुत लोग उस की घुड़सवारी की प्रशंसा करते थे. किंतु उस के आश्चर्यजनक रहस्य का किसी को भी पता नहीं था.

रहस्य यह था कि बिल स्मिथ एक औरत थी. उस के जीवनकाल के इस रहस्य का पता तब चला जब कि मृत्यु के बाद गत सप्ताह उस का शव परीक्षण के लिए क्वींसलैंड लाया गया. बिल वास्तव में बिल्हेलमिना थी और उस की आयु 88 वर्ष थी.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : इन्द्रपाल, पत्थलगान्वा)

● यह शाही जेल Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
न्यूयार्क. यहां 1 करोड़ 50 लाख डालर के व्यय से एक जेल का निर्माण किया गया है जिस में वातानुकूल, टेलीविजन, गलीचेदार वरामदे तथा विशेष रूप से प्लास्टिक की खिड़कियों की व्यवस्था है.

इस 12 मंजिले जेल में 41 सेल होंगे तथा हरेक सेल में एक मनोरंजन कर्मचारी होगा किंतु इस जेल से भागना आसान नहीं होगा. इस में 500 पुरुष व महिलाएं रखी जा सकेंगी.

—वीर अर्जुन, नई दिल्ली (प्रेषक : रमेशचंद्र, सोनीपत)

● कुत्ता किस का?

लिअंस (फ्रांस). विवाहविच्छेद के बाद एक दंपति में इस बात को ले कर बहस हो गई कि उन का कुत्ता किस के पास रहे.

अंत में न्यायाधीश ने यह फैसला दिया कि कुत्ता पत्नी रखे क्योंकि उस ने ही पति से अधिक उस की देखभाल की है. फिर भी, पति चाहता है कि उस को मास के प्रथम व तीसरे रविवार को कुत्ते से मिलने का अधिकार दिया जाए.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषिका : मधुवाला, दिल्ली)

● कुतिया का विश्व रिकार्ड

गीफू, जापान. सात वर्षीया कुतिया लीना पिल्ले देने का नया विश्व रिकार्ड कायम करने के उपरांत अब अवकाश ग्रहण करने वाली है.

लीना के मालिक श्री ताकियों इमेंदा का कहना है कि उस ने 11 बार में 110 पिल्लों को जन्म दे कर एक नया विश्व रिकार्ड कायम कर दिया है. उस का 110वां पिल्ला आखिरी है क्योंकि मैं चाहता हूं कि उस की उम्र को देखते हुए वह अब और पिल्ले न दे.

—दैनिक विश्वमानव, बरेली (प्रेषक : निर्भय सक्सेना, बरेली)

● दुनिया का सब से बड़ा जूता

बर्लिन. घुड़सवारी का सब से बड़ा जूता पूर्वी जर्मनी के एक छोटे कस्बे में मिला है. जूते की ऊंचाई 3.70 मीटर और तले की लंबाई 1.90 मीटर है. यह 12 मीटर ऊंचे व्यक्ति के पैर के लायक है. यह जूता 1925 में छः विशेषज्ञ मोचियों ने जूता निर्माता गिल्ड की 60वीं वर्षगांठ पर बनाया था. जूते में 60 किलो चमड़ा लगा है.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : कुंदन चंदानी, खरगोन)

● दो पत्नियों द्वारा एक ही पति को तलाक

लंदन. कल यहां दो पत्नियों ने, उसी न्यायालय में, उसी जज के समक्ष और उसी पति को तलाक दे कर ब्रिटेन में एक कानूनी इतिहास बना दिया.

ये पत्नियां और पति सुरक्षा अधिकारी अल्हाजी मोहम्मद, नाइजीरिया से आए थे, जहां मुसलिम कानून के अंतर्गत एक पति को 4 पत्नियां रखने का अधिकार है. हाईकोर्ट में तलाक स्वीकृति का आदेश प्रदान करते हुए जज, जार्ज ब्रेकर ने टिप्पणी की कि इन न्यायालयों में यह प्रथम अवसर है कि दो महिलाओं ने एक ही अपराह्न में उसी सज्जन को तलाक दिया.

41 वर्षीया श्रीमती आदिजा मोहम्मद के अपने पति से एक पुत्र और दो पुत्रियां हैं. उसे तलाक की स्वीकृति इस कारण प्रदान की गई कि वह और उस का पति पांच से ज्यादा वर्षों से अलग रह रहे हैं.

20 वर्षीया श्रीमती रबी मोहम्मद ने 1967 में उस से शादी की थी, जब वह केवल 13 वर्ष की बच्ची थी और एक बाल दुलहन के रूप में आई थी. उस को अपने पति के अतर्कसंगत व्यवहार के कारण तलाक की स्वीकृति मिली. दोनों पत्नियां कल प्रथम बार न्यायालय के बाहर मिलीं और अपने मामलों के बारे में बातें कीं. उन का पति न्यायालय में नहीं था.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : सुभाषचंद्र कोचर, महिबपुर) ●

चोली दामन

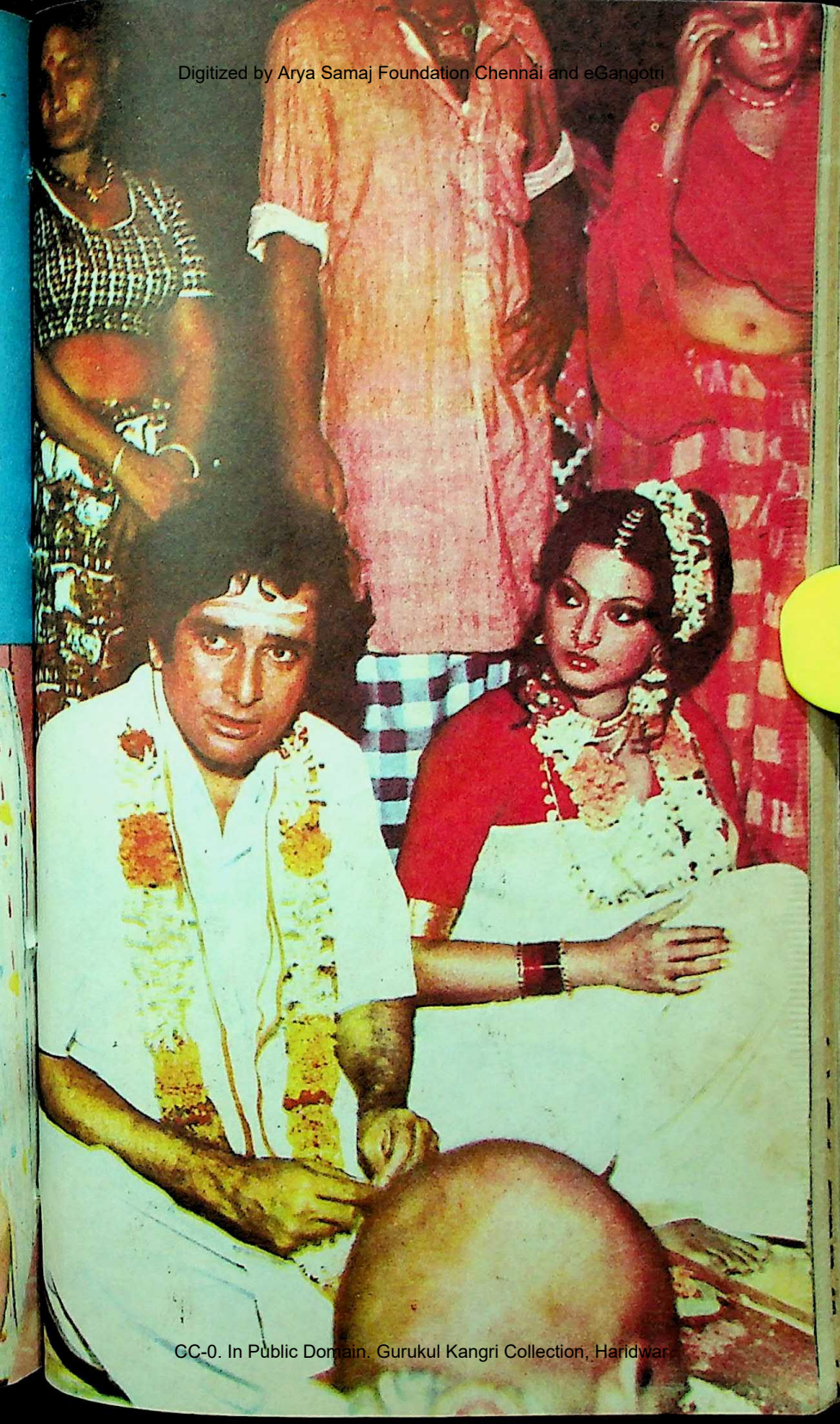
फिल्म 'चोली दामन' का निर्देशन रूपा सेन कर रहे हैं। इस फिल्म के नायक-नायिका राकेश रोशन व योगिता वाली हैं। अन्य कलाकार उमा धवन, आशा तिवारी तथा कोका कोला हैं।

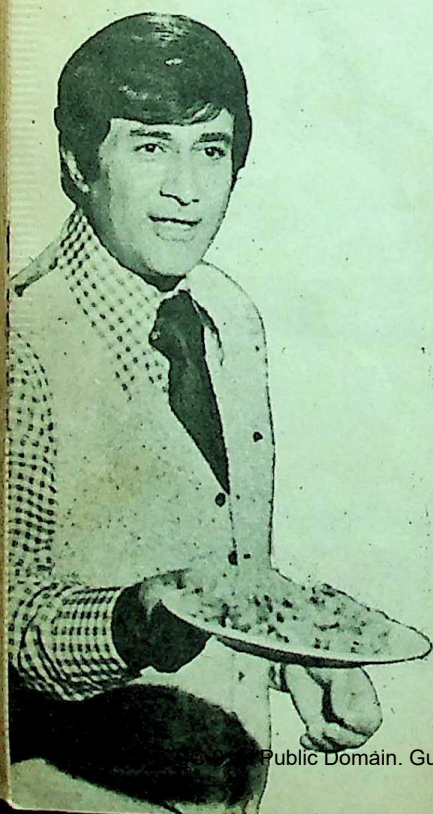
तूफान और चट्टान

फिल्म 'तूफान और चट्टान' का निर्देशन देवेंद्र गोयल कर रहे हैं। इस फिल्म का नायक शशि कपूर तथा नायिका रेखा है। फिल्म का निर्माण तीव्र गति से हो रहा है और शीघ्र ही यह फिल्म रिलीज भी हो जाएगी।

(नीचे) 'चोली दामन' में कोका कोला, आशा तिवारी तथा उमा धवन नृत्य की मुद्रा में, (सामने) 'तूफान और चट्टान' में शशि कपूर और रेखा।







देव आनंद

एक के बाद एक सफलता बड़े से बड़े और महान से महान आदमी के भी दिमाग को बिगाड़ कर रख देती है। उसे अपने आसपास का वातावरण बोना और छूछा प्रतीत होना शुरू हो जाता है। फिल्म जगत का सितारा मात्र देव आनंद इस का अपवाद है। वह आज भी पत्रों के उत्तर देता है, टेलीफोन सुनता है और शूटिंग संबंधी अपने सभी वादे पूरे करता है। उसे अपने महान कलाकार होने के बारे में कोई गलतफहमी नहीं है, फिर

भी उस में कुछ न कुछ ऐसा जरूर है जो उसे गत 30 वर्षों से सिने दर्शकों की आँखों का सितारा बनाए हुए है।

मेरी जब भी देव आनंद से मुलाकात हुई, मुझे जहाँ एक ओर प्रसन्नता हुई है, वहाँ दूसरी ओर चिंता भी। चिंता इसलिए कि देव लगातार प्रकृति के खिलाफ लड़ाई में हारता जा रहा है। देव आनंद की उमर क्या है? मैं यह बता कर देव आनंद की दुखती रग को नहीं छूना चाहता। लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि देव आनंद ने लगातार युवा

भेंटवार्ता • रमन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना रहने के लिए काफी मेहनत एवं संघर्ष किया है। प्रकृति एवं स्वभाव से देव आनंद गंभीर आदमी है। उस ने अपनी उच्च शिक्षा लाहौर के प्रसिद्ध गवर्नमेंट कालिज में पाई थी, जहाँ उसे एरिक डिकिसन का छात्र होने का गौरव प्राप्त था। उस का एक राजनैतिक परिवार से संबंध है। उस का जन्म पंजाब के गुरुदासपुर में हुआ था। उस के पिता पंजाब के प्रसिद्ध वकील के अतिरिक्त कांग्रेस के नेता भी थे। वह वर्षों तक क्षेत्रीय कांग्रेस समिति के प्रधान भी रहे। बापबेटे दोनों ही स्वतंत्रता संग्राम के साथ कहीं गहरे जुड़े हुए थे। वह राजनैतिक बंदी भी रहे। देव की पांच बहनें हैं और चार भाई थे, जिन में से अब तीन ही हैं। उस का छोटा भाई विजय आनंद, जो आचार्य रजनीश का शिष्य है, आज सारी फिल्मी दुनिया में अत्यंत सृजनशील कल्पना का धनी माना जाता है। उस का बड़ा भाई चेतन आनंद नामीगिरामी फिल्मों का निर्माता एवं

फिल्म जगत का यह जाना-माना कलाकार बुढ़ापे की सीमा में पहुंच कर भी रंगीनमिजाज युवा के रूप में दर्शकों पर छाए रहने में कैसे सफल हो सका?

फिल्म 'इश्क इश्क इश्क' की शूटिंग के दौरान प्रेमानाथ और जीनत अमान को निर्देशन देते हुए देव आनंद।





यह आशिकाना अंदाज़! जवानी हाथ से निकल नहीं सकती...बुढ़ापा
कोसों दूर रहेगा : फिल्म 'साहब बहादुर' में देव आनंद.

निर्देशक है.

देव आनंद की प्रारंभिक शिक्षा डलहौजी के कान्वेंट में हुई. उस ने दसवीं कक्षा गुरुदासपुर से पास की और लाहौर में वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगा. उसे सन 1943 में अंगरेजी में विशिष्ट स्नातक की डिग्री प्राप्त हुई. उस के एक साल बाद ही उस ने बिना किसी योजना विशेष के अपना कस्बा छोड़ दिया. वह काफी व्यग्र था. उस का मूल लक्ष्य बंबई थी, जहां उस का बड़ा भाई पहले से ही फिल्में बनाने में लगा हुआ था.

जल्दी ही चेतन को भी बंबई छोड़ देनी पड़ी. देव आनंद की उमर तब लगभग 19 साल थी. उसे अपने लिए खुद जमीन खोदनी थी. उस ने आरंभ में नौसेना में जाना चाहा था, तथा इस के लिए परीक्षा भी दी थी, परंतु परिवार के राजनैतिक भुकाव के कारण उसे नौसेना में नहीं लिया गया. चेतन के चले जाने के बाद देव अपने दोस्तों के यहां रहने लगा. बंबई में रहते हुए उस ने जनता नाट्य संस्थान के खेलों में छोटे-

छोटे रोल करना शुरू कर दिया, जिस के कारण उस का परिचय विशिष्ट फिल्मी हस्तियों से हुआ.

1945 में उस ने पहली बार फिल्म जगत में प्रवेश किया. लेकिन इस से पहले ही, बेकारी से तंग आ कर उस ने पोस्टल सेंसर डिपार्टमेंट में 200 रुपए मासिक पर क्लर्क की नौकरी स्वीकार कर ली थी. अब उस की जिदगी की वास्तविकताओं से आंखें चार हुई. लेकिन उस ने अपनी जद्दोजेहद जारी रखी.

उस के लिए निश्चय ही तब बहुत बड़ी घटना हुई जब पूना के 'प्रभात फिल्म' ने उस के सामने नौकरी का प्रस्ताव रखा. उन दिनों स्वतंत्र कलाकार जैसी कोई चीज नहीं होती थी. सब कलाकारों को मासिक तनखाह पर रखा जाता था. उस जमाने में 400 रु. की नौकरी मिल जाना उस के लिए बहुत बड़ी बात थी. वह उस से न केवल अपना ही खर्च चला सकता था, वरन अपनी स्कूल में पढ़ती बहनों के लिए भी कुछ भेज सकता था. उस ने प्रभात में तीन वर्ष का कंट्रैक्ट लिया. कुछ अंदरूनी

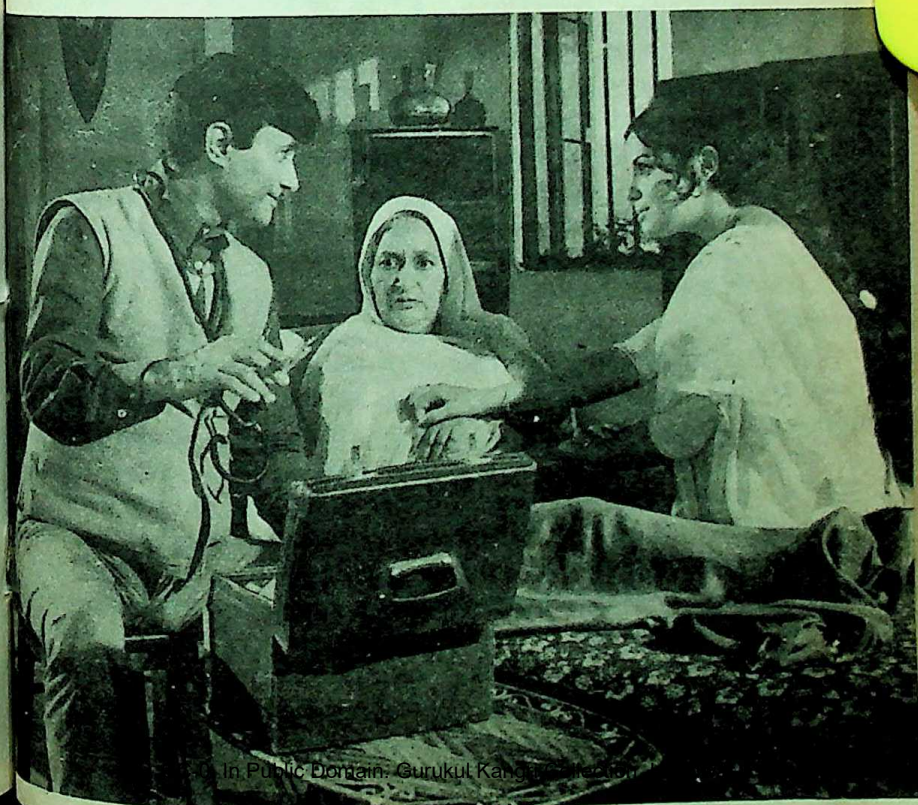
कारणों से जब कंपनी टूटने लगी तो वह बंबई लौट आया। वंबई आ कर उस ने उस समय के मशहूर बांबे टाकीज में नौकरी कर ली। उसे फिल्मों में काफी महत्वपूर्ण भूमिकाएं मिलीं और उस की सभी फिल्में हिट हुईं। इस के फलस्वरूप एक नायक के रूप में उस की अच्छी खासी प्रतिष्ठा स्थापित हो गई। इस के बाद सफलताओं का जो सिलसिला चला, वह फिर रुका नहीं। इसी बीच देव आनंद की शादी अपने समय की प्रसिद्ध अभिनेत्री कल्पना कांतिक से हो गई। दोनों का पारिवारिक जीवन बड़े सुख से बीत रहा है। देव आनंद की दो संतानें हैं—एक लड़का और एक लड़की। उस का पुत्र उच्च शिक्षा के लिए अमरीका गया हुआ है और लड़की मंसूरी में पढ़ती है।

देव आनंद से संपर्क स्थापित करना आसान है क्योंकि उस तक पहुंच आसानी

से हो जाती है। लेकिन दूसरी तरफ काम के अभाव और प्रतिस्पर्धा के कारण आप उस का समय भी बरबाद नहीं कर सकते। वैसे, उस से बात करने में काफी मजा आता है। वह समझदार वक्ता ही नहीं, एक अच्छा श्रोता भी है। वह जरा तेजी से बोलता है, परंतु उस में स्पष्टवादिता है। वह अपनी बात को समझाने के लिए भंगिमाओं का बहुत प्रयोग करता है। उस के बोलने का ढंग प्राकृतिक है, पर अंदाज बहुत कुछ नाटकीय ही है। वह एक ऐसा निहायत भला आदमी है, जो अपने अच्छे व्यवहार से अपने कट्टर से कट्टर दुश्मन को भी अपना बना सकता है।

मेरी उस से मुलाकात एक फिल्म स्टुडियो में हुई, जहां वह एक फिल्म की शूटिंग में व्यस्त था। मैं ने उस से पूछा, "देव साहब, क्या आप बता सकते हैं कि आप के कलाकार जीवन पर सर्वाधिक

देव आनंद, मुमताज और लीला मिश्रा फिल्म 'तेरे मेरे सपने' में।



मुझे अफसोस है, मैं किसी व्यक्ति विशेष पर उंगली रख कर नहीं बता सकता। जब मैं कालिज में था तो अपने अध्यापकों का काफी असर मुझ पर हुआ। बच्चों पर मांबाप और बहनभाइयों का भी काफी असर पड़ता है। मेरे बड़े भाई चेतन आनंद काफी दिनों तक मेरे आदर्श रहे। 1936-37 में आई. सी. एस. की परीक्षा में बैठे थे। तब से उन के प्रति मेरी श्रद्धा और बढ़ गई थी। लेकिन, साहब, सब से ज्यादा मेरी घुमक्कड़ वृत्ति ने मुझ पर अपना प्रभाव छोड़ा है। यात्राएं सब से बड़ा गुरु होती हैं। बी. ए. के पश्चात मैं घर से एकदम गायब हो गया। तब दुनिया से मेरी आंखें चार हुईं और मैं ने बाधाओं से जूझते हुए खुद जीना सीखा। कालिज के दिनों में मुझे काफी पढ़नेलिखने की आदत थी। अब तो खैर, समय ही नहीं मिल पाता। मैं ने अपना व्यक्तित्व अपनेआप निर्मित किया है। फिर भी चेतन और अपने पिता के प्रभाव को मैं नकार नहीं सकता।”

“भारतीय फिल्मों तथा विश्व फिल्मों के संदर्भ में आप के विचार से एक अच्छे कलाकार में क्या गुण होने चाहिए?”

“सब से महत्वपूर्ण चीज है सजगता। बोलने का ढंग, रंगरूप, व्यक्तित्व तो मूलभूत आवश्यकता हैं ही। सजगता से मेरा तात्पर्य है इस बात की समझ कि लोग कौन से कलाकार से किस समय किस चीज की मांग कर रहे हैं।”

“आप के विचार से, साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाते समय कौन सी समस्याएं पेश आती हैं?”

“समस्याएं मेरे विचार से कोई भी नहीं। मेरे विचार से तो साहित्यिक कृतियों पर बेहतर फिल्में बन पाती हैं। लेकिन एक गंदा पटकथा लेखक सारी कृति का नाश कर के रख सकता है। वस्तुतः पटकथा फिल्म की रीढ़ होती है। लेकिन साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाने में मेरी कतई दिलचस्पी नहीं है। मैं तो समकालीन मुद्दों पर फिल्म बनाता

अपनेआप में कहीं बड़ी चुनौती लगता है।”

“आज तक आप ने दर्जनों फिल्मों में काम किया है। क्या आप बता सकते हैं कि आप को किस चलचित्र में अपनी भूमिका सर्वाधिक पसंद आई?”

“देखिए, यह काफी टेढ़ा सवाल है। मैं ने कभी मुड़ कर अपने कलाकार जीवन का विहंगावलोकन नहीं किया है। मैं तो हमेशा भविष्य की आंखों में आंखें डाल कर देखता हूं।”

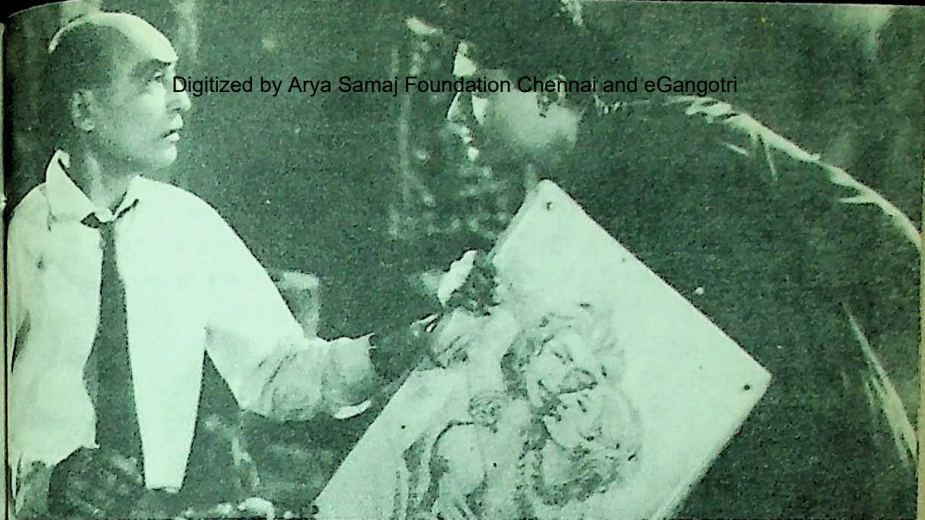
भावात्मक लगाव

“आम तौर पर आप को किस प्रकार की कहानी तथा भूमिकाएं पसंद हैं?”

“क्या यह फिर दोबारा पहले जैसा सवाल नहीं है? कोई भी ऐसी भूमिका मैं सहर्ष करने के लिए तैयार रहता हूं जिस से मैं बौद्धिक एवं भावात्मक रूप से जुड़ सकूं। मैं किसी की नकल उतारने में जरा भी दिलचस्पी नहीं रखता। लेकिन बिलकुल यह भी मान कर चलना कि नितांत मौलिक हूं, एक तरह का बड़बोलापन होगा। आज, जब कि सारे सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय बंधन टूट रहे हैं, कुछ चीजों का कुछ चीजों से मिल जाना स्वाभाविक ही है। यह बात मेरे अभिनय के साथ भी हो सकती है।”

“आप के अनुसार भारतीय चलचित्रों की क्या विशेषताएं अथवा कमियां हैं?”

“विशेषताएं भारतीय सिनेमा ने अपनी सार्वभौमिकता सिद्ध कर के दिखला दी हैं। अब तो अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर भी कब्जा कर लिया है। इस ने भारतीय जनमानस को भी एक सूत्र में बांधा है। इस प्रकार, भारतीय सिनेमा आम जनता का सिनेमा है। लेकिन आप कह सकते हैं कि यह कमी है, न कि गुण। आप की बात ठीक भी हो सकती है। आम जनता कुछ रटेरटाए मसाले पर बनी फिल्में पसंद करना शुरू कर देती है। अधिकांश भारतीय जनता के अपढ़ होने के कारण नतीजा यह हुआ है कि उस की रुचियों का परिष्कार नहीं हो पाया है, जिस के कारण भारतीय



किशोर साहू और देव आनंद फिल्म 'गाइड' में.

फिल्मों का स्तर दिनबदिन गिरता ही गया है."

"आप की उन फिल्मों के बारे में क्या राय है जिन में खुला यौनप्रदर्शन होता है, खूब शोरशराबे वाला संगीत तथा पश्चिमी सम्प्रदाय की अधकचरी नकल उतारी जाती है?"

"सेक्स कोई भयंकर चीज नहीं है, यदि उस का प्रदर्शन सही संदर्भ में किया जाए. संगीत पर भी यही बात लागू होती है. जिन फिल्मों का संबंध हमारे भारतीय जनजीवन से है, उन में भारतीय संगीत ही होना चाहिए और जिन का कथानक पश्चिम की संस्कृति पर आधारित है, उन में पश्चिमी धुनें ही प्रयुक्त की जानी चाहिए."

"'न्यू देव' की फिल्मों के बारे में आप की क्या धारणाएं हैं?"

"कोई खास चीज नहीं है वे. यह एथार्थ सिनेमा नहीं है. वे आलोचक जो इस प्रकार के सिनेमा की तारीफ करते हैं, वास्तव में अधिकांश दर्शकों से कटे हुए हैं. जिस सिनेमा का आनंद एक वर्ग विशेष ही उठा पाए, उसे किसी भी दृष्टि से सिनेमा नहीं माना जा सकता."

"आप के अपने करिश्मे का क्या राज है? निस्संदेह आप को ज्ञात ही होगा कि आप के कुछ आलोचक इस बात

के सख्त हिमायती रहे हैं कि आप को अपने से भी आधी उमर की लड़कियों के साथ नायक की भूमिका में उतरने के बजाए फिल्में छोड़ देनी चाहिए. इस बारे में आप की क्या राय है? अपनी बढ़ती हुई उमर के बारे में आप की क्या प्रतिक्रिया है? आप के विचार से एक अभिनेता को कब सम्मानपूर्वक फिल्म जगत से संन्यास ले लेना चाहिए?"

"बंधु, एक कलाकार को जनता उस के अभिनय के कारण पसंद करती है, न कि उस की उमर से. क्या मैं सिर्फ इस कारण फिल्मों से संन्यास ले लूं कि मेरे आलोचक ऐसा चाहते हैं? यह अधिकार तो मैं सिर्फ अपने दर्शकों को दे सकता हूं. जहां तक मेरा संबंध है, मैं अभी तक स्वयं को युवा महसूस करता हूं. मैं ने आज तक स्वयं को युवावर्ग के साथ जोड़ रखा है. इस के अतिरिक्त, संन्यास लेने का प्रश्न व्यक्ति से व्यक्ति तक बदलता है. अभी तो मैं अपनेआप को जवान समझता हूं, इसलिए संन्यास लेने का प्रश्न ही नहीं उठता."

"क्या आप का अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा के साथ कोई सीधा तालमेल है?"

"हां. जब मैं बाहर जाता हूं तो विदेशी फिल्में देखता हूं और बाहर के कलाकारों से भी मिलता हूं. मैं ने एक

अंगरेजी सिनेमा में अभिनय भी किया है।”

“आप पूना से निकल रही नई-ति-भाओं के बारे में क्या सोचते हैं? क्या उन में आप को संभावनाएं नजर आती हैं?”

“हां, उन्हें वहां अच्छी शिक्षा मिलती है। वहां की एक अभिनेत्री शबाना आजमी ने मेरी फिल्म ‘इश्क इश्क इश्क’ में काम भी किया था। वह प्रतिभा की धनी है।”

“फिल्मों में धन लगाने से ले कर वितरण, प्रदर्शन आदि के मार्ग में क्या-क्या बाधाएं आती हैं?”

“यह सब चीजें आपस में जुड़ी हुई हैं। पैसा लगाने वाले स्वभावतः ही ऐसी फिल्म चाहते हैं जो आसानी से बिक जाए। यही कारण है कि एक सितारा सितारा बन जाता है।”

पुरुषों की प्रधानता

“प्रायः देखने में आया है कि फिल्मों में नायक की भूमिका प्रधान होती है। कई अभिनेत्रियों ने तो इस की खुल्लमखुल्ला शिकायत भी की है। आप इस बारे में कुछ कहना चाहेंगे?”

“ठीक है। लेकिन हम जिस समाज में रहते हैं, वह भी तो पुरुषप्रधान है। भारत के आदमी प्रायः नायक को अधिक पसंद करते हैं।”

“क्या आप अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के वितरण के संबंध में कुछ राय देना चाहेंगे?”

मैं इन की बिल्कुल परवा नहीं करता। हमारे अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार कुल मिला कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मजाक ही हैं। कोई उन्हें तरजीह नहीं देता। और फिर उन का वितरण भी ऐसे लोगों द्वारा किया जाता है जिन में सिनेमा की मूल-भूत समझ की भी कमी होती है।”

“आप को देशीविदेशी कलाकारों में कौन सा कलाकार सब से अधिक अच्छा लगता है?”

“मैं तुम्हें पहले भी बता चुका हूं कि किसी को भी मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से चाहने, न चाहने का प्रश्न ही नहीं

उत्पन्न हो सकता है। अभिनेता अपनी भूमिका पर और निर्देशक फिल्म की पटकथा पर सफल होता है, न कि मात्र अपनी प्रतिभा से।”

“प्रादेशिक फिल्मों के बारे में आप की क्या राय है? आप इन की हिंदी सिनेमा से किस प्रकार तुलना करेंगे?”

“मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं इस प्रश्न का क्या उत्तर दूं। प्रादेशिक फिल्में इन अर्थों में अच्छी होती हैं कि उन में प्रादेशिकता एवं आंचलिकता का पुट रहता है। फिर भी उन का क्षेत्र सीमित है, जब कि हिंदी सिनेमा का काफी विस्तृत।”

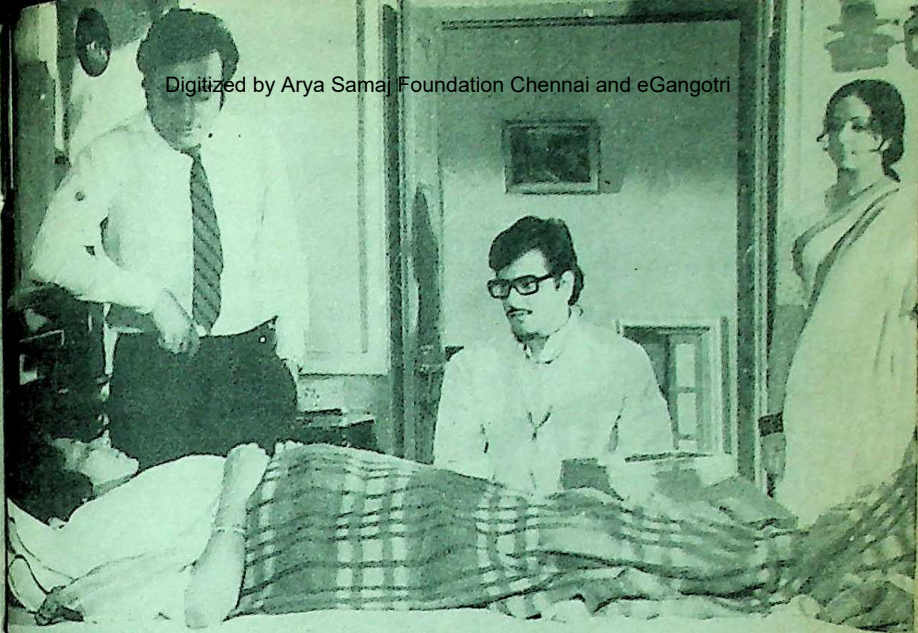
फिल्म पत्रकारिता का स्तर

“भारतीय फिल्म पत्रकारिता का स्तर कैसा है? मेरा खयाल है कि फिल्मों की सफलता अथवा असफलता में हमारे फिल्म समीक्षकों की बहुत थोड़ी भूमिका रहती है। आप का क्या खयाल है?”

“हम फिल्मी लोग समीक्षकों की परवा नहीं करते। लोग समीक्षा पढ़ कर फिल्म देखने नहीं जाते। इस के अतिरिक्त, फिल्म पत्रकारों को जनता की अभिरुचि का अधिक ज्ञान नहीं होता। एक समीक्षक को इन मुद्दों पर अवश्य गौर करना चाहिए कि किस निर्देशक ने कितनी मेहनत की है, फिल्म का किस वर्ग से संबंध है, आदिआदि।”

“अंतिम प्रश्न, देव जी। जनता आप के जवान बने रहने का राज जानना चाहेगी।”

“राज? कैसा राज? इस का एक ही राज है—काम, काम, बस, काम। इस के अतिरिक्त पारिवारिक सुख। मेरे पुत्र और पुत्री पढ़ने में ठीकठाक हैं। मैं बहुत ज्यादा शराब नहीं पीता। मैं अपनी उमर के बारे में नहीं सोचता। मुझे काम करना पसंद है। जब मैं काम नहीं करता तो बीमार हो जाता हूं। मैं सुबह उठ कर हलका व्यायाम करता हूं। फिल्मों के साथ भावात्मक लगाव भी मुझे बूढ़ा नहीं होने देता। आशा है, आप मेरी बात समझ रहे होंगे।”



डाक्टर बृंदावन (जीतेंद्र) एक मरीज देखने जाता है तो वहां उस की मुलाकात कुसुम (हेमा) से होती है।

‘परिचय’, ‘कोशिश’ आदि फिल्मों के बाद निर्देशक व लेखक

पखवाड़े की फिल्म

गुलजार ने एक बार फिर सुरुचिपूर्ण कलात्मक फिल्म ‘खुशबू’ का निर्माण किया है। फिल्म प्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय की कहानी के आधार पर बनाई गई है, परंतु फिल्म में कहानी बिलकुल मूल रूप से न ले कर काफी रद्दोबदल की गई है। मूल कथा का नायक एक स्कूल मास्टर है, यहां एक डाक्टर है। इस परिवर्तन से फिल्म में कुछ असंगतियां भी उभर आई हैं।

खुशबू

डाक्टर बृंदावन (जीतेंद्र) गांव में आ कर प्रेक्टिस शुरू करता है। पास के गांव में वह एक बीमार स्त्री को देखने जाता है, जहां उस का कुसुम (हेमा) से मिलन होता है। यह वही लड़की थी, जिस की बचपन में बृंदावन से शादी हुई थी पर गौने के सग्न्य बृंदावन के बाप ने उसे बहू बनाने से इनकार कर दिया था और घर में नहीं धुसने दिया था।

इस के बाद बृंदावन की शादी बड़ी ही अजीब परिस्थितियों में कमला (शर्मिला टैगोर) से हो गई थी, जिस की बाद में मृत्यु हो जाती है और जो एक पुत्र चरण को छोड़ जाती है। अब बृंदावन के परिवार में केवल 3 प्राणी हैं—मां (दुर्गा खोटे), बेटा चरण (मास्टर राजू) और वह स्वयं।

जब बृंदावन को पता चलता है कि कुसुम वही लड़की है जिस से बचपन में उस की शादी हुई थी, तो वह उसे स्वीकार करने को तैयार हो जाता है।

अनेक बार बात बनती और बिगड़ती है पर अंत में बड़ी ही भावुक परिस्थिति में वह उसे अपने घर ले जाता है।

‘खुशबू’ की सब से बड़ी विशेषता यह है कि कला की दृष्टि से तो यह एक उत्तम फिल्म है ही, उद्देश्यपूर्ण भी है। एक ओर बचपन के विवाह के बुरे परिणाम दिखाए हैं तो दूसरी ओर एक परित्यक्ता की समस्या भावुक एवं नैतिक स्तर पर सुलझाई गई है। कुसुम को उस के गीने से पहले ही त्याग दिया जाता है, किंतु वह मन में बृंदावन को ही पति मान कर दूसरा विवाह करने से इनकार कर देती है, साथ ही उस के मन में वह कसक भी है, जो उस को त्याग कर उस का अपमान किया गया था।

बृंदावन की मां कुसुम को कंगन देती है, जो इस बात का संकेत है कि उसे दोबारा स्वीकार कर लिया जाएगा लेकिन स्वाभिमानी कुसुम उन्हें वापिस लौटा देती है क्योंकि बृंदावन उसे लेने स्वयं नहीं आता।

‘खुशबू’ की इस कहानी में लेखक गुलजार मूल कथा से जितना दूर हटा है, उतनी ही असंगतियां बढ़ती चली गई हैं।

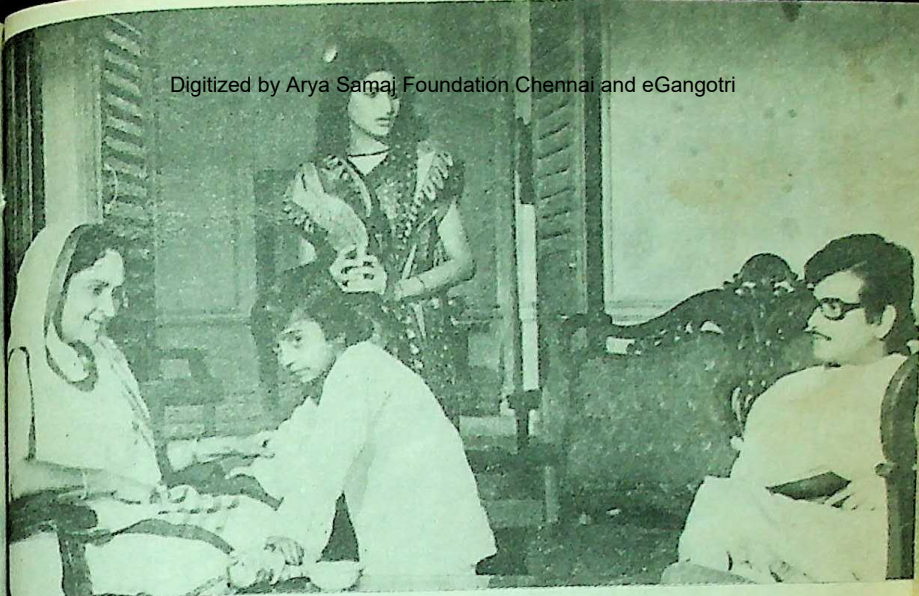
देशकाल की दृष्टि से कतई पता नहीं चलता कि किस स्थान और काल का प्रतिनिधित्व करती है। फिल्म में दिखाए गए गांव न तो बंगाल के मालूम देते हैं और न ही पंजाब के, जब कि नायिका को पहनावे में बंगालिन दिखाया है और नायक बृंदावन को पंजाबी बंगाल में धोतीकुर्ता पहना जाता है, लेकिन बृंदावन कुर्ता और पाजामा पहनता है। फिल्म में कुंज (असरानी) आदि अन्य पात्रों का भी पहनावा बंगाली न हो कर बिहार की प्रतीति होता है क्योंकि उन का धोती बांधने का ढंग बंगाली न हो कर बिहार का है।

इसी प्रकार शर्मिला टैगोर को एक असमी लड़की दिखाया गया है पर उस के मकान, वेशभूषा असमी नहीं हो कर पूर्वी उत्तर प्रदेश की लगती है।

फिल्म में दिखाया है कि नायिका कुसुम की सहेली मनोरमा (फरीदा जलाल) शादी के समय जब पितृगृह त्यागती है तो सिर के ऊपर से धान पीछे फेंकती है। यह प्रथा बंगाल में न हो कर पंजाब में है। साथ में जो शब्द कुसुम बोलती है, वे उस समय पंजाब में गाए

डाक्टर बृंदावन (जीतेंद्र) अपने दवाखाने में नटखट काली (बेबी सारिका) के साथ।





डाक्टर बृंदावन (जीतेंद्र), नन्हा चरण, मां दुर्गा खोटे और काली (बेबी सारिका)।

जाने वाले लोकगीत का गद्य रूपांतर मात्र हैं। न जाने यहां पर गुलजार उस पंजाबी लोकगीत को ज्यों का त्यों देने की जुर्रत क्यों नहीं कर सका, जब कि मनोरमा की शादी में उस ने पंजाबी ढोलक बड़े जोरशोर से बजाई है। भाषा की दृष्टि से भी अनेक पात्र पंजाबी भाषा का प्रभाव लिए हुए हैं और 'ऐवें ई' (ऐसे ही) शब्द का प्रयोग करते हैं। इस के कारण कुछ हास्य एवं मनोरंजन जरूर आ जाता है, पर स्वाभाविकता की दृष्टि से यह आपत्तिजनक है। फिल्म के कुछ पात्र पुरबिया भाषा भी बोलते दिखाए हैं, जो अनावश्यक था।

इन सब असंगतियों के लिए मुख्यतः गुलजार ही जिम्मेदार है। इन का कारण भी बताया जा सकता है। गुलजार मूलतः पंजाबी है लेकिन उस का संपर्क पूर्णतः बंगालियों से रहा है। बिमल राय और बाद में हृषिकेश मुखर्जी से उस का गाढ़ा संपर्क निरंतर चला आ रहा है। यहां तक कि उस ने शादी भी एक बंगालिन युवती (राखी) से की है। इस प्रकार उस पर पंजाबी एवं बंगाली दोनों संस्कृतियों का गहरा प्रभाव है और यह प्रभाव 'खुशनु' मुक्ता

में पूर्णतः उभर कर आया है।

इन सब असंगतियों के बावजूद फिल्म सुरचिपूर्ण है। फिल्म में किसी प्रकार का भी सैक्सी ग्लेमर देखने को नहीं मिलता। कैबरे आदि की बात तो बहुत दूर की है। मारपीट आदि का नामनिशान नहीं है। निर्देशक गुलजार ने हेमा जैसी रूपवती अभिनेत्री को नायिका की भूमिका में ले कर भी शरीर प्रदर्शन की ओर कतई ध्यान नहीं दिया और उस के चेहरे के अतिरिक्त कोई अंग नग्न नहीं होने दिया। चेहरा भी गोदने गोद कर खराब कर दिया गया है और हिंदी फिल्म जगत की सर्वाधिक सुंदरी को एक अत्यंत साधारण युवती बना दिया गया है।

अन्य किसी प्रकार से भी फिल्म में सैक्स को नहीं आने दिया गया है। यहां तक कि पूरी फिल्म में नायक और नायिका भी एक दूसरे को स्पर्श तक नहीं करते। फोटोग्राफी में भी किसी भी स्त्री पात्र के शारीरिक उभार को नहीं आने दिया गया है।

फिल्म का चित्रण भावुकता के स्तर पर किया गया है। निर्देशक जिस भी भाव को ले कर चला है, उस में डूब गया है,

जो कई बार अति की सीमा तक चला गया है। कहानी के संप्रेषण के माध्यम से कहानी कहने का प्रयत्न किया गया है। फिल्म का नायक तो मानवता का पुजारी है। गांव में प्लेग फैल जाती है। घड़ाघड़ मौतें होने लगती हैं। लोग गांव छोड़ कर भागने लगते हैं। लेकिन डाक्टर वृंदावन प्लेग के विरुद्ध युद्ध के स्तर पर लड़ता है, लाख समझाने पर भी गांव छोड़ने को तैयार नहीं होता। लोगों को मौत के मुंह में छोड़ कर जाना उस की आत्मा नहीं मानती। कहानी के कई अन्य पात्र भी ऐसे ही हैं,

वृंदावन के बाद उल्लेखनीय भूमिका नन्हे चरण की है, जो दर्शकों को बारबार हंसाती और उन का मनोरंजन करती है, साथ ही मन में भी गहरे रूप में उतर जाती है। कुसुम और अपने पिता वृंदावन को मिलाने में उस के मासूम प्रयत्न बड़े ही मार्मिक हैं। फिल्म की यह सर्वाधिक जानदार भूमिका है। सचाई तो यह है कि अगर यह भूमिका न होती तो फिल्म काफी हद तक बेजान हो कर रह जाती है। वह फिल्म में दर्शकों की रुचि बनाए रखता है और उन्हें बोर नहीं होने देता है।

नायक जीतेंद्र अपनी उछलकूद और सैक्सी हावभावों के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन 'खुशबू' में उसे इन सब को उतार कर परे रखना पड़ा है और उसे एक मोटा चश्मा पहना कर पूर्णतः गंभीर ग्लैमरहीन कर दिया गया है। रहीसही कसर देहाती लिबास से पूरी हो जाती है। कुर्ते, पाजामे और चश्मे में वह बिलकुल बदला हुआ एक नया ही जीतेंद्र नजर आता है, जो पूर्णतः अपनी भूमिका में डला हुआ है। एक ग्रामीण डाक्टर वृंदावन के अतिरिक्त उस में और कुछ नजर नहीं आता।

फिल्म में अनेक भावुक स्थल आते हैं, जिन्हें जीतेंद्र के लिए अभिनय के परीक्षास्थल कहा जा सकता है। फिल्म का अंत एक अत्यंत भावुक दृश्य के साथ होता है। इस दृश्य में जीतेंद्र का अभिनय देखते ही बनता है। प्रेम, संशय, भ्रम और आग्रह के भाव एक साथ प्रकट कर

जाना कितना कठिन था, यह फिल्म देख कर ही अंदाजा लगाया जा सकता है। लेकिन इस मार्मिक दृश्य को भी जीतेंद्र ने जितने स्वाभाविक रूप में निभाया है, वह उस के उच्च कोटि के कलाकर होने का परिचय देता है।

कुसुम के रूप में हेमा मालिनी साधारण है। एक सीधीसादी ग्रामीण युवती के रूप में वह प्रभावित नहीं कर सकी। उस का चेहरा भावहीन बना रहा है। कुसुम के भाई कुंज के रूप में असरानी अच्छा काम कर गया है।

कुसुम की नटखट एवं चुलबुली सहेली मनोरमा के रूप में फरीदा जलाल की भूमिका भी दुखमुख का अजीब सा मिश्रण कही जा सकती है। वह बड़ी चुलबुली है और हर समय हंसतीमुसकराती रहती है। यह जिंदादिली ही उस की विशेषता है। लेकिन शादी के दोचार दिन बाद ही उस के पति की प्लेग से मृत्यु हो जाती है और वह विधवा हो जाती है। कुंआरेपन में वह अपनी शादी का बड़ी उत्सुकता से इंतजार करती है, पर शादी के बाद सारे स्वप्न अधूरे रह जाना, यही इस भूमिका की विडवना है।

वृंदावन की पहली पत्नी कमला के रूप में शर्मिला टैगोर बहुत थोड़ी देर के लिए परदे पर आती है, पर अपनी सशक्त भावाभिव्यक्ति के बल पर अमिट छाप छोड़ जाती है। उस छोटी सी भूमिका के बल पर ही वह हेमा को भी पीछे छोड़ जाती है। उसे देख कर अंदाजा लगाया जा सकता है कि केवल सुंदरता के बल पर उस का मुकाबला नहीं किया जा सकता।

फिल्म के गीत व संवाद गुलजार ने स्वयं लिखे हैं। गीत तो कोई विशेष नहीं हैं, पर कहा जा सकता है कि फिल्म की सफलता का सारा दारोमदार इन संवादों पर है। ये चुटीले हैं, गंभीर हैं, मजाकिया हैं, खलाने वाले हैं। फोटोग्राफी भी सुंदर है और फिल्म के उद्देश्य को पकड़ने में सफल रही है। संगीत जरूर बेजान है और फिल्म पर बोझ है।

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़कियां, मुक्ता, रानी छांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● मैं और मेरा एक मनचला दोस्त कालिज के अहाते से बाहर आए ही थे कि सामने से एक खूबसूरत नवयुवती निकली. मेरा दोस्त संभल नहीं पाया और 'प्रेम कहानी' फिल्म का गाना गाने लगा, "तेरी याद आएगी तो हमतुम मिलेंगे..."

लड़की भी कम न थी. पीछे मुड़ कर वह जरा मुसकराती हुई बोली, "हमतुम मिलेंगे तब जूते पड़ेंगे..."

मैं लड़की की ओर देख कर जब पीछे मुड़ा तब तक मेरा दोस्त गायब था.

—वरगीस कुरियाकोस, आगरा कैंट

● एक दिन मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ घूम रहा था. रास्ते में हम सब की नजर एक लड़की पर पड़ी. लड़की को हमारा एक दोस्त नाम से जानता था. जब वह लड़की हमारे बगल से गुजरी तो वह लड़का बोला, "यू. एस. एच. ए., उपा." इतना सुनते ही लड़की अपनी चप्पल उतार कर बोली, "बी. ए. टी. ए., बाटा."

बस, फिर तो उस लड़के की शक्ल देखने लायक थी.

—ब. स. भाटिया, आविपुर कच्छ

● हमारी क्लास का एक लड़का मेरी सहेली को देख कर कोई न कोई फिल्मी गीत गाने लगता. एक दिन जैसे ही हम लोग क्लास में गए, वह लड़का उस की ओर देख कर गाने लगा, "हमतुम एक जंगल से गुजरें और शेर आ जाए."

मेरी सहेली ने तपाक से स्वर में स्वर मिलाते हुए उत्तर दिया, "शेर से मैं कहूं हम को छोड़ दे, तुम्हें खा जाए." यह सुनते ही पूरी क्लास ठहाका मार कर हंस पड़ी और वह लड़का तो इतना भेंपा कि उस दिन के बाद उस ने गाना तो दूर, उस की ओर देखना तक छोड़ दिया.

—रेखा सक्सेना, दतिया

● एक बार मैं अपने मित्र राजीव के साथ एक मित्र लड़की के यहां उस के जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित एक पार्टी में गया था. मित्र साहब अपने को बड़ा ही स्मार्ट समझते थे. उन की बुशर्ट पर हवाई जहाज व बेलबाटम पर रेल व बस आदि विभिन्न वाहनों के चित्र छपे हुए थे.

उन की इस विचित्र वेशभूषा को देख कर कुछ लड़कियां मंदमंद मुसकराने लगीं. मित्र महोदय ने स्मार्ट बनने के लहजे से कहा, "लगता है, आप ने कभी हवाई जहाज, रेल व बस इत्यादि नहीं देखे."

एक लड़की ने जवाब दिया, "जी नहीं, भाई साहब. हवाई जहाज व बस आदि तो बहुत देखे हैं, पर हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन व बस डिपो का इतना सुंदर संगम पहली ही बार देखने को मिल रहा है."

अब तो मित्र महोदय का मुखड़ा देखने ही लायक था.

—प्रदीपकुमार गोयल, लश्कर ●

सिंहगढ़ का

सन 1857 का रक्ताक्त वर्ष. भारत के भाग्याकाश में फिरंगी धूमकेतु की तरह उदय हो गए थे. वे मजबूत कदमों से भारत की छाती को आक्रांत कर रहे थे. उन की सेनाएं लूटपाट करती हुई समस्त भारत में छा गई थीं. अराजकता का साम्राज्य चहुं ओर फैला हुआ था. राजनीतिक क्षेत्र में भीषण उथलपुथल मची हुई थी.

इस देशव्यापी विप्लव में किसी का भी राज्य सुरक्षित नहीं था. कब किस को अपने राज्य से हाथ धोना पड़े तथा कब किस को पथ का भिखारी बनना पड़े, इस का कोई ठिकाना नहीं था. अंगरेजों के बढ़ते हुए कदम देख कर राजा, महाराजा, सामंत, जागीरदार, जमींदार तथा प्रजा सब का हृदय भय से आक्रांत था. विद्रोह की चिंगारी भड़क उठी थी. कुछ कायर गद्दार राजेमहाराजे अंगरेजों का साथ देने को तैयार थे और कुछ देशभक्त उन से मोर्चा लेने को कटिबद्ध थे.

राजस्थान में सिंहगढ़ एक सुदृढ़ तथा शक्तिशाली राज्य था. ठाकुर विक्रमसिंह उस के शासक थे. उन के अधीन अनेक छोटीमोटी जागीरें तथा इलाके थे जिन का संरक्षण वे भली भांति करते थे. वृद्ध होने पर भी वीरता उन में कूटकूट कर भरी हुई थी. उन के राज्य में प्रजा सुखी तथा संतुष्ट थी. सुव्यवस्था होने के कारण राज्य का प्रत्येक व्यक्ति अपने देश के लिए प्राणों की आहुति देने को तत्पर था.

पोलिटिकल एजेंट लारेंस की गिद्ध दृष्टि सिंहगढ़ के वैभव पर लगी हुई थी.



गौरव

जिस सिंहाद के लिए ठाकुरों
ने जान की बाजी लगा दी
थी, कुंवरजी उसी का सौदा
करने की तैयारी कर रहे
थे... सभी सन्न थे कि आगे
क्या होगा.



यदि सिंहगढ़ सिद्धि के द्वारा आर्य समाज के उद्धार के लिए हमारा प्रमुख उधर के सारे इलाके उस के अधिकार में आ जाएंगे, यह सोच कर वह उस पर विजय प्राप्त करने के लिए गुप्त रूप से फौज एकत्रित कर रहा था। लेकिन ठाकुर साहब की अदम्य वीरता के समक्ष उन पर चढ़ाई करने का साहस वह नहीं कर पा रहा था। इस के लिए उस ने जोधपुर नरेश से सहायता मांगी। देशद्रोही नरेश उसे सहायता देने को सहर्ष तैयार हो गया। उस के सहयोग ने लारेंस का हौसला बढ़ा दिया। फिर भी ठाकुर साहब के जीवित रहते उस की योजना का सफल होना नितांत असंभव था। इसलिए वह अनुकूल अवसर की वाट जोह रहा था।

गुप्तचर द्वारा सूचना मिलने पर कि पोलिटिकल एजेंट लारेंस आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है तथा जोधपुर का राजा उसे सहायता दे रहा है, देशभक्त ठाकुर विक्रमसिंह की भौंहों पर बल पड़ गए। वृद्धावस्था में भी उन की भुजाएं फड़कने लगीं। उन्होंने लारेंस से लोहा लेने की शपथ खाई तथा अपने राज्य के समस्त योद्धाओं को युद्ध करने को आमंत्रित किया।

उन के केवल एक पत्र पर अनेक देशभक्त राजा, सामंतगण तथा जागीरदार तुरंत आ कर उपस्थित हो गए। ठाकुर साहब अपने मंत्रणागृह में चितित मुद्रा में बैठे थे। समस्त वीरों की दृष्टि उन के तेजस्वी चेहरे की ओर लगी हुई थी। वे उन से आदेश पाने को अत्यंत उत्सुक थे। मंत्रणागृह में सन्नाटा छाया हुआ था। वातावरण तनावपूर्ण था।

ठाकुर विक्रमसिंह ने सब पर एक नजर डाली। फिर गंभीर तथा ओजस्वी वाणी में कहा, “शूरवीर भाइयो, आज हमारी स्वतंत्रता खतरे में है। फिरंगी लारेंस हमारे ऊपर आक्रमण कर के हमारी स्वतंत्रता छीनने को उद्यत है। हमारी वीरता की परीक्षा का समय अब निकट आ गया है। अपने देश की स्वतंत्रता तथा सिंहगढ़ का गौरव अक्षुण्ण

रखना ही इस समय हमारा प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए। हम सिंहगढ़ की धरती पर अंगरेजों को कदम कभी नहीं रखने देंगे, चाहे हमारे प्राण भले ही चले जाएं। बड़े ही दुख की बात है कि देशद्रोही जोधपुर नरेश हमारे विरुद्ध अंगरेजों से मिल गया है। हम उस की योजना कभी भी सफल नहीं होने देंगे। ऐसे देशद्रोही कायर को उस की गद्दारी की सजा हम अवश्य देंगे। क्या आप सब लोग हमारा साथ देने को तैयार हैं?”

विक्रमसिंह जोश में आ कर खड़े हो गए और उन की दृष्टि सब के चेहरों पर घूम गई। उन की गंभीर गर्जना से सभाकक्ष गूंज उठा था। क्षण भर में सैकड़ों तलवारें म्यान से बाहर निकल कर हवा में लहराने लगीं। सब ने अपनी-अपनी तलवारें चूम कर शत्रु से युद्ध करने की शपथ खाई। मंत्रणागृह घोर रव से प्रतिध्वनित हो उठा।

युवराज रणविजयसिंह ने भी पिता के समक्ष प्रतिज्ञा की कि जब तक वह फिरंगियों को पराजित नहीं कर देंगे तब तक समस्त भोगविलास से विरत रहेंगे। अपने पुत्र की वीरमूर्ति देख कर ठाकुर विक्रमसिंह की छाती फूल उठी। सब लोग युवराज की प्रशंसा में ‘धन्य-धन्य’ कह उठे। चिक की ओट में बैठी सुंदरी पद्मा ने कुंवरजी के चरणों में श्रद्धा के दो फूल और चढ़ा दिए। सभा भंग हो गई। राज्य भर में रणभेरी बज उठी।

वीरबाला पद्मा ठकुराइन के पीहर के एक संबंधी की अनाथ बालिका थी। वह बचपन से ही ठकुराइन के संरक्षण में पल कर बड़ी हुई। मातृहीना होने के कारण ठकुराइन का उस पर अपार प्रेम था। उन्होंने उसे पुत्रीवत् ही पाला था। उन्होंने उसे कुंवर के साथ ही साथ शिक्षित किया था तथा अस्त्रशस्त्र चलाने की भी शिक्षा दी। सुंदर शोख पद्मा कुशाग्रबुद्धि थी। थोड़े ही दिनों में वह समस्त कलाकौशल में पटु हो गई।

पद्मा ने कभी कल्पना भी न की थी कि उस के मनमंदिर
का देवता अंदर से ऐसा दानव निकलेगा... और उस ने
अपने प्रेम की आहुति देने के लिए हाथ में कटार उठा ली.

खिले कमल के समान रूप वाली प्रवीणा पद्मा शीघ्र ही राजमहल की शोभा बन गई. सब उसे प्यार करते थे. ठाकुर साहब का भी उस पर वात्सल्य भाव था. वह उस की वीरता पर मुग्ध थे.

बचपन से ही कुंवर के साथ खेली हुई पद्मा ने यौवन की देहरी पर पांव रखा. शैशव की भोली क्रीड़ाओं ने युवावस्था में दूसरा ही रूप धारण कर लिया. बालसखा कुंवर अब उस के आराध्यदेव बन गए. लेकिन उस ने अपने प्रणय को अपने हृदय तक ही सीमित रखा. उस की भलक तक उस ने अपने हाँठों पर न आने दी.

पद्मा बालविधवा थी. प्रेम करना उस के लिए वर्जित था. कुंवर उस के लिए आकाशकुसुम थे. फिर राजमर्यादाओं के बंधन में बंध कर वह अपनी बालसहचर पद्मा से प्रायः विलग ही हो गए थे. यदि उन के हृदय में पद्मा के प्रति कोई भाव आए भी तो अनुभवी ठकुराइन ने तुरंत भांप लिया और चटपट उन का विवाह एक सामंत की रूपवती कन्या से कर दिया.

युवराज अपनी नवपरिणीता के प्रेम में आकंठ डूब गए. भग्नहृदया पद्मा अपने अरमानों को फूल की माला के रूप में पिरो कर कुंवरांनी को सजाती और इस प्रकार अपने जलते हुए हृदय को ठंडक पहुंचाती थी.

कुंवर का साहचर्य खो कर पद्मा का जीवन सूना हो गया. जब वह अपनी ज्वाला से भीतर ही भीतर दग्ध हो रही थी, मातृतुल्य स्नेहमयी ठकुराइन का निधन हो गया. स्नेह का एक जो आधार शेष था वह भी उस से छिन गया. उन की मृत्यु से उस के हृदय को गहरा धक्का

लगा. अब अपने सूने हृदय की पीड़ा को दबा कर उस ने अपना सारा ध्यान देश के हित पर केंद्रित कर दिया.

बड़े ठाकुर साहब के संरक्षण में वह बड़ी तत्परता के साथ राज्य में घूमघूम कर सैन्यसंगठन करने लगी. उस का शौर्य और परिश्रम देख कर लोग दांतों तले उंगली दबाते थे. उस की कर्मठता, तत्परता तथा अदम्य साहस देख कर तरुण हृदय जोश से भर उठे. उस की प्रेरणा से घरघर सैनिक तैयार होने लगे. थोड़े ही समय में वह एक ज्वलंत दीप-शिखा के समान हो गई, जिस की लौ राजमहल की चारदीवारी से निकल कर पूरे सिंहगढ़ को प्रकाशित करने लगी.

लोग उसे देवीरूप में पूजने लगे. उस की तेजस्विता के समक्ष किसी को भी दृष्टि उठाने का साहस नहीं होता था. उस के एक इशारे पर राज्य के सभी लोग शत्रु से लोहा लेने को तैयार हो गए. ठाकुर साहब को अपनी पालिता पुत्री की नीतिकुशलता पर गर्व था. उन्हें उस से अनेक आशाएं थीं. उस के तथा युवराज के सहयोग से वह युद्ध की तैयारी में संलग्न हो गए. विजय की उन्हें पूरी आशाएं थी.

लेकिन ऐसे कुसमय में जब कि सिंहगढ़ के क्षितिज पर युद्ध के बादल मंडरा रहे थे और उस की स्वतंत्रता खतरे में थी, सहसा ठाकुर विक्रमसिंह का देहावसान हो गया. उन की असामयिक मृत्यु से राज्य भर में हाहाकार मच गया. सब के मुख पर केवल एक ही प्रश्न था— अब क्या होगा?

शासन की बागडोर कुंवर के हाथों में आ गई. पद्मा का हृदय शंका से भर उठा कि कहीं कुंवरजी युद्ध की तैयारी

न बंद कर दें। लेकिन जब कुंवरजी ने प्रजा को आश्वासन दिया कि वह प्राण रहते अपनी स्वतंत्रता अंगरेजों के हाथों न छिने देंगे तथा सिंहगढ़ के गौरव को अक्षुण्ण रखेंगे तो पद्मा का हृदय आश्वस्त हो गया और वह दूने उत्साह के साथ उन को सहयोग देने लगी। दोनों बड़ी लगन से सैन्यसंगठन करने में जुट गए।

लेकिन पोलिटिकल एजेंट लारेंस भी कच्ची गोली नहीं खेले हुए था। वह तो अवसर की ताक में था। ठाकुर विक्रमसिंह की मृत्यु से उस की बन आई। बड़े ठाकुर से वह डरता था। लेकिन कुंवरजी के तरुण हृदय को जाल में फंसाने में कितनी देर लेगी, यह सोच कर उस ने चारा फेंकना आरंभ कर दिया। इस के लिए उस ने अनेक षड्यंत्र रच कर राज्य के कुछ विश्वस्त दरबारियों को अपनी ओर फोड़ लिया और उन के द्वारा वोटलों में विदेशी मदिरा कुंवरजी के पास भेजने लगा।

पिता के कड़े शासन में दबी कुंवरजी की विलासी वृत्ति सहसा उमड़ पड़ी और उन्होंने उन की वीरोचित भावनाओं को दबा दिया। राजमद से कुंवरजी निरंकुश होने लगे। विदेशी मदिरा के प्रभाव से उन की बुद्धि भ्रष्ट होने लगी। वह सुरासुंदरी के मोह में डूबने लगे। ठाकुर साहब के कड़े शासन की शृंखला ढीली पड़ने लगी। चाटुकारों की बन आई।

युद्ध की तैयारियां समाप्तप्राय होने लगीं तथा सिंहगढ़ का गौरव सूर्य ढलने लगा। शासन की व्यवस्था बिगड़ने लगी। कुंवरजी का पतन देख कर पद्मा का वीर हृदय दुख से कराह उठा। उस ने उन्हें समझाने का बहुत प्रयत्न किया। कई बार चेतावनी भी दी। लेकिन सब व्यर्थ गया। शराब के नशे में वह पद्मा को भी अपने विलास का साधन बनाने को आतुर हो गए। जिस वीरमूर्ति को पद्मा अभी तक अपने हृदय में धारण किए हुए थी, उस का यह पतन देख कर वह घृणा से भर उठी। वह उन की वासनापूर्ण दृष्टि के

सामने जान से भी कतराने लगी। उस की समस्त आशाओं पर तुपारपात हो गया।

जब सिंहगढ़ को एक वीर शासक की आवश्यकता थी तब कुंवरजी के हाथों में तलवार की जगह मद्य का प्याला देख पद्मा उन की ओर से निराश हो गई। नारी पुरुष में वीरत्व देखने की अपेक्षा करती है, कायरता नहीं। उस ने अपने हृदय में प्रतिष्ठित कुंवरजी की मूर्ति को निकाल फेंका और अकेले ही सैन्यसंगठन करने में संलग्न हो गई।

अब वह गुप्तचर द्वारा कुंवरजी की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखने लगी। उन की एकएक बात का पता लगा कर वह वृद्ध मंत्री को अवगत कराने लगी। जब उस ने सुना कि कुंवरजी लारेंस की ओर मित्रता का हाथ बढ़ा रहे हैं तो क्रोध से वह पागल हो गई। साक्षात् चंडी का रूप धारण कर वह कुंवरजी के विलासकक्ष की ओर चल पड़ी। कुंवरणविजयसिंह मसनद पर अधलेटे सुरापान कर रहे थे। चाटुकारगण उन्हें घेरे हुए बैठे थे। हासपरिहास चल रहा था। नशे में धुत्त कुंवरजी का यह विकृत रूप देख कर पद्मा का हृदय कराह उठा—
कहां गई कुंवरजी की वह वीर तेजस्विनी मूर्ति जिसे उस ने सभाकक्ष में प्रतिज्ञा करते देखा था?

उस ने उग्र स्वर में पुकारा।
“कुंवरजी!”

पद्मा का कठोर स्वर सुन कर



कुंवरजी चौक पड़े और तब आये शराब तो तब सदा के लिए परतंत्रता की वेड़ी में जकड़ जाएगा. हाथ का यह प्याला फेंकिए और तलवार ग्रहण कीजिए."

कुंवरजी ने मदिरा का प्याला रख कर हंसते हुए कहा, "पद्मारानी, आज अचानक कृपा कैसी? मेरी रंगशाला का आज सौभाग्य है जो तुम ने इस में पदार्पण किया. मुझे पूरी आशा थी कि एक दिन तुम अवश्य मेरे पास आओगी. आओ, बैठो मेरे पास." उन की लुब्ध दृष्टि पद्मा के सुंदर मुख पर अटक गई.

पद्मा के नेत्रों से चिंगारियां निकलने लगीं. उस ने अत्यंत तिक्त स्वर में कहा, "कुंवरजी, होश में आइए. मैं आप के पास बैठने नहीं आई हूं. मैं तो आप को उस प्रतिज्ञा की याद दिलाने आई हूं जो आपने बड़े ठाकुर साहब के सामने की थी. क्या आप इतनी जल्दी अपनी प्रतिज्ञा भूल गए? अपने वंश के गौरव का आप को जरा भी खयाल नहीं है? जिस वंश के वीरों ने कभी किसी के सामने शीश नहीं झुकाया उसी वंश के हो कर आप अंगरेजों के दास बनने का विचार कर रहे हैं? धिक्कार है आप को! विदेशी शराब ने आप की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है. अब भी समय है, चेत जाइए. शत्रुओं से सिंहगढ़ के गौरव की रक्षा कीजिए, नहीं

तो तब सदा के लिए परतंत्रता की वेड़ी में जकड़ जाएगा. हाथ का यह प्याला फेंकिए और तलवार ग्रहण कीजिए."

भावावेश में पद्मा का मुख तमतमा उठा और सांस तेजी से चलने लगी. उत्तर की अपेक्षा में उस की दृष्टि कुंवर जी के चेहरे पर जा टिकी. लेकिन कुंवरजी ने जैसे कुछ सुना ही नहीं. वह तो उस के मुख के सौंदर्य का पान करने में लगे हुए थे.

उन्होंने मुसकरा कर कहा, "ठहरो, पद्मा, इतनी वाचाल मत बनो. क्रोध में तो तुम और भी सुंदर लगती हो. तुम्हारे मुख से ये निरर्थक बातें शोभा नहीं देतीं. कुछ सरसता की बात करो. इस नीरस बातों में क्या रखा है? आओ, हम दोनों मिल कर जीवन का आनंद लूटें. बीती बातें उठाने से क्या लाभ? मैं ने कोई प्रतिज्ञा नहीं की थी. मैं तो आराम से जीवन व्यतीत करने के लिए कल रात को ही लारेंस के साथ संधि के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने जा रहा हूं."

"क्या कहा?" पद्मा चीख उठी, "संधिपत्र पर हस्ताक्षर? नहीं, नहीं, यह मैं कभी नहीं होने दूंगी. तुम नीच, कायर, देशद्रोही हो. छिः, धिक्कार है तुम को!"

वह द्रुतगति से कुंवरजी के कक्ष से निकल गई और सीधे जा कर उस ने मंत्री को संधिपत्र की सूचना दी. वृद्ध मंत्री के मस्तक पर चिता की रेखाएं उभर आईं. उन्होंने तुरंत राज्य के देशभक्त

भेंपते क्यों हो...

भेंपते क्यों हो जो सरेताव कदम देखते हैं,
यह कोई और नहीं है तुम्हें हम देखते हैं.
उस की शामे गम पे सदेके हो मेरी सुबहे हयात,
जिस के महत्तम में तेरी जुल्फें परेशां हो गई.
वाइज, तेरी जबान से सुनता तो जिंके हूर,
इतना खयाल है कि कोई बदगुमां न हो.

—अजीज लखनवी

शूरवीरों को दुर्लक्ष कर भयभीत कर दिया। संधिपत्र के सम्बन्ध में गांधीजी ने कहा, "क्या आप सब का समाधान निकालने में वह लग गए। कुंवरजी से उन्हें ऐसे नीचतापूर्ण कार्य की आज्ञा कदापि नहीं थी।"

मंत्री ने गंभीर वाणी में कहा, "भाइयो, आज सिंहगढ़ का गौरव डूब रहा है। उस का रक्षक ही भक्षक बन कर अंगरेजों की उंगलियों के इशारे पर नाच रहा है और उन की दासता स्वीकार करने जा रहा है। कल रात कुंवरजी पोलिटिकल एजेंट के साथ संधिपत्र पर हस्ताक्षर करने जा रहे हैं। यह बात स्वयं उन्होंने पद्मा से कही है। हमें सोच कर कोई ऐसी योजना बनानी पड़ेगी जिस से यह संधि न हो सके। सिंहगढ़ की स्वतंत्रता अक्षुण्ण रखने के लिए हमें किसी भी हालत में कुंवरजी को रोकना है। इस के लिए हमें आप सब लोगों की सहमति चाहिए।"

कई स्वर एक साथ गूंज उठे, "हमारी पूर्ण सहमति आप के साथ है। हम आप का साथ देने को तैयार हैं।"

मंत्री ने आश्वस्त हो कर पद्मा से कहा, "बेटी पद्मा, तुम एक वीरांगना हो, वीरता तुम्हारी रगरग में व्याप्त है। क्या सिंहगढ़ की रक्षा के लिए तुम कोई त्याग कर सकती हो? इतना साहस है तुम में?"

"आज्ञा दीजिए, मंत्रिवर। मैं अपने देश के लिए प्राण तक उत्सर्ग कर सकती हूं। आप जो भी कार्य मुझे सौंपेंगे, मैं उसे जीजान से करने को प्रस्तुत हूं। मैं आप के समक्ष प्रतिज्ञा करती हूं।"

"तो सुनो," मंत्री ने गंभीर स्वर में कहा, "इस से पहले कि कुंवरजी संधिपत्र पर हस्ताक्षर करें, उन्हें इस संसार से कूच कर जाना चाहिए। उन के जीवित रहते सिंहगढ़ की रक्षा होना नितांत असंभव है। वह देशद्रोही तथा गद्दार हैं। उन्हें हमें रास्ते से हटाना ही पड़ेगा, और यह गुरुतर कार्य मैं, पद्मा बेटी, तुम्हें सौंपता हूं। तुम्हीं इस कार्य को कर सकोगी।" फिर उन्होंने उपस्थित लोगों को

संकेतित किया कि वे सब लोग "हां" कहें।

सभा में सन्नाटा छा गया। कुछ ने हुंकारी भरी और कुछ मौन बैठे रहे। पद्मा का मुख विवर्ण हो गया। वह विचारों में डूब गई, "कुंवरजी की हत्या! और वह भी मेरे द्वारा? नहीं, नहीं।" वह प्रस्तर प्रतिमा की भांति खड़ी रह गई। मंत्री गूढ़ दृष्टि से उस के चेहरे के उतार-चढ़ाव को देखते रहे। आज उन्हें विश्वास हो गया कि पद्मा वास्तव में कुंवरजी से प्रेम करती है।

उन्होंने उग्र स्वर में कहा, "पद्मा, चुप क्यों हो? उत्तर क्यों नहीं देती? क्या यही तुम्हारा देशप्रेम है? क्या तुम अपनी की हुई प्रतिज्ञा भूल गई? तुम्हारी तो नसनस में देशभक्ति की धारा संचरित हो रही है, फिर यह असमंजस क्यों? क्या तुम विचलित हो गई? देश-प्रेम हृदय के प्रेम से कहीं ऊंचा होता है। तुम्हें अपने प्रेम की आहुति देनी ही पड़ेगी।"

पद्मा का शरीर कांप उठा। वह उलझन में पड़ गई। जिस व्यक्ति को कभी हृदयमंदिर में प्रतिष्ठित किया था, उसी का अपने हाथों वध! नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकेगा।

वह मौन खड़ी रही।

"पद्मा, क्या सोच रही हो? कुछ उत्तर तो दो। क्या तुम ने झूठी शपथ खाई थी? वीरांगनाएं अपने पथ से कभी विचलित नहीं होतीं—यह तुम क्या नहीं जानती हो?"

मंत्री की कठोर वाणी सुन कर पद्मा की चेतना लौट आई—वह एक वीर नारी है। उस का कर्तव्य देश की रक्षा करना है।

अपने शुष्क होंठों पर जीभ फेर कर उस ने संयत वाणी में कहा, "मंत्रिवर, सिंहगढ़ की रक्षा के लिए मैं यह दुस्तर कार्य भी करने को प्रस्तुत हूं।"

सभाकक्ष पद्मा की जयजयकार से प्रतिध्वनित हो उठा।

वह रात भी कितनी भयानक थी जब कुंवरजी पोलिटिकल एजेंट लारेंस के साथ संधिपत्र पर हस्ताक्षर करने वाले थे। पद्मा के जीवन की साधों की वह अंतिम रात थी। उस रात पद्मा ने अपना अपूर्व शृंगार किया। बहुत दिनों बाद उस ने आभूषण पहने, चमचमाता लहंगा पहना, फूलों से अपनी वेणी सजाई तथा झिलमिल करते अवगुंठन में अपने अपूर्व सौंदर्य को छिपा कर अभिसारिका के रूप में वह कुंवरजी के विलासकक्ष की ओर चल दी। मंथर गति से उस ने कक्ष में प्रवेश किया। लारेंस के दूत की प्रतीक्षा में कुंवरजी अकेले बैठे मदिरापान कर रहे थे और बेचैनी से बारबार द्वार की ओर देख लेते थे। अपूर्व शृंगार किए एक अवगुंठनयुक्त नारी को देख कर वह एकदम चकित हो गए तथा उठ कर खड़े हो गए।

कौन है यह रहस्यमयी रमणी, जो इंद्र की अप्सरा की तरह उन के कक्ष में अवतरित हो गई—वह विस्फारित नेत्रों से उसे देखने लगे। पद्मा आगे बढ़ी। कक्ष में सुगंध की लहर व्याप्त हो गई। पद्मा मदहोश सी आगे बढ़ती गई और कुंवरजी के निकट आ कर खड़ी हो गई। विस्मय-विभ्रम कुंवरजी उसे अपलक देखते रहे। “सुंदरी, तुम कौन हो? कहां से आई हो? तुम्हें किस ने भेजा है?” प्रश्न पर प्रश्न कुंवरजी करते गए।

पद्मा ने धीरे से अपना घूंघट उलट

दिया। कुंवरजी चौंक कर दो कदम पीछे हट गए।
पद्मा! तुम यहीं? इस वेश में? नहीं, नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता।
“हां, मैं。” कहती हुई पद्मा और निकट आ गई।

“पद्मा, क्या सचमुच आज तुम मेरी चिरसंचित अभिलाषा पूर्ण करने आई हो?”

“हां, कुंवरजी। आज मैं अपनी चिरपिपासा शांत करने तुम्हारे पास आई हूं। मैं तुम से प्रेम करती थी न。”

उस का सुगंधित श्वास कुंवरजी को व्याकुल करने लगी। “तो आओ, पद्मा。” उन्होंने बांहें फैला दीं। पद्मा यंत्रचालित सी उन की बांहों के घेरे में आबद्ध हो गई। क्षण भर के लिए उस की चेतना लुप्त हो गई। वह अपने को भूल गई। सारे संसार को भूल गई। इन्हीं भुजाओं के सहारे की तो कभी उस ने कामना की थी! लेकिन नहीं, अब नहीं... उस की चेतना लौट आई—“ये भुजाएं अब केवल मदिरा का प्याला उठाने को रह गई हैं। इन का बल तिरोहित हो गया है। कुंवरजी कायर हैं। जो कार्य मुझे सौंपा गया है वह मुझे पूरा करना ही है। देशद्रोही को रास्ते से हटाना ही है।” उस ने दांत भींच लिए। सहसा बिजली सी चमकी और कटार कुंवरजी के कलेजे के पार हो गई।

कदम से उन की...

वोह तसवीर आज तक महफूज है चश्मे तसव्वुर में,
तेरे बचपन से जब अठखेलियां करता शबाब आया।
हुए हंगामाहाए हश्र कितने गोशए दिल में,
वोह मेरे सामने कुछ इस अदा से बेनकाब आया।
वोह आए सेरे दरिया के लिए तो बिछ गई मौजें,
कदम से उन की अपनी आंख मलते हर हुबाब आया।

—रियाज खैराबादी

“पद्मा गूढ़ बना किया।” कुंवरजी के मुख से निकली चौत्कार से विलासकक्ष गुंज उठा। वह निर्जीव हो कर पृथ्वी पर गिर पड़े। आश्चर्य से उन के नेत्र फटे रह गए।

कुंवरजी की हत्या करने के पश्चात उद्भ्रांत... अपने प्रेम की आहुति दे कर तीर सी भाग निकली।

युद्ध छिड़ गया। पद्मा लारेंस की सेना से, जिस का संचालन जनरल वाटसन कर रहे थे, जूझ पड़ी। उस की वीरता तथा अदम्य साहस के समक्ष फिरंगियों के पैर उखड़ने लगे। मारती, काटती, शत्रुओं को चीरती हुई वीरवाला पद्मा जनरल वाटसन के पास पहुंच गई

और तलवार के एक हाथ से ही उस का काम तमाम कर दिया। जनरल वाटसन के मरते ही शत्रुसेना में भगदड़ मच गई। विजयश्री पद्मा के हाथ रही।

लेकिन भागते हुए शत्रुओं ने पद्मा के शरीर को गोलियों से भून डाला। वीरांगना पद्मा धराशायी हो गई लेकिन उस के मुख पर विजय का गर्व था और संतोष की छाया। अपने प्रेम तथा प्राणों की आहुति दे कर उस ने सिंहगढ़ के गौरव की रक्षा कर ली। उस की स्वतंत्रता अक्षुण्ण ही रही।

आज भी वीरांगना पद्मा के त्याग, अपूर्व साहस तथा वलिदान की कहानी सिंहगढ़ के ध्वंसावशेषों के कणकण में व्याप्त है।

कितना महंगा धर्म

रिप्रिंट सेट

सरिता जन्म से ही हिंदू समाज की कुरीतियों, आडंबरों और अंधविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाती आई है। अपनी सत्ता हाथ से निकलते देख पंडेपुजारी और धर्म के ठेकेदार सदा ही सरिता को कुचलने का यत्न करते आए हैं।

सरिता के 15 दिसंबर, 1965 अंक में प्रकाशित सखा बोरड़ के लेख 'कितना महंगा धर्म' पर अनेक आपत्तियां उठाई गई थीं। सरकार ने संपादक और लेखक पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप लगा कर मुकदमा दायर किया था जिसे दिल्ली के सहायक सेशन जज द्वारा खारिज कर दिया गया है।

अब, 'कितना महंगा धर्म' लेख से संबंधित निम्नलिखित रिप्रिंट उपलब्ध हैं।

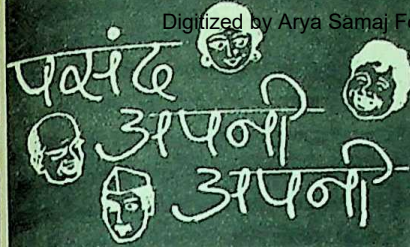
'कितना महंगा धर्म' : मूल लेख

'कितना महंगा धर्म' : आपत्तियों और आलोचनाओं का उत्तर

'कितना महंगा धर्म' : मुकदमे का निर्णय

प्रत्येक का मूल्य 35 पैसे, पूरा सेट 75 पैसे के डाक टिकट या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें।

दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.



इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए।
सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तक
पुरस्कार में दी जाएगी। इस अंक के पुरस्कार
विजेता श्री अमृतलाल, इंदौर, हैं।
भेजने का पता : पसंद अपनी अपनी, मुक्ता,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● एक सैनिक (दूसरे सैनिक से) : जानते हो, मेरी रगों में इटालियन खून है?
दूसरा सैनिक : मां की ओर से या पिता की ओर से?

पहला सैनिक : ब्लड बैंक से.

● प्रेमिका : अगर एक बार तुम यह सब कुछ फिर कह दो तो मैं हमेशा के लिए
तुम्हारी हो जाऊंगी.

प्रेमी : चेतावनी के लिए धन्यवाद.

—नीरू मलिक, नई दिल्ली

● एक सज्जन अपने मित्रों के बीच काफीहाउस में बैठे अपने लुट जाने की
दास्तान सुना रहे थे, "मैं अपनी कार में सवार जंगल से गुजर रहा था कि कुछ
बाकुओं ने मुझे आ घेरा और मेरे पास के सभी रुपए, घड़ी और कार छीन कर वे
चंपत हो गए."

इतने में उन का एक मित्र बोला, "किंतु मेरा तो खयाल था कि तुम्हारे पास
पिस्तौल भी थी."

"थी, निश्चित रूप से थी. लेकिन उस पर उन लोगों की नजर न पड़ सकी."

—मुरलीधर, जोधपुर

● देहाती दर्शक : एक टिकट फर्स्ट क्लास का दे दो.

बुकिंग क्लर्क : हाउस फुल है.

देहाती दर्शक : तो, लाओ, वही दे दो. कितने पैसे दूँ? —सुशीलकुमार, हावड़ा

● तीन जीवन बीमा कंपनियों के एजेंट अपनी अपनी कंपनी की तारीफ कर रहे थे.

पहला : अजी, साहब, हमारी कंपनी तो मृत्यु के बाद 15 दिनों में ही भुगतान
कर देती है.

दूसरा : क्या बात करते हैं, साहब? हमारी कंपनी तो आठ दिनों में ही भुगतान
कर देती है.

तीसरा : रहने दीजिए, साहब. हमारी कंपनी इतनी जल्दी भुगतान करती है कि
आप मानेंगे नहीं. हमारी कंपनी का दफ्तर दूसरी मंजिल पर है. एक व्यक्ति, जिस
का जीवन बीमा था, चौथी मंजिल पर रहता था. वह एक बार ऊपर से नीचे गिरा.
गिरते समय जब वह दूसरी मंजिल से गुजरा, हम ने उस के हाथों में चैक थमा दिया.

—अमृतलाल, इंदौर

● कुली : आप पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने मुझे चार आने दिए.

सेठ (गर्व से) : यह तो हमारी उदारता है.

कुली : नहीं, सेठजी. और लोग मुझे आठ आने देते हैं.

● डायरेक्टर : देखो, इस पहाड़ी से तुम्हें नीचे कूदना है.

हीरो : अगर मैं मर गया तो?

डायरेक्टर : कोई बात नहीं. यह फिल्म का आखिरी दृश्य है.

—मुलक्षणा मलहोत्रा, नई दिल्ली ●

के स्टेशन पर रुकी. एक आदमी चमड़े का काला बैग बगल में दबाए गाड़ी से उतरा और तेज कदमों से शहर की मुख्य सड़क की तरफ बढ़ा. दूसरे लोग जो गाड़ी से उतरे, वे या तो स्टेशन के जलपानगृह की तरफ चले गए या 'सिलवर डालर सैलून' में, या स्टेशन के आसपास चहलकदमी करने वाले लोगों में मिल गए.

काले बैग वाले आदमी की चाल में तनिक भी अनिश्चितता नहीं थी. वह कद में नाटा था, मगर उस की काठी मजबूत थी. बाल छोटे और हलके रंग के, चेहरा धिकना और दृढ़. नाक पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा. वह बहुप्रचलित पूर्वी

शुरू होता था, लेकिन कर्मचारी आ गए थे और अपनेअपने विभाग का काम संभाल रहे थे. खजांची अपनी डाक देख रहा था. जब उस का ध्यान खिड़की के बाहर खड़े हुए अजनबी की तरफ गया तो उसने संक्षेप में कहा, 'बैंक नी बजे से पहले नहीं खुलता,' और अपने काम में लग गया. इस तरह के जवाब उसे अक्सर ही देने पड़ते थे.

"मुझे यह मालूम है," अजनबी ने अत्यंत शांत और स्थिर स्वर में कहा. "क्या आप मेरा कार्ड देखने का कष्ट करेंगे?"

खजांची ने खिड़की के सीखचों के

सैनरोजरियो के दोस्त

शैली के कपड़े पहने था. उस की मुद्रा स्थिर किंतु सजग मनोस्थिति का आभास दे रही थी, यद्यपि उस में स्वामित्व का आतंक नहीं था.

तीन चौक पार करने के बाद वह शहर के व्यापारिक केंद्र के बीचोंबीच आ गया. यहां एक दूसरी सड़क, जो व्यापारिक स्थल होने के कारण अपना महत्त्व रखती है, मुख्य सड़क को काटती है. यह चौराहा इसलिए सैनरोजरियो के व्यापार का केंद्र बन गया है. इस के एक सिरे पर पोस्ट आफिस है और दूसरे पर रूबेंसकी की कपड़े की दुकान. अन्य दो सिरों पर दो बैंक हैं, फर्स्ट नेशनल और स्टार्कमेंस नेशनल.

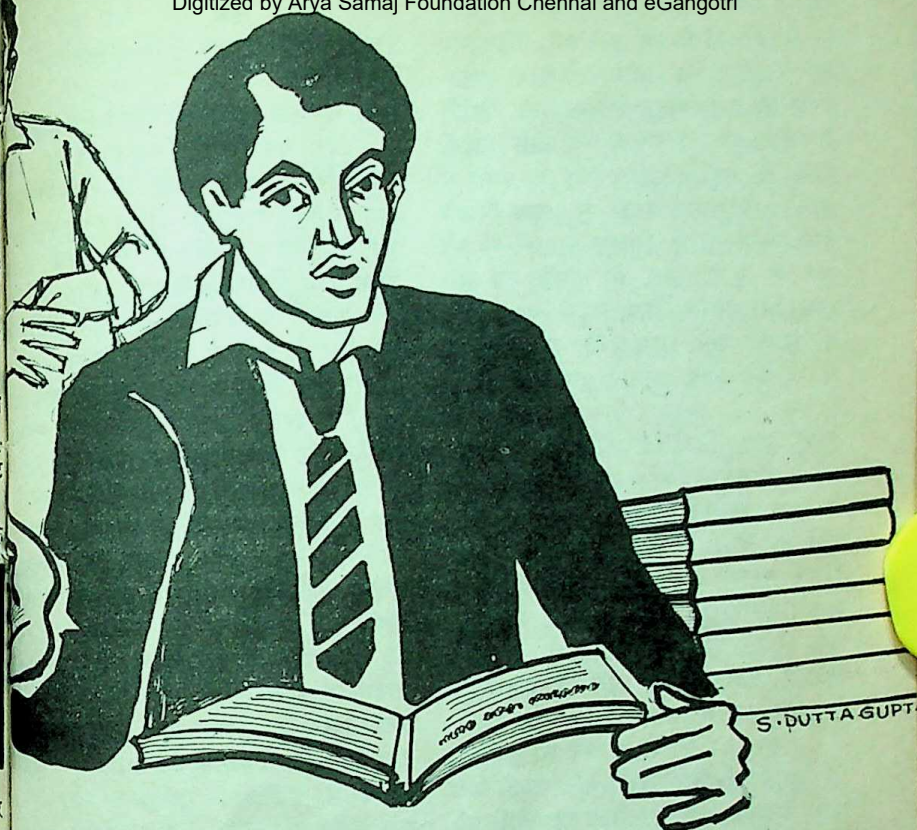
तेज चाल से चलता हुआ नवागंतुक सैनरोजरियो के फर्स्ट नेशनल बैंक में घुसा. जब तक वह खजांची की खिड़की के पास नहीं पहुंच गया, उस ने अपनी चाल धीमी नहीं की. बैंक का कारोबार नौ बजे

बीच से उस का कार्ड लिया. उस पर लिखा था : "जे. एफ. सी. नेटिलविक, नेशनल बैंक निरीक्षक."

"अरे, आप!" खजांची कार्ड पढ़ते ही चौंका. "क्या आप अंदर तशरीफ लाइएगा? श्री नेटिलविक, आप पहली बार आए हैं, इसलिए आप को कष्ट हुआ. कृपा कर के अंदर आ जाइए."

नेटिलविक जैसे ही अंदर दाखिल हुआ, अर्धे उमर के गंभीर और सुसंस्कृत खजांची एडलिगर ने बैंक के प्रत्येक कर्मचारी का उस से परिचय कराया.

"हमारा खयाल था कि इस बार निरीक्षण करने श्री सैम टर्नर ही आएंगे, क्योंकि पिछले चार सालों से वही आ रहे हैं. व्यापार में आजकल मंदी है, मगर हम समझते हैं, आप सब हिसाब ठीक पाएंगे. नकद पूंजी इस वक्त हमारे पास अधिक नहीं है, फिर भी वह आड़े वक्त के लिए काफी है," एडलिगर ने कहा.



“हां, कंट्रोलर के हुक्म के मुताबिक
ह मेरे इलाके में गए हैं और मैं यहां
बाया हूं,” निरीक्षक ने कहा, “कोई
पुतराज न हो तो पहले मैं नकदी देखना
चाहूंगा.”

पैरी डोरसे, जो नकदी का हिसाब
रखता था, जानता था कि कहीं एक पाई
को भी चुक नहीं है, इसलिए डरने की
उस के लिए कोई बात न थी. मगर वह
फिर भी हड़बड़ा गया. वह नकदी को

तरतीब से निरीक्षण के लिए काउंटर पर
रखने लगा. निरीक्षक में कुछ ऐसी फुरती
और कुछ ऐसी निरपेक्षता थी कि उस के
सामने पहुंचते ही धकधक होने लगती थी.
मालूम होता था, उस की तीखी नजर से
कोई भी गलती छूटना असंभव है और न
वह खुद ही कोई गलती कर सकता है.

नेटिलविक ने तुरंत देखतेदेखते नकदी
की गड़िड़ियां जांचीं और बिलों के साथ
उन का मिलान किया. उस की पतली-

काउंटर पर निरीक्षक के पहुंचते ही बैंक में सनसनी
फैल गई...अध्यक्ष मेजर टाम के चेहरे पर हवाइयां
उड़ने लगीं...तभी चपरासी उस के हाथ में एक
कागज दे गया...

पतली उंगलियाँ तेजी से जड़ रही थीं। उस ने सोने के सिक्कों की थैली काउंटर पर पटक दी तो सिक्के बज उठे। फिर जब वह रेजगारी पर आया तो सारा वातावरण ही झनझनाहट से गुंज उठा। चांदी के बोरे उस ने तराजू पर तोले। बीच-बीच में वह हर कैशमीरो के संबंध में डोरसे से पूछता जाता था। कुछ पिछले चैंकों और चार्ज स्लिपों के बारे में भी उस ने पूछा। उस के पूछने का ढंग हालांकि अत्यंत शिष्टतापूर्ण था, मगर डोरसे का मुंह सूखा हुआ था और वह जवाब देते वक्त हकलाने लगता था।

यह नया निरीक्षक सैम टर्नर से बिलकुल भिन्न था। सैम इतमीनान के साथ सिगार पीते हुए आते थे और दौरे के दिनों में सुनी हुई नई नई कहानियाँ सुनाया करते थे। डोरसे को अभिवादन करते हुए वह मजाकिया लहजे में कहा करते थे, “क्या हाल है, दोस्त? दिखाई दे रहा है कि अब तक तुम यहां से गबन कर के भागे नहीं।”

टर्नर का नकदी जांचने का तरीका भी दूसरा ही था। नोटों की गड्डी पर एक अनुभवी व्यक्ति की तरह उगलियाँ चला दीं और सिक्कों की एकदो थैलियों को ठोकर मार दी। बस, जांच खत्म हो गई। रेजगारी को तो वह हाथ तक न लगाता था। उस पर नजर मारने तक की वह जरूरत न समझता था। और जब उस के सामने खाने के लिए चूजे पेश किए जाते, तो वह कहने लगता, “मेरे लिए चूजों की क्या जरूरत है? मैं मुर्गीपालन विभाग में तो हूँ नहीं।” टर्नर टेक्सास का रहने वाला था, साथ में बैंक के अध्यक्ष का पुराना दोस्त भी था। डोरसे को वह बचपन से जानता था।

जिस समय निरीक्षक नकदी गिन रहा था, फर्स्ट नेशनल बैंक के अध्यक्ष मेजर टामस बी. किंगमैन की काले घोड़ों वाली बग्घी बगल के दरवाजे के सामने रुकी। किंगमैन को लोग मेजर टाम के नाम से जानते थे। वह अंदर आए। एक

नजर उन्होंने व्यस्त निरीक्षक पर डाली, फिर अपनी मेज पर आ गए और चिट्ठियाँ देखने लगे।

इस से कुछ ही पूर्व वहां एक घटना घट चुकी थी, जिसे निरीक्षक की तेज आंखें न पकड़ पाई थीं। निरीक्षक जिस समय नकदी के काउंटर पर व्यस्त था, एडलिंगर ने बैंक के नौजवान चपरासी राय विलसन की तरफ आंख मारी और सामने के दरवाजे की तरफ थोड़ा सा सिर हिला कर इशारा किया। राय बात समझ गया। अपना टोप हाथ में उठा, रजिस्टर बगल में दबा कर स्वाभाविक ढंग से बाहर निकल गया।

वह जल्दीजल्दी स्टाकमेंस नेशनल बैंक में पहुंचा। हालांकि लेनदेन शुरू होने का वक्त हो रहा था, मगर अभी वहां ग्राहक नहीं आए थे। राय ने पहुंचते ही कहा :

“आप लोग जल्दीजल्दी संभल जाइए। कोई नया बैंक निरीक्षक आया है। पक्का घाघ है। हमारे यहां पाईपाई गिन रहा है। ऐसे अचानक आ टपका कि सब को चकमा दे दिया। एडलिंगर साहब ने मुझे यह सब बताने को भेजा है।”

स्टाकमेंस नेशनल बैंक के अध्यक्ष थे बकले। वयोवृद्ध और मजबूत काठी के गिरजाघर जाने के लिए सजेबने जमींदार से लगते थे। उन्होंने अपने प्राइवेट दफ्तर से राय की आवाज सुनी, तो उसे बुलाया।

“क्या मेजर किंगमैन बैंक में आ गए हैं?” उन्होंने पूछा।

“हां, साहब। जब मैं यहां के लिए चला था, वह आ गए थे।”

“मैं चाहता हूँ, तुम जा कर उन्हें जल्दी से जल्दी मेरी एक चिट्ठी दे दो। सिर्फ उन्हीं के हाथ में देना।”

बकले ने जल्दीजल्दी एक चिट्ठी लिखी और राय को दे दी।

बैंक लौटते ही राय ने वह चिट्ठी मेजर किंगमैन के सामने पेश कर दी। मेजर ने उस चिट्ठी को पढ़ा, फिर उसे

टाम की कहानी के साथ

निरीक्षक की उत्सुकता भी

बढ़ती जा रही थी...

लेकिन अंत में निरीक्षक

हैरान रह गया कि इस

कहानी का उद्देश्य क्या था?

मोड़ कर वास्कट की जेब में रख लिया। कुछ क्षणों तक वह अपनी कुरसी पर लटी हुई स्थिति में रहे, जैसे किसी गहरे विचार में हों, फिर उठे और खजाने में चले गए। वहां से वह चमड़े की एक पुरानी और मोटी फाइल ले कर लौटे। उस फाइल के पीछे चमकदार अक्षरों में लिखा हुआ था : 'डिस्काउंटेड विल्स।' उस में बंधकों सहित वे विल थे जिन का भुगतान बैंक को होना था। मेजर ने विलों का गूठर अपनी मेज पर पटक दिया और उन को छांटने लगा।

इस समय तक नेटिलविक नकदी की जांच खत्म कर चुका था। आंकड़ों के कागजों पर उस की पेंसिल तेजी से दौड़ रही थी। अपना काला बैग खोल कर उस ने कोई गुप्त नोटबुक निकाली, जल्दीजल्दी उस में कुछ आंकड़ों दर्ज किए और डोरसे की तरफ मुड़ा। उस के चश्मे की चमक से डोरसे की सांस जैसे क्षण भर को रुक गई। उसे ऐसा लगा मानो उस से कहा जा रहा हो कि इस बार तो तुम सुरक्षित हो, लेकिन..."

"नकदी सब ठीक है," निरीक्षक ने निरपेक्ष भाव से कहा और वह दूसरे ही क्षण ग्राहकों का खाता रखने वाले बुक-कीपर (मुनीम) के पास जा पहुंचा। कुछ मिनटों तक खाते के पन्ने और चिट्ठे हवा में फड़फड़ाते रहे।

अकस्मात् ही उस ने बुककीपर से पूछा, "पासबुकों की बाकी कितने दिनों में निकालते हो?"

बुककीपर घबरा गया। जल्दीजल्दी

"ठीक," निरीक्षक ने कहा और वह जनरल बुककीपर की तरफ मुड़ा, जो विदेशी बैंकों के चिट्ठे तैयार रखे था। वे चिट्ठे उस ने ठीक पाए। इस के बाद जमा के सर्टिफिकेटों की बारी आई। उन्हें उस ने फटाफट देखा। फिर ओवरड्राफ्ट्स (उधार) और अनसाइंड बिल (हुंडियां), सब को उस ने सही पाया।

अब खजांची की बारी आई। लेनदेन, मुनाफे, बैंक की जायदाद और हिस्सों के संबंध में किए गए सवालियों की चौखार से एडलिंगर भी कुछ हड़बड़ा गया। उस ने अपनी नाक मली और चश्मे के शीशों को साफ करने लगा।

तभी नेटिलविक को अपने पास एक लंबेतगड़े आदमी का अनुभव हुआ। उस में रूखापन था। करीब साठ की उमर, खिचड़ी दाढ़ी, सिर पर घने और भूरेबाल और तेज आंखें, जो निरीक्षक के चश्मे की चमक के सामने भी नहीं झपकीं।

उस व्यक्ति को देखते ही खजांची ने चौंक कर नेटिलविक से कहा, "यह हैं बैंक के अध्यक्ष मेजर किंगमैन।"

और फिर दो भिन्न स्वभाव के व्यक्तियों ने हाथ मिलाए। एक आज की सभ्यता का पूर्ण सुसंस्कृत व्यक्ति था, दूसरा सुसंस्कृत होने से कहीं अधिक प्रकृति के नजदीक था। मेजर किंगमैन मवेशियों का व्यापारी था। वह किसी समय मवेशी चराया करता था। घुड़सवार सेना में सिपाही रहा था। जिले का हाकिम भी वह कुछ समय तक रहा। बाद में उसे फर्स्ट नेशनल बैंक संगठित करने में भी सफलता मिली.. यद्यपि अपने दोस्तों के प्रति उस की दरियादिली कभीकभी हद पार कर जाती थी, मगर फिर भी उस का धंधा पनप रहा था। पिछले कुछ सालों से मवेशियों के व्यापार में मंदी आ रही थी, फिर भी मेजर साहब का बैंक उन गिनेचुने बैंकों में था। जिन्हें

निरीक्षक ने जेब से घड़ी निकालते हुए तेजी से कहा, “अब सिर्फ कर्ज के कागज देखना बाकी है. मैं उन्हें इसी समय देखना चाहूंगा, अगर आप लोगों को कोई कष्ट न हो.”

उस ने कमाल की फुरती से बैंक का निरीक्षण निबटाया था, मगर उस निरीक्षण में कहीं भी चूक नहीं थी. आध घंटे में अगर वह कर्ज और डिस्काउंट भी देख ले तो लगे हाथ शहर के दूसरे बैंक का भी निरीक्षण किया जा सकता था और II-45 की गाड़ी पकड़ी जा सकती थी. रात को वह रुकना नहीं चाहता था. अगले दिन इतवार था. इसी से वह जल्दी कर रहा था.

“मेरे साथ आइए,” मेजर किंगमैन ने उस से गंभीर और मित्रतापूर्ण स्वर में कहा, “हम उन्हें अभी निबटाए लेते हैं. उन कागजों को जितना मैं जानता हूँ, उतना कोई दूसरा नहीं. कुछ की टांगें थोड़ी लड़खड़ाती हैं, कुछ पर काफी मुहरें नहीं लगी हैं, पर जब वसूल करने का समय आएगा, सब खरे हो जाएंगे.”

दोनों अध्यक्ष की मेज पर आ गए. निरीक्षक ने दस्तावेजों को तेजी से देखना शुरू कर दिया. उन दस्तावेजों का वह खातों से मिलान भी करता जाता था. फिर उस ने बड़े कर्जों के कागजों को उठाया. बीचबीच में उन के बंधकों या जमानत देने वालों के बारे में पूछताछ की. जिस तरह शिकारी कुत्ता शिकार की गंध पा कर चौकन्ना हो कर झपट पड़ता है, उसी तरह उस ने उन कागजों को कई बार उलटापलटा. अंत में उस ने कुछ कागजों को अलग निकाल कर तरतीब से अपने सामने रख लिया, बाकी को एक तरफ खिसका दिया और कहा :

“मवेशियों के व्यापार की मंदी और खराब फसल को देखते हुए आप के बैंक की हालत काफी अच्छी है. दफ्तर की व्यवस्था ठीक है. सारा काम ठीक तरह

है कि बड़े-बड़े कर्ज वसूल कर लिए जाएं और जब तक व्यापार की स्थिति सुधरती नहीं है, दो या तीन माह से अधिक के लिए कर्ज न दिए जाएं, और हां, एक बात और. ये लगभग 40,000 डालर के कर्जों के दस्तावेज हैं. जैसा कि इन पर लिखा हुआ है, इन के साथ 70,000 डालर के बंधक होने चाहिए. शायद आप ने उन्हें तिजोरी या खजाने में रख दिया है. क्या आप उन्हें दिखा सकेंगे?”

मेजर टाम ने स्थिर दृष्टि से निरीक्षक की तरफ देखा और धीमे किंतु दृढ़ स्वर में कहा, “नहीं, साहब, न तो वे तिजोरी में हैं और न खजाने में. उन्हें मैं ने निकाल लिया है. उन के लिए आप मुझे जिम्मेदार ठहरा सकते हैं.”

नेटिलविक ने अपने शरीर में हलकी सी सनसनी महसूस की. उस ने कभी सोचा भी न था कि आसानी से निबटता हुआ काम अंत में इतना गंभीर रूप धारण कर लेगा.

“ओह!” क्षण भर वह रुका, फिर बोला, “क्या आप अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने की कृपा करेंगे?”

“बंधकों को मैं ने निकाल लिया है.” मेजर ने दोहराया, “अपने व्यक्तिगत काम के लिए नहीं, बल्कि एक पुराने दोस्त को बचाने के लिए. कृपा कर के मेरे प्राइवेट कमरे में चलिए. वहां हम इस बारे में बात करेंगे.”



वह निरीक्षक को बैंक के पाइवर कमरे में ले गया और दरवाजा बंद कर लिया. उस कमरे में एक डेस्क था, एक मेज और करीब आधे दर्जन गद्देदार कुर्सियाँ थीं. एक दीवार पर पाँच फुट के सींग वाले बारहसिंगे का सिर टंगा था. उस के ठीक सामने दूसरी दीवार पर मेजर की वह तलवार लटकी थी जिस से वह शीलोह और फोर्ट पिलो के युद्धों में लड़ा था.

नेटिलविक के लिए एक कुर्सी रखते हुए मेजर उस खिड़की के पास बैठा जहाँ से पोस्ट आफिस और स्टॉकमेंस नेशनल बैंक का नक्काशीदार पत्थर का दरवाजा दिखाई देता था. कुछ देर वह चुप रहा. नेटिलविक को लगा कि खामोशी तोड़ने के लिए उसे ही पहले कुछ कहना होगा. इसलिए वह बोला :

“आप जानते ही होंगे कि बंधकों का गायब होना एक गंभीर बात है. यह भी आप को पता होगा कि मेरा कर्तव्य मुझे क्या करने को मजबूर करता है. मुझे संयुक्त राज्य कमिश्नर के पास जाना होगा और...”

“हां, हां, मैं जानता हूँ,” मेजर टाम ने हाथ हिलाते हुए कहा, “क्या आप समझते हैं, मैं कायदेकानून जाने बिना ही बैंक चला रहा हूँ? आप अपना कर्तव्य कीजिए. मैं आप से रहम की भीख नहीं मांगता. लेकिन मैं अपने दोस्त के बारे में

कह रहा था मैं जानता हूँ, आप उसे सुनें.”

नेटिलविक कुर्सी से टिक कर आराम से बैठ गया, उसे अब सैनरोजेरियो में रुकना ही था. शायद उसे करेंसी के कंट्रोलर को तार देना पड़े. शायद संयुक्त राज्य कमिश्नर के यहाँ से मेजर किंगमैन की गिरफ्तारी के लिए वारंट जारी करवाना पड़े. शायद उसे बैंक बंद कर देने का हुक्म देना पड़े. यह पहला जुर्म नहीं था, जो निरीक्षक ने पकड़ा था. ऐसे मौकों पर उस ने लोगों को बुरी तरह गिड़-गिड़ते हुए देखा था. बैंक के कर्मचारियों की गलती पकड़े जाने पर सिर्फ घंटे भर की मोहलत मांगने के लिए पैरों पड़ते और औरतों की तरह रोते देखा था. एक खजांची ने तो उस की आंखों के सामने अपने को गोली मार ली थी. मगर मेजर था कि पूरी तरह शांत और स्थिर था.

नेटिलविक ने महसूस किया कि जब मेजर अपने दोस्त के बारे में कुछ कहना चाहता है तो उसे सुन ही लेना चाहिए. दाहिने हाथ की कोहनी कुर्सी के हत्ये पर टिका, उंगलियों पर ठाढ़ी रख कर वह फर्स्ट नेशनल बैंक के अध्यक्ष की कहानी सुनने को तैयार हो गया.

उपदेशात्मक ढंग से मेजर टाम ने कहना शुरू किया :

“अगर कोई चालीस साल तक आग, पानी और तूफानों में आप का दोस्त रहे और ज़रूरत पड़ने पर आप उस की कुछ

गर हुस्ने अजल मिलता तो...

अजल से पहले गर हुस्ने अजल मिलता तो मैं कहता, जरा सी बहशते दिल और दीवाने में रख देना. दिल से पूछो क्या हुआ था और क्यों खामोश था, आंख महवेदीद थी इतना मुझे भी होश था. दिखा के जलवए कातिल की इक झलक ऐ हुस्न, खुदा के बंदे को नाहक गुनाहगार किया.

--जगमोहननाथ रेना

मदद करना चाहता था, तो वह अपने दोस्तों के पनपने से
 'हां, हां, क्यों नहीं. उस के लिए 70,000 डालर के बंधक बैंक से उड़ा लेंगे!' निरीक्षक ने मन ही मन कहा.

"बौब और मैं दोनों साथसाथ गाएं चराते थे. हम दोनों ने सोनेचांदी के लिए एरीजोना, न्यू मैक्सिको और कैली-फोर्निया के बीहड़ स्थानों की खाक छानी थी. हम दोनों सन 1961 के युद्ध में भी साथ थे, हालांकि हमारे दस्ते अलगअलग थे. रेड इंडियनों और घुड़चोरों से भी हम साथसाथ लड़े थे. एरीजोना पर्वत पर बीस फुट बरफ में दबे हुए एक केबिन में हम दोनों कई हफ्तों तक भूखे रहे थे. हम ने भयंकर तूफानों में साथसाथ मवेशी चराए थे. हम लोग पहलेपहल 'एंकर बार गोशाला' में, जहां मवेशी दागे जाते थे, मिले थे. तब से हम लोगों ने मुसीबत पड़ने पर हमेशा एकदूसरे की मदद की.

"उन दिनों एक दोस्त से उम्मीद की जाती थी कि वह अपने दोस्त की मदद तो करे, मगर एहसान का बदला न चाहे. मान लीजिए, आज आप ने अपने दोस्त की मदद की, तो हो सकता है, कल आप को किसी जंगली कबीले से मुठभेड़ हो जाने पर उस की जरूरत पड़ जाए, या आप को कोई सांप काट ले, या आप को शराब की ही जरूरत पड़ जाए. दोस्ती में लेनादेना तो चलता ही है. अगर आप अपने दोस्त की मदद नहीं करेंगे तो वह आप के आड़े वक्त कैसे काम आएगा? फिर बौब तो ऐसा व्यक्ति था जो मेरे लिए सब कुछ करने को तैयार रहता था. मेरे लिए उस के त्याग की हद न थी."

मेजर का स्वर शांत था, मानो उसे वर्तमान की गंभीर स्थिति का ध्यान ही न हो. उस के विचार अतीत में खोए थे. आगे उस ने कहा :

"करीब बीस साल पहले मैं इस जिले का हाकिम था. उस समय मैं ने बौब को अपना चीफ डिप्टी बना लिया था. यह

पहले की बात है. जिले का हाकिम और कलक्टर होना मेरे लिए एक बड़ी चीज थी. मेरी शादी हो चुकी थी. चार साल का एक लड़का और साल भर की एक लड़की थी. फरनीचर वगैरा सब सरकारी था. किराया भी नहीं देना पड़ता था. उस समय मेरे पास काफी बचत हो रही थी. दफतर का अधिकतर काम बौब कर लेता था.

"इस से पहले हम दोनों ने बहुत मुसीबत और खतरे के दिन देखे थे. रात को खिड़कियों से टकराती हुई बारिश हमें बहुत अच्छी लगती थी. हम आराम से गरमगरम बिस्तरों में पड़े रहते थे, क्योंकि हम जानते थे कि हमारे आराम के लिए बहुत से नौकर हैं और लोग हमारे सामने आदर से सिर झुकाते हैं. इस के अतिरिक्त मुझे अत्यंत सुंदर पत्नी मिली थी. बच्चे भी खूबसूरत थे. खुशहाली के उन दिनों में बौब मेरे साथ था. मैं समझता था कि मैं बहुत खुश हूं. हां, उन दिनों मैं सचमुच ही बहुत खुश था."

मेजर ने सांस छोड़ी और खिड़की से स्टाकमेंस नेशनल बैंक की तरफ देखा. निरीक्षक ने अपनी ठोड़ी अब बाएं हाथ की उंगलियों पर रख ली. मेजर ने अपनी बात जारी की :

"सदियों में एक दिन टैक्स की वसूली की रकम इतनी अधिक आने लगी कि मैं हफ्ते भर तक उस रकम को जमा करने बैंक नहीं जा सका. चैंक मैं ने एक सिगार बक्स में बंद कर दिए और रकम एक थैले में भर कर दफतर की तिजोरी में बंद कर दी.

"उस हफ्ते इतना काम करना पड़ा कि मैं बीमार पड़ने को हो गया. मेरे स्नायु जवाब दे रहे थे. रात को सोते समय भी मुझे चैन न मिलता था. डाक्टर ने मुझे दवा भी दे दी थी, लेकिन इस सब के बावजूद सोते समय टैक्स की रकम मेरे दिमाग पर बोझ बनी रहती थी. वैसे चिंता करने की कोई बात नहीं

थी, क्योंकि तिजोरी मजबूत थी और उस का ताला खोलने का तंत्र सिर्फ मुझे और बौब को मालूम था।

“शुक्रवार की रात को थैले में करीब 6,500 डालर थे। शनिवार की सुबह मैं हमेशा की तरह दफ्तर आया। तिजोरी में ताले ठीक तरह लगे हुए थे और बौब अपनी जगह काम कर रहा था। तिजोरी खोलने पर मैं ने देखा कि रकम गायब है। मैं ने बौब को पुकारा और कचहरी के लोगों को आवाज देते हुए चोरी की घोषणा कर दी। यह जानते हुए भी कि इस चोरी से हम दोनों पर बात आएगी, बौब शांत रहा।

“दो दिन गुजर गए पर चोरी का सुराग न मिला। यह तो निश्चित था कि चोर बाहर का कोई व्यक्ति नहीं है। क्योंकि ताले का नंबर किसी और को मालूम न था। लोगों ने तरहतरह की बातें करनी शुरू कर दी थीं।

“एक दिन तीसरे पहर मेरी पत्नी

एलिम दोनों बच्चों के साथ दफ्तर में आई। वह क्रोध से जमीन पर पैर पटक रही थी। उस का मुख जल रही थीं। चीखती हुई वह बोली, ‘लोग झूठी बातें बक रहे हैं,’ और बेहोश हो गई। मैं ने उसे संभाला और लिटा दिया। पहली बार मैं ने उसे इस तरह चीखते हुए देखा था।

“मेरे दोनों बच्चे जैक और जिल्ला हमेशा शेर के बच्चों की तरह उछलकूद मचाया करते थे, और दफ्तर आते ही बौब के ऊपर चढ़ जाया करते थे। मगर उस समय वे तीतर के बच्चों की तरह सहमे हुए थे। उन पर जीवन के संघर्ष की यह पहली परछाई थी।

“बौब अपनी जगह बैठा काम कर रहा था। वह उठा और बिना एक भी शब्द बोले बाहर निकल गया। उन दिनों अदालत बैठी हुई थी। अगले दिन सुबह बौब ने वहां जा कर कबूल कर लिया कि वह चोर है। यह भी उस ने बता दिया कि उस रकम को वह जुए में हार

लेखकों के लिए सूचनाएं

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफसाफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए।
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा और पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी।
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है।
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए।
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता।
- यद्यपि सभी रचनाओं की पूरी सुरक्षा की जाती है, फिर भी कार्यालय किसी रचना के खोए या नष्ट हो जाने का उत्तरदायी नहीं होगा।

रचनाएं इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,

चंपक,

दिल्ली प्रेस भवन, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

गया है।

“कई सालों से हजारों सगेसंबंधियों की बनिस्बत वह मेरे कहीं निकट था। लेकिन पंद्रह मिनट के अंदर उस की गिरफ्तारी का वारंट मेरे हाथ में था।

“मैं ने बौब से कहा, ‘देखो, यह दफ्तर है, वह मेरा घर, वह मेन और उधर कैलीफोर्निया, और वह रहा फ्लोरिडा। इस हद के बाहर तुम नहीं जा सकते। तुम मेरी देखरेख में हो। मैं ने तुम्हारी जमानत दी है। पेशी के वक्त आ जाना।’

“बौब ने लापरवाही से उत्तर दिया, ‘धन्यवाद, टाम। मैं तो सोच रहा था कि तुम मुझे जेल में बंद कर दोगे। अदालत अगले सोमवार को बैठेगी, इसलिए अगर तुम्हें एतराज न हो, तो मैं यहीं दफ्तर के आसपास घूमफिरूंगा। और अगर हो सके, तो एक मेहरवानी और कर दो। कभीकभी अपने बच्चों को बाहर मैदान में मेरे साथ खेल लेने दिया करो।’

“‘क्यों नहीं,’ मैं ने कहा, ‘बच्चों के लिए कोई मनाही है! तुम्हारा हमेशा स्वागत है।’

“श्री नेटिलविक, आप तुरंत न तो किसी चोर को दोस्त बना सकते हैं और न किसी दोस्त को चोर ठहरा सकते हैं।”

निरीक्षक ने उत्तर नहीं दिया। तभी रेल के इंजन की सीटी सुनाई दी। दक्षिण की तरफ से आने वाली गाड़ी सैनरोजेरियो पहुंच चुकी थी। मेजर ने घड़ी देखी। ठीक 10.35 का वक्त था। एक क्षण रुक कर उस ने आगे कहना शुरू किया :

“इस तरह बौब दफ्तर के आसपास सिगार पीता और अखबार पढ़ता घूमता रहा। उस की जगह मैं ने एक दूसरे व्यक्ति को रख लिया।

“एक दिन जब मैं दफ्तर में अकेला था, बौब मेरे पास आया। उस का चेहरा पीला पड़ रहा था, जैसा कि उस समय हो जाया करता था, जब वह सारी रात रेड इंडियनों की ताक में रहता था या

“वह बोला, ‘टाम, जंगली लोगों का सामना करने या पानी से मीलों दूर लावा के रेगिस्तान में पड़े रहने से कहीं अधिक तकलीफ मुझे इस समय हो रही है। लेकिन इस तकलीफ को मैं आखिरी दम तक झेलूंगा। तुम्हें खुद मालूम है कि पीठ दिखाने का मेरा स्वभाव नहीं है। तुम अगर एक बार कह दो कि बौब, मैं तुम्हें समझता हूं, तो मेरा काम बहुत हलका हो जाएगा।’

“यह सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ। मैं ने कहा, ‘बौब, तुम्हारी बात मैं समझा नहीं। इस दुनिया में क्या है, जो मैं तुम्हारे लिए नहीं कर सकता। पर कुछ साफसाफ कहो भी तो।’

“‘अच्छा, टाम, ठीक है।’ कह कर वह फिर अखबार पढ़ने लगा और उस ने दूसरा सिगार जलाया।

“अगले दिन अदालत बैठने वाली थी। रात को पता चला कि वह मुझ से क्या चाहता था। सोने से पहले मैं निश्चित होना चाहता था। मगर चिताएं घेरे रहीं। आधी रात बीत जाने के बाद झपकी आई, और जब आंख खुली तो देखा कि मैं अस्तव्यस्त कपड़ों में कचहरी के एक बरामदे में खड़ा हुआ हूं। मेरी एक बांह बौब पकड़े हुए है और दूसरी मेरे परिवार का डाक्टर। एलिस करीबकरीब चीख रही थी और मुझे झकझोर रही थी। मुझे बिस्तर में न पा कर उस ने डाक्टर को बुला लिया था।

“डाक्टर ने बताया कि मुझे नींद में चलने की बीमारी है।

“घर लौट आने पर वह बताता रहा कि किस तरह लोगों ने इस बीमारी में विचित्रविचित्र काम किए। मैं ठीक तरह कपड़े नहीं पहने हुए था, इसलिए सर्दी लगने लगी थी। पत्नी कमरे में नहीं थी। मैं ने लिहाफ निकालने के लिए कपड़ों की एक पुरानी अलमारी खोली। लिहाफ के साथ ही रकम का वह थैला, जो तिजोरी से गायब हुआ था, अलमारी से

बाहर आ गया। उसी क्षण को नजराने के अपराध में तो कल बौब को अदालत के सामने हाजिर होना था!

“मैं चीखा, ‘यह कमवस्त यहां कहां से निकला!’ जितने लोग उस समय उपस्थित थे, उन्होंने देखा होगा कि मैं कितनी बुरी तरह आश्चर्यचकित रह गया था। सारी घटना बौब के मस्तिष्क में कौंध गई। वह चिरपरिचित मुसकराहट बिखेरता हुआ बोला, ‘यार, तुम भी अब्बल दरजे के भुलक्कड़ हो। तुम्हीं ने तो इसे अलमारी में रखा था। बात यों हुई थी कि मैं तुम्हें तिजोरी से थैला निकालते देख पीछेपीछे चला आया था। खिड़की से मैं देखता रहा था कि तुम ने थैला इस अलमारी में बंद कर दिया है।’

“गधे कहीं के! तुम ने अदालत में यह क्यों कह दिया था कि तुम ने उसे चुराया है?”

“बौब ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया, ‘क्योंकि मुझे नहीं मालूम था कि तुम थैला नींद में निकाल कर लाए थे।’

“मैं ने देखा कि उस की नजर दरवाजे पर खड़े हुए जैक और जिल्ला की तरफ है। उस समय मैं बौब को देख कर समझ सका कि दोस्ती के क्या माने होते हैं।”

मेजर टाम ने रुक कर सांस ली, और खिड़की के बाहर देखा। स्टाकमेंस नेशनल बैंक की सामने वाली बड़ी खिड़की पर किसी ने पीला परदा गिराया, हालांकि उस समय तक सूरज इतना नहीं चढ़ा था कि परदा डालने की जरूरत होती।

नेटिलविक अपनी जगह सीधा तन कर बैठ गया। उस ने धैर्य से बिना विशेष रुचि के मेजर की बात सुनी थी, उस का उस पर असर भी पड़ा था, लेकिन जहां तक मामले की कानूनी कार्रवाई का प्रश्न था, वह अप्रासंगिक थी। उस ने सोचा कि पश्चिमी पांतों के लोग भी कितने भावुक और यथार्थ से दूर होते हैं। उन का कारोबारी स्वभाव मुक्ता

उन्होंने देखा था कि उन के मित्रों से रक्षा करनी चाहिए। मेजर की बात खत्म हो चुकी थी। उस से नेटिलविक की सख्ती में कोई परिवर्तन आ सका।

वह बोला, “गायब बंधकों से संबंधित अगर कोई बात आप को कहनी हो तो कहिए।”

“गायब बंधक! आप का क्या तात्पर्य है?” सहसा मेजर टाम निरीक्षक की तरफ मुड़ा। उस की नीली आंखों में एक चमक थी। अपनी जेब से उस ने मुड़े हुए कागजों का एक बंडल निकाला और उसे नेटिलविक के हाथों में फेंकता हुआ उठ खड़ा हुआ और बोला :

व्यक्तिगत विज्ञापन

पत्रमित्र विज्ञापन

● 20 वर्षीय, बी. एससी. (फाइनल) का छात्र, रुचियां : रीडिंग, ड्राइंग, साइकिलिंग और विजिटिंग. संपर्क : वि. नं. 4025, मुक्ता, नई दिल्ली-55.

● 22 वर्षीय, एम. बी. बी. एस. का छात्र. रुचियां : नौका चालन, घुड़-सवारी, वालीबाल. संपर्क : वि. नं. 4026, मुक्ता, नई दिल्ली-55.

रिक्त स्थान

● आवश्यकता है विक्त्य प्रतिनिधियों की, जो कमीशन पर पाकेट बुक्स का काम करने के इच्छुक हों. अनुभव आवश्यक. आवेदन करें : विश्वविजय प्रा. लि., एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

विज्ञापन दर

50 पैसे प्रति शब्द. पत्रव्यवहार व्यवस्था के लिए 4 रुपए अतिरिक्त. मूल्य पेशगी मनीआर्डर, पोस्टलआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा भेजें.

मुक्ता, नई दिल्ली-55.

Digitized by Anil Sarmal Foundation, Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए एवटचु मनोरंजन

तीन बाल उपन्यासों का सेट

वीरान टापू



डाकू लाखन का गिरोह बच्चों को उड़ा कर उन के मातापिता से रकम ऐंठने लगा। यही लाखन जब नील को बहका कर ले गया तो मोहन को बड़ी ठेस पहुंची। डाकूओं को रंगे हाथ पकड़ा कर उस ने अपना लक्ष्य पूरा किया। मोहन वीरान टापू पर डाकूओं के अड़्डे तक कैसे पहुंचा? उस ने पूरे गिरोह को कैसे गिरफ्तार करवाया? इन प्रश्नों का हल इस रोमांचक बाल उपन्यास में मिलेगा।

योगीराज

कपटी बंदर और उस के धूर्त साथी लोमड़ और गीदड़ ने भक्ति के नाम पर नंदनवन के जानवरों को खूब लूटा। और नंदनवन के सीधेसादे जानवर 'योगीराज' कह कर बंदर के चरणों में सिर नवाने लगे। लेकिन तभी समाजसेवक भालू ने उन की धूर्तता की पोलपट्टी खोल दी।

बच्चों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही यह उपन्यास उन्हें पाखंडियों से बचने की राह भी दिखाएगा।



मंगल की सैर

मंगल पर जाना था उमेश चाचा को लेकिन चला गया दीपू जिसे अंतरिक्ष यात्रा का कोई अनुभव नहीं था। वहां की उड़नतश्तरियां, मशीनी आबमी, विचित्र लालहरी रोजनियां, बीना मिक् और उस के साथी—इन सब की डेर सारी यादें ले कर दीपू जब धरती पर लौटा उस के चाचा बेसन्ती से उस का इंतजार कर रहे थे।

प्रत्येक रु. 2.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए ग्रॉसिम भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

“यही वे बंधक हैं जिन्हें मैं ने निकाल लिया था. उस समय आप नकदी जांच रहे थे. आप स्वयं कागजों से इन का मिलान कर लीजिए.”

मेजर निरीक्षक को बैंक के दफ्तर में वापस ले आया. निरीक्षक भौंचक्का, चकराया और भन्नाया हुआ था. उसे लगा कि उसे चकमा दिया गया है. बिना असली बात बताए उसे किसी काम के लिए इस्तेमाल किया गया और वाद में दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया गया. शायद उस की निरीक्षक की हैसियत के साथ खिलवाड़ भी किया गया. लेकिन कोई बात ऐसी नहीं थी जो उस की पकड़ में आ पाती. बिना किसी सबूत के रिपोर्ट करना भी बेवकूफी होती.

बेरुखी के साथ अपनी अम्पुस्त मुद्रा में नेटिलविक ने बंधकों का कागजों से मिलान किया और उन्हें ठीक पाया. चलते समय अपना काला बैग हाथ में ले कर वह मेजर किंगमैन की तरफ मुड़ा और रोष के साथ बोला, “मुझे बहकाने के लिए तुम ने जो किस्सा सुनाया, पता नहीं उस के पीछे तुम्हारा क्या उद्देश्य था. मैं समझता हूं, न तो उस में मजाक की कोई बात थी और न ही उस से कोई काम की बात निकलती थी.”

मुसकराते हुए मेजर टाम ने उत्तर दिया, “बेटे, दुनिया बहुत बड़ी है, और ऐसी बहुत सी बातें हैं, जिन्हें तुम नहीं समझ सकते. कुछ भी हो, मैं तुम्हें धन्य-वाद देना चाहता हूं कि तुम एक बकवासी बूढ़े की नीरस बातें सुनते रहे. टेक्सास के रहने वाले हम बूढ़ों को अपनी बहादुरी के कामों के बारे में बात करने की आदत होती है. हमारे दोस्त हमारी इस आदत को जानते हैं. जैसे ही हम कहानी कहना शुरू करते हैं वे पिंड छुड़ा कर भाग जाते हैं. इसी लिए हम अपने किस्से सुनाने के लिए अजनबी आदमियों को पकड़ते हैं.”

मेजर मुसकराया, मगर निरीक्षक बेरुखी से सिर झुका कर बैंक से बाहर चला गया. बैंक के कर्मचारी उसे सामने की सड़क पार करते हुए देखते रहे. फिर

उन्होंने उसे स्टॉकमेंस नेशनल बैंक में जाते हुए देखा.

मेजर टाम अपनी जगह बैठ गया और उस ने अपनी जेब से वह चिट्ठी निकाली, जो राय ने उसे ला कर दी थी. वह उसे एक बार पढ़ चुका था. अब उस ने उसे दोबारा पढ़ना शुरू किया :

“प्रिय टाम,

सुना है कि सरकार का एक जासूसी कुत्ता तुम्हारे बैंक में जांच करने आया है. इस का मतलब यह हुआ कि यह एक या दो घंटे में हमारे यहां भी आ धमकेगा. इस स्थिति में मैं चाहता हूं कि तुम मेरे लिए एक काम कर दो. बैंक में इस समय 2,000 डालर हैं, जब कि होने चाहिए 20,000. कल तीसरे पहर मैं ने मवेशी खरीदने के लिए रौस और फिशर को 18,000 डालर दे दिए थे. उन से महीने भर के अंदर 40,000 डालर आएंगे. लेकिन निरीक्षक को यह बात कैसे समझाई जा सकेगी?

“मैं ने सैम ब्रैंडशा के बैंक को 20,000 डालर भेजने के लिए तार दे दिया है. वे 10.35 की गाड़ी से यहां आ जाएंगे. मैं जानता हूं, उस वक्त तक तुम उसे मेरे बैंक में आने से रोके रहोगे. चाहे तुम्हें उसे बांध कर रखना पड़े, चाहे उस के ऊपर ही क्यों न बैठ जाना पड़े, पर उसे रोके रखना. गाड़ी आ जाए, तब हमारी सामने वाली खिड़की पर नजर रखना. जैसे ही रुपया बैंक में आ जाएगा, हम इशारे के लिए खिड़की पर परदा डाल देंगे. टाम, मैं तुम्हारे ही भरोसे हूं.

—तुम्हारा पुराना यार
बौब बकले

अध्यक्ष, स्टॉकमेंस नेशनल बैंक.”

मेजर ने चिट्ठी के टुकड़े टुकड़े कर दिए और उसे रद्दी की टोकरी में फेंक दिया. मुसकराते हुए उस ने राहत की सांस ली और बड़बड़ाया :

“कमबख्त को जरा भी खतरे का खयाल नहीं रहता. चलो, बीस साल पहले के एहसान का कुछ तो बदला चुका दिया.”

जिंदगी हो गई रजनीगंधा

जूड़े की गंध क्या मिली,
जिंदगी
हो गई रजनीगंधा.

हवा की कड़ुवाहट
दोपहरी की धूप.
जाने कहां चली गई
दवे पांव चुपचुप.

भाने लगी मन को
साझ भी बहुत.
मीठी लगती है जैसे
जाड़े की धूप.

जूड़े की गंध क्या मिली,
जिंदगी
हो गई रजनीगंधा.

नयननयन बांचे
आग्रह भरे निमंत्रण.
बेसुध हुए मन पर
कैसे हो नियंत्रण.

शब्दशब्द कविता
अर्थअर्थ गीत.
छेड़ने लगी जिंदगी
सांससांस संगीत.

जूड़े की गंध क्या मिली,
जिंदगी
हो गई रजनीगंधा.

—रमेश सोनी

छट मंगनी

छट ब्याह

सत्यकुमार

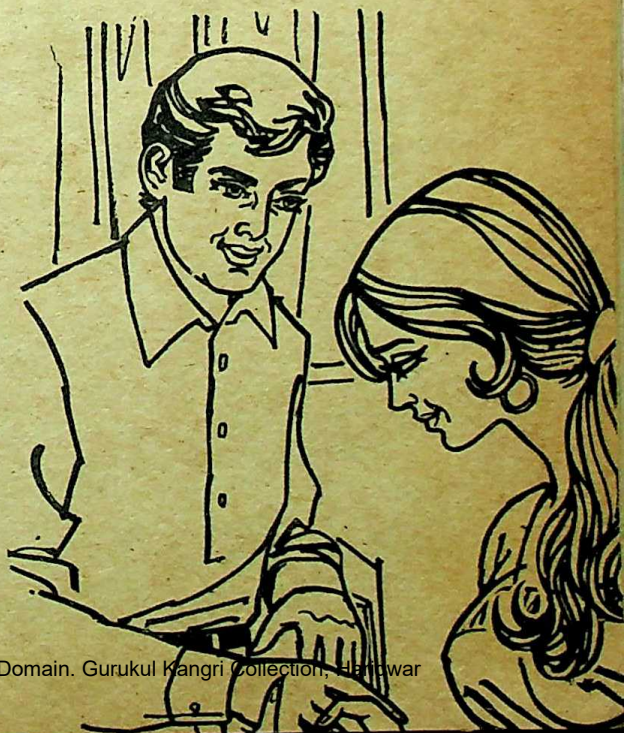
मोना के पिता गरज रहे थे, "यह सब क्या है, मोना? इस तरह कैसे चलेगा? आखिर तुम्हें शादी करनी है या नहीं? अच्छाखासा मामला तय हो जाता है. पर तुम कोई सुरीं छोड़ देती हो."

मोना की माँ भी इस में पीछे नहीं थीं, "इस लड़की ने तो नाक में दम कर दिया है. और भी लड़कियाँ थीं. वे भी कम नहीं पड़ी थीं. जहाँ शादी तय कर दी, ठीक है. पर इस के कुछ ज्यादा सुर-स्वाव के पर लगे हैं. नौकरी क्या करने लगी है, दिमाग का ही पता नहीं मिलता."

मोना मौन, मंदमंद मुसकराती 'नेल कटर' से अपने नाखून काट रही थी. उस के शांत रहने पर माँ फिर तड़पीं, "रातदिन भागदौड़ कर के, दस खुशामद कर के वर जुटाते हैं, मामला पटता है, और तू भूस में आग लगा देती है. नहीं शादी करनी तो हमें कह दे. हम लोग चिंता छोड़ें."

अब मोना संयत स्वर में बोली, "शादी करना वैसे कोई जरूरी तो नहीं. पर ढंग का लड़का मिल गया तो शादी कर लूंगी. जिसतिस के गले नहीं बंधूंगी. दहेज मांगने वालों के मुंह पर थूकूंगी भी नहीं. क्या कमी है मुझ में? रंग, रूप,

हर बार मोना अपनी हरकतों से किएकराए पर पानी फेंक देती और उस के माँबाप परेशान हो उठते... आखिर मोना क्या चाहती थी?



स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवार—सब कुछ ठीक है. फिर भी क्या मैं शादी नहीं करनी. अच्छे खातेपीते हैं, बंगला है, गाड़ी है, व्यापार है, लड़का हजार के ऊपर कमाता है, फिर भी दहेज चाहिए. दीवाला निकल जाए तभी समझी के आगे हाथ पसारें. लड़के की नौकरी छूट जाए, व्यापार में लगाने को पैसा चाहिए, तो ठीक है. रिश्ता हो जाने पर संबंधी के लिए जान हाजिर है. पर यह क्या कि लड़की पसंद है पर दहेज नहीं—तो लड़की का कुछ मूल्य नहीं? रिश्ता करते हैं या अपने लड़के की नीलामी करते हैं?"

मोना का प्रवचन अभी और चलता पर मां बीच में बोल पड़ीं, "मास्टरनी क्या हो गई है, कैंची की तरह जबान चलाने लगी है. जब देखो तब लेक्चर. मैं कहती हूं, क्या और लड़कियां पढ़ी नहीं थीं? क्या उन की शादियों में दहेज नहीं दिया? अरे, हमारी देने की हैसियत है तो तय करते हैं, नहीं होती तो कहां से करते? हम कोई कर्ज ले कर तो दहेज देंगे नहीं. हमारे ऊपर कोई बोझ नहीं पड़ रहा. हम कोई रोना नहीं रोते. फिर पता नहीं क्यों तेरा कलेजा जलता रहता है!"

मोना बात समाप्त करते हुए बोली, "ठीक है, मां. आगे से तुम्हें मेरी शादी के संबंध में चिंता करने की आवश्यकता नहीं. मैं ठीक समझूंगी तो कर लूंगी." और वह अपने कमरे में चली गई.

आज यह तीसरी बार हुआ है. सुबह जब से उजागरमल का फोन मिला है, मोना के पिता का दिमाग खराब है. मंत्रालय में डिप्टी सेक्रेटरी हैं. पर्याप्त पैसा पास है. तथाकथित सभी सुखसुविधाएं हैं. मोना के विवाह का ही उत्तरदायित्व रह गया है. पर अजीब लड़की है. वैसे सब तरह से ठीक. जो देखता है, पसंद कर लेता है. पर यह स्वयं ही कुछ न कुछ कमी निकाल देती है. पहले लड़के को तो इस ने किसी रेस्तोरां में मदिरापान करते देख

लिया था. कितना ही समझाया कि आज-कल सब नया है. गांधी साहब साथ निभाने के लिए पीनी पड़ती है, कभी काम निकालने के लिए. परंतु इस ने स्वयं मना कर दिया. दूसरी पार्टी बहुत अच्छी थी. पर लड़के की 'पर्सनेलिटी' कुछ नहीं थी. और जब उस ने मोना से रसोई बनाने से लेकर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रश्न पूछना शुरू किया तो थोड़ी देर तक तो मोना जवाब देती रही, पर जब देखा कि हजरत स्कने का नाम ही नहीं लेते, तो यह कहती हुई उठ गई कि 'आप ने कभी आइने में अपनी सूरत भी देखी है?'

कल शाम उजागरमल सपरिवार इसे पसंद कर के गए थे. लड़के ने एम. बी., बी. एस. कर के प्रैक्टिस शुरू कर दी है. काम अच्छा चल निकला है. स्थानीय है. मोना चाहे तो अपने कालिज की नौकरी भी करती रह सकती है. शाम तक सब ठीक था. उन के जाने के बाद जब उस के पिता ने मां से कहा कि "पच्चीस पर बात नहीं बनी. तीस के लिए कह दिया है," तो उस के कान खड़े हुए. रात को ही मोना ने भावी पति से फोन मिलाया.

"हैलो डाक्टर! मैं मोना बोल रही हूं."

"कौन, मोना? कहां से?" डाक्टर को उस से पहले कभी मोना का फोन नहीं मिला था.

"ओह! इतनी जल्दी भूल गए? अभी शाम को ही तो मेरे साथ चाय पी कर गए हैं," मोना ने याद दिलाया.

"माफ करना, मोना. मुझे ध्यान ही नहीं रहा. कहिए, मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूं?" डाक्टर ने पेशेवर लहजे में कहा.

मोना हंसते हुए बोली, "घन्यवाद. फिलहाल तो मैं भलीचंगी हूं."

डाक्टर सोच नहीं पाया कि क्या कहे. बोला, "तो हमारी याद कैसे आ गई?" फिर बातचीत को कुछ रूमानी पुट देते हुए उस ने कहा, "हम तो शाम

हुआ कि जिस मंजिल के लिए वह इतने दिनों से भटक रही थी, वह उस के सामने ही थी...

से आप की ही कल्पना में गोते लगा रहे हैं."

मोना ने खिलखिलाते हुए कहा, "डूबने का डर तो नहीं है?"

डाक्टर सटपटा गया. पूछने लगा, "कल शाम को आप को अवकाश है क्या?"

मोना बोली, "गरमी की छुट्टियां हैं. अपने को तो अवकाश ही अवकाश है."

डाक्टर बोला, "तो कहीं घूमने का या सिनेमा का प्रोग्राम बना लें?"

मोना बोली, "अवश्य. मगर एक शर्त है."

डाक्टर को उत्सुकता हुई, "क्या?"

मोना ने बड़े सधे शब्दों में कहा, "आप की निगाह में कोई आप के जैसा सुंदर, स्वस्थ, कमाऊ, अविवाहित, अच्छे परिवार का, मित्र या संबंधी है क्या? यदि हो, तो उसे भी बुला लें."

डाक्टर ने पूछा, "क्यों? आप की कोई सहेली है क्या?"

मोना ने कहा, "नहीं, सहेली तो नहीं. अपने ही लिए सोच रही थी."

डाक्टर चौंका, "क्या मतलब?"

मोना ने बड़ी अदा से कहा, "मतलब यह कि तीस हजार रुपए कोई ज्यादा नहीं होते. डैडी के पास काफी पैसा है. मेरी भी तीन साल की तनख्वाह बैंक में जमा है. एक से दो भले."

डाक्टर बोखला गया, "यह क्या बकवास है?"

मोना सहज भाव से बोली, "बकवास नहीं, डाक्टर. तीस हजार रुपए में यदि हजार दो हजार रुपए मासिक कमाने वाला आदमी मिलता हो तो क्या बुरा है? हो सकता है, आगे चल कर रेट

बढ़ जाए."

डाक्टर गुस्से में बोला, "तुम होश में तो हो, मोना?"

मोना संजीदगी से बोली, "होश तो आप खो रहे हैं, डाक्टर. मैं ने तो जब से होश संभाला है, पढ़े लिखे, कमाने वाले लड़कों को स्वयं को नीलामी पर चढ़ाने के लिए सदा धिक्कारा है. पर आप को अब तक होश नहीं आया कि आप की कीमत तीस हजार रुपए है, केवल तीस हजार! इतने में आप का मौदा हो चुका है."

डाक्टर भड़क गया, "क्या बेसिरपैर की बातें कर रही हो, मोना! जानती हो, इस का नतीजा अच्छा नहीं होगा?"

मोना ने संयत शब्दों में कहा, "खूब जानती हूं, डाक्टर. कष्ट के लिए धन्यवाद. अलविदा." और उस ने आराम से फोन रख दिया.

डाक्टर ने सुबह अपने पिता से कहा होगा और उन्होंने तत्काल मोना के पिता को फोन कर, मोना के मानसिक विकास की शिकायत करते हुए पिछली शाम का मौदा रद्द कर दिया.

घर का वातावरण बोझिल हो गया था. गरमी की छुट्टियां, बड़ेबड़े दिन काटे नहीं कटते थे. मोना ने मसूरी जाने का प्रोग्राम बना लिया. ढेर सारे उपन्यास लिए और चल पड़ी.

पहले जब वह मसूरी गई थी तो ट्राली नहीं होती थी. तोपटिब्बे पर लंबी चढ़ाई के रास्ते से जाना पड़ता था. अब बाजार से ऊपर पहाड़ी को 'रज्जु मार्ग' से संबंधित कर दिया गया था. नीचे से बैठो और धीरेधीरे, छोटी बस जैसे डिब्बे में बैठे ऊपर सरकते जाओ. लोहे के मोटेमोटे तारों पर ट्राली बिजली से स्वतः

सरकती जाती थी। पीछे से भीड़ में से नीचे देखते जाओ और ऊपर उठते जाओ। सारी मसूरी का अवलोकन कर लो। उसी टिकट से लौट जाओ। पर्यटकों के लिए अतिरिक्त आकर्षण। पर्याप्त भीड़। लंबी कतार।

उस संध्या ट्राली पर भीड़ कम थी। मोना ने भी टिकट ले लिया और ऊपर पहुंच गई। जब से ट्राली चलने लगी है, ऊपर दुकानें भी पहुंच गई हैं। मिठाई, चाट, चाय की दुकानें। फोटोग्राफर, गरम कपड़े बेचने वाली तिब्बती महिलाएं। मोती, मूंगे, माला वाले।

मोना घूमती रही। सुदूर फैली पर्वत-मालाओं का अवलोकन करती रही। फिर एक फोटोग्राफर पीछे पड़ गया। विभिन्न पहाड़ी वेशभूषाओं में—विचित्र आभूषण पहन कर मोना ने तीन फोटो खिंचवाए। फिर वह देर तक मनके, मूंगों, रुद्राक्षों का भाव करती रही। तब वह एक जगह चाय पीने बैठ गई।

प्रायः वहां लोग जोड़ों में या सपरिवार घूम रहे थे। अकेली मोना थी और एक युवक। वह दूरबीन गले में लटकाए पहाड़ियों पर पता नहीं क्या देख रहा था। जब मोना फोटो खिंचवा रही थी, वह आसपास ही घूम रहा था और कनखियों से मोना को देख लेता था। उस के कपड़े बड़े सुरुचिपूर्ण थे। चेहरे पर जिज्ञासामय गंभीरता थी। चाल में शालीनता थी। न वह मोना से टकराया, न ही उस ने कोई छिछोरापन दिखाया।

जब मोना चाय पी रही थी तो वह सामने चाट वाले से गोलगप्पे खा रहा था। पर न तो उस का मुंह जरूरत से ज्यादा फूला लगता था और न ही पानी टपकता था। गोलगप्पे ढंग से खाना हरेक के बस का नहीं। मोना का भी मन चल गया। पर चूंकि वह चाय पी चुकी थी, अतः उस ने खटाई के पानी से गला खराब कर बीमार पड़ने का खतरा नहीं उठाना चाहा।

धीरेधीरे ऊपर की भीड़ छंट गई।

अंधेरा होने लगा था। आठ बजे ट्राली का अंतिम फेरा लगता था। बचेखुचे लोग उतरने की कतार में लग गए। अंतिम बार नीचे जाने के लिए ट्राली ऊपर आई। पर यह क्या? कर्मचारी लोग ऊपर चढ़ कर कुछ निरीक्षण करने लगे। पुली के तार को वे खोल कर देख रहे थे। तभी कुछ खुसरपुसर हुई। रस्से जैसा मोटा तार बीच में एक जगह कटा हुआ था। विलकुल अलग तो नहीं हुआ था पर लगभग आधा कट चुका था। ट्राली वाले ने स्थिति स्पष्ट कर दी, “वैसे खतरा कोई नहीं। आधा तार भी बहुत मोटा है। परंतु जोखिम तो है ही।”

कतार में खड़े लोगों में बेचैनी की एक लहर दौड़ गई। लंबे अंधेरे रास्ते में अब हारेथके रात को कौन लौटे? पहले पता होता तो दिन छिपने से पहले धीरे-धीरे उतर चलते। दोएक आदमी आगे बढ़े। पर पैदल का रास्ता देख कर लौट आए, “ट्राली से ही चलते हैं। जो होगा सो देखा जाएगा।”

सब से पहले छः व्यक्तियों का एक परिवार चढ़ा। चार बच्चे व पतिपत्नी। उस के पीछे एक हनीमून मनाने वाले दंपति, फिर मोना। उस के बाद एक अंधेड़ एंग्लोइंडियन दंपति, और अंत में वह युवक। उस का नाम मुकेश था। सब से अंत में कंडक्टर। चारचार व्यक्तियों की सीटें तीन ओर थीं। परिवार एक साथ था। दंपति साथसाथ बैठे थे। मुकेश को मोना के पास ही सीट मिली। जिस युवती को वह उत्सुक दृष्टि से देख रहा था,



उस के सान्निध्य का सौभाग्य उसे सहज ही प्राप्त हो गया था।

ट्राली चली। किसी ने कहा, "जय गणेश," किसी ने मन ही मन इष्टदेवता का स्मरण किया। ऍंग्लोइंडियन महिला ने छाती पर हाथ से क्रास का चिह्न बनाया। ट्राली धीरेधीरे खिसकने लगी। लोगों ने चैन की सांस ली। कंडक्टर ने टिकट चेक किए। मनःस्थिति सामान्य होती जा रही थी कि ट्राली रुक गई। मंजिल अभी आधे से अधिक दूर थी। अधर में लटके थे। क्यों? कुछ पता नहीं। ऊपर से संपर्क कट चुका था। ऊपर या नीचे जो कर्मचारी थे उन से बात करने की कोई व्यवस्था उस में नहीं थी। कंडक्टर भी उतना ही अनभिज्ञ था।

परिवार

वाले पुरुष के चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभरीं। उस की पत्नी ने छोटे बच्चे को कलेजे से चिपका लिया। हनीमून मनाने वाली महिला ने अपने पति के कंधे से सिर टिका कर आंखें बंद कर लीं। ऍंग्लोइंडियन पुरुष ट्राली के लोगों की गिनती बंद कर बुद-बुदाया, "उफ, तेरह आदमी हैं!" उस की बात पर सब ने ही एक बार दृष्टि घुमा कर मन ही मन गिनती की। मोना मौन बैठी थी। उस के भी मन में घबराहट थी पर ऊपर से वह स्वयं को संयत रखे हुए थी। मुकेश ने मौन भंग किया, "चिंता की कोई बात नहीं। ऊपर कुछ जांच कर रहे होंगे। इस में तो सीट ही तेरह होती है, बारह सवारियों के लिए और एक

कंडक्टर के लिए।"

दो मिनट और बैठके रहना दो युगों के समान लगा। तभी ट्राली में हल-चल हुई। वह सरकी। पर एक फुट चल कर फिर रुक गई। लोगों के चेहरे पर दौड़ता खून जैसे जम गया। परिवार वाली महिला बड़बड़ा रही थी, "मैं कह रही थी कि पंदरह रुपए मत खर्च करो। बच्चे खेलते-कूदते चलेंगे। पर नहीं। मेरी कोई माने तब तो। अब कुछ हो गया तो एक की भी हड़डीपसली साबुत नहीं बचने की।" और उस की आंखें डबडबा आईं। मुकेश से नहीं रहा गया। बोला, "बहनजी, शांति रखिए। हिम्मत मत छोड़िए। अब अपने हाथ की बात तो है नहीं, जो भाग्य में लिखा होगा, वह तो भुगतना ही पड़ेगा। कोई खास खतरा होता तो वे हम लोगों को बिठा कर भेजते ही नहीं।"

हनीमून वाला पुरुष ट्राली वालों को कोस रहा था, "जेब काटना जानते हैं। लूट लो बाहर के परदेसियों को। यह नहीं कि प्रति दिन मशीनरी की जांच करें। रस्सा इतना ज्यादा एक दिन में तो कट नहीं गया होगा। जरा सा नुकस होते ही क्यों नहीं बदलते?" उस की पत्नी उस के कंधे पर झुक आई थी और वह उस के बालों पर हाथ फेरते हुए दिलासा दे रहा था।

ऍंग्लोइंडियन महिला अपने पति से कह रही थी, "डियर, मेरा तो ब्लडप्रेसर बढ़ता जा रहा है।"

मोना के बालों की एक लट मुकेश के कंधे पर उड़ आई थी और उस ने उसे

जिस ने इस दिल को...

आ कि वाबस्ता हैं उस हुस्न की यादें तुझ से,
जिस ने इस दिल को परीखाना बना रखा है,
जिस की उलफत में भुला रखी थी दुनिया हम ने,
दहर को दहर का अफसाना बना रखा है।

—फैज

समेटने का कोई प्रयत्न नहीं किया। मंजिल के दिल में दुखाया। किसी भी पुरुष से शादी कर लेती। जिंदगी का क्या भरोसा।

तभी धड़धड़ का स्वर हुआ। लोगों के दिल उछलने लगे। ट्राली कुछ सरकी और फिर रुक गई। परिवार वाले पुरुष ने नीचे झांकते हुए कहा, “चट्टानें ही चट्टानें हैं। हड्डीपसली का चूरमा बन जाएगा。” सभी लोगों के शरीर में सिहरन सी दौड़ गई। ऐंग्लोइंडियन पुरुष ने खिड़की से झांका। हिप पाकेट से विलायती शराब का एक ‘निप’ चुपके से निकाला और मुंह में कुछ उड़ेल ली। चुपके से उस ने फिर उसे कोट के भीतर की जेब में रख लिया।

ट्राली के वायुमंडल में एक गंध व्याप गई। पर किसी ने नाकभों नहीं सिकोड़ी। हनीमून वाली महिला ने पुरुष का हाथ अपने हाथों में कस कर पकड़ लिया था और कान में फुसफुसा रही थी, “डियर, ट्राली गिरने लगे तो मेरा हाथ न छोड़ देना。” पुरुष के मुख पर विवशता की छाप थी। सांत्वना के दो शब्द भी नहीं निकल पाए। मोना के हृदय में भी बवंडर उठने लगा था। परिस्थिति कुछ ऐसी थी कि कोई भी कुछ नहीं कर सकता था। उन के हाथ में कुछ नहीं था। वह ऊपर से यंत्रचालित हो रहे थे और ऊपर क्या हो रहा था, किसी को कुछ पता नहीं। सब जैसे मौत के पंजे में फड़फड़ा रहे थे और मजबूर थे।

ट्राली फिर सरकी। लोगों के दिल फिर उछले। परिवार वाले पुरुष ने किसी देवता का नाम ले कर प्रसाद चढ़ाने की घोषणा की। ऐंग्लोइंडियन महिला अपने पति से कह रही थी कि नीचे पहुंचते ही उसे किसी डाक्टर के पास ले जाया जाए। हनीमून वाले पुरुष की उमर दस साल अधिक लगने लगी थी। मोना मुकेश से सटी जा रही थी। वह सोच रही थी कि,

मंजिल अब केवल पचीसतीस गज रह गई थी। सड़क के लोग साफ दीख रहे थे। निराशा की बदली छंटने लगी थी और आशा की किरण चमकने लगी थी। तभी एक झटके के साथ ट्राली रुक गई। लोग फिर परेशान होने लगे। ट्राली अब हिचकोले खा रही थी। परिवार वाली महिला कह रही थी, “नीचे सहीसलामत पहुंच जाएं तो जानो。” उस का बड़ा लड़का बोला, “पापा, यहां से तो नीचे कूदा जा सकता है。”

कंडक्टर बोला, “बाबू साहब, ढालवीं चट्टानें हैं। मैदान होता तो और बात थी。”

ऐंग्लोइंडियन पुरुष कहने लगा, “वक्तवेवक्त के लिए इस में पैराशूट किस्म की कोई व्यवस्था होनी चाहिए。” हनीमून मनाने वाले दंपति एकदूसरे की कमर में हाथ डाले हिचकोलों में टिके रहने का प्रयत्न कर रहे थे। मोना मुकेश की गोद में गिर पड़ी थी और उठने का कोई प्रयत्न नहीं कर रही थी। मुकेश उसे दिलासा दे रहा था, “अब डरने की कोई बात नहीं है। संकट टल गया है。”

उस के मुंह से संकट टलने की बात सुन कर सब लोग आश्चर्य से उस की ओर देखने लगे।

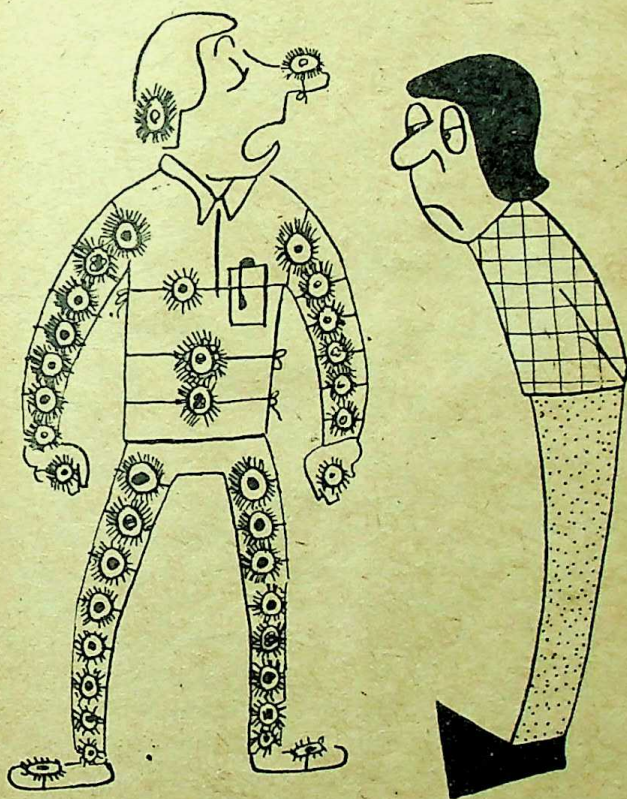
ट्राली फिर चली। हिचकोले अब भी खा रही थी, पर मंजिल नजदीक आती जा रही थी। इस बार वह नीचे ही जा कर रुकी। सब लोगों ने राहत की सांस ली। कंडक्टर के बाद बच्चे बाहर निकले। सड़क पर खड़े गुब्बारे वाले से वे गुब्बारे खरीदने लगे। उन के चेहरे पर भय की जगह उल्लास था। परिवार वाले पुरुष ने घड़ी देखी और हैरत में रह गया, “अभी कुल 8.25 हुआ है। 8 बजे तो ऊपर से चले ही थे。” उस की पत्नी ने टिप्पणी की, “पचीस मिनट में ही सब कुछ हो गया。”

एंग्लोइंडियन महिला आंखें बंद किए प्रभु ईशु के धन्यवाद में कुछ बुदबुदा रही थी. उस के आंखें खोलते ही पुरुष ने उस का हाथ उठा कर चूम लिया और पूछा, "कैसी तबीयत है, डार्लिंग?"

"अब तो कुछ ठीक है," कहते हुए वह उस का हाथ पकड़ कर उतर गई. हनीमून वाले दंपति खोए से बैठे थे. उन्हें जैसे सहीसलामत लौट आने पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. वे लड़-खड़ाते हुए उठे और थकेथके से बढ़ कर सामने के रेस्तरां में घुस गए.

मोना मौन पड़ी थी. मुकेश उस

अज्ञातनामा सहयात्री को हिलाहिला कर उठाने का प्रयत्न कर रहा था, पर उस पर जस बेहोशा का दौरा सा पड़ गया था. वह अजीब संकट में था. उसे चाय की तलब बुरी तरह हो रही थी. पूरे घटनाक्रम में ऊपर से वह संयत बना रहा था, पर भीतर से वह भी हिल गया था. लेकिन इस लड़की को यों ही छोड़ कर कैसे चला जाए? लड़की की नाड़ी व सांस चल रही थी पर न वह आंखें खोल रही थी और न ही कुछ सुन रही थी. उस का नामठिकाना भी मुकेश को ज्ञात नहीं था.



पि
न
य

कंडक्टर को नज़र आया। उसने उनके निकलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। आज की उन की ड्यूटी खत्म हो गई थी और उन्हें घर जाने की बेताबी थी। हार कर मुकेश ने कंडक्टर से कहा कि किसी रिक्शा वाले को बुला ले। रिक्शा आ जाने पर मुकेश ने लड़की को एक बार फिर जोर से झकझोरा पर वह बेहोश ही पड़ी रही। उसे उठा कर, धड़कते दिल से, संभाल-संभाल कर कदम रखता मुकेश ट्राली में से उतरा। रिक्शा में उसे संभाल कर लिटा दिया तथा अपने होटल चलने का आदेश दिया।

होटल पहुंच कर मुकेश ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया। मैनेजर से कह कर डाक्टर को बुलवाया। डाक्टर ने कोई पदार्थ सुंघाया। मोना ने आंखें खोलीं, पर फिर करवट ले कर आंखें बंद कर लीं। डाक्टर ने फिर उस के कस कर भिंचे हुए दांतों में चम्मच फंसाया तथा कोई दवा डाली। इस का असर हुआ। मोना को होश आ गया। डाक्टर उसे तीनचार घंटे आराम करने की सलाह दे कर चला गया।

मोना उठने का उपक्रम कर रही थी पर शरीर में जैसे शक्ति रह ही नहीं गई थी। मुकेश ने उस से लेटे रहने का ही आग्रह किया। उस की आंखें मुकेश के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रही थीं। मुकेश ने चाय मंगाई। चाय पी कर मोना कुछ स्वस्थ हुई। दोनों में परिचय हुआ।

मुकेश के पिता प्राइमरी स्कूल के अध्यापक थे। मुकेश स्वयं भी अध्यापक था, पर डिग्री कालिज में। उस ने अभी शादी नहीं की थी। उस के पिता की इच्छा थी कि अच्छाखासा दहेज मिले, जिस से वह अपने लिए एक मकान बना कर रिटायर होने के बाद आराम से रह सकें। मुकेश अपना सौदा नहीं करना चाहता था। अतः नौकरी मिलते ही उस ने पुस्तकें लिखना प्रारंभ कर दिया। तीन साल में पुस्तकों के माध्यम से तथा वेतन से बचा कर 20 हजार रुपए उस ने पिता

के हाथ पर रख दिए और इस प्रकार अपनी इच्छा से शादी करने को मुक्त हो गया। मातापिता के प्रति आखिर उस का कुछ तो कर्तव्य था ही। अब उसे पूरी छूट थी।

मोना उस की कहानी ध्यान से सुन रही थी। बीच में उस ने टोका, “आप मसूरी किस चक्कर में आए थे?”

मुकेश बोला, “मैदान में गरमी पड़ती है। छुट्टियां भी इन्हीं दिनों होती हैं। वहां कुछ काम नहीं हो पाता था। अतः किताबें लिखने के चक्कर में पिछले तीन साल से यहां आ रहा हूं। अब कुछ ऐसी आदत पड़ गई है कि गरमी आते ही जैसे पहाड़ बुलाने लगते हैं। इस साल कुछ काम नहीं करना था, फिर भी चला आया।”

मोना ने स्पष्ट पूछा, “अब शादी करने में क्या बाधा है?”

मुकेश बोला, “कुछ नहीं। अपनी रुचि की लड़की पाते ही कर लूंगा।”

मोना ने आंखों में शरारत भर कर पूछा, “आखिर आप कैसी लड़की चाहते हैं?”

मुकेश मोना का विस्तृत परिचय पा चुका था। एक क्षण में उस के चेहरे पर कितने ही भाव उभरे और मिटे। फिर धीरे से बोला, “जैसी आज शाम तोप-टिब्बे पर घूम रही थी।”

मोना का चेहरा लाल हो गया। बोली, “सच?”

मुकेश बड़े गौर से मोना का चेहरा देख रहा था। कुछ बोला नहीं। मोना ने उस की ओर हाथ बढ़ा दिया। उस ने मोना का हाथ थाम लिया। मोना ने उस की उंगली से अंगूठी निकाल कर अपनी उंगली में डाल ली तथा अपनी अंगूठी उतार कर उस की उंगली में डाल दी।

पलक झपकते वे एकदूसरे के हो गए। दूसरे दिन दोनों ने तार दे कर अपने-अपने मातापिता को बुला लिया।

तीसरे दिन होटल के प्रांगण में, सादे से समारोह में दोनों की शादी हो गई।

ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● एक दिन हमारे अध्यापक मुहावरे पढ़ा रहे थे. उन्होंने एक लड़के को खड़ा किया और उस से पूछा, "‘फूला न समाना’ मुहावरे का वाक्य में प्रयोग करो."

वह लड़का तुरंत बोला, "जब प्रेमीप्रेमिका परस्पर मिलते हैं तो वे फूले नहीं समाते हैं."

उस के इतना कहते ही कक्षा के सब लड़के और अध्यापक ठहाका मार कर हंसने लगे.

● एक बार हम पक्कर देख रहे थे. दृश्य यह था कि नायक नायिका को गुंडों से बचाता है और उन दोनों में प्यार हो जाता है. यह दृश्य देख कर हमारी आगे वाली कतार में एक लड़का अपने साथी से कहने लगा, "क्यों, यार, तू ने कभी किसी को बचाया या नहीं?"

उस का साथी उस का अभिप्राय समझ कर बोला, "यार, बचाया तो कइयों को था, मगर सभी ने 'राखी' बांध कर चलता कर दिया."

—राजीवकुमार, जालंधर

● हमारे यहां के अहल्या क्लब में टेबलटेनिस की प्रतियोगिता हो रही थी. अन्य शहरों से भी कई लड़के लड़कियां प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आए हुए थे.

खेल चल रहा था. दो लड़कियां खेल रही थीं. एक लड़की के शाट मारने पर गेंद मेरे पास बैठे हुए एक शरारती लड़के के पैरों के पास आ कर गिरी. किंतु लड़के ने गेंद उठा कर देने का कष्ट न कर उसे वहीं पड़ा रहने दिया. जैसे ही लड़की गेंद उठाने के लिए झुकी, लड़के ने तुरंत आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा कर बड़ी ही गंभीर वाणी में कहा, "अष्टपुत्रवती सौभाग्यवतीभव."

इतना कहते ही पूरा हाल तो ठहाकों से गूंज उठा, किंतु लड़की की शक्ल देखने योग्य थी.

—राजेंद्रकुमार श्रीमाली, महेश्वर

● हम सब परीक्षा भवन में बैठे लिख रहे थे. मुझ से थोड़ी ही दूर बैठा लड़का कुछ भी नहीं लिख रहा था. अध्यापक महोदय बारबार उस को देख रहे थे. जब उन का मन नहीं माना तो वह घूमते हुए उधर से निकले. तब भी वह लड़का चुपचाप बैठा इधरउधर देखता रहा.

जब परीक्षा का समय समाप्त होने में केवल आधा घंटा ही शेष था, अध्यापक महोदय से बिलकुल ही नहीं रहा गया. वह उस लड़के के पास गए और पूछा, "क्यों, भई, तुम कुछ लिख क्यों नहीं रहे हो? नहीं लिखोगे तो फेल हो जाओगे."

लड़का, जो उत्तर देने के लिए तैयार ही था, तुरंत बोला, "सर, कोई कुंभ का मेला थोड़े ही है जो कई साल बाद आएगा. परीक्षा तो हर साल होती है. इस बार नहीं तो अगली बार तो पास हो ही जाऊंगा."

उस का इतना कहना था कि परीक्षा भवन में बैठे हम सभी खिलखिला कर हंस पड़े और अध्यापक महोदय मुंह लटकाए लौट गए.

—राका अग्रवाल, वाराणसी ●

तन्मात्रे

कालिज में गर्मी की छुट्टियां प्रारंभ हो गई थीं। अधिकांश छात्र अपनेअपने घर चले गए थे। छात्रों के कोलाहल से पूर्ण रहने वाला होस्टल का प्रांगण वीरान नजर आ रहा था। कुल मिला कर तीन ही लड़के होस्टल में रह गए थे।

मैं इस वार की छुट्टियों में घर नहीं गया। दरअसल नवंबर में मुझे चार्टर्ड अकाउंटेंट की इंट्रेंस परीक्षा देनी थी। अतः मैं चाहता था कि होस्टल के एकांत वातावरण में रह कर तैयारी करूं।

होस्टल के बगल में ही श्री रमेशचंद्र खन्ना का फ्लैट था। खन्ना साहब प्रति-रक्षा विभाग में अफसर थे और कभी वह तथा मेरे पिताजी सहपाठी रह चुके थे। उन्होंने पिताजी से बहुत आग्रह किया कि मैं होस्टल में न रह कर उन के यहां रहूं। पर पिताजी को यह स्वीकार न था और उन्होंने विनम्रता से उन का आग्रह टाल दिया था। फिर भी, खन्ना साहब के हठ करने पर मेरे भोजन की व्यवस्था उन के यहां ही की गई थी।

खन्ना साहब की 12 वर्ष की एक लड़की थी—अनुराधा। वह मुझ से बहुत हिलीमिली थी। सुबह चाय के वक्त वह बराबर मेरी प्रतीक्षा करती मिलती और अपनी पढ़ाई में मेरी सहायता लेती। उस के नेत्रों में मेरे लिए बड़े भाई का सा आदर का भाव था। मैं भी उस से अपनी बहन की तरह ही स्नेह करता था।

छुट्टियां प्रारंभ हुए अभी आठदस दिन ही बीते थे कि मुझे ऊब महसूस होने लगी। सुबह से ही प्रचंड लू चलने लगती थी



और दोपहर होते-होते सड़कें प्रायः वीरान हो जाती थीं। भला लू के झाक में बाहर निकलने की जोखिम कौन उठाता। शाम को सूरज छिपने के बाद वातावरण ऊमस से भर जाता। ऐसे में भी बाहर निकलने की इच्छा नहीं करती थी। होस्टल में बचे तीनों ही छात्रों से मेरी घनिष्ठता हो गई थी। वे मुझ से सीनियर थे और काफी प्रगतिशील विचारों के थे। चूँकि मैं कुछ गंभीर स्वभाव का व्यक्ति हूँ, इसलिए मैं उन तीनों की तिकड़ी के अनुकूल अपने को नहीं बना पाया था।

सुबह के आठ बज गए थे। मैं खन्ना साहब के यहाँ जाने की तैयारी कर रहा था कि कमरे में सुशील का प्रवेश हुआ। उस का चेहरा खिला हुआ था।

“लगता है, आज भी दिल्ली से सोहनहलवा का कोई डब्बा पहुंचा है, क्यों?” मैं ने मुसकराते हुए पूछा। दिल्ली में सुशील के मामा रहते थे और वहाँ से यदाकदा सोहनहलवा का डब्बा आता रहता था। जिस दिन भी कोई डब्बा

पहुँचता, सुशील का चेहरा इसी तरह खिलाखिला रहता था।

“नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। पर आज के कार्यक्रम के सामने तो दिल्ली का सोहनहलवा ही क्या, आगरा के पेटे भी फीके पड़ेंगे।”

“ऐसा?” मैं ने आश्चर्य से कहा।

“हम लोग आज सिनेमा जा रहे हैं,” सुशील हाथ नचाते हुए बोला, “श्याम का कहना है कि तीन की तिकड़ी से चार की चौकड़ी बेहतर रहेगी। बोलो, चलोगे?”

सिनेमा की बात सुन कर मन में प्रसन्नता हुई। एक दिन के लिए तो इस मनहूस कैद से छुटकारा मिलेगा। मैं बनते हुए बोला, “कार्यक्रम तो बहुत अच्छा है। पर अपनी अंटी का कुआं बिलकुल सूखा पड़ा है। इसलिए...”

“बाबा, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अपना दिनेश बिलकुल हातिम है। आज के सिनेमा का सारा खर्च वह दे रहा है। अब तो चलोगे न?”

“नेकी और पूछपूछ वाली बात कर रहे हो?” मैं ने कहा और हम दोनों ही हंस पड़े।

ड्राइंगरूम में अनुराधा प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे देखते ही व्यंग्य भरे स्वर में बोली, “आइए, श्रीमान शलभ भाई साहब। कहां से चली आ रही है आप की सवारी? पूरे डेढ़ घंटे से आप की प्रतीक्षा कर रही हूँ। इतनी देर में तो मैं रसोई का काम निबटा लेती।”

सिनेमा हाल से निकलने के बाद शलभ को कुछ नया-नया सा अनुभव होने लगा था... और शलभ के स्वच्छ हृदय पर वासना की काली परतें जमने लगी थीं।

“तो चलो, पहले हम दोनों सिनेमा रसोई का काम ही निबटा लें,” मैं उसे चिढ़ाते हुए बोला।

“ऊँह, बड़े आए रसोई का काम निपटाने वाले। मुझे तो यह सवाल समझा दीजिए, बाबा,” अनुराधा कृत्रिम रोष प्रदर्शित करते हुए किताब खोलने लगी। मुझे चिंता हुई। सवाल वगैरा समझाने में देर हो सकती थी और अभी मुझे अपने कपड़े भी साफ करने थे।

“देखो, अनु, दरअसल हम लोग आज सिनेमा जा रहे हैं। शाम को आ कर जरूर बता दूंगा,” मैं बोला।

“अभी बता दीजिए न, बड़ी मेहरबानी होगी। अगर सवाल आज नहीं हुए तो सिस्टर मुझे डांटेंगी,” अनुराधा रुआंसी सी बोली।

“पगली, चारपांच घंटे की ही तो बात है। शाम को सिनेमा देख कर सीधे यहीं आ जाऊंगा, विश्वास करो,” मैं ने उसे मनाते हुए कहा। अनुराधा कुछ क्षणों तक एकटक मुझे देखती रही। फिर बोली, “ठीक है। जैसी आप की इच्छा। पर शाम को आईएगा जरूर।”

“जरूर, वादा करता हूँ,” मैं उस का गाल थपथपाते हुए बोला।

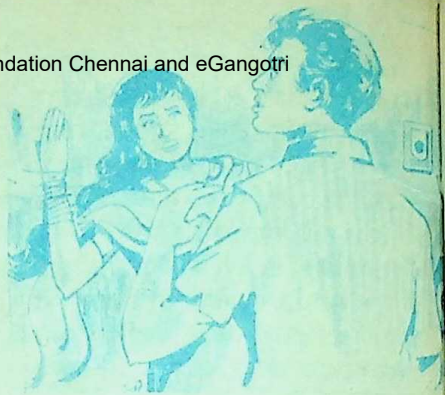
दो बज गए थे। हम तैयार हो कर होस्टल के फाटक पर खड़े टैक्सी का इंतजार कर रहे थे। तभी एक टैक्सी आती दिखाई पड़ी। “भई, यह तो बताओ, हम लोग कौन सी फिल्म देखने जा रहे हैं?” मैं ने टैक्सी में बैठते हुए कहा।

“‘पैराडाइज’ टाकीज में,” दिनेश बोला।

“मैं ने फिल्म का नाम पूछा है, सिनेमाघर का नहीं,” मैं मजाक के लहजे में बोला।

“फिल्म का नाम?” वह कुछ देर तक सोचता रहा। फिर सुशील की ओर देखते हुए उस ने कहा, “अरे, शलभ को फिल्म का नाम तो बताओ।”

“उतावले क्यों हुए जा रहे हो? अभी पहुंच जाते हैं,” सुशील ने मुझ से कहा।



मैं चुप रह गया। थोड़ी देर में ही हम लोगों की टैक्सी ‘पैराडाइज’ टाकीज के सामने पहुंच गई। टैक्सी से उतर कर हाल की ओर बढ़ते ही ऊपरी हिस्से में बोर्ड पर लगे पोस्टर पर मेरी नजर पड़ी। देख कर मेरी आंखें आश्चर्य से फैल गईं। पोस्टर में कोई अश्लील तस्वीर बनी हुई थी और नीचे लिखा था, ‘दोराहा’— केवल वयस्कों के लिए। मेरा कलेजा धक-धक करने लगा।

“लेकिन यह तो वयस्कों के लिए है,” मैं ने घबरा कर कहा।

“क्या तुम वयस्क नहीं हो?”

“वेशक। तुम तो बिलकुल भरेपूरे वयस्क हो,” दिनेश ने मुसकराते हुए कहा, “तुम्हारे होंठों पर उग रही महीन-महीन मूँछें इस बात का जोरशोर से प्रचार भी कर रही हैं।”

“अच्छा, अच्छा। ज्यादा साहित्य मत झाड़ो। मैं यह फिल्म नहीं देख सकता,” मैं ने कहा। सिनेमा के उस पोस्टर की ओर मेरी पीठ थी। पर मैं जानबूझ कर इस कोण में खड़ा था कि तस्वीर का कुछ भाग मेरे दृष्टिक्षेत्र में पड़ता रहे।

“लेकिन क्यों? कुछ कारण भी तो बताओ,” इस बार श्याम बोला।

“कारण स्पष्ट है। इस तरह की फिल्मों में कई बातें ऐसी दिखाई जाती हैं जिन्हें हमारे किशोर मस्तिष्क पचा नहीं पाते। तभी तो ऐसी फिल्में एक विशेष उमर वालों के लिए निषिद्ध कर दी

थीं...और जब एक झटके

के साथ वह होश में आया

तो उसे लगा कि वह कितनी

दूर भटक गया था...

जाती हैं."

मेरी यह बात सुन कर सुशील जोरों से हंस पड़ा. "ऊंट जैसे तो हो गए, पर रहे बुद्ध ही!"

"अरे, ये सब तो सिद्धांत की बातें हैं," दिनेश सुशील का समर्थन करते हुए बोला, "ऐसी कौन सी फिल्म है जिस में अश्लीलता नहीं होती? दरअसल, 'केवल वयस्कों के लिए' की मुहर लगा कर अप्रत्यक्ष रूप से हम लोगों को उकसाया जाता है कि हम ऐसी फिल्में देखें तथा भावी जीवन को ठीक ढंग से जीने के लिए कुछ विशेष अनुभव प्राप्त करें. सब से बड़ी बात तो यह है कि समानता का अधिकार हम लोगों का, मेरा मतलब है, हम छात्रों का मौलिक अधिकार है. इस अधिकार पर किसी वर्गविशेष की मर्जी से प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता." दिनेश बड़े जोश में बोल गया. उस के तर्क मुझे सशक्त भी लगे.

तीनों ही मित्र अपनेअपने तर्क से मेरे मन के संकोच को दूर करने का प्रयास कर रहे थे. मैं ठगा सा खड़ा था.

"अब चलो भी," उपसंहार के रूप में सुशील मुझे दरवाजे की ओर धकेलते हुए बोला, "तुम कोई दूधपीते बच्चे तो हो नहीं. फिर यहां कोई देखता थोड़े ही है."

न जाने क्यों, मुझे सुशील के अंतिम वाक्य से काफी राहत मिली. मुझे लगा, मैं एक पूर्ण वयस्क युवक हूं तथा अब तक के जीवन में मैं ने 'वयस्क' फिल्म न देख

कर बड़ी भूल की है. पोस्टर की तस्वीरें मुझे निरंतर बोसाईबंग आ रही थीं. फलतः मेरा विरोध ढीला पड़ता गया और अनायास ही मेरे पैर सिनेमा हाल की तरफ बढ़ चले.

फिल्म खत्म होने के बाद हम लोग बाहर आ गए और पैदल ही एस्प्लेनेड की ओर बढ़ चले. मेरे मस्तिष्क में एक तूफान सा मचा हुआ था और आंखों के सामने फिल्म के कुछ विशेष दृश्य बारबार काँध जाते थे. लाख चेष्टा कर के भी मन को एकाग्र नहीं कर पा रहा था. मैं अपनी कल्पनाओं में लीन चला जा रहा था कि सुशील के ठहाके से चौंक पड़ा.

"क्यों, प्यारे, कैसी लगी फिल्म?" कुछ उपहासपूर्ण स्वर में दिनेश ने मुझे संबोधित किया. मुझे बहुत लज्जा महसूस हुई. मैं अपनी ग्लानि को गंभीरता का आवरण देता हुआ चुप रहा.

दिनेश मीज में था या यह उन लोगों की पूर्वनिश्चित योजना थी, मुझे पता नहीं. वे लोग टहलते हुए एक बड़े रेस्तरां में चले आए. वहां हम लोगों ने हलका जलपान किया.

"हां तो, शलभ, ठंडा पियोगे या गरम?" श्याम ने मुझ से पूछा. मुझे घबराहट हुई तथा मैं ने सुशील की ओर देखते हुए कहा, "देखो, सुशील हम लोगों में सीनियर है. वह जो मंगाए, चलेगा."

"आज तुम्हें एक नई चीज पिलाता हूं—कोकाकोला स्पेशल. तुम भी याद करोगे," सुशील मुसकराते हुए बोला.

मुझे लगा, 'स्पेशल' शब्द पर विशेष जोर दिया गया था. कोकाकोला का नाम तो सुना था, पर 'कोकाकोला स्पेशल' मेरे लिए सर्वथा नई चीज थी. अतः मैं ने स्पष्टीकरण के लिए प्रश्नसूचक दृष्टि से सुशील की ओर देखा. पर सुशील ने मेरे प्रश्न का उत्तर देने के बजाए एक बेयरे को अपने पास बुलाया और धीरेधीरे कानाफूसी के से स्वर में उसे वह कुछ आर्डर देने लगा.

थोड़ी देर के बाद बेयरा आता

दिखाई पड़ा। उस के हाथ की ट्रे में चार छोटे गिलास, बर्फ के टुकड़ों से सजीए हुए फण्डा का फिजवाइल हूँ, गुशील मेरा शुभ-चिंतक है तथा मुझे सुसंस्कृत तथा सम्य बनाने में सहयोग दे रहा है। धीरेधीरे मेरी शिक्षक दूर हो गई और फिर दूसरे ही पल सिगरेटों के धुएं से महकते वातावरण में 'चीयर्स' की महीन सम्मिलित ध्वनि गुंज उठी।

"बियर?" मैं चौंकेते हुए बोल उठा।
 "नहीं, कोकाकोला स्पेशल," सुशील सहज स्वर में बोला।

"यह तो शराब है। मैं नहीं पी सकता," मैं घबराहट भरे स्वर में बोला। पर मुझे लगा, मेरे स्वर में पहले जैसी दृढ़ता नहीं थी।

"पागल हो, यह शराब की श्रेणी में थोड़े ही आती है," श्याम बोला।

"पर इस में नशा तो होता ही है," मैं ने आपत्ति की।

"किस ने कह दिया?" जोर से हंस कर दिनेश बोल उठा, "इस में अल्कोहल की उतनी ही मात्रा होती है जितनी कि साधारण कोकाकोला में।"

"जमाना बहुत आगे बढ़ गया है, बंधु। जो बुद्धिमान होते हैं, वे जमाने के साथसाथ चलते हैं," श्याम ने अपनी जेब से सिगरेट का पाकेट निकालते हुए कहा।

"आज का प्रत्येक शिक्षित युवक बियर पीता है। जो बियर नहीं पीता, उसे दुनिया असम्य और असंस्कृत कहती है, समझे?" दिनेश ने मुझे झकझोरते हुए कहा।

"इस चिलचिलाती धूप में कोल्ड बियर से जो तृप्ति मिलेगी, उस का कहना ही क्या! फिर तुम रोज थोड़े ही पीते हो?" सुशील मुझे समझाते हुए बोला।

मुझे पता था कि बियर शराब की श्रेणी में ही आती है। इस में नशा भी होता है। आगे चल कर यही बात आदत के रूप में बदल भी सकती है। पर न जाने क्यों, मुझ में विरोध की सारी शक्ति कपूर की तरह उड़ चुकी थी। जीवन की प्रथम 'वयस्क' फिल्म देख कर मैं काफी ढीठ हो गया था। मुझे ऐसा महसूस हुआ

जब हम होस्टल लौटे तब रात के सात बज गए थे। मैं सीधा कमरे में आ कर पड़ गया। मस्तिष्क में बियर का हल्का नशा छाया हुआ था। 'दोराहा' के कई अंतरंग दृश्य भानसपटल पर विद्युत की तरह कौंध जाते थे। सारे शरीर में उत्तेजना से कंपकपी छाई हुई थी। तभी मुझे खयाल आया कि शाम को अनुराधा के पास जाना था। मैं कपड़े बदल कर चल पड़ा।

अनुराधा ड्राइंगरूम में मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मैं मेज के पास वाले सोफे पर बैठ गया और एकटक अनुराधा की ओर देखने लगा। न जाने क्यों, वह आज मुझे काफी सुंदर लग रही थी।

"शायद बहुत थक गए हैं, भाई साहब?" अनुराधा अपनी किताब के पन्ने उलटती हुई बोली, "जल्दी से यह सवाल समझा दीजिए। वस, आप की छुट्टी।"

मैं एकटक उस की ओर देखे जा रहा था। बियर का वह नशा वासना के उस कीड़े को निरंतर उत्तेजित कर रहा था जो 'दोराहा' देखने के बाद से मेरे



मस्तिष्क में जन्म ले चुका था।

“क्या बात है, भैया? सिर दर्द कर रहा है क्या? फिर मैं आप का सिर दबा दूँगी।”

मैं चुप रहा। दरअसल, अनुराधा क्या कह रही थी, मैं बिल्कुल ही नहीं समझ पा रहा था। वासना से मेरी आँखें लाल हो गई थीं और शरीर के रोंगटे खड़े हो गए थे। धीरे-धीरे मेरे नेत्रों के सामने एक कुहरा सा छा गया और फिर—फिर मुझे लगा, मेरे सामने बारह वर्षीय किशोर अनु नहीं, बल्कि एक पौडशी, पूर्ण युवती खड़ी है। मुझे लगा, ‘दोराहा’ की वह नटखट चंचल हीरोइन भाग कर उस कमरे में पहुँच गई है।

“तुम...तुम बहुत सुंदर लग रही हो, अनु!” मेरे मस्तिष्क का वह भूत बोला।

अनुराधा हल्के काफी रंग की चुस्त स्लैक्स और उसी से मेल खाती ढीली कमीज पहने हुई थी। वह चौंक पड़ी। शायद उसे ऐसे वाक्य की आशा नहीं थी।

“अनु...!” मेरा साहस बढ़ा, “देखो, आजकल स्लैक्स पर चुन्नी कोई नहीं लेता। तुम भी हटा दो。”

मैं खड़ा हो कर सामने वाले सोफे पर बैठी अनुराधा की ओर बढ़ने लगा। अनुराधा उच्चक कर खड़ी हो गई। उस की आँखों में भय छलकने लगा था। किसी अनिष्ट की आशंका से वह पीछे की तरफ मेज की ओर खिसकने लगी। मैं और आगे बढ़ा। वह बिना कुछ बोले मेरे नेत्रों

में झाँक रही थी। फिर अचानक, बिल्कुल विद्युत गति से वह मेरी तरफ बढ़ी और मेरे खोले हाथों के ओर मुँह पर तमाचों की झड़ी लगा दी। तमाचे पड़ते रहे... पड़ते रहे, और तब तक पड़ते रहे जब तक कि वह थक कर हाँफने न लगी। मैं सन्न खड़ा था।

तभी वह मुड़ी और किसी विफरी हुई शेरनी की भाँति उस ने मेज पर पड़ी स्याही की दवात उठा कर मेरी ओर फेंकी। दवात सीधे मेरे ललाट पर लगी और मैं अचेत हो कर जमीन पर गिर पड़ा।

दूसरे दिन सुबह सात बजे मेरी चेतना लौटी। मैं खन्ना साहब के घर पर ही था।

अनुराधा मेरे सिरहाने बैठी मेरा सिर सहला रही थी। उस ने अपने डैडी-मम्मी को मेरे सीढ़ियों से गिर जाने की बात कह कर टाल दिया था। मैं निरीह सी दृष्टि से उसे देख रहा था। उस की आँखें निरंतर जागरण से लाल हो गई थीं। होंठों पर पपड़ी जमी हुई थी। मेरे हाथ बढ़े और अनुराधा भावातिरेक में मेरे वक्ष में अपना मुँह छिपा कर सिसक पड़ी।

“मुझे माफ कर दीजिए, भाई साहब,” अनुराधा की आँखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी, “मैं...मैं...”

उस का कंठ अवरुद्ध हो गया। मेरे भी आंसू बहने लगे थे। मस्तिष्क में कल का भ्रंशावात न जाने कहाँ गायब हो गया था। अनुराधा का स्पर्श बहुत शीतल लग रहा था।

मैं स्नेह से उस के बालों को सहलाते हुए बोला, “पगली, भूल मेरी ही तो थी। कल मुझ में एक राक्षस बैठा हुआ था, कुसंग का राक्षस। तुम्हारे तमाचों ने मुझे एक नई रोशनी दी है, अनु। सचमुच, आत्मनियंत्रण एक ऐसी चीज है जो किसी भी परिस्थिति में नहीं बिसारना चाहिए। तुम्हारे तमाचे मेरे लिए हमेशा अंकुश का काम करेंगे。”

याद आ गया...

यह रंग गुलाबी कली का नक्शा है किसी की कमसिनी का, मुँह फेर के यूँ चली जवानी याद आ गया रूठता किसी का।

—जलील मानिकपुरी

सावधान

कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री विमल साबू, इंदौर, हैं.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● महिला वेष में चोर

बूंदी. सूरजमल महाजन के यहां शादी के अवसर पर रात्रि को महिलाएं गीत गाने आईं. उन के साथ महिला वेष में चोर भी चले आए. जब महिलाएं नाचगा रही थीं तो ये चोर घर में छिप गए. महिलाएं गीत गाने के बाद अपने घरों को चली गईं तथा परिवार के लोग छतों पर जा कर सो गए. इस के बाद चोरों ने ताले तोड़ दिए और 40 हजार रुपए के मूल्य के जेवर व नकदी ले जाने में सफल हो गए.

—दैनिक नवज्योति, जयपुर (प्रेषक : गोविंदप्रसाद सिंहल, सवाई माधोपुर)

● ठगों के चक्कर में

नई दिल्ली. सीमेंट की 15 बोरियों के चक्कर ने आज दो ठगों और एक नागरिक को उस समय जेल पहुंचा दिया जब वे एकदूसरे के जाल में फंस गए.

गांधीनगर क्षेत्र में तीन ठगों ने खुद को पुलिस वाला बताते हुए एक व्यक्ति को, जो एक ठेले पर 15 बोरी सीमेंट लिए जा रहा था, यह कह कर धमकाया कि वह गैरकानूनी तौर पर सीमेंट ले जा रहा है.

इस पर ठेले वाले व्यक्ति ने एक मकान में पांच सौ रुपए रिश्वत दे कर जान छुड़ानी चाही. मकान पर पहुंच कर ठेले वाले का शोर सुन कर कुछ लोगों ने दोनों ठगों को घेर कर पुलिस तक पहुंचाया. एक ठग फरार हो गया.

सीमेंट वाले को भी सुरक्षा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया गया, क्योंकि उस के पास कोई परमिट न था.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषिका : सरोज कक्कड़, नई दिल्ली)

● तबादला चाहने वाली महिला के साथ ठगी

जबलपुर. उज्जैन की तबादले के लिए इच्छुक श्रीमती रामकली बाई नामक एक सहायक अध्यापिका को ठगने और धोखा दे कर उस से 250 रुपए ऍठने के आरोप में सतना जिले के एक भूतपूर्व शिक्षक बाबूलाल मिश्र को दंडित किया गया है.

श्रीमती रामकली बाई गुप्ता जबलपुर जिले की कटनी तहसील के कन्हवारा गांव की प्राथमिक पाठशाला में सहायक अध्यापिका थी और वह किन्हीं कारणवश उज्जैन स्थानांतरण चाहती थी. अभियुक्त बाबूलाल मिश्र ने श्रीमती गुप्ता को झांसा दिया कि वह शिक्षा विभाग का एक अधिकारी है. उस ने संभागीय शिक्षा अधीक्षक, जबलपुर के बनावटी हस्ताक्षर सहित एक पत्र पाठशाला की प्रधान अध्यापिका को दिया, जिस में स्थानांतरण का आश्वासन था. यह मामला विशेष पुलिस स्थापना राज्य सतर्कता आयोग ने न्यायालय में प्रस्तुत किया था. न्यायाधीश ने अभियुक्त बाबूलाल मिश्र को दो वर्ष की कठोर सजा व 500 रु. जुर्माना किया.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : विमल साबू, इंदौर)

● बुढ़िया ठगों का शिकार

राजपुर थानांतर्गत एक अंधविश्वासी धनाढ्य विधवा बुढ़िया को दो ठगों का

शिकार होने के कारण चार हजार विक्टोरिया व जार्ज पंचम के निशान के सिक्कों से हाथ धोना पड़ा। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताते हैं कि एक ईसाई धर्मप्रचारक और एक ओझा ने बुढ़िया को विश्वास दिलाया कि उस के गड़े धन पर उस के दिवंगत पति की आत्मा मंडरा रही है, जिसे वे दोनों मंत्रसिक्त खून के छींटे दे कर हटा देंगे। बुढ़िया ने उन की बातों में आ कर वह स्थान दिखा दिया जहाँ लगभग 26 हजार रुपए का धन गड़ा हुआ था। दोनों ठगों ने मौका लगते ही उस पर हाथ साफ कर दिया।

—दैनिक मध्यप्रदेश, झांसी (प्रेषक : सुधीरकुमार गुप्ता, शिवपुरी)

● हरफनमौला धोखेबाज

लाडगंज. पुलिस ने एक ऐसे वृद्ध व्यक्ति को अपना मेहमान बनाया जो लोगों के यहाँ मेहमानी भी करता था और चकमा दे कर कुछ ऐंठ भी लेता था। दुर्गाप्रसाद सोनी नामधारी 68 वर्षीय यह वृद्ध झाड़नेफूंकने, वांझ को पुत्रवती बनाने, पुत्र अथवा पुत्री का पिता बन कर उन की शादी का इंतजाम करने आदि का ढोंग रच कर लोगों को ठगता था। इस ने ये कारनामे अनेक स्थानों पर किए और अब तक 20 बार जेल की यात्रा की है। इस व्यक्ति की एक विशेषता है कि उस के गले के अंदर कुदरती तौर पर एक थैली सी है, जिस में वह 50 नोट छिपा लेने में माहिर है। इस कुदरती विशेषता का उपयोग भी यह लोगों को चकमा देने में करता है।

—नवभारत, जबलपुर (प्रेषक : कैलाशचंद्र शर्मा, जबलपुर)

● सस्ती साड़ियों के लालच में

कुछ दिन पूर्व हमारे स्कूल में एक व्यक्ति एन. सी. सी. का अधिकारी बन कर प्रधानाचार्या के कार्यालय में आया तथा एन. सी. सी. की अध्यापिका से मिलने की अनुमति मांगी। जब वह अध्यापिका आई तो उस तथाकथित एन. सी. सी. अधिकारी ने कहा कि एन. सी. सी. कैंटीन में 14 जापानी नायलान की साड़ियां हैं और चूंकि वह स्टोरकीपर है अतः उसे सारी साड़ियां उसी दिन बेच देनी हैं। साड़ियां भी सस्ती मिलेंगी। 100 रुपए मूल्य की साड़ी केवल 72 रुपए में दे दी जाएगी क्योंकि बेचने की जल्दी है।

उसी समय एन. सी. सी. का एक और अधिकारी विद्यालय में आ गया, जिस को विद्यालय के काफी लोग जानते हैं। तथाकथित व्यक्ति इस एन. सी. सी. अधिकारी से दूर खड़ा हो कर इस प्रकार बात करने लगा जैसे कि उस की पुरानी जानपहचान हो। पास ही एन. सी. सी. का कार्यालय भी है। अतः विश्वास दिलाने के लिए दोनों अध्यापिकाओं के निकलने से पूर्व वह व्यक्ति इस कार्यालय में जा कर अन्य एन. सी. सी. अधिकारियों से इस प्रकार बातें करने लगा जैसे कि वह वास्तव में एन. सी. सी. का अधिकारी हो। यह सब देख कर अध्यापिकाओं को संदेह करने की कोई गुंजाइश नहीं रही। एन. सी. सी. कार्यालय में भी उस ने सभी अधिकारियों को अपनी बातों से प्रभावित कर लिया था।

जैसे ही रुपए ले कर दोनों अध्यापिकाएं निकलीं, वह साथ हो लिया और उन्हें सफदरजंग हवाई अड्डे की एक छोटी सी कैंटीन में ले जा कर बिठा दिया। पानी बगैरा पिलाने के बाद कहने लगा, “बहनजी, मुझे रुपए दे दीजिए ताकि मैं जल्दी से वाउचर बनवा लाऊं。”

अध्यापिकाओं के यह कहने पर कि पहले साड़ी तो दिखाओ, वह कहने लगा कि उन में से एक उस के साथ चल सकती है। पर एक जाने को तैयार नहीं हुई। किसी तरह उस ने उन दोनों को प्रभावित कर के रुपए ले लिए और अंदर चला गया। जब उस के वापस लौटने में एक घंटे से भी अधिक समय हो गया तब इन दोनों अध्यापिकाओं को पता चला कि वे ठगी का शिकार हो गई हैं। —कुसुमलता, नई दिल्ली ●

Digitized by Ananya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

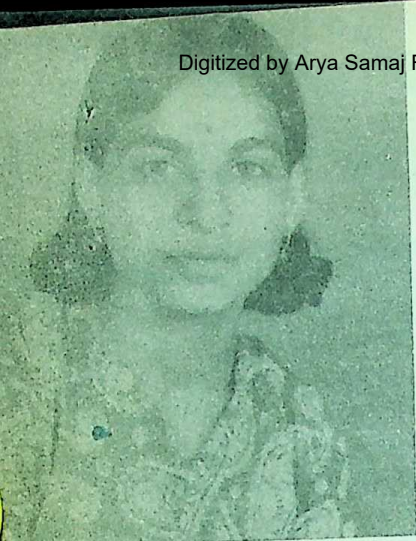
मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छाया : सूरज न. शर्मा, जयपुर



छाया : ज. स. पारीक, जयपुर





फिर भी व्यक्तिगत रूप से इस के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर इसे पुरस्कृत किया गया। दूसरी बार 1974 में कलकत्ता में हुई 31वीं स्पर्धा में सरला ने चौथा स्थान प्राप्त कर के मध्य प्रदेश को पूरी स्पर्धा में तृतीय स्थान का भागीदार बनाया। और अब, अभी हाल ही में दिल्ली में नेशनल स्पोर्ट्स क्लब आफ इंडिया में

सरला सरवटे व

तैराकी के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित

दिल्ली स्वीमिंग एसोसिएशन के तत्त्व-वधान में इस वर्ष 5, 6, 7 और 8 जून को आयोजित 1975 की जूनियर राष्ट्रीय तैराकी स्पर्धा में गोताखोरी के पहले दल में इंदौर की कुमारी सरला सरवटे एवं कुमारी कल्पना तेंदुलकर ने क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त कर पहली बार तैराकी के क्षेत्र में मध्य प्रदेश के लिए एकएक स्वर्ण एवं रजत पदक अर्जित किए। इसी प्रतियोगिता के तीसरे दल में इंदौर के ही श्री सतीश जेंबुलकर ने तीसरा स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक जीता। तैराकी की कनिष्ठ स्पर्धाओं में पहली बार मध्य प्रदेश को गौरवान्वित करने वाली इन उभरती प्रतिभाओं पर सिर्फ इंदौर को ही नहीं, पूरे प्रदेश को गर्व है।

उक्त तैराकी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक अर्जित करने वाली कुमारी सरला सरवटे अभी तक तीन राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग ले चुकी है। सर्व-प्रथम 1973 में जयपुर में हुई 30वीं राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में यद्यपि सरला कोई स्थान प्राप्त नहीं कर सकी,

हुई 32वीं जूनियर राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में वह बालिकाओं के दल में प्रथम स्थान प्राप्त कर पहली बार इस क्षेत्र में मध्य प्रदेश के लिए 'सोना' लाई।

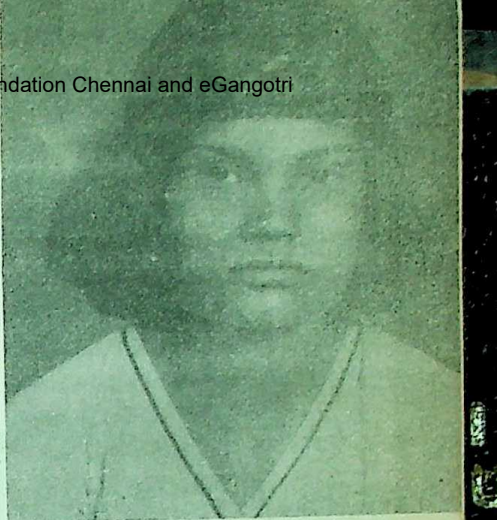
सरला ने आज से केवल तीन साल पहले ही तैराकी में रुचि लेना शुरू किया और एक वर्ष पूर्व इस का आकर्षण गोताखोरी के प्रति जाग्रत हुआ था। इतने अल्प समय में ही इतनी महती उपलब्धि किसी भी खिलाड़ी के लिए भविष्य में कुछ कर गुजरने की उस की दृढ़ इच्छा-शक्ति का आधारस्तंभ होती है।

उक्त स्पर्धा में सरला द्वारा श्रेष्ठ प्रदर्शन भारतीय तैराकी विशेषज्ञों में चर्चा का विषय बना हुआ है। वैसे इसे 'ब्रेस्ट स्ट्रोक' में विशेष योग्यता तो प्राप्त है ही, साथ ही 'टू ऐंड हाफ समरसाल्ट फारवर्ड डाइविंग' की एक ऐसी अद्भुत प्रतिभा की यह धनी है जो भारत में गिनीचुनी लड़कियों को ही प्राप्त है। दिल्ली में इस की इस अद्भुत क्षमता को देख कर विख्यात तैराक एवं अर्जुन पुरस्कार के विजेता श्री भंवरसिंह ने कहा था कि ऐसी दुर्लभ प्रतिभाएं विश्व तैराकी क्षेत्र में

भारत को किसी सीमा तक स्थापित कर सकती हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमवर्गीय परिवार की एवं घर में सब से छोटी सरला, जो कि शर्मिल स्वभाव की है, भविष्य में राष्ट्रीय खेल-कूद प्रशिक्षण संस्थान, पटियाला में प्रवेश की इच्छुक है। उचित 'कोचिंग' एवं पर्याप्त सुविधाएं यह अपनी महत्वाकांक्षाओं को मूर्त रूप देने हेतु आवश्यक तत्त्व मानती है। उचित अवसर एवं समु-



कल्पना तेंदुलकर

करने वाली मध्य प्रदेश की दो छात्राएं...

चित प्रशिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध हों तो यह इस क्षेत्र में भारत का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में चमकाने की तीव्र इच्छा रखती है।

16 वर्षीया कुमारी सरला सरवटे स्थानीय अहल्या आश्रम विद्यालय में 11वीं कक्षा की छात्रा है। तैराकी के अतिरिक्त इस की 'इंटीरियर डेकोरेशन' में विशेष रुचि है। अच्छा साहित्य हो तो ज्ञानोपार्जन हेतु कभीकभी पढ़ भी लेती है। तैराकी के संबंध में पुस्तकों का सरला के पास अच्छा संग्रह है। इस क्षेत्र में यह नफीसा अली, चंद्रा सरकार और मंजरी भार्गव को अपना प्रेरणास्रोत मानती है। यह स्थानीय डाइविंग एक्वेटिक क्लब की नियमित सदस्या है और प्रति दिन चार घंटे तैराकी का अभ्यास करती हैं।

रजत पदक विजेता कुमारी कल्पना तेंदुलकर स्थानीय होल्कर विज्ञान महाविद्यालय की बी. एससी. द्वितीय वर्ष की प्रतिभाशाली छात्रा है। गत वर्ष इस ने बी. एससी. प्रथम वर्ष की परीक्षा 74% के सम्माननीय अंकों से उत्तीर्ण कर एक

नया कीर्तिमान स्थापित किया था। वह भविष्य में एक सफल डाक्टर बनना चाहती है।

स्वभाव से अपेक्षाकृत निर्भीक 17 वर्षीया कुमारी कल्पना अपने महाविद्यालय के सभी राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों में समान रूप से भाग लेती है। कल्पना भी डाइविंग एक्वेटिक क्लब की नियमित सदस्या है। इस की मान्यता है कि तैराकी के क्षेत्र में और अधिक प्रतिभाओं को निखारने के लिए अच्छी 'कोचिंग', स्तरीय 'स्वीमिंग पूल' आदि अति आवश्यक हैं। यदि शासन भी इस दिशा में अच्छी प्रतिभाओं को किसी न किसी रूप में सहायता प्रदान करे तो ऐसी कई 'नई फसलें' भारत का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में चमका सकती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष्य में इंदौर की इन बालिकाओं द्वारा अर्जित यह अभूतपूर्व सम्मान नगर एवं प्रदेश के लिए विशेष गौरव की बात है।

—आदिल कुरेशी

सरितामुक्ता विश्वविद्यालय प्रतिनिधि ●

राष्ट्रीय महिला

दिल्ली महिला टीम की कप्तान.

अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष को सार्थक बनाते हुए भारतीय महिलाओं ने एक नए खेल की शुरुआत कर दी है. भारतीय महिलाएं अब तक गेंद फेंकने का ही खेल खेला करती थीं, फुटबाल नहीं. लेकिन अब उन्होंने फुटबाल भी खेलना शुरू कर दिया है. इसे अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में खेलकूद के क्षेत्र में भारतीय महिला जगत की सब से बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है.

दुनिया के अन्य देशों, जैसे कि पश्चिमी जर्मनी, इंग्लैंड, अमरीका, जापान और आस्ट्रेलिया में महिला फुटबाल का प्रचलन एक लंबे अरसे से है. भारत के लिए यह बिल्कुल नया हो, यह

बात भी नहीं. गोवा की महिलाओं का बहुत दिनों से फुटबाल की दुनिया से नाता जुड़ा हुआ है. वहां वाकायदा एक महिला फुटबाल क्लब भी है. प्रथम राष्ट्रीय महिला फुटबाल चैंपियनशिप के संयोजक श्री सफदर रजा जैदी ने उन के तेजतर्रार खेल का बयान करते हुए बताया कि एक बार वहां की महिलाओं ने गोवा की पुरुषों की एक नामी टीम को पराजित कर दिया था.

तीनचार माह पूर्व ही जन्मे भारतीय महिला फुटबाल संघ, पूना ने इतने कम समय में ही इतनी बड़ी भीड़ जुटा कर रिकार्ड कायम कर दिया है क्योंकि अब तक किसी भी महिला राष्ट्रीय प्रतियोगिता में इतनी बड़ी भीड़ के दर्शन नहीं हुए थे. एक टीम तो तीनचार दिन के ही

मैच के दौरान रोमांचक स्थिति...



लेख . वीरेंद्र शुक्ल

फुटबाल चैंपियनशिप



पश्चिम बंगाल की विजेता टीम खुशियां मनाते हुए.

अभ्यास के बाद चैंपियनशिप की होड़ में शामिल हो गई थी. यह टीम विदर्भ की थी. वहां की टीम मैनेजर श्रीमती आशा पवार ने यह बताया. इस दृष्टि से विदर्भ की लड़कियां निश्चित रूप से बधाई की पात्र हैं, क्योंकि वे अपनी चुनौती फाइनल तक निभाने में सफल रही थीं.

पश्चिमी बंगाल टीम की मैनेजर श्रीमती शेफाली बोस के अनुसार उन की टीम ने 15 दिन के अभ्यास के बाद कलकत्ता छोड़ा था. हर टीम के साथ यही बात थी. तीन से लेकर पंद्रहवीं दिनों के

ही अभ्यास के बाद टीमों मैदान में उतर पड़ी थीं. इसे भारतीय खेलकूद के महिला जगत में एक प्रयोग ही कहा जा सकता है क्योंकि फुटबाल की यह शुरुआत थी. शुरुआत सफल भी रही. प्रथम आयोजन में ही 11 राज्यों की टीमों ने हिस्सा लेकर भारत में महिला फुटबाल की सफलता पर मुहर लगा दी है. यह उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है. होनहार के लक्षण शुरू में ही प्रकट हो जाते हैं.

गोवा की वह टीम जो हिंदुस्तान फुटबाल खेलने में एकमात्र माहिर हो, भारत

के प्रथम राष्ट्रीय महिला फुटबॉल चैंपियनशिप में भाग न ले, बात सप्रसन्न में आती नहीं। जैदी साहब का कहना था कि यह सब आनन्दोत्साह में हुआ, इसलिए उन्हें नहीं बुलाया जा सका। लेकिन जब महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और गुजरात की टीमों आ सकती थीं तो गोवा की टीम भी बुलाने पर जरूर आती। खैर, कारण जो भी हो, पर यदि गोवा की टीम आती तो चैंपियनशिप की रौनक और बढ़ जाती।

गोवा की टीम के न आने से भी बहुत फर्क नहीं पड़ा। पश्चिमी बंगाल की छोटी-छोटी लड़कियों ने अपने नयनाभिराम खेल से महिला फुटबॉल को हंसी उड़ाए जाने से बचाए रखा। यही नहीं, पश्चिमी बंगाल की टीम ने चैंपियनशिप में जुटी टीमों में अपनी श्रेष्ठता कायम रखते हुए विजयस्वरूप, 'चिनचूरे ट्रॉफी' भी जीती। वे इस ट्रॉफी की सही माने में हकदार भी थीं। उन की टीम असंदिग्ध रूप से सर्वश्रेष्ठ थी।

पश्चिमी बंगाल ने लीग मैचों में मध्य प्रदेश को 2-0 से, दिल्ली को 3-0 से, राजस्थान को भी 3-0 से हराते हुए तथा उत्तर प्रदेश से गोलहीन बराबरी पर खेल कर जब 7 अंकों से सेमीफाइनल में कदम रखा तो बिहार की टीम ने अपने विरुद्ध हुए एक फंसले को आधार बना कर मैदान में उतरने से इनकार कर दिया। इस तरह बंगाल को सहज ही में फाइनल में प्रवेश मिल गया। 'ए' ग्रुप से सेमीफाइनल में प्रवेश करने वाली टीम मेजबान उत्तर प्रदेश की थी। यद्यपि इस ने अपने चार मैचों में से किसी में भी विजय का स्वाद नहीं चखा था, फिर भी वह 4 अंक जुटा कर सभी से बराबरी पर छूट कर द्वितीय हो गई थी।

'बी' ग्रुप में 6 टीमों थीं—विदर्भ, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु।

विदर्भ की टीम

दूसरे सेमीफाइनल से फाइनल में प्रवेश करने वाली टीम विदर्भ की थी।

एक का सफल उपयोग व पहुंचने में सफलता प्राप्त वहीं उत्तर प्रदेश की टीम बराबरी पर आने का स्वर्णिम गंवाते हुए हार की भागीदार बनी। विदर्भ के दोनों पेनल्टी किक मारे थे फुल बैक कुमारी आरती थोसरे ने, जब कि उत्तर प्रदेश की तरफ से असफल शांट गोलची एवं कप्तान कुमारी निगहत्त खान लोदी ने लगाया था।

पश्चिमी बंगाल विजयी

चार दिवसीय चैंपियनशिप (2 से 5 जुलाई) का फाइनल यद्यपि 5 जुलाई को सायंकाल खेला जाना था, फिर भी नतीजा निकालने वाले चैंपियनशिप के पहले दिन ही पश्चिमी बंगाल के पक्ष में नतीजा निकाल चुके थे। चूंकि उन की बातों में दम था, लिहाजा उन की बातें सच निकलीं। पश्चिमी बंगाल को ही विजयश्री मिली। बंगाल ने विदर्भ पर 2-0 की विजय के साथ भारतीय भूमि पर खेले जाने वाले राष्ट्रीय महिला फुटबॉल का चैंपियन होने का गौरव पाया। बंगाल ने 2-0 की ही विजय दर्ज की, पर उस की खिलाड़ियों कुछ और सतर्क रहतीं तो अपनी विजय का दायरा और बढ़ा सकती थीं। गलत निशानेबाजी और 2 पेनल्टी का गंवाना ही बाधक बन गए। विजयदायी गोल मारने वाली लड़कियां थीं : कुमारी दीप्ति मलिक (स्ट्राइकर) और शांति मलिक (लेफ्ट इन)।

फाइनल के पूर्व तीसरे और चौथे स्थान के लिए हुए मैच में उत्तर प्रदेश की टीम ने बिहार को 1-0 से हरा कर तीसरा स्थान पाया। उत्तर प्रदेश के लिए यह खुशी लाने वाली लेफ्ट इन ऊषा किरण रही। बिहार की टीम को चौथा स्थान जरूर मिला, लेकिन उस की सेंटर फारवर्ड कुमारी जमीमा मेरी कनडुलना ने चार ही गोल दांग कर चैंपियनशिप में सर्वाधिक तेजतर्रार सेंटर होने का गौरव पाया।

Splash of colour and camouflage can elude the eye—but you expect something more in a woman's magazine—more than mere fashion or fluffy fiction or sponsored shows. . .

WOMAN'S ERA is a bouquet of fresh ideas that leads you and your family to a fuller, richer and happier life.

WOMAN'S ERA shares your worries, eases your problems, enlightens and entertains you with heart-warming short stories, informative articles, meaningful household hints and a wide variety of exclusive features.



**ARE YOU
READING
THE RIGHT
MAGAZINE?**

Woman's era



Woman's era

**THE INDISPENSABLE FORTNIGHTLY
FOR INTELLIGENT WOMEN**

For specimen copy send 50 p. in stamps to Delhi Press, New Delhi-55.

सबदर्द पैदा कबनेवाली
 किरकियाहट
 चिरचिराहट
 मरम्मत के
 स्वर्च की भरमार



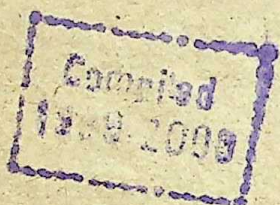
हमेशा के लिए
 आवाजों से बचाए



सिंगर*
 जो पेश करती है
 वह चीज़ बढ़िया
 होती है!

चिकनाहट सुरक्षा और मरम्मत
 के स्वर्चोंकी बचत

*सिंगर कंपनी का ट्रेडमार्क



171466

